

8746.



विचारसागर

निश्चलदासकृत

प्रत्ययान्तरकर्ता

मनःसुखराम सूर्यराम त्रिपाठी

“श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रंथकोटिभिः ।
ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव केवलम् ॥”

“यद्ब्रह्माग्नापरो लाभो यत्सुखाग्नापरं सुखम् ।
यद्ब्रह्मज्ञानाग्नापरं ज्ञानं तद्ब्रह्मेत्यवधारयेत् ॥ ५३ ॥”
शंकरकृत आत्मबोध

४

चतुष्टयंति

विश्व

प्रसिद्धकर्ता

धर्मसुखराम तनसुखराम त्रिपाठी

सर्व अधिकार स्वाधीन.

मुंबई, संवत् १९८३ सन १९२७.

मूल्य रु. ३.

Published by
The Trustees of the M.S. Tripathi Works Publication Fund
through Dharmasukharam Tanasukharam Tripáthi,
Chinábág, Girgaon, Bombay.

Printed by Manlal Itcharam Desai at
THE NEWS PRINTING PRESS OF THE GUJARATI
Bake-House Lane, Meadows Street, Fort, BOMBAY.

अनुक्रमणिका

अंक.



वेदान्तविचारनी प्रस्तावना	१
वेदान्तविचार	३
प्रथमावृत्तिनी प्रस्तावना	११५
प्रातःस्मरणस्तोत्र	१३८
निश्चलदासतुं जीवनचरित	१३९

विचारसागर

प्रथमस्तरंगः

अनुबंधसामान्यनिरूपण	१९३
१. वस्तुनिर्देशरूप मंगल, २ ग्रंथमहिमा	१९४
४. ग्रंथनो अनुबंध	१९६
५. अधिकारिवर्णन	१९७
६. चार साधन	१९८
७. विवेकलक्षण-८ वैराग्यलक्षण	१९८
९. शमादि पट्टमंपत्ति-१० शमदमनां लक्षण-११					
श्रद्धा अने समाधान-१२ उपराम व उप-					
रति-१३ तितिक्षालक्षण,	१९८
१४. मुमुक्षुतालक्षण	१६०
१४. ज्ञाननां आठ साधन	१६०
१५. (ज्ञाननां) अंतर्गने बहिरंग साधन	१६०
१८. श्रवण, मनन, निदिच्यासन	१६२
२०. अवान्तर वाक्य अने महावाक्यने ज्ञाननी हेतुता-					

अंक.		पृष्ठ.
२२.	व्यवहित अने अच्यवहित वस्तुनां परोक्षअपरोक्ष ज्ञान	१६७
२४.	संबंधवर्णन	१७१
२५.	विषयवर्णन	१७२
२६.	प्रयोजनवर्णन-ज्ञान अने मोक्ष	१७२
२७.	ग्रंथना प्रयोजनविषे शंका अने २९ तेनुं उत्तर	१७३

द्वितीयस्तरंगः

अनुबंधविशेषनिरूपण	१७७
३३. पूर्वपक्षीनी शंकाओ अधिकारिरुंडन-त्रिविध दुःख	१७७
३९. विषयखंडन	१८१
४५. प्रयोजनखंडन	१८३
४६. अध्याससामग्रीनिरूपण ...	१८६
५१. कर्म तथा कर्मना प्रकारनुं वर्णन-५३ चार विहित अने एक निपिद्ध मळी पांच कर्म-५५ प्रायश्चित्त-५८ एकभक्तिवाद	१९०
६०. संबंधखंडन	१९६
६१. सिद्धान्तीना उत्तर	१९७
६२. अधिकारिमंडन	”
६२. दुःखी अत्यंत निवृत्ति-६३ भूमाविद्या-....	१९८
६६. श्रवणना वे प्रकार-६८ अंतःकरणना त्रण दोष-६९ चार प्रकारना पुरुष-७० जिज्ञासुनो सत्शास्त्रानुसार विवेक-७१ जिज्ञासुनी ग्रंथमां प्रवृत्ति.	२०१
७२. विषयमंडन.	२०९
७२-७३. उपाधि अने विशेषणलक्षण-८४ साक्षी अने संमारीमां भेद-७६ साक्षी ब्रह्मरूप छे. ...	२०२

अं.क.	पृ.क.
७७. प्रयोजनमंडन.	२१३
७७. कार्यअध्यासनिरूपण—७८ वस्तुना ज्ञानना संस्कार अध्यासना हेतु छे—८१. वं.	१
—८२ छ वस्तु स्वरूपी अनादि छे—८४ प्रमाता—प्रमाणना दोष अध्यासना हेतु नथी	२१८
८९. कारणअध्यासनिरूपण.—सामान्य अने विशेष नैतन्य.—८६ सत्त्वा आत्मानुं मान सर्वने छे. आत्मानुं सामान्य अने विशेष	२२४
—८८—९२ कर्मरूप बीजथी यासना अने अदृष्ट ए वे अंकुर. ज्ञान विना कर्मफलनो अभाव नथी	२२९
९७. संबंधमंडन	२३३

तृतीयस्तरंगः

श्रीगुरुशिष्यलक्षण—गुरुभक्तिफलप्रकार.	२३४
९९. श्रीगुरुलक्षण—पांच प्रकारना भेद ईश्वर-जीव-जटना	२३९
९७. गुरुभक्तिनुं फल—योग्य गुरुद्वारा ज वेठ यथार्थ समजाई पुरुषार्थप्रद थाय छे. ...	२३७
१०१. आचार्यसेवाप्रकार. तनु—६न—५न अर्पण	२४१
१०८. शुद्ध अधिकारीनुं सेवा विना पण बलपण थाय छे.	२४३

चतुर्थस्तरंगः

उत्तमाधिकारिउपदेशनिरूपण.	२४९
१०९. शुभमंततिनी वात. तेना तत्त्वदृष्टि, अदृष्टि अने तर्कदृष्टि एसा त्रण पुत्रने सद्गुरुनो समागम ...	२९०
११४. उत्तमाधिकारी तत्त्वदृष्टिनो मोक्षसारु प्रश्न.	२९०
११९. गुरुनुं उत्तर. 'तत्त्वमि' उपदेश	२९१
११७. आत्मां ज आनंद छे, विषयमां नथी.	२९२

अंक.	शृङ्ख.
११९.	वे प्रकारना आत्मविमुख. ज्ञानीना ध्यानन्दनी रीति २५५
१२०.	तत्त्वदृष्टिनो प्रश्न, जन्ममरणादि दुःख कोना विषे छे? २५६
१२३.	गुरुनुं उत्तर. अज्ञानधी दुःखादि सर्व मिथ्या प्रतीत थाय छे. २५८
१२४.	तत्त्वदृष्टि मिथ्याप्रतीति किंवा भ्रान्तिविषे पोते जाणेल मतनो अनुवाद करे छे. २५८
१२५.	चार ख्याति.... २५९
१२६.	असत्ख्याति शून्यवादमत २६०
१२७.	आत्मख्याति क्षणिकविज्ञानवादी बुद्धनुं मत. ”
१२८.	अन्यथाख्याति—प्राच्य-नवीन नैयायिक मतप्रमाणे. ”
१३०.	अख्याति—सांख्य-मीमांसामत, तेणेकरी उपरनी त्रणे ख्यातिओनुं खंडन २६२
१३१.	गुरुनुं उत्तर. ए चारे ख्याति युक्तिहीन छे. पांचमी अनिर्वचनीयख्याति छे. अख्यातिनुं खंडन. २६३
१३३.	अनिर्वचनीयख्यातिधी प्रतीतिनी रीति २६४
१३४.	भ्रम—स्वप्न साक्षिभास्य छे. २६६
१३५.	भ्रम अथवा अध्यास ए अविद्यानो परिणाम अने चेतननो विवर्त्त छे. २६७
१३६.	भ्रमस्थानमां विषय अने ज्ञानना अधिष्ठान-संबंधमां शंकासमाधान २६८
१४४.	सर्व त्रिपुटीओनो प्रकाशक साक्षी छे.... २७२
१४५.	भ्रान्तिस्थानमां विवर्तोपादानकारणरूप अधिष्ठान साक्षी छे २७३
१४७.	तत्त्वदृष्टिनो प्रश्न के:—आ मिथ्या जगत्नो आधार कोण छे? २७५

अंक.	पृष्ठ.
१४८. गुरुतुं उत्तर. जगत्नो आधार तथा अधिष्ठान तुं तुं	२७५
१४९. आधार अने अधिष्ठान, तथा तेमां भेद	२७६
१५१. सर्वत्र कल्पिततुं अधिष्ठान ज द्रष्टा छे.....	२७७
१५२. तत्त्वदृष्टिनी प्रार्थना के, यद्यपि जगत् मिथ्या छे तथापि दुःखनो हेतु छे, माटे तेनी निवृत्तिनो उपाय कृपा करी बतावो	२७८
१५४. गुरु वदे छे के, दुःखरूप संसारनी निवृत्तिनो उपाय आत्मज्ञान छे, ते ज्ञानतुं स्वरूप.	२७९
१५६. तत्त्वदृष्टिनी शंका अने प्रश्नः—जीव ब्रह्म बे एक शी रीतिए छे ?	२८१
१५९. गुरु, आकाशना अने चेतनना चार भेद बतावी तेतुं समाधान करे छे	२८४
१६०. आकाशना चार भेद—घटाकाश. जलाकाश. मेघाकाश. महाकाश ...	२८५
१६४. चेतनना चार भेद अने तेतुं वर्णन	२८७
१६५. घटाकाशस्थानीय कूटस्थ चेतन ...	२८८
१६६. जलाकाशस्थानीय जीवचेतन	२८८
१७१. मेघाकाशस्थानीय ईश्वरचेतन ...	२९३
१७२. महाकाशस्थानीय ब्रह्मचेतन	२९५
१७४. जीव अने ईश्वरना आभासअंश अने चेतन अंश. आभासअंशमां कर्मकर्तृत्व अने फलदातृत्व छे.....	२९७
१७५. जीव अने ब्रह्मनो वाच्यअर्थथी भेद छे पण लक्ष्य- अर्थथी भेद नथी तथी एकता संभवे छे ...	२९९
१७६. तत्त्वदृष्टिनो प्रश्नः—‘अहं ब्रह्म’ ‘हूं ब्रह्म’ एतुं ज्ञान जीवमांना कया अंशने धाय छे ?	३००
१७७. गुरुतुं उत्तर केः—‘अहं ब्रह्म’ एतुं ज्ञान—चिदाभासने	

અંક

. પૃષ્ઠ.

- ધાય છે. તેની સત્ત અવસ્થા છે, તેનાં નામ—અજ્ઞાન
(૧), આવરણ (૨), भ्रान्ति (૩), પરોક્ષજ્ઞાન
(૪), અપરોક્ષજ્ઞાન (૫), શોકનાશ (૬), અને
અતિહર્ષ (૭). ૩૦૧
૧૮૪. તત્ત્વદષ્ટિની અહં વ્રહ્મમાંના 'અહં' ('હું') શબ્દવિષે શંકા ૩૦૬
- ૧૮૫ ગુરુ 'અહં' ('હું') શબ્દના અર્થનો વિવેક બતાવે છે.
આભાસ અને કૂટસ્થ ઉભયને આભાસ (જીવ)
'હું' એમ માને છે. મુખ્ય સામાધિકરણ્ય અને
બાધસામાનાધિકરણ્ય ૩૦૬
૧૮૬. તત્ત્વદષ્ટિનો પ્રશ્ન—અહંવૃત્તિમાં સાક્ષી અને આભાસ
એ બેનું ભાન ધાય છે તે ક્રમથી કે ક્રમ વિના
ધાય છે ? ૩૦૮
૧૮૭. ગુરુહું ઉત્તર:—અહંવૃત્તિવિષે એક જ સમયે સાક્ષી
અને આભાસનું ભાન ધાય છે. ૩૦૯
૧૮૯. વસ્તુના પ્રત્યક્ષજ્ઞાનની રીતિ પ્રત્યક્ષ-પરોક્ષજ્ઞાન ૩૧૧
૧૯૧. પ્રમાણનિરૂપણ. પ્રત્યક્ષપ્રમાણ—અનુમાનપ્રમાણ—
શબ્દપ્રમાણ—ઉપમાનપ્રમાણ—અર્થાપત્તિપ્રમાણ—
અનુપલબ્ધિપ્રમાણ ૩૧૩
૧૯૭. પ્રમાણાન-સ્મૃતિજ્ઞાન, ભ્રાન્તિજ્ઞાન, અને સંશયજ્ઞાન. છ
પ્રકારની પ્રમા-પ્રત્યક્ષ, અનુમિતિ, ઉપમિતિ, શાબ્દી,
અર્થાપત્તિ, અને અભાવ. તથા કરણ અને કારણ. ૩૧૬
૨૦૦. પ્રમાતા, -વૃત્તિજ્ઞાન, પ્રમાણચેતન, -પ્રમાચેતન-વિષય
કિંવા પ્રમેયચેતન ૩૧૮
૨૦૧. અવચ્છેદવાદ. વિશેષણ અને ઉપાધિનાં લક્ષણ. અંત-
કરણવિશેષણવાહ્યું ચેતન તે પ્રમાતા છે અને
અંત:કરણઉપાધિવાહ્યું ચેતન તે સાક્ષી છે. ૩૨૧

अंक.	पृष्ठ.
२०२. आभासवाद. आभासवादनी श्रेष्ठता	३२२
२०५. प्रमाणचेतन अने प्रमाचेतन	३२५
२०६. तत्त्वदृष्टिनो प्रश्न—'ब्रह्मनुं ज्ञान इन्द्रियसंबंध विना प्रत्यक्ष केम थाय ? रामकृष्णादिकने ब्रह्मरूपता कथी छे तेनो अभिप्राय.	३२६
२११. गुरुनुं उत्तरः—इन्द्रियसंबंध विना प्रत्यक्षज्ञान थाय नहि ए नियम नथी. विषय साथे वृत्तिनो संबंध थयेथी प्रत्यक्ष ज्ञान थाय छे. महावाक्य—शब्दद्वारे ब्रह्मज्ञान प्रत्यक्ष थाय छे	३३२

पंचमस्तरंगः

श्री गुरुवेदादिव्यावहारिकप्रतिपादन-मध्यमाधिकारि- साधननिरूपण	३३७
२१३. अदृष्टि-मध्यम अधिकारीनी अद्वैतविषे शंका.	”
२१४. गुरुनुं उत्तर.	”
२१७. भर्तुं नामे राजमंत्रिनी वात,—भर्तुंनो विराग	३४०
२२१. युवतिसंगदुःखवर्जन,	३४६
२२५. पुत्रआसक्तिमां दुःख,	३५१
२२६. धनआसक्तिमां दुःख.	३५३
२२९. मिथ्या दुःख मिथ्या साधनोथी मटे छे. तेविषे एक राजाना स्वप्ननी वार्ता	३५५
२३२. त्रिविधसत्ता	३५८
२३३. व्यावहारिकसत्ता	३६०
२३४. प्रातिभासिकसत्ता	”
२३५. पारमार्थिकसत्ता	३६१
२३६. वेद, गुरु अने संसारदुःखनी व्यावहारिक समसत्ता छे तेथी वेद—गुरुथी मिथ्या संसारदुःखनो नाश थाय छे.	३६१

ધક.

પૃષ્ઠ.

૨૩૮. જેના અજ્ઞાનથી જે ઉપજે તેના જ્ઞાનથી તેનો નાથ થાય છે	૩૬૨
૨૩૯. અદૃષ્ટિયો પ્રશ્ન:—સંસાર કયા ક્રમથી ઉપજે છે ?	”
૨૪૦. ગુરુનું ઉત્તર:—જગત્ની ઉત્પત્તિના ક્રમનો અનિયમ	૩૬૧
૨૪૨. માયાનું અને ईશ્વરનું સ્વરૂપ	૩૭૦
૨૪૮. ईશ્વરનું સ્વરૂપ—ઉપાદાન અને નિમિત્ત કારણ	૩૭૦
૨૫૦. જીવનું સ્વરૂપ	૩૭૨
૨૫૨. જગત્ની ઉત્પત્તિ—પંચીકરણ	૩૭૩
૨૫૩. પંચમહાભૂત	૩૭૪
૨૫૪. અંતઃકરણ તથા તેની ચાર વૃત્તિઓ	૩૭૫
૨૫૫. પંચપ્રાણ	”
૨૫૬. પંચજ્ઞાનેન્દ્રિયો, તથા પંચકર્મેન્દ્રિયો.	૩૭૭
૨૫૭. આત્મા અનાત્માવિવેક—સૂક્ષ્મ સૃષ્ટિ	”
૨૫૮. પંચીકરણના બે પ્રકાર	૩૭૮
૨૫૯. સ્થૂલ સૃષ્ટિ. ચૌદ લૌક	૨૮૦
૨૬૦. શરીરત્રય—કારણ, સૂક્ષ્મ, સ્થૂલ	”
” પંચકોશ—આનેદમય, વિજ્ઞાનમય, મનોમય, પ્રાણમય અને અન્નમય	૩૮૧
૨૬૧. આત્માવિષે વિરોચન બૌદ્ધ પૂર્વમીમાંસક આદિના જુદા જુદાના મતો	૩૮૨
૨૬૨. ઉપરનાં મતોસંબંધમાં વિચાર. ईશ્વરનું સ્વરૂપ.	૩૮૮
૨૭૦. પંચકોશથી આત્મવિવેકનો પ્રકાર	૩૮૯
૨૭૧. મહાવાક્યના અર્થનો ઉપદેશ. આત્માનું સ્વરૂપ.	૩૯૧
૨૭૩. આત્મા ક્રૂર્તા છે અને અકર્તા પણ છે.	”
૨૭૪. જીવન્મુક્તની દૃષ્ટિ	૩૯૨
૨૭૫. ગોપ્યતત્ત્વનો ઉપદેશ	૩૯૪

अंक.		पृष्ठ.
२७७.	लयचिंतन	३९६
२७९.	मायानां, कार्यप्रमाणे, जुदां जुदां नाम	३९७
२८०.	ध्यान अने ज्ञानमां भेद. अहंग्रह-उपासना.	३९८
२८२.	प्रणवतुं अहंग्रहध्यान	४०१
२८५.	ब्रह्म अने जीवना चार चार पाद	४०४
२८७.	अभेदचिन्तन	४०७
२९२.	परमार्थ अने अपरमार्थ एवां आत्मानां अने ॐकारनां वे रूप	४०९
२९३.	लयचिन्तन अने ॐकारतुं निर्गुण उपासन ...	४१०
२९७.	ब्रह्मलोक प्रति जवाना मार्गनो क्रम	४१३
२९८.	सायुज्यमोक्ष	४१४
३०१.	आत्मानुं परमार्थरूप	४१६
३०२.	ॐकार अने महावाक्यना अर्थनी एकता....	४१८
३०३.	निर्गुण उपासनामां जेनो अधिकार नथी तेनुं कर्तव्य	४१९

पष्ठस्तरंगः

गुरुवेदादिसाधनमिथ्यावर्णन	४२०
३०५. तर्कदृष्टि कनिष्ठ अधिकारी पोताना तत्त्वदृष्टि अने अदृष्टि ए वे भ्राताने ज्ञान पामीने शान्त यया जोई पोते कहे छे के:—'जाग्रतना पदार्थने स्वप्नना पदार्थनी पेटे मिथ्या कह्या ते घटे नहि. वली स्वप्नज्ञान पण मिथ्या नथी.' इत्यादि ...	४२१
३०७. ए प्रश्नोनां उत्तर. स्वप्नतुं ज्ञान. अभिज्ञा अने प्रत्यभिज्ञा— प्रत्यक्ष. स्वप्नमां लिंगशरीर बहिर जतुं नथी	४२१
३०९. स्वप्नमां त्रिपुटी उत्पन्न थाय छे	४२७
३१५. जाग्रतना अने स्वप्नना पदार्थमां अंतर,—जाग्रतना पदार्थ व्यावहारिक छे, स्वप्ननां प्रातिभासिक छे....	४३२

अंक.	पृष्ठ.
३१६. ईश्वरचित्त अने जीवसंस्कारचित्त एवा वे प्रकारना ...पदार्थ	४३३
३१७. जाग्रत् अने स्वप्नना पदार्थमां विज्ञानना सिद्ध यती नथी. दृष्टिदृष्टिवाद्.	४३५
३२३. जाग्रत्पदार्थ स्वप्नपदार्थयी विज्ञानग नथी	४४२
३२८. दृष्टिदृष्टिवादनं स्वरूप	४४६
३२९. शिष्य कहे छे के जो संसार ज नथी तो बंध होय नहि. तेम थये श्रवणादि साधन निष्फल यशे	४४८
३३०. गुरुनं उत्तर-अगृधदेवनं (इच्छारहित देवनं) स्वप्न	४४९
३३३. अगृधदेव अर्थ नवीन ग्रंथ. मिथ्या आचार्ये मिथ्या शिष्यने जे संस्कृत ग्रंथयी उपदेश कन्यो छे तेनुं प्रत्ययान्तर अंरु ३३३ थी अंक ४५२ पर्यन्त आ षष्ठतरंगना अन्त सुधी.	४५३
३३९. कोई एक शिष्य त्रण प्रश्न पूछे छे के, (१) हुं कोण छुं ? (२) आ संसारनो कर्ता कोण छे ? (३) मुक्तिनो हेतु कर्म छे, उपासना छे, वा ज्ञान छे, अथवा ए त्रणे छे ?	४५७
३४०. गुरु प्रथम प्रश्ननुं उत्तर आपे छे के.-'तुं आत्मा सच्चिदानंदरूप छुं'	४५८
३४२. आत्माविपे सांख्यमतनो सिद्धान्त.	४५९
३४३. आत्माविपे न्यायनुं मत, अने ते संबंधमां सिद्धान्तीना आत्माविपे विचार	४६१
३४८. आत्माविपे नवीन न्यायमत तथा तेनुं खंडन	४६८
३५५. आत्मा सत् छे	४७३
३५६. आत्मा नित् छे	४७३
३६०. आत्मा आनंदरूप छे	४७६

अंक.	शु.
३१४. ते सत्, चित् अने आनंद एक ज छे	४८०
३१६. ब्रह्मरूप आत्मा अजन्मा छे	४८१
३१८. पदार्थमात्रमां पांच अंश, तेमां त्रण सत्य अने वे व्यभिचारी	४८
३१९. आत्मा असंग छे,	४८३
३७०. गुरु द्वितीय प्रश्ननुं उत्तर आपे छे के:—मायायुक्त चेतन नाम ईश्वर, जगतनी उत्पत्ति स्थिति अने नाशनो हेतु छे	४८४
३७१. जगतनो कर्ता ईश्वर छे ते सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् अने स्वतंत्र छे; अने जीव अल्पज्ञ, अल्पशक्तिमान्, अने पराधीन छे	४८५
३७३. ईश्वर व्यापक अने नित्य छे. आत्माश्रय अन्योन्याश्रय, चक्रिणा, अनस्था, विनिगमन, विरह अने प्राग्लोप ए छ दोष,	४८६
३७४. जीव ईश्वरमां केवा प्रकारे भेद छे. अवच्छेद, आभास अने विचप्रतिविचमाद	४८८
३७५. गुरु तृतीय प्रश्ननुं उत्तर आपे छे के:—ज्ञान ए ज मोक्षनो हेतु छे, कर्मउपासना हेतु नथी.	४८९
३७७. कर्मना पांच उपयोग अथवा फल:—पदार्थनी उत्पत्ति- रूप (१), पदार्थना नाशरूप (२), पदार्थनी प्रा- प्तिरूप (३), पदार्थना विभाररूप (४), विवृत्ति- रूप अने उत्पत्तिरूप संस्कार (५)	४९०
३८०. समुच्चयवाद	४९३
३९३. मंद अने दृढ वे प्रकारनुं ज्ञान	५०२
३९४. वेदान्तशास्त्रना विचारपी ज दृढज्ञानीने ब्रह्माकार- वृत्ति माय छे	५०३

अंक.	पृष्ठ.
३९७. ज्ञान जगत्ना व्यवहारसुं विरोधी नथी, अने जगत्- नो व्यवहार ज्ञाननो विरोधी नथी	१०५
३९८. दृढज्ञानने आभासरूप कर्म उपासना पण विरोधी नथी.	१०६
४०२. पूर्वोक्त अर्थनो संग्रह	१०८
४०३. ज्ञाननां साधन. विवेकनो उपदेश	१०९
४०४. महावाक्यने अनुसार ज्ञानसुं स्वरूप	११०
४०५. मोक्षसुं साधन ज्ञान छे ए अर्थ अन्य प्रकारे कहे छे ०७. त्रिविधलक्षणा-भेद	११२
४०९. वृत्ति एटले पदनो अने अर्थनो परस्पर संबंध	११५
४१०. शक्तिलक्षण	११७
४२८. शक्यसुं लक्षण	१३५
४२९. लक्षणा अने जहती आदि भेद लक्षण.-जहतीलक्षणा, अजहतीलक्षणा, जहती-अजहती अथवा भागत्याग-लक्षणा	१३६
४३३. तत्त्वमसि महावाक्यनी लक्षणा.-तत्पदवाच्यनिरूपण, त्वम्पदवाच्यनिरूपण. 'तत्त्वमसि' लक्षणाधी लेखुं, वाच्य अर्थमां विरोध छे	१३८
४३९. आभासवाद-प्रतिबिंबवाद.-आभास अने प्रतिबिंब- वादमां अंतर. अवच्छेदवाद. आभासवाद मुख्य छे	१४२
४४३. चार महावाक्यो. भागत्यागलक्षणाधी तेमांनी एकतानी समज. जीव ते ईश्वर नथी.-जीव ईश्वर ए बने पदसुं लक्ष्य चेतन, तेनी एकता भागत्याग- रीतिए संभवे छे	१४७
४५२. अगृधदेवसुं स्वप्न समाप्त यई प्रबोध	१५७
४५३. अगृधने निद्रापी दुःख जेम ययुं हतुं, तेम आत्मां अज्ञानथी संसारसुं दुःख प्रतीत थाय छे	१५७

अंक.	पृ.
जीवनमुक्ति-विदेहमुक्तिवर्जन.
४६४. जीवनमुक्तनी स्थिति ११९
४६५. पूर्वपक्षीना आक्षेप-अंक ४६५-४७२ १६०
४६६. ग्रह प्रकारनां कर्म-संचिन, आगामी अने प्रारब्ध. प्रारब्धनो नाश यये अन्त्य शरीरनां ज्ञान घाय छे. १६१
४६७. योगनां अष्टांग-यम, नियम आमन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, अने ध्यान १६४
४६८. समाधि अने तेना प्रकार-समिप्ल्य अने निर्विप्ल्य १६६
४६९. सुषुप्ति अवस्था अने निर्विप्ल्य समाधिमां भेद १६७
४६७. निर्विप्ल्य समाधिनां धे प्रकार १६८
४६८. निर्विप्ल्य समाधिना चार विन्न-त्रय, विशेष, कषाय,- (चित्तनी पांच भूमिका) रसास्वाद १६९
४७३. पूर्वपक्षानुसार जीवनमुक्त १७४
४७४. पूर्वोक्त आक्षेपानां समाधान १७४
४७५. तत्त्वदृष्टिनो देशादिकनी अपेक्षारहित देहपात १८०
४८१. अदृष्टिनो देशादिकनी अपेक्षासहित देहपात १८१
४८२. तर्कदृष्टिनो निश्चय. सर्वशास्त्रोने ब्रह्मज्ञाननी हेतुता. १८२
४८३. विद्यानां अष्टादश प्रस्थान. चारवेद. उरवेद-आयु- वेद, घनुवेद, गांधर्ववेद, अने अर्यवेद. चार वेदनां छ अंग. अष्टादश पुराण. न्यायशास्त्र. मीमांसा- शास्त्र. स्मृति अथवा धर्मशास्त्र तथा तेना अंत. भूत-सांख्य-योगशास्त्र, वैष्णव-शैवतंत्र १८३
४९४. देवीनी उपासनाना वे मार्ग-वाम अने दक्षिण १९३
४९५. नास्तिकमतना छ भेद १९४
४९७. तर्कदृष्टि सर्वशास्त्रोने सार ग्रही पोताना सिद्धान्तोने	

શક.

૫૪.

....અન્ય વિદ્વાનના સિદ્ધાન્તો સાથે મેઝવી જનની- જનકયુક્ત ગૃહ મળી જવા ઇચ્છે છે	૬૯૬
૪૯૯. શુભસંતતિ, પૂર્વોક્ત ત્રણે પુત્રના પિતાનો પ્રસંગ	૬૯૮
૬૦૦. મંદવૈરાગ્યનું ફલ. ઉપાસ્યની જિજ્ઞાસા. પંડિતોની સમા ભરી કોણ ઉપાસના કરવા યોગ્ય છે તે પૂછે છે. અનેક દેવના અનેક ભક્તો પોતપોતાના દૃષ્ટદેવની પ્રશંસા કરે છે. તે જુદાં જુદાં મત સાંભળી રાજાની સ્થિતિ	૬૯૯
૬૦૧. શુભસંતતિ પિતા અને તર્કદૃષ્ટિ પુત્રનો મિલાપ	૬૧૦
૬૧૦. અનેક દેવોવિષે સમાધાન	૬૧૧
૬૧૩. પુરાણવાક્યોમાં વિરોધ ભાસે છે તેનું સમાધાન	૬૧૩
૬૧૬. કારણબ્રહ્મની ઉપાસનાની રીતિ. મૂર્તિપ્રતિપાદનનો અભિપ્રાય	૬૧૬
૬૧૯. ઉત્તરમીમાંસા સર્વમાં શ્રેષ્ઠા છે અને ઉપર શંકરકૃત.... માધ્ય ઉત્તમ છે.	૬૧૭
૬૨૩-૬૨૪. બ્રહ્મવિદ્યાનું માહાત્મ્ય. તે નહાનાને મહોટો કરે છે. ૬૧૯	૬૨૩
૬૨૬. જ્ઞાની વ્યવહાર કરે તો પણ અસંગ રહી શકે છે.	૬૨૦
૬૨૬-૬૨૭. જ્ઞાની વિદેહમુક્ત થયે ઈશ્વરમાં એકતા પામે છે	૬૨૧
વિચારસાગરની સમાપ્તિ—....	૬૨૨-૬૨૩
સૂચિપત્ર-વેદાન્તવિચારનું	૬૨૬
સૂચિપત્ર-વિચારસાગરનું	૬૩૧
શુદ્ધિપત્ર	૬૬૪
સ્વાત્મનિરૂપણસારોદ્ધાર	૬૬૬



प्रस्तावना.

(वेदान्तविचारणी)

मूल विस्तृतप्रथगत विषयोनी अभिव्यंजिका

आ 'वेदान्तविचार' रूप वन्द्यसेव्यवाक्यामृतसंग्रह, स्वबुद्धिनी विशुद्धिअर्थ तथा स्वात्माना-परमात्माना-अनुसन्धानार्थ आरंभ्यो छे ते क्रियमाण रहेवानो छे. संचित संग्रहनो कइं भाग, अधिकारीवर्गअर्थ अत्र समर्पवामां आवे छे. सर्वान्तर्यामी प्रेरक परमेश्वरने प्रार्थना छे के, सज्जनोने यथाशक्ति ते उपयोगी थवा समर्थ धाय ए प्रकारे ए संग्रहने प्रेरो.



ॐ

परमात्मने नमः

वेदान्तविचार

“ वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् । ”

भगवद्गीता अ० १५ श्लो० १५

श्रीभगवद्गीतामां श्रीकृष्ण भगवान् वदे छे के:—सर्वे वेदोप
करी हुं (=परमात्मा) ज वेद्य (=वेदितव्य-जाणवा योग्य-छुं);
वेदान्तकृत् (=वेदान्तना अर्थनो संप्रदायकर्ता) अने वेदवित्
(=वेदान्तना अर्थनो ज्ञाता) ए पण हुं ज छुं.

‘वेदान्त’ नाम=वेदनो अन्त-रिंवा अचसान-भाग, अधवा
वेदनो शिरोभाग. वेदोनी सर्व शाखाओंना उत्तर
वेदान्त. भाग विषे पठ्यमान जे ग्रंथो,-अर्थात् प्रत्य-
गात्मभूत परमब्रह्म (ए) विशिष्टविषयवती’ अने आत्यन्तिक
संसारनिवृत्ति-ब्रह्मप्राप्तिरूप प्रयोजनवती (ब्रह्मात्मैक्यनो साक्षा-
त्कार छे विषय जेनो एवी) प्रमाणभूता उपनिषदो-ए
वेदान्त. अने ते अन्त श्रुतिओं उपनिषद् तेओंने उपकारि

१ आ लेखमां जे समत होय ते प्रायशः शकरोक्तिउपजीव्यक छे, अर्थात्
परमपुरुषार्थदायिनी शकरनी वाणीमाथी ज आ लेखनु बहुकरी उपजीवन छे.
अने तेमां जे समत होय ते ज मात्र शकरवाणीनु गणधु, अने भूमिति आदि
शास्त्रो सम तेने गुहमुपस्थी वा तज्ज्ञाताथी अभ्यासवानी तथा स्वतः विचार-
वानी अपेक्षा छे. २ विद्वक्षण, विशेषणयुक्त विषयवती=विचारयोग्य
वाक्यवाली.

शारीरक सूत्र-भाष्य, भगवद्गीता, आदि अध्यात्मशास्त्रो पण गौणवृत्तिथी ' वेदान्त ' कहेवाय छे.

प्रदीपवत् ते वेदान्तशास्त्रना प्रमाणथी ब्रह्मनो यथावत्
स्वरूपाधिगम छे. कारण के ब्रह्म इन्द्रियादिप्र-
वेदान्तशास्त्र माणक नहि किन्तु (श्रुति-) शब्द-प्रमाणक छे.

ते यथाशब्द अभ्युपगन्तव्य छे. मुख्यत्वे करी आत्माने उपदि-
दिक्षुं (वेदान्त) शास्त्र लोकबुद्धिने अनुसरतुं, (प्रथम) अत्यन्त
मूढोंने आत्मत्वेकरी प्रसिद्ध एवा अनात्म अक्षमय शरीरनो
अनुवाद करी, तेथी अन्तर तेथी अन्तर, एम पुर्वपूर्वसमान
उत्तरउत्तर अनात्माने आत्मा एम ब्रह्माथी " सर्वान्तर मुख्य
आनन्दमय आत्माने उपदिशे छे. सर्व वेदान्तोमां तात्पर्येकरी
ब्रह्मना अर्थना प्रतिपादकत्ववते वाक्यो समनुगत छे. ह्यं-
पादेयशून्य ब्रह्मात्मताना अद्यगमथी ज सर्व हे, शना प्रहरणथी
पुरुषार्थनी सिद्धि छे. यद्यपि अन्यप्रमाण वेदान्तशास्त्र
अज्ञातार्थना ज्ञापकत्वेकरी आत्माविषये प्रमाणत्व पामतुं नथी,
किन्तु अतत्-धर्माध्यारोपणमाप्रनिवर्तकत्वेकरी प्रमाणत्व पामे
छे; तथापि प्रज्ञानने भूतवस्तुविषयत्व तथा अनुभवअपमा-
नत्व होवाथी ब्रह्मजिज्ञासामां श्रुति आदि तथा अनुभवादि
यथासंभव प्रमाण छे.

सर्व वेदान्तशास्त्रनो आरंभ, कर्तृत्व-भोक्तृत्व-प्रवर्तक मिथ्या-
प्रत्ययरूप अनर्थहेतु नैसर्गिक अध्यास तेना प्रहाणार्थ तथा आत्म-
पत्यविद्यानी प्रतिपत्तिअर्थ छे.

-
- १ शिष्योने अर्थ जेनेकरी चलनु शासन किंवा प्रतिपादन पाव छे ए शास्त्र.
२ पीठाना रूपनु शन गनु ते. ३ भुक्तिमार्थशनेकरी जागना योग्य.
४ उपदेश करवाने इच्छुं. ५ प्रसारतामां पर्यवसित-अन्त पामेण. ६ न
जानेण अर्थने जगाववाक्युं. ७ अनात्मधर्माज्यासने दूर करवाक्युं. ८ सिद्ध-
पदार्थ. ९ प्रीति, हान. १० भविष्यमिदं, एतामादिफ. ११ सम्भ्र शन.

સર્વાર્થમવદ્યાંતિ સર્વવ્રકલ્પં વેદોરૂપ કલ્પવૃક્ષનું વેદાન્ત ફ પરમ-પુરુષાર્થપ્રદ અનુપમ અમૃત છે. અથવા યદા વિશિષ્ટ વેદોરૂપ કામધેનુનું વેદાન્ત ફ નિઃશ્રેયસપ્રદ અમૃત દુઘ્ધ છે.

જ્ઞાની-અજ્ઞાની સર્વની ઇચ્છાનો વિષય, સુખ-પરમસુખ-પરમઆનન્દ છે તે જ વેદાન્તનો વિશિષ્ટ વિષય છે. અવિ-વેદાન્તનો વિષય. ઘાપ અધ્યારોપિત ઈશ્વરના સર્વજ્ઞત્વાદિ અને જીવના અલ્પજ્ઞત્વાદિ વિરુદ્ધ ધર્મોના ભાગ-ત્યાગલક્ષણાપ પરિત્યાગપૂર્વક શુદ્ધ-સચ્ચિદાનન્દાદૈત બ્રહ્મના યથાર્થ જ્ઞાનેકરી નિત્યપ્રાપ્ત સ્વરૂપના આત્યન્તિક અરંડ સુખનો આધિભાવ, ણું વેદાન્ત જ પ્રતિપાદક અને સંપાદક છે.

પ્રાણીમાત્રની ઇચ્છાનો વિષય સુખ છે, ફ તેા નિઃસંશય અને નિર્ધિવાદ છે. પ્રાણિમાત્ર જન્મથી તે મરણપર્યન્ત જે સુખની આશા અનેક માંગે, અનેક પ્રકારે, અનેક પ્રયત્નો કરે છે; વિદ્યાભ્યાસ, શરીરસંપત્તિ, કૃષિ, વ્યાપાર, સેવા, ગૃહ-સ્થાશ્રમ; તનુબલ, મનોબલ, ધનબલ, કીર્તિ, ઇત્યાદિ સાધ-નોવંતે, જે સુખની આશા હોય છે તે સફલા થશે ફમ કલગીને, તે સુખ સંપાદન કરવા વહુ પરિશ્રમ વહે છે, અને અનેક દુઃખો સહે છે; પરંતુ વિચારકોને જે સુખાશા શિતિ-જસમ દૂર અને દૂર જતી દેલાય છે, અને અવિચારી મૂઢોને તો જે સુખાશા અસાર સંસારસાગરમાં ઘુડાડીને શોકમોહ-પ્રસ્ત અને અતિ દુઃખી કરે છે, તે આશાનાં ઘાસ્તવિક જે મૂલ સત્યસુખ તેને પ્રાપ્ત કરવાને સમ્યક્જ્ઞાન (અથવા બ્રહ્મવિદ્યા) ફ જ ફક સુલભ, સુગમ અને સુકર સાધન છે; ફમ તે પ્રાપ્ય

૧ સર્વજ્ઞેઙ્ઞ. ૨ વિષયીને સ્વરૂપ સાથે વાધે છે તે સુખાદિ. નિત્ય-સંધિત મોગસાધન.

નિત્ય સત્ય સુખના પ્રાપ્તિમાન્ તથા પ્રાપક મહાત્માઓ સ્વાનુભવથી સિદ્ધ કરી વધી ગયા છે અને વધે છે.

સ્વપ્રયોજનનો અભાવ સતે પણ અનુકંપાથી લોકોનો અનુ-

વેદાન્તપ્રવર્તકોથી
વેદાન્તની શ્રેષ્ઠતાનું
પ્રમાણ.

પ્રહ કરવા ઇચ્છતા બ્રહ્મવિદ્યાના સંપ્રદાયના પ્રવર્તક તે મહાત્માઓની એક શ્રેષ્ઠપરંપરા આ પ્રકારે છે:-

સર્વાન્તર્યામી આદિકર્તા નૌરાયણ, સૃષ્ટિકર્તા પદ્મભૂ- (બ્રહ્મા)થી આદિ લક્ષ્મી વસિષ્ઠ, શક્તિ, પરાશર, વ્યાસ, શુક, ગૌડપાદ, ગોવિંદ, શ્રીશંકરાચાર્ય, અને તેઓના શિષ્યો-પદ્મપાદ, હસ્તામલક, ત્રોટકાચાર્ય, અને ચાર્તિકકાર સુરેશ્વરાચાર્ય આદિક-એઓ તો સુપ્રસિદ્ધ જ છે: અને તેઓના અનુયાયી-વેદાન્તાર્થપારગ યવા 'શ્રોત્રિય,' બ્રહ્મલોકના આનન્દથી તે અર્વાચીન આનન્દમાં તૃપ્નારહિત યવા 'અકામ-હત', યથોક્તકારિતાપકરી પાપરહિત યવા 'અવૃજિન,' અને ઔપનિષદ બ્રહ્માત્માના વિજ્ઞાને પરિપૂર્ણ યવા 'બ્રહ્મનિષ્ઠ'-મહાત્મા ગુરુઓ એઓ, પરમશ્રેયોર્થી સાધનચતુષ્ટયસંપન્ન યથોક્તકારી મુમુક્ષુઓના પરમપુહપાર્થની સિદ્ધિસારૂ, જે ઉત્તમોત્તમ જ્ઞાન ઉપદિશ્યું છે, તે જ જ્ઞાન સદા પ્રાપ્ત જે પ્રાપ્ય વસ્તુ-સંચિદાનન્દ પ્રહ્લ-તેની પ્રાપ્તિનું મહાસુખપ્રદ મુખ્ય અનુપમ સાધન છે, યવું તેના પ્રામાણિક વક્તાઓનાં અને તેઓના પરમપ્રિય મહાબુદ્ધિમન્ત શ્રોતાઓનાં નામમાત્રથી સિદ્ધ થાય એમ છે.

૫ પરમનિ:શ્રેયસકરી સદાનન્દમયી સ્વારાજ્યસામ્રાજ્ય-

૧ પમાહનાર. ૨ ચતુષ્કલમક શરીરોમાં ચિદામાત જે 'નાર', તેઓનું 'અયન' નામ આભય—અન્નયોમી—એ નાસપણ. ૩ ઉપનિષદ-શાન્તિ-પાઠાનુમાર. ૪ અપર દેશકાલમાં તત્કાલર્થિ.

विभूति-अखंडसुखदात्री ब्रह्मविद्या-आदिनारायणना महा-
प्रसादधी ब्रह्माने प्राप्ता थई, अने जेने महादेवे परमप्रसादधी
पोतानां परमप्रिया पार्वती प्रति प्रकाशी ते परमपुरुषार्थप्रदा
ब्रह्मविद्या ब्रह्माए वसिष्ठ इन्द्रादिने आपी, उद्दालक मुनिए आत्मज
श्वेतकेतुने आपी, दक्षिणामूर्तिए सनत्सुनकादिकोने बोधी,
सनत्कुमारे नारदने प्रबोधी, याज्ञवल्क्ये स्वप्रिया मैत्रेयीने, अने
जनकविदेहीने, अर्षी, वसिष्ठे सद्गुणमूर्ति लीलावतार श्रीरामने
समर्षी, रामे यथोक्तानुकारी परमप्रिय भ्राता लक्ष्मणने दीधी,
लीलावतार श्रीकृष्णपरमात्माए-जे ब्रह्मविद्या विष्णुरूपे प्रथम विव
स्वान्-आदित्य-प्रति वदी हती, ने विवस्वाने मनुअर्थे प्रकाशी,
मनुए स्वपुत्र आदिराज इक्ष्वाकु प्रति कधी, एम परपराप्राप्ता
राजर्षिओए वदी ते पुरातनी उत्तमरहस्यब्रह्मविद्या निज परम
सखा इष्टमत्त अर्जुन प्रति कंधी, अने ते ज ब्रह्मात्मविद्या कृपालु
तापरवश शिष्टाग्रणी व्यासनारायणे तथा शंकरभगवाने सत्पुरु
षोना अनुग्रहार्थे निर्वाणसदायिनी चाणीद्वारा सुप्रसिद्धा करी छे

ब्रह्मविद्या एरी विशिष्टगहिमावती अने महापुण्यशाली पुरपोने
वृत्तवृत्त्यकारिणी छे ए ब्रह्मविद्याद्वारा जे अनु
ब्रह्मात्मविद्यानुं निरतिशय सुख पम सुख,-मलयिक्षेपरहित परिशुद्ध अन्त कर
णनी वृत्ति अन्तर्मुखा अने प्रशान्ता थई दृष्टानु
आत्मस्वरूपमा अवस्थान थये,-विद्वानने प्राप्त थाय छे, ते सुख
भगवद्गीतामा आम गायु छे --

“सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम् ।
यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः ॥”

भ गी अ ६ श्लो २१-२२

‘(અવિષયજનિત હોવાથી શ્રોત્રનેત્રાદિ ઇન્દ્રિયોપ જાણવાને અશક્ય એવું) અતિ ઇન્દ્રિય, (ઇન્દ્રિયોની નિરપેક્ષાપ વુદ્ધિવતે જ-સ્વાનુભવવતે જ-ગ્રહણ કરી શકાય એવું) વુદ્ધિગ્રાહ્ય (એકવાર આવિર્ભાવ થયે પુનઃ ક્ષતિ પળ નાશ ન થાય એવું આત્મલાભનું અનન્ત) આત્યન્તિક સુખ,-જેને, (આત્મલાભને વા સુખને) લાભીને-પામીને-અપર લાભને (અન્યત્ લાભાન્તરને) (તેથી અધિક છે એમ (આત્મસ્વરૂપમાં સ્થિત વિદ્વાન્) માનતો નથી.’

જે સુખની ઉપલબ્ધિ થયે દેવાદિનાં અને નરપતિ આદિનાં સુખો, સુખાભાસ જેવાં લાગી, તેઓમાં તુચ્છવુદ્ધિ થાય છે; જે સુખ અસાધારણ વુદ્ધિમન્ત શિષ્ટાગ્રણી મહાત્માઓપ સેવિત હોવાથી ઉત્તમોત્તમ છે, અને તે ઘર્ગના મહાપુરુષોના અનુભવને અજ્ઞી પળ પ્રસિદ્ધ છે; અને જે સુખ અસંખ્ય કારણોથી પરમશ્રેષ્ઠ છે એમ વિદ્યાવન્ત વિચારકોને સિદ્ધ છે; તે જ સુખ એ વેદાન્તપ્રતિપાદિત અવર્ણનીય અનુપમ સુખ છે.

સુખેચ્છકને સુખસ્વરૂપ, આત્મવાન્યે અને યુક્તિપ, સિદ્ધ કરી આપી, સુખનો અનુભવ કરાવી, આત્યન્તિક સુખમય કરવા, અર્થાત્ જ્ઞાતાત્મા કરવા, એ વેદાન્તનું પ્રયોજન છે.

એવા વેદાન્તવિચારના પ્રકાશક, પ્રચર્તક અને પ્રાપક મહાત્માઓ કેવા શ્રેષ્ઠતમ જગન્મંગલ જગદ્ગુણ છે, તે તેઓનાં પૂર્વોક્ત નામમાત્રથી જાણી શકાય એમ છે. બ્રહ્મવિદ્યાના સારિષ્ટવપ્રદર્શનાર્થે યથી અધિક પ્રમાણ શું હોઈ શકે ! એવા વેદાન્તનો વિષય અને પ્રયોજન પણ તેણું જ શ્રેષ્ઠતમ-મનુષ્ય માત્રને અમીષ્ટ એવું-નિઃશ્ચેયસ-સુખ-છે; એ પણ વેદાન્તશાસ્ત્રના ઉપાસકોને પ્રસિદ્ધ છે.

ए चरिष्ठस्थिति किंवा मोक्षाख्य अत्युत्तम स्थान प्राप्त

અધિકારી. કરવા, અધિકારી પણ તેવા જ મહાશય અપેક્ષિત છે.

यद्यपि आ वसुंधरा पृथिवी विषे सर्वं पदार्थो છે તથાપિ યોગ્ય અધિકારી વિના તે પદાર્થો પ્રાપ્ત થતા નથી. પદાર્થમાત્રની પ્રાપ્તિવિષયે યોગ્ય અધિકારીની પૂર્ણ અપેક્ષા છે, કારણ અધિકારી અનુસાર ફલોદય થાય છે. સૂર્યનો પ્રકાશ જે જે પદાર્થો ઉપર પડે છે, તેઓમાંથી નિર્જીવ પદાર્થોને વિકારી કરી શુષ્ક અને ત્રિઃસત્વ કરે છે; સજીવ પદાર્થોને પુષ્ટિ આપી પ્રફુલ્લ કરે છે; મૃત્તિકાદિ અપારદર્શક પદાર્થોને પ્રકાશે છે; કાચ-સ્ફટિક-મણિ આદિ પારદર્શક પદાર્થોને તે પ્રકાશે છે પણ જ નહિ, કિન્તુ તેઓની તથા પ્રંભાવર્ધક-પધાનની સ્વચ્છતાના પ્રમાણમાં તેઓમાં તે પ્રકાશક સૂર્યનું પ્રતિ-ફલ કિંવા પ્રતિવિંબ થાય છે, અને તે ઉપરથી પુનઃ પરાવર્તન થાય છે; અને સૂર્યકાન્તમણિવિષે તો સૂર્યપ્રકાશ પ્રાપ્ત થતાં તે મણિમાં પ્રતિવિંબ-પરાવર્તન-પૂર્વક તે પ્રકાશથી અધિકમાં તેજ તથા તાપ ઉભય (મૂલ કિંવા અગ્નિ) સ્વરૂપે પ્રકટ થાય છે. અર્થાત્ વિંબમૂત સૂર્યના જ્વલન-દહન-પ્રકાશ-સમાન પ્રતિવિંબમાં પણ નિહપાધિક પ્રત્યક્-સ્વરૂપ જ્વલન-દહન-પ્રકાશનો પ્રત્યક્ષ આધિભાવ થાય છે. એમ અધિકારીના ભેદે ફલનો ભેદ થાય છે. ए नियम सर्वत्र वर्ते છે.

शास्त्रमां वेदान्तना अधिकारीनुं लक्षण आ प्रमाणे कह्यું છે:- (આ જન્મમાં વા જન્માન્તરમાં) વિધિ-વેદાન્ત-અધિકારી. यत् अधीतवेदवेदाङ्गत्वे करीने आंपातयो अधिवंत अखिल वेदार्थ जेणे, (અને बुद्धिनी शुद्धिअर्थे) आ-

૧ ઢાંક (Foil). ૨ અધ્યયન કરેલા. ૩ તાત્કાલિક-ઉપર ઉપરથી; આ આમ જ છે એવા નિશ્ચય ધિના. ૪ જાણ્યો છે.

જન્મમાં ઘા જન્માન્તરમાં નિપિદ્ધ (કર્મના) ઘર્જનપુરાસર નિત્યનૈમિત્તિક-પ્રાયશ્ચિત્ત (કર્મના અનુષ્ઠાનવતે) તથા (ચિત્તના પેકાદ્ર્યઅર્થે) ઉપાસનાના અનુષ્ઠાનવતે અખિલ કલ્મષપંતા ગયેલી તેણેકરી નિતાન્તં નિર્મલ સ્વાન્ત છે જેનું, તે (વિવેક, વિરાગ પદ્સંપત્તિ અને મુમુક્ષુતા ણ) સાધનચતુષ્ટય-સંપન્ન પ્રમાતા ણ વેદાન્તજ્ઞાનના અધિકારી છે.

શાસ્ત્રસાંપ્રદાયિક લક્ષણ ણું છે. પરંતુ દેશની દશામાં અને કાલના કારણમાં અન્તર પડતાં ણવા અધિકારી અશક્ય નહિ તો વિરલ તો પ્રતીત થાય છે જ. તેથી ણ જ્ઞેય અને પ્રાંપક વેદાન્ત-પ્રતિપાદક શાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ સતે, યથાયોગ્ય પ્રાંપક અધિકારી જ્ઞાતાના અમાયે, પ્રાપ્ય જે અત્યુત્તમ આનન્દસ્વરૂપ ફલ તેની પ્રાપ્તિ પળ ક્વચિત્ જ થાય છે.

આ ભરતખંડની ભૂમિઉપરની પ્રજાની સ્થિતિ પૂર્વરૂપનો આ દેશની વિકા- ત્યાગ કરતી અને રૂપાન્તરની પ્રાપ્તિકર્ત્રી ણવી રિણી સ્થિતિ. વિકારવતી અધુના છે. તેનું સારું પરિણામ આવે ણ હેતુથી તેમાં સંસ્કાર કરવાની અપેક્ષા છે. સંસ્કારના વે પ્રકાર છે:-દ્રવ્યાન્તરના સંયોગે ફરી આગન્તુક મલની નિવૃત્તિ (૧), અને ગુણની પ્રાપ્તિ (૨). આ દેશની આધુનિક અવસ્થામાં ઉભય પ્રકારના સંસ્કારની સંપૂર્ણ અપેક્ષા છે. તેમાં જે દાંપરૂપ મલ આવ્યા હોય તેને દૂર કરવા રૂપ મલનિવૃત્તિ (૧), અને ણમ શોધન થયે નૈસર્ગિક ગુણનો આધિર્ભાવ અને ઘૃદ્ધિ સ્વાભાવિક રીતિ ણ થાય છે તેરૂપ ગુણપ્રાપ્તિ (૨)

૧ મલિનતા. ૨ અલ્પન્ત. ૩ અન્તઃવરણ. ૪ અન્તઃવરણવિપે પ્રતિ-
વિધિત ચૈતન્ય અથવા લૌકિક વૈદિક ઘ્યવહારોમાં અધ્યાન્ત જીવ, અપ્ર પ્રમાત
શબ્દે વિવધિત છે. ૫ પમાદનાર. ૬ પામનાર.

आ आर्यावर्त देशमां पूर्वे यथावत् वर्णाश्रमनी व्यवस्था
 हृती. ए वर्णाश्रम 'धर्म' कहेवाय छे. ए सर्व-
 वर्णाश्रमधर्म.
 धारक धर्मधी आ देशनी स्थिति सुखप्रदा
 हृती. 'वर्णाश्रमधर्ममां' ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, अने शूद्र,
 ए चार 'वर्ण'; तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, अने
 संन्यास, ए चार 'आश्रम' गणाता हता. तेशोमां ब्राह्मण-
 वर्णने चारे आश्रमनो अधिकार गण्यो छे, क्षत्रियवर्णने
 संन्यास-आश्रम विना पण आश्रमनो अधिकार गण्यो छे;
 वैश्यवर्णने ब्रह्मचर्य अने गृहस्थ ए वे आश्रमनो अधिकार
 गण्यो छे; अने शूद्रने गृहस्थ-आश्रमनो अधिकार गण्यो छे.
 एम उच्चवर्गीए अधिकाधिक भार सहन-बहन करवाना
 नियमानुसार पूर्वपूर्व वर्णने एक एक आश्रमनो प्रयास
 अधिक राख्यो हतो.

स्वधर्मधी भ्रष्ट यतां, पछी अज्ञान अने आलस्य वधी
 तज्जन्य अनेक विपत्तिओ आ देश उपर आवी
 धर्मना अभावे
 सुखनो अभाव.
 पडवा मांडी. परिणामे ए चतुर्वर्णना, बहुकार-
 णोथी, अनेक विभाग थई जई ते वर्णोनी संख्या
 वधीने एवी विघ्नकरा अने दुःखप्रदा थई छे के निःसीमा.
 'वर्णो' नी एम हानिकारिका वृद्धि थई छे; अने 'आश्रम' नो क्षय
 थयो छे. वानप्रस्थ तथा यथार्थ संन्यास आश्रमनो तो प्रायशः
 लोप थयो छे. ब्रह्मचर्य अने गृहस्थाश्रम प्रचलित छे, परंतु
 तेशो पण यथेच्छ छे नहि.

एम आ देशनो विकारवती दशामां अभीष्टनो मुख्य हेतु
 जे वर्णाश्रमधर्म अने तेनां साधन तेशोनो विपर्यय थयाथी,
 सर्वेए साधनीय जे इए सुख तेनो अभाव रहे ए यथारुम छे.

ધર્મનું સ્વરૂપ આ કથ્યુ છે - જેના અનુષ્ઠાનથી ઇષ્ટ ફલનો
 ધર્મસ્વરૂપ લાભ, અને અનિષ્ટનો પરિહાર થાય એવો, રાગદ્વેષ
 રહિત સદાચારી ગુણાધિક મનુષ્યોએ ગૃહીત, અનુ-
 ષ્ઠિત, તથા આચરિત, તે 'વર્ણાશ્રમધર્મ' ધર્મસવધર્મમાં એક
 સિદ્ધાન્ત લક્ષમાં રાસવાનો છે કે. - જ્ઞાયમાન ધર્મ પુરુષાર્થ-
 હેતુ થતો નથી, કિન્તુ અનુષ્ઠીયમાન ધર્મ પુરુષાર્થહેતુ
 થાય છે જ્ઞાયમાન તો વ્રહ્મ જ પુરુષાર્થહેતુ થાય છે 'વર્ણા-
 શ્રમના' ધર્મન યયેચ્છ અનુકૂલ દેશકાલ અવે છે નહિ.
 યથી કોઈ ઇતર પ્રકારની વ્યવસ્થા ધર્મવિષયમાં અપેક્ષણીયા
 છે અને તે વ્યવસ્થા દૂરદર્શી મહાત્માઓએ વેદોક્તરીતિએ જ
 સૂચવેલી છે તેઓ દ્વિવિધ ધર્મ વદે છે.

પ્રાણીઓના સાક્ષાત્ અભ્યુદયરૂપ અભીષ્ટનો હેતુ 'પ્રવૃત્તિ-
 પ્રવૃત્તિ નિવૃત્તિ-
 લક્ષણ ધર્મ લક્ષણ ધર્મ
 લક્ષણ' ધર્મ છે, અને તે આ જગત્ની સ્થિતિનું
 કારણ છે અને નિ શ્ચેયસંરૂપ પરમ અભીષ્ટના
 હેતુ 'નિવૃત્તિલક્ષણ' ધર્મ છે અને તેનું લક્ષણ
 જ્ઞાન, ચૈરાગ્ય અને આત્મજ્ઞાનનિષ્ઠા છે.

પૂર્વે 'પ્રવૃત્તિલક્ષણ' ધર્મમાં, આશ્રમપ્રયત્નનાં સર્વ કર્તવ્યોનો
 સમાસ થતા. (૧) પ્રથમ બ્રહ્મચર્યનાં સ્વાધ્યાયનું વિધિવત્
 અધ્યયન આદિ કર્તવ્યો, તે કરીને ધર્મોચ્ચ-જિજ્ઞાસોપર્યન્તનો
 સમાપેશ થતાં, અને (૨) દ્વિતીય ગૃહસ્થાશ્રમનાં નિવિદ્ધ-
 કર્મોના ધર્મનપૂર્વક કામ્ય નિત્ય-નૈમિત્તિક પ્રાયશ્ચિત્તાદિ
 કર્મોના અનુષ્ઠાનના અને સગુણબ્રહ્મની ઉપાસનાનાં
 સમાપેશ થતાં, અને (૩) તૃતીય વૈવાહિકાશ્રમ ગૃહસ્થાશ્રમ
 થી આરંભીને ધ્યાનપ્રસ્થાશ્રમના અન્તપર્યન્ત, અન્ત કરણની

૧ સશુદ્ધ મનસાનો અત્યંત ઉચ્ચ (સ્વપ્ન) નેતુ તે પિ મે
 યમ, અપરા વિરગિનાય મુક્તનો આધિમાંર મને પિ ના આર્પી ડિ-ડિત
 નામ-પિ મેવત ૨ વિગમ્યામ ૩ ધર્મી જગવાતી શ્લોકા.

निर्मलता अने निश्चलता सारू सत्समागम अने सच्छा-
खना श्रवण-मननादिप करी योग्य साधननुं संपादन करवामां
कराती प्रवृत्तिनो समास थतो. अने 'निवृत्तिलक्षणधर्ममां'
चतुर्थाश्रम-संन्यास-तत्त्वज्ञान, वासनाक्षय, मनोनाश, ब्रह्मनिष्ठ-
तादि अन्तर्गत थतां.

आ कालमां प्रवृत्तिलक्षण धर्मनुं यल अधिक रहेवा संपूर्ण
संभव छे. कारण 'राजा कालस्य कारणं' =
अहुणा प्रवृत्ति—
धर्मना प्राबल्यनुं
कारण.
'कालनुं कारण राजा छे.' ते राजकर्त्तानी
प्रकृति ज अतिप्रवृत्ति छे. एथी प्रवृत्तिलक्षण-
धर्मने बहु पुष्टि मलयानी ज.

ज्यां कारण प्रबल होय छे त्यां कार्यनो उद्भव अनिवार्य
होय छे. एम छे तो अवे ते विषयमां मात्र व्यवस्था थवी ए
ज प्राप्त कर्तव्य छे. संसारीने अभ्युदयफलप्रद प्रवृत्तिलक्षण-
धर्म आरंभमां बहु प्रकारे उपयोगी अने उपकारक पण छे;
अने तेथो पुनः विशेषमां ज्ञाननिष्ठा-योग्यतानी प्राप्ति थाय छे.

तथापि आ देशनी पूर्वनी, अने कइंक आ समयनी पण
स्थिति मति गति कृति तथा इतिहास उपर
आ देशना स्वभा-
वसंबंधी विचार.
दृष्टि करतां आम अनुमान थाय छे:-बहु
समयथी सुस्थायिनी वंशपरंपरागता, अने
मनुष्यमात्रे, बुद्धि अने अनुभव घडतां, अभिलषिता, जे निवृ-
त्तिनो प्रकृति, ते आ देशमां स्वाभाविकी छे; ते निर्मूला थई
जाय ए तो असंभवित ज छे प्राणिपदार्थनो कालनिमित्त
विकार त्वराथी थाय छे. परंतु प्राणिपदार्थनो देशनिमित्त
विकार विलंबे थाय छे.

पूर्व कोइ कोइ काले बहु समर्थ पुरुषोप आ देशमां
परिवर्तन करवा प्रयत्न कन्या छे. तथापि तेओने सिद्धि मली
नथी. अमुक काल सुधी तेओ बाह्यविकार करी अन्ते शमी

ગયા છે; અને આ આર્ય દેશની દૃઢતા અને સ્થિતિસ્થાપકતા સવલા અને સજીવા ગણાય છે.

આ વેલામાં આ પૃથિવી ઉપર શીઘ્ર ગમનાગમનનાં સાધન વહુ સુલભ થયાં છે. પૃથ્વી દુરતા દૂર થઈ ગયા પ્રસ્તુત સમયનો પ્રમાણ જેવું થયું છે. યંત્રાન્તરના અને દેશાન્તરના લોકોનો પરસ્પર વ્યવહાર અતીવ વધતો જાય છે; સ્વતંત્રતા અને ક્ષમા એ સ્વાર્થસિદ્ધિમાં ઉપયોગી સાધન ગણાયાં છે; અને તેનું પરિણામ આ થયું છે કે:-લોકો, જ્ઞાત અજ્ઞાત, સ્વેચ્છાથી જ પરસ્પરના સંસર્ગજન્ય ગુણદોષોનું ગ્રહણ કરે છે. તે ગ્રહણ કોઈવાર વિવેકપૂર્વક હોય છે. તથાપિ વહુવાર માત્ર તાત્કાલિકી સ્વાર્થસિદ્ધિ સારૂં કિંવા લોભાર્થે જ હોય છે. અને એમ હોય છે ત્યારે તેથી પાશમાં પડ્યા જેવું થાય છે. એકવાર અમુક પક્ષમાં પતિત થયા કે પછી તે વિષયમાં મમતા થઈ અભિનિવેશ થાય છે જે કાર્ય પૂર્વે સમર્થ પરિવર્તકો વલાત્કારે કરી શક્યા ન હતા, તે આજ તાત્કાલિક સ્વાર્થદૃષ્ટિ ઉત્પન્ન થયે અનાયાસે સહસા થઈ જાય છે.

નવીન સંબંધના સ્વાર્થો આરંભમાં એવું પ્રવર્તન સ્વભાવતઃ હોય છે. તથાપિ આ આર્યદેશ વિચારપ્રધાન ગણાતો અભ્યુ છે. તેમાં નવીન સંસર્ગસંબંધનો યથાયોગ્ય અનુભવ થયે ગુણદોષની પરીક્ષા થઈ, વિવેકવિચારપૂર્વક દોષો દૂર રહ્યાં, સ્વદેશ-પરદેશના કેવલ ગુણનું ગ્રહણ થાઓ એમ ઈશ્વરને પ્રાર્થના છે.

આ સૃષ્ટિમાં એક અચલ નિયમ આવો પ્રતીત થાય છે.- સર્વ પ્રવૃત્તિ પ્રયોજનવતી છે. પ્રયોજનને ઉદ્દિશ્યા વિના મંદ મનુષ્ય પણ પ્રવર્તે નહિ. અને વિચારકોને સર્વત્ર માન્ય છે કે;-પ્રવૃત્તિમાત્રનું પ્રયોજન એ નિવૃત્તિની પ્રાપ્તિ છે. મનુષ્યમાત્ર દિવસમાં પ્રવૃત્તિ કરી રાત્રિય નિવૃત્તિના સુખને અવશ્ય રહે

એક નિયમ—
શૃત્તિનું પર્યક્ષાન
નિવૃત્તિ

છે. પૃષ્ઠાવસ્થાવિષે દ્રઘ્યનું ઉપાર્જન કરવામાં મનુષ્યો અતિશ્રમ સહે છે, તે ઉત્તરાવસ્થામાં નિવૃત્તિના સુખની આશા અર્થે જ છે. ૫. ઉપરથી સિદ્ધ થાય છે કે, પ્રવૃત્તિરૂપ સાધનથી જે સાધ્ય-ફલ અમિલપિત છે તે નિવૃત્તિ છે. અવિચારિઓ સાધનમાં જ સદા ગુંથાઈ રહે છે. પરંતુ બુદ્ધિમાન્ વિચારક સર્વત્ર સાધ્ય પ્રતિ પ્રવર્તે છે.

૧મ હોવાથી જ્યારે જ્યારે જહિ જહિ વિચારનું બલ પ્રબલ થશે ત્યારે ત્યારે તહિ તહિ પ્રવૃત્તિનું પર્યવસાન નિવૃત્તિમાં આણવા લક્ષ રાસવું, ૧, જેમ શ્રેષ્ઠ ગણાતું, અને અદુષ્ટા ક્ષતિ ગણાય છે, તેમ ગણાશે.

પ્રવૃત્તિનિવૃત્તિલક્ષણ દ્વિવિધ ધર્મ વિષે, પૂર્વે જે વ્રહ્મચર્યા-

પ્રવૃત્તિધર્મનો
પ્રાચીન અર્વાચીન
વ્રહ્મચર્યાશ્રમ

શ્રમ ગણાતો અને જે આશ્રમમાં ગુરુકુલમાં
વસી આયુષ્નો પ્રથમ ચતુર્થભાગ અધ્યયનાદિ
કર્મો વાચવા મનુસ્મૃતિઆદિમાં વિધાન કર્યું
છે, તે સદૃશ, અદુષ્ટા આ લોકમાંના વ્યવહારને

ઉપયોગિની વિદ્યાકલા યથાશક્તિ સંપાદન કરવામાં આયુષ્નો
પ્રથમ ભાગ જાય છે. અને પછી ગૃહસ્થાશ્રમનો આરંભ થાય છે.

પ્રાચીનકાલે વર્ણાશ્રમાનુસાર ગૃહસ્થાશ્રમ પ્રાપ્ત થતાં દ્વિ-

પ્રાચીન ત્રિવર્ણ
અને ગૃહસ્થાશ્રમમાં
પ્રવૃત્તિનાં કર્મો

જોને નામ વ્રાહ્મણ-ક્ષત્રિય-વૈશ્ય ૫ ત્રિવ-
ર્ણોને, ધર્મસાધક ત્રિવિધ કર્મો-અધ્યયન,
યજન, અને દાન-તો સમાન ગણાતાં. વિપ્ર
વિંધા વ્રાહ્મણમાં ઇતર ત્રિવિધ કર્મો આજી-

વિકાનાં સાધનરૂપ વિશેષ ગણાતાં. અને તે આ હતાં:-અધ્યા-
પને, યોજન, અને પ્રતિગ્રહ. ક્ષત્રિયમાં ઇતર ક્ષાત્રકર્મો

આજીવિકાનાં સાધનરૂપ વિશેષ આ ગણાતાં:-પ્રજાપાલન, શસ્ત્ર-
સ્ત્ર-ભૂસ્ત્ર કિંવા શસ્ત્રાસ્ત્રધારણ, વૈદ્યમાં ઇતર વૈદ્ય કર્મો આ-જી-
વિકાનાં સાધનરૂપ આ ગણાતાં:-કૃષિ, વાણિજ્ય, કુસીર્દ, પશુપા-
લન. શૂદ્રનાં પ્રિધાન કર્મ આ ગણાત:-શુશ્રૂષા, વિવિધ શિલ્પ,
દ્વિજાતિના હિતનું આચરણ. રાજ્યસંવંધી અનેક અધિકારને
ઉચિત કર્મોના અનુષ્ઠાનવતે પણ જીવિકા સંપાદન કરવા કોઈ
વર્ણને પ્રતિષેધ વા પ્રતિવંધ ન હતાં.

૫ પ્રકારે પૂર્વે હતું. સામ્પ્રતકાલમાં ૫ પ્રવૃત્તિલક્ષણધર્મ
અર્વાચીન ગૃહસ્થા- કશ્ક આ પ્રકારે પરિણામ પામતો અને પ્રચાર
ધ્રમમા પ્રવૃત્તિપ્રકાર થતો જણાય છે.

મનુ કલિયુગને શૂદ્ર કહે છે:-

“ શૂદ્રઃ કલિયુગઃ સ્મૃતઃ ” ।

મ સ્મૃ અ ૧ શ્લો. ૮૬.

તે તમોગુણરૂપ કલિયુગમાં શૂદ્રનું જે પ્રધાન કર્મ,-ઉપરિ-
ઓની ‘શુશ્રૂષા’ કરવી-જે પૂર્વે અધમ ગણાતું તે-ઉત્તમ ગણાવા
માહ્યું છે. પ્રસ્તુતકાલે વિપ્ર, ક્ષત્રિય, વૈદ્ય, અને શૂદ્ર ૫ સર્વ
વર્ણ સેવાતત્પર અધિક જણાય છે. લોકમાં પ્રચલિત કથન
છે કે:-“ ઉત્તમ કૃષિ, મધ્યમ વ્યાપાર, કનિષ્ઠ સેવા ” ૫ લોકો-
કિનો વિપર્યાસ થતો દેસાય છે, પરંતુ ઘાસ્તવિક તો સફલ-
પુરુષાર્થસાધક વિદ્યાભ્યાસ ૫ જ સુમહાણત્ય છે. વિદ્યાભ્યાસ વિના
અન્યત્ર ધ્રમ કરવો ૫ શૂદ્રપ્રાયતા છે.

ઘટ્ટુ કારણોથી આ દેશ વિકારાવસ્થામાં છે. તેમાં પુર્વા-
વસ્થાનો પરિત્યાગ અને અવસ્થાન્તરની પ્રાપ્તિ સંપૂર્ણ થશે કે
નહિ, ૫ તો સંશયાત્મક છે. તથાપિ ૫ વિકારાવસ્થાથી આચાર-
વિચારના ઘાટાકારમાં વિપરીતતા પ્રનીતા થાય છે, ૫ તો
પ્રત્યક્ષ છે.

ए प्रकारनी आ देशनी आधुनिकी स्थिति छे. तेमां प्राणीमात्रने अभीष्ट जे दुःखनी निवृत्ति अने सुखनी प्राप्ति, तेनां साधक साधन अने संपादकमार्ग कया छे ते यथावत् जाणवुं जोइए. अने ते ज्ञातव्य, प्रदीपवत् सर्व अर्थनां प्रकाशक जे अज्ञातार्थज्ञापक शास्त्र तेथी ज, जाणी शकय एम छे.

ते इष्टनी प्राप्तिना अने अनिष्टना परिहारना उपायना प्रकाशन विषये तत्पर जे सर्वज्ञकल्प शास्त्र, श्रेय-साधक प्रवृत्ति-निवृत्ति-मार्ग. ते शास्त्र, सर्व देशकालने अनुकूल घाय पवो प्रसिद्ध प्रवृत्ति निवृत्ति-लक्षण धर्मनां श्रेयःसाधक सन्मार्ग, उपदिशे छे.

आ नामरूपक्रियात्मक जगत् त्रिगुणात्मका मायानुं परिणाम छे. ते ऐश्वरी मायाशक्तिने 'प्रकृति' पण कहे छे. ते प्रकृति 'अपरा' तथा 'परा' भेदथी द्विविधा छे. अनर्थकरी संसारबन्धनात्मिका जडभूता प्रकृति अपरा नाम निरुष्टा छे; प्राणधारणनिमित्तभूता जीवभूता प्रकृति परा नाम प्रकृष्टा छे. ते अपरा प्रकृति 'क्षेत्र' नामे पण कथाय छे, अने परा प्रकृति 'क्षेत्रज्ञ' नामे पण कथाय छे. क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ, किंवा प्रकृति-पुरुष, ए पर्याय छे. ए प्रकृतिद्वयद्वारा सर्वज्ञ ईश्वर जगत्नुं कारण छे.

ए सत्त्वरजस्तमोगुणात्मिका प्रकृतिमां सत्त्वगुणनो तथा तमोगुणनो अभिभव यइने रजोगुण वधे छे, त्यारे रजोगुणनुं कार्य जे प्रवृत्ति ते थाय छे. ए प्रकारे प्रकृति-माया-अविद्या छे, ते सर्वनी जननी छे, अने तेनुं कार्य प्रवृत्ति होवाथी,

१ ज्ञानना हेतु अनेक विद्यानां प्रस्थानोपनयी उपवृद्धित वर्धित-अने हि तनु ज शासन करनार ते शास्त्र. २ तिरस्कार, डबाण.

કર્મ.

દેહાદિની ચેષ્ટા; કર્તાનું ઇંષ્ણિતતમ અને ક્રિયાપ કરી વ્યાપ્તમાન. આ જગત્સુ ચક્રની પ્રવૃત્તિનો

હેતુ કર્મ છે. અર્થાત્ કર્તાના વ્યાપારોપ કરી જે સધાય; ક્રિવા કર્તાની ક્રિયાઓ કરી જે પ્રાપ્ય, તે 'કર્મ.' કર્મમાત્ર ક્રિયાજન્ય- છે અને ધર્મ-અધર્મનાં જનક છે.

'કર્મ' જે શ્રુતિસ્મૃતિમાં 'ધર્મ' નામથી પ્રસિદ્ધ છે, તે ત્રિવિધ કર્મ. કાર્યિક-ચાત્રિક-માનસિક ચેષ્ટારૂપે (ક્રિયારૂપે) ત્રિવિધ છે.

કર્મના વે પ્રકાર છે:-વિહિત અને નિપિદ્ધ. જેમાં ઇષ્ સાધનતાજ્ઞાન હેતુ છે એવું, પુરુષને પ્રવૃત્તિના (કરવાના) નિમિત્ત વેદે વાંધન કચ્ચું છે તે 'વિહિતકર્મ;' અને જેમાં ઇષ્સાધનતાજ્ઞાન હેતુ છે એવું, પુરુષને નિવૃત્તિના (ન કરવાના) નિમિત્ત વેદે વાંધન કચ્ચું છે તે 'નિપિદ્ધ કર્મ' છે. એ વિહિત-નિપિદ્ધ કર્મને ધર્મ અધર્મ કર્મ, પણ કથે છે. ધર્મકર્મનું ફલ, અનુકૂલ વિપયના તથા ઇન્દ્રિયના સંયોગ(તેનેકરી)જન્ય (એવું) સુખ છે; અને અધર્મકર્મનું ફલ, પ્રતિકૂલ વિપયના તથા ઇન્દ્રિયના સંયોગ(તેનેકરી)જન્ય (એવું) દુઃખ છે. અને તે સર્વ સુખદુઃખ શરીરવાકમાનેકરી ભુજ્યમાન છે.

'વિહિતકર્મ'ને, કેવલ 'કર્મ'ની અને 'નિપિદ્ધકર્મ'ને વિકર્મ'ની સંજ્ઞા છે. એ પ્રકારદ્વયથી શેષ જે તૂળ્ણીભાવ તે 'અકર્મ' કહેવાય છે.

યદ્યપિ વિહિત-નિપિદ્ધ કર્મ, ધર્મ-અધર્મનાં જનક છે, તથાપિ તે વેથી શેષ રહેતિ જે સ્વભાવસિદ્ધા ક્રિયાઓ છે,- જેવીકે ગમન, આગમન, શૌચ, ક્ષ્યાદિ ઉદાલીન સદ્ગજ ક્રિયાઓ- તે ક્રિયાઓરૂપ કર્મ, ધર્માધર્મનાં જનક નથી ગણાતાં.

‘વિહિતકર્મ’ એ-શુદ્ધિ, ઉપાસના, યજ્ઞાદિક-શુભકર્મ છે, તે શુભકર્મ, સ્વઅનુગ્રાહનદ્વારા પુણ્યરૂપ અપૂર્વગું જનક છે, અને સ્વર્ગાદિફલક છે; અને તેથી શ્વેદેવયોનિ પ્રાપ્તા થાય છે.

‘નિપિદ્ધકર્મ’ એ, અશુદ્ધિ, અસત્ય, હિંસાદિક-અશુભકર્મ છે. તે અશુભકર્મ, સ્વઅનુગ્રાહનદ્વારા પાપરૂપ અપૂર્વગું જનક છે, અને નરકાદિફલક છે; અને તેથી અનિષ્ટતિર્યગાદિયોનિ પ્રાપ્તા થાય છે.

એ વિહિત-નિપિદ્ધ કિંવા શુભાશુભ ઉભયવિધ કર્મનો મિશ્રકર્મ. સમાવેશ જેમાં થાય છે એ ‘મિશ્રકર્મ’ છે. તે મિશ્રકર્મ, સ્વઅનુગ્રાહનદ્વારા પુણ્યપાપરૂપ અપૂર્વગું જનક છે અને ઉચ્ચાવચ મનુષ્યજન્મફલક છે, તેથી દ્યામિશ્ર મનુષ્ય જાતિમાં ઉચ્ચાવચ યોનિ પ્રાપ્તા થાય છે. તેમાં અધિક પુણ્ય અને ન્યૂન પાપ જે મનુષ્યમાં પ્રતીત થાય તે મનુષ્ય, દેવસમાન ગણાય છે; અને અધિક પાપ અને ન્યૂન પુણ્ય જે મનુષ્યમાં પ્રતીત થાય તે મનુષ્ય, પશુસમાન ગણાય છે.

એ શુભ, અશુભ, અને મિશ્ર, કર્મને કોઈ ‘શુક્લ,’ ‘કૃષ્ણ’ અને ‘કૃષ્ણશુક્લ’ એવી સંજ્ઞા પણ આપે છે.

વિહિતકર્મ ઘલી ચતુર્વિધ છે:-નિત્ય (૧), નૈમિત્તિક (૨), વિહિતકર્મભેદ. કામ્ય (૩), અને પ્રાયશ્ચિત્ત (૪).

પુનઃ પ્રકારાન્તરે સાર્વિક (૧), રાજસ (૨), અને તામસ (૩), ભેદથી કર્મ ત્રિવિધ છે; અને તેઓનાં અનુક્રમે ફલ,- સુખ, દુઃખ અને મોહ,-છે; કિંવા પ્રકાશ, પ્રવૃત્તિ અને પ્રમાદ છે.

એ શુભ-અશુભ કર્મો પોતાથી અવ્યવહિત ઉત્તરકાલમાં

૧ કર્મની સૂક્ષ્માવસ્થા અને ફલની પૂર્વાવસ્થા એ અપૂર્વ કહેવાય છે, અને અટ્ટપ પણ કહેવાય છે. ૨ પશુજન્મ. ૩ જ્ઞાન. ૪ અંતરાયદિત.

अनुक्रमे धर्म-अधर्मनी किंवा पुण्य-पापनी उत्पत्ति करे छे. ते धर्माधर्म अन्तःकरणविषये (वासनारूपे-बीजरूपे) रहें छे; अने कालान्तरे तैआनां फलरूप सुख-दुःख थाय छे.

ए प्रकारे शुभ-अशुभ कर्मों ज धर्म-अधर्मरूप अपूर्वद्वारा सुख-दुःखरूप फलना हेतु छे. परंतु ए बीजो अने तैआनां फलो एआना मध्ये कालनो अन्तराय बहु पढे छे. एथी शुभाशुभकर्मजनित धर्माधर्मरूप कारणथी सुख-दुःखरूप कार्य-फल-थाय छे, ए नियमनो अनुबन्ध सामान्य मनुष्योए समजातो नथी. किन्तु यथाविधि शास्त्राभ्यासी महात्माओए ए नियम यथावत् गण्यो छे. एथी सुखना लाभसाध प्रयत्नमान जनोए पुण्य-कर्मोंमां प्रवृत्तिअर्थ प्रयत्न अने पापकर्मोंमां निवृत्तिअर्थ प्रयत्न कर्तव्य छे. कारण के सुखदुःखना हेतु, प्रत्येक मनुष्यनां पोतपोतानां जे शुभाशुभ कर्मों छे, ए ज छे. अध्यात्मरामायणमां उपदिशे छे के:-

“सुखस्य दुःखस्य न कोपि दाता
परो ददातीति कुबुद्धिरेषा ।
अहं करोमीति वृथाऽभिमानः
स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः ॥”

अथोष्वाकाण्ड. सर्ग ६—६.

ए शुभाशुभ कर्मथी घे अंकुर थाय छे:- (१) वासना अने

१ सुखदुःखनो कोई पण दाता नथी, पर (अन्य वा ईश्वर) दे छे एहुं कहेहुं ए कुबुद्धि छे; 'हुं कलं छुं' ए पण खोटुं अभिमान छे. केम के स्वकर्मनां सुखवते गुंथायलो लोठ छे. अर्थात् सुखयुक्ता पुत्तलीने सुखधार नचावे छे, तेम कर्मरूप सुखवते युक्त लोठने तेनां पोताना स्वकर्मोंना चालनेकरी ईश्वर विविधस्थितिमां मूके छे-स्वकर्मानुसार सुखदुःख छे. २ पूर्वपूर्व अग्यासेकरी चित्तमां घसता-चित्तगत-संस्कार.

(૨) અદૃષ્ટ. શુભક્રિયાજન્ય કર્મથી શુભ-
 કર્મનાં અંકુરદ્વય. વાસના, અને ધર્મરૂપ અદૃષ્ટ, એ વે અંકુર
 થાય છે. અને અશુભક્રિયાજન્ય કર્મથી અશુભ વાસના, અને
 અધર્મરૂપ અદૃષ્ટ, એ વે અંકુર થાય છે. શુભવાસનારૂપ અંકુર-
 થી પછી શુભકર્મમાં પ્રવૃત્તિ થાય છે; અને ધર્મરૂપ અદૃષ્ટ-
 અંકુરથી પછી સુખનો ભોગ થાય છે; અને એ જ પ્રકારે
 અશુભવાસનારૂપ અંકુરથી પછી અશુભકર્મમાં પ્રવૃત્તિ થાય છે;
 અને અધર્મરૂપ અદૃષ્ટઅંકુરથી પછી દુઃખનો ભોગ થાય છે.

એ વાસનારૂપ તથા અદૃષ્ટરૂપ અંકુરદ્વયમાંથી, વાસનારૂપ
 અંકુરનો તો ઉપાયે કરી નાશ થઈ શકે છે, અને અદૃષ્ટરૂપ
 અંકુરનો તો ફલની ઉત્પત્તિ વિના ફોઈ પ્રકારે પણ નાશ થઈ
 શકતો છે નહિ. અશુભકર્મથી ઉત્પન્ન થયા જે અશુભવાસના-
 રૂપ અંકુરો તેઓનો સત્સંગાદિ ઉપાયેકરી નાશ થાય છે;
 અને શુભકર્મથી ઉત્પન્ન થયા જે શુભવાસનારૂપ અંકુરો તેઓનો
 કુસંગાદિથી નાશ થાય છે. એ રીતિએ પ્રવૃત્તિના હેતુ જે
 વાસનારૂપ અંકુરો તેઓનો પુરુષપ્રયત્નેકરી નાશ થાય છે.
 અને ભોગના હેતુ જે અદૃષ્ટરૂપ અંકુરો તેઓનો ભોગેકરી
 નાશ થાય છે. પુરુષપ્રયત્ન તથા અદૃષ્ટની પવી વ્યવસ્થાથી
 ઉભયની સફલતા પ્રતિપાદિતા થાય છે.

કર્માનુરૂપભોગસંબંધમાં એક સવલા શંકા મનુષ્યે સાંભ-
 લવામાં આવે છે કે:-આ અસાર સંસારમાં ધારંધાર આમ
 પ્રતીત થાય છે:-અધર્મી દુરાચારી મનુષ્યો સુખી અને ધર્મી
 સદાચારી મનુષ્યો દુઃખી; એથી સુખદુઃખનું ધર્મઅધર્મ એ
 અવ્યભિંચારી કારણ છે એ આશંકનીય છે. એનું સમાધાન
 કંઈક આ પ્રમાણે કરાય છે.

૧ મુખ્યકુળનો સાધાત્કાર. ૨ અસાધિત. કાર્યકારણમાયમંગલદિત.
 નિત્યસંબંધશાસ્ત્ર.

લિંગદેહમાં જન્મજન્માન્તરના પૂર્વસંસ્કારરૂપે વસતા શુભ-

વાસનારૂપ અંકુરમાં ભેદ થઈ શકે છે, અદૃષ્ટરૂપ અંકુરનો ભોગથી જ ક્ષય થાય છે.

અશુભ કર્મના જે વાસનારૂપ તથા અદૃષ્ટરૂપ અસંરૂપ અંકુરો છે, તેઓમાંથી શુભ-અશુભવાસનારૂપ અંકુર અનુસાર શુભ-શુભ શુદ્ધિ થાય છે. શુભશુદ્ધિઅનુસાર ધર્માચરણ ક્રિયા સદાચાર થાય છે. અથવા

અશુભશુદ્ધિ અનુસાર અધર્માચરણ ક્રિયા દુરાચાર, થાય છે. તે શુભાશુભ વાસનારૂપ અંકુરમાં અમુક ઉપાયે-કરી ભેદ કરી શકાય છે એ પૂર્વે જાણ્યું છે. અર્થાત્ વાસનારૂપ અંકુરમાં અન્યરૂપની પ્રાપ્તિરૂપ વિકાર, અને મલની નિવૃત્તિ તથા ગુણની પ્રાપ્તિરૂપ સંસ્કાર, કરી શકાય છે. પરંતુ અદૃષ્ટરૂપ અંકુરનો તો ભોગે કરી જ ક્ષય થાય છે.

અથે જો, જે કર્મના ફલદાનનો કાલ આવે ત્યારે તે જ કર્મના અદૃષ્ટરૂપ તથા વાસનારૂપ અંકુર પણ તે અને તે જ હોય તો, શુભકર્મના અદૃષ્ટરૂપ અંકુરનું ફલ સુખ અને શુભ-વાસનારૂપ અંકુરનો પરિણામ ધર્માચરણ, અથવા અશુભકર્મના અદૃષ્ટરૂપ અંકુરનું ફલ દુઃખ, અને અશુભવાસનારૂપ અંકુરનો પરિણામ અધર્માચરણ, એ એક જ વ્યક્તિમાં એક જ કાલે દેખવામાં આવે. પરંતુ એવો નિયમ છે નહિ. વાસનામાં ઉપાયેકરી વિકાર અને સંસ્કાર થાય છે, અને એથી ભેદ પડે છે. તેથી એક જ કર્મના અદૃષ્ટનાં ફલ સુખદુઃખ, અને વાસનાના પરિણામ શુભાશુભશુદ્ધિજન્ય ધર્મ-અધર્મ-આચરણ, એઓમાં અન્તર પડી જાય છે. અધર્મરૂપ અદૃષ્ટના ફલદાનનો કાલ આવ્યાં હોય ત્યારે દુઃખનો ભોગ થાય છે, અને તે કાલે શુભવાસના થઈ હોય તો, તે શુભવાસના શુભશુદ્ધિદ્વારા તે ભોક્તાને ધર્માચરણમાં પ્રેરે છે. તે પ્રસંગે યદ્યપિ ભોક્તાને

અધર્મરૂપ અદૃષ્ટનું ફલ-દુઃખનો ભોગ-તો થાય છે, તથાપિ તે દુઃખનું વલ, શુભવાસનાના પ્રતાપથી, વહુ ન્યૂન થાય છે. અને યથી વિપરીતા ઘટનામાં તદનુસાર થાય છે. એક જ પ્રકારનાં અદૃષ્ટનાં ફલ જે સુખદુઃખ, તે અનેક વ્યક્તિઓમાં ન્યૂનાધિક વલથી વિચિત્ર પરિણામને પામે છે, તેનું પણ પૂર્વોક્ત જ કારણ પ્રતીત થાય છે.

વલી કર્મસંબંધમાં એક અન્ય વિચાર પણ છે. ક્રિયાજન્ય

ક્રિયાના પ્રકાર— કર્મ હોય છે. તે કર્મમાં સ્વકારણીભૂતા
અદૃષ્ટફલા-દૃષ્ટ- ક્રિયાના ગુણ અનુગત હોય છે. ક્રિયા દ્વિવિધા
ફલા. છે:—અદૃષ્ટફલા તથા દૃષ્ટફલા.

અદૃષ્ટફલા ક્રિયા ફલ ઘીધા વિના શાન્તા થાય છે, અને તેનું ફલ કાલાન્તરે મળે છે. જેમ કૃષિ-
અદૃષ્ટફલ ક્રિયા. લક્ષણા ક્રિયા થઈને નાશ પામે છે; પછી

ઘીજના અને ક્ષેત્રના સંસ્કાર, તથા તેઓની રક્ષા યાઓના જ્ઞાનવાન્ જે કર્તા તેની અપેક્ષા રાખી તે કૃષિક્રિયા કાલાન્તરે કૃષિકર્તે (ધાન્યાદિ) ફલ આપે છે. અથવા સેવાલક્ષણા ક્રિયા થઈને નાશ પામે છે; પછી કોઈ પૃથક્ સેવ્યની (રાજાદિની) સેવાના સંસ્કારવતી યુદ્ધિની અપેક્ષા રાખી, તે સેવાક્રિયા કાલાન્તરે સેવકને (ધનમાનાદિ) ફલ આપે છે; તેમ અદૃષ્ટફલા સર્વા ક્રિયા, તાત્કાલિક ફલ ઘીધા વિના, શાન્તા થાય છે, અને તે ક્રિયાનાં અનુરૂપ ફલ કાલાન્તરે મળે છે; સેવાલક્ષણક્રિયાસમા ય અદૃષ્ટફલા ક્રિયા સંબંધ-માં કોઈ પૃથક્ ફલદાતાની અપેક્ષા છે. કારણ કાલાન્તરે ઘનાર ફલ કોઈ એક મેઢ્યને અર્ધીન છે. ય સર્વે અદૃષ્ટફલ-ક્રિયાના ફલદાતા મેઢ્ય, -નિઢ્ય કર્તૃકર્મફલ-વિભાગા, દેશ

કાલનિમિત્તવિપાક-વિમાગ્ન, સર્વના આત્મભૂત, સર્વક્રિયાફલ-પ્રત્યક્ષસાક્ષી;-સર્વજ્ઞ ईश्वर છે.

ક્રિયા કિંવા કર્મનું જે ફલ પ્રત્યક્ષ અથવા અનુમાનથી પ્રતીત હોય નહિ, કિન્તુ શાસ્ત્રથી જણાય, તે 'અદટ્ટ' ફલ કહેવાય છે. અદટ્ટફલની ઉત્પત્તિમાં તે કર્મને જેટલા સંહાય શાસ્ત્રે વાંધન કર્યાં હોય, તે સહાય સહિત તે કર્મ, ફલનો હેતુ થાય છે; કેવલ કર્મ નહિ. અદટ્ટફલના હેતુ જે કર્મ, તે શ્રદ્ધાસહિત શાસ્ત્રે વાંધન કર્યાં છે તો તેવાં કર્મમાં તે શ્રદ્ધા-નિયમ ભક્તિની અપેક્ષા છે. અદટ્ટફલના હેતુ કર્મો જો શ્રદ્ધાવિ-રહિત હોય તો યથેચ્છ અદટ્ટફલ થાય નહિ યથાસંભવ છે. અર્થાત્ જેમ કૃષિકર્મમાં ઘોજ, પૃથિવી, જલ, ઉષ્ણતા, પ્ર-યત્નાદિ સહાયની અપેક્ષા છે, તો તે સર્વ હોય છે તો જ ફલ થાય છે, તેઓની ન્યૂનતા હોય તો યથેચ્છ ફલ થતું નથી; તેમ વ્યાવહારિક અને શાસ્ત્રીય સર્વ અદટ્ટફલમાં છે. સાંગોપાંગ નહિ કિન્તુ વ્યંગોપાંગ કર્મ કરે છે અને પછી તેના ફલની સિદ્ધિ થતી નથી ત્યારે સ્વપ્રમાદના-સ્વકૃતન્યૂનતાના-દોષને ન જોતાં અન્યત્ર શાસ્ત્રાદિ ઉપર દોષારોપણ સામાન્ય મનુષ્યો કરે છે. પરંતુ તે યથાર્થ નથી.

“મંત્રે^૧ તીર્થે દ્વિજે દેવે દૈવજ્ઞે ભેષજે ગુરૌ ।

યાદૃશી ભાવના યત્ર સિદ્ધિર્ભવતિ તાદૃશી ॥”

પ માનસિક સૃષ્ટિસંબંધમાં કેટલેક અંશે યાસ્તવિક છે.

દટ્ટફલા ક્રિયા અનન્તરફલા છે નામ,-ફલ દર્શને શાન્તા
દટ્ટફલા ક્રિયા થાય છે. અર્થાત્ ક્રિયા અને ક્રિયાના
ફલમાં અન્તર પડતું છે નહિ, કિન્તુ તત્કાલ

૧ સદ્ચર, સાથે હોવા જોઈએ તે. ૨ 'મંત્રમાં, તીર્થમાં, દ્વિજમાં, દેવમાં, દૈવજ્ઞ (વ્યોતિષી)માં, ઔષધમાં, અને ગુરુમાં-જેવી ભાવના જેમા હોય તેવી સિદ્ધિ થાય છે.'

ફલ થઈ ક્રિયા સમાપ્તા થાય છે. તેમાં પૃથક્ ફલદાતાની અપેક્ષા નથી. જેમ ગમનક્રિયાનું ફલ ઇચ્છેલા સ્થાનની પ્રાપ્તિ; અથવા ભોજનક્રિયાનું ફલ ક્ષુધાની (નિવૃત્તિરૂપ) તૃપ્તિ છે; તે પ્રાપ્તિરૂપ અથવા તૃપ્તિરૂપ ફલને આપીને ગમન-ક્રિયા અથવા ભોજનક્રિયા શાન્તા થાય છે. તેમ દૃષ્ટફલક્રિયારૂપ વહુ વિપયોમાં છે.

ક્રિયાજન્ય કર્મના અદૃષ્ટરૂપ અંકુરમાંથી થતાં ફલોમાંથી કેટલાંક શીઘ્રકાલે ભોગ દેવાને ઉન્મુલ્ક થાય છે. અને કેટલાંક કાલાન્તરે ભોગ દેવાને પણ ઉન્મુલ્ક થાય છે. યથી ઇ કર્મના જ અદૃષ્ટરૂપ તથા વાસનારૂપ અંકુરના ફલોદયના કાલમાં અન્તર પડી જાય છે. ઇ કારણથી અધર્મી મનુષ્યો સુખી અથવા ધર્મી મનુષ્યો દુઃખી, ઇહું વિપરીત પ્રતીત થાય ત્યારે તેનો હેતુ-અદૃષ્ટના ફલોદયનું અને વાસનાના સંસ્કારનું અન્તર થાય છે ઇ-માનવો યથાચત્ છે.

ઇ ઉપરથી ઇક સિદ્ધાન્ત લક્ષમાં રાખવાનો છે કે.— અદૃષ્ટનો તો ભોગથી જ ક્ષય થવાનો છે. તેથી ઇ અંશ ઉપર ઉપેક્ષા રાખી, વાસનારૂપ અંશને જ શુદ્ધસંસ્કારી કરવા મનુષ્યે પ્રયત્ન કરવો ઇ જ ઉચિત અને સફલ છે. અન્તઃકરણની વાસનાઓ શુભા તથા સુખદુઃખના ભોગકાલે પણ પુનઃ તે શુભવાસનાઓ ક્રિયામાળ શુભકર્મોં પ્રતિ જ પ્રેરે છે. અને તેથી અન્તે શુભકર્મોંમાં જ પ્રવૃત્તિ રહી તેવા મનુષ્યો નિઃશ્ચેયસના અધિકારી થાય છે.

પુનઃ પ્રકારાન્તરે કર્મ ત્રિવિધ છે. જેમ ઇક જ કાલ, અવ-
સ્થાભેદે, ભૂત-વર્તમાન-ભવિષ્યત્-ઈવી સંજ્ઞાને પ્રાપ્ત
સંચિત-પ્રારબ્ધ-
આગામિ કર્મ. થાય છે, તેમ ઇક જ કર્મ અવસ્થાભેદે કરી,
સચ્ચિત (૧), પ્રારબ્ધ (૨), તથા આગામિ (૩), ઇ
ત્રિવિધ સંજ્ઞાને પ્રાપ્ત થાય છે.

અનેક અતીત જન્મવિપે સંચય થયેલાં ફલારંભરહિત કર્મો તે 'સચ્ચિત' કહેવાય છે. એ 'સચ્ચિતકર્મ' અંતઃકરણ-ઉપહિતસાક્ષિનિષ્ઠ જે અજ્ઞાન, તે અજ્ઞાનની જે 'આચરણશક્તિ' તેમાં સ્થિત હોય છે. અને તે કર્મનો નાશ જ્ઞાનરૂપ અગ્નિ એ થાય છે.

અનેક સચ્ચિત કર્મોમધ્યે જે પરિપક્વ થયેલ અને જે ઈશ્વરે ળ્છાથી આ વર્તમાન શરીરનાં આરંભક કર્મો તે 'પ્રારબ્ધ' કહેવાય છે. એ 'પ્રારબ્ધકર્મ' અંતઃકરણઉપહિતસાક્ષિનિષ્ઠ જે અજ્ઞાન તે અજ્ઞાનની જે 'વિશેષશક્તિ' તેમાં સ્થિત હોય છે. અને સ્વજનિત સુખદુઃખના ભોગરૂપ ફલને આપે છે. અને તે કર્મનો નાશ પ્રારબ્ધભોગ સમાપ્ત થયે જ થાય છે.

પ્રારબ્ધકર્મજનિત ભોગોને ભોગવતે સતે, જે આ વર્તમાન શરીરવિપે ક્રિયમાણ અને ભવિષ્યત્ કાલમાં ફલપ્રદ કર્મો તે 'આગામિ' કહેવાય છે. એ 'આગામિકર્મ,'-અંતઃકરણનો કર્તૃરૂપ-ચૃત્તિમાન્ અંશ જે અહંકૃતિ, તે અહંકૃતિનું સાક્ષીસહ જે ધ્રમજ-તાદાત્મ્ય-તે ધ્રમજતાદાત્મ્યમાં સ્થિત હોય છે. એ તાદાત્મ્યને જ ચિત્-જડ-ગ્રંથિ, કિંવા, હૃદય-ગ્રંથિ કહે છે. એ ભવિષ્યત્કાલમાં ફલપ્રદ 'આગામિકર્મોનો' નાશ,-શ્રુતિ-આચાર્યના અનુગ્રહવલેકરી 'અહં બ્રહ્માસ્મિ' (હું બ્રહ્મ છું) એવા-બ્રહ્માત્મૈક્યસાક્ષાત્કારથી થાય છે. અર્થાત્ એવા સાક્ષાત્કારવાન્ વિદ્વાન્ને એ આગામિ કિંવા ક્રિયમાણ કર્મનો લેપ થતો નથી.

સામાન્યતઃ કર્મફલનો ભોગ થયે જ ક્ષય થાય છે, એ કર્મના ફલનો ભોગ સિદ્ધાન્ત છે. તેઓમાં પણ પ્રવૃત્તિફલ જે પ્રા-થી જ ક્ષય. રબ્ધકર્મ તેઓ તો વિશેષતઃ ઉપભોગેકરી જ ક્ષીયમાણ છે.

“નાશુક્તં ક્ષીયતે કર્મ કલ્પકોટિશતૈરપિ ।

અવશ્યમેવ ભોક્તવ્યં કૃતં કર્મ શુભાશુભમ્ ॥

‘કરેલુ શુભઅશુભકર્મ અવશ્ય જ ભોક્તવ્ય છે. કલ્પનાં કોટિશતકોષ્પકરી પણ ભોગાયા વિનાના કર્મનો ક્ષય થતો નથી’ એમ છે તો સ્વહિતેચ્છુકે કર્મ કરતાં વહુ જ સાવધાન રહેવું યોગ્ય છે.

પૂર્વોક્ત સશ્ચિત, પ્રારબ્ધ, અને આગામિ, એ ત્રિવિધ કર્મોમાં મધ્યનુ પ્રારબ્ધકર્મ તેનો ઉપભોગેકરી જ ક્ષય થાય છે, અને તે વલ્લવત્તર ગણાય છે.

“પ્રારબ્ધં વલ્લવત્તરં શ્વલ્લુ વિદાં ભોગેન તસ્ય ક્ષયઃ ॥”

વિ ચુ ૪૫૪ ।

પ્રવૃત્તિલક્ષણ ધર્મના અનુસારી સર્વ જનો કાયતી સિદ્ધિ-અર્થ પ્રયતમાન હોય છે. તે સિદ્ધિને કોઈક પ્રારબ્ધને અર્ધીના ગણે છે. કોઈક પુરુષપ્રયત્નને અર્ધીના ગણે છે, કોઈક ઉભયને અર્ધીના ગણે છે. એ પક્ષનયના ચિપ્પયમા શબ્દાસમાધાનના વહુ વિચારો છે તેઓમાથી સ્વરૂપનો સાર કઈક આ પ્રકારે છે

સ્વકાર્યના જનનસાદ આરભાયલા પ્રારબ્ધ કર્મના,-દૈવ, માય્ય, વિધિ આદિ શબ્દા-પયાય ગણાય છે

એ પક્ષપ્રયમાર્થી પુરુષકાર તથા પ્રારબ્ધ એ ઉભયથી કાર્યની સિદ્ધિના ઘાદીઓનો પક્ષ યુક્તિયુત અને વહુમત, વિચારકોષ્પ ગણાય છે કેવલપ્રારબ્ધ ઘાદીને શુધાદિક્ષની તૃપ્તિસાદ અગલેષામાં અને રોગાદિની નિવૃત્તિસાદ ઔપધ ઉપચારમા પ્રયત્તાયાન દેરતીને, અને કેવલપુરુષપ્રયત્તાયાર્દીને અમીપ્તિતાયમાં અતીય પ્રયત્તા કરે સતે નિષ્ફલ ઘપ્પગ જોરને, પ્રારબ્ધ-પુરુષપ્રયત્તાના સમુચ્ચયવાદી વિચારે છે કે, ઘાયસિદ્ધિમાં ઉભયની અપેક્ષા છે તેમાં કેટલાંક કાર્યની સિદ્ધિમાં પુરુષપ્રયત્તા મુખ્ય

છે અને પ્રારબ્ધ ગૌણ છે. અને કેટલાંક કાર્યની સિદ્ધિમાં પ્રારબ્ધ મુખ્ય છે અને પુરુષપ્રયત્ન ગૌણ છે. પરંતુ સર્વ કાર્યોની સિદ્ધિમાં ન્યૂનાધિક ઉભયની અપેક્ષા છે. શાસ્ત્રકારો અન્ધ-પંગુન્યાય ઘર્ષે છે તે, એ સંબંધમાં યથાચરિત છે. એક વ્યક્તિના શરીરમાં પણ ચક્ષુ અને પાદ ઉભયનો ઉપયોગ, રૂપને જાંવામાં અને ગમન કરવામાં, થાય છે. કહિં જઈ કઈ રૂપ જોવાનું હોય તેમાં ચક્ષુનો મુખ્ય ઉપયોગ હોય છે; અને પાદનો ગૌણ ઉપયોગ હોય છે. કઈ ગમન કરવાનું હોય તેમાં પાદનો મુખ્ય અને ચક્ષુનો ગૌણ ઉપયોગ હોય છે. આ અવિદ્યા-મૂલક સંસારનો સ્વભાવ અને વ્યવસ્થા જ એવાં જણાય છે કે, અનેક સાધનોએ કરી એક કાર્ય સિદ્ધ થાય. તેમાં પણ ઉત્પત્તિસંબંધમાં પુરુષપ્રયત્ન મુખ્ય જણાય છે, અને ભોગ થઈ ક્ષય થવામાં પ્રારબ્ધ મુખ્ય ભાસે છે.

પુનઃ ફલસિદ્ધિ સંબંધમાં પ્રારબ્ધ, જડપદાર્થ-વિષય-તુલ્ય છે, અને પુરુષપ્રયત્ન, ચૈતન્ય-ઇન્દ્રિય-તુલ્ય છે. એ ઉભયનો સંયોગ થયાથી ભોગ-ફલ-સિદ્ધ થાય છે. ભોગ્યપદાર્થ તો ઉત્પન્ન થપ્લા જ હોય છે. તે ભોગ્યપદાર્થનો, અને ભોક્તાનો સંયોગ, ભોગમાં અપેક્ષિત છે; તે સંયોગ થવામાં પુરુષપ્રયત્ન આવશ્યક છે. પુરુષપ્રયત્ન ન થાય તો જડ ભોગ્ય જ્યાં હોય ત્યાં જ રહે અને તેનો ભોગ અને ક્ષય થાય નહિ.

સૃષ્ટિ કિંવા જગત્ ઈશનું કાર્ય અને જીવનું ભોગ્ય છે. ઈશ્વર-નિર્મિતસૃષ્ટિના પદાર્થો એક જ રૂપે રહે છે. તે ભોગ્યપદાર્થોમાં ભોક્તા જીવની સુદ્ધિવૃત્તિ નાના હોવાથી તેઓના ભોગમાં ઘટ્ટા મેદ થાય છે.

ઈશ્વરસૃષ્ટ એક મૂલ્યવાન મણિ છે. તે ઘણ જીવોએ ઢીઢો. તેમાં ઘે લોમી હતા અને ઘિજો વિરક્ત હતો. તેમાંથી જે જીવને

તે મણિ મળ્યો તે જીવ હૃદ્યો, જે જીવને તે મણિ ન મળ્યો તે કોપ્યો, અને તૃતીય જીવ જે વિરક્ત હતો તે ન હૃદ્યો ન કોપ્યો. એમ ઈશ્વરસૃષ્ટિ એક જ મણિમાં જીવોની નાનારાગદ્વેષાદિ-વૃત્તિઅનુસાર પ્રિય અપ્રિય ઉપેક્ષ્ય એવા ત્રણ ભેદ થયા. એ ત્રણે ભેદ જીવોને રચિત છે. સર્વ જીવોને રાગદ્વેષાદિથી સુસદુઃખાદિ આપી વંધન કરનાર સ્વરચિત સૃષ્ટિ જ છે. इत्यादि पंचदशीना द्वैतविवेकमां सिद्ध कन्तुं છે.

એમ ઈશ્વરકૃતસૃષ્ટિ અને જીવકૃતસૃષ્ટિ છે. તેમાં ઈશ્વર-કૃતા સૃષ્ટિનું નિવારણ અશક્ય છે. તેથી તે સંબંધમાં પ્રારબ્ધને પ્રધાન ગણવું યોગ્ય છે. જીવકૃતા સૃષ્ટિમાં યથેચ્છ વ્યવસ્થા કરી શકાય છે. એ સૃષ્ટિ જીવના અન્તઃકરણની વૃત્તિને અધીના છે. વસ્તુતઃ જીવકૃતા સૃષ્ટિ તે જીવના જ સંકલ્પવિકલ્પનું પરિણામ છે. તે જીવ પુરુષપ્રયત્ન કરી યથાર્થદર્શી થાય તો તે મનોજય અને વાસનાક્ષય કરવા સમર્થ થાય છે જે કેવલ પુરુષપ્રયત્નાધીન છે, અને તેમ થયે જીવકૃતસૃષ્ટિના દુઃખદ પરિણામ દૂર થાય છે. અર્થાત્ જીવકૃતસૃષ્ટિમાં પુરુષ-કાર પ્રધાન છે એ સ્પષ્ટ છે. એથી જીવકૃતસૃષ્ટિસંબંધમાં પુરુષ-પ્રયત્નને પ્રધાન ગણવો યોગ્ય છે. ફલના ઉપભોગ સમયે ઉભય-સૃષ્ટિમાં પ્રારબ્ધ પ્રવેશે છે. અને 'પ્રારબ્ધનો ભોગેકરી જ ક્ષય થાય છે,'-એ કથન એ પ્રકારે સફળ થાય છે. પ્રારબ્ધ ઉભય-સૃષ્ટિમાં પ્રવેશી સુખ-દુઃખના સાક્ષાત્કારરૂપ ભોગ આપીને ક્ષયને પામે છે.

એ ઉભયસૃષ્ટિની એ પ્રકારે વ્યવસ્થા કરે એક અન્ય લાભ પણ થાય છે. ઈશ્વરકૃતસૃષ્ટિમાંથી ફલની ઉત્પત્તિમાં પ્રારબ્ધ પ્રધાન ગણાયાથી, તજ્જન્ય અનિવાર્ય પ્રસંગોમાં કરાતા વ્યર્થ પ્રયાસો અને કાલક્ષયાદિ ઘંચે છે; તેઓને સંરક્ષી પુરુષપ્ર-

‘(ફલની સિદ્ધિ) માનુષ વિના નામ પુરુષપ્રયત્ન વિના, દેવથી નામ પ્રારબ્ધથી થતી નથી; અને દેવ વિના માનુષથી થતી નથી. જેમ એક ઊરણિ અગ્નિ ઉત્પન્ન કરી શકતી નથી’ તેમ એક જ દેવ વા માનુષ અર્થની સિદ્ધિ કરી શકતું નથી.

‘કૃપિવૃષ્ટિસમાયોગાત્ દૃશ્યન્તે ફલસિદ્ધયઃ ।

‘કૃપિ (લેતી) રૂપ પૌરુષ અને વૃષ્ટિરૂપ દેવ એ ઉભયને સારો યોગ થયે ફલની સિદ્ધિઓ દેખાય છે.’

પ્રાક્રમ કિંવા દેવ એ વીજરૂપ છે; આધુનિક ક્રિયમાણ કર્મ કિંવા પુરુષકાર એ, પૃથિવી, જલ, ઉષ્માના સંસ્કારરૂપ છે. ઉભયના યોગથી ફલસિદ્ધિ થાય છે. પુરુષકાર-સદાચાર પુનઃ અમીપ્સિતાર્થના અનિષ્ટને શોષે છે; અને ઇષ્ટને પોષે છે.

એમ પુરુષકાર, દૈવનો-પ્રારબ્ધનો-જનક છે, તથા ફલસિદ્ધિનો ઉત્પાદક અને પોષક છે. એ તત્ત્વ ગણ્યું છે.

એ રીતિએ પુરુષકાર અને પ્રારબ્ધ એઓનો જનકજન્યભાવસંબંધ સ્પષ્ટ પ્રતીત થાય છે.

(નરનારી આદિ દેહધારી) સર્વપુરુષની જેમાં પ્રીતિ છે એવા

પુરુષાર્થમા પુરુષ-
પ્રયત્ન અને પ્રારબ્ધ. ‘અર્થ’ તે પુરુષાર્થ. તે પુરુષાર્થને ચતુર્વિધ ગણી ‘પુરુષાર્થચતુષ્ટય’ કહે છે. તે પુરુષાર્થચતુષ્ટયનાં

નામ-ધર્મ (૧), અર્થ (૨), કામ (૩), અને મોક્ષ

(૪) છે. એ પુરુષાર્થચતુષ્ટયમાં પુરુષના સર્વ કર્તવ્યનો સમાવેશ થાય છે. એ ચતુર્વિધ પુરુષાર્થ સિદ્ધ કરવા યથામતિ સર્વનો પ્રબલ અભિલાષ તથા પ્રયત્ન હોય છે. તે પુરુષાર્થની સિદ્ધિસારૂ પુરુષકારની અને પ્રારબ્ધની આ પ્રકારે વ્યવસ્થિતિ કલ્યાણકારિણી તથા સુખપ્રદા છે.

૧ ઊરણિ નામે વૃક્ષના લાકડાના એ કટકાના ઘર્ષણથી અગ્નિહોત્રાદિ સારૂ અગ્નિ પ્રકટ કરતા. તે અગ્નિ માત્ર એક કટકાથી ઉત્પન્ન થાય જ નહિ તેમ.

आदि अन्तना 'धर्म' तथा 'मोक्ष' ए द्वयनी सिद्धि पुरुष-

कारनी अर्घाता छे, अने मध्यना 'अर्थ'
धर्म अने मोक्ष-
मा पुरुषप्रयत्ननी तथा 'काम' ए वेनी सिद्धि प्रारब्धनी
प्रधानता अधीना छे. कारण धर्मज्ञ विद्वान् आर्यो जे

क्रियमाणने प्रशंसे छे ते धर्म, तथा प्राप्य मोक्ष, ए पुरुष-
तंत्र छे. मनुष्ये विद्यासंपन्न, सद्बिचारी, सत्यवादी, सदा-
चारी, परोपकारी, स्वधर्मनिष्ठ, सद्गुणी इत्यादि थनुं एमां
ते स्वतंत्र छे. तेमां कई अन्यनी अपेक्षा नथी. मनुष्यनी
वाह्यस्थिति रंकनी हो किंवा राजानी हो, तथापि जो तेनो
संकल्प दृढ होय तो, ते सद्गुणीमां श्रेष्ठ थई शके छे.
गुणमां श्रेष्ठ पदे पहोचवामां कोइने किञ्चित् पण परतंत्रता
नथी; श्रेष्ठगुणी थनामां परनो प्रतिबंध सफल थई शकतो
नथी. प्राप्य जे परमपुरुषार्थ मोक्ष तेमां पण समानरीतिप
मनुष्य स्वतंत्र छे. ए उभय पुरुषतंत्रा पुरुषार्थनी सिद्धिमां
पुरुषकार किंवा पुरुषप्रयत्न ज प्रापक समर्थ साधन छे.

मध्यना 'अर्थ' अने 'काम' ए परतंत्र छे. जे क्षेत्र; धन
धान्य पशु आदि पदार्थो भोगनां साधन छे
अर्थ अने काम-
मा प्रारब्धनी प्र
धानता ते 'अर्थ' कहेवाय छे, अने ते अर्थोपकरी
थाय छे. जे-इन्द्रियोप वाञ्छित, सकाम
पुण्यादिना फलरूप, विषयनो यथेच्छ भोग,-ते 'काम'
कहेवाय छे.

ए अर्थ अने काम उभयमां परनी अन्यनी-आवश्यकता

१ "यमार्थाः क्रियमाणं हि शंसन्त्यागमवेदिनः ।
स धर्मो, यं विगर्हन्ति तमधर्मं प्रचक्षते ॥"

विश्वामित्र. ।

છે, તેથી તે પરતંત્ર ગણાય છે. તેની પ્રાપ્તિ ईश्वरखृष्टिमांथी જ થાય છે. તેમાં પ્રારબ્ધ જ પ્રધાન હોવાથી પુરુપપ્રયત્ન કરે સતે પણ અર્થની અને કામની સિદ્ધિ થતી નથી; એ સર્વને ઘારંવાર પ્રત્યક્ષ છે. શ્ત્યાદિ કારણોથી પરતંત્ર “અર્થકામ” પ્રારબ્ધાધીન ગણાય છે.

યથાર્થ દૃષ્ટિએ એ પ્રમાણે વ્યવસ્થા છે. તથાપિ લોકદૃષ્ટિ-
તેથી વિપરીતા જ જણાય છે. પ્રાયશઃ સર્વ
વ્યવહારમા અ-
જ્ઞાનતાથી તેઓની
વિપરીતતા મનુષ્યો પરતંત્ર ‘અર્થ-કામ’ની સિદ્ધિ સારુ
પુરુપપ્રયત્ન મરણપર્યંત કન્યાં જ જાય છે,
અને સ્વતંત્ર ‘ધર્મ-મોક્ષ’ની સિદ્ધિઅર્થ પુરુપ-
કારમા પ્રમાદ રાહી, તેને પ્રારબ્ધાધીન માની, તે સારુ કદં
પુરુપપ્રયત્ન કરતા જ નથી. એમ કહ્યું હોય તો ચાલે.

એવા વિપરીત ગ્રહણે કરી સ્વતંત્ર પરતંત્ર ઉભય વર્ગના ફલથી અધિચારી મનુષ્યો ઞપ્ત થઈ દુર્ભાગી રહે છે, અને જન્મથી મરણપર્યંત દુઃખી થઈ આ દુર્વાર નિસાર સંસારની ઘટમાલામાં ભ્રમણ કન્યા જાય છે.

એ સંબંધમાં લક્ષમાં રાહવા યોગ્ય એકા આખ્યાયિકા છે.
કોઈ એક ગ્રામના લોક, ઉદરના અને નેત્રના વ્યાધિથી વહુ
પીડાતા હતા. તેમાં એક શ્રદ્ધાલુ જન
એ સંબંધમાં
આખ્યાયિકા સન્તની સેવામાં પરાયણ થઈ વસતો હતો.
તે ગ્રામ મહાયાત્રાના ધૌર્ય માર્ગે ઉપર હતુ, તેથી
ર્યાં અનેક અતિથિ સાધુસંતનાં ગમનાગમન થતાં. એક પરિ-
વ્રાજક મહાત્માએ પેલા શ્રદ્ધાલુને પૂછ્યું કે:-આ ગ્રામના સર્વ
લોક દુઃખી કેમ દેખાય છે ? તેણે ઉત્તર આપ્યું કે:-મહારાજ !
અત્રસ્થ લોક ઉદરના તથા નેત્રના રોગથી પીડિત હોવાને
લીધે દુઃખિત છે. તે કૃપાલુ મહાત્મા, ઉભય વ્યાધિનાં ઔષ્ધો
સમાન દેખાતી કાચકૃપીમાં, આપીને સિધાવ્યા. તે ઔષ-

धयी ए ग्रामना लोकोनो रोग निवृत्त थवा मांड्यो, अने पेला थद्वालुने वैद्यराजनी पदधी मली अने धननी सारी प्राप्ति थवा मांडी. पछी ते वैद्यराज परण्या अने तेनो विस्तार थवा लाग्यो; तेम तेम खीसन्ताननी सेवामां परायण थवा अने सन्तमेवा विसन्या.

एकवार एम थयुं के ते वैद्यराजना कोइ बालके पेला औपधनी कूपीओ विपरीत मूकी दीधी. वैद्यराजे ते जाण्युं नहि तेथी उदरना औपधने नेत्रना औपधरूपे अने नेत्रना औपधने उदरना औपधरूपे चापरवा अने आपवा मांड्यां. ए विपरीत प्रकारे अपायला औपधनो जेणे जेणे उपयोग कर्यो तेने तेने अधिक पीडा थई. ते उमय औपधोना उपरथी सर्वनो विश्वास उठी गयो, अने पेला वैद्यराजनी जीविका पण परचारी, ते वैद्ये तर्क कर्यो के,—महात्माए ते कूपीओना मुखभागमां रोगहर औपध मूकेलुं अने नीचेना भागमां रोगकर औपध मूकी कपट कर्नुं छे. परिणाम ए थयुं के ते वैद्यनो व्यापार गयो अने ते ग्रामवासी पण रोगग्रस्त अने दुःखी थवा लाग्या.

ए आख्यायिकामां, जेम यथार्थ ग्रहणथी फलसिद्धि थई सर्व स्वस्थ अने सुखी थयां हतां, अने अज्ञानजनित विपरीत ग्रहण थतां सर्व रोगग्रस्त अने दुःखी थयां, तेम पुरुषप्रयत्न अने प्रारब्ध संबंधमां आ जगत्मां थतुं जणाय छे. पुरुषप्रयत्नरूप औपध ए, धर्म-मोक्ष संबंधमां सिद्धिसाधक छे; अने तेओनुं विपरीतग्रहण तथा प्रारब्धरूप औपध ए, अर्थकाममां उपयोगि साधन छे. तेओनो विपरीत प्रयोग थाय छे, तेथी आ जगत्, असार संसारना आधि व्याधि अने उपाधिना सन्तापमां भग्न छे. पुण्यना परीपाकथी सत् समागमनी

સીમામાં અચાઈ વિપરીતપ્રદ્યથી મુક્ત અને યથાર્થગ્રહણના સંબન્ધી થવાય તો જ સન્તાપ શાન્ત થઈ સ્વસ્થતા અને સુખ સંપ્રાપ્ત થઈ તરાય એમ છે.

સામાન્યરીતિય એમ પ્રારબ્ધ કર્મ અને પુરુષકારની વ્યવસ્થા છે, તથાપિ શિષ્ટોનો આવો અભિપ્રાય સ્પષ્ટ જણાય છે કે:—કર્મનો જનક પુરુષપ્રયત્ન કિંવા પુરુષકાર છે, યથી પુરુષપ્રયત્ન બલિષ્ઠ અને સર્વાર્થસાધક છે. તેમાં પણ મન-જે પશુવત્ પુરુષોને સંસારબંધનનો હેતુ છે-તે મનનો જય કરવામાં અને ઘાસનાનો ક્ષય કરવામાં તો પુરુષકાર જ પ્રધાન છે. અને એ જ કારણથી તત્ત્વજ્ઞાન-મનોનાશ-ઘાસનાક્ષયરૂપ જીવન્મુક્તિના અનુપમ સુસપ્તસંગમાં પુરુષપ્રયત્ન પ્રધાનપદે નિરૂપાય છે. શ્રીવસિષ્ઠ મુનિ શ્રીરામચંદ્ર પ્રતિ યોગવાસિષ્ઠમાં ઘદે છે કે:-

“સર્વમેવેહ હિ સદા સંસારે રઘુનન્દન ।

સમ્યક્પ્રયત્નાત્ સર્વેણ પૌરુષાત્સમવાપ્યતે” ॥

‘અહો રઘુનન્દન ! આ સંસારમાં સારા પ્રયત્નથી અને પૌરુષપથી સર્વે (જનોએ) કરી સર્વ જ (પદાર્થ) સદા સારી રીતિય પમાય છે’.

જ્યાં યથેચ્છ પ્રાપ્તિ થતી નથી ત્યાં પુરુષપ્રયત્નરૂપ યથા-યોગ્ય સાધનસંપત્તિની પ્રાયશઃ વિકલતા કે અભાવ હોય છે. પુરુષપ્રયત્ન સર્વસાધક છે. એ સુનિશ્ચિત છે. કારણ કે પુરુષપાર્યચતુષ્ટયમાં જે આદિ અન્તના પરમ પુરુષાર્થ ‘ધર્મ-મોક્ષ’ એ તો પુરુષકારઅધીન જ છે.

એમ મધ્યે પ્રારબ્ધ અને પુરુષકારસંબંધી પ્રાસન્નિક વિચાર જાણીને તેઓ ઉભયમાં અનુસ્યુત જે કર્મનું અનુષ્ઠાન-જે પ્રવૃત્તિ-

लक्षण धर्मनुं अंग होवाथी प्रकृत विषय छै-ते गहनगति-
मत् कर्म विषये पुनः कइंक आ प्रमाणे विचार छै.

प्रवृत्तिलक्षण धर्म ए आ जगतनी स्थितिनुं कारण छै.
अने प्राणीओना साक्षात् अभ्युदयनो हेतु
कर्म प्रकृतिसिद्ध
ज छै. छै, तथा परंपराए ज्ञानोत्पत्तिनो हेतु छै,
ए शास्त्रसिद्ध अने युक्तिसिद्ध छै. एम
होवाथी प्राणीमान सदा कर्ममां प्रवृत्त होय छै.

“कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥” गी. ३।९

ए यथार्थ छै. अवश सर्व प्राणी प्रकृतिना सत्वरजस्तमो-
गुणोपकरी कर्म करे छै. एक क्षण कोइ प्राणी कदाचित्
अकर्मकृत् थई रही शकतो नथी.

“ नहि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः ॥ ”

म. गी. १८।११

‘देहभृत् नाम देहात्माभिमानवान् तेणे अशेषथी कर्मेनि
त्यजवानुं शक्य नथी.’ केटलाएक विमूढो मनवते विष-
योने स्मरता सते हस्तादि कर्मेन्द्रियोने संयमीने-खंची
राखीने-बेसे छै तेओ पापाचार छै. तेओना कर्तां जेओ
ज्ञानेन्द्रियोने नियमीने फलामिसन्धिवर्जित थई कर्मेन्द्रियो-
वते कर्मनुं अनुष्ठान करे छै, तेओ विशेष (अधिक सारा) छै.
कारण के फलथी, अकर्म कर्तां कर्म अधिकतर छै. अकर्मथी
तो शरीरयात्रा पण सिद्धा -थती नथी. जगत् रूप चक्रनी
प्रवृत्तिनो हेतु जे कर्म ते अधिकारीओए अधश्य कर्तव्य छै.
आत्मज्ञाननिष्ठानी योग्यतानी प्राप्तिअर्थ पण अनात्मज्ञ अधि-
कारीओए कर्मानुं अनुष्ठान कर्तव्य छै. व्यास नारायण पण
बदे छै के -

“ અયમેવ ક્રિયાયોગો જ્ઞાનયોગસ્ય સાધકઃ ।
કર્મયોગં વિના જ્ઞાનં કસ્યચિન્નૈવ દૃશ્યતે ॥ ”

‘આ જ ક્રિયાયોગ જ્ઞાનયોગનો સાધક છે. (કારણ) કર્મ-યોગ વિના કોઈને જ્ઞાન (થયું હોય એમ) દેખાતું જ નથી.’

કર્મનિષ્ઠાને જ્ઞાનનિષ્ઠાપ્રાપ્તિનું હેતુત્વ છે. આ જન્મમાં ઘા
કર્મનિષ્ઠા જ્ઞાન- જન્માન્તરમાં અનુષ્ઠિત કર્મોને ઉપાત્તદુરિત-
નિષ્ઠાપ્રાપ્તિનો ક્ષયનું હેતુત્વ છે. તે હેતુત્વેકરી કર્મોને
હેતુ છે. સત્ત્વશુદ્ધિનું કારણત્વ છે. તે સત્ત્વશુદ્ધિના
કારણત્વેકરી જ્ઞાનોત્પત્તિદ્વારા જ્ઞાનનિષ્ઠાના હેતુ અનુષ્ઠિત કર્મો
થાય છે. એમ કર્મનિષ્ઠારૂપ ઉપાયેકરી જ્ઞાનનિષ્ઠા લઘ્યાત્મિકા
છે. અર્થાત્ કર્મોનું અનુષ્ઠાન છે એ સમ્યક્દર્શનનો-જ્ઞાનનો-
ઉપાય છે; એથી સત્ત્વશુદ્ધિઅર્થ અને ईશ્વરાર્થ કર્મો-યોગી-
કર્મો કરે છે.

“ જ્ઞાનમુત્પદ્યતે પુંસાં ક્ષયાત્ પાપસ્ય કર્મણઃ ।

યથાઽઽદર્શતલે પ્રહ્યે પદ્યન્ત્યાત્માનમાત્મનિ ” ॥

‘જેમ નિર્મલ દર્પણના તલમાં પુરુષ પોતાને દેખે છે; તેમ
પાપકર્મનો ક્ષય થયે પુરુષને જ્ઞાન ઉત્પન્ન થાય છે, અને તે
જ્ઞાનથી આત્મામાં (અન્તઃકરણમાં) આત્માને (પરમાત્મસ્વરૂપને)
દેખે છે.’ અર્થાત્ કર્મનું અનુષ્ઠાન છે તે વિદ્યોત્પત્તિનો અને બ્રહ્મ-
સાક્ષાત્કારરૂપ જ્ઞાનનો હેતુ છે.

કર્મેનિ કરવા, ન કરવા, અન્યથા કરવા પુરુષ સમર્થ છે
એથી કર્મો પુરુષવ્યાપારતંત્ર ગણાય છે.

કર્મના સકામ અને નિષ્કામ એવા ધે ભેદ છે. શૂંચમાણ,
સ્મર્યમાણ ઘા અનુભૂત સુખના હેતુ. આત્માને
પર્મના ધે ભેદ અનુકૂલ, ઇન્દ્રિય ગોચર, પ્રાપ્ત રૂદ વિષય,
સકામ નિષ્કામ. તેમાં જે તૃષ્ણા-રાગ-તે કામ કહેવાય છે. તે

‘કામ’ સહિત જે કર્મ તે સકામ કર્મ છે. શરીરની પ્રવૃત્તિનો હેતુ હોવાથી તે સકામ-કર્મને ‘પ્રવૃત્તકર્મ’ પણ કહે છે; અને તે વિશિષ્ટફલપ્રદ છે. હંદ અમુત્ર અર્થના ભોગની તૃષ્ણારહિત જે કર્મ તે ‘નિષ્કામ’ કર્મ કહેવાય છે. તે નિષ્કામકર્મ વ્રહ્મજ્ઞાનના અભ્યાસપૂર્વક હોય તો સંસારની નિવૃત્તિનો હેતુ હોવાથી તેને ‘નિવૃત્તકર્મ’ પણ કહે છે; અને તે મુક્તિપ્રદ છે. જ્યાંસુધી મનુષ્યને ભોગવિષે આસક્તિ હોય અને આત્મજ્ઞાનની ઇચ્છા ઉત્પન્ના ન થઈ હોય ત્યાંસુધી તે સકામ કર્મ કરે છે; અને તે સકામ કર્મ સંસારનો હેતુ છે. સત્સમાગમ, વિચાર, અનુભવાદિપ્રકરી વૃદ્ધિની વૃદ્ધિ થાય છે ત્યારે પુરુષને વ્રહ્મજ્ઞાનનો જિજ્ઞાસા થાય છે. તેવા જિજ્ઞાસુ નિષ્કામ કર્મના અધિકારી છે. નિષ્કામકર્મ અન્તઃકરણની શુદ્ધિદ્વારા જ્ઞાનનો હેતુ છે.

પરમ પદ દષ્ટિપ કર્મ અનિવાર્ય અને આવશ્યક પ્રતીત થાય છે. પરંતુ અન્યદષ્ટિપ જોતાં કર્મ, વન્ધનસ્વ-કર્મથી વંધ.

ભાવ અને અનિષ્ટકારી પણ ગણાય છે. કારણ

આ દુઃખમય નિઃસાર સંસારની આપત્તિનો મુખ્ય હેતુ કર્મ છે. ભોગમાત્રનું આયતન જે શરીર તે રૂપ વિલક્ષણા વંદિશાલામાં જીવમાત્ર વંધાઈ રહે છે, અને તેમાં સુખવિયોગનિમિત્ત મોહ, તથા દુઃખસંયોગાદિનિમિત્ત શોક, પઓના આઘાતથી પ્રવર્તિત ચક્રમંડલમાં પડી, તે જીવો પવા ભ્રમિત અને મૂર્છિત થઈ જાય છે કે, અતીવ દુઃખ અનુભવતે સતે પણ તેઓને તે શરીરરૂપ વંદિશાલામાંથી મુક્ત થવાના યોગ્ય ઉપાય અને પ્રયત્ન કશિત્ જ સુઝે છે. ૫ વંદિશાલામાં ઘસી ભોગને ભોગવવા અર્થ કર્મોં કરે છે, અને તે કરેલાં

કર્મોના અનુસાર પુનઃ ફલ ભોગવે છે. એમ ઘટ્ટીયન્નવત્ પુનઃ પુનઃ જીવમાત્રનું આવર્તન થયાં જ જાય છે. મુહૂર્ત પળ ન સહેવાય પણ નવ દશ માસ ગર્ભવાસનું કષ્ટ સહી જીવ જન્મે છે. પછી જ્યાંસુધી કર્મોપાત્ત આયુષ્ હોય છે ત્યાંસુધી ઘટ્ટીયન્નવત્ ગમનાગમનઅર્થ, ઘા કુલાલચક્રઘત્ તિર્યક્ષ્મણ સારૂ કર્મ કરતો જીવે છે, અને ક્ષીણાયુષ્ થયે કર્મનિર્દિષ્ટ લોકમાં જાય છે. એમ જન્મ-મરણરૂપ ઘોર દુસ્તર સંસાર-સાગરમાં, ઉત્તરણ પ્રતિ નિરાશ થઈ, ભ્રમ્યાં કરે છે.

“કર્મણા યદ્યતે જન્તુર્વિદ્યયા ચ વિમુચ્યતે ।

તસ્માત્ કર્મ ન કુર્વન્તિ યતયઃ પારદર્શિનઃ” ॥

મહાભારત-શાન્તિપર્વ-મોક્ષધર્મ અ. ૨૮૧।૭.

શુકાનુશાસનવિષયે ઘટે છે કે:-‘કર્મે કરી જંતુ વંધાય છે, અને વિદ્યાઈ કરી મૂકાય છે. તેથી પારદર્શી યતિઓ કર્મ કરતા નથી પરંતુ વિદ્યાઈ કરી મુક્ત થાય છે.’

રામગીતામાં પણ ગાય છે કે:-

“ક્રિયા શરીરોદ્ભવહેતુરાદતા

પ્રિયાઽપ્રિયૌ તૌ ભવતઃ સુરાગિણઃ ।

ધર્મેતરૌ તત્ર પુનઃ શરીરકં

પુનઃ ક્રિયા ચક્રવદીર્યતે ભવઃ ॥ ૮ ॥

અજ્ઞાનમેવાસ્ય હિ મૂલકારણં

તદ્જ્ઞાનમેવાત્ર વિધૌ વિધીયતે ।

વિદ્યૈવ તન્નાશવિધૌ પટીયસી

ન કર્મ તજ્ઞં સવિરોધમીરિતં ॥ ૯ ॥

અધ્યાત્મરામાયણ ઉત્તરભાષ્ય. સર્ગ ૫.

‘આદતાં ક્રિયા, શરીરના ઉદ્ભવનો હેતુ છે, તેમાં સુરાગી-

ઓના ધર્મ અધર્મ તે, પ્રિય અપ્રિય (સુખ-દુઃખ-જનક) થાય છે; (તે જન્મમાં કરેલાં કર્મો કરી) પુનઃ શરીર થાય છે, પુનઃ ક્રિયા થાય છે, એમ ચક્રવત્ ભવ નામ સંસાર કહેવાય છે. (ભ્રમતા ચક્રનો ઉપરનો ભાગ નીચે અને નીચેનો ભાગ ઉપર આવે જાય છે તેમ, જન્મ અને કર્મ સંબંધમાં જન્યજનકભાવ છે.) એનું મૂલ કારણ અજ્ઞાન જ છે. એ વિધિમાં નામ-સંસારનિવૃત્તિલક્ષણ કર્તવ્ય અર્થમાં-અજ્ઞાનનું હાનનાશ-એ જ (સાધન) આજ્ઞાપાય છે. તે અજ્ઞાનના નાશમાં વિદ્યા જ પટીયંસી છે, અજ્ઞાનથી જનિત કર્મ (અજ્ઞાન નાશ કરવામાં સમર્થ) નથી, કેમ કે સવિરોધી જ 'નાશક' કહ્યું છે. (કર્મ અને અજ્ઞાન વિરોધી નથી પરંતુ વિદ્યા-જ્ઞાન-જ અજ્ઞાનનું વિરોધી છે. તેથી જ્ઞાનથી જ અજ્ઞાનનો નાશ થાય છે. કર્મથી નહિ.)

કર્મનો અને તેના ફલનો સદા અંવ્યભિચાર છે. કર્મના પ્રકારાનુસાર તત્કાલ અથવા કાલાન્તરે કર્મનું ફલ થયા વિના રહેતું જ નથી. ક્રિયાપૂર્વક ફલનો ઉદય છે. ક્રિયા વિના-કર્મ વિના-ફલ થતું જ નથી.

એમ કર્મ પ્રકૃતિસિદ્ધ-સ્વાભાવિક-છે, આવશ્યક છે, કર્તવ્ય છે, તેમ લાભહાનિપ્રદ-ઇષ્ટઅનિષ્ટફલકારિ-છે, इत्यादि અનેક-વિરુદ્ધકોટીમત્ પુણ કર્મ છે; તથાપિ કર્મનું ઇષ્ટ ફલ થાય અને તેના અનિષ્ટ ફલથી યંચાય, એવી કોઈ વિશિષ્ટ વ્યવસ્થા હોવી જોઈએ, અને છે ભક્તવત્સલ શ્રીભગવાને તેવી વ્યવસ્થા શ્રેયોર્થી સારુ ગીતામાં ગાઈ છે. તેનો સારભૂત આશય ફરક આવો છે.

કર્મ કરતાં કર્મના ફલની તૃષ્ણા કરવી નહી, કિન્તુ કર્મનાં શુદ્ધ ફલ થાય અને અનિષ્ટ ફલ ન થાય એવી વ્યવસ્થા. સિદ્ધિઅસિદ્ધિમાં સમત્વબુદ્ધિયુક્ત થઈ કેવલ ઈશ્વર-આરાધનાર્થ કર્મો કરવાં. કારણ કે, કર્મોનું ફલ જન્મમરણરૂપ સંસાર છે, પરંતુ ઈશ્વરાર્પણબુદ્ધિપૂર્વક સમત્વબુદ્ધિયુક્ત સ્વધર્મનાં કર્મોમાં જે મનુષ્ય પ્રવર્તે છે તે વંધ છે સ્વભાવ જેનો એવાં કર્મોના પળ વંધસ્વભાવને નિવર્તે છે; અને તે ઈશ્વરાર્પિત કર્મોના સાધને કરી સત્ત્વશુદ્ધિરૂપા તથા જ્ઞાનોત્પત્તિલક્ષણા સંસિદ્ધિને પામે છે.

પૂર્વે વિદ્વાનો પળ સત્ત્વશુદ્ધિસાધનભૂત કર્મના ક્રમેકરી મોક્ષ પ્રતિ જવા પ્રવૃત્ત હતા. યદ્યપિ પૂર્વકૃત ધર્માધર્માદિ સંસ્કાર વર્તમાન જન્માદિમાં અભિવ્યક્ત થયા હોય પરૂપા પ્રકૃતિ, તે સ્વપ્રકૃતિસદૃશ સર્વ જન્તુ ચેષ્ટા કરે છે, -અને ઇન્દ્રિયોનાં શબ્દાદિ શુદ્ધ વિષયે રાગ અને અનિષ્ટ વિષયે દ્વેષ અવશ્યંભાવી છે, -તે રાગદ્વેષપુરઃસર જ ડ્યારે પુરૂપની 'પ્રકૃતિ' સ્વકાર્યમાં પ્રવર્તે છે, -ત્યારે સ્વધર્મનો પરિત્યાગ અને પરધર્મનું અનુષ્ઠાન થાય છે. તથાપિ શાસ્ત્રદૃષ્ટિ વિદ્વાનો તે પ્રકૃતિને ઘણાં ન થતાં પુરૂપકારકતે સ્વધર્મમાં પ્રવર્તે છે.

કર્મોના ફલનો સંગ ત્યજીને જે જન સર્વ કર્મો ઈશ્વરાર્પણ કરે છે, તે જન, -જેમ જલે કરી પત્તપત્ર લેપાતું કર્મો ઈશ્વરાર્પણ કરવાં નથી તેમ, -તે કર્મો કરી લેપાતો નથી. તે કર્મોનું ફલ કેવલ સત્ત્વશુદ્ધિમાત્ર જ તેને થાય છે.

એ પ્રકારે કર્મયોગનિષ્ઠાનું પરમ રહસ્ય ઈશ્વરશરણતા છે; ઈશ્વરાર્પણબુદ્ધિ કરેલાં કર્મો ધર્માધર્મવંધનરૂપ થતાં નથી.

પરંતુ સત્ત્વશુદ્ધિદ્વારા જ્ઞાનપ્રાપ્તિનાં સાધન થાય છે. તે જ સર્વ દિતોનું દિતતમ છે. અને કર્મયોગનિષ્ઠાનું ફલ સર્વ યેદાન્ત-સારવિહિત સમ્યગ્દર્શન-જ્ઞાન-છે.

સંક્ષેપમાં પ્રવૃત્તિલક્ષણ ધર્મનાં કર્મોનાં ફલની સીમા ચક્રા-
 કારા અને પરિમિતા છે. કર્મ અજ્ઞાનમૂલક
 છે. અજ્ઞાનથી ભેદશુદ્ધિ થાય છે. જેમાં ભેદ-
 શુદ્ધિ થાય છે, તેમાં અનુકૂલ જ્ઞાન કિંવા
 પ્રતિકૂલ જ્ઞાન થાય છે. જેમાં સુષ્ટનું સાધન અનુકૂલ
 જ્ઞાન થાય છે તેમાં રાગ થાય છે; જેમાં દુઃખનું સાધન પ્રતિ-
 કૂલ જ્ઞાન થાય છે તેમાં દ્વેષ થાય છે; તે રાગદ્વેષયુક્ત
 પ્રાણીપ કરેલાં શુભાશુભ કર્મો ધર્માધર્મરૂપ અપૂર્વનાં જનક છે.
 તેઓનાં ફલ, સ્વર્ગની, નરકની, યા આ લોકની, પ્રાપ્તિ છે.
 તર્હિ કર્મફલનો ભાગ થાય છે, કિંવા કર્મફલ ભોગવતાં નવાં
 કર્મ થાય છે. તે કર્મના ફલ ભોગવવા પુનઃ જન્મમરણ થાય
 છે. એમ સામાન્ય રીત્યા સર્વ પ્રાણીઓને પુનરાવૃત્તિ કિંવા
 દુઃસહ દુઃખમય સંસાર ચક્રમંડલમાં ભ્રમણ થાય છે. તેમાં
 કોઈ વિરલ પુરુષને અનેક જન્મોનાં સુરુતેકરી પુણ્યસંચય
 થયો હોય તેના યોગે સત્સાહુનો અને સત્સમાગમનો યોગ
 થાય છે. તેવા સત્સમાગમી વિરલ પુરુષો આસક્તિવર્જિત
 થઈં ઈશ્વરાર્પણશુદ્ધિય સ્વપર ઉપકારનાં સ્વધર્મનાં મહત્ શુભ-
 કર્મો કરે છે, તેથી સત્ત્વશુદ્ધિ થાય છે; જેથી નિઃશ્રેયસરૂપા
 જ્ઞાનનિષ્ઠાની યોગ્યતા આવે છે; અને પૂર્વોક્ત ચક્રમંડલમાંથી
 મુક્ત થવાનું ઠાર મળે છે. પ્રવૃત્તિલક્ષણ ધર્મનું જે ફલ એજ
 અશુદ્ધ છે. પરંતુ તર્હિ વિરમવાનું નથી. એ સાધનથી સાધ્ય
 જે નિઃશ્રેયસ છે તેની પ્રાપ્તિના માર્ગે ચઢાય ત્યારે જ એ પ્રવૃત્તિ-
 લક્ષણ ધર્મથી જનિત અશુદ્ધ સફલ ગણાય છે; અને તેમ

થપ જ મનુષ્યનો ઉત્તરોત્તર ઉચ્ચતર ઉચ્ચતમ થવાનો ઉત્સાહ તથા મહાશય, તે સાર્થક થાય છે. તેમ થવામાં મુખ્ય અધિકરણ અન્તઃકરણ છે.

પ્રાણીનું તે અન્તઃકરણ કિંવા સર્વ, દર્પણ સમાન છે. જેમ
 અંતઃકરણની શુદ્ધિ. દર્પણમાં યથાવત્ પ્રતિબિંબ ગ્રહણ કરવાની યોગ્યતામાં નિર્મલતાની અને નિશ્ચલતાની પૂર્ણ અપેક્ષા છે, તેમ અન્તઃકરણમાં યથાર્થ જ્ઞાન ગ્રહણ કરવાની યોગ્યતામાં પણ અન્તઃકરણની નિર્મલતાની તથા નિશ્ચલતાની સંપૂર્ણ અપેક્ષા છે.

જેમ શુભકર્મો અંતઃકરણની નિર્મલતાના હેતુ છે; તેમ શુદ્ધ-દેવની ઉપાસના, એ અંતઃકરણની નિશ્ચલતાનો હેતુ છે.

જેમ સ્થૂલ દેહમાં ઘાત, પિત્ત, કફ, એ ત્રિદોષ છે, અને તેના નિવારણાર્થ આયુર્વેદ છે; તેમ અન્તઃકરણમાં પણ મલ, વિદ્વેષ, (સ્વરૂપનું) અજ્ઞાન, એ ત્રિદોષ છે. તેના નિવારણ સારૂ કર્મ-કાણ્ડ, ઉપાસનાકાણ્ડ, જ્ઞાનકાણ્ડ, એ રૂપ વેદ છે. તે વેદ, પ્રત્યક્ષ અનુમાન (પ્રમાણોપ કરી) અનવગત-સર્વ પ્રાણીઓને અમીષ જે શુદ્ધિ પ્રાપ્તિ અને અનિષ્ટનો પરિહાર-તેઓના ઉપા-યના પ્રકાશનઅર્થ તત્પર છે.

અન્તઃકરણનો મલદોષ તે પાપરૂપ છે. તે પાપરૂપ મલ-
 દોષેકરી અન્તઃકરણમાં જન્મજન્માન્તરની અંતઃકરણના ત્રિદોષ અને તેના ઉપાય. અનેક ઘાસનાઓ હોય છે. તેઓએકરી ધર્ત-માન જન્મવિષયે પણ પાપાચારમાં ધર્તી મનુષ્યો ઘર્તિમુલ રહે છે. યથી સત્તાલ્લના વિચારવિષયે અને સત્સમાગમવિષયે તેઓની કથિ હતી નથી. નિષ્કામ શુભકર્મોરૂપ ઉપાયેકરી તે પાપરૂપ મલદોષ દૂર ઘાય છે. એ

उपाय वेदना कर्मकाण्डेकरी प्रकाशित छे. अने ते कर्मोसंबंधमां पूर्वे विचार थई गया छे.

अन्तःकरणनो विश्लेष दोप ते चंचलतारूप छे. ते चंचलतारूप विश्लेष दोपेकरी अन्तःकरण प्रतिक्षण रजोगुणे आरुष्ट थइ विषयां प्रति चलन करे छे. ए चंचलताथी ज शास्त्रनां हितकारी वचनो शृणते पठतां सते पण ते वचनानुं, बहिर्मुख मनुष्योना अन्तःकरणमां, ग्रहण धारण नथी थतुं. ध्येय वा श्लेय इष्टनी उपासनारूप उपाये करी ए चंचलतारूप विश्लेष दोप निवृत्त थाय छे. ए उपाय वेदना उपासनकाण्डेकरी प्रकाशित छे.

ते उपासन किंचा उपासना नाम उपास्यना अर्धवादमां जेवुं देवतादिनुं स्वरूप श्रुतिपकरी जणाय छे तेवुं, मनेकरी 'उप' नाम समीप जई लौकिकप्रत्ययना अव्ययधानसाहते, 'आसन' नाम चिन्तन, अथवा यथाशास्त्र समर्थित किञ्चित् आलंबन लइने तेमां तेथी विलक्षण-प्रत्यय-अनन्तरित समानचित्तवृत्तिनुं सन्तानकरण, ए उपासन. अर्थात् विषयाकारा वृत्तिना तिरस्कारपूर्वक अन्तःकरणनी वृत्ति इष्टदेवना स्वरूपाकारा करवी ए उपासना. ते उपासना यथार्थ संपूर्ण थाय हो ते उपासक, उपास्य इष्टदेवसह, अभिन्न थाय छे. उपासकना पोताना लौकिकआत्मा-देह-ना अभिमानवत् उपास्य देवना स्वरूपे आत्माभिमाननी अभिव्यक्ति, ते उपासकने थाय छे. ए उपासनाना प्रयत्नथी अन्तःकरणनी चंचलता दूर थवानो अभ्यास थाय छे. ए अन्तःकरणनी-चित्तनी-वृत्तिना निरोधना उपायो योगशास्त्रमां बहुसारा प्रकारे वर्णयां होय छे.

અન્તઃકરણનો અજ્ઞાનદોષ તે સ્વરૂપના અજ્ઞાનરૂપ છે. એનો ઉપાય વેદના જ્ઞાનકાષ્ટેકરી પ્રકાશિત છે. અજ્ઞાન દોષનો ઉપાય જ્ઞાન અજ્ઞાનની આંવરણ-વિક્ષેપનામિકા વે શક્તિ છે જેમ અત્પમેઘ, અનેક યોજનના વિસ્તારવાળા આદિત્યમંડલને, દ્રષ્ટાની દૃષ્ટિના માર્ગના આચ્છાદનેકરી, આચ્છાદે છે, તેમ આવરણશક્તિવાળું અજ્ઞાન પોતે તુચ્છ-પરિચ્છિન્ન-(અલ્પ) સતે પળ, અસસારી અપરિચ્છિન્ન આત્માને વસ્તુતઃ આવરણનો અભાવ સતે, દ્રષ્ટાની યુદ્ધિના આચ્છાદનેકરી તે આત્માને આચ્છાદે છે, એમ ઉપચારથી કહેવાય છે. જેમ સ્વઅજ્ઞાનેકરી આવૃતા રજ્જુમાં સર્પત્વની સંભાવના થાય છે તેમ એ અજ્ઞાનની આવરણશક્તિએ આવૃત આત્મામાં કર્તૃત્વ-ભોક્તૃત્વ-સુખદુઃસમોહાત્મક તુચ્છ-સંસારભાવના સંભવે છે. જેમ રજ્જુનું અજ્ઞાન, પોતે ઢાંકેલી રજ્જુનાં પોતાની શક્તિવતે, સર્પાદિકને ઉપજાવે છે તેમ અજ્ઞાન પળ, સ્વાવૃત આત્મામાં, વિક્ષેપશક્તિવતે, પ્રપચને ઉદ્ભાવે છે. જ્ઞાનરૂપ ઉપાયેકરી એ અજ્ઞાનદોષ નિવૃત્ત થાય છે એ જ્ઞાન વેદાન્તનો વિષય હોવાથી અત્ર અનેક પ્રકારે પુનઃ પુનઃ નિરૂપ્યમાણ છે.

એમ અન્ત.કરણની શુદ્ધિ તથા એકાગ્રતાઅર્થે કર્મની અને ઉપાસનાની આવશ્યકતા છે. પૂર્વે, અભ્યુદય-કર્મ-ઉપાસનાનો સમુચ્ચય નિઃશ્ચેયસ સાધનવર્ણાશ્રમાદિલક્ષણધર્મની પ્રવૃત્તિ સમયે એ પ્રકાર અધિક અનુકૂલ હતો.

૧ સધિદાનદ સ્વરૂપને આવરે-ઢાકે-તેથી આવરણશક્તિ. આવરણશક્તિએ કરી સત્ ચિત્-આનંદ અદ્વય આત્મામાં અસત્ જઠ દુઃસ દ્વૈત એવો વિપરીત વ્યવહાર સપાદિત થાય છે. ૨ વ્રહ્માદિસ્થાવરાન્ત, જલ્પુદયુદયત્, નામરૂપાત્મક જગત્ને વિશેષે સૃજે-તેથી વિક્ષેપશક્તિ. વિક્ષેપશક્તિએ કરી સ્પૂલ-સૂત્રમાદિ પ્રવંચ તથા તેનું જ્ઞાન થાય છે.

અધુના ઇ કર્મ-ઉપાસનની પૃથક્ મર્યાદા થતી નથી, કિન્તુ કર્મઉપાસનનો સમુચ્ચ પ્રકાર અનુકૂલ પ્રતીત થાય છે.

જે અન્તર્યામી ઈશ્વરેકરી આ વિશ્વ વ્યાપ્ત છે, જે અન્તર્યામી ઈશ્વર સર્વ પ્રાણીઓના હૃદયદેશમાં વસે છે, અને જેથી પ્રાણી-ઓની પ્રવૃત્તિ થાય છે, તે ઈશ્વરને શરણ જઈ સ્વકર્મોના અનુગ્રાહથી પૂજતાં, તેના પ્રસાદથી અન્ત કરણની નિર્મલતા તથા નિશ્ચલતા પ્રાપ્ત થઈ જ્ઞાનનિષ્ઠાયાગ્યતાલક્ષણા સિદ્ધિ પ્રાપ્ત થાય છે, અને અન્તે પરમપુરુષાર્થરૂપ ઈશ્વરનુ પરમપદ પમાય છે.

તે સર્વવ્યાપી અન્તર્યામી ઈશ્વરના પૂજનનો પ્રકાર, વસિષ્ઠ ઈશ્વરપૂજન મુનિ આ પ્રમાણે વર્ણે છે.-

“યેન કેન પ્રકારેણ યસ્ય કસ્યાપિ દેહિનઃ ।

સન્તોષં જનયેદ્રામ તદેવેશ્વરપૂજનમ્ ॥”

‘હે રામ ! જે કાઠ પ્રકારે (મન-ધાણી કર્મે) કરી જે કાઠ પળ દેહીને સન્તોષ ઉપજાવે તે ઈશ્વરનુ પૂજન છે.’

પરમ ઈશ્વરસમર્પણયુદ્ધિય નિષ્કામ થઈ પરોપકારના કર્મો જે પુરુષ કરે છે, તેને, યજ્ઞાદિકર્મથી અને અષ્ટાગયોગરૂપ ઉપાસનથી જે ફલની સિદ્ધિ થતી અને થાય, તેવી સિદ્ધિ, ઈશ્વરના અનુગ્રહથી પ્રાપ્ત થાય છે.

કર્મના તથા ઉપાસનાના કોઈ પળ પ્રકારેકરી જ્ઞાનનિષ્ઠા યોગ્યતાલક્ષણા સિદ્ધિને પ્રાપ્ત પુરુષ થાય છે, ત્યારે તેના અન્ત કરણના તૃતીય દોષ-આવરણવિશ્લેષશક્તિમત્ અજ્ઞાન કિવા અવિ-ધા-જે આત્માઅનાત્માના ઇતરેતરઅધ્યાસરૂપ છે-તેની જ્ઞાનરૂપ ઉપાયેકરી નિવૃત્તિ થાય છે. જેણે કરી જણાય તે જ્ઞાન. જ્ઞાનનુ આવરક અજ્ઞાન તેની નિવૃત્તિ-તિરસ્કાર-થયે, પરમ

કર્મ-ઉપાસનાનુ
ફલ જ્ઞાન

પુરુષાર્થની-આત્યન્તિક નિઃશ્ચેયસની-સિદ્ધિ થાય છે. જ્ઞાન એ જ સર્વનું સર્વોપરિ ફલ છે.

સત્શાસ્ત્રના ઉપદેશનો દેહદ્રિયવિષે આરોહ એ કર્મ છે; તે કર્મના અનુષ્ઠાનથી બુદ્ધિની શુદ્ધિ થાય છે. સત્શાસ્ત્રના ઉપદેશનો બુદ્ધિવિષે આરોહ એ ઉપાસના છે; તે ઉપાસનાથી અન્તઃકરુણ જ્ઞાનનિષ્ઠાને યોગ્ય થાય છે; અને તે સત્શાસ્ત્રોક્ત જ્ઞાનનિષ્ઠાનો ચિદાભાસ સ્વયંપ્રકાશ જીવવિષે આરોહ જે સમ્યક્દર્શને કરી થાય એ જ્ઞાન. જન્મથી આરંભીને ઇત્યાંતી ઉત્તરોત્તર ફલતા છે.

શ્રીમદ્ગવાન્ વદે છે કે:-

“ સર્વં કર્માશ્ચિલં પાર્થ જ્ઞાને પરિસમાપ્યતે । ”

મ ગી ૪૧૩૩.

‘અહો પાર્થ ! સર્વ અસ્થિલ કર્મ, મોક્ષસાધન જે જ્ઞાન, તેમાં સમાપ્ત થાય છે નામ અન્તર્ભૂત થાય છે’. જે જ્ઞાનેકરી પાપને (દુઃસ્થને) તરી જવાય છે, અને જે જ્ઞાનેકરી બ્રહ્માદિ સ્તમ્બપર્યંત ભૂતો અશૈષ્યેકરી, આત્મામાં ઈશ્વરમાં પ્રત્યક્ષ દેસાય છે; અર્થાત્ જે જ્ઞાનેકરી ક્ષેત્રજ્ઞ ઈશ્વરનું એકત્વ પ્રત્યક્ષ દેસાય છે, એ વિશિષ્ટ જ્ઞાનનું એવું અલૌકિક માહાત્મ્ય છે.

જ્ઞાન એ જ જ્ઞાનકાણ્ડરૂપ વેદાન્તશાસ્ત્રનો વિષય છે. એ જ્ઞાનનાં કર્મ તથા ઉપાસના એ ચહિરંગ સાધન છે; અને વિષેક, ઘેરામ્ય, વટસંપત્તિ, મુમુક્ષુતા; ધ્વજન, મનન, નિદિધ્યાસન; એ સત્ પરંપરાથી

૧. અંગથી-શરીરથી-વાહ્ય, દૂરનાં. ૨ વિષેકથી નિત્ય અનિત્યનો વિચાર કરીને વિપત્તિરૂપ અનિત્યનો ધિરાગવતે ત્યાગ કરતાં ગાલી યતાં અવતરણમાં સિચવા યોગ્યા—શમ, દમ, ઉપરતિ, કિતિધ્યા, મદ્યા, સમાધાન, એ ઉ રૂપ સંપત્તિ. ૩ વિષેકાદિચતુષ્ટય જ્ઞાનનાં ‘સાધન’ છે, મયગાદિપ્રય વે જ્ઞાનનાં ‘દેવ’ છે એવો ભેદ પણ ગણાય છે.

અન્તરંગ સાધન છે; અને વ્રહ્મનિષ્ઠ શ્રોત્રિય ગુણના મુત્પાર-
વિંદયી મહાવાક્યોના યથાયોગ્ય અર્થતું શ્રવણ પ સાશ્રાત્
અન્તરંગ સાધન છે.

નિષ્કામ શુભકર્મોના અનુષ્ઠાનથી ધર્મની ઉત્પત્તિ થાય
છે, ધર્મોત્પત્તિથી પાપની હાનિ યાય છે. પાપરૂપ મલની હાનિ
થયે સત્ત્વશુદ્ધિ થાય છે, તે શુદ્ધ-અન્તઃકરણમાં સંસાર-
યાથાત્મ્યનો અવગ્રોધ થાય છે. તેથી વિવેકત્રૈરાગ્યાદિ પદ્ધત્સંપત્તિ
અને મુમુક્ષુત્વ પ્રાપ્ત થાય છે. એમ ઉત્તરોત્તર સાધનથી અવિદ્યાનો
ઉચ્છેદ થઈ જ્ઞાનનિષ્ઠાયોગ્યતા આવે છે

જે (સાધન) સતે જ નિયમેકરી જે (સાધ્ય સિદ્ધ) થાય
અને જે (સાધન) ન સતે જે (સાધ્ય સિદ્ધ) ન થાય તે જ
સાધ્યતું સાધન છે. એમ હોવાથી સાધનસંપન્ન પુરુષને જ
સાધ્ય જ્ઞાનનો આવિર્ભાવ થાય છે. તેથી વિવેકાદિસાધનસં-
પન્ન પ્રમાતા તે જ વેદાંતજ્ઞાનનો અધિકારી ગણ્યો છે.

શુભાશુભકર્મના પરિપાકવશથી ઉચ્ચનીચસ્થિતિમાં સંસ-
રતાં સર્વે પ્રાણીઓ સ્વભાવથી જ દુઃખનાં
મનુષ્યોના ચાર વર્ગ દ્વેષી અને સુખનાં અનુરાગી દેખાય છે. મનુ-
ષ્યોના ચાર વર્ગ થાય છે:-(૧) પામર, (૨)

ત્રિપથી, (૩) જિજ્ઞાસુ, (૪) મુક્ત.

શાસ્ત્રના સંસ્કારથી રહિત પશુતુલ્ય, આ લોકના નિષિદ્ધ
અને વિહિત ભોગો વિષે આસક્ત, અને તેવાં
પામર. વિષય-ભોગમાં જ સુલની અલં-પૂર્ણ-બુદ્ધિવાળાં
જે પ્રાણી તે 'પામર' છે. તેઓની સંખ્યા સર્વથી મહોટી છે.

૧ અંગમા-શરીરમાં અન્નર, સમીપનાં, પ્રલય ફલપ્રદ. ૨ 'પા' નામ
પામરના જે તરી ધર્મ તે 'મર' નામ મરાય છે જેને તે 'પામર', મૂર્ખ,
નીચ, પલ.

શાસ્ત્રાનુસાર વિષયોને ભોગવતાં આ લોકના અથવા પર-
 લોકના ભોગોના નિમિત્ત જે મનુષ્યો સકામ
 વિષયી કર્મો કરે છે અને તેવા વિષયસુખમા જ જે
 અલંબુદ્ધિ માને તે 'વિષયી' કહેવાય છે. તેઓમાંથી કોઈકને
 કાંઈ સુભાગ્યના યોગથી સત્સમાગમેકરી વિષયસુખથી ઉપરિ
 ઉચ્ચ સુસુત્રની ઇચ્છા થાય છે, અને જો સદ્ગામી હોય તો સન્મા
 ગંસ્થ થાય છે, તેની બુદ્ધિમાં પ્રકાશ થઈ બુદ્ધિવર્દન થાય છે,
 અને તે અન્તે યથાર્થ ધર્મજિજ્ઞાસુ અથવા બ્રહ્મજિજ્ઞાસુ થાય છે.
 પરતુવહુ કરીને તેવા વિષયીઓ દુર્ભાગી હોય છે, અને તે દુર્ભાગ્યે
 અજ્ઞાનથી અને મિથ્યા સ્વાભિમાનથી તે ઉચ્ચ સુખના જે ઉપાય
 નહિ તેમાં ઉપાયબુદ્ધિ કરી પ્રવર્તે છે. તેવાઓનો બુદ્ધિપ્રકાશ
 અથવા બુદ્ધિવર્ધન થતુ નથી. તેઓ જનનમરણરૂપ ચક્ર-
 દોલામાં ઉચ્ચે નીચે ભ્રમ્યાં જ કરે છે

પૂર્વોક્ત પામરપ્રાણી અને વિષયી મનુષ્યો જ્ઞાનના અધિકારી
 નથી.

મુમુક્ષુઓ જ માત્ર, નિ શેષ દુઃસોચ્છેદનનો તથા નિરતિ-
 શયાનન્દનો હેતુ જે જ્ઞાન તેના અધિકારી
 મુમુક્ષુ છે તેઓને ઉત્તમ સસ્કારેકરી સત્શાસ્ત્રના
 શ્રવણથી આપાતત. વેદાન્તજ્ઞાન હોય છે જે વિવેકી, વિરક્ત,
 શમાદિગુણશાલી પુરુષ, મયવધની વિમુક્તિ અર્થ વાહ્યવિષયાના
 સુખની સ્પૃહા ત્યજીને આતમવસ્તુની સમ્યક્ હિતોક્તિમાં અને
 વિચારમા પ્રવર્તે છે, અને જે પુરુષ, અજ્ઞાનરૂપિત અહંકારાદિ
 દેહાન્ત વન્ધોને સ્વસ્વરૂપના અવલોકે કરી, મૂકવાની ઇચ્છા
 કરે છે, તે પુરુષ 'મુમુક્ષુ' ઘડાય છે

तेवा साधनसंपन्न मुमुक्षु, अशेष हेतुनिवर्तक तथा

नित्यनिरतिशयानन्दप्रापक अत्यन्त उत्तम

उत्तम अधि-
कारी.

जे ब्रह्मात्मैकत्वविज्ञान तेना अधिकारी थाय

छे. तेओमां विशुद्धसत्य अने समाहित-

चेता पुरुष उत्तम अधिकारी छे. तेने वेदान्तश्रवणमात्ररूप

उपायेकरि आत्मा-अनात्माना विवेकपूर्वक ब्रह्मात्मैकत्वबोधे ज्ञान

थाय छे. एवा मुख्याधिकारीने वेदान्तविचार ज प्रत्यक् अभिन्न

ब्रह्मना अपरोक्षज्ञानद्वारा, मुख्य मोक्ष कारण छे.

जे पुरुष विवेकवैराग्यसंपन्न सते रजोगुणलेशनी अनुवृ-

त्तिप विशिष्टचेता हई सहसा चित्तनुं एका-

ग्रतर नथी पामता, ए मंद अधिकारी छे.

तेने अष्टांगयाग ए ज पूर्वोक्त ज्ञाननो उपाय छे.

पुरुषने, 'पोते उत्तम वर्गमां छे, एम मानवानी स्वाभाविकी

वृत्ति होय छे, परंतु ते वर्गनी पोतामां योग्यता

नथी हती तो, मात्र ते वर्गमां पोताने गण्यार्थी

तेनुं फल मळतुं नथी. एटलुं ज नही निन्तु

हानि थाय छे. ण्थी हितकारी कर्त्तव्य तो योग्यता संपा-

द्विता करवी ए ज छे. पानता विना पदार्थनी प्राप्ति घती ज

नथी. आरोप करे अधिकार आवतो नथी, मात्र विकलता

अथवा बुद्धिनाश ज गणाय छे. उत्तम वर्गमां जवातुं नथी,

कनिष्ठमां रहेवातुं नथी, तेथी उभयथी भ्रष्ट ते थाय छे.

“अकृत्वा शत्रुसंहारमगत्वाऽग्विलभृश्रियम् ।

राजाहमिति शब्दान्नो राजा भवितुमर्हति ॥”

वि० चू० १६

१ आत्मा नाम स्थूलसूक्ष्मकारणशरीरत्रयविलक्षण, पंचकोशव्यतिरिक्त, अवस्थापयसाक्षी, सच्चिदानन्दरूप. २ अनात्मा नाम अवृत जड दुःसात्मक समष्टि-व्यष्टि आत्मक स्थूलसूक्ष्मकारणशरीरत्रय.

‘શત્રુઓનો સંહાર ન કરી, અચિલ મૂશ્રીને ન પામી, હું ‘રાજા’ પણ શબ્દથી રાજા થવાને કોઈ યોગ્ય થતું નથી.’ એ યથાર્થ છે.

તે યોગ્યતા અર્થ અનેક કર્તવ્ય, અનેક જ્ઞાતવ્ય અને અનેક પ્રાપ્તવ્ય છે. પુરુષપ્રયત્નાનુસાર તે કર્તવ્યની, જ્ઞાતવ્યની, અને પ્રાપ્તવ્યની સિદ્ધિ થાય છે. મહાભાગી અધિકારીઓએ મનુષ્યતાના સાફલ્યઅર્થ, મુખ્યત્વેકરી, સત્સંગ, સત્શાસ્ત્રવિચાર, અને હરિપ્રસાદકર નિષ્કામ સત્ધર્મકર્મ અવશ્ય ‘કર્તવ્ય’ છે. જીવ-ઈશ્વર-માયા-જગત્નાં તત્ત્વઅતત્ત્વ, હૈયંડપાદેયઅર્થ કિંવા ત્યાગ-મ્રહ્ણ સારુ, ‘જ્ઞાતવ્ય’ છે. અને સત્સંગ અને વહિરંગ તથા અન્તરંગ સાધનોનું ફલભૂત બ્રહ્માત્મૈકત્વજ્ઞાન જ ‘પ્રાપ્તવ્ય’ છે.

શ્રવણ-મનન નિદિધ્યાસન એ કર્તવ્યકોટીમાં છે.

પરમાત્માનું યથાર્થદર્શન-જ્ઞાન-થયે સતે, જે સર્વપુરુષાર્થની સિદ્ધિ થાય છે તે દર્શન, શ્રવણ
શ્રવણ-મનન-
નિદિધ્યાસન.
મનન નિદિધ્યાસન એ ત્રયપૂર્વક, થાય છે.

તે શ્રવણ પૂર્વે આચાર્યથી તથા આગમથી શ્રુતી, પુનઃ તેનું મનન તર્કે અને ઉપપત્તિપકરી-વિચારી, પશ્ચાત્ નિદિધ્યાસન નામ ‘એમ જ એ છે અન્યથા નથી એમ નિર્ધારિત-નિશ્ચયે કરી ધ્યાન-કરવું,’ એ શ્રવણ-મનન-નિદિધ્યાસનનો ક્રમ છે.

“શ્રોતવ્યઃ શ્રુતિવાક્યેભ્યો મન્તવ્યશ્ચોપપત્તિભિઃ ।
મત્વા ચ સતતં ધ્યેય एते दर्शनहेतवः” ॥

સામાન્યતઃ પ્રસિદ્ધ પરંતુ વિશેષતઃ અપ્રસિદ્ધ બ્રહ્માત્મૈકત્વજ્ઞાન તેના સ્વરૂપના સાક્ષાત્કારઅર્થ વિચારપ્રવૃત્તિ-મીમાંસા-

૧. એકસ બ્રહ્મા વેદાન્તોનો (ઉપનિષદોનો) (શબ્દ) ગતિતાત્પર્ય નિશ્ચય એ શ્રવણ, તેમાં જ શ્રુતિઅનુસારિણી યુક્તિપ્ર સંમાવનાનું આધાન એ મનન, એમ શ્રુત મત બ્રહ્મા યુક્તિનું સ્થૈર્ય એ નિદિધ્યાસન છે.

फलोपकारिणी છે. તે વિચારનાં શ્રવણ-મનન-નિદિષ્યાસન એ અંગ છે. તેને કરી બ્રહ્માત્મભાવની અવગતિ થાય છે.

એ અન્તરંગ શ્રવણાદિ સાધનાંપકરી જે પ્રાતઃક્રમ છે તે અતિ
જ્ઞાતવ્ય. સંક્ષેપતઃ આ છે:-પ્રથમ જીવ-જગત્ પરમાત્મા

એ ત્રિવર્ગનું જ્ઞાન; ક્રિયા અહં-હું-દ્રષ્ટા, ત્વં-તું
હૃદય, તત્-તે-અહૃદય સર્વાનુગત પરમેશ્વર,-એ હું-તું-તે-નો ત્રિપુ-
ટીનું શાસ્ત્રાચાર્યોંપદેશજનિત જ્ઞાન. એ ત્રિવર્ગનો અન્તર્ભાવ
દ્વિવર્ગમાં થાય છે:-આત્મા-અનાત્મા, ક્રિયા ચૈતન્ય-જડ. પુનઃ
એ દ્વિવર્ગનો પણ એક વર્ગ એકન્વ-પરિશેષ થાય છે.

પંચદશીમાં શાપે છે કે-

“સદા વિચારયેત્તસ્માત્ જગજ્જીવપરાત્મનઃ ।

જીવભાવજગદ્ભાવવાધે સ્વાત્મૈવ શિષ્યતે ॥ ૧૨ ॥

નાપ્રતીતિસ્તયોર્વાધઃ કિન્તુ મિથ્યાત્વનિશ્ચયઃ ॥”

ચિત્રદીપ.

સમસ્તપ્રપંચની મૂલકારણભૂતા અવિદ્યા-અજ્ઞાન-તમ-પ્રકૃતિ-
મોહાદિશબ્દવાચ્યા સર્વાનર્થવીજભૂતા અનિર્વચનીયા માયા
જે આત્માને-સચ્ચિદાનન્દબ્રહ્મને-આશ્રિતા છે તે માયાની
નિવૃત્તિ, અન્તે યથાભૂતાર્થ જ્ઞાનેકરી થયે, એક જ અદ્વિતીય
પરમાત્મા જ પ્રકાશે છે. તે શાસ્ત્રાચાર્યથી જનિત જ્ઞાન,
સાત્ત્વિકજ્ઞાન, છે. તે જ્ઞાનેકરી, પરસ્પરવ્યાવૃત્ત બ્રહ્માદિસ્થાવ-
રાન્ત વિભક્ત સર્વભૂતોમાં અનુસ્યૂત, અવિભક્ત એક અદ્વય
નિર્વિકારમાત્ર પરમાત્મતત્ત્વ દેહાય છે. તે પરમાત્મા આ પ્રકારે
વર્ણ્યો છે. ‘સ્વમાં (પોતામાં) જીવભાવનો, સ્વથી અતિ-
રિક્ત અન્યમાં જગત્માવનો, વાધ થયે, પ્રત્યક્-અભિન્ન બ્રહ્મ-
પરમાત્મા-જ એક અવશેષ રહે છે.’

એ સંબંધમાં પરંપરાથી અસંખ્ય વિચારો થતા આવ્યા છે,

અનેક ગ્રંથો ગુંથાયા છે, અને વહુ સંવાદો ચાલ્યા છે; પરંતુ એનું મોક્ષફલક સમ્યક્જ્ઞાન, ईश्वरानुग्रह ગુરુપ્રસાદ શાસ્ત્રપ્રસાદ અને સ્વાત્મસહાય કિંવા પુરુષકાર, એઓ વિના થતું નથી. એ કારણથી 'તત્ત્વોપદેશ'માં શંકરભગવાન સ્વશિષ્ય મંડનમિથ્ર વાર્તિકકાર પ્રતિ વદે છે કે:-

“યાવદાયુસ્ત્વયો વન્ધ્યા વેદાન્તો ગુરુરીશ્વરઃ ।

મનસા કર્મણા વાચા શ્રુતિરેવૈષ નિશ્ચયઃ” ॥ ૮૫ ॥

‘જ્યાં લગી આયુ હોય ત્યાંલગી મન, કર્મ અને વાણી એઓએ કરી વેદાંત, ગુરુ અને ईश्वર એ ત્રય વંધ છે. એ શ્રુતિ છે, અને એ જ નિશ્ચય છે.’

એ જીવ-જગત્-પરમાત્મા-ની ત્રિપુટીના સામાન્ય જ્ઞાનથી

જ્ઞાન તે ત્રિપુટીના ભેદબ્રમના અધિષ્ઠાન નિત્ય સ્વપ્ર-
કાશ સચ્ચિદાનન્દરૂપ એક અદ્વિતીય પર-

માર્થ સત્યના તત્ત્વનું વિશેષ જ્ઞાન વિલક્ષણ છે. સામાન્ય જ્ઞાનમાં પ્રકાશપૂર્વક જ્ઞાતા, જ્ઞાન અને જ્ઞેયની અપેક્ષા હોય છે. વેદાન્તનિર્ણાત અપૂર્વ સ્વયંપ્રકાશ અધિષ્ઠાનના વિલક્ષણ વિશેષ જ્ઞાનવિષયે, અજ્ઞાનમાત્રની નિવૃત્તિ કરવાની છે.

“જ્ઞાનેન તુ તદજ્ઞાનં યેષાં નાશિતમાત્મનઃ ।

તેષામાદિત્યવત્ જ્ઞાનં પ્રકાશયતિ તત્પરમ્ ॥”

મ ગી. અ ૫૧૬

‘જે અજ્ઞાનેકરી જન્તુનું આત્માઅનાત્માનું ત્રિવેકજ્ઞાન આગૃત થયું છે તેથી તે મોહવશ થયા છે. પરંતુ જે જન્તુઓનું તે પાંતાનું અજ્ઞાન આત્માઅનાત્માવિષયક ત્રિવેકજ્ઞાનેકરી નાશિત થાય છે, તે જન્તુઓનું અનાગૃત જ્ઞાન, આદિત્ય જેમ સમ-સ્તરૂપને-વસ્તુમાત્રને-પ્રકાશે છે તેમ, ‘તત્પર’ને નામ પરમાર્થ-તત્ત્વને-સ્વયં હોય વસ્તુને, પ્રકાશે છે.’

स्वयंप्रकाश वस्तुने देखवाने अन्य प्रकाशनी अपेक्षा नथी. मात्र आवरण दूर करवानी ज तर्हि अपेक्षा
 ज्ञानना प्रति-
 बंध. छे. ए आवरण द्विविध संभवे छे. एक आव-
 रण प्रकाशना अने द्रष्टाना अन्तरालमां होय
 अथवा एक आवरण द्रष्टानी दृष्टिगत होय. सूर्य वा दीपक, अ-
 पारदर्शक मेघे वा कइ अन्य आवरणे आच्छादित होय, ते अ-
 न्तराल आवरण छे. कौइ मनुष्यना अक्षि उपर पटबंधन होय
 किंवा ते अक्षि दूषित वा अशक्त होय, ए बीजा प्रकारनुं आ-
 वरण छे. एक मेघादि अन्तरिक्षनिष्ठ आवरण छे अने एरु
 द्रष्टानिष्ठ आवरण छे. सूर्य वा दीपक देखावामां ए आव-
 रणां दूर करवानी ज अपेक्षा छे; अन्य प्रकारनी अपेक्षा नथी.
 तेम जीव-जगत्-परमात्माना स्वयंप्रकाशस्वरूप तत्त्वना दर्शन-
 अर्थ अज्ञानरूप आवरणने ज दूर करवानी अवश्य अपेक्षा
 छे. तेमां सूर्यनुं मेघादि आवरण दूर करवु ए मनुष्यतंत्र नथी.
 किन्तु द्रष्टा जीवनिष्ठ आवरण,-पटबंधन, दृष्टिदायादि-दूर
 करवुं ए मनुष्यतंत्र छे; अने ते आवरणदूरीकरण साध्य छे;
 अने ते ज मुख्यत्वे कर्तव्य छे. कारण मेघादिना अन्तराल आ-
 वरणे करी सूर्यादि आच्छादित न होय तो पण, द्रष्टृनिष्ठ
 आवरण होय तथा सुधी सूर्यना प्रकाशने पण जीव जोई श-
 कतो नथी. मेघादि आवरण बहुवार रहेवा पण संभव नथी,
 तेम ते अनायासे स्वतः दूर थई जाय छे. परंतु द्रष्टृनिष्ठ-जीव-
 निष्ठ-आवरण तो पुरुष-प्रयत्न कन्या विना दूर थतु ज नथी.
 एथी जीवगत अज्ञानआवरणनुं दूरीकरण करवा संपूर्ण पुरुष-
 प्रयत्न कर्तव्य छे; अने ते साध्य छे. जीवनिष्ठ अज्ञानआव-
 रणी निवृत्ति करवामां ज आपण जीवोनी कृतकृत्यता छे.

ए जगत्निष्ठ नामरूपादि अन्तराल आवरण तथा द्रष्टृजीव-

આવરણદૂરી-
કરણ

નિષ્ઠ અજ્ઞાનરૂપ આવરણ ઇઓને દૂર કરવા વેદાન્તાદિનું જ સમ્યક્જ્ઞાન સમર્થ છે; અન્ય નહિ. વેદાન્તશાસ્ત્રો અવિદ્યાકલ્પિત વેદિતા-વેદ્ય-વેદનાદિ ભેદને દૂર કરે છે. એ અજ્ઞાનજનિત ભેદ દૂર થયે વ્રહ્મતત્ત્વ જ પ્રકાશી રહે છે.

સ્થૂલસૂષ્ણિના જ્ઞાન અર્થ વાહ્યઇન્દ્રિય-દૃષ્ટિ-ના આવરણને દૂર કરવાની આવશ્યકતા છે, તેમ તત્ત્વજ્ઞાન-અર્થ સર્વાત્મજ્ઞાન-અર્થ-આન્તર-ઇન્દ્રિય-બુદ્ધિ-ના આવરણને દૂર કરવાની સંપૂર્ણ આવશ્યકતા છે. અન્તર્દૃષ્ટિનું કિંવા બુદ્ધિનું આવરણ એ સમ્યક્ જ્ઞાનનો પ્રતિબંધ છે. તે જ્ઞાનપ્રતિબંધ વહુ પ્રકારના હોય છે. રાગ, દ્વેષ, સંશય, અસંભાવના, વિપરીતભાવના, તથા વિષયા-સક્તિ, પ્રજ્ઞામાન્ધ, કુતર્ક, વિપર્યયદુરાગ્રહ. પુનઃ પુનઃ વિચારે સતે પણ પ્રતિબંધેકરી પુરુષ, તત્ત્વને જાણતો નથી. તે પ્રતિબંધ-ભૂતે, વર્તમાન, ભાવી, પ્રકારેકરી-ત્રિવિધ છે. તે પ્રતિબંધો હોય તો, અર્ધાતવેદાન્ત પુરુષ હોય તો પણ, તત્ત્વજ્ઞાન, પ્રકૃટ થતું નથી. ઇથી તે તે પ્રતિબંધના નિવર્તનમાં ઉચિત સાધનો પદ્મસંપત્તિ, શ્વચનાદિ, ઇઓએકરી તે તે પ્રતિબંધનો ક્ષય કરેથી અધિકારી પોતાના-પ્રત્યગાત્માના-વ્રહ્મત્ત્વને પામે છે.

પુરુષપ્રકારેકરી પ્રતિબંધ દૂર થયે જીવને પ્રત્યગાત્મસ્વરૂપનું સમ્યક્ જ્ઞાન થાય છે. એકદેશપ્રસિદ્ધિપ્રકારી અશેષ પ્રતિબંધ થાય છે; તેમ એક જીવસંબંધમાં યવાર્થ જ્ઞાન થયે તે ઉદાહરણથી અન્યનું અશેષનું જ્ઞાન થઈ શકે છે. અને જે પ્રયુ-

૧ અતીત રૂપવિવરણ દેહથી અનુમન્થાનેકરી ભવનાદિથી તત્ત્વ જાણવામાં આવે નહિ, એ ભૂત પ્રતિબંધ, વિષયમા આસક્તિ, બુદ્ધિની મંદતા, કુતર્ક, કલ્પો દુરાગ્રહ, એ વર્તમાન પ્રતિબંધ; અન્તરદૃષ્ટિ પ્રાસ્પત્તે એ ભાવી પ્રતિબંધ ગણાય છે.

દ્વતત્ત્વ પુરુષ થાય છે. તેને વંધથી મુક્તિ છે, અને મુક્તાન્માને નિન્યસુખની અનુભૂતિ છે, એ તો જ્ઞાનીઓને પ્રસિદ્ધ છે.

એ વેદાન્તના નિઃશ્રેયસપ્રદ પરમતત્ત્વજ્ઞાનની પ્રાપ્તિનો મુખ્ય આધાર અધિકારીના અન્તઃકરણની અવસ્થા ઉપરિ છે. ત્રિગુણાત્મિકા અવિદ્યાનું પરિણામ અન્તઃકરણ, તે ત્રિગુણનાં ન્યૂનાધિક અસંખ્ય મિશ્રણથી રચાયું હોય છે, તેમાં પુનઃ આ સૃષ્ટિની ત્રિગુણાત્મપ્રવૃત્તિની અસંગ્ય વિવૃત્તિઓના સંસ્કાર તે અન્તઃકરણ ઉપરિ થાય છે, યથી અસંખ્ય અધિકારીનાં અસંખ્યેય પ્રકારનાં અન્તઃકરણોની રુચિ પણ વિચિત્રા હોય છે. તેવા અધિકારીની મતિગતિના ભેદ અનુસાર ફલમાં ભેદ પડે છે. યથી યવા વિલક્ષણ અન્તઃકરણના સમાધાનઅર્થ મિશ્રરુચિ અનુસાર વિવિધ વિચારો મહાત્માઓ પ્રસિદ્ધ કન્યા છે; આવા આશયથી કે તેઓમાંથી જેને જે રુચિકર લાગે તેનું તેણે ગ્રહણકરી તેદ્વારા તત્ત્વજ્ઞાનની સુસસંપત્તિ મેળવી પુરુષાર્થ સિદ્ધ કરાય. આ સૃષ્ટિના મહામંડલનું તત્ત્વજ્ઞાન એ કેન્દ્ર છે; અને તેના પરિધિસમીપ જીવો ભ્રમે છે. તે મધ્યવિંદુને સંપાદક સહિચાર-રૂપા અસંખ્ય ત્રિજ્યાઓ છે. તેમાંથી ગમે તેનો આધાર પકડી જે અધિકારી જીવ, જ્ઞાનપ્રકાશ-રૂપ કેન્દ્રને સંમુલ્લ થાય છે, તે જીવ, તે વેગવાન ચક્રમંડલ-ના પરિધિથી કેન્દ્રને સમીપ આવતો આવે છે. અને તેની અજ્ઞાનરૂપા છાયા ઉત્તરોત્તર અડ્ડા, અલ્પતરા, અલ્પતમા થઈ નિવૃત્તા થાય છે. અને જે અસંખ્ય જીવો એ જ્ઞાનકેન્દ્રથી વિમુલ્લ રહે છે, તે જીવો ચક્રના દૂરપાતુક વેગેકરી કેન્દ્રથી દૂર અને દૂર ભ્રમતા જતા જાય છે; અને તેઓની અજ્ઞાનરૂપા છાયા અધિકાધિક વર્ધમાના થતી રહે છે.

અધિકારીઓના વિચિત્ર અન્તઃકરણો.

સૃષ્ટિમહામંડલ-નું કેન્દ્ર તત્ત્વ-જ્ઞાન છે.

मातृपितृसहस्रोर्था षण् अधिकहितैषी सत्शास्त्रो छे.
आत्मवस्तु तत्त्वज्ञान-दुर्वोध होवाथी सत्शास्त्रो
प्रक्रिया.

पुनः पुनः प्रसंग आणीने शब्दान्तरे तथा
अर्थान्तरे ते ज एरुगम्य आत्मवस्तुने निरूपे छे. ए ज्ञान-
प्रकाश गोलनी विचाररूपा त्रिज्याओनुं पारिभाषिक नाम
'प्रक्रियाओ' छे.

“यथा यथा भवेत्पुंसां व्युत्पत्तिः प्रत्यगात्मनि ।

सा सैव प्रक्रियेह स्यात् साध्वी सा चानवस्थिता” ॥

बृहदारण्यक भाष्यवार्तिक प्रथम अ० १ ब्राह्मण ४ श्लो० ४०२

‘पुरुषोने प्रत्यगात्मां जेणेजेणेकरी व्युत्पत्ति-ज्ञान धाय
ते ते ज प्रक्रिया इहां साध्वी छे. परंतु ते अनवस्थिता छे,
कारण के अधिकारीनी बुद्धिनुं तारतम्य होवाथी ते प्रक्रि-
यानी व्यवस्था (स्थिति) नथी.

सत्वरजस्तम-प्रकृति प्रमाणे ते प्रक्रियाना विचारो अन्तरमां
उत्तरे छे. कोइ अधिकारीनी बुद्धिने ऋजु तो कोइ अधि-
कारीनी बुद्धिने कुटिल, कोइ बुद्धिने स्थूल तो कोइने सूक्ष्म,
कोइने बाधक तो कोइने साधक, कोइने बोधक, शोधक,
पायक तो कोइने वर्णक, स्तापक, मोहक, कोइने वाचक, लक्षक,
व्यंजक, सूचक तो कोइने आकर्षक, आवेशक, विचारक, कोइने
रेचक, शोषक तो कोइने रोचक, पोषक तोषक, कोइने उत्ते-
जक तो कोइने प्रतिबंधक, कोइने परोक्ष तो कोइने प्रत्यक्ष,
कोइने प्रवृत्तिसाध्य तो कोइने निवृत्तिसाध्य, कोइने तटस्थ-
लक्षण तो कोइने स्वरूपलक्षण, एम नाना प्रकारना त्रिचारां-
मांथी कोई एक या अनेक रुचे छे. तैमां अज्ञानना नियन्त्रक
अने ज्ञानना समर्पक एवा बोधक, निर्णायक अने अनुभाषक

વિચારો જ શ્રેયઃસાધકોષ પ્રાહ્ય-શ્રોતવ્ય-મંતવ્ય-નિદિધ્યા-સિતવ્ય-છે. ફતર વિચારો દૃઢ્ય-ધ્રવ્ય-છે, અને કર્તવ્ય અવદ્ય વ્યવહાર સાધવામાં જ માત્ર ઉપયોગી છે. ં પ્રક્રિયાઓમાંની કેટલીક તો સંપ્રદાયના અનેક પ્રકારના ગ્રંથોમાં ગુંથેલી હોય છે અને કેટલીક તો સંપ્રદાયવિદોનાં મુખ્યથી પરંપરાગતા હોય છે. અધિકારીની સ્થિતિ અનુસાર તે કથાય છે, પરંતુ તે લિખિતા હોતી નથી.

પરમાત્મવિષયક વિચારનું નિરૂપણ મુખ્યત્વેકરી તત્સં-વન્ધિ શાસ્ત્રમાં અને પ્રકરણોમાં સુવર્તે છે.

શાસ્ત્ર અને પ્ર-કરણ ગ્રંથો.

‘ૂક-પ્રયોજન-ઉપનિવદ્ધ અશેપાર્થ-પ્રતિપાદક’

ૂ શાસ્ત્રનું લક્ષણ છે. અધ્યાત્મશાસ્ત્રમાં ંહાપોહવિચક્ષણ મેઘાવી વિદ્વાન્ પુરુષો ઉત્તમ અધિકારી ગણાય છે. તેવા ઉત્તમબુદ્ધિમાનના અર્થે શ્રીશંકર મંગવાનનાં માપ્યસહિત ઉપનિષદો (૧), મહ્સૂત્રો (૨), તથા મગવદ્ગીતા (૩) ં પ્રસ્થાનત્રયાદિરૂપ શાસ્ત્રોને મહાત્માઓષ સંકલિત કન્યાં છે. તેઓના અવલોકનમાં અસમર્થોના અનુગ્રહાર્થ વેદાન્તસિદ્ધાન્તનો સાર-જે આત્મા પરમાત્માનું ંક્ય-તેના સંગ્રહ-ણરૂપ ‘પ્રકરણોને’ અપિ મહાત્માઓષ નિર્માણ કન્યાં હોય છે. પ્રકરણનું લક્ષણ આ પ્રમાણે છે.—

“શાસ્ત્રૈકદેશસમ્બદ્ધં શાસ્ત્રકાર્યાન્તરે સ્થિતમ્ ।

આદ્ધુઃ પ્રકરણં નામ ગ્રન્થભેદં વિપશ્ચિતઃ ॥”

‘શાસ્ત્રના ંકદેશ-(મુખ્ય) નિર્ગુણ વસ્તુ-પરમાત્મા-

૧. “ઉત્પત્તિ પ્રલયં ચૈવ મૂતાનામાગતિ ગતિ ।

વેત્તિ વિદ્યામવિદ્યાં ચ સ ઘાચ્યો મગવાનિતિ ॥”

‘ (સૃષ્ટિના) ઉત્પત્તિ અને પ્રલય, મૂતોની અને ગતિ (આય-વ્યય આનંદું-જડુ,) અને વિદ્યા તથા અવિદ્યા, ંઓને જે જાણે તે મગવાન્ ંમ વદાના ંગ્ય છે.’ ૨ ંકાર્યપ્રતિપાદક ગ્રંથોશ, પ્રસ્તાવ, કર્તવ્યનું વચન.

मात्रसह 'संबद्ध' अने शास्त्रकार्यना अन्तरमां स्थित एवा ग्रंथ-
भेदने विपश्चितो प्रकरण कहे छे.'

एवां प्रकरणोधी एण अनेक अधिकारीओनुं कल्याण
थई तेओने सदाप्राप्त निःश्रेयसनी प्राप्ति थई छे. एधी तेवां
प्रकरणोने प्रक्रियारूपे अत्र समर्पण कऱ्यां छे.

जेम यंत्रकला, रसायनकला, चित्रकला, गायनकला,
आदि अनेक प्रकारनी कलाओमां तत्संबंधी
लेखो मात्र वाच्याधी अर्थसिद्धि थती नथी;
तेओना अभ्यासपूर्वक प्रयोगो करवानी पूर्ण
आवश्यकता छे, अने शिक्षानुसार तादृश-
कृतिरूप फल थाय छे, त्यारे ज ते कला प्राप्ता अने सफला
थई गणाय छे; तेम उत्तम वेदान्तशास्त्रसंबंधमां छे. एतद्दे-
शीय आर्योण अभिमत सर्वज्ञकल्प वेदमां वेदान्त-तत्त्वज्ञान-
सारभूत गणाय छे. मुक्तिकोपनिषद्मां श्रीराम परमात्मा
स्वभक्त हनुमान् प्रति वदे छे:—

“तिलेषु तैलवद्भेदे वेदान्तः सुप्रतिष्ठितः ॥”

मुक्तिकोपनिषत् १।९॥

'ते तिलोरूप वेदमां तैल—सार—रूप वेदान्त सुप्रतिष्ठित छे-
सारी रीतिण वत्ते छे.' ते वेदान्त किंवा तत्त्वज्ञानना उत्तमो-
त्तम सिद्धान्तो श्रुत मत ज्ञात होय, तदर्थाकारा अन्तःकरणनी
वृत्ति थाय, त्यारे ज तेओनुं साफल्य छे.

मुण्डकोपनिषद्मां अन्ते वदे छे के:—

“स यो ह वै तत्परमं ब्रह्म वेद् ब्रह्मैव भवति” ॥

३।२।९॥

१ शास्त्रनुं कार्य—अनुबंधचतुष्टय, अधिगारिनिर्णय, गुणउपसदननुं, अथवा
अन्वय, अविरोध, साधन, फल, आदिनुं, विस्तरधी प्रतिपादन करबुं—तेना
अन्तरमां—मध्यमां—भाषेल. अर्थात् संक्षेपमां प्रतिपादन करवामां रिगत.

विद्याएकरी ज सर्व प्रतिबंध दर कन्याथी अन्य प्रतिबंध मोक्षने नथी. तेथी लोकमां 'ते जे कोइ ते ब्रह्मने जाणे (ते ब्रह्मने विद्वान्) ब्रह्म ज थाय छे.' ए यथार्थ छे.

तत्त्वज्ञानसंबंधमां जानैन् ते भवन् छे, जाणवुं तेवुं थवुं छे. जाणवा जेवा थवामां जेटळुं अन्तर तेटली ज्ञाननी न्यूनता गणाय छे.

शास्त्रगता अथवा प्रकरणगता कोइ एका किंवा अधिका प्रक्रियाओनुं अवलंबन करी तत्पर थई जे उत्तम अधिकारी स्ववृत्तिने दृढा तदर्थाकारा करीने स्थित थाय छे ते कृतार्थ अने धन्य धन्य धन्य थाय छे.

यथोक्तकारी अधिकारीए कोइ सद्वृत्तद्वारा नानाविध प्रक्रिया रूप रेखामांथी कोइ एकानुं दृढ आलंबन करी ते द्वारा अविद्याने अपकृप्यमाणा करवी, अने विद्याने उत्कृप्यमाणा करीने ब्रह्मावगतिरूप केन्द्रनी संप्राप्ति करवी. कोइ एक शास्त्रे-करी वा शास्त्रीया अशास्त्रीया युक्तिओएकरी आ सृष्टिनी उत्पत्ति-स्थिति-लय-आदिना विचारो तथा अभ्युदयलक्षण प्रवृत्तिविषयना विचारो अने निःश्रेयसलक्षणनिवृत्तिना विचारो, यद्वा तद्वा जाणीने, तथा साध्यसाधनसंबंधना प्रकाशननी अनेका श्रुतिस्मृतियुक्तिओना थवणे करीने, बुद्धि विशिष्टा थई होय छे, तेनुं कोइ प्रकारे समाधान करी तेने स्वस्था-निर्मला निश्चला-करी परमपुरुषार्थ जे-सच्चिदानन्द ब्रह्मात्मैक्य स्वरूपावस्थानलक्षण मोक्ष-ए सिद्ध करवा प्राप्तविवेक पुरुषे बहुधैर्यथी भगीरथप्रयत्न कर्तव्य छे. आप्त-वाक्योए संसिद्ध थपला अधिकारीए प्रमितिजनक वेदवाक्योना

વિચારોમાં વિશ્વાસ પળ દટ કરવો. વિશ્વાસમાં-શ્રદ્ધામાં-જેટલી ન્યૂનતા તેટલી ફલસિદ્ધિની દૂરતા રહે છે.

“યાદૃશી ભાવના યત્ર સિદ્ધિર્ભવતિ તાદૃશી ।”

૯ પ્રાયશઃ યથાર્થ છે. ૯ પરમપુરુષાર્થરૂપા સર્વોપરિ ફલ-પ્રાપ્તિર્અર્થ મહત્પ્રયાસ પળ તેયો જ સર્વોપરિ કર્તવ્ય છે. ૯વા અનુત્તમ ફલનો પરિપાક થવામાં પળ અમુક સમયની અપેક્ષા છે. ૯થી સ્વઅજ્ઞાનથી ઉદ્ભવેલી કલ્પનાનુસાર તત્કાલ ફલ ન થાય ત્યાં અધીર ન થવું. પુરુષપ્રયત્નાનુસાર પ્રાપ્યવિષયની પ્રાપ્તિ થાય છે જ. તે પ્રાપ્તિ ન થાય તેમાં પુરુષપ્રયત્નની જ ન્યૂનતા સમજવી.

યથાર્થ જ્ઞાનની પ્રાપ્તિમાં તે વિષયનું જ્ઞેય શાસ્ત્ર, તે શાસ્ત્રનાં શાસ્ત્ર, ગુરુ, અને જ્ઞાતા, શાસ્ત્ર, અને તે શાસ્ત્રના જિજ્ઞાસુ શિષ્યના જ્ઞાનની શિષ્ય, ૯ ત્રિપુટીની સંપૂર્ણ આવશ્યકતા તો ૯કતાની આવ છે જ, અને વિશેષમાં ૯ ત્રિપુટીની ૯કતાની શ્યક્તા -સમાનતાની-પળ સંપૂર્ણ અપેક્ષા છે. ૯ ત્રિપુ-ટીની ૯કતા થપ જ સારસ્ય અભિવ્યક્ત થઈ, શિષ્યને ફલ સિદ્ધિ થાય છે.

“શાસ્ત્રદષ્ટિર્ગુરોર્વાક્યં તૃતીયશ્ચાત્મનિશ્ચયઃ ।

ત્રિધૈવ યો વિજાનાતિ સ મુક્તો નાત્ર સંશયઃ ॥”

‘શાસ્ત્રની દષ્ટિ, ગુરુનુ વાક્ય, ત્રીજો આત્માનો નિશ્ચય, ૯ ત્રણ પ્રકારે જ જે જાણે તે મુક્ત છે. ૯માં સંશય નહિ.’

તત્ત્વજ્ઞાનના તાત્પર્યાર્થની યથાર્થ પ્રાપ્તિનાં તુલાયન્ત્ર સમાન ૯ સમતા-૯કતા-થવાની આવશ્યકતા છે. તુલાયન્ત્રમાં શંકુ-સહિત તુલાદણ્ડ, અને તે દણ્ડના અન્તભાગે શિષ્યાપ લટ કાવેલાં યે માપનપાત્ર ૯ ૯ક ભાગ; તથા તુલાદણ્ડના

૧. તોલ કરવાનો કાંટો. ૨ તેમાંની કાંઠાવાળી-તોયવાળી ઢાંઠી. ૩ તે ઢાંઠીના યે છેદાપ શિકાં વાપી લટકાવેલાં યે તાપુલાં.

શંકુના મૂલમાં પ્રવેશ કરી તે શંકુને ધરી રહેનાર તુલાધર-જે તે શંકુના ઉભય પાર્શ્વે લંબ ચલયાકાર દ્વિપક્ષ હોય છે તે-દ્વિતીય તૃતીય ભાગ; ૫ સર્વ ભાગ મઢી તુલાયન્ત્ર સિદ્ધ થાય છે. તેમાં જે દાય પદાર્થનો તોલ કરવો હોય છે તે દાય તથા પરિમાણ, પેલાં પાત્રોમાં મૂકાય છે. જ્યારે તે તુલાદણ્ડનો શંકુ તે તુલાધરના દ્વિપક્ષના મધ્યે ઢાવી, તે શંકુ તથા તુલાધર સમતા-એકતા પામે છે ત્યારે યથાવત્ તોલ થવો ગણાય છે. જ્યાં સુધી સમતોલ ન થાય ત્યાં સુધી ૫ તુલાધરના દ્વિપક્ષ મધ્યે તુલાદણ્ડનો શંકુ અસ્થિર-દોલાયમાન-રહે છે; અને તેનાં પાત્રોમાં પદાર્થ પડે છે તેમ તે દંડ અધઝર્ધ્વ જાય છે. ૫ વૃત્તાન્ત સર્વ તોલકારને અનુભવસિદ્ધ છે.

૫ દૃષ્ટાન્તનું દાર્ષાન્ત શિષ્ય તથા શાસ્ત્ર-ગુરુ છે; તોલ-યન્ત્રના પ્રથમભાગસ્થાનીય શિષ્ય છે; અને દ્વિતીયભાગ તુલાધરસ્થાનીય શાસ્ત્ર-ગુરુ છે. શંકુસ્થાનીય શિષ્યની યુદ્ધિ અને તુલાધરના દ્વિપક્ષસ્થાનીય શાસ્ત્ર-ગુરુની ઉક્તિ ૫ ભાગ-ત્રય એકતા પામે-સમધારણ થાય, ત્યારે શિષ્યનું જ્ઞાન યથાર્થ થયું ગણાય છે. શિષ્યના અન્તઃકરણમાં શંકા સમા-ધાનરૂપ પદાર્થો પડતાં તે દોલાયમાન-કંપાયમાન-રહે છે. અને તે કાલે શાસ્ત્ર-ગુરુરૂપ તુલાધરના દ્વિપક્ષ અને શિષ્યયુદ્ધિરૂપ શંકુ, ૫ ભાગત્રય ભિન્ન ભિન્ન જેવા દેખાય છે; પરંતુ સચ્છાસ્ત્રનું તાત્પર્ય અને સદ્ગુણનું વિવરણ સદા સંવ-ન્ધવાન્ અને સમાન હોય છે. શિષ્યયુદ્ધિરૂપ શંકુના આન્દો-લનથી ૫ ત્રયમાં વિપમતા પ્રતીતા થાય છે. શિષ્યના અન્તઃકરણમાં સંભવાસંભવ, ઘલાવલ, ફલાફલની પરીક્ષા થઈ યથાર્થ જ્ઞાનપ્રાપ્તિ થયે, તે શિષ્યની યુદ્ધિરૂપ શંકુ, શાસ્ત્ર-

શાસ્ત્રારૂપ તુલાધરના દ્વિપક્ષસહ, સમતામાં આવી સ્થિર-શાન્ત-થઈ રહે છે. જ્ઞાન યથાર્થ થયાનું પ્રત્યક્ષ ચિહ્ન એ છે. કારણ આ સંસારભ્રમ, ભ્રાન્તિપ્રત્યયનિમિત્ત જ છે, પરમાર્થથી તો નથી જ, એમ સમ્યક્દર્શનથી, અત્યંત જ ઉપરમ થાય છે.

એ શાસ્ત્ર, શાસ્ત્રા અને શિષ્યની ત્રિપુટીમાં શાસ્ત્ર, પ્રકાશ તથા જલ સમ છે; શાસ્ત્રા, વીજ સમ છે; અને શિષ્ય, પૃથિવી સમ છે. એ ત્રિકમાં શાસ્ત્રા ગુરુપકરી સ્વોપદેશજાતીય વોધદ્રુમ શિષ્યરૂપ ક્ષેત્રમાં સમર્પિત થાય છે. અથવા

આ દુઃખમય તરણીય ભવસાગર તરવામાં ગુરુ.

તાર્ય શિષ્યોને અર્થ તરિ-નૌકા-રૂપ શાસ્ત્ર છે અને તેના કર્ણધાર તારક શાસ્ત્રા ગુરુ છે. અર્થાત્ તારક ગુરુતંત્ર સર્વ છે, ણથી ગુરુ શ્રેષ્ઠ ગણાય છે. તેથી સંસારતારક સ્વપ્રકાશાત્મસ્વરૂપસમર્પક શ્રોત્રિય બ્રહ્મનિષ્ઠ ગુરુ સમીપ શ્રેયઃસાધક શિષ્યો વિધિવત્ જાય છે. અને તેવા ગુરુ પરમકૃપાવતે શાસ્ત્રાચન્દ્રદર્શનવત્, વા સોપા-નારોહણવત્, સ્થૂલથી આરંભી સૂક્ષ્મને સૂક્ષ્મતરને બુદ્ધિ-વિપય જણાવી, તેથી અતિરિક્ત સચ્ચિદાનન્દસ્વરૂપ ઉપ-દેશે છે. અથવા અધ્યારોપાપવાદન્યાયેકરી પરમરહસ્ય બ્રહ્મ સ્વરૂપ ઉપદેશે છે. અને તે શિષ્ય અધિકારી હોય છે તો સ્વારાજ્યમાં અભિવિજ્ઞાય છે.

“અધ્યારોપાપવાદાભ્યાં નિષ્પ્રપંચં પ્રપંચ્યતે ।

શિષ્યાણાં વોધસિદ્ધ્યર્થં તત્ત્વજ્ઞૈઃ કલ્પિતઃ ક્રમઃ” ॥

‘અધ્યારોપં અને અપવાદ એ બેપકરી નિષ્પ્રપંચ પરમાત્મા પ્રપંચાય (ઘર્ણાય) છે. તત્ત્વજ્ઞોણ શિષ્યોના વોધની સિદ્ધિસારૂ એ ક્રમ કલ્પિત છે.’

અસર્પભૂતા રજ્જુવિષે સર્પના આરોપત્વ, ઘંસ્તુવિષે અવ-
સ્તુનો આરોપ તે અધ્યારોપ કથાય છે.
અધ્યાગોપ.

સત્, ચિત્, આનન્દ, અનન્ત અદ્વય બ્રહ્મ ણ વસ્તુ
છે, અને અજ્ઞાનાદિ સકલ જડ સમૂહ અવસ્તુ છે... ..

ણ અવસ્તુ જડસમૂહ મહાપ્રપંચ અને તદુપહિત ઘંસ્તુ-
ચૈતન્ય ણ વૈથી, તતાયંસપિન્ડવત્, અન્યોન્ય તાદાન્મ્યાધ્યાસ
યાય છે. ણ અધ્યારોપ છે.

અનાત્મા જડ જે મામ્ય છે તે અવસ્તુ છે, અને તેનો માસક
આત્મા ચૈતન્ય છે તે ઘંસ્તુ છે.

રજ્જુના વિવર્ત સર્પનું રજ્જુમાત્રત્વત્, ઘંસ્તુના વિવર્ત
અવસ્તુ અજ્ઞાનાદિ પ્રપંચનું ઘંસ્તુમાત્રત્વ તે
અપવાદ કથાય છે. ણ સંપ્રહવાન્યનું વિવ-
અપવાદ અને
વિવર્ત
રણ આ છે. રજ્જુસ્વરૂપ પરિત્યાગ કન્યા-

પિના સર્પાકારે માસમાન રજ્જુ, ણ વિવર્ત. ણ વિવ-
ર્તનો અપવાદ (વાધ) નામ અધિષ્ઠાન રજ્જુમાત્રતાપ કરી
અવસ્થાન; તત્સમ ચિદ્ઘંસ્તુવિવર્ત જે અજ્ઞાનાદિ પ્રપંચનો
અપવાદ (વાધ) નામ ચિદ્ઘંસ્તુમાત્રતાપકરી અવસ્થાન
ણ અપવાદ. યથાન્વરૂપે કરી અવસ્થિત ઘંસ્તુનો અન્યથા-
ભાવ દ્વિધા થાય છે.—પરિણામભાવ અને વિવર્તભાવ યથા-
ર્થથી સ્વરૂપને પરિત્યજીને સ્વરૂપાન્તરની પ્રાપ્તિ તે ઘંસ્તુનો
પરિણામભાવ છે. જેમ દુગ્ધ જ સ્વરૂપને પરિત્યજીને દધિઆ-
કારે પરિણમે છે તેમ. સ્વસ્વરૂપના પરિત્યાગ વિના સ્વરૂપાન્તરે
મિથ્યા પ્રતીતિ, તે ઘંસ્તુનો વિવર્તભાવ છે, જેમ રજ્જુ, સ્વસ્વ-
રૂપના અપરિત્યાગેકરી, સર્પાકારે મિથ્યા પ્રતિભાસે છે તેમ.

૧. કાલ્પય અનપાયી—અબાધ્ય—આત્મા ણ જ વસ્તુ શબ્દનો અર્થ છે

૨. તપાનેલા લોપડના ગોલાની પેટે.

વેદાન્તવિષે બ્રહ્મામાં પ્રપંચના ભાનનો પરિણામભાવ અંગી-કાર કરાતો નથી, કારણ કે દુઃખાદિવત્ બ્રહ્મને વિકારિત્વના પ્રસંગથી અનિત્યત્વાદિ દોષની આપત્તિ થાય. (બ્રહ્મના) વિવર્ત-ભાવના અંગીકારમાં એ દોષ નથી. અધિષ્ઠાનઅવશેષ એ જ કલ્પિતવસ્તુનો (આત્યંતિક) નાશ (વાધ) છે. તેથી ચિદ્વિ-વર્ત પ્રપંચનું ચિન્માત્ર અવસ્થાન એ જ અપવાદ.

એમ પ્રથમ નિપ્રપંચ આત્મવસ્તુમાં પ્રપંચનો અધ્યારોપ (કરી, પછી) કારણ-સૂક્ષ્મ-સ્થૂલ-પ્રપંચાન્ત ઉત્પત્તિના વિપ-રીત્યેકરી તેના તેના કારણરૂપે અવસ્થાન (કરવું) એ જ અપ-વાદ. અલંડ બ્રહ્મસ્વરૂપ (વાણીનું) અગોચર હોવાથી (લક્ષણા કર્યા વિના) વિધિમુખેકરી ઉપદેશાવાને અશક્ય છે; તેથી અવિદ્યાએ અધ્યારોપિત મિથ્યા નાના પદાર્થના નિષેધમુખેકરી, 'નેતિ નેતિ' ઉપલક્ષિત અલ્પાંડ ચૈતન્ય જ ઉપદેશાય છે. કોઈ-વાર લક્ષણાપકરી 'સત્યં જ્ઞાનમનન્તં બ્રહ્મ' એમ વિધિમુખે પણ બ્રહ્મ ઉપદેશાય છે. વિધિનિષેધાદિ સર્વવેદાન્તવાચ્યોનું સાક્ષાત્ વા પરંપરાપકરી અદ્વિતીય આત્મવસ્તુ પ્રતિપાદનમાં

૧. જેમ રજુમાં વ્યાવહારિક સર્પનો ત્રૈકાલિક અભાવ આત્મવાક્ય, યુક્તિ ને જ્ઞાનથી જાણીને તે રજુરૂપે અવસ્થાનરૂપ બાધમય અપવાદ થાય છે, તેમ બ્રહ્મામાં પારમાર્થિક પ્રપંચનો ત્રૈકાલિક અભાવ, શ્રુતિ, યુક્તિ ને અપરોક્ષ-જ્ઞાનથી જાણીને અધિષ્ઠાનરૂપે અવસ્થાનરૂપ બાધમય અપવાદ થાય છે. પદાન્તરે ઉત્પત્તિના વિપરીત ક્રમે કાર્યનું કારણમાં લય કરી કારણરૂપે અવસ્થાન એ સ્થૂલબુદ્ધિમાનને લયચિદનરૂપ ધ્યાન ઉપદેશ્યું છે. એ મુખ્ય અપવાદ નથી. બ્રહ્મામાં પ્રપંચનો ત્રૈકાલિક અત્યંતાભાવ જ્ઞાનથી પૂર્વ સિદ્ધ છે, તે વિષય- (પ્રકાશ્ય) રૂપ બાધ છે. તથા તેનું પ્રકાશક વૃત્તિજ્ઞાન તે વિષયી (પ્રકાશક)-રૂપ બાધ છે. તેમાં જ્ઞાનરૂપજન્યરાધ શાસ્ત્રીય (શાસ્ત્રવાક્યજન્ય), યૌક્તિક (અનેકવિધયુક્તિજન્ય), અને અપરોક્ષ (અધિષ્ઠાનજ્ઞાનજન્ય) બાધ એ ભેદ-કરી ત્રણ પ્રકારનો છે. તેમાં પ્રથમ દ્વિતીય પરોક્ષ બાધ છે, અને તૃતીય અપ-રોક્ષ બાધ છે. એ ત્રિવિધ બાધ અપવાદ શબ્દનો અર્થ છે.

ज तात्पर्य छे. अनात्मवस्तु प्रतिपादन करवामां वेदान्तवा-
ययोनो आदर नथी.

एम ईश्वरना अनुग्रहथी शास्त्रगुरुरूपाएकरी बोध थये
अविद्याकल्पित अध्यारोपनो अपवाद थई आत्मानुं परतत्त्व
प्रकृत थाय छे. ए प्रकारे प्रबुद्ध शिष्य कृतार्थ थाय छे. शंकर
भगवान् वदे छे के:-

“स्वस्याविद्याबन्धसंबंधमोक्षात्
सत्यज्ञानानन्दरूपात्मलब्धौ ।
शास्त्रं युक्तिदेशिकोक्तिः प्रमाणं
चान्तःसिद्धा स्वानुभूतिः प्रमाणं ॥”

‘स्वनी अविद्याना बन्धना संबन्धना मोक्षथी सत्य-ज्ञान-
आनन्दरूप आत्मानी उपलब्धि विषये, शास्त्र, युक्ति, देशि-
कनी उक्ति नाम गुरुनां विवरण वचन, ए प्रमाण छे, अने
अन्तःसिद्ध स्वानुभव प्रमाण छे.’

शास्त्रप्रतिपादित सच्चिदानन्द ब्रह्मनो शिष्यने संबन्धकरा-
वनाए गुरु छे, तेथी ब्रह्मसंबन्धक गुरु थेट्ट
गुरुमहिमा.
गणाय छे. जे गुरुनी रूपाथी शिष्यनी
बुद्धिमां बोधरूप प्रकाश थई, अविद्यारूप अन्धकारनो
अभाव थई जाय छे, अने ब्रह्म-आत्मानी एकतानी अव-
गतिएकरी अपार अखण्ड स्वानन्दसुखना वैभवनो आवि-
र्भाव थाय छे, ते अनुपम ब्रह्मविद्याना प्रकाशक सद्गुरु,
प्रकाश्य श्रेयोर्थां शिष्योने कृतकृत्य करीने स्वसदृश करे छे.
एथी शंकरभगवान् तेरा गुरुने निरुपम गणी शतश्लोकीमां
प्रथम ज प्रशंसे छे के:-

“दृष्टान्तो नैव दृष्टन्निभुवनजठरे
सद्गुरोर्ज्ञानदातुः । स्पर्शश्चेत्तत्र कल्प्यः

स नयति यद्दहो स्वर्णतामश्मसारं ॥
 न स्पर्शत्वं तथापि श्रितचरणयुगे
 सद्गुरुः स्वीयशिष्ये । स्वीयं साम्यं विधत्ते
 भवति निरुपमस्तेन वाऽलौकिकोपि ॥ १ ॥”

‘त्रिभुवनना जठरमां ज्ञानदाता गुरुजं दृष्टान्तं नथी ज दीडुं,
 (अथवा अलौकिक दृष्टान्तं पण नथी दीडुं;) तेमां कइक
 समानताथी स्पर्शमणि दृष्टान्तरूपे कल्पवा योग्य गणाय, पण ते
 घटे नहि. कारण के ते स्पर्शमणि लोहने सुवर्ण करे छे, तथापि
 स्वसदृश स्पर्शत्व पमाडी शकतो नथी. सद्गुरु तो चरणयुग-
 आश्रित स्वशिष्यमां स्वसाम्य (पोताना समानपणुं) करे छे.
 ते कारणे करी स्पर्शादिनी उपमा योग्या न होवायी गुरु
 निरुपम छे, वा अलौकिक पण छे.’

प्रक्रियाओ.

शिष्टसंप्रदायविद् महात्माओंने संमत परमात्माना तत्त्व-
 ज्ञानना सिद्धान्तनो सारभूत पिण्डीकृत श्लोक आ छे:

“श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः ।
 ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव कैवलं” ॥

(द्विहार)

‘अर्धश्लोके ते यदु उक्तं कोटि ग्रंथे ज.

मिदान्तगार.

ब्रह्म सत्य, मिथ्या जगत, जीव ब्रह्म ज छे ज.’

मुख्यतये ए ब्रह्म जगत जीव किया जीव-जगत-परमात्मा ए
 त्रिवर्गमां ज सर्वनो अन्तर्भाव थाय छे. एयी श्रूयमाणा प्रक्रि-
 याओमां प्रकारान्तरे नाना विचारो आये तेना तात्पर्यार्थना
 निर्णयमारू तेनुं घर्गीकरण तदनुसार करया लक्ष राखनुं.
 भेदमां भय छे, अभेदमां-पेक्ष्यमां ज आनन्द-सुख छे. द्ययहारमां

अने परमार्थमां ए सिद्धान्त समान प्रवर्तं छे. भेदप्रमाणे भय, एकता प्रमाणे आनन्द. अभ्युदयार्थी अने श्रेयार्थी उभयने एकतानो धिम्बर वधे ज स्वार्थनी सिद्धि छे. ए तत्त्वज्ञाननुं फलित स्वारस्य छे. भेदनो धिजार अने अभेदनो सन्कार तथा स्वीकार ए ज कर्तव्य छे. अविद्या प्रक्षीयमाणा थये अने विद्या उद्भूता थये आत्मानो परिच्छिन्नभाव जई सर्वात्मभाव थाय छे. अखिल एकता-ब्रह्मआत्मानो एकता-ए ज सर्वात्मभाव छे.

उत्तम अधिकारी प्रति सदात्मैकत्वनिर्णयपरताएकरी पर-मार्थतत्त्वोपदेश ज प्रधान छे. आत्मज्ञानथो अन्यत् निरति-शय श्रेयःसाधन छे नहि. यद्यपि गुहसंप्रदायरहित, अश्रुत-वेदान्त, अत्यंतबहिर्विषयासक्तबुद्धि, सम्यक् प्रमाणोर्मा अरुन श्रम एवा अविचेकीओने, अविद्याकल्पित नामरूप विशेषआकारेकरी अपहृतबुद्धिथी, आत्मभूत परमात्मा ब्रह्म, अत्यन्त प्रसिद्ध सुविज्ञेय आसन्नतर सते पण, अप्रसिद्ध दुर्विज्ञेय अतिदूर अन्यत् जेवां, -भामे छे; तथापि एओथी विपरीत जे विवेकीओ ते विवेकीओने, आत्मचेतन्य विना वस्तु-अन्तरनी अनुपलब्धिथी, लौकिकप्राह्यप्राहकष्टैतवम्नुमां मद्बुद्धि नितरां दुःसंपाद्या छे. तेना बाह्याकार-निवृत्तबुद्धि-मान् लब्ध गुरु आत्म-प्रसाद पुरुषने अतःपर (परमात्माथी पर) सुप्त, सुप्रसिद्ध, सुविज्ञेय, स्वासन्नं छे नहि.

तेना आत्मेश्वरैकत्वदर्शनलक्षण ज्ञानमां स्थित ज्ञाननिष्ठ पुरुषने अविद्याए अध्यारोपित नामरूपादि अनात्मानो निवृत्ति तथा आत्मचेतन्य विज्ञाननुं दर्शन सतत विद्यमान छे. ए ब्रह्मनुं सर्वात्मदर्शन कईक आ प्रकारे छे:-

“અસ્તિ ભાતિ પ્રિયં રૂપં નામ ચેત્યંશપञ्चકં ।

આદ્યં ત્રયં બ્રહ્મરૂપં જગદ્રૂપં તતો દ્વયમ્” ॥ ૨૦ ॥

દૃશ્યવિવેક ક્વિવા વાક્યમુખા

આ જીવ 'જગત્ પરમાત્મા, 'અસ્તિ' નામ છે, 'ભાતિ' નામ પ્રકાશે છે-જણાય છે, 'પ્રિય, નામ પ્રેમાસ્પેદ પંચાશક જગત્, છે, તેઓનું અમુક 'રૂપ' છે અને અમુક 'નામ' છે. ૫ પંચ અંશ મલીને લોકવ્યવહારગોચર ભૂતમૌ-તિકાત્મક સમસ્ત વસ્તુ પ્રતીત થાય છે. ૫ પંચાંશ વિના વ્યવહારનો અસંભવ છે. ૫ સર્વેમાં 'આદ્ય ત્રય' નામ, અસ્તિ-ભાતિ-પ્રિય-અંશ, કિંવા, સત્-ચિત્-આનન્દાત્મક અંશત્રય છે તે, બ્રહ્મનું સ્વરૂપ છે; અને સચ્ચિદાનન્દાત્મક અંશત્રયથી ઉપ-રિતન 'નામરૂપાત્મક' અંશદ્વય છે તે, જગત્-માયા-રૂપ છે.'

તે જગત્-રૂપ કાર્યથી અનુમેયા, અન્ય સામગ્રી અનપેક્ષિત અન્યસ્વરૂપપ્રદર્શના માયાના અંશનું નામ-રૂપકર્માર્થ્ય જગત્ તેની પ્રતીતિ ત્રિધા છે: જગત્ની ત્રિધા પ્રતીતિ ૧ લૌકિકી, ૨ શાસ્ત્રીયા, ૩ આનુભવિકી. તેઓની નિવૃત્તિ, ક્રમથી, વેદાન્તજ્ઞાનના શ્રવણ-મનન નિદિધ્યા-સને કરી, આત્મસાક્ષાત્કારે કરી, અને પ્રારબ્ધક્ષયે કરી થાય છે, અન્ય પ્રકારે થાય નહિ. ૫મ થયે કેવલ પરમાત્મા જ જેમ છે તેમ પ્રકાશે છે. અથવા અજ્ઞાનદશામાં પૂર્વે અનુભૂત પ્રપંચગત પારમાર્થિક સત્યત્વની દૃષ્ટિ, તે સત્યત્વદૃષ્ટિ અદ્વૈત શાસ્ત્રના શ્રવણજન્ય 'જ્ઞાને' કરી નાશે છે; તે પછી વ્યવહારક્ષમત્વે કરી પ્રપંચનું વ્યાવહારિકત્વ પ્રતીત થાય છે, તે વ્યાવહારિકત્વ, શ્રવણના મનનથી પ્રાદુર્ભૂત પરોક્ષવિજ્ઞાનેકરી નાશે

૧. પ્રેમ-હોહન પ્રતિષ્ઠિત સ્થાન. ૨. વિચિત્રકાર્યજનન ત્વ આકાર છે જેની ૫વી માયા.

छे, ते पट्टी प्रतीतिकालस्थायित्वे करी जगतनुं प्रातिभा-
सिकत्व स्फुरे छे, ते प्रातिभासिकत्व, निदिध्यासनयी प्रादु-
र्भूत सम्यक्ज्ञाने करी प्रारब्धादि कर्मत्रयना नाशे करी
विनाशे छे. एम त्रिधा आत्ममाया नाशे छे. अने ब्रह्मात्मत्वनुं
ज्ञान थाय छे. ए आत्मज्ञान किंवा तत्त्वज्ञान समकाल ज
चिदान् मुक्त थाय छे.

आत्मानात्मविवेक नामे प्रकरण ग्रंथमां शंकरभगवान्
आत्मा-अनात्मानुं लक्षण आ प्रकारे वर्णं छे:-

“दृश्यं सर्वमनात्मा स्याद्दृगेवात्मा विवेकिनः ।

आत्मानात्मविवेकोऽयं कथ्यते ग्रंथकोटिभिः ॥”

‘विवेकीने दृश्य सर्व अनात्मा थाय, दृक्-द्रष्टा-ज आत्मा
दृक्-दृश्य. थाय. आत्मा अनात्मानो ए विवेक ग्रंथनां
कोटीओपकरी थाय छे.’

आत्मा नाम स्थूल-सूक्ष्म-कारण-शरीरत्रययी विलक्षण,
पंचक्रोशयी ध्यतिरिक्त, अवस्थात्रयनो (जाग्रत्-स्वप्न-सुपुति
एओनो) साक्षी, सच्चिदानंदस्वरूप. ‘सत्’-स्वरूप नाम को-
इयी पण अवाच्यमानत्वे करी कालत्रयमां पण एकरूपे वि-
द्यमान वस्तु. ‘चित्’-स्वरूप नाम साधनान्तर निरपेक्षताए-
करी स्वयंप्रकाशमान होई, स्वमां आरोपितसर्वपदार्थअवभासक
वस्तु. ‘आनन्द’-स्वरूप नाम नित्यनिरतिशयपरमप्रेमास्पद.

ए आत्मा द्विविध छे: ईश्वर अने जीव. तेमां शुद्ध अशुद्ध
भेदयी ए वे-ईश्वर अने जीव पण द्विविध छे. तेओमां माया-
उपाधित्वे करी अशुद्ध ईश्वर, अने अविद्या-उपाधित्वे करी
अशुद्ध जीव, भेदव्यवहारना हेतु छे. उपाधित्वरहित शुद्ध
ईश्वर अने शुद्ध जीव अभेदव्यवहारना हेतु छे. तेओमां
देहत्रयविशिष्ट अशुद्ध जीव ए अपकृष्ट छे, अने माया अने

તે વિવેકવિચારનો આ ક્રમ છે. કર્તા મોક્તા સુણી
 દુઃખી ઇત્યાદિ વ્યવહિયમાણ વ્યવહારનો
 વિવિધવિચાર- વહનકર્તા-વ્યવહારનું મૂલ-અંહમ્ (હું) તે
 ક્રમ કોણ શું સ્વરૂપ? એ પ્રથમ વિચાર છે.
 અર્થાત્ સ્વસ્વરૂપ પ્રથમ યથાવત્ જાણવું, એ જ આદિકર્તવ્ય
 છે. તે સ્વસ્વરૂપ, અજ્ઞાનદશામાં, કર્તામોક્તાદિ લક્ષણવાલું
 પ્રતીત થાય છે એવું જ છે કિંવા તેથી વિલક્ષણ છે, એનો
 અનેક પ્રમાણો કરી નિર્ણય કર્તવ્ય છે. એ વિષયે વિચાર એ
 જ 'આત્મવિચાર' છે.

પશ્ચાત્ આ સ્થાવરજંગમાત્મક જગત્ કયાંથી 'જાત' નામ
 જાયુ છે. જગત્નું અધિષ્ઠાન શું છે? તથા આ જગત્નો કર્તા
 (ઉત્પાદક) કોણ છે? જીવોનાં અદષ્ટ, કિંવા ઈશ્વર, કિંવા
 અન્યત્ કઈ. આ જગત્વિષયે ઉપાદાન શું છે? એ વિષયે
 વિચાર એ જ જ્ઞાનપ્રકાશક વિચાર છે.

આત્મવિચાર કર્તા સ્વપ્ન થાય છે કે: અજ્ઞાનરૂપ અધિ
 ષ્ઠાનથી-ઉત્પત્તિસ્થાનથી-જાત (થણુ) અને જેનાં કર્તા સંકલ્પ
 છે, એવો આ નામરૂપાત્મક અજ્ઞાનપ્રભવ સર્વ દૃશ્ય જડવગ-દેહ-
 ઈન્દ્રિય સંઘાતથી તે બ્રહ્માણ્ડ સુધી-છે તે આત્મા હુ નથી કિન્તુ
 એઓથી વિલક્ષણ સર્વવિક્રિયારહિત આત્મા છે.

૧. 'અહમ્' શબ્દસંબધમાં આવી કલ્પના છે. અ આદિ (૧૬) સ્વર, તથા
 કયો હ સુધીના (૨૨) વ્યંજન મઢી મુલ (૪૯) વર્ણ છે. તે અ થી હ પર્યંતનો
 પ્રત્યાહાર જેમાં સર્વ વર્ણો—અસરો—આથી જરાથી તમસ્વ નામો અને રૂપો પણ
 આવી ગયાં ગણાય છે, તે જ કારણથી જ તે 'જીવ' શબ્દનો વાચક છે. સર્વ
 દૃશ્યવગ જીવમાત્ર અરભ્મીને જ છે, તેનુ પ્રથમ સ્પર્શ 'અહ' છે. એ
 'અહ' સજા યયાનુ કારણ એ જ છે કે, તે 'અહ' પ્રત્યાહારમાં સમસ્ત નામ-
 રૂપ અન્વર્ગન થાય. વાણીનું સાધન સર્વવર્ણોનો પ્રત્યાહાર 'અહ' એ કટસ્થાનથી
 ઉદ્ભવી તેનો ઓટસ્થાન 'મ્'કારમાં અત આવી 'અહમ્' શબ્દ થાય છે. તે
 મૂલ્યે છે કે સર્વ વાચ્યનો આરમ્બ અને અંત 'અહમ્' માં જ છે.

मनुष्यमात्रमां प्रथम 'अहं' बुद्धि समाना-एका-ज हांबायी अनेक जलपात्रोमां एक ज सूर्यवत् सजानीयविजातीयभेद-रहित एक ज, सर्वनो प्रकाशक, ज्ञाता, साक्षी, अहंप्रत्ययवेद्य पयो आत्मा छे, ते सत्यज्ञानआनंदअद्वयादिलक्षण ब्रह्म ज छे. ए जीव-ब्रह्मणुं किंचा आत्मा-परमान्माणुं पेष्य, ज्ञाने करी देहान्मभाव दूर भई अज्ञाननो प्रचिलय थते, अनु-भवसिद्ध थाय छे. ते आत्मविचार अनेक प्रकारे कराय छे.

“पञ्चानामपि कोशानामपवादे विभात्ययं शुद्धः ।

नित्यानन्दैकरसः प्रत्यग्रूपः परं स्वयं ज्योतिः ॥ १५३ ॥

आत्मानात्मविवेकः कर्त्तव्यो बन्धमुक्तये विदुषा ।

तेनैवानन्दी भवति स्वं विज्ञाय सच्चिदानन्दम्” १५४॥

शंकरविरचित विवेकचूडामणि.

(जेम चापीन्थ जल ते चापीमांथी ज उत्पन्न थपला शीवाल-पटलोप करी ढंकाय छे, एथी पोते-जल जणातुं नथी; ते शीवालने दूर करे सने तृष्णा-संतापहर पुग्गने मद्यः सौग्य-प्रद परमशुद्ध सारुं जल प्रतीत थाय छे; तेम आत्मानां उपाधि स्वशक्ति जे अपराप्रकृति माया तेमांथी उत्पन्न थपला अन्नमयादि पंचकोशोप करी आत्मा आवृत्त थयो छे ते सम्यक् भासतो नथी. ते पंचकोशानो पण अपवांद् थये आ (आत्मा) नित्यानन्दैकरस स्वयंज्योतिः प्रत्यक्स्वरूप परमशुद्ध विमामे छे-स्पष्ट प्रतीत थाय छे. विद्वाने बंधथी मुक्ति सारु आत्मा-अनात्मानां विवेक कर्त्तव्य छे. तेणेकरीने ज स्वरूपने सच्चिदानन्द जाणीने (विद्वान्) आनंदी थाय छे.)

‘ देहोऽहमित्येव जहस्य बुद्धि-

देहे च जीवे विदुषस्त्वहंधीः ।

માયાનાં કાર્ય યથી વસ્તુતઃ શુન્ય પરંતુ યઓનો આશ્રયમ્ભૂત હોવાથી સર્વનું કારણ જે ઈશ્વર ય સર્વોત્કૃષ્ટ છે.

અનાત્મા નામ અનૃત-જડ-દુઃખાત્મક સમષ્ટિ-વ્યષ્ટિ-આત્મક સ્થૂલ-સૂક્ષ્મ-કારણ-શરીરત્રય. તેમાં અનૃત નામ કાલ-ત્રય-વિષે અવિદ્યમાન વસ્તુ. જડ નામ સ્વવિષય-પરવિષય-જ્ઞાનરહિત વસ્તુ. દુઃખ નામ અપ્રીતિરૂપ વસ્તુ.

ય ચિત્-જડરૂપ વૈલક્ષણ્યથી, પ્રકાશ અને તમ સમ વિ-ભક્ત 'આત્મા' અને 'અનાત્મા' ય ઉભયનો અવિવેક ય જ પ્રાણીને વંધનું કારણ છે. અને ય આત્મા અનાત્મા યઓનો વિવેક ય મોક્ષનું કારણ છે.

અનન્યલભ્ય વેદાન્તનો વિષય-અદ્વિતીય બ્રહ્માત્મત્વ-તેના જ્ઞાનથી પરમ પુરુષાર્થ જે સર્વાત્મભાવની અભિવ્યક્તિ, ય રૂપ સાક્ષાત્ ફલ થાય છે.

સ્થૂલ લિંગ-દેહથી વ્યતિરિક્ત મુખ્યાત્મા-પુરુષ-ચિદ્રૂપ-સાક્ષી, તે મુખ્યાત્મામાં જ જગત્કારણ પરમાત્માને, વેદાન્ત-મહાવાક્યોદ્વારા, દેખે છેપરમાત્મા જ સર્વ જગતનું ઉપા-દાન છે, ઉપાદાન વિના કાર્યરૂપ કંઈ વસ્તુ છે જ નહિ. જેમ મૃતસુવર્ણાદિ વિના ઘટકુંડલાદિ વસ્તુનું અદર્શન છે-વસ્તુ છે જ નહિ-તેમ. યથી જગત્કારણ પરમાત્માને સ્વાત્મત્વે કરી દેખતાં સર્વ જગત્ને યજ્ઞ સ્વાત્મત્વે કરીને જ (વિદ્વાન્) દેખે છે. યમ મુખ્યાત્માના સ્વાત્મના-ઈશ્વરત્વને અને અશેષ જગત્કારણત્વને ઉપનિષદો પ્રતિપાદન કરે છે.

૧. '(મુખ્ય) આત્મામાં જ (પરમ) આત્માને દેખે છે,' યમ આધાર આધે યમેદ પ્રતીત થાય છે, ય,—રાહુનું શિર—એની પેટે, યક જ વસ્તુમાં ઔપચારિક છે. જીવાત્માને જ પરમાત્મત્વે કરી, વેદાન્તમહાવાક્યોપ (સાક્ષી) દેખે છે યમ અર્થ છે.

स्वानुभवयी सर्वानुभवार्थं प्रथमं भातमानु-‘अहं’तुं ‘हुं’तुं-ज्ञान. ७३

एवा अद्वितीयत्वना बोधयी पश्चात् अविद्या निवर्ते छे. एम यये राहुयी (पृथिवीनी छायायी) विमुक्त चंद्रमा उज्ज्वल भासे छे, तेम आच्छादिका अविद्यायी बोधे करी विमुक्त आत्मा सच्चिदानंदस्वरूप भासे छे, अने तेना अद्वितीयत्वनो तथा आनन्दैकरसत्वनो आविर्भाव थाय छे.

पदार्थना परिशोधनमां प्रसिद्धना अनुवादे करी अप्र-सिद्ध निरूपणीय छे-एवो न्याय छे. जीवमांना आत्मा-अना-त्माना स्वरूपविषये विवेक थये, जगत्मांना आत्मा-अनात्मा-स्वरूपनुं, किंवा चैतन्यईश्वरना स्वरूपनुं अने जडप्रकृतिना स्वरूपनुं ज्ञान सुलभ थाय छे. तेयी आत्मज्ञान ज परम-पुरुषार्योओं प्रथम साधवा योग्य छे.

आ जगत्मांना गत तेम ज विद्यमान तत्त्ववेत्ताओंनां मतनां
स्वानुभवयी स- अन्त . कइंक आ प्रकारनी एकाप्रतामां आवतां
वांनुभवार्थं प्रथम प्रतीत थाय छे. प्रसिद्ध एकदेश सुसाध्य
आत्मानु-‘अहं’तुं- स्व-आत्मा-अस्मत्-विषये यथार्थ जाणेथी अप्र-
‘हुं’तुं-ज्ञान. सिद्ध अशेष विश्व-युष्मत्-विषये अनुमाना-
दियो जाणवुं सुतर-सुलभ थाय छे. अर्थात् पिण्डविषये यथार्थ
जाण्यथी ब्रह्माण्डविषये जाणवुं, किंवा व्यष्टिविषये जाण्यथी
समष्टिविषये जाणवुं ए संभवित कोटिमां आवे छे. तेयी
प्रामाणिक पुरुषो ज्ञानसिद्धिअर्थ सारासार विचारना
क्रमनो प्रचार आ प्रमाणे राखे छे:- (अने जेम प्रकाश विना
घटादि पदार्थोंनुं भान थतुं नथी तेम विचार विना केवल कर्म-
उपासनलक्षण साधनोप करी ज्ञान उत्पन्न थतुं नथी, ए तां
प्रसिद्ध छे.)

“कोऽहं कथमिदं जातं को वै कर्ताऽस्य विद्यते ।

उपादानं किमस्तीह विचारः सोऽयमीदृशः” ॥ १२ ॥

अपरोक्षानुभूतिः.

તે વિવેકવિચારનો આ ક્રમ છે. કર્તા મોક્ષા સુખી
 દુઃખી શ્યાદિ વ્યવહિયમાણ વ્યવહારનો
 વિવિધવિચાર- વહનકર્તા-વ્યવહારનું મૂલ-અંહમ્ (હું) તે
 ક્રમ. કોણ શું સ્વરૂપ? એ પ્રથમ વિચાર છે.
 અર્થાત્ સ્વસ્વરૂપ પ્રથમ યથાવત્ જાણવું, એ જ આદિકર્તવ્ય
 છે. તે સ્વસ્વરૂપ, અજ્ઞાનદશામાં, કર્તામોક્ષાદિ લક્ષણવાલું
 પ્રતીત થાય છે એવું જ છે કિંવા તેથી વિલક્ષણ છે, એનો
 અનેક પ્રમાણોએ કરી નિર્ણય કર્તવ્ય છે. એ વિષયે વિચાર એ
 જ 'આત્મવિચાર' છે.

પશ્ચાત્ આ સ્થાવરજંગમાત્મક જગત્ કયાંથી 'જાત' નામ
 જાયું છે. જગત્નું અધિષ્ઠાન શું છે? તથા આ જગત્નો કર્તા
 (ઉત્પાદક) કોણ છે? જીવોનાં અદૃષ્ટ, કિંવા ઈશ્વર, કિંવા
 અન્યત્ કહું. આ જગત્વિષયે ઉપાદાન શું છે? એ વિષયે
 વિચાર એ જ જ્ઞાનપ્રકાશક વિચાર છે.

આત્મવિચાર કરતાં સ્પષ્ટ થાય છે કે: અજ્ઞાનરૂપ અધિ-
 ષ્ઠાનથી-ઉત્પત્તિસ્થાનથી-જાત (થણું) અને જેનો કર્તા સંકલ્પ
 છે, એવો આ નામરૂપાત્મક અજ્ઞાનપ્રમય સર્વ દૃશ્ય જડવગ-દેહ-
 ઇન્દ્રિય-સંઘાતથી તે બ્રહ્માણ્ડ સુધી-છે તે આત્મા હું નથી કિન્તુ
 એઓથી વિલક્ષણ સર્વવિક્રિયારહિત આત્મા છે.

૧. 'અહમ્' શબ્દસંબધમા આવી કલ્પના છે. જ આદિ (૧૬) સ્વર, તથા
 કયો હ સુધીના (૨૨) વ્યંજન મઠ્ઠી કુલ (૪૯) વર્ણ છે. તે અ યી હ પર્યંતનો
 પ્રત્યાહાર એમાં સર્વ વર્ણો—અક્ષરો—આવી જગાથી નમસ્ત નામો અને રૂપો પણ
 આવી ગયાં ગણાય છે, તે જ કારણથી જ તે 'જીવ' શબ્દનો વાચક છે. સર્વ
 દૃશ્યવગ જીવમાનન અગ્રભૂતિને જ છે, તેનું પ્રથમ સ્ફુરણ 'અહં' છે. એ
 'અહં' સંજ્ઞા થયાનું કારણ એ જ છે કે, તે 'અહં' પ્રત્યાહારમાં સમસ્ત નામ-
 રૂપ અન્નાર્ગત થાય. વાણીનું સાધન સર્વવર્ણોનો પ્રત્યાહાર 'અહં' એ કંઠસ્થાનથી
 ઉદ્ભવી તેનો ઓષ્ઠસ્થાન 'મ્'કારમા અત આવી 'અહમ્' શબ્દ થાય છે. તે
 મૂલ્યે છે કે સર્વ વાચ્યનો આરંભ અને અંત 'અહમ્' માં જ છે.

मनुष्यमात्रमां प्रथम 'अहं' बुद्धि समाना-एका-ज होवार्थी अनेक जलपात्रोमां एक ज सूर्यवत् सजातीयविजातीयभेद-रहित एक ज, सर्वनो प्रकाशक, शाता, साक्षी, अहंप्रत्ययवेद्य एवो आत्मा छे, ते सत्यज्ञानआनंदअहयादिलक्षण ब्रह्म ज छे. ए जीव-ब्रह्मणुं किंवा आत्मा-परमात्मानुं पेष्य, ज्ञाने करी देहात्मभाव दूर थई अज्ञाननो प्रचिलय थते, अनु-भवसिद्ध थाय छे. ते आत्मविचार अनेक प्रकारे कराय छे.

“पञ्चानामपि कोज्ञानामपवादे विभात्ययं शुद्धः ।

नित्यानन्दैकरसः प्रत्यग्रूपः परं स्वयं ज्योतिः ॥ १५३ ॥

आत्मानात्मविवेकः कर्त्तव्यो बन्धमुक्तये विदुषा ।

तेनैवानन्दी भवति स्वं विज्ञाय सच्चिदानन्दम्’ १५४॥

शंकरविरचित विवेकचूडामणि.

(जेम वापीस्थ जल ते वापीमांथी ज उत्पन्न थपला शैवाल-पटलोप करी ढंकाय छे, एथी पोते-जल जणातुं नथी; ते शैवालने दूर करे सते तृष्णा-संतापहर पुरुषने सद्यः सौख्य-प्रद परमशुद्ध सारू जल प्रतीत थाय छे; तेम आत्मानो उपाधि स्वशक्ति जे अपराप्रकृति माया तेमांथी उत्पन्न थपला अक्षमयादि पंचकोशोप करी आत्मा आवृत थयो छे ते सम्यक् भासतो नथी. ते पंचकोशानां पण अपवांद् थये आ (आत्मा) नित्यानन्दैकरस स्वयंज्योतिः प्रत्यग्रूप परमशुद्ध विमामे छे-स्पष्ट प्रतीत थाय छे. विद्वाने बंधथी मुक्ति सारू आत्मा-अनात्माना विवेक कर्त्तव्य छे. तेणेकरीने ज स्वरूपने सच्चिदानन्द जाणीने (विद्वान्) आनंदी थाय छे.)

‘ देहोऽहमित्थेव जडस्य बुद्धि-

देहे च जीवे विदुषस्त्वहंधीः ।

વિવેકવિજ્ઞાનવતો મહાત્મનો

ब्रह्माहमित्येव मतिः सदात्मनि ॥ १६३ ॥

શંકર-વિવેકચૂડામણિ.

‘દેહ હું’ એમ જ જડની (અજ્ઞાનીની) બુદ્ધિ હોય છે; વિદ્યા-
અધિકારાનુસાર આત્મદર્શન. ન્ની ‘અહં’ બુદ્ધિ તો દેહમાં અને જીવમાં હોય
છે; અને વિવેકવિજ્ઞાનવાન મહાત્માની બ્રહ્માહં
(બ્રહ્મ હું) એમ જ મતિ સદાત્મામાં હોય છે.

અગ્નિહોત્રાદિ યજ્ઞનમાં અરણિના મન્યનેકરી અગ્નિનું ઉત્પા-
પન કરે છે. તેમાં પ્રથમ અરણિનાં થે કાષ્ઠ માત્ર હોય છે.
તેઓનું યથાવિધિ સંઘર્ષણ કરાય છે. તેથી તેમાં અગ્નિનું ઉત્પા-
દન થાય છે, અને તે ઉત્પન્ન અગ્નિ તે અરણિને અન્તે
સ્વસ્વરૂપ-અગ્નિસ્વરૂપ-કરે છે. પ્રથમ જે અરણિવિષે કાષ્ઠનો
અને તિરોહિત અગ્નિનો અભેદ હોઈ, તે અરણિ કાષ્ઠરૂપા માત્ર
પ્રતીતા થતી હતી, તેમાં તિરોહિત સામાન્ય અગ્નિ હતો, તે
સંઘર્ષણાદિય કરી પ્રકટ થતાં તે જ અરણિમાં કાષ્ઠ અને અગ્નિ
ઉભય ભાગ પ્રતીત થઈ ભેદ પ્રતીત થવા માંડે છે. અને અન્તે તે
ન્યૂનસત્તાક કાષ્ઠભાગનો અધિકસત્તાક અગ્નિસહ અભેદ થઈ
જ અરણિ અગ્નિરૂપા પ્રતીતા થાય છે.

૫ દૃષ્ટાંતસદૃશ સ્વસંબંધમાં-અહંકારાદિ દેહાન્તવર્ગના
નિયન્તા આત્મા સંબંધમાં,-અજ્ઞાનીની, વિવેકીની, અને
જ્ઞાનીની, બુદ્ધિને મિશ્રા પ્રતીતિ થાય છે. સર્વ પ્રાણીઓ
જડચેતનમય છે; તેમાંથી અજ્ઞાનીઓને દેહમાં જ આત્મ-
બુદ્ધિ હોય છે. જેમ અરણિ પ્રથમ કાષ્ઠરૂપ દેખાય છે
તેમ આત્મા, અજ્ઞાનીઓને દેહરૂપ પ્રતીત થાય છે. અર્થાત્
જડચેતનનો અભેદ પ્રથમ જડ દેહરૂપે જ પ્રતીત થાય છે. ૫
અજ્ઞાનજન્ય અભેદને દૂર કરવા કલ્પિતભેદરૂપ વિવેક કર્ત્તવ્ય

छे. ते विवेकयी, जेम संघर्षणयी अरणिमां अंभि प्रकटित थई काष्ठ तथा अग्नि वे देग्याय छे तेम, आत्मां जडचेतन वे भाग जणाय छे. अर्थात् जडदेह तथा चेतनआत्मा एवो भेद विवेकयी विद्वानोने आत्मां जणाय छे. ए भिन्नसत्ताक जडचेतनमांयी ;यूनसत्ताक जडपदार्थनो बाध थई, अधिक-सत्ताक चेतननुं अवशेष रहेवुं ए 'बाधरुत अभेद' छे अने ते ज वास्तविक अभेद ए तत्त्वज्ञान छे. अवे ज्यारे विवेकविज्ञानयी यथार्थ ज्ञान थाय छे त्यारे ते ज्ञानी महात्माने, जेम अरणि अन्ते केवल अग्निरूपा प्रतीता थाय छे तेम, आत्मा चेतनरूप-ब्रह्मरूप-प्रतीत थाय छे. अर्थात् तत्त्वदर्शी पुरुष, सर्व उपाधिना बाधपूर्वक, जीवने शिवरूप, आत्माने परमात्मारूप,-आत्मा परमात्मानो अभेद-देखे छे. प्रतिबंधक उपाधिप करी तत्त्वनुं तिरोधान होय छे, ते उपाधिनी बाध थये आत्मतत्त्व प्रकटे छे.

रासायनिको प्रयोगयी सिद्ध करे छे के,-अंगारमां (कोय-
 लामां) हीरारत्ननुं तत्त्व छे. अंगारनो मलिन
 उपाधि दूर 'थई तत्त्वभाग अवशेष रहे ए
 अंगारनुं तत्त्व, ते, हीरारत्न ज छे. तेम 'पापो
 हमस्मि' एवा जीवभावनो अहंकारादि देहान्त
 उपाधि, विवेकविज्ञानद्वारा दूर थये, ते जीवनुं अधिष्ठान
 मूलतत्त्व अवशेष रहे ते शोधित जीव. ए शिव-जीवात्मा ए
 परमात्मा-ए ज छे. अने ते निरुपाधिका ब्रह्मनिष्ठामां 'अहं
 ब्रह्मास्मि' एवुं जीवनुं स्वरूप रहे छे; पदलुं ज नहि किन्तु
 सर्वानर्थबीजभूता अविद्या अपकृप्यमाणा, अने विद्या
 उत्कृप्यमाणा थये, सर्वात्मभाव-सर्वात्मिक्यभाव-प्रकटित थाय
 छे. ज्ञान उत्पन्न थये परमार्थतत्त्व ज्ञात थाय छे, अने परमार्थ-

अभ्यासयी का-
 लनो पाक यता
 आत्मदर्शन.

તત્ત્વ જ્ઞાત થયે 'સર્વ દ્વૈતનો ઉપશમ થાય છે; અને તેમ થયે અદ્વૈત સિદ્ધ છે. દ્વૈતનો વાધ થઈ અદ્વૈતનું-બ્રહ્મીકત્વનું-દર્શન એ જ માંશ છે. પરંતુ એ પરમગતિની પ્રાપ્તિ ઘડુ જન્મોના અન્તે સુદુર્લભ જ્ઞાનવાન મહાત્માને જ થાય છે.

“વઢ્ઢનાં જન્મનામન્તે જ્ઞાનવાન્માં પ્રપચ્ચતે” ।

. મ૦ ગી૦ અ૦ ૭૧૧॥

એ પરમપુસ્પાર્થપ્રદ બ્રહ્માત્મેકત્વની પ્રાપ્તિ એમ ડુર્લભા છે. તેનું સાક્ષાત્સાધન અવિદ્યાનિવર્તક જ્ઞાન છે. તે ઉત્પાદ્યમાન જ્ઞાન તત્ત્વિપરીત અજ્ઞાનને, પ્રકાશ તમવત્, અવશ્ય વાધે છે. તે જ્ઞાનસાધ તત્પદ બ્રહ્મ અને ત્વંપદ આત્મા એશોનો વાક્યાર્થ જે બ્રહ્માત્મૈકત્વ તેનો ચારંવાર વિચાર કર્તવ્ય છે. તે વિચારના પરિપાકને અન્તે જ્ઞાનદ્વારા નિ:શ્ચેયસ પ્રાપ્ત થાય છે. પરંતુ એ સર્વોત્તમ મહત્કલના લાભાર્થે સર્ધેય પ્રયત્ન પળ તેવો જ મગી-રથવત્ કર્તવ્ય છે પંચદશીકાર વિદ્યારણ્યમુનિ વદે છે કે:-

“કાલેન પરિપચ્ચન્ને કૃષિર્ગર્ભાદયો યથા ।

તદ્બદાત્મવિચારોઽપિ જ્ઞાનૈઃ કાલેન પચ્ચતે” ॥ ૩૭ ॥

‘જેમ કૃષિ(સેતી)ગર્ભઆદિ કાલે કરી પાકે છે-ફલપ્રદ થાય છે-તેમ આત્મવિચાર પણ ધીરે ધીરે કાલે કરી પાકે છે-જ્ઞાનરૂપ ફલપ્રદ થાય છે. જે શાસ્ત્રજ્ઞાનથી જ્ઞાતપદાર્થ-સચ્ચિદાનન્દસ્વરૂપ બ્રહ્માત્મૈકતા-તેનું, તથેવ-તે જ પ્રમાણે,-સ્વાનુભવકરણ તે વિજ્ઞાન વદાય છે.

સચ્ચિદાનન્દવિષે સંસ્થા સવધમાં અતિશય ધેર્યની તથા અભ્યાસની અપેક્ષા છે જે નિત્ય ફલપ્રદ છે તેને ફલદાનનો અવસર આપતાં પ્રિલબ્ધ થાય છે. અમુક સમય સુધી તેનાં ફલ ગર્ભમાં રહી પછી તે વ્યક્ત, વધમાન, પરિપક્વ, અને

सुस्वादु, उपयोगि, अने सिद्धिप्रद थाय छे. विशेषे करी मालती चंपकादि उत्तम पुष्पराज तथा आम्रादि उत्तम फलराज संबधमां ए नियम अस्त्रलित प्रवर्ते छे. आम्रफलना बीजमां, अंकुरमां, स्कंधमां, शाखामां, पत्रमां, पुष्पमां अने फलमां परिपाकमा सुस्वादु पण-, जे परिपक आम्रफलमां सुस्वादु होय छे ते-सुस्वादु अभिव्यक्त यतो नथी. जेणे

अतिसुस्वादु आम्रफलनो स्वाद लीधो नथी, एवा कोई अज्ञ प्रति परमकारुणिक आसजन आम्रफलनी उत्कृष्टतानुं निरूपण करी तेना द्रुमनुं बीज आषीने तेमांथी फल उपपन्न करवानो विधि कही, तेना अनुपम फलथी यता निरुपम लाभनी तथा ते द्रुमनी छाया शीतलतादिथी यता अनेक लाभनी प्रशसा करे, ते सांभळी ते अज्ञ ते बीजने रोपी, पछी तेना अंकुरादिथी फलपर्यन्त उत्तरोत्तर स्थितिमा ते आसन्निरूपित परिपक फलनो स्वाद चाखवानी आशा राखे तो ते परिपूर्णा थाय नहि. ए अनुत्तम फलनो सुस्वादु, ते फलनी परिपाकदशमां ज आवे छे. ते सपूर्णपक्वतापर्यन्त ते द्रुमनी यथाविधि सेवा करवी ज जोइए, अने धैर्य राखवुं ज जोइए तेम थये ए अनुपम फलनी प्राप्ति अने भोग थाय छे. अन्नादिसयधमां पण तेधोनो पाक थये कइक अपर ज स्वाद थाय छे. ए दृष्टान्तानुसार तत्त्वज्ञान संबधमां छे. पुरुषकारेकरी तेनी प्राप्तिनां साधनोनो सद्भाव करवो अने तेनी प्राप्तिनां बाधनोनो अभाव करवो ए प्रथम कर्तव्य छे पछी कोई आस महात्माथी तेनो विधि यथार्थ समजवो जोइए. अने पश्चात् तदनुसार अनुष्ठान कर्तव्य छे. ए सर्व कृत्य समाप्त थये फलसिद्धि थाय छे तेमां प्रमादरहितता, बहु धैर्य, मदाग्रह, सदभ्यासादिनी अपेक्षा

છે. તેવા યથોક્તકારી ભગીરથપ્રયત્નવાન્ને અદ્વાન નિવૃત્ત થયે તત્ત્વજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થાય છે, તે સમયે જ આત્યન્તિક સુખ-રૂપ અનુત્તમ ફલના સુગંધસુસ્વાદનો આધિભાવ થાય છે; અને જ્ઞાનનિષ્ઠા થયે સ્વરૂપમાં અવસ્થાન થઈ-મનવાણીને અપ્રાપ્ય એવા-સ્વારાજ્યસામ્રાજ્યના અલૌકિક નિત્ય સુખમય થવાય છે.

બુદ્ધિમાન્ શ્રેયઃસાધકોષ, કપોલકલ્પિત કાલે ફલ-
 સર્વત્ર સચ્ચિદા-
 નંદર્શન. સિદ્ધિ ન થયે, કર્તવ્યમાં પ્રમાદ તથા અનાસ્થા
 કરવાં નહિ. ઇ દિતકારક તથા ફલ-
 સાધક છે. ધૈર્ય રાખી જે સદ્ગામી જન ફલ-
 પ્રાપ્તિપર્યન્ત પ્રમાદરહિત પ્રવર્ધમાન વર્તે છે તેને સદાપ્રાપ્ત સચ્ચિ-
 દાનંદસ્વરૂપ બ્રહ્મભાવની પ્રાપ્તિ થાય છે ઇ નિઃસન્દેહ છે.
 જેમ પ્રાણિપદાર્થોના રૂપમાત્રનું ગ્રહણ કેવલ ચક્ષુ જ કરી
 શકે છે; તેમ આ વિશ્વના સત્યસ્વરૂપ સચ્ચિદાનંદમાત્રનું ગ્રહણ
 કેવલ પ્રબુદ્ધ જ કરી શકે છે. ચક્ષુ જેમ સર્વત્ર રૂપમાત્ર જ
 દેખે છે તેમ પ્રબુદ્ધ સર્વત્ર સચ્ચિદાનંદ જ અનુભવે છે.

“સત્યજ્ઞાનાનંદં પ્રકૃતં પરમાત્મરૂપમદ્વૈતમ્ ।
 અવબોધયન્તિ નિઃખિલાઃ શ્રુતયઃ સ્મૃતિભિઃ સમં
 સમસ્તાભિઃ” ॥

શંકરવિરચિત સ્વાત્મનિરૂપણ. ૬૫.

હૃદય પ્રપંચના વિલાપનેકરી દ્વૈતરહિત સચ્ચિદાનંદ-
 સ્વરૂપ પરમાત્મરૂપ ઇક બ્રહ્મ જ અવશિષ્ટ રહે છે, તે જ્ઞેય સ્વરૂપ-
 ને જ સમસ્ત સ્મૃતિઓ સહિત નિઃખિલ શ્રુતિઓ બોધે છે-
 પ્રતિપાદે છે.

સચ્ચિદાનંદ પરમાત્મા જ આ હૃદય જગત્ વિવર્તરૂપે ભાસે
 છે, આ હૃદયમાન સર્વ જગત્ બ્રહ્મ જ છે ઇમ પરમહિતૈવિણી

શ્રુતિ શ્રવણમનનાદિપકરી પરિપક્વમનના સુદૃતી પુરુષવરોને વોધે છે. અને તે જ સત્ય છે. કારણ વિદ્વાનોનો અનુભવ પણ આવો જ છે કે:—‘સર્વાત્મક સચ્ચિદાનન્દ બ્રહ્મ જ એક અદ્વિતીય છે, કિંચિત્ અન્ય નથી જ.’ એ ભગવતી શ્રુતિનાં મહા-વાક્યોના પશ્ચાત્ અને વિદ્વદ્-અનુભૂતિની પૂર્વે, મધ્યમાં યુક્તિ-ઓની અપેક્ષા છે, તેઓની સંપૂર્તિ સકલસન્દેહનાશક પરમદયાલુ ગુરુ કરે છે.

શ્રુતિયુક્તિઅનુભૂતિપકરી જગત્-જીવપરમાત્મા ભેદના વાધક જ્ઞાનમાં અસંખ્ય યુક્તિઓ છે. તેમાંથી, સર્વત્ર સર્વાત્મક ઔત-પ્રોત સચ્ચિદાનન્દ બ્રહ્મસ્વરૂપ છે તેની અનુભૂતિના પ્રદર્શનસારુ, એક આ પ્રકાર પણ છે:—

જગત્-જીવ કિંવા સમષ્ટિ-વ્યષ્ટિ ઇઓમાંના અસંખ્ય પદાર્થો અસંખ્ય નામરૂપના હોય છે. પરંતુ તે સર્વેમાં અનુગત જે ‘સત્તા’ ઇટલે ‘છેપણું’; ‘સ્ફુરતા’ ઇટલે ‘જળાવાપણું-ભાન-ચલનવલનસામર્થ્ય’; અને ‘પ્રિયતા’ ઇટલે ‘સુખસાધન-તાનું ભાન થયે જેનો સંગ્રહ કરવાનો પ્રીતિભાવ થાય છે તે;’ એ સર્વે, અધિષ્ઠાન પરમાત્માના સત્-ચિત્-આનન્દ સ્વરૂપના જ પ્રતાપી અંશોધી છે. એ પદાર્થોમાંથી પરમાત્માનાં સત્તાભાનનાં વિયોગ થયે તે પદાર્થોનું છેપણું તથા ભાન જાય છે તો પ્રીતિ તો ક્યાંથી જ રહે. ઇથી સિદ્ધ છે કે પદાર્થોનો આત્મા, સર્વા-ત્મક ભૂમા-બ્રહ્મ-જ છે.

પ્રકૃતિનું પરિણામ જે જગત્, તેના તમોગુણપ્રધાન સ્વતંત્ર-ચલન-વલનશૂન્ય અખિલ અચેતન મૃત્તિકા કાષ્ઠાદિ પદાર્થોમાં સચ્ચિદાનન્દસ્વરૂપમાંનાં ‘સત્તા’ રૂપનો જ આવિર્ભાવ પ્રતીત થાય છે. જગત્ના રજોગુણપ્રધાન ચલનવલનસમર્થ અખિલ જડઉપાધિસંયુક્ત પ્રાણી આદિ ચેતન પદાર્થોમાં સચ્ચિ-

દાનન્દસ્વરૂપમાંના 'સત્તા-સ્ફુરતા' એ દ્વિરૂપનો આવિર્ભાવ થાય છે. અને તે જ જડઉપાધિસંયુક્ત ચેતન પ્રાણિપદાર્થોનો આનન્દપ્રતિબંધક ઉપાધિ, કોઈ પણ નિમિત્તથી દૂર થાય છે ત્યારે, તે પ્રાણિપદાર્થરૂપ જગત્ સત્ત્વગુણપ્રધાન થાય છે; અને તેઓમાં 'સત્તા-સ્ફુરતા-પ્રિયતા' એ પૂર્ણ ત્રિરૂપનો આવિર્ભાવ થાય છે. એ પ્રકારે જગત્-કિંવા સમષ્ટિ-સંબંધમાં છે.

જીવ કિંવા વ્યષ્ટિ સંબંધમાં આ પ્રકારે છે.

જીવમાં (દેહીમાં) જડ-ચેતન, કિંવા પ્રકૃતિ-પુદ્ગલ, કિંવા અનાત્મા-આત્મા ઉભય પ્રતીત થાય છે. તેમાં આત્મભાગ છે એ તો સદા સચ્ચિદાનન્દસ્વરૂપ જ છે. અનાત્મભાગ દેહાદિ-જે અવિદ્યાનું પરિણામ છે-તે દેહાદિમાં આત્માને અવિદ્યાના સત્ત્વરજ-સ્તમોગુણો વાંધે છે. વાહ્યાન્તરના કોઈ નિમિત્તકારણથી તમોગુણ પ્રવર્તે છે, ત્યારે તે અન્તઃકરણવિશિષ્ટ જીવના જ્ઞાનને આવરણ થઈ તે જીવ પ્રમાદી, આલસુ, મૂઢ, થાય છે; તેમાં સચ્ચિદાનન્દ-સ્વરૂપ આત્માના 'સત્તા' રૂપનો જ આવિર્ભાવ પ્રતીત થાય છે; રજોગુણ પ્રવર્તે છે; ત્યારે જીવને તૃષ્ણા અને આસંગ થઈ, તે જીવ પ્રવૃત્તિમાન, લોભી, કર્મી દુઃખી થાય છે; તેમાં સચ્ચિદાનન્દસ્વરૂપ આત્માના 'સત્તા-સ્ફુરતા' એ દ્વિરૂપનો આવિર્ભાવ થાય છે. તમોગુણવતી તથા રજોગુણવતી વૃત્તિને આસુરી વૃત્તિ કહે છે; અને સત્ત્વગુણવતી વૃત્તિને દૈવી વૃત્તિ કહે છે. અને સત્ત્વગુણ પ્રવર્તે છે. ત્યારે જીવ પ્રકાશક અને નિરુપદ્રવ થઈ નિવૃત્તિમાન, જ્ઞાની, સુખી, થાય છે; અને તેમાં સચ્ચિદાનન્દસ્વરૂપ આત્માના 'સત્તા સ્ફુરતા પ્રિયતા' કિંવા સચ્ચિદાનન્દ એ ત્રિરૂપનો આવિર્ભાવ થાય છે.

આ જગત્નું કેન્દ્ર સૂર્ય તેમાં આકર્ષણ, પ્રકાશ, ઉષ્ણતા, એ

ત્રય પ્રતીત થાય છે. અન્ધકાર સમયે આ પૃથિવી સૂર્યથી વિમુક્ત હોવાથી તે ઉપર કેવલ આકર્ષણનો આધિભાવ પ્રતીત થાય છે; અરુણોદયસમયે પૃથિવી ઉપર આકર્ષણ તથા પ્રકાશ એ દ્વયનો આધિભાવ થાય છે; અને પૃથિવી સૂર્યને સંમુલ થયે આકર્ષણ પ્રકાશ ઉપ્પતા એ ત્રયનો આધિભાવ પ્રતીત થાય છે.

એ સર્વ ઉપરથી એમ સિદ્ધ થાય છે કે, વસ્તુના સર્વ ગુણના આધિભાવ થવાનો આધાર તેના ગ્રાહકના અધિકાર ઉપર છે.

સત્-ચિત્-આનન્દ એ મિશ્ર છે નહિ, કિન્તુ ગ્રાહકની વૃત્તિના ભેદેકરી ભેદ જેવું પ્રતીત થાય છે.

ચંપક, માલતી, ગુલાબ આદિ પુષ્પરાજ, આમ્રાદિ ફલરાજ, એઓમાં સ્પર્શ રૂપ રસ ગંધ છે. તેઓનું પૃથક્ પૃથક્ ઇન્દ્રિય-દ્વારા ગ્રહણ થાય છે; સ્પર્શ ત્વક્-ઇન્દ્રિયદ્વારા જ ગ્રહણ થઈ શકે છે; રૂપ ચક્ષુરિન્દ્રિયદ્વારા જ ગ્રહણ થાય છે इत्यादि. તેમ અન્તઃકરણની પૃથક્ પૃથક્ વૃત્તિ અનુસાર સત્-ચિત્-આનન્દનું ગ્રહણ થાય છે.

અન્તઃકરણની વૃત્તિઓ ત્રિધા છે:-સાત્ત્વિકી, રાજસી, તામસી, કિંવા શાન્તા, ઘોરા, મૂઢા. એ સર્વ વૃત્તિઓમાં પરમાત્માની સચિત્-સ્વભાવતાનું પ્રતિબિંબ થાય છે; પરંતુ શાન્તા સાત્ત્વિકી વૃત્તિમાં જ પરમાત્માના સચિત્-સ્વભાવસહ આનન્દ-સ્વભાવ પણ વિશેષે પ્રતીત થાય છે. અર્થાત્ સાત્ત્વિકીવૃત્તિ જ પરમાત્માના સમગ્ર સચ્ચિદાન્નંદ સ્વરૂપની અભિવ્યંજિકા છે અનેક ઘટ કૂપ સરોવરાદિ જલાશયોમાં એક જ પ્રતિબિંબિત ચંદ્રમાના સમાન,

અંતઃકરણની
સાત્ત્વિકાદિ ત્રણ
વૃત્તિઓ.

वेदान्तमर्यादा. परमनिःश्रेयसप्रापक तथा परमात्मानुं अभि-
व्यञ्जक विशिष्ट वेदान्त ते वेदान्तनी मर्यादा.

आत्मा स्वतः चिदानन्द अद्वितीय ब्रह्मात्मस्वरूप छे, पण
स्वाश्रया स्वविषया अविद्या जे स्वानुभवगम्या अने
स्योभासा छे, तेणे (अविद्याए) करी स्वाभाविक चित्सदानन्द
अद्वितीय ब्रह्मात्मभावथी (ते आत्मा) प्रच्युत (थई,) अनात्मा
(जड) देहादिमां आत्मभावने पाम्यो सतो, अप्राप्त छे
अशेष पुरुषार्थ जेने, अने प्राप्त छे अशेष अनर्थ जेने एवो, आत्मा
अविद्याकामकर्मोप परिकल्पित ज साधनोवते इष्टनी प्राप्ति
अने अनिष्टनी परिहृति (निवृत्ति) आकांक्षतो अनुष्ठित
लौकिकवैदिकसाधनवते पण, मोक्षनामे परमपुरुषार्थरूप
स्वार्थ प्रति न पामतो, मकरादिओ जेवा रागद्वेषादिओए अहिं-
तहिं (आलोक-परलोकमां) आकृष्यमाण थतो, अने सुर-नर-
तिर्यक्आदि प्रभेदे करी भिन्ना नाना योनिओमां परिचर्तमान
(चारवार भ्रमतो) अने मोमुह्यमान (बहु भ्रान्तिथी मूर्छित थई
संसारने प्राप्त थतो) संसरतो सतो, पुण्यवशात् ईश्वरार्थ
वेदोदित कर्मना अनुष्ठानवते कष्टेकरी रागादिमल गया छे

१. भगवान् सनत्सुजाते विदुरना योगबलथी प्राप्त थई शोकमोहथी अभि,
तत्त धृतराष्ट्रने ब्रह्मविद्यावते पूर्णानन्द परमात्माना परमपदरूप स्वाराज्ये स्थापवा
सारू जे उत्तम उपदेश कथो छे ते सनत्सुजातीयना माथ्यमां परमकारुणिक
शकर भगवान् उपोद्घातरूपे जे वदे छे ते वेदान्तमर्यादा. २. 'स्व' नाम
धात्मा-परमात्मा ब्रह्म छे 'आश्रय' नाम आधार जेनो ए 'स्वाश्रया.'
अथवा ब्रह्मने आश्रिता होवाथी 'स्वाश्रया'. ३. 'स्व' नाम ब्रह्म तेने ज
'विषय'—नाम आवरण करनारी तेथी 'स्वविषया' ४. मनुष्यना पोताना (हुं
कई नथी जाणतो-में कई न जाण्यु एवा प्रकारना) अनुभवे करी जगाती.
५. चिदात्मा ब्रह्मना प्रकाशथी ज मासती जगाती. ६ धनस्त्रीपुत्रादि 'लौकिक'
साधन. यथादिक 'वैदिक' साधन.

જેના, અને અનિત્યાદિ ઘોષના દર્શને કરી ઉત્પન્ન થયો છે. આ-
મુત્ર ફલભોગમાં વિરાગ જેને, અને વેદાન્તોથી પ્રતીયમાન
બ્રહ્માત્મભાવનો યુષ્કુ (ઘોષને-અવગતિને-ઇચ્છતો-જિજ્ઞાસુ)
વેદોદિત શમદમાદિ સાધનસંપન્ન, (ઇવો વિશિષ્ટ અધિ-
કારી થઈ) બ્રહ્મવિદ્ આચાર્ય પ્રતિ (વિધિપૂર્વક) સમીપ જઈ
આચાર્યને અનુસારે (આચાર્યનું મન પ્રસન્ન થાય ઇવા વ્યાપાર-
વતે વેદાન્તના શ્રવણાદિ કરી ' અહં 'બ્રહ્માસ્મિ' (હું બ્રહ્મ છું)
પ બ્રહ્માત્મતત્ત્વને યથાવત્ જાણીને, અજ્ઞાન અને તેનાં કાર્ય
નિવૃત્ત થયાં છે જેનાથી ઇવો બ્રહ્મરૂપે સ્થિત થાય છે ઇવો
વેદાન્તમર્યાદા છે.

' જ્ઞાન ' શબ્દ અનેકાર્થવાચક છે. પ્રસ્તુત પ્રકરણના અન-
ન્યલભ્ય અદ્વિતીય બ્રહ્માત્મતત્ત્વજ્ઞાનના વિષયમાં પ જ્ઞાનશબ્દના
મુખ્ય અર્થ લક્ષમાં રાખવાની અપેક્ષા છે

જે જ્ઞાને કરી સર્વ વિષય અવિશેષે સામાન્યે-જ્ઞાનય તે
જ્ઞાનના મિત્ર
અર્થે જ્ઞાન, સાધન વદાય છે. તે જ્ઞાનરૂપ
સાધને કરી અજ્ઞાન નિવૃત્ત થયે, જે જ્ઞાન-
પરમાત્મતત્ત્વ, આત્મસ્વભાવચૈતન્ય, સ્વસ્વરૂપ-
સ્ફુરણ, સ્વયંજ્યોતિ, સ્વયંપ્રકાશ, જ્ઞાતિમાત્ર, કિંવા ચિન્માત્ર
કેવલ વસ્તુ, પરૂપે-આવિર્ભૂત થાય છે, તે ચિત્તુપલક્ષિત
સદ્ધિજ્ઞાનન્દસ્વરૂપ કેવલ સિદ્ધ જ્ઞાન, તે સાધ્યજ્ઞાનવાચક
છે. પ સાધનજ્ઞાન, અને સાધ્યજ્ઞાન જે સિદ્ધજ્ઞાન, પ ઉભયમાં
એક જ ' જ્ઞાન ' શબ્દનો પ્રયાગ થાય છે, તથાપિ પ્રસંગયજ્ઞાત્
અર્થમાં ભેદ હોય છે. પ અધિકારીપ લક્ષમાં રાખવા યોગ્ય છે.

સાધ્ય જે સિદ્ધજ્ઞાન તે તો અલંકૃતકરસ ચિન્માત્ર-માતિતા-
માત્ર કેવલ વસ્તુ-એક જ છે. પરંતુ તે સદા પ્રાપ્ત જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ

અર્થ સાધનજ્ઞાનના ઉપાધિભેદગી, અનેક ભેદ પ્રતીત

૧. (સિદ્ધજ્ઞાનનુ)—ચૈતન્યનુ—અનાદિમત્ત્વ મતે પણ તેની અભિવ્યક્તિના અન્તઃકરણવૃત્તિ, ઇન્દ્રિયોના સન્નિકર્ષાદિએ કરી, ઉદ્ભવે છે. એથી વૃત્તિવિશિષ્ટચૈતન્ય આદિમત્ત્વ વદાય છે. જ્ઞાનના અવચ્છેદસ્ત્વથી વૃત્તિવિપે જ્ઞાનત્વનો ઉપચાર થાય છે. અન્તઃકરણવૃત્તિઅવચ્છિન્નચૈતન્ય (જ્ઞાન) 'પ્રમાણચૈતન્ય' છે. અન્તઃકરણઅવચ્છિન્નચૈતન્ય 'પ્રમાતૃચૈતન્ય' છે. જ્ઞાનના વિષય ઘટાદિએ કરી અવચ્છિન્નચૈતન્ય 'વિષયચૈતન્ય' કિંવા 'પ્રમેયચૈતન્ય' છે.

જેમ જાગૃત્તવ્યમાનું જલ, છિદ્રદ્વારા નીકળી કુલ્યાત્માએ (નીકના આકારે) થઈ કેદારો પ્રતિ (વ્યારાઓ પ્રતિ) પ્રવેશી કેદારાકાર થાય છે; તેમ અન્તઃકરણ પણ સ્વરૂપ છિદ્ર આદિદ્વારા નીકળી ઘટાદિવિષયરૂપ કેદાર દેશપ્રતિ પ્રવેશી ઘટાદિવિષયાકારે કરી પરિણમે છે, ત્યાં શરીરથી લઈને ઘટાદિવિષયપર્યન્ત અન્તઃકરણનો નીકળના સમાન પરિણામ તે વૃત્તિજ્ઞાન છે. તે વૃત્તિએ કરી વિશિષ્ટચેતન (કિંવા ચૈતન્ય) તે પ્રમાણચેતન છે. અને વૃત્તિજ્ઞાનરૂપ જે અન્તઃકરણનો પરિણામ તે પ્રમાણ. જેમ કેદારમાં જલ જઈને કેદારના સમાનાકાર થાય છે, તેમ ઘટાદિ જે વિષય છે તેઓમાં વૃત્તિ જઈને ઘટાદિના સમાનાકારને પ્રાપ્તા થાય છે, તે વૃત્તિએ અવચ્છિન્ન જે ચેતન તે પ્રમાણચેતનજ્ઞાનના વિષય ઘટાદિએ કરી અવચ્છિન્નચેતન તે વિષયચેતન કિંવા પ્રમેયચેતન. એ પ્રકારે ચૈતન્ય કિંવા જ્ઞાન એક સતે ઉપાધિસંબધવશથી લૌકિક બુદ્ધિએ અનેકવત્ વલ્યાય છે.

અન્તઃકરણનો ઘટાદિ વિષયાકાર જે વૃત્તિ, તેમા આસ્ત્વ ચેતનને પ્રમા કિંવા યથાર્થજ્ઞાન વદાય છે. તેનું સાધન જે ઇન્દ્રિય તે પ્રમાણ છે... અન્તઃકરણનો સર્વ પરિણામ પ્રમા નથી, કિન્તુ શરીરના અન્તર જે અન્તઃ—કરણ તેનો ઘટાદિવિષયપર્યન્ત જે પરિણામ તે પ્રમાણ અને વિષયસહ મિલીને વિષયના સમાન જે અન્તઃકરણનો પરિણામ તે પ્રમા.

પદ્મપ્રમાણજ અન્તઃકરણના પરિણામરૂપા વૃત્તિવિશિષ્ટ ચૈતન્ય એ જ્ઞાન કિંવા ચિદામાસવિશિષ્ટ ચેતન એ જ્ઞાન. અન્તઃકરણવિશિષ્ટ ચેતન એ જ્ઞાતા છે, અથવા સર્વ જ્ઞાનોનું અધિકરણ જીવ એ જ્ઞાતા છે. દૃશ્યમાન શ્રૂયમાન અજ્ઞાત સ્વઅધિષ્ટાન સહિત અ-તર્જ્ઞાહ સ્વૂલ્સૂક્ષ્મ ધાર્યકારણરૂપ, પ્રપંચ, જે જ્ઞાનનો વિષય, તે જ્ઞેય છે.

વેદાન્તવિષયક જ્ઞાનનુ વિશેષસ્ત્વરૂપ એક આ છે:—'એક એવ પરબ્રહ્મ' એવું પરમાર્થદર્શન એ જ્ઞાન. (ગીતા. ૧।૧૫) અર્થાત્ મહાવાક્યાનુસાર માગત્યાગ-લક્ષણાથી જીવવિપે અધિયામાગનો અને ઈશ્વરવિપે માયામાગનો ત્યાગ કરી,

ધાય છે. તત્ત્વજ્ઞાનવિષયે, આત્માઅનાત્મ સર્વ પદાર્થના અવ-
બોધનરૂપ શાસ્ત્રાચાર્યના ઉપદેશે કરો જનિત 'વિવેકસા-
મર્થ્ય', જેનો વિષય પરમાત્મા છે અને સાક્ષાત્ ફલ મોક્ષ છે,
પણ પરમ નિઃશ્રેયસનું સાધનરૂપ જ્ઞાન છે. એ જ્ઞાનથી અવિઘા-
કલ્પિત સંસારિત્વના નિવર્તનદ્વારા નિત્યમુક્ત સચ્ચિદાનન્દ
આત્મરૂપના સમર્પણરૂપ મોક્ષની-બ્રહ્મભાવની અભિવ્યક્તિ
ધાય છે.

એ ઉભય સાધ્ય-સાધન જ્ઞાન તથા તે જ્ઞાનવાન્ જ્ઞાની,
ભગવદ્ગીતા- કિંચા એ શબ્દોના પર્યાય-સમ્યદ્દર્શન, સચ્ચિદા-
માધ્યાનુસાર આ- નન્દૈકરસ પરમાત્માને જાણનાર સમ્યદ્દર્શી,-
ત્મજ્ઞાનનો પ્રકાર. એઓના સંબંધમાં શ્રીભગવદ્ગીતાના માધ્યમાં
શ્રીશંકરભગવાન્ દૃઢપ્રતીતિ અર્થ અનેક પ્રામાણિક વિચારો
નિરૂપે છે, તેઓમાંના સ્વલ્પનો આશય અત્ર સમર્પાય છે.

પરમેશ્વરના જે તત્ત્વને જાણીને અન્યત્ પુરુષાર્થસાધન
જ્ઞાતવ્ય અવશિષ્ટ ન રહે એ પ્રકૃત પ્રકરણમાં જ્ઞાન કથાય છે.
તે જ્ઞાન શાસ્ત્રાચાર્યના પ્રસાદરૂપ ઉપદેશજનિત અને
આત્મનું પ્રત્યાયક હોય છે. એ આત્મપ્રત્યાયક જ્ઞાન ભેદપ્રત્યય-
નિવર્તક અને કેવલ્યફલાવસાન છે. તે નિઃશ્રેયસદેહુ

તેઓનો જે ભેદ પ્રતીત યાય છે તેને દૂર કરી, જીવ-ઈશ્વરમાં જે ચેતન ભાગ છે
તેને ભેદરહિત-એક જ-બ્રહ્મસ્વરૂપ જાણવો. સંપૂર્ણ પ્રપંચ અને તેનું જ્ઞાન,
સ્વરૂપના અજ્ઞાનકાલમાં જ છે. સૂલ્યપૂશ્મકારણશરીરથી ભિન્ન જે સ્વસ્વરૂપ તે
સ્વરૂપનું સચ્ચિદાનન્દ બ્રહ્મરૂપે અભેદજ્ઞાન તે સ્વરૂપજ્ઞાન. એ સ્વરૂપ જ અધિ-
ઘાન, તે અધિઘાનના જ્ઞાનથી ભ્રાન્તિની નિવૃત્તિ યાય છે. રજ્જુસર્વત્ અજ્ઞાન-
થી પ્રતીત યતા મિષ્ટા પ્રપેચનું અને મિષ્ટા બંધનું જે ભ્રાન્તિજ્ઞાન તે સ્વરૂપ-
ના જ્ઞાને કરી દૂર યતાં એક અધિઘાન માત્ર જ અરોપ રહે છે. સક્રિય
ભ્રાન્તિજ્ઞાનનો માથ અધિઘાન સ્વરૂપ જ હોય છે.

૧. કેવલ્યકલ છે અરજાન-અન્ત-પ્રાપ્તિ-જેથી એનું જ્ઞાન.

आत्मज्ञाननो आकार आवो छे. क्रियाकारकफलना भेदनी बुद्धि, अविद्याए करी, आत्मामां नित्य प्रवृत्ता छे. ते अविद्या, - 'मार्ग कर्म, हुं कर्ता; आ (अमुक) फलअर्थे आ कर्म करीश', - एवा भेदवती अनादिकालयी प्रवृत्ता छे. ए अविद्यानुं निवर्तक जे आत्मविषयक ज्ञान छे ते आ छे: - 'आ हुं केवल अकर्ता अक्रिय अफल छुं. मारायी अन्य कई पण नयी.' अव्यक्तादि स्थावरान्त भूतोमां, ए अद्वैतात्मविषय सात्त्विकज्ञानद्वारा, एक आत्मवस्तु देखाय छे, अने ए आत्मज्ञान साक्षात् शोकमोहादि संसारहेतु दोषो तेओनी निवृत्तिनुं कारण छे. ए ज्ञान 'सम्यग्दर्शन' पण वदाय छे.

ए विशिष्टज्ञान, जे विधिप पमाय छे ते आ छे: - श्रद्धावान् तत्पर संयतेन्द्रिय मुमुक्षु, तत्त्वदर्शी ज्ञानी प्रति अभिगमन करीने प्रणिपातसहित परिप्रश्न करे के: - 'केवे प्रकारे बन्ध छे? केवे प्रकारे मोक्ष छे? केयी अविद्या छे?' ते ज्ञानी, मोक्षसाधनविशिष्ट अने कार्यक्षम ज्ञानने उपदेशे छे. ए उपदिष्ट ज्ञानने जाणीने-पामीने-अज्ञानज समस्त संसारना धन र्थनो हेतु जे मोह ते मोहने (मुमुक्षु) पुनः पामतो नयी, अने ब्रह्मादिस्तम्भपर्यन्त भूतोने आत्मामां-परमेश्वरमां-देखे छे. जेम दीप्त अग्नि, फाष्टोनो भस्मीभाव करे छे; तेम ए ज्ञानरूप अग्नि, जन्ममरणादिमां हेतुभूत सर्व कर्मोने भस्मीभूत-निर्बीज-करे छे. आत्मेश्वरैकत्वदर्शनलक्षण ज्ञानसदृश शुद्धि-कर इहां कहं छे नहि.

विशिष्टज्ञानद्वारा जे मोक्ष-निःश्रेयस-प्राप्त थाय छे तेनो क्रम आ छे: - (फलनिरपेक्ष अनुष्ठायमान ईश्वरार्पणकर्मोप

१. दीर्घ नमस्कार. २. अविवेक बुद्धि, आत्मा अनात्मना विवेकनो अभाव, कर्तामोकारूपा बुद्धि.

કરી) સત્ત્વશુદ્ધિ, જ્ઞાનપ્રાપ્તિ, (વિવેકયુદ્ધિષ્ઠિ કર્માદિમાં અકર્મ-
દર્શનરૂપ) સર્વકર્મસંન્યાસ, અને જ્ઞાનનિષ્ઠા.

શાસ્ત્રાચાર્યના ઉપદેશે કરી તથા ન્યાયેકરી જેના
સંસ્કૃતાત્માને અહંકૃતભાવ થતો નથી, અવિદ્યાષ્ઠિ આત્મામાં
કલ્પિત પંચ અધિષ્ઠાનાદિ છે એ જ સર્વ કર્મોના કર્તા છે, હું
નહિ; હું તો તેઓના વ્યાપારનો સાક્ષીભૂત છું; એવું જે જાણે છે,
વિદ્વાન્, સ્વર્કર્મકરી ઈશ્વરને સમ્યક્ પૂજીને તેના પ્રસાદે
કરીને જનિતા જ્ઞાનનિષ્ઠાયોગ્યતાલક્ષણા સયોમુક્તિઅવ-
સ્થાનરૂપા સિદ્ધિને પ્રાપ્ત થઈને, જે જ્ઞાનનિષ્ઠારૂપ પ્રકારે,
(જ્ઞાનના પર્યવસાનરૂપ-જ્ઞાનની પરિસમાપ્તિરૂપ-સમ્યક્પ્રાપ્તિ-
રૂપ-પ્રકારે) પરમાત્માને પામે છે તે જ્ઞાનનિષ્ઠાની પ્રાપ્તિનો
ક્રમ આયો છે:—

ભગવત્શરણૈકપરાયણ થઈ સ્વકર્મકરી (સર્વાત્મા સર્વભૂત-
સ્થિત) ભગવાનનું અભ્યર્ચન એ ભક્તિયોગ છે. તે ભક્તિયોગે-
કરી મોક્ષફલ અવશ્યંભાવિ છે. કારણ તે ભક્તિયોગની સિદ્ધિની
પ્રાપ્તિરૂપ જે ફલ, તે જ્ઞાનનિષ્ઠાયોગતા છે. અને તે જ્ઞાનનિષ્ઠાયો-
ગતાના નિમિત્તથી મોક્ષફલાવસાના જે જ્ઞાન-

જ્ઞાનનિષ્ઠા

નિષ્ઠા, તેની સિદ્ધિ છે. પ્રત્યગાત્મવિષય
પ્રત્યયસન્તાનકરણનો અભિનિવેશ એ જ્ઞાનનિષ્ઠાનું સ્વરૂપ છે.
અને તે મોક્ષફલાવસાના છે. શાસ્ત્રાચાર્યના ઉપદેશેકરી
જ્ઞાનની ઉત્પત્તિના પરિપાકના હેતુનાં સહકારિકારણ-યુદ્ધિ-

૧. યુક્તિષ્ઠિ. ૨. શરીરવાળીમને કરી થતાં સર્વ કર્મો, તેની સિદ્ધિનાં
પંચ કરણો છે, તે જ કર્તા છે, તેનાં નામ— ૧) હ્રિષ્ટા દ્વેષ મુલ દુઃખ જ્ઞાન
આદિની અભિવ્યક્તિના આધ્યયરૂપ અધિષ્ઠાન શરીર, (૨) ઉપાધિલક્ષણ
મોક્ષા-કર્તા, (૩) ગન્દાદિની ઉપલબ્ધિસારૂ મોક્ષાદિ દ્વાદશ કરણ,
(૪) પ્રાણાદિ ચિત્તિષ્ઠિષ્ઠિ, (૫) વધુ આદિના અનુમાદક સૂત્રાદિ દેવ.

विशुद्धत्वादि, अने अमानिव्यादि गुण,-एओने अपेक्षीने जनित क्षेत्रज्ञपरमात्मैकत्वज्ञान,.....ते ज्ञाननुं म्यान्मानुमचनिश्चयरूपे जे अवस्थान ते परा ज्ञाननिष्ठा छे,

अज्ञानेकरी आत्मानात्मज्ञान आवृत छे; तेयी संमार्गी जन्तुओ मोह-कर्तृमोकृरूपा अविवेकयुद्धि-पामे छे. आत्माना

ज्ञानेकरी जे जन्तुओनुं अज्ञान नाशित गमदर्शन.

थाय छे, ते जन्तुओनुं ज्ञान, आदिन्य-यत्, सर्वक्षेत्रस्तुने-परमार्थतत्त्वने-प्रकाशे छे. तेरा पंडितो समदर्शी थई तत्त्वने देगे छे. तेरा केवलतात्मदर्शीओ इष्टने-प्रियने-पामाने हर्षता नयी अने अनिष्टने-अप्रियने-पामीने विषादता नयी. तेओनां अन्तःकरण बाह्यविषयांमां असक्त-प्रीतिवर्जित-होय छे, अने मधिदानन्द ब्रह्ममां व्यावृत होय छे. तेयी ब्रह्मनुं अक्षयसुरस तेओ पामे छे. तेओ जीवतां ज सर्व भूतोना हितमां-आनुकूल्यमां-रत थई, ब्रह्मभूत-ब्रह्मप्राप्त-थई ब्रह्ममां मोक्षने पामे छे. सर्व संसारना विच्छेदनुं कारण जे ब्रह्मैकत्वदर्शन तेणे युक्त थई समदर्शी आम देगे छे:—

“सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।

ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥”

गीता ६।२९

‘सर्वत्र’ नाम सर्व ब्रह्मादि स्थावरान्त भूतोमां-विष-योमां-‘सम’ नाम निर्विशेष ब्रह्मात्मैकत्वविषय ‘दर्शन’ नाम ज्ञान छे जेनुं एयो ‘सर्वत्र समदर्शन,’ योगयुक्तात्मा पुरुष सर्व भूतोमां स्थित स्व-आत्माने देगे छे अने ब्रह्मादि-

१ सर्व भूतोमां अत्यन्त असष्टष्ट अविक्रिय ‘सम’ नाम एक ब्रह्मने देसगानुं शील छे जेओनु एवा,

સ્તમ્વપર્યન્ત સર્વ ભૂતોને આત્મામાં એકતા પ્રતિ પ્રાપ્ત થપલા દેલ્લે છે.’

એ પ્રકારે સર્વ ભૂતોમાં વાસુદેવને-ઈશ્વરને-જે દેલ્લે છે અને સર્વના આત્મા જે ઈશ્વર તે ઈશ્વરમાં સર્વ ભૂતોને દેલ્લે છે. એવો યોગી પરમેશ્વરના પરમપદમાં જ વર્તે છે. અને તે નિત્યમુક્ત છે.

“આત્મૌપમ્યેન સર્વત્ર સમં પદ્યતિ યોઽર્જુન ।

સુખં વા યદિ વા દુઃખં સ યોગી પરમો મતઃ ॥”

મ. ગી. ૬।૨૨

‘યદા મને સુખ ઇદ્ર-અનુકૂલ-છે તથા સર્વ પ્રાણીઓને સુખ ઇદ્ર-અનુકૂલ-છે, અને જેમ મને દુઃખ અનિદ્ર-પ્રતિકૂલ-છે, તેમ સર્વ પ્રાણીઓને દુઃખ અનિદ્ર-પ્રતિકૂલ-છે’ એમ હે અર્જુન ! સ્વઆત્માની ઉપમાના ભાવે સર્વ ભૂતોમાં સુખદુઃખને-અનુકૂલ પ્રતિકૂલને-‘સમ’ નામ તુલ્યતાએ દેલ્લે છે, તે કોઈનું પ્રતિકૂલ આચરતો નથી એવો સમદર્શી-સમ્યદ્દર્શનનિદ્ર-યોગી-જ્ઞાની-સર્વમાં ઉત્કૃષ્ટ અભિમત છે.’

ઈશ્વરની ‘ક્ષેત્ર’લક્ષણ અપરા પ્રકૃતિ અને ‘ક્ષેત્રજ્ઞ’લક્ષણ પરા પ્રકૃતિ છે. એ પ્રકૃતિદ્વય દ્વારે સર્વજ્ઞ ઈશ્વર જ જગત્તું કારણ છે, -સર્વ ભૂતોનો ઉત્પત્તિ સ્થિતિ તથા લયનો હેતુ છે. એમ છે તેથી સૂત્રમાં મળિના ગણો પરીવાયા હોય છે તેમ પરમેશ્વરમાં જ સર્વ જગત્ પ્રોત છે-પ્રથિત છે. એ પ્રકારે સર્વ ભૂતોના આત્મા પરમેશ્વર છે. તથાપિ તે નિત્યશુદ્ધબુદ્ધસ્વભાવ પરમેશ્વરને, રાગદ્વેષમોહાદિષ્કરી અવિદ્યેકિ જગત્ જાણતું નથી. પ્રાપ્તપરિપાકજ્ઞાન મહાત્મા જ પ્રત્યગાત્મા-પરમાત્મા મર્વાત્મા-પરમેશ્વરને જાણે છે,

યઘપિ પરમેશ્વર, સર્વ ભૂતોને સમ છે-તુલ્ય છે, તથાપિ જેમ અગ્નિ સર્વને સમ સતે પળ સમીપસ્થનું શીત હરાય છે, દૂરસ્થનું શીત હરાતું નથી, તેમ, બ્રહ્મનિષ્ઠજ્ઞાનીનો અનુગ્રહ થઈ દુઃખાદિ હરાય છે, અજ્ઞાનીઓનો-પરમેશ્વરથી વિમુખોનો-અનુગ્રહ થઈ દુઃખાદિ હરાતું નથી. પુનઃ જેમ સૂર્યનું વ્યાપક તેજ સ્વચ્છ દર્પણમાં પ્રતિફલે છે, મલિન દર્પણમાં પ્રતિફલતું નથી, એમ જ્ઞાની અજ્ઞાનોના સંબન્ધમાં પરમેશ્વર છે.

જે સમ્યગ્દર્શી, ઇન્દ્રિયના સમુદાયને સમ્યગ્ નિયમીને, સર્વકાલે ઇષ્ટઅનિષ્ટની પ્રાપ્તિવિષયે સમબુદ્ધિ છે, અને જે સર્વ ભૂતોના હિતમાં રત છે, તે જ્ઞાની પરમેશ્વરને પામે છે; અને અભેદદર્શિત્વથી તે પરમેશ્વરના આત્મભૂત થાય છે. કૈવલ્યની પ્રાપ્તિમાં સમ્યગ્દર્શીનું સ્વાતંત્ર્ય છે.

તત્ત્વજ્ઞાનેકરી પ્રાસવ્ય જે જ્ઞેય પરબ્રહ્મ તે અનિન્દ્રિયત્વે કરી શનૈકપ્રમાણગમ્ય છે; અને તે 'નેતિ નેતિ' ઇત્યાદિ વિશેષ પ્રતિષેધે કરી નિર્દેશાય છે.

જ્ઞાયમાન જે જ્ઞેય તે જ્ઞાત થતે જ્ઞાનફલ-જ્ઞાનગમ્ય-ચદાય છે. સર્વ પ્રાણિજાતના હૃદયમાં-બુદ્ધિમાં-તે જ્ઞેય પરમાત્મા વિશેષે કરી સ્થિત છે. રજ્જુશુકિકાદિઓના તદ્દિવેકના જ્ઞાનના અભાવથી, અધ્યારોપિત સર્પરજ-ક્ષેત્ર-ક્ષેત્રજ્ઞ જ્ઞાન. તાદિના સંયોગવત્ મિશ્ર સ્વભાવ છે જે ઘેનો, એવા ક્ષેત્ર-ક્ષેત્રજ્ઞ, કિંવા વિષય વિષયી, તે ઘેનો

૧ વેદાન્તજ્ઞાનદ્વારા 'આત્મા જ એક છે' એ પારમાર્થિક વિજ્ઞાન ન હોય ત્યારે સત્તાદ્વય પ્રતીત થાય છે. દૃષ્ટા દૃશ્ય, કિંવા વિષયો-વિષય કિંવા આત્મા-જ્ઞાતા, કિંવા જ્ઞીર-જ્ઞાત. એ વે સત્તાઓમાંથી બીજી દૃશ્યસત્તાને જાણવાને ઇન્દ્રિયાદિ પ્રમાણો છે. પ્રાયમિક સત્તા જે દૃષ્ટા-આત્મા તેના જ્ઞાન અર્થે સત્તાજ છે, તે શાસ્ત્ર અજ્ઞાતાર્થજ્ઞાપકત્વેકરી નહિ, કિન્તુ અતદ્દર્માધ્યારોપણ માત્રના નિર્વર્તકત્વેકરી અન્ય પ્રમાણ છે.

इतरेतर धर्माध्यासलक्षणसंबंध છે, તે, ક્ષેત્રજ્ઞત્વ સ્વરૂપના વિવેકના અભાવના નિબંધનરૂપ છે. તે ઇ અધ્યાસ-સ્વરૂપ ક્ષેત્ર-ક્ષેત્રજ્ઞનો સયોગ, તે મિથ્યાજ્ઞાનલક્ષણ છે. પ્રકૃતિસ્થત્વરૂપ મિથ્યાજ્ઞાનેયુક્ત પુરુષનો, સુખદુઃખમોહા-ત્મક ભોગ્ય ગુણોમાં-સુખી દુઃખી મૂઢ હું હું-૯વા રૂપ જે સંગ, ઇ જ તે પુરુષને સત્-અસત્-યોનિ-જન્મ-પ્રાપ્તિ-લક્ષણ સંસારનું કારણ છે. કાર્યકારણવિપયાકારે પરિણત પ્રકૃ-તિના સત્ત્વરજસ્તમોગુણોથી અન્ય કર્તા નથી; સર્વ અવ-સ્થામાં ગુણો જ કર્તાઓ છે, અને તે ગુણોથી પર, તે ગુણોના વ્યાપારનો સાક્ષીભૂત આત્મા છે, ઇમ જે દેખે છે; અર્થાત્ ઇ માયોપાધિભૂત ત્રિગુણોનું અતિક્રમ જે કરે છે તે ગુણાતીત સમ્યગ્દર્શી છે.

પ્રકૃતિપુરુષનાં કિંચા ક્ષેત્રક્ષેત્રજ્ઞનાં લક્ષણના ભેદના યથા-શાસ્ત્ર પરિજ્ઞાનપૂર્વક, માયાનિર્મિત ક્ષેત્રથી ભિન્ન, નિરસ્તસર્વો-પાધિવિશેષ જ્ઞેય જે ક્ષેત્રજ્ઞ તે ક્ષેત્રજ્ઞને બ્રહ્મસ્વરૂપ કરી જે દેખે છે, તે નિશ્ચિત્ત વિજ્ઞાનવાનું મિથ્યાજ્ઞાન દૂર થાય છે.

પરમાત્મા બ્રહ્મના જ્ઞાનની પરાનિષ્ટા, ઉપનિષદ્વાક્યોપ તથા ન્યાયથી ભગવાને ગીતામાં આત્માને જેવાં ગાયો છે તે આત્માના જ્ઞાનસદૃશી છે. તે પરમાત્માના અત્યન્ત નિર્મલ-ત્વની, અતિસ્પૃહ્યત્વની, અને અતિસૂક્ષ્મત્વની ઉપપત્તિથી, અને આત્માના સમાન બુદ્ધિના પણ નિર્મલત્વની, સ્વચ્છત્વની, સૂક્ષ્મત્વની, ઉપપત્તિથી (સંભવથી) આત્મચૈતન્યાકારણા અધ-ભાસત્વની ઉપપત્તિ છે. અર્થાત્ યથોક્ત સામ્યાનુસારથી આત્મચૈતન્યઆભાસે કરી પ્રાપ્તા-જ્ઞાનપરિણામવતી બુદ્ધિ (જ્ઞાન) થાય છે.

આત્મચૈતન્યમાસે વ્યાપ્તા બુદ્ધિ છે, એવી સામાસબુદ્ધિય વ્યાપ્ત મન છે, એવા મનના આમાસે વ્યાપ્ત ઇન્દ્રિયો છે, એવાં ઇન્દ્રિયોય વ્યાપ્ત સ્થૂલ દેહ છે. એથી લોકોય દેહમાત્રમાં આત્મદૃષ્ટિ કરાય છે.....પમ બુદ્ધિઆદિ દેહપર્યન્ત સર્વત્ર આત્મચૈતન્યામાસતા છે. એ જ આત્મધ્રાન્તિનું કારણ છે. એથી નામરૂપાદિ અનાત્માના અધ્યારોપણની નિવૃત્તિ જ કાર્યા છે, વિજ્ઞાન કાર્ય નથી. વિજ્ઞાન તો સિદ્ધ જ છે.

તે અનાત્માધ્યારોપણની નિવૃત્તિ આત્મજ્ઞાનથી થાય છે, તેથી પરમનિઃશ્રેયસનો હેતુ કેવલ આત્મજ્ઞાન જ છે. તે આત્મજ્ઞાન કૈવલ્યફલાવસાનત્વથી આત્મજ્ઞાનથી મોક્ષ.

ભેદપ્રત્યયનું નિવર્તક છે.....યદ્યપિ નિઃશ્રે-
યસનું અકાર્યત્વ (સ્વાભાવિકત્વ, નિત્યત્વ) હોવાથી તેને (કર્મના કિંવા જ્ઞાનના) સાધનત્વની અનુપપત્તિ છે,-કારણ જે નિત્ય વસ્તુ હોય છે તે તે કર્મ કિંવા જ્ઞાને કરાતું નથી-તથાપિ નિઃશ્રેયસમાં જ્ઞાન અનર્થક નથી; કારણ કે જ્ઞાન અવિદ્યાનિવર્તક છે. અને અવિદ્યાનિવર્તક જ્ઞાનનું કૈવલ્યફલાવસાનત્વ-પરમનિઃશ્રેયસત્વ-દીઠું છે. રજ્જુ-આદિ વિષયમાં સર્પાદિ અજ્ઞાન તમનો નિવર્તક પ્રદીપ-પ્રકાશ તે પ્રદીપપ્રકાશના ફલવત્ જ્ઞાન છે. જેમ પ્રકાશનું ફલ સર્પ-વિકલ્પની નિવૃત્તિ અને રજ્જુકૈવલ્યાવસાન છે, તેમ જ્ઞાનનું ફલ અવિદ્યાની નિવૃત્તિ અને આત્મકૈવલ્યાવસાન છે.

સમ્પર્કદર્શનવાન્ પ્રસન્નાત્મા જ્ઞાનો, વિધ્વસ્ત-સર્વોપાધિભેદ

૧ અર્થાત્ જ્ઞાનનો સ્વભાવ આ છે કે:-જે વસ્તુનું જ્ઞાન થાય તે વસ્તુ-વિષયે અપ્યાસ અને અજ્ઞાન એઓને દૂર કરે છે. જેમ રજ્જુનું જ્ઞાન રજુવિષયે સર્પના અપ્યાસને અને રજ્જુના અજ્ઞાનને દૂર કરે છે; તેમ આત્માનું જ્ઞાન આત્મવિષયે અહંકારાદિ દેહાન્તના અપ્યાસને દૂર કરે છે તથા આત્માના અજ્ઞાન ને દૂર કરે છે; એથી આત્માના સચ્ચિદાનન્દ સ્વરૂપનો પ્રાદુર્ભાવ થઈ રહે, છે.

સચ્ચિદાનન્દાત્મૈકરસ પરમાત્માને જાણે છે-અનુભવે છે, તે સમકાલ જ તે તદ્રૂપ થાય છે. કારણ સ્વાત્મોપપત્તિપરિપાક-હેતુયુક્ત પ્રતિપક્ષવિહીન જે જ્ઞાન તે જ્ઞાનનું આત્માનુભવનિશ્ચયાવસાનત્વ છે. અને તે સ્વાત્માનુભવનિશ્ચયરૂપે અવસ્થાન તે જ પરા જ્ઞાનનિષ્ઠા વદાય છે. ધ્રાન્તિપ્રત્યયનિમિત્ત આ સંસારપ્રમ છે, પરમાર્થથી તો નથી જ. એમ સમ્યગ્દર્શનથી અત્યન્ત ઉપરમ જ સિદ્ધ છે. સમ્યગ્દર્શનથી અજ્ઞાનજ સર્વ-સંસારાનર્થહેતુ સાગરસમદુરુત્તાર મોહનો નાશ થાય છે, આત્મતત્ત્વવિપયા સ્મૃતિનો લાભ થાય છે, અને એ લાભથી સર્વ હૃદયપ્રંથિઓનો વિપ્રમોક્ષ થાય છે.

આત્મવોધ.

યર્થાક્ત સાધનસંપન્ન મુમુક્ષુઓને અપેક્ષ્ય આત્મવોધ આ છે:-

(જેમ પાક કરવામાં ફાણ જલ પાત્રાદિ સાધનો છે પરંતુ પ્રધાન સાધન અગ્નિ છે, તેમ મોક્ષમાં પરંપરાક્રમેકરી કર્મ-ઉપાસનાદિ સાધનો છે પરંતુ એ) અન્ય સાધનોથી મોક્ષનું સાક્ષાત્ એક સાધન વોધ છે. પાકના અગ્નિવત્ (અગ્નિ વિના પાક સિદ્ધ થતો નથી તેમ) જ્ઞાન વિના મોક્ષ સિદ્ધ થતો નથી. (૨) અવિદ્યાને કર્મ નિવર્તનું નથી; કારણ (અવિદ્યા અને અવિદ્યાજન્ય કર્મ ઉભયની પરસ્પર) વિરોધિતા નથી. જેમ તેજ તિમિરસંઘને હણે છે, તેમ વિદ્યા જ અવિદ્યાને નિશ્ચય હણે છે જ. (૩) જેમ મેઘના દૂર થયાથી સૂર્ય (સ્વયં પ્રકાશે છે) તેમ (જ્ઞાનેકરી) અજ્ઞાનનો નાશ થયે અજ્ઞાનથી

૧. શ્રીશંકરમગવાનુકૃત પ્રકરણ ત્રય છે. તે મૂલ અને તેનું સમસ્તોક્તી પદ્યપ્રત્યયાન્તર સંવત્ ૧૯૪૭ ના વર્ષના માસિકપત્રો-આર્યધર્મપ્રકાશ, સુદર્શન અને મહાકાલમાં પ્રસિદ્ધ થયું છે, તે મૂલનું પ્રાપ્ત: ગદ્યપ્રત્યયાન્તર અષ્ટ છે. એમાં વેદાન્તના-તત્ત્વજ્ઞાનના સિદ્ધાન્તના-સંપ્રદાનો સંક્ષેપ આવે છે.

પરિચ્છિન્નં જેવો (જળાતો) આત્મા કેવલ (પરિપૂર્ણ) જ સ્વયં પ્રકાશે છે. (૪) જેમ કતકરેણું જલને (નિર્મલ કરી પોતે નાશ પામે છે-શમી જાય છે) તેમ (જેનેકરી જણાય પ, વૃત્તિનું) જ્ઞાન, અજ્ઞાને કંલુષીકરેલા જીવને જ્ઞાનના અભ્યાસથી નિર્મલ કરી, પોતે નાશે છે-શમી જાય છે. (અને એક જ અદ્વય આત્મસ્વભાવ ચૈતન્ય માત્ર રહે છે. (૫)

રાગદ્વેષાદિષુ કરી સંકુલ સંસાર સ્વપ્નતુલ્ય છે. સ્વ-કાલમાં સત્યવત્ ભાસે છે, અને પ્રવોધ થયે અસત્યવત્ થાય છે. (જેમ સ્વપ્ન અસત્ય મિથ્યા-છે, પણ પોતાના નિદ્રાકાલમાં સત્ય જેવું ભાસે, છે જાગ્રત્ થયે અસત્ય જણાય છે તેમ સંસાર અસત્ય-મિથ્યા-છે, પણ પોતાના કારણભૂત અજ્ઞાન-કાલમાં સત્યવત્ ભાસે છે;) મહાવાક્યશ્રવણાદિષુકરી આત્મજ્ઞાન થયે-પ્રવોધ થયે-સંસાર અસત્ય-મિથ્યા-જણાય છે. (૬)

જેમ (શુક્તિનું નીલપૃષ્ઠ ત્રિકોણાદિ વિશેષજ્ઞાન જ્યાંસુધી ઉત્પન્ન થયું નથી ત્યાંસુધી) શુક્તિમાં રૂપું સત્ય ભાસે છે તેમ સર્વનું અધિષ્ઠાન અદ્વય બ્રહ્મ જણાયું નથી ત્યાંસુધી જગત્ સત્ય ભાસે છે. (૭)

જેમ હાટકમાં (સુવર્ણમાં) કટકાદિ (કલ્પિત છે) તેમ નિત્ય સચ્ચિદાત્મા અનુસ્યૂંત વિષ્ણુમાં વિવિધ (દેવ, નર, સ્થાવર, જંગમાદિ) સર્વ વ્યક્તિઓ (કલ્પિત છે.) (૮)

(જેમ મઠ, ઘટ આદિ ઉપાધિઓના ભેદકરી તેઓમાં એક જ આકાશ નાનાવિધરૂપે ભાસે છે અને તે ઉપાધિઓનો નાશ

૧ સીમા કરેલ, કટકો. ૨ નિર્મલી નામે ઓપધિ જે મલિન પાણીને નિર્મલ કરે છે તે. ૩ કર્તૃત્વમોક્તૃત્વાદિષુ અભિમાની-સંસારી-મલિન-દુઃસી-કરેલ. ૪ વ્યાસ, મરેલો. ૫ શીપનો કાલો પાછલનો ભાગ અને ત્રિકોણ આકાર. ૬ કહુ, દોરો, અંકોઢા, સાંકળા, કુંડલ આદિ ઘરેણાના ઘાટ. ૭ અનુ-ગત. ૮ વ્યાપક. ૯ સ્થાવર જંગમનાં જૂદાં જૂદાં રૂપ.

થયે કેવલ એક જ આકાશ જણાય છે તેમ,) આકાશ સમ નાના ઉપાધિગત દૃષીકેશં વિભુ, તે દેહાદિ નાના ઉપાધિના ભેદથી ભિન્નવત્ ભાસે છે, (પરંતુ પ્રહ્લાત્મૈક્ય જ્ઞાનેકરી) તે ઉપાધિઓનો નાશ થયે કેવલ (એક જ પરમાત્મા) છે. (૯)

જેમ (સ્વભાવથી મધુર શુદ્ધ) જલમાં (આમ્લાદિ રસ અને રક્તાદિ રંગ મલેથી) રસવર્ણોદિભેદ આરોપિત થાય છે, તેમ આત્માવિષયે નાના ઉપાધિના વશથી જાતિ, વર્ણ, આશ્રમ આદિ આરોપિત છે. (૧૦)

(આત્માના અવિચાણ કલ્પિત ઉપાધિત્રય.)

કર્મોપકરી સંચિંત, પંચીકૃત મહાભૂતથી સંભવ છે જેનો પદ્મ, (સ્થૂલ) શરીર છે. તે સુખદુઃખોના ભોગનું ઔપતન છે-કહેવાય છે. (૧૧) પંચપ્રાણ, (જ્ઞાનઅર્થ તથા કર્મઅર્થ) દશ ઈન્દ્રિય, મન અને બુદ્ધિ (૫ ૧૭) ઇઓથી સમન્વિત, અપંચીકૃત ભૂતોથી ઉઠેલું સૂક્ષ્મ શરીર છે. તે (સુખદુઃખોના) ભોગનું સાધન છે (૧૨). અનિર્વાચ્યા અનાદિ અવિદ્યા કારણઉપાધિ (કારણ શરીર) કહેવાય છે. ૫ ઉપાધિત્રયથી અન્ય (૫ ઉપાધિનો સાક્ષી) આત્માને નિશ્ચય જાણે. (૧૩)

જેમ નીલવસ્ત્રાદિના યોગેકરી (શ્વેત) સ્ફટિક (તે તે વસ્ત્રના રંગ જેવા રંગનો ભાસે તેમ) પંચકોશાદિના યોગેકરી શુદ્ધ આત્મા તે તે કોશમય જેવો સ્થિત છે. (પરંતુ વસ્તુતઃ આત્મા ઉપાધિરહિત શુદ્ધ છે.) (૧૪)

(અસંગ આત્મસ્વરૂપના જ્ઞાનના વિવેચનનો પ્રકાર.)

જેમ તુષાદિ (ફાંતરાંરૂપ) કાંશોપ યુક્ત શરીરને યુક્તિપ

૧ મન આદિ સર્વ ઈન્દ્રિયના પ્રવર્તક, ત્રિભાગક. ૨ વ્યાપક. ૩ રચિત. ૪ ભોગનુ સ્થાન. ૫ યુક્ત. ૬ અગ્રમય, પ્રણમય, મનોમય, વિજ્ઞાનમય, અને આનન્દમય ૫ પંચકોશ, અને દેહત્રયના રાધુ, પીથુ આદિ ધર્મ. ૭ મિથ્યા તાદાત્મ્ય.

खांडीने तंडुलने जुदो करे छे, तेम पंचक्रोशोष मुक्त शरीरने युक्तिवते भिन्न करीने आन्तर शुद्ध आत्माने (अधिकारी) विवेचे,-विवेक करी (भेद करी शरीरथी भिन्न) जाणे. (१५)

जेम (सूर्यप्रकाश सर्वत्र होय छे पण पृथिवीतलादि अस्वच्छमां तेनुं प्रतिबिंब भासतुं नथी किन्तु दर्पणादि) स्वच्छोमां प्रतिबिंब भासे छे, तेम आत्मा सदा सर्वगत छे पण सर्वत्र भासतो नथी, (किन्तु स्वच्छ) बुद्धिमां ज भासे छे. (१६)

(प्रजाप्रकृति आदिनी सभामां स्थित सते तेओथी भिन्न सर्व दृश्यना साक्षीरूप) राजावत्, देह, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, प्रकृति (एओमां स्थित सते) एओथी विलक्षण ते(मनादि)नी वृत्तिओना साक्षी आत्माने (अधिकारी) जाणे. (१७)

जेम अंभ्रो धातां चंद्रमा धातो हांय एम (लोकोने) देखाय छे, तेम इन्द्रियोना व्यापारो थए आत्मा व्यापारी जेवो अविवेकीओने देखाय छे. (१८)

जेम सूर्यना प्रकाशने आश्रीने जनो वते छे, तेम आत्माना चैतन्यने आश्रीने देह, इन्द्रिय, मन, बुद्धि पोताना अर्थमां (विषयांमां) वते छे. (१९)

जेम (निर्मल) गगनमां नीलतादिने (जनो) अध्यसे छे-कल्पे छे, तेम अमल (अलंग) सच्चिदात्मानां देहइन्द्रियोना गुणोने तथा कर्मोने अविवेकवते (जनो) अध्यसे छे. (२०)

जेम जलनां चलनादि जलगतं चंद्रमामां कल्पाय छे, तेम मानस उपाधिना कर्तृत्वादिओ आत्मानां अज्ञानथी कल्पाय छे. (२१)

बुद्धि सते राग, इच्छा, सुखदुःखादि प्रवर्ते छे, सुषुप्तिमां

१. जड परिणामी दृश्यो. २. वादळा. ३. पाणीमा प्रतिबिंबित यवेल. ४. अहंकारना.

બુદ્ધિનો નાશ થયે રાગાદિ નથી હોતાં 'તેથી રાગાદિ બુદ્ધિનાં છે, આત્માનાં તો નથી. (૨૨)

(આત્માનો સ્વભાવ.)

જેમ સૂર્યનો સ્વભાવ પ્રકાશ છે; જલનો સ્વભાવ શૈત્ય છે, અગ્નિનો સ્વભાવ ઉષ્મતા છે, તેમ આત્માનો સ્વભાવ સત્ ચિત્ આનન્દ નિત્યનિર્મલતા છે. (૨૩)

આત્માનો સચ્ચિદ્અંશ અને બુદ્ધિની વૃત્તિ એ બેને અવિવેકે કરી સંયોજીને ' હું જાણું છું ' એમ (અહંકારવૃત્તિ) પ્રવર્તે છે. (૨૪) (પરંતુ) કોઈ કાલે આત્માને વિક્રિયા છે નહિ અને બુદ્ધિને બોધ છે નહિ. (સામાસ અહંકાર) જીવ, (દેહેન્દ્રિયાદિ) સર્વને ઁલં જાણીને (એ દેહેન્દ્રિયાદિ સર્વ હું છું એમ વિચારીને હું (જ્ઞાતા, દ્રષ્ટા એમ મોહે છે-ભ્રાન્ત થાય છે. (૨૫) જેમ (અન્ધકારમાં) (રજ્જુને સર્પ જાણીને) (વીહીકળ) (ભયને વહે છે,) તેનું વાસ્તવ રજ્જુસ્વરૂપ જાણ્યું તો નિર્ભય થાય છે તેમ આત્માને જીવ જાણીને (અજ્ઞાનીઓ) ભયને વહે છે. ' હું જીવ નહિ, પરમાત્મા છું ' એમ જાણ્યું તો નિર્ભય (સુખી) થાય છે. (૨૬)

જેમ દીપ ઘટાદિને (પ્રકાશે છે, ઘટાદિવતે દીપ પ્રકાશાતો નથી તેમ,) એક આત્મા બુદ્ધિઆદિ ઇન્દ્રિયોને અવભાસે છે, તે બુદ્ધિઆદિ જહોપ સ્વાત્મા અવભાસાતો નથી. (૨૭)

જેમ (આપેક્ષિક સ્વયંપ્રકાશે કરી દીપને (પોતાના પ્રકાશ નિમિત્ત) અન્ય દીપની ઇચ્છા નથી, તેમ બોધસ્વરૂપતાપકરી આત્માને સ્વબોધમાં અન્ય બોધની ઇચ્છા નથી. આત્મા પાંતે પ્રકાશે છે. (૨૮)

(आत्मज्ञाननो प्रकार.)

‘नेतिनेति’ ए चाक्येकरी निखिल उपाधिओने निपे-
धीने (भागत्याग लक्षणाएकरी) महावाक्योवते जीवात्मा
अने परमात्मानुं ऐक्य (ज्ञान अधिकारी) पाप्मे. (२९)
आविद्यंक शरीरादि हृदय बुद्बुद्वंत क्षर छे, पथी विलक्षण
निर्मल (निरुपाधिक सच्चिदात्मक) ब्रह्म छे, ते हुं छुं, एम
(विद्वान्) जाणे. (३०)

(आत्मज्ञानीना मनननो प्रकार.)

देहथी अन्यत्व होवाथी (हुं देहथी अन्य होवाथी) जन्म,
जरा, काश्य, लय आदिओ मारां नथी; अने निरिन्द्रियता होवाथी
शब्दादि विषयो सह संग पण नथी (३१)

‘अप्राण, अमन, शुभ्र’ (आत्मा छे) इत्यादि श्रुतिना शास-
नथी मारूं अमनस्त्व होवाथी दुःख, राग, द्वेष, भय आदिओ
मारां नथी. (३२-३३)

‘हुं निर्गुण, निष्किय, नित्य, निर्विकल्प, निरंजन, निर्विकार,
निराकार, नित्यमुक्त, निर्मल छुं. (३४)

‘आकाशवत् (हुं) सर्व (दृश्यना) बहिरंतर्गत छुं, सर्वमां
सदा सम छुं, अच्युत, शुद्ध, नि.संग, निर्मल, अचल छुं. (३५)

जे नित्य, शुद्ध, विमुक्त एक अप्रंढानन्द, अद्वय, सत्य, ज्ञान,
अनंत परब्रह्म छे ते (परब्रह्म ज) हुं छुं.’ (३६)

ए प्रकारे ‘ब्रह्म ज छुं’ एम निरंतर अभ्यस्ता वासना,
जेम रसायन रोगोने हरे छे तेम, अविद्याना विश्लेषोने
हरे छे. (३७)

१. अनात्माना निरसनवाळा वचनो. २. जड अज्ञाननो कार्य. ३. पाणीना
परपोटा जेवां क्षणमगुर. ४. मनरहितता, अमनपणुं. ५. श्लोक ३३मो
बहु आवृत्तिओमां नथी अने प्रसंगोपात्त आवश्यक न होवाथी क्षेपक जेवो
भासे छे तेथी लीखो नथी.

(ब्रह्मना अनुसन्धाननां साधन.)

विविक्त देशमां आसीन, विरागवान्, विजितेन्द्रिय, अनन्यंथी (विद्वान्) ते अनन्त एक आत्मा प्रति भाव करे आत्मानुं अनुसन्धान-करे.) (३८)

सुबुद्धिमान् बुद्धिवते अखिल दृश्यने आत्मां ज प्रविलापीने निर्मल आकाशवत् एक आत्मा प्रति सदा भाव करे. (३९)

परमार्थवित् (ज्ञानी) रूप, वर्ण आदिक सर्वने त्यजीने परिपूर्ण चिदानन्द स्वरूपे (अभेदेकरी) रहे छे. (४०)

परमात्मां ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेयनो भेद विद्यमान नथी. चिदानन्दना एकरूपत्वथी स्वयं (आत्मा पोते) ज दीपे छे-प्रकाशे छे. (४१)

एम आत्मारूप अन्तःकरणरूप-अरेणिमां घ्याननुं मथन सतत करतां, अवगतिरूप-ज्ञानरूप-ज्वाला उदिता थई अज्ञानरूप इन्धनने दहे छे-बाले छे (४२)

अरुणसम बोधवते पूर्वे तम(समअज्ञान)नो नाश थये पछी अंशुमान् सूर्यसम स्वयं आत्मा ज आविर्भवे छे-प्रकट थाय छे (४३)

आत्मा तो सतत प्राप्त छे पण अविद्याएकरी अप्राप्तवत् भासे छे, ते अविद्यानो नाश थये, स्वकंठना आभरणसम, (आत्मा) प्राप्तवत् भासे छे. (४४)

स्थाणुमां पुरुषवत् भ्रान्तिए करेली, ब्रह्ममां जीयता छे.

१. जनसंघाषवर्जित, एकान्त देशमां सुखासन करी वेसनार. २ अन्य अनात्मा विषयोमां नहि किन्तु ब्रह्मात्मां ज निश्चयात्मिका बुद्धि छे जेनी एवो विद्वान्. ३. अरुणिना वे लक्ष्मणा नोचेनामा उपरना भागते मथन कन्याथी अग्नि उत्पन्न थाय छे तेम,

जीवन्मुं ते तात्त्विकरूप दृष्टे-दीर्घे-सते, (जीवन्तो जीवभाव) निवर्ते छे. (४५)

तत्त्वस्वरूपना अनुभवथी उत्पन्न ज्ञान, अहं मम (हुं अने मारुं) एवा अज्ञानने, (उदितसूर्य) दिशाना भ्रमने जेम (दूर करे तेम), अजंसा वाधे छे दूर करे छे. (४६)

सम्पक्विविज्ञानवान् योगी, ज्ञानरूप चक्षुवते, अखिल सर्वने (हृदय प्रपंचने) आत्मामां ज स्थित एकआत्म-एक अभिन्न स्वरूप-देखे छे. (४७)

आ सर्व जगत् आत्मा ज छे, मृत्तिकाथी घटादिओ (अन्य छे नहि) तेम आत्माथी (हृदय विविध जगत्) अन्य छे नहि. (तेथी ज्ञानी) सर्वने आत्मरूप ज देखे छे. (४८)

भ्रमरकीटवत्, जीवन्मुक्त तो, पूर्वना उपाधिना (देह मन बुद्धि आदिना) गुणोने त्यजे छे अने सच्चिदानन्दरूपत्वथी ते (ब्रह्मने) जाणतो सतो ब्रह्म थाय छे-ब्रह्मभावने पामे छे. (४९)

मोहार्णवने तरीने, रागद्वेषादि राक्षसोने हणीने, शान्तिपकरी समायुक्त योगी आत्माराम थई विराजे छे. (५०)

(जीवन्मुक्तना लक्षण.)

आत्माना सुखेकरी निर्वृते (जीवन्मुक्त योगी) बाह्यनां अनित्य सुखोमां आसक्तिने त्यजीने, घटस्थ दीपवत्, स्वच्छ स्वअन्तर्मां ज प्रकाशे छे. (५१)

मुनि उपाधिस्थ सते पण ते(उपाधिओ)ना धर्मोप व्योमवत् निर्लिप्त छे, सर्वविद् सते मूढवत् रहे छे, अने वायुवत् असक्त आचरे. (५२)

१ शीघ्र, यथार्थ, अनायास, २ ए श्लोकमा श्रीरामचन्द्रनो ध्वनि भासे छे.
३ सुत्प-सुप्ती, ४ आकाशसम,

(વિદેહકૈવલ્ય.)

જેમ જલમાં જલ, આકાશમાં આકાશ, અથવા તેજમાં તેજ પ્રવેશે છે, તેમ ઉપાધિના વિલયથી (સર્વત્ર વ્યાપક) વિષ્ણુમાં મુનિ, નિર્વિશેષે જેમ થાય તેમ, પ્રવેશે. (૫૩)

(બ્રહ્મણું સર્વાતિશયત્વ.)

જે લાભથી અપર લાભ નથી, જે સુખથી અપર સુખ નથી, જે જ્ઞાનથી અપર જ્ઞાન નથી, તે બ્રહ્મ, ઐમ (જ્ઞાની) નિશ્ચય ધારે-જાણે. (૫૪). જે દેંહીને-દીઠા પછી અપર દૃશ્ય નથી, જે થઈને-જે થયા પછી-પુનર્ભવ નથી, જે જાણીને અપર જ્ઞેય નથી, તે બ્રહ્મ ઐમ (જ્ઞાની) અવધારે. (૫૫). જે તિર્યક્, ઋર્ધ્વ, અધઃ, પૂર્ણ, અદ્વય, અનન્ત, નિત્ય, ઐક સચ્ચિદાનન્દ છે તે બ્રહ્મ ઐમ (જ્ઞાની) અવધારે. (૫૬). જે અવ્યય, અસંહાનન્દ, ઐક, અંતત્ની વ્યાવૃત્તિ રૂપેકરી, વેદાન્તોષ લક્ષાય છે તે બ્રહ્મ છે, ઐમ (જ્ઞાની) અવધારે. (૫૭). તે અસંહાનન્દ-રૂપના આનન્દના લવને આશ્રિત અખિલ બ્રહ્માદિઓ તારત-મ્યેકરી આનન્દી થાય છે. (૫૮). અખિલ (દેહાદિ અનાત્મા) વસ્તુ તે બ્રહ્મયુક્ત છે, વ્યવહાર (પળ) તે બ્રહ્મ અન્વિત છે, તેથી, અખિલ ક્ષીરેંવિપે સર્પિ સમ, સર્વગત બ્રહ્મ છે-વિશ્વવિપે બ્રહ્મ વ્યાપ્ત છે. (૫૯)

જે અતણુ, અસ્થૂલ, અહ્રસ્વ, અદીર્ઘ, અજ, અવ્યય, અરૂપ, અગુણ, અવર્ણ, અનાખ્ય છે, તે બ્રહ્મ છે ઐમ અવધારે. (૬૦) જેના માસેકરી ઐકાદિ માસે છે, માસ્યોપકરી-જે માસાય નહિ, જેણેકરીને આ સર્વ (દૃશ્ય જગત્) માસે છે, તે બ્રહ્મ છે ઐમ અવધારે. (૬૧)

૧ મેદક ધર્મરહિત. ૨ અનાત્માના નિરસનેકરી, દૃશ્ય પ્રવચના નિપેધેકરી.
૩ વધારે-બહુ-વધારે-પળાવતે, ન્યૂનાધિકતાવતે. ૪ સમગ્ર દૂષર્મા ધી ધ્યાપી રહે છે તેમ. ૫ વર્ણાદિ.

યંદ્રિય પ્રવલ્લ આયત્તપિદ્યન્ પ્રલ્લ, મ્યયં અન્તર્ બહિર્
 વ્યાર્પને અગ્નિલ્લ જગન્ને મામ્યાયન્નું, પ્રકાશે છે. (૬૨). (આ)
 ચિલ્લક્ષણ જગન્ (અચિદ્ધાનરૂપે જાંતા) પ્રલ્લ છે, પ્રલ્લર્પી
 અન્યન્, કિલ્લિન્ નર્પી, પ્રલ્લર્પી અન્યન્ જો માને તો તે, જેમ
 મગ્મરીચિંકા છે તેમ, મિષ્ટ્યા છે. (૬૩). જે જે દેવતાય
 છે, શૃણાય છે (તે) પ્રલ્લર્પી અન્યન્ નર્પી, તત્ત્વમાનર્પી તે
 મચ્ચિદાનન્દ અઠ્ઠય પ્રલ્લ જ છે. (૬૪). જ્ઞાનચ્ચુ જ, સર્વગત
 મચ્ચિદાન્માને નિરંજને છે, જેમ મામ્યાન્ માનુને અન્થ (મનુષ્ય
 દેવો શકે નદિ તેમ) અજ્ઞાનચ્ચુ (મનુષ્ય મચ્ચિદાન્માને)
 નિરર્પી શકે નદિ. (૬૫)

થયન્નાદિય્ ડર્હાત (ણ્યા) જ્ઞાન (રૂપ) અગ્નિય પરિતા-
 પિત, સર્વ મલોર્પી મુક્ત જીય-આન્મા, સુપર્ણયન્, મ્યયં
 પ્રકાશે છે. (૬૬). કારણ યે (ણ્યો શોધિત) હૃદયાકાશમા
 ઉદિત સર્વવ્યાપી સર્વધારી આન્મા (રૂપ) યોધમાનુ
 તમોપહન્-અન્ધકારને દરનાર-છે, જે આત્માપર્કરી સર્વ
 પ્રકાશે છે. (૬૭)

(આત્મયોધરૂપ તીર્થને મેવ્યેષી જૂનજૂન્યાના.)

જે ચિનિષ્કિય (તત્ત્વમાની પરમહંસ), દિશા, દેશકાલ
 આદિને અપેશ્યા વિના, સ્વાત્મા (રૂપ) તીર્થ-જે સર્વગત છે,
 શોતાદિહન્ નિવ્યસુર (રૂપ) નિરંજન છે-તે (પરમાત્મા-
 રૂપ) તીર્થને મજે છે તે સર્વવિત્ સર્વગત અમૃત (મુક્ત-પર-
 માત્મા-) થાય. (૬૮)

માણ્ડૂક્ય ઉપનિષદ્માંથી.

“નિવૃત્તેઃ સર્વદુઃખાનામીશાનઃ પ્રમુરચ્યયઃ ।

અદ્વૈતઃ સર્વભાવાનાં દેવસ્તુર્યો વિભુઃ સ્મૃતઃ” ॥ ૧૦ ॥

ગૌડપાદીયકારિકા-પ્રથમ પ્રરણ.

(પ્રાણ-તૈજસ-વિશ્વલક્ષણ) સર્વદુઃખોની નિવૃત્તિથી (તુરીય આત્મા) ‘ ઈશાન ’ નામ પ્રમુ (દુઃખનિવૃત્તિ પ્રતિ સમર્થ થાય) છે, કારણ દુઃખની નિવૃત્તિનું નિમિત્ત તેનું વિજ્ઞાન જ છે. (સ્વરૂપથી વ્યભિચરતો નથી તેથી) ‘ અચ્યય ’ છે. (રજ્જુસર્પવત્) સર્વભાવોનું મૃપાત્વ છે તેથી ‘ અદ્વૈત ’ છે; (તે ય દ્યોતનથી) ‘ દેવ ’ છે, ‘ તુર્ય ’ નામ (અવસ્થાત્રયાતીત) ચતુર્થ છે, ‘ વિભુ ’ નામ વ્યાપી (વિદ્વત્અનુભવસિદ્ધ હોવાથી) સ્મૃત છે.

એમ અવિદ્યાકૃત દુઃખપ્રદ દ્વૈતપ્રપંચ વિદ્યાપ્કરી શાન્ત થયે સચ્ચિદાનન્દ પરમાત્મા જ પ્રકાશે છે.

જેમ રોગાર્તને રોગનિવૃત્તિ થયે સ્વસ્થતા છે, તેમ દુઃખાત્મક આત્માને દ્વૈતપ્રપંચનો ઉપશમ થયે સ્વસ્થતા છે. દ્વૈતપ્રપંચ અવિદ્યાકૃત છે, વિદ્યાપ્કરી તેનો ઉપશમ થાય છે. યથી બ્રહ્મવિદ્યાનું પ્રકાશન મહાત્મા કરે છે. કઈંક વિસ્તરથી એનો અર્થ આ પ્રમાણે છે:-

૧ જેમ મંડૂક (દેડકો સ્થલ ઉપરથી ત્રણ કુદકા મારીને જલમા પ્રવેશ કરે છે તેમ, એ તત્ત્વઅપ્રવોધલક્ષણ જાગ્રત્, સ્વપ્ન, સુષુપ્તિ એ સ્થલથી ઉછળીને સુષુપ્તય જલધ્યાનીય ચતુર્થપાદ બ્રહ્મભાવને જીવાત્મા પામે છે. એવા મંડૂકરૂપ આત્માની પ્રતિપાદિકા ઉપનિષદ્ તે માંડૂક્ય કહેવાય છે.

“માણ્ડૂક્યમેકમેવાલં મુમુક્ષુણાં હિતાતૈયે
તથાપ્યસિદ્ધં ચેત્ શાન્તં દશોપનિષદં પઠ” ॥

મુક્તિકોપનિષદ્. ૧૧૨૭

૧ વિમુક્તયે, એહું પણ પાઠાંતર છે.

જેમ રજ્જુમાં સપાંદિના વિકલ્પનો ઉપશમ થયે રજ્જુ તત્ત્વની ઉપપત્તિ થાય છે તેમ દ્વૈતપ્રપંચનો ઉપશમ થયે અદ્વૈતની પ્રતિપત્તિ થાય છે, અને એક જ આત્મા સર્વભૂતસ્ય દેસાય છે. સ્વરૂપભૂત મોક્ષપ્રતિવંધનું વિવર્તકત્વ એ વેદાન્તશાસ્ત્રનું પ્રયોજન છે યથા ઝરાદિ રોગેકરી અભિભૂત મનુષ્યને સ્વરૂપભૂતા સ્વસ્થતા પ્રથમ હોય છે, પણ તે રોગેકરી પ્રતિવદ્ધા થયે, ન હોય પેવી થાય છે. તે સ્વસ્થતા પાછી, ત્રિકિત્સાશાસ્ત્રીય ઉપાયોના પ્રયોગવશથી પ્રતિવંધભૂત રોગ ગયે સતે, અભિવ્યક્તા થાય છે.

તથા સ્વઅવિદ્યાથી પ્રસૂત અહંકારાદિ દ્વૈતપ્રપંચના સંવંધથી આત્મામાં દુઃસ્વને આરોપીને 'હું દુઃસ્વી છું, મારે સુખ પ્રાપ્તવ્ય છે,' એમ જાણનાર મનુષ્ય પોતે સ્વતઃ નિખિલ દુઃસ્વરહિત અને નિરતિશયાનન્દ-એકતાન છે, તેને પરમકાઠણિક આચાર્યેકરી ઉપદિષ્ટ ઘાન્યોવતે ઉઠેલી અદ્વૈત-વિદ્યાથી દ્વૈત-નિવૃત્તિ થયે, અને પ્રતિવંધનો ઘંસ થયે સ્વભાવભૂતા પરમાનન્દતા અને નિરસ્તસમસ્તાનર્થતા સ્વારસ્યેકરી અભિવ્યક્તા થાય છે. એ જ સ્વસ્થતા છે તે પરિપૂર્ણ વસ્તુ સ્વભાવથી અતિરિક્તા-ભિન્ના નથી.

આત્મદેવ પ્રથમ સ્વમાયાવતે જીવભાવ-કર્તા-ભોક્તા-કલ્પે છે. સર્વ કલ્પનાનું મૂલ જીવકલ્પના છે. તે જીવકલ્પના શા-નિમિત્તા છે તે વદે છે:—

“અનિશ્ચિના યથા રજ્જુરન્ધકારે વિકલ્પિતા ।
સર્પધારાદિભિર્ભાવૈસ્તદ્વદાત્મા વિકલ્પિનઃ ॥”

વૈતથ્યપ્રસ્રણ ૧૭.

લોકમાં મંદ અન્ધકાર વિષે સ્વ-રૂપેકરી અનિશ્ચિતા રજ્જુ, પૂર્વસ્વરૂપના અનિશ્ચિત નિમિત્તેકરી, સર્પ, ઉદકધારા, યા

દણ્ડ એમ અનેકધા વિકલ્પિતા થાય છે. જો પૂર્વે જ રજ્જુ-સ્વરૂપેકરી નિશ્ચિતા હોત તો, સર્પાદિ વિકલ્પ થાત નહિ. જેમ સ્વહસ્તનાં અંગુલી આદિ (પ્રથમથી નિશ્ચિત હોવાથી સર્પાદિના વિકલ્પનો સંભવ સતે તે સંબંધમાં થતો નથી) એ દૃષ્ટાન્ત છે.

તે પ્રમાણે હેતુફલાદિ (જે કર્તૃત્વ, મોકૃત્વ, રાગદ્વેષાદિ) સંસારધર્મરૂપ અનર્થથી વિલક્ષણતારૂપે-નામ સ્વવિશુદ્ધવિજ્ઞાતિ માત્ર સત્તા અદ્વયરૂપે, -અનિશ્ચિતત્ત્વ(નિમિત્ત)થી આત્મા, જીવપ્રાણાદિ અનન્ત ભાવ ભેદો એ કરી વિકલ્પિત થાય છે. એ સર્વે ઉપનિષદોનો સિદ્ધાન્ત છે.

“નિશ્ચિતાયાં યથા રજ્જ્વાં વિકલ્પો વિનિવર્તતે ।

રજ્જુરેવેતિ ચાદ્વૈતં તદ્વદાત્મવિનિશ્ચયઃ ॥ ૧૮ ॥”

વૈતથ્યપ્રકરણ.

જેમ રજ્જુ નિશ્ચિતા થયે (સર્પ, ઉદકધારા, દણ્ડાદિ) વિકલ્પો નિવર્તે છે, અને રજ્જુ જ છે એમ અદ્વૈત (નિશ્ચિત થાય છે), તેમ ‘ નેતિ નેતિ ’ એમ સર્વસંસારધર્મશૂન્ય પ્રતિ-પાદક શાસ્ત્રેકરી જનિત વિજ્ઞાનરૂપ સૂર્યના આલોકકૃત) પ્રકાશ-કૃત) આત્માનો નિશ્ચય છે-‘આત્મા જ આ સર્વ છે.’..... અમર, અમૃત, અમય, એક જ, અદ્વય છે.’

પ્રાણાદિલક્ષણ સંચયવહાર, રજ્જુસર્પવત્, આત્મામાં ફલિપિત છે. રજ્જુસર્પાદિલક્ષણા મનોવિકલ્પનાનાં પ્રલય ઘા ઉત્પત્તિ રજ્જુમાં થતાં નથી; અને રજ્જુસર્પનાં ઉત્પત્તિ ઘા પ્રલય પ્રલપ્તિ પળ થતાં નથી, અને (વાશુરજ્જુ અને અન્તર મન એ) ઉભયમાં પણ થતાં નથી. યથી દ્વૈત મનોવિકલ્પના માત્ર જ છે.

જેમ મહાકાશથી ઘટાકાશોની ઉત્પત્તિ છે તેમ પરમા-

त्मार्या ज, रज्जुसर्पवत्, विकल्पित पृथिवीआदि भूतसंघा-
तनी तथा आध्यात्मिक कार्यकारणलक्षण जीवोनी उत्पत्ति छे.

जेम घटादिनी उत्पत्तिपकरी घटाकाशादिनी उत्पत्ति छे,
अने घटादिनो प्रलय थये घटाकाशादिनो प्रलय छे; तेम
देहादि संघातनी उत्पत्तिपकरी जीवनी उत्पत्ति छे, अने
देहादि संघातनो प्रलय थये जीवोनी, ए आत्मामां ज, प्रलय
छे. स्वतः (जीवना उपाधि प्रलय) नथी. (अर्थात् जीवोनी
उत्पत्ति तथा प्रलय औपाधिक छे, स्वाभाविक नथी.)

जेम आकाशने, अविद्याए अध्यारोपित, रजोधूममलत्वादि
दोषवत्त्व छे; तेम आत्माने, अविद्याध्यारोपित बुद्धिआदि उपा-
धिकृत, सुखदुःखादि दोषवत्त्व अने ध्यावहारिक बंध-
मोक्षत्व छे.

एक ज आकाशमां घट, करक, अपवरकादि आकाशोनां
अल्पत्व, महत्वादि रूपो भेद पामे छे, अने तेओनां कार्य,-
जलहरणादि अने नाम-घटाकाश, करकाकाश-पण भिन्न छे,
ते रूप कृत छे...ते रूपादिभेदकृत सर्वव्यवहार छे, परमार्थथी
नथी. परमार्थथी तो आकाशनो भेद ज नथी; अने परो-
पाधिकृत द्वार विना आकाशभेदनिमित्त व्यवहार छे नही;
तेम आत्मामां देहोपाधि जीवभेदकृत जन्ममरणादि व्यवहार
छे. परमार्थथी नथी.

एखुं परमार्थतत्व छे. परंतु परमार्थज्ञान दुर्लभ होवाथी
ते लोकोए गृहातुं नथी. कारण गमे ते कोइ द्वय वस्तुना
धर्मना मिथ्या ग्रहणना आवेशेकरी (आत्मतत्त्वस्वरूपजुं)
सुख अनायासे आच्छादाय छे, अने दुःख प्रकट थाय छे.
आत्मा, उपनिषद्-आचार्योपकरी बहुशः उपदेशाय छे तो
पण जणावाने शक्य नथी. द्वैतविषयथी निवृत्त अने विप-

યાન્તરમાં અપ્રવૃત્ત (પરમાર્થદર્શી કોઈ વિરલ જ આત્મસ્વ-રૂપને જાણે છે) તેવા પરમાર્થદર્શીની સ્થિતિ અદ્વય વિજ્ઞા-નૈકરસઘનલક્ષણા બ્રહ્મસ્વરૂપા થાય છે.

ए (परमार्थ) आत्मतत्त्वनी प्रतिपत्तिना उपायभूत आगम-प्रधान (माण्डूक्य उपनिषद्નું) પ્રથમ પ્રકરણ છે. અને તેમાં ઐકારનો નિર્ણય કન્યો છે.

રજ્જુઆદિ-સર્પાદિવિકલ્પના આસ્પદ (અધિષ્ઠાન) સમ-જેમ પરમાર્થ સત્, અદ્વય આત્મા પ્રાણાદિ (સંસાર) વિક-લ્પનું આસ્પદ છે; તેમ પ્રાણાદિ આત્મવિકલ્પના વિષય સર્વ આત્મપ્રપંચ પળ ઐકાર જ છે; અને તે (ઐકાર) આત્મ-સ્વરૂપ જ છે. કારણ કે ઐકારને આત્માનું અભિધાયકત્વ (વાચકત્વ) છે.

(મૂલ ઉપનિષદાર્થ.) “ૐ एम ए अक्षर आ सर्व (અર્થજાત) છે. તેનું (પરાપર બ્રહ્મસ્વરૂપ ઐકારનું) ઉપા-ર્યાનં (પ્રસ્તુત વેદિતવ્ય છે.) ભૂતભવત્ભવિષ્યત્ (જે કાલત્રયપરિણેય) ए सर्व ૐકાર જ છે અને જે અન્યત્ ત્રિકાલાતીત (કાર્યાધિગમ્ય કાલેકરી અપરિણેય અવ્યા-કૃતાદિ) તે અપિ ઐકાર જ છે. ૧

(શંકરભાષ્યમાંથી.) અભિધાન અને અભિધેયં एઓનું એકત્વ છે. પણ ઉપરનો નિર્દેશ અભિધાનના પ્રાધાન્યેકરી કન્યો છે. અવે અભિધાન-અભિધેયની એકત્વપ્રતીતિઅર્થ પુનઃ અભિધેયના પ્રાધાન્યેકરી નિર્દેશ છે. કારણ તેમ ન થાય તો અભિધાનને તંત્ર અભિધેયની પ્રતિપત્તિ (ગણાઈ) અભિધેયનું અભિધાનત્વ ગૌણ છે एમ આશંકા થાય. एમ

૧. બ્રહ્મપ્રતિપત્તિના ઉપાયરૂપ સમીપ વિસ્પષ્ટ કથન. ૨. વાચક-વાચ્ય, નામ-નામી. ૩. ઉપદેશ.

अभिधानअभिधेयनी एकत्वप्रतिपत्तिनुं प्रयोजन छे. (अभिधानअभिधेय ए वेने) एक ज प्रयत्नेकरी युगपत् (एक ज काले) प्रविलाप करतां तेधी विलक्षण ब्रह्मने (विद्वान्) पामे छे.

(मूल उपनिषदार्थ.) 'सर्व (जे 'अँकार मात्र छे' एम कथ्युं ते) ए ब्रह्म ज छे. (ए पण परोक्ष ज कथ्युं गणाय तेधी प्रत्यक्ष विशेषेकरी निर्देशे छे के:-प्रत्यक्) 'अद्यमात्मा ब्रह्म' आ आत्मा ब्रह्म छे. ते आ आत्मा चतुष्पाद छे. २ (ते चार पादने बदे छे.) (१) जागरितस्थान बदिःप्रश्न सप्ताङ्ग (१२) एकोनविंशतिमुख स्थूलभुक् वैश्वानर ए प्रथम पाद. ३. (२) स्वप्नस्थान अन्तःप्रश्न सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुख प्रविविक्तभुक् तैजस ए द्वितीय पाद. ४ (३) ज्यां सुप्त (जन) कइ काम (विषय) इच्छतो नथी, कइं स्वप्ने देखतो नथी ते सुषुप्त. (एवं सुषुप्तस्थान छे जेनुं ते) सुषुप्तस्थान (सप्रपंच) एकीभूत प्रज्ञानघन ज (मननुं विषयविषयी आकारे स्पन्दन तेना आयासना दुःखना अभावथी) आनन्दमय (जेवी स्थिति जेणे अनुभवाय ते) आनन्दभुक् चेतोमुख प्राज्ञ ए तृतीय पाद. ५

ए (प्राज्ञ ज स्वरूपावस्थ सर्व भेदावस्थ धतां) सर्वेश्वर, ए सर्वज्ञ, ए अन्तर्यामी, ए सर्वनी योनि, अने (ए ज) भूतोनी प्रभव अप्यय (उत्पत्तिलय). ६

(शंकरभाष्यमांथी.) आत्माना परमार्थ अपरमार्थरूप चतुष्पाद छे. तेमां अपरमार्थरूप उक्त पादत्रय, रज्जुसर्पादिसम, अविद्यारूत छे. अवे रज्जुस्थानीय परमार्थरूपने,

१. ए महावाक्य छे. २. शब्दादि स्थूल विषयोने भोगवनार. ३. (विषयसंस्पर्शान्त्या) वासनामात्ररूपा प्रभावते विधिक भोग भोगवनार.

સર્વાદિસ્થાનીય ઉક્તસ્થાનત્રયના નિરાકરણવતે, શ્રુતિ વદે છે. (મૂલ ઉપનિષદાર્થ.) (ક્રમપાત્ર ચતુર્થપાદ જે તુરીય તે) 'અન્ત'પ્રશ્ન નથી, વહિઃપ્રશ્ન નથી, ઉભયતઃપ્રશ્ન નથી, પ્રજ્ઞાન ઘન નથી, પ્રજ્ઞ નથી, અપ્રજ્ઞ નથી; (પથી તેને) અદૃષ્ટ અવ્યવહાર્ય, અપ્રાહ્ય, અલક્ષણ, અચિન્ત્ય, અવ્યપદેદ્ય, એકાત્મપ્રત્યયસાર પ્રપંચોપશમ શાન્ત, શિવ, અદ્વૈત, ચતુર્થ (તુરીય) માને છે. તે આત્મા તે વિજ્ઞેય છે.' ૭

(શંકરભાષ્યમાંથી.) પ્રતીયમાન સર્પ મૂછિદ્ર દણ્ડાદિ-વ્યતિરિક્તા જેમ રજ્જુ છે તેમ પ્રતીયમાનપાદત્રય-વિશ્વતૈજસ-પ્રાજ્ઞ-રૂપથી વિલક્ષણ તુરીય છે તે તુરીય આત્મા વિજ્ઞેય છે.

“આદાવન્તે ચ યન્નાસ્તિ વર્તમાનેઽપિ તત્તથા ।

વિતથૈઃ સદૃશાઃ સન્તોઽવિતથા ઇવ લક્ષિતાઃ ॥ ૬ ॥”

માણ્ડૂક્ય-વૈતથ્યપ્રકરણ.

જે મૃગતૃષ્ણિકાદિ વસ્તુ, આદિમાં અને અન્તમાં હોતું નથી, તે મધ્યમાં પણ નથી, પણં લોકમાં નિશ્ચિત છે. તેમ આ જગત્ના દૃશ્ય (ભાવના-પદાર્થના) ભેદો તેઓનો આદિમાં અને અન્તમાં અભાય હોવાથી, અને વિતથ જ મૃગતૃષ્ણિકા-દિઓ સદૃ સદૃશ હોવાથી, તેઓ વિતથ (અસત્ય જ છે) તથાપિ અનાત્મવિદ્ મૂઠોપકરી અવિતથ (સત્ય) જેવા લક્ષિત છે.

દ્વૈત મિથ્યા છે, પરમાર્થથી આત્મા જ એક છે. એ અર્થના ઉપસંહારમાં યોગીશ્વર ગોંડપાદ વૈતથ્યપ્રકરણ વિષયે પદે છે કે:—

(આ લૌકિક વૈદિક સર્વ વ્યવહાર અધિષ્ઠા વિષય જ છે એમ નિષ્ણન્ન થાય છે તો—)

“ન નિરોધો ન ચોત્પત્તિર્ન વદ્ધો ન ચ સાધકઃ ।
ન મુમુક્ષુર્ન વૈ મુક્ત ઇત્યેષા પરમાર્થતા ॥ ૩૨ ॥”

‘નિરોધ’ નામ પ્રચય નથી, ‘ઉત્પત્તિ’ નામ જનન નથી, ‘વદ્ધ’ નામ સંસારી જીવ નથી, ‘સાધક’ નામ મોક્ષના સાધનશાસ્ત્ર નથી, ‘મુમુક્ષુ’ નામ મોચનાર્થી નથી, ‘મુક્ત’ નામ વિમુક્ત છે વંધ જેનો ઇવો કદં નથી, ઇમ ઉત્પત્તિ અને પ્રલય ઇ વૈનો અભાવ છે. ઇટ્લે વદ્ધાદિ છે જ નહિ, ઇમ ઇ પરમાર્થતા છે.

મનોવિકલ્પના માત્ર જ ઉત્પત્તિપ્રલય છે. વિવલ્પનાનો ક્ષય થયે અવિકલ્પિતના સત્ત્વની ઉત્પત્તિ (પ્રાપ્તિ) છે.

રજ્જુમાં સર્પાંદિવત્, આત્મામાં અવિદ્યાઇકરી દ્વૈતનું અધ્યસ્તત્વ છે. ઇથી હુ સુણી, હુ ઇણી, મૂઢ, જાત, મૃત, કર્તા, ફલી, સંયુક્ત, વિયુક્ત, ક્ષીણ, વૃદ્ધ, હુ હું, મારાં ઇણો છે, ઇ આદિઓ સર્વે આત્મામાં અધ્યારોપાય છે. જેમ સર્પ-ધારાદિ ભેદોમાં રજ્જુ અનુગત છે, તેમ પૂર્વોક્ત ઇ સર્વમાં આત્મા અનુગત છે. ઇથી અવિદ્યાઇ અધ્યારોપિત સુખિત્વાદિ વિશેષ પ્રતિવંધથી આત્માનું સ્વરૂપેકરી અનવસ્થાન છે. (નેતિ નેતિ ઇત્યાદિ ઘાત્તયોઇકરી વેદાન્તશાસ્ત્ર, તે અવિદ્યાઇત પ્રતિવંધનુ, નિવર્તક છે. તે પ્રતિવંધ દૂર થયે સ્વરૂપાવસ્થાન થાય છે અને તે) સ્વરૂપેકરી અવસ્થાન જ શ્રેય છે.નિર્વિશેષ આત્મામાં સુખિત્વાદિ વિશેષો કલ્પિત છે ઇ આત્મજ્ઞાને નિવર્તે છે

જેમ રજ્જુમાં ‘આ સર્પ, આ ધારા, આ દંડ’ ઇમ રજ્જુ દ્રવ્ય જ કલ્પાય છે, તેમ પરમાર્થસત્ અદ્વય સર્વ વિકલ્પોના આસ્પદમૂત આત્મા જ, રજ્જુવત્, અનન્ત, અસત્ પ્રાણાદિ-સંસાર રૂપ વિકલ્પો કલ્પાય છે.

जेम कल्पित सर्प प्रकाशवते रज्जुरूपेकरी निरूप्यमाण थाय छे त्यारे कल्पित सर्प रहेतो नथी, तेम आ जगत् (तत्त्व-ज्ञानवते) परमार्थस्वरूपेकरी निरूप्यमाण थये, रहेतुं नथी.

सर्व अनर्थना प्रशमनरूप अद्वय ज शिव अने अभय छे. एथी अद्वैतमां ज स्मृति योजवी.

“तत्त्वमाध्यात्मिकं दृष्ट्वा तत्त्वं दृष्ट्वा तुं बाह्यतः ।
तत्त्वीभूतस्तदारामस्तत्त्वादप्रच्युतो भवेत् ॥ ३८ ॥”

माण्डूक्योपनिषद्—वैतथ्यप्रकरण.

विद्वान् आम वते छे:-पृथ्वीआदि बाह्यतत्त्व अने देहादि-लक्षण आध्यात्मिकतत्त्व, रज्जुसर्पवत् अने स्वप्नमायादिवत्, अमत् छे; अने बाह्याभ्यंतर आकाशवत् सर्वगत.....आत्मा ज सत्य छे, अने ‘ते आत्मा तुं छुं’ एम तत्त्वने देखीने (ते तत्त्वदर्शी) तत्त्वीभूत थाय, अने तदाराम थाय-बाह्यरमण न थाय, अने तत्त्वथी अप्रच्युत थाय.

जेम कोई अतत्त्वदर्शी चित्तने ज आत्मत्वरूपे जाणी चित्तना चलनथी आत्माने अनुचलित मानतो, ‘अहुणा हुं आत्मतत्त्वथी प्रच्युत छुं’ एम तत्त्वथी चलित देहादिभूत आत्माने कदाचित् माने छे. तेनुं मन समाहित थये प्रसन्न आत्माने ‘अहुणा हुं तत्त्वीभूत छुं’ एम कदाचित् तत्त्वभूत माने छे.

तेम आत्मवित् थता छे नहि. कारण के आत्मानुं एकरूपत्व छे, अने स्वरूपप्रच्यवननो असंभघ छे. ‘हुं सदा ज ब्रह्म छुं’ एम तत्त्वथी अप्रच्युत थाय; आत्मतत्त्वदर्शन सदा अप्रच्युत छे जेने एवो थाय. (३८)

(अपूर्ण)

પ્રસ્તાવના.

(વિચારસાગર-પ્રથમાવૃત્તિની)

“તાવદ્ગર્જન્નિ શાસ્ત્રાણિ જમ્બુકા વિપિને યથા ।
ન ગર્જતિ મહાશક્તિર્યાવદ્દેદાન્તકેસરી ॥”

સર્વાં પ્રિયાનું શિક્ષર તત્ત્વજ્ઞાન છે. અનેક શાસ્ત્રોથી અને કલાઓથી મનુષ્યનું મન અધિષ્ટિત થયે તે ઉત્તમોત્તમ તત્ત્વજ્ઞાનને પ્રહ્ણ કરવા પાત્ર થાય છે; તેથી શાસ્ત્રો અને કલાઓ એ સાધન છે અને તત્ત્વજ્ઞાન એ સાધ્ય છે, અને જ્ઞાન જ સુખદાતૃ છે.

આપણા ભરતસંઘનું એ ઉત્તમ તત્ત્વજ્ઞાન,-આ જગત્ના અન્ય યુરોપાદિસંઘો, જે આજ કેટલાંક શાસ્ત્રો અને કલાઓમાં આપણાથી અગ્રેસર ગણાય છે અને આપણા ઉપર સંસારની સમૃદ્ધિમાં શ્રેષ્ઠતા ભોગવે છે, તે જ્યારે છેક અજ્ઞાનમાં હતા ત્યારથી તે આજ સુધી-પશ્ચાત્ પહોંચી નથી. આપણા લોકના તત્ત્વજ્ઞાનસંઘના ઉચ્ચલ, ઉત્તમ, અને અમર યશ આપણા મહાજ્ઞાની પૂર્વજોએ આ તો શિક્ષર ઉપર લાવી સુસ્થ સ્થાપ્યા છે કે તેની તુલના,-આજ દેશજાલ અને અધિકારિણી પ્રજા વિષે વહુ પ્રકારે મેદ્ થતાં, અને સંસારવ્યવહારસંબંધિની પ્રિયાવૃદ્ધિનાં અનેક અનાધારણ અદ્ભુત સાધનો વધતાં પળ,-અજી કોઈ દેશના લોક કરી શકતા

૧ માનાર્થ-વનમા જ્ઞાસુધી સર્વશક્તિમાન વનરાજ સિંહ ગર્જે નહિ ત્યાંસુધી શિયાલો ગર્જે છે. તેમ માનવીના અત્ કરણરૂપ અભ્યંતરમા જ્ઞાસુધી સર્વશક્તિમતી પરમાર્થતત્ત્વોપદેશપરા પરવિદ્યાસવધિ વેદાન્તશાસ્ત્રરૂપ સર્વશાસ્ત્ર-રાજ સિંહ ગર્જે નહિ ત્યાંસુધી અપશક્તિમતી અપરવિદ્યાસવધિ વર્કવિતર્કમરિત વ્યાવહારિક અપ્રતિષ્ઠિત શાસ્ત્રો ગર્જે છે.

નથી, એ દેશીય વિદેશીય વિદ્વાનોનું સર્વત્ર મત છે. યુરોપના કેટલાક અગ્રેસર ગુણજ્ઞ પण्डितો ભરતखंडना તત્ત્વજ્ઞાનીઓના અલૌકિક ઉત્તમોત્તમ વિચાર આગલ અજી માનપૂર્વક નમે છે. એ સત્ય કહું થોડું અભિમાનપ્રદ અને સંતોષકારક નથી.

પરંતુ આપણા અપ્રતિમ પૂર્વજોના અમર યશ પીને દષ્ટિ સંતોષ સહિત પાછી વલ્લતાં આપણી અવસ્થા સામું જુવે છે ત્યાં શું પરિણામ થાય છે ? જેના સંમુખ અભિમાન અને સંતોષનાં કારણો ક્ષણવાર હતાં, ત્યાં, અપમાન, મ્હણતા, પતિતતા, અને તજ્જન્ય લેદ સર્વ છાપી વસેલાં દેખાય છે. સમજુઓ જેઓ પરાપર વિચાર કરી શકે છે તેઓ તો મૂર્છિત જ થઈ જાય છે. એ તે કેવી વિપ્રમા અવસ્થા !

* * *

પરંતુ સાક્ષી વિના સિદ્ધ થાય એવા સ્વપ્રકાશી પદાર્થો વહુ ઘાર છવાઈ રહેતા નથી. આપણે વિમુક્ત થયે અંધવત્ થયા. પણ દેખતા લોકોએ તો દૂરથી પણ પ્રકાશ વરત્યો અને, દૂરદર્શક યંત્રવહે જોતા ન હોય તેમ, આપણા પૂર્વજોનાં મહિમા જોયો અને તેના ગુણ ગાઈ, આપણ પતિત પુત્રોને સચેત કન્યા. કાં તો આમ થયું અથવા તો સૃષ્ટિના આઘાત-પ્રત્યાઘાતનો નિયમ લાગુ પડ્યો. ગમે તેમ થયું પણ આપણા દેશનો ઉત્થાનકાલ સમીપ આવ્યો છે એમ સ્પષ્ટ જણાય છે, અને યથેચ્છ ઉન્નતિ થવી એ અવે આપણા અને આપણી પ્રજાના હસ્તમાં છે એમ પ્રત્યક્ષ છે. વિદ્યા, વિચાર, અને વિવેકમાં વધીશું તેમ તેમ સર્વપ્રકારની ઉન્નતિમાં-માનસિકમાં, સાંસારિકમાં, રાજકીયમાં, અને ધાર્મિકમાં-વધીશું એ જ સાધનથી આપણો દેશ એકવાર સર્વોપરિ હતો અને એ જ

૧. ગતિનો એક નિયમ છે કે આઘાત અને પ્રત્યાઘાત સમાન અને સામ-જામે હોય છે. જેમ પડ્યુ તેમ પાડ્યુ ઉંચુ ઉછઠ્યું.

સાવનર્યા અને પાઠો નગા દેશકાલને અનુસરી તેજા પ્રકાર-
નો વર્ધમાના ઉન્નતિ તે પામશે. પણ એ મર્વ આપણા યોગ્ય
પૂર્વજોના આપણે સુપાય પુત્ર નિવડીશુ તો જ છે.

આપણા મહાત્મા પૂર્વજોએ અનેક વિષયો ઉપર વિચાર
કરી તેઓનું નિરૂપણ કન્યું છે. અનેક માર્ગો અને અનેક
માત્રનો હોય છે પણ સાધ્ય કરવાનાં વસ્તુઓ ગણિત જ
હોય છે. માધ્યનું પણ સાધ્ય તત્ત્વગ્રાન છે. દેશકાલ
ફલ્ગ્વેર્યા માર્ગ અને સાધનમાં પણ ભેદ થઈ સુધારોવધારો
થયો જોઈયે, તેમ ઘાઓ. આપણાં પૂર્વજોએ જે સાધનો અને
જે માર્ગોનો ઉપયોગ કરેલો, તેમાં, મધ્યકાલમાં અનેક વિપ-
ત્તિઓને લીધે આ ગતીમતિ પૃથ્વી ઉપર આપણ સ્થિર
રહ્યાર્યા પદ્યાત્-ગામી થયા તેથી, પરદેશીશ્લોકોએ સુધારો
વધારો ઘણો કન્યો છે. તે સાધનોને સમજી તેમનાં સારાં
માત્રનોનો ઉપયોગ કરવો એ આવશ્યક છે. પરતુ સાધ્ય જે
શિસ્તર અધ્યાત્મગ્રાન ક્રિયા તત્ત્વગ્રાન છે, તે સત્ય હોવાથી
સદાકાલ અવિચારિ અને સર્વોપરિ રહુ છે, અને રહેશે.

આપણા દેશમાં સર્વોપરિ જ્ઞાન સંપાદન કરવા વહુ માર્ગો
હતા એમ જણાય છે. પણ મુલ્ય પદ્શાસ્ત્રના અંતર્માં સર્વે
આત્મી જાય છે. તે પદ્શાસ્ત્રના પણ, સંપ્રેષ કરતાં, મુલ્ય ઘણ
ઘર્મ થાય છે-૧. સાંખ્ય-યોગ, ૨. ન્યાય-ઘૈશેષિક, ૩
પૂર્વ ઉત્તર-મીમાંસા. બ્રહ્મા, વિષ્ણુ, શિવ, શક્તિ, આદિનાં
સહસ્ત્રાગ્રધિ નામરૂપનો અનેકા વત્પનાઆ વિચિત્ર દલિ અર્થ
મૂઠ્ઠા થયેલ પ્રતીતિ ઘાય છે પછી તેમાંથી વિચિત્ર પયો ચાલે
છે, તે તો મતભેદ થવાથી અને વહુ કરીને અજ્ઞાન ઘધ્યાથી
લોકોએ ઘાડા વાંધો તેમાં વકરતાં એકઠા કન્યા જેતુ થયુ છે.
તેનો સહ્યા ઘધી ગઈ અને મૂલ્યાર્તા લોકો વિસરી ગયા

છે, એ રૂઠું છે. પણ વિદ્યાનો પ્રકાશ થયેથી એ અંધકારનો અનાયાસે નાશ થવાનો છે, અને ભરતખંડી આર્ય લોકનો વેદોક્ત એક જ વર્ણાશ્રમધર્મ છે, તે દીપી નીકળવાનો છે. તેનો શિરોભાગ ઉપનિષદો છે, તેમાં જે પુરુષાર્થ કહ્યો છે તે સર્વોપરી ઉચ્ચ હોવાથી તેને પામવા; મહાશય પુરુષોએ વિવિધ માર્ગો શોધ્યા છે. આજસુધીમાં અધિક ભાગના પण्डित મહાત્માઓએ સ્વીકાર કન્યા ઉપરથી તથા નિર્ભયપણે પ્રસિદ્ધ થઈ દેશપરદેશના પण्डितોની કપોટીએ ચડવેથી પણ જે સુસપ્રદ જણાયો છે એ ઉપરથી, અનુમાન કરી જાંતા ઉત્તર-મીમાંસાનો માર્ગ, પરમધામ, પરમપદ, અથવા ઉત્તમ સ્થાન પર્યન્તનો જણાય છે.

મૂલ્ય આપ્યા વિના પદાર્થ મળતો નથી. જેમ પદાર્થ ઉચ્ચ અને ગુણપ્રદ હોય તેમ મૂલ્ય અધિક. પ્રાણી માત્ર જન્મથી તે મરણપર્યન્ત જે જે સહે છે, કરે છે, અને ઇચ્છે છે, અને સંશ્લેષમાં જેની પ્રાપ્તિસારૂ પ્રાણી પોતાનું જીવન, દુઃસથી વિંધાઈ ગયે સતે પણ, ધારણ કરી રહે છે, તે પદાર્થ સુગ્ર છે, એમ સર્વ વિચારક તત્કાલ કહી શકશે. સુસ જીવનું પણ જીવન છે. સુખની આશાનો પરિપૂર્ણ નાશ થયે, મનુષ્યને, જીવબુંદો જોડે જોડે લાગે છે, અને દેહનો ત્યાગ કરે છે.

પણ જે સુખ તેને સંપાદન કરવા પ્રાણીમાત્ર સર્વ પ્રકારે શ્રમ કરે છે. પણ એ વિશ્વાકર્ષક વસ્તુ એવું તો ઉચ્ચ છે કે તેની જાંવી પણ થોડાને જ થાય છે. માત્ર તેની છાયાના આ જગતનાં મનુષ્ય પ્રાણી ઘાચકા ભરે છે, પણ પાછા દાય ચાલી ને ચાલી દેખે છે. કોઈ ચિરલ ભાગ્યશાલી પ્રિણાસુ મનુષ્યો મહાપ્રયત્નથી પની પ્રાપ્તિને યોગ્ય થાય છે. તેનાં મુલ્ય સાધન, વિદ્યા, વિચાર, વિષેક, વિરાગ, પદસંપત્તિ

અને મુમુક્ષુતા છે. વિદ્યા આવ્યેથી જ આપણું ધંધલ્લ જાય છે. પટલે વિચાર કરી સન્માર્ગ પ્રતિ તલ્લવાનું વની શકે છે, માર્ગના મુલ્લ આગલ્લ આવતાં જ વિવેકાદિ ચાર સાધનો સંપાદિત કરવાં અવલ્લયક છે. કારણ સુલ્લને કિંવા મુલ્લિને માર્ગે જવાની યોગ્યતા ઇ સાધનના પ્રતાપથી જ છે. ઇ પ્રકારે પાત્ર થઈ જે મુમુક્ષુ ઉત્તરમીમાંસાને માર્ગે ચલ્લે છે, અને હસ્તપાદરૂપ સાધનચતુષ્લ્લ સહિત થઈ આત્મ્યંતિક વ્રહ્મસુલ્લ પામવા જાય છે, તેને પરાવિદ્યા દ્વારા, ઇ શાસ્ત્રના આચાર્ય વેદવ્યાસ શંકરાદિકે જે પરમાર્થની કિંવા ઉત્તમ ફલ-ની-નિ-શ્ચેયસની-પ્રાપ્તિ કહી છે તે અલૌકિકા અને અનિરૂપ-નીયા છે. ઇ પરાવિદ્યા, સુલ્લેચ્છકને સુલ્લસ્વરૂપ સિદ્ધ કરી આપે છે. તેનો આભાસ સંશ્લેષથી આ છે:-યથાર્થ જ્ઞાન, દુઃલ્લની આત્મ્યંતિકી નિવૃત્તિ, અને કેવલ સુલ્લની અથા પરમાનંદની પ્રાપ્તિ.

પરંતુ ઇ ઉત્તમોત્તમ સુલ્લની પ્રાપ્તિને માર્ગે જવાને પ્રથમ યોગ્ય થવું જ મહાકઠિન છે, તો તે ઉપર ચલ્લવુ તો તેથી પળ કઠિનતર હોય જ. ઇ મહત્ અમૂલ્લ્ય વસ્તુ સંપાદિત કરવા અથાક શ્રમ, સહનતા, અને વિવયસુલ્લના લલિદાનરૂપિ મૂલ્લ આપવું પલ્લે છે.

ઇ માર્ગે નથી લલ્લયા ઇવા વહુ પ્રાણીઓનો કેવી અવસ્થા છે? તેઓ જન્મે છે ત્યારથી સુલ્લની ઇલ્લા તો કરે છે, કારણ કે તે પ્રકૃતિજનિતા છે. પ્રથમ લાલ્લયાવસ્થામાં લ્લાલાપીલાના અલ્લે, સ્લ્લલ્લલ્લા, પ્લ્લલ્લલ્લલ્લા, સ્લ્લુલ્લ, જાણી તે પ્રતિ પ્રાણી દ્લેલ્લે છે, પળ તેમાંથી સુલ્લ મલ્લતુ નથી તેલ્લલામાં યુલાવસ્થા આવે છે, તે અવસ્થામાં સ્લ્લીધનાદિકમાં સુલ્લ જાણી તે પ્રતિ મનુષ્યો ધાય છે, અને તેના ભ્રમળમાં ઇવા તો ભ્રમી જાય છે કે તેનો મોહ

તેઓને ચઢી જઈ, તેથી મરણપર્યન્ત દીન અને દુઃખી રહી નાશ પામે છે. સંસારમાં સદા રચીપચી રહેવું. ૫ અજ્ઞાનનું વંધન ન છૂટ્યાનું ચિહ્ન, અને કેવલ દુઃખનું મૂલ છે.

જેઓને સત્સમાગમ થઈ વિદ્યાનો લાભ થાય છે, તેઓને દુઃખ ઓછું થવા માંહે છે. પ્રથમ સકામ અને પછી નિષ્કામ સુકર્મોં કરે છે, તેમ તેમ તેઓ સુખપાત્ર થવા માંહે છે. પછી પુરુષકાર પ્રમાણે આ જન્મમાં કે જન્માન્તરે તેઓ કૃતકૃત્ય થાય છે. આ યોગ્યતાજનક સાધક દશમાં વહુ વિદ્યાઓ જાણવાની હોય છે અને વહુ કર્મોં કરવાનાં હોય છે. જેમ મોજનની સિદ્ધિસાદ અન્ન, જલ, અગ્નિ આદિ અનેક સાહિત્યોની અપેક્ષા છે, તેમ તત્ત્વજ્ઞાનથી સુખ મેલવતાં પૂર્વ વહુ સાહિત્યોની અપેક્ષા છે. ઈશ્વર વ્રહ્માણ્ડ અને જીવ, સંવંધી વિદ્યાઓ તથા શુદ્ધ-સ્થિર-મન અને સત્કર્માદિ સાહિત્યોની આવશ્યકતા છે. વિદ્યાથી અને સત્કર્મોંથી અંતઃકરણ નિર્મલ થાય છે ત્યારે જ તે ઉત્તમ જ્ઞાનને ગ્રહણ કરવા પાત્ર થાય છે. મોક્ષસુખની ઇચ્છાવાન્ને શા શા વિધિ અને નિષેધ છે, અને ઉત્તમ, મધ્યમ, કનિષ્ઠ અધિકારી પૂર્વસંસ્કારપ્રમાણે કેવે કેવે પ્રકારે ચિરકાલે યા અલ્પતર કાલે મુક્તિ પામે છે; તેઓને કેથી શંકાઓના અંતરાય આવે છે; તે કેવાં સમાધાનેકરી નિવારાય છે; યથાર્થ આત્મજ્ઞાન અને તત્ત્વજ્ઞાન થયે તેઓના કેવા સિદ્ધાન્ત થાય છે; અને સર્વ પ્રકારે કેવા મુક્તિ થાય છે; ૫ આદિ સર્વ વિચારસાગરમાં વિસ્તરથી આવશે, યદલે તે વિષયે અન્ન વિસ્તરની અપેક્ષા નથી.

ઉત્તરમીમાંસાશાસ્ત્ર, જે વેદાન્ત નામ જ્ઞાનનું શિષ્ટર કહેવાય છે:—‘વેદ’ નામ જ્ઞાન અને ‘અન્ત’ નામ શિરોભાગ અથવા અન્તભાગ છે, તેવિષે આ વેદની અજ્ઞાનદશામાં તે

शास्त्रना यथार्थ ज्ञानयी अज्ञानी छे तेचा लोकोमां केटलाक कुतकों चाले छे.

महान् उत्तम विचारो मंदबुद्धि समजी शकती नयी, तेचें समये पोतानी शक्ति मंदा छे एम मान्या करतां, ते विचारोनी उत्तमतामां दोपारोपण करयुं तेने सुलभ लागे छे. एक सुगंधी पुष्पमांथी एकार्धपत्रिकानो पण कटको तोंडेलो चोंळेलो लई पळी तेमां कई सुवास नयी एम कहे अने बीजाने मनाववा चाद करे, तेम अखिल ग्रंथमांथी एक वे त्रुटितमर्दित वाक्योने लई छिन्न भिन्न करी ते उपर चादविवाद करवानां चाल एक पास बहुजनोने पडी गयो छे: तेथी तेथो सदा दुर्भागी रहें छे. तेम बीजी पास ए सर्वापरी शास्त्रने जाणनार माननार कहेवरावनारा अपात्र, काचा, अने केटलाक तो कुपात्र लोको, पोताना दुष्ट स्वार्थने फावर्ता वाक्योने पकडीने तेनो दुष्टपयोग करी, आप्ता शास्त्रने डहोली नांपी तेना उपर कलंक लावे छे; तेथी जेम माथीना काचा घडामां दुर्गंधी पदार्थ भन्या पळी सर्वनुं जीवन निर्मल जल तेमां भन्येथी, ते अपात्र घडो भागी जाय अने जलने मलिन करी नापी, तेमां बीजा लोकनी अनास्था उत्पन्ना करे, तेम थयुं छे.

* * *

महासिद्धान्तो अने विचारो सामान्या बुद्धिमां विपरीत भासे छे, एटलुं ज नहि पण सारा बुद्धिमानोने पण, तेसंवंधि लक्षपूर्वक यथार्थ ज्ञान मेलवतां सुधी, तेमां विलक्षणता लागे छे. शास्त्र अज्ञातज्ञापक तथा अपूर्वबोधक होय छे. चंद्रमाथी ग्रहो अने तारा विशाल छे, ए चार्ता अभण मनुष्यना मनमां उतरती नयी, पण रगोलवेत्ताओने ए प्रमाणसिद्ध छे.

* * *

केटलाकोनुं एम समजयुं अने कहेयुं छे के,-वेदान्तशास्त्रना

मत अने विचारो प्रमाणे लोको चाले तो आ जगत्नो व्यवहार अटकी पडे, तथा तेमांना विचारो एवा छे के मनुष्य प्राणी ते प्रमाणे वर्त्ती शके ए अशक्य छे, इत्यादि.

खरु छे के वेदान्तना विचारो सर्वोपरी छे, अने ते स्वीकार करनार यथार्थवेदान्ती होय तो ते नीच कर्म करे नहि. परंतु तेनी साथे ए पण खरु छे के, ए दशा सर्वने दुर्लभा छे, कारण उच्चगति करतां नीचगतिनु बल आ जगत्मा अत्यंत छे, तेनो सर्वने अनुभव होवो ज जोइए पण वादसारू कदापि एम मानिये के वेदान्तमार्गे बहु मनुष्यो बळी शके, तो पण तेम थयेथी जगत्ना व्यवहार अटकी पडे एवु अनुमान करवु ते खाट्टु छे जर्मनीमा प्रथम ज्यारे सर्व बालकोने विद्याभ्यास कराववानी, धाराथी अगत्य पाडी, त्यारे बहुजनानु एवु मत हतु के विद्या बध्येथी लाको युद्धना काममा अनुपयोगी थई जशे पण विद्याथी तेआ युद्ध करवा बधारे योग्य थया, ए, तेओ पाछळथी आस्ट्रिया अने फ्रान्स साथे लड्या ते फाले सिद्ध थयु वेदाती विषयेनी शका पण उपरना जेवी छे बीजी कल्पना पण तेवी ज निर्मूला छे

* * *

मनुष्य जन्मे त्यार पछी आछामा जोछा पाचथी ते अगियार वर्ष सुधीमा विद्याभ्यासनो आरम परवा, ते आछामा आछो नयथी ते बधता छग्रीश वर्ष सुधी ब्रह्मचर्य पागी, चालु राखवो ए प्रमाणे विद्याभ्यास परिपूण कया पछी गृहस्थाश्रम करवा. तेमा समार्गे धन, अधिकार, मान, प्रतिष्ठा मेळवी तेआनु सन्ध्यय अने सदुपयोग करवा अने लाय हिताय गृहस्थाश्रम गाळवा, ते छेय पाताना पुत्रने त्या पुत्र

થઈ તે, પોતાનો પુત્ર કુટુંબનો ભાર વહે પગે થાય ત્યાં સુધી ચાલુ રાખવાની છૂટી છે. પછી વાનપ્રસ્થ થયું. (આ અવસ્થાએ પાહોંચતાં ઓછામાં ઓછા આશ્રમે પચાસ અને વધારે ૮૦-૨૦ સુધી વર્ષના વયની ગણના થાય છે.) એ અવસરે વિદ્યા, પ્રયોગ અને અનુભવથી પરિપક્વા થઈ, ફલ આપવા યોગ્ય થાય છે. ત્યારે મનુષ્ય અધિકારી થઈ તત્ત્વજ્ઞાનને પાત્ર થાય છે. ઘીંજા પક્ષે કોઈક ત્રિલ્લ પૂર્વસસ્કારી ઉત્તમ અધિકારી હોય તો તે વહેલા પળ ત્રિજ્ઞાનનું પાત્ર થાય છે, પણ તે ત્રિલ્લ એ પ્રમાણે જગત્ના પ્રાણીઓના અભ્યુદયસારુ પ્રવૃત્તિલક્ષણવાળો, અને નિ શ્રેયસસારુ નિવૃત્તિલક્ષણવાળો, એમ ઉભયલક્ષણવાળો વેદધર્મ છે પ્રવૃત્તિ સ્વાભાવિકી હોવાથી તથા તેનું વર્ણન ઉત્તરતી પક્તિના પ્રથમા સારી રીતિએ કરેલું હોય છે તે મુમુક્ષુએ પ્રથમ જાણેલું હાથુ જ જાણ્યે એમ માની, પ્રવૃત્તિવિષે માત્ર સક્ષેપમા લખી, ઉચ્ચપક્તિના પ્રથોમા અપૂર્વવિચારો ઉપર વધારે વિસ્તર કરવામા આવે છે કારણ જાણેલી સામાન્યતા જાણાવવામા નહિ, પણ ઉત્તમ વિચાર જ જાણાવવામા અપૂર્વતા છે

તત્ત્વજ્ઞાનના પાત્ર થવા વહુવિદ્યાઓ ભળવાની અને અસહ્ય સત્કર્મો કરવાની અપેક્ષા છે કારણ અત કરણની શુદ્ધિ, વિદ્યા અને સત્કર્મ વિના, થતી નથી, પણ વેદાન્તનો સિદ્ધાન્ત છે અત કરણ શુદ્ધ અને નિશ્ચલ થાય છે, ત્યારે જ પરમાનંદની પ્રાપ્તિ, જે વેદાન્તનું ફલ છે, તે થાય છે વેદાન્તમાં કહેલું પરમપુષ્પાર્થ પામ્યા પછી પણ કદ જ કરતું નહિ, એમ નથી, તો તેની પૂર્વે સાધનદ્રશામા તો એમ હોય જ કેમ ? તેમા તો એ પરમ ઉત્તમ જ્ઞાનને પાત્ર થવા, અત કરણની શુદ્ધિસાથે સર્વ પ્રકારે સત્કાય કરવા અવશ્ય આજ્ઞા કરેલી છે

ए विचार पूर्वे थई गयेला महात्माओंनां प्रमाण अने दृष्टान्तथी सिद्ध थाय छे.

श्रीसद्गुणमूर्ति रामचंद्रजीए प्रथम मुमुक्षु थई ज्ञान प्राप्त करी, पछीथी लोकसंग्रह सार गृहस्थाश्रम लई, अनेक पराक्रमो करी, राज्यभार बहो छे. तेम ज जनकविदेहीए पण राज्यभार सारी रीतिए बहो छे. तथा तेओना गुरु वसिष्ठा-दिए पण अनेक सत्कर्म कऱ्यां छे.

वेदान्तप्रस्थानत्रयमांनो ब्रह्मसूत्र नामे ग्रंथ श्री वेदव्यासे रच्यो ए पूर्णज्ञानदशामां रच्यो छे, अने तेओए ज 'महा-भारतादि' विशाल ग्रंथो रच्या छे. तेम ज श्रीशंकराचार्ये उपनिषदादि प्रस्थानत्रयनां भाष्यो अने उपदेशसाहस्री आदि ग्रंथो गुंथ्या, तथा दिग्विजय महाश्रम लई कऱ्यो, ए सर्व, ज्ञान प्रकटित थया पछी लोकसंग्रहसार कऱ्युं छे.

तेम ज वेदान्तप्रस्थानत्रयमांनो श्रीजो ग्रंथ “भगवद्गीता तेमां श्रीकृष्णे अर्जुनने यथार्थ ज्ञान समजाव्या पछी अर्जुने स्वधर्म समजी महाभारतनुं युद्ध कऱ्युं ए एक ज दृष्टान्त निःसंशय निर्विवाद रीतिए सिद्ध करे छे के, वेदान्तज्ञान मनु-ष्यने स्वधर्मनां सत्कार्य करवामां लेशमात्र पण बाधकारक नथी. ते कुकर्मथी खाले छे अने सत्कर्ममां प्रेरी उत्तेजन जापे छे.

निष्काम कर्म करवा वेदान्तनो आशय जणाय छे, अने ते उत्तम छे. कारण तेथी परोपकारनां अधिक कर्म करवा उत्साह थाय छे. जवश मूर्ख अने पंडित सर्वनो, एक क्षण पण, कर्म करवां ए-प्रकृतिज गुण होवाथी, कर्म कऱ्या विना जतो नथी; पण तेमां अंतर ए छे के बहु लोक सक्त थई कर्म करे छे, अने पण्डित वेदान्तीओ अस्तक रही लोकसंग्र-हना उत्तम हेतुथी करे छे.

सर्व समजुओ मान्य करशे के सकाम नाम स्वार्थ अने फलनी आशाए काम करनार करतां, निष्काम नाम स्वधर्म समजी कर्मना फलनी स्पृहा विना जे काम करनार मनुष्य छे ए अधिक जनोनुं कल्याण करी शके छे, एतलुं ज नहि, पण तेवां निष्काम कर्म करनार उत्तम छे. सकाम कर्म करनारनी कामना पूरी थतां अथवा वच्ये कई अंतराय आवी निराश थतां ते कर्म मूझी दे छे. एवी रीतिए काम करनारवी महत् कर्मो थतां नथी. तेवानो म्यार्थथी संकोचायली मर्यादा अति अल्पा होय छे. निष्काम कर्म करनारना कर्मनी सीमा विस्तार-घती अने उन्नता साथे सदाप्रहिणी हांय छे. सकाम कर्म-कर्ता परप्रकाश पदार्थ जेवा अने निष्काम कर्मकर्ता स्वप्रकाश पदार्थ जेवा छे. कामना कोई प्रकारे शिथिला थयेथी सकाम-कर्मकर्ता निर्माल्य थई जाय छे. निष्कामकर्मकर्ता सदा उत्ते-जित रहे छे. ए उपरथी एम सिद्ध थाय छे के, अन्य करतां वेदान्ती सारां कर्म करवा अधिक योग्य छे. कोइएक पक्षीने बंधन बांधुं होय ते थोडाकमां उड़ी तरफडी पैला बंधनने लीधे पाहुं ज्यां हतुं त्यां ने त्यां आवी वेसे छे, तेवो सकाम कर्मकर्ता छे. निष्काम कर्मकर्ता छूटा अने स्वतंत्र उच्चगामी छे.

ईश्वरमां अने सर्व जीवोमां सर्वगत चेतन एक छे, एथी अद्वैतस्थापन थाय छे. अंतःकरण शुद्ध थई ययार्थ ज्ञान थये जीवनी जीवमाय जई सर्वात्मभाव थाय छे, अने बंधना नाशेकरी स्वतंत्र विदेहकेवल थई सच्चिदानन्द ब्रह्ममां एकता पामे छे. ए बातं बहुजनोने बुद्धिमां वेसती नथी. अने तेमां तेओनां दोष पण नथी. ए सर्वोपरी परम रहस्य सिद्धान्त अति सूक्ष्म छे, अने संस्कारीओवी ज समजाय छे. कोई प्रजापीडक निर्दय राजानी रंक दासजेवी प्रजाने,

પ્રજાતંત્ર રાજ્યની પ્રજાની સ્વતંત્રતાવિષે અને સુખવિષે સમજ પડવી કઠિન છે, તેના કરતાં પણ ઉપરનો સિદ્ધાન્ત કઠિન-તમ છે, તે સંસ્કારી મનુષ્યો સંપ્રદાયપૂર્વક સમજવા મહા-પ્રયત્ન કરે છે ત્યારે જ સમજાય છે.

મહાન્ સિદ્ધાન્તો સંપ્રદાયપૂર્વક અનુભવી જ્ઞાનીઓ પાસે શીખવાની અપેક્ષા છે. નહિ તો અર્થના અનર્થ સમજાય અને કુમાર્ગે ચઢી દુઃખી થવાય. આગગાડી અને આગબોટ દૂરદેશ પહોંચાડવાને બહુ ઉપયોગિની છે, પણ તેને યોગ્ય માર્ગે ચલાવવાની કલા જાણનારા નાયક વિના આપણે તેમાં વેશી ગમે એ માર્ગે ચલાવી ઇષ્ટ સ્થળે જ્યાં નીકળિયે તો નાશ પામિયે. પારમાર્થિક શાસ્ત્રો પણ તેના જ્ઞાતાદ્વારા એ અત્યુપયોગી અને પરમપુરુષાર્થ પ્રતિ પહોંચાડે છે. સમુદ્રનું જલ, પીનારને ચાલું લાગે છે, પણ તે વર્ષાદ્વારે આપણને મેઘ આપે છે, ત્યારે મિષ્ટ હોય છે, તેમ વિવેકી જ્ઞાનીદ્વારા આપણાં જ શાસ્ત્રો મિષ્ટ લાગે છે.

સત્ શાસ્ત્ર, ગુરુ, અને શિષ્ય એઓની ત્રિપુટી, પદાર્થ, પ્રકાશ, અને નેત્ર આદિ ઇન્દ્રિયોની ત્રિપુટીને મળતી છે. પદાર્થ ઉપર પ્રકાશ પડે અને આપણે નેત્રે દેખતા હૃદયે તો યથાર્થ જ્ઞાન થાય છે. એ ત્રણમાંથી એકની પણ યામી હોય તો યથાર્થ જ્ઞાન થતું નથી.

નિઃસારસંસારસાગરમાં ગુરુ ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે. એક પથરા જેવા, જે પોતે ઘૂંટે અને પોતાનાં આશ્રય લેનારને ઘૂંટાડે; ઘોંજા પણ જેવા, જે પોતે તરી શકે પણ ઘોંજાને તારી શકે નહિ, ઘોંજા નૌકા જેવા, જે પોતે તરે અને ઘોંજાને પણ તારી શકે. એમ કનિષ્ઠ, મધ્યમ, અને ઉત્તમ ગુરુ હોય છે, તે ઉત્તમ ગુરુદ્વારા જ્ઞાન યથાર્થ મળી શકે છે.

શિષ્ય પણ ઘ્રણ પ્રકારના હોય છે. એક પામર તે ધગધગતા લોઢા જેવા હોય છે; જેના ઉપર ઉપદેશરૂપ જલના છાંટા આવતાં તે ઘઢી જાય છે. વીજા વિપયી તે પણ જેવા હોય છે; જેના ઉપર ઉપદેશરૂપ જલના છાંટા આવતાં તે મોતી જેવા દેખાય છે. શુક્તિમાં (જેમાં મોતી થાય છે તે શીપમાં) સ્વાતિજલનાં થિંદુ પહે છે તેનાં મોતી થાય છે એમ માની, શ્રીજા મુમુક્ષુઓ શુક્તિ જેવા ગણાય છે, તેઓ પ્રતિ ઉપદેશ સફલ થાય છે.

જેમ ફિરણાલેર્યફલામાં (ફોટોગ્રાફીમાં) સૂર્યનાં ફિરણ, શુદ્ધ થઈ સંસ્કાર પામેલા નિશ્ચલ કાચ ઉપર, ક્ષણવારમાં યથાર્થ પરિપૂર્ણ ચિત્ર પાડે છે, તેમ બ્રહ્મનિષ્ઠ શ્રોત્રિય ઉત્તમ ગુરુ, શુદ્ધ થઈ સંસ્કાર પામેલા નિશ્ચલ અંતઃકરણ ઉપર યથાર્થ જ્ઞાનની પ્રતિમા પાડે છે.

હાલ જે શાસ્ત્રોની દશા થઈ છે તેમાં શાસ્ત્રોનો દોષ નથી પણ તેના અયોગ્ય દુરુપયોગ કરનારાનો દોષ છે. દૂધ જેવો પુષ્ટિદાતા પદાર્થ છે, તે એક જાતના તાવવાલું મનુષ્ય પિયે છે, તો તેને હાનિ કરે છે, અને શ્વેરી પ્રાણી પિયે છે તો તે દૂધનું વિષ થાય છે, એ સરૂં; પણ તેમાં દૂધનો દોષ નથી. પેલા અપાત્ર પીનારનો દોષ છે. એવા પ્રસંગે જે દૂધનો દોષ કહાડે છે તે અજ્ઞાની ગણાય છે. તે જ રીતિએ કુપાત્ર મનુષ્યાંના સંગથી સત્શાસ્ત્રના સિદ્ધાન્તો વિકારી દેખાય તેમાં તે સત્શાસ્ત્રને દૂષિત ગણનાર, સમજુઓની દૃષ્ટિમાં અજ્ઞાની ગણાય છે. દુરુપયોગ કરનાર કુપાત્રોના દોષથી સત્શાસ્ત્ર, છે તેથી કદાપિ વિપરીત દેખાય, પણ તેસારૂ વિવેકીઓએ મમાવું જોઈએ નહિ.

આ સમયમાં શ્રેષ્ઠ વિદ્વાનોના તરી આવતા વિચારોમાં આમ

गणाय छे:-मनुष्योमां स्वतंत्रता, समता अने बंधुता, एधोनुं स्थापन थये बहु सुख मळशे; अने जगतनुं कल्याण, संबृद्धिमां अने सफलता किवा सार्थकतामां रहुं छे. आ कालना सर्व पंडितोना प्रयत्न ए मार्ग प्रति चली एकाग्र थता जाय छे. आजनी कपोटीए कपतां पण आपणां शास्त्रोना विचारो केवा कुंदन जेवा छे, ए विवेकथी वाचनारने तत्काल जणाई आवशे.

स्वतंत्रता संबंधमां आपणा भरतखण्डीय जनोना एवा उत्कृष्ट विचार छे के अवधि. प्राचीन अष्टावक्रगीतामां घदे छे के:-

“स्वातंत्र्यात्सुखमाप्नोति स्वातंत्र्याल्लभते परम् ।
स्वातंत्र्यान्निर्वृतिं गच्छेत्स्वातंत्र्यात्परमं पदम् ॥”

अ० १८।५०.

स्वातंत्र्य किंवा स्वतंत्रतानुं एहुं लोकोत्तर सर्वोपरि मूल्य अंशुं छे. समता तथा बंधुता संबंधमां पण तेवा ज आत्यंतिक श्रेष्ठ विचारो छे.

वेदान्तना भगवद्गीता नामे विश्वमान्य ग्रंथमां वाक्य छे के—

“सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥

अ० ६।२९

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः” ॥

अ० ६।३७

ए फेटला श्रेष्ठ विचार छे. मनुष्यने मात्र आता जेवा ज गणीने अटकवानुं नथी पण तेओने पाताना जेवा ज मानवा. हालना उपरि गणाता विचारथी पण ए घात फेटली गुणीत

1 Liberty, Equality & Fraternity. 2 Progress and Fruit or Utility.

સર્વોપરિ છે. વહુકરીને મનુષ્યને (પોતે પરમ પ્રેમાસ્પદ હોવાથી) પોતાના ઉપર જેટલી પ્રીતિ છે એટલી ' કોઈના ઉપર નથી. જેમ શર્કરા અને લોટઆદિથી પકાવ થઈ તે મિષ્ટ લાગે છે, તે શર્કરાના સંબંધથી છે, તેમ અન્ય પ્રિય લાગે છે તે પોતાના સંબંધને લીધે જ, - તે પદાર્થ અનુકૂલ હોય તો, - પ્રિય લાગે છે. એ સત્યતાને માનસિક શાસ્ત્ર સમજનાર અને ગંભીર વિચાર કરનાર સમજશે. શ્લોકમાં સૂચવેલી રીતિએ પોતાના સમાન સર્વે લોકને ગણ્યેથી ઉપયોગી થઈ જે લોકહિત થાય, એવું વીજા કયા વિચારથી થાય એમ છે? 'આત્મવત્ અથવા સ્વસમાન સર્વને ગણી સમદર્શી ધ્યાનો, અને સર્વને સુખદુઃખ પોતાનાં સમાન થાય છે એમ ગણવાનો,' એ વેદાન્તનો સર્વોત્કૃષ્ટ હેતુર્ગમિત અતિઅર્થવાન્ પણ અતિસૂક્ષ્માકાર કરેલો સિદ્ધાન્ત, તે સમજી, તે પ્રમાણે જો મનુષ્યો ઘટે તો જગત્તું કેટલું કલ્યાણ થઈ સર્વે સુખ ઘટે, એ સમજવું વહુ કઠિન નથી. પણ વેદાન્તના વિચારો પ્રમાણે વર્તતાં મનુષ્ય મટીને દેવ થવાય અને આ દુઃખિ જગત્ સુખિ સ્વર્ગ જેવું પ્રતીત થાય એમ કહેતાં કોણ અટકાવી શકે એમ છે?

સંવૃદ્ધિ અને ફલ એની તો વેદાન્તમાં સીમા જ નથી. વેદાન્તની સંવૃદ્ધિ અને વેદાન્તનું ફલ એ તો 'ન ભૂતં ન ભવિષ્યતિ.' આ જગત્માંના અન્ય કોઈ દેશના મહાન્ પण्डितો એટલી સીમા સુધી જઈ શક્યા સમર્થ થયા નથી.

હાલ એક ડાર્વિન નામે પંડિતે યુરોપમાં અનેક શાસ્ત્રોનાં સાધનથી આવા વિચાર સિદ્ધ કરાવા માંડ્યા છે કે, પૂર્વે માત્ર નીચ યોનિનાં પશુ પ્રાણી હતાં તેનું પરિણામ અથવા સંવૃદ્ધિ થતાં તે વાનર થયાં અને વાનર સુધરીને અથવા સંવૃદ્ધિ પામ્યેથી મનુષ્ય થયાં છે; इहां आगळ आवी वार्ता अटकी છે.

આપણાં શાસ્ત્રોમાં અનેક યોનિઓ કહી છે. તેમાં અનુક્રમે ચઢતાં મનુષ્યયોનિમાં અવતાર થાય છે. અને તે મનુષ્યયોનિમાં ઉત્તમોત્તમ સંવૃદ્ધિ અને ફલ કેવાં કહ્યાં છે તે જુઓ. તે મનુષ્યયોનિમાં આવી જે મનુષ્ય વિદ્યાભ્યાસ પૂરો કરી, સત્કર્મોં કરે, અને તેથી અંતઃકરણ શુદ્ધ થયે જ્ઞાનમાં પણ ઉત્તમ જે અધ્યાત્મજ્ઞાન તે મેલવે તો, ભગવદ્ગીતાના ૧૪ મા અધ્યાયમાં કહે છે તેમ તેની પટ્ટલી વધી ઉત્તમ સંવૃદ્ધિ થાય કે 'તે ભગવાન્ સાધર્મ્યને પ્રાપ્ત થઈ' નામ શુદ્ધ સત્ત્વગુણી થઈ, પરમેશ્વરમાં એકતા પામીને સર્વોપરિ સિદ્ધિ અથવા મોક્ષ પામે છે.

પૃથી કેઈ સંવૃદ્ધિ કે ફલ વધારે હોવા સંભવ છે? કોઈ નહિ. સ્થલસંકોચને લીધે અધિક વિચાર અને સમાધાનો અત્ર ન લખતાં માત્ર વાનગી વતાવી વિરમવા અગત્ય પડે છે. પરમેશ્વરમાં એકતા પામવાની વાર્તા, ભાગત્યાગલક્ષણાથી યથાર્થ ન સમજનારને, મઢકાવે પૃથી છે સ્તરી, પણ તેની સમજ વહુ સારી રીતિપ 'વિચારસાગરમાં' આપી છે, તેથી શંકાઓનું સમાધાન થશે. એ વિચાર પરા ભક્તિનું શિસ્તર છે. નવી રીતિપ એનું પૃથક્કરણ અને એકીકરણ કરતાં સંક્ષેપમાં આમ છે:—આપણામાં ઉત્તમોત્તમ જે ભાગ છે, તે સર્વ-ધ્યાત્ત પરમેશ્વરનો છે; અને આપણો મોક્ષ થયેથી- તે ભાગ ઊરનો આરોપ દૂર થઈ તે પાછો પોતાના મૂલમાં એકતા પામેલો પ્રતીત થાય છે. હાલમાં જ એક (adiametre) સૂર્યકલા-માપક અથવા સૂર્યકલાધીન નામે એક યંત્ર વનાવ્યું છે. તેને સત્તા અને સ્ફુરણ સૂર્ય આપે છે. તેમાં સૂર્યનું તેજ પટ્ટલે પ્રતાપ આવી તેને ગતિમાં રાખે છે. તે યંત્ર ઢૂટ્ટી ગયેથી તેમાં આયેલાં કિરણોં અથવા સૂર્યનોં પ્રતાપ, સૂર્યના મહત્ વ્યાપક

તેજમાં એકતા પામ્યો એમ પ્રતીત થાય છે. ફરક અંશે વિદેહ-મુક્તિ પામ્યેથી એને મલતી, સુહૃદ્ જ્ઞાનીનો જીવભાવનો વાચ થઈ, આનંદઘનવ્રહ્મ સહ એકતા થાય છે. એ સર્વોત્કૃષ્ટા પરમ એકતા મહાપુરુષોના મહામિલાપને યોગ્ય છે.

એક વીજી ઘાતાં પણ લક્ષમાં રાખવાની છે કે, કોઈ એક ફલ પ્રાપ્ત કરવા, પૂર્વે સૂચવ્યા પ્રમાણે અનેક સાધનોનો ઉપયોગ કરવો પડે છે. કોઈ ફરક સાધનથી અને કોઈ ફરક સાધનથી ફલની પ્રાપ્તિ કરી લે છે કોઈ સ્થળે જવું હોય ત્યાં, કોઈ પગે, કોઈ ગાડામાં, કોઈ ગાડીમાં, કોઈ ઘરુણાશિરથમાં, અને કોઈ વિમાનમાં જાય છે. દેશકાલ વદલાય તે સાધનોમાં ફેરફાર પડી જાય છે. તે રીતિય પરમધામે પહોંચવા સારુ જે સાધનરૂપ વિચારો આપણાં શાસ્ત્રોમાં કહેલા છે તેમાં દેશકાલ વદલાતાં ફેરફાર થયા છે અને થશે. કેટલાંક સાધન નિર્ઘલ કે અયોગ્ય પ્રતીત થશે. પરંતુ સર્વ વિવેકી ઘાચનારાઓ વેદાન્તશાસ્ત્રના ગ્રંથ ઘાચતાં એક ઘાતાં લક્ષમાં રાખવી કે, તે સમયે પ્રચલિત વિચારોમાંના વાધક વિચારોને ઁંડવા અને સારાને પુષ્ટિ આપવા કેટલુંક ઁંડનમંડન હોય છે. કેટલોક લેખ માત્ર શિષ્યોનાં મનમાં જે શંકાઓ હોય છે તેના સમાધાનાર્થે શિષ્યદષ્ટિય જ લખાયો હોય છે, ઈત્યાદિ. તેમાં આવતા વિચારોને સાધન અને સાધ્ય એવા બે ભાગમાં ઘહેંચી નાંખવા; તથા તાત્પર્યજ્ઞાનસારુ ઉપક્રમોપસંહારાદિ પર્ફલિંગ કહ્યાં છે તે લક્ષમાં રાખી વિવેકથી ઘાચવું ઘટલે વિરોધાભાસ દૂર થશે.

વેદાન્તશાસ્ત્રના ગ્રંથો ઘાચતાં ઘઢી એકા ઘાતાં સર્વે સજનોય અવશ્ય ઘ્યાનમાં રાખવાની છે કે:-તેમાં ગ્રણે ફાલના-ભૂત, વર્તમાન અને ભવિષ્યત્ના-વિપયોવિપે લખેલું હોય છે.

તેમાં માયાની અનર્ગલા અને અનિર્વચનીયા શક્તિનાં વિચિત્ર કાર્યો છે, તે વિષે જે જે લખેલું છે તે તે, વાદવિવાદ અને ચર્ચા થતાં જે ઓછું વાધકારક લાગ્યું છે તે લખ્યું છે. કારણતા ગુણ કાર્યમાં આવે છે એ ન્યાયપ્રમાણે અચિન્ત્યા અને અનિર્વચનીયા માયાશક્તિનાં કાર્યો પણ અતર્ક્ય અને વિચિત્ર છે. અર્થાત્ બહુરૂપિણી માયાનાં અનંત કાર્યવિષે નિર્ણય થઈ શકવો સ્વભાવથી જ અશક્ય છે. એ આદિ વેદાન્તનો સિદ્ધાંત છે. ઈથી વેદાન્તના ગ્રંથ વાચતાં મહામાયાનાં કાર્યો વિષે જે જે વાર્તા આવે તે તે વાર્તા સિદ્ધાન્તની છે, એમ ન સમજતાં અનિર્વચનીયા સમજવી. એ વિવેક ન જાણવાથી જ વહુ શંકાઓ અને ચર્ચા ઉત્પન્ના થાય છે. પણ વેદાન્તનું મર્મ યથાર્થ સમજ્યેથી ઘણા ધિરોધામાંસ દૂર થઈ જાય છે. વેદાન્તનું લક્ષ્ય, જગત્ કેમ થયું અને કયા નિયમોથી ચાલે છે, એ આદિ અનિર્ણય વાદમાં ઉતરી નિષ્ફલ ચર્ચા કરવાનું નથી, કિન્તુ મનુષ્ય કયે પ્રકારે નીચ મટી ઉચ્ચ થઈ શકે છે; વિદ્યા, સદ્ગુણ, સત્કર્મથી, અંતઃકરણ શુદ્ધ થયે, જ્ઞાની થઈ, મનુષ્ય કેવે પ્રકારે પાપથી મુક્ત થઈ પરમશ્રેયઃ પામે છે, એ અનુભવસિદ્ધ કરાવી આપવાનું વેદાન્તનું મુખ્ય લક્ષ્ય છે; અને તે ઈવીં નિર્વિવાદરીતિએ પ્રતિપાદિત કરે છે કે, યથાવિધિ યથાર્થ સમજનાર સંસ્કારી અધિકારીઓને તે અનુભવમાં આવી રહે છે. પાણીમાં પડેલા ઘુડતા મનુષ્યને, પાણીનો અને તેનો પાછઢનો ઇતિહાસ જાણી કહેવો તેના કરતાં, તરવાનું સાધન થતાવયું, તેથી તે તરીને સુસ્તભૂમિમાં જઈ પહોંચે એ પ્રકાર અધિક સફલ છે. ઈવાં વેદાન્તશાસ્ત્રનો વિચાર જણાય છે. ઈથી વેદાન્તના ગ્રંથો વાચતાં મુરત્ય લક્ષ્ય જ્ઞા જ્ઞા છે તે સદા ધ્યાનમાં રાખવાની અગત્ય છે

स्वाभाविक उच्च अने सर्वोपयोगी सर्व पदार्थ, जेवा के-सूर्य-
 वशादि सर्वने समान होय छे परंतु योग्य पात्र होय छे तेमां
 तेओना वधारे धंश रह्ये छे, तेम वेदान्तशास्त्र पण सर्वने समान
 छे. तेना आचार्यनुं एतुं मत छे के,-साधनसंपन्न होय ते तेना
 अधिकारी छे, पछी ते गमे ते हो. अर्थात् जाति उपर आधार
 नथी पण योग्य गुण उपर आधार छे. एवो सिद्धान्त होवार्थी
 वेदान्तनी छायामां आ जगत्तुनां योग्य मनुष्यप्राणी सर्व आवी
 शके छे. ते गमे ते पंथ पालतां हो पण जो तेओ सन्मार्गमां
 हांय तो तेओ वेदान्तना मार्गमां छे एम गणी शकाय छे. जे जे
 शास्त्रो, जे जे विद्याओ, अने जे जे कलाओ अंतःकरणने शुद्ध
 करवामां उपयोगि होय, ए सर्व वेदान्तना आचार्य पोताने
 उपयोगि गण्यां छे. जूदा जूदा प्रकारनां वासण मांजवा
 ररया, माटी आदि जूदा जूदा प्रकारना पदार्थो काममां आवे
 छे, पक्कान तेथी उंचुं छे पण वासण मांजवाना काममां ते
 निरर्थक छे, तेम ज जे जे कोई अपर शास्त्रादि अतःकरणशुद्धि
 करी शके छे, अने ज्ञान आपी शके छे ते ते, परीक्ष अपरीक्ष,
 वेदान्तनां साधक छे. मनोहर, सुरजद उच्चस्थानमां कोई परम-
 धाम होय, एम वेदान्तमीमांसा शिखर उपर छे. ते उच्च-
 स्थाने चडवा अनेक मार्गे अनेक पगथियां हांय छे. उपर
 कथा प्रमाणे जगत्तुना गमे ते पंथना लोको, जो तेओ सन्मार्गे
 चढेला अने सट्टणी होय तो तेओ, अने ईश्वर माननार सर्व
 आस्तिरु भक्तो, वेदान्तमार्गीय ज छे. संक्षेपमां परम विज्ञान
 अने समस्तपुरुषार्थसिद्धिसाध शानोत्पत्तिकर जे जे छे ते ते
 वेदान्तसहायक छे.

नयी रीतिए कहिये तो आ देशमां आ राज्यमां कोइने 'एड-
 वोकेट' थनु होय, तेणे इंग्लिश भणी 'म्याट्रीन्युलेशन; एफ. इ.

પ. વી. પ; પલ. પલ. વી.' ની પરીક્ષાઓને ઉત્તરવી જોડયે; પટલું થયે 'પ્લેડવોકેટ' ની પરીક્ષા આપવા તે યોગ્ય થાય છે; પછી તેણે ઘરિષ્ઠ ન્યાયસ્થાનમાં 'હાઇ કોર્ટમાં' સમાગમ સારુ કેટલાંક ઘર્ષ ગાઢવાં જોડયે. ત્યાર પછી તેની પરીક્ષા થાય છે. તેમાં પાર ઉત્તરવેથી તે 'વારિસ્ટર' તુલ્ય 'પ્લેડવોકેટ'નું પદ પામે છે. અને અન્તે ન્યાયાધીશ થવા યોગ્ય થાય છે. પ્રથમથી તે અન્ત સુધી તેણે દોષરહિત રહેવું જોડયે, અને પ્રત્યેક પદવીપ ચઢતાં ઉત્તરોત્તર અધિક જ્ઞાન સંપાદન કરવું અને વતાવવું જોડયે. એ પ્રકારે કરી યોગ્ય થયા પછી પણ તે જ સ્થિતિ રાખવી જોડયે. કોઈ વેલા પણ તે ભ્રષ્ટ થાય પટલે તે અપાત્ર ઠરે છે. પણ જો નિષ્કલંક રહી પૂરી નિપુણતા દર્શાવે છે તો, ન્યાયાધીશ થવા, અને પ્રજાતન્ત્ર રાજ્ય હોય તો તેના પ્રમુખ નામ સર્વોપરિ થવાનો પણ, તેને સંભવ છે. યથી પણ ઘધારે, વેદાન્તી અર્થાત્ શિરોમણિ જ્ઞાની થવાની પાત્રતા અર્થે, મનુષ્યે પ્રથમ અનેક યોગ્યતા પામવાની આવશ્યકતા છે: કારણ શિરોમણિજ્ઞાન સર્વોત્કૃષ્ટ છે, તેમ તેને યોગ્ય થવા પણ સર્વોત્કૃષ્ટ પ્રયાસ કરવો જોડયે. સંક્ષેપમાં વેદાન્તી થવા પ્રથમ વિદ્વાન, સદ્ગુણી, સાધનચતુષ્ટયસંપન્ન થઈ સાત્ત્વિકઅન્તઃ-કરણવાન, થવું જોડયે પટલી સંવૃદ્ધિ જેની થાય તે વેદાન્તી થઈ અપરોક્ષ વિજ્ઞાન પામ્યેથી પરબ્રહ્મમાં એકતા પામવા સમર્થ થાય છે, અને જેવા જ મહાત્માઓ વિદેહમુક્ત થયે સચ્ચિદાન્દ-ઘનમાં એકરસરૂપ થાય છે.

નિશ્ચલકૂન વિચારસાગર, વેદાન્તશાસ્ત્રનો પ્રવેશક ગ્રંથ છે. તેમાં વહુ ઉપયોગી, અદ્ભૂત, સ્વતંત્ર, યુક્તિ-પ્રધાન, અપૂર્વ સિદ્ધાન્તો અને વિચારોનો સંગ્રહ કન્યો છે. તે પ્રમેય ગ્રંથ ગણાય છે. તેમાં ઘણી પ્રક્રિયાઓ આળી

છે. એ પ્રંથ યથાર્થ સમજાયો હોય તો પછી અન્ય ઉત્તમ પ્રંથો સમજાવા સુલભ પડે છે. અને કથાવાર્તાઓમાં અનેક વિચારો આવે છે તેને કેમ સમજ્યેથી યથાર્થ સમજ્યા ગણાય છે, એ જણાય છે. હાલ સ્મૃતિપુરાણો આદિની કથાઓના છિન્નમિન્ન ભાગો સાંભળી સામાન્યબુદ્ધિ વધુ ધ્રમી જાય છે. સર્વ સંસ્કૃત પ્રંથને વહુજન સમાનપ્રભાવના સમજે છે. તથા પરસ્પર વિરુદ્ધતા જોઈ તેઓને કંઈ સુઘ્ન પડતી નથી. તેથી કંટાળી મોઝા લોક હોય છે તે વકરાં પેઠે કોઈ નવીન પંથના ઘાડામાં પેશી જાય છે; અને પોતાને વધારે પાકા સમજનારાઓ, તેથી પછી સદા અભાગી રહે છે. અગ્નિ, દેશકાલ પ્રમાણે, લાભકારક અને હાનિકારક બને છે. પાક કરવામાં, યંત્રાદિનાં કાર્યોમાં, શીત ઋતુમાં, અગ્નિ વહુ ઉપ-યોગી છે. તે જ અગ્નિ રૂમાં કે ઇવા જ શીઘ્રદાહ્ય પદાર્થોમાં, આગ થઈ વધે ત્યારે અને ઇવા વીજા પ્રસંગે, હાનિકારક છે. એક જ અગ્નિવિપે જૂદા જૂદા ઇવા પ્રસંગોપાત્ત વિરુદ્ધ વિચારો વાઘી, તેનો ઉપયોગ ન કરવા નિશ્ચય કરનારની બુદ્ધિ જેથી, શાસ્ત્રોવિપે લોકોની બુદ્ધિ થઈ જણાય છે. પણ અવે વિદ્યાવૃદ્ધિ થવા માંડી છે તેથી યથાર્થદર્શી વિવેકીઓ નિઃસ-રસે ઇવી આશા છે.

‘વિચારસાગરનું’ ભાષાન્તર વહુ કરી શબ્દશઃ કન્યું છે, તેનાં અનેક કારણ છે. મુખ્ય એ પણ છે કે, તેમાંના શબ્દો જાણવાની વહુ અપેક્ષા છે. ઘણા શબ્દો પારિભાષિક હોવાથી વહુ અર્થગાળા છે. તેવા શબ્દો લક્ષમાં હોય તો શ્રોતા-ઓને, અને અભ્યાસીઓને આગલ ઘઘતાં વહુ સુલભ પડે છે. ઉત્તમ વિચારવાહક શબ્દ પણ સબલ હોય તો જ અર્થ સરે છે, રાજટંકશાલામાં છપાયલું નાણુ સર્વ સ્થલે ચાલે છે.

अने तेथी चाञ्छित फल मळे छे. तेम ते उच्च विचारो उत्पन्न करनारे जे शब्दो चलणी करेला ते ज शब्दो रह्योथी सर्वने बहु प्रकारना लाभ छे. ए आदि कारणोथी मूलने अनुसरतां, कोई कोई प्रसंगे वाच्ययोजना कदापि ह्यिष्ट जेवी लागे, परंतु आद्यंत अविरोद्ध रहेवा सारु, छे तेम ज रहेवा देवुं सुतर लाग्युं छे. विचार नवीन अने उत्तम होवाथी, शब्द करतां, विचारनी कठिनता वधारे छे. परंतु तेमांना उत्तम बोध उपर जेटलो परिश्रम लेवाशे तेदलो सफल थशे अने बहु सुखदाता निवडशे, एम अनुभवथी परमश्रेयःसाधकोनुं कहेवुं छे, ते, विचारसागरमां प्रवेश करनार अभ्यासकोना हाथमां, तेमांनां रत्नो आवतां जशे तेम तेम, तेओने साक्षात् थशे.

अनेक जातिना रोग उपर अनेक औषधो होय छे. रोगनुं निदान जाणी चिकित्सा करे-रोगने परीक्षी योग्य औषध आपे तो ते रोगनुं निवारण थाय. रोगी रोगनां कारणादि जाण्या विना पोतानी मेळे गमे ते औषध लई गमे तेम चाय तो विपरीत परिणामतो बहु संभव. तेम प्रवेशकोने संसारदुःखरूप रोगथी मुक्त थवा गुरुरूप निदानचिकित्सज्ञ वैद्यनी अगत्य छे. एथी शास्त्रमां प्रवेश करनारे योग्य पाठको पासे शिष्यानुं पूर्व कक्षा प्रमाणे लक्ष राखनुं. आ भाषान्तर करनारे ब्रह्मनिष्ठ स्वामी श्री आनंदगिरि पासे विचारसागर विचान्यो हतो. तेओण फोंडक फोंडक कठिन स्थळे बहु सारी रीतिप समज आपी समाधान कन्यां हतां, तेओनां भाषांतरकर्ता उपर बहु आभार छे.

अन्ते ईश्वरने प्रार्थना छे, के:-

(शार्दूलविक्रीडित.)

दै विद्यानो विभूति ईश्वर करो, सर्वा अविद्या परी,
सत्कर्म फलनो सुयोग करतां, देजो मति पांशरी;
धै अभ्युदित आ जगत् सुविचरे वेदान्तमार्गे सदा,
पामे मुक्ति, स्वधर्म सिद्ध करौ, सौ, अत्यंत जे सुंखदा.

() एवा चिह्न वच्चे जे जे विचारसागरमां लखवामां आव्युं छे, ते भाषान्तरकर्त्ताने अपेक्षित लागेल भाग अथवा पर्याय शब्द उमेरेला छे, एम समजवुं. पण [] एवा चिह्न वच्चेनुं जे छे ते व्याख्यानरूपे लखेलुं निश्चलदासनुं ज छे. चाक्यमां जे शब्द अवधारणीय छे,- जे शब्द उपरि अधिक लक्ष आपवानुं छे-ते शब्दना प्रति-अक्षर विभिन्न छे जेम प र मा त्मा.

मुंखदां प्रख्यात व्यास जयकृष्ण,-जेओ एक उत्तम यक्ता छे अने वेदान्तनी कथा बहु सारी करी शके छे तेथी बहु गृहस्थो वेदान्तना थोता थया छे, तेओ-तथा बीजा पंडित श्री पीताम्बरजी नामे छे. तेओ पण विचारसागर सारी रीतिण समजाववा समर्थ छे. जिज्ञासुओए तेओना जेवा पासे प्रवेश करवो उचित छे.

रा० हरिचल्लभदासे आ ग्रंथ मुद्रायंत्रमां मुद्रांकित थतो हतो ते संबंधमां श्रम लीधो, छे तेसाह अत्र आभार मानवामां आवे छे.

मुंबई, मं० १९३२. धावण वदि ८.

श्रीभगवत्पादाचार्यविरचितं

प्रातःस्मरणम् ।

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वं
सच्चित्सुखं परमहंसगतिं तुरीयम् ।
यत्स्वप्नजागरसुपुत्तमवैति नित्यं
तद्ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसंघः ॥ १ ॥
प्रातर्भजामि मनसो वचसामगम्यं
घाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण ।
यन्नेतिनेतिवचनैर्निगमा अवोचु-
स्तं देवदेवमजमच्युतमाहुरग्र्यम् ॥ २ ॥
प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णं
पूर्णं सनातनपदं पुरुषोत्तमाख्यम् ।
यस्मिन्निदं जगदशेषमशेषमूर्तौ
रज्ज्यां भुजंगम इय प्रतिभासितं धै ॥ ३ ॥
श्लोकत्रयमिदं पुण्यं लोकत्रयधिभूषणम् ।
प्रातःकाले पठेद्यस्तु स गच्छेत्परमं पदम् ॥



श्री

निश्चलदासनुं जीवनचरित-

दुहरो.

गृह-कुल-ग्राम-स्वदेश दीप विविध अधिक गुणवान् ;
विरल जगद्दीप वन्द्य ते परमतत्त्वविद्वान्.

महापुरुषोनां जीवनचरित प्रकाशवत् छे. ते साधने करी बहु पदार्थों स्पष्ट थाय छे, पटलुं ज नहि किन्तु प्रकाशतुल्य पुनः ते जीवनप्रद अने पुष्टिकर तथा वृद्धिकर छे. सर्व मनुष्योनां स्वभाव अनुसरण तथा अनुकरण करवानो होवाथी तेओ ज्ञात-अज्ञात कोइकोइना अनुयायी थया विना रही शकता ज नथी. पछी ते अनुसरणीय मूर्ति विद्यमाना हो किंवा नामशेपा हो. पुराणोमां तथा इतिहासोमां महात्माओनां चरित आवे छे, ते पूर्वना देशकालने अने अधिकारीओनी रुचिने अनुकूल हतां. जीवनचरितनो मुख्य हेतु आ छे के,-निरूपित महात्माना प्रतिमा जोई तदनुरूप थवा भवित्री प्रजा प्रयत्नवती थाय. तेवी गुणशोषवती उपयोगिनी अनेकाकारिणी प्रतिमाओ पुराणादिमां गुणज्ञाने प्रत्यक्ष प्रतीता थाय छे. परंतु कालमां अने अधिकारीओमां भिन्नता आवनां, तथा केटलाक नवा संस्कार थतां, तेवी प्रतिमाओमां अनेक कारणोथी सामान्य लोकनी दोषदृष्टि थवा मांडी, एथी तेनो यथेच्छ उपयोग थाय नहि ए स्याभाविक छे.

प्रस्तुत देशकाल-अधिकारी सारू कइंक अन्यरूपरंगवती

प्रतिमाओ अपेक्षिता छे, अने तदनुसार संपूर्ति थवा मांडी छे अने थशे एम आशा छे.

आ विचारसागर अने वृत्तिप्रभाकर रूप बहु उपकारक, बहु प्रसिद्ध, अने शास्त्रसंमत ग्रंथोना कर्ता श्री निश्चलदास छे. तेओ पंजाव देशमां विक्रम संवत १८४९ ना श्रावण वदि ८ कृष्णजन्माष्टमी जेवी पुण्यतिथिमां धणाना नामे ग्राममां जाटझातिमां अवतन्या हता. तेना पितानी रंकस्थिति हती. ते पितानुं नाम 'मुक्तो' हतुं. मुक्तानो स्वग्राममां निर्वाह न थयो तेथी विद्वत्प्रसूतिनी स्त्रीना मरण पछी त्रि-वर्षना निश्चलने स्तंभउपर लई निर्वाहार्थ भटकता ते दिल्लीमां आव्या. त्यां दादुपंथवाळानुं स्थान छे. तेमां अमरदासजी नामे साधु ते वेला अधिकारी हता, तेओना चरणने शरण गया निश्चलदासने पण ए ज स्थानमां राखी साधुनी दीक्षा अपावी. निश्चलदासनो विद्याभ्यास पण ए ज स्थानमां आरंभायो. चतुर्दश वर्षना वय सुधी ए ज गुरुस्थानमां निश्चलदास सेवा अने विद्याभ्यास करता रखा.

१. गूर्जरात पाटणना गोसाईं नारायणभारती, निश्चलदासना समकालीन स्वग्रामी स्वस्मानन्द नामे साधुने मळी पूछी लखे छे के, 'ते गाम दिल्लीथी छत्रीश गाउ पश्चिम दिशामां बांगर देश विषे छे, तेमां मुख्य वसी जाट लोकोनी छे. 'मुक्तो' नामना जाटने त्यां 'नेचल' जन्मयोहनो. तेनी माता-पत्नी त्रण वर्षे सद्गता थयां हता; अने पिता मुक्ताराम एधुं नाम धारण करी दादुपंथी साधु थया हता.

२. कोई वदे छे के, पुर्याश्रममां ए दादुजी अमदावादना नागरभाक्षण हता. कोई वदे छे के, ए दादुजी पूरे लोधीराम नामे एक नागरगृहस्थने साध्रमतीनदीमां तरती पेटिकामांथी प्राप्त थया हता. तेओना नेमगिर उष संस्वारोधी तेओनामां असाधारणी शक्ति अभिवरता गरं हती. तेओ एह सरस कवि अने भक्त गणाय छे, अने तेओनो प्रजाप एरो हरो के तेओना नामनो पंच चान्पो छे.

નિશ્ચલદાસમાં વિદ્યાસંપાદન કરવાની અભિચ્છિ
અસાધારણ પ્રકૃતિ થઈ. તે વિદ્યાભ્યાસની સ્વાભાવિક-
ચ્છિના ઘેગનો પ્રવાહ પણ પ્રવલ હતો કે, તેને જોઈ કોઈ પણ
દુર્દર્શી પુરુષ ત્વરિત અનુમાને કે, ય. યુત્તિનો ઘેગ તેને રત્ના-
કર સાગરનો સંગમ અવશ્ય કરાવશે. અને તેમ જ થયું હતું.

૫ સન્ધિમાં સ્વપ્રાપ્તના સ્વરૂપાનન્દ નામે એક પરમહંસનો
સમાગમ નિશ્ચલદાસને દિલ્હીમાં જ થયો. તેઓમાં પરસ્પર
મમતા થઈ. દિલ્હીમાં અધિક અભ્યાસની અનુકૂલતા ન દીઠી
તેથી તેઓ વંનેષ સંકલ્પ કર્યો કે, વિદ્યાના મુખ્ય સ્થાનમાં
ગયા વિના વિદ્યાની યથેચ્છપ્રાપ્તિ દુર્લભા છે. અન્ય સ્થાનમાં
અધિક પ્રયાસે ન્યૂનફલ મલ્યું પણ ફટિન છે. તેઓની દષ્ટિ
સહસ્રા વિશ્વનાથની કાશીપુરી પ્રતિ થઈ. જે ભાગીરથી પતિત-
પાવની ગંગાના તીર ઉપર શોભા પામી રહી છે, અને
જહિ એક સમયે વિદ્યાધીશ હરિ અને હર સ્વતઃ પરમતત્ત્વ-
જ્ઞાનના સંવાદ કરતા, અને લોકોને મુક્તિ આપતા તેથી તે
મુક્તિપુરી નામે પણ પ્રસિદ્ધા છે. એમ એક કવિ કહે છે.—
અને જહિ અજી પણ વિદ્યાના ઉપાસકો-વિદ્યાદાતા અને
વિદ્યાપ્રહીતા-વિરલ પણ વિદ્યમાન હોય છે. કોઈ કોઈ મઠમાં
શાન્ત મહાન્ત અંદેતુક દયાસિંધુ વ્રહ્મનિષ્ઠ શ્રોત્રિય જીવનમુક્ત
સન્તો, પરાયે શરીરને પ્રાલ્થશેષ ભોગવાયતા, મનને સદા-
નન્દમાં મગ્ન રાખતા, અને લોકોને સન્માર્ગે પ્રેરતા, વસે છે. તેઓ
મુમુક્ષુઓને સન્તાપમાંથી તારવા તત્પર હોય છે. ઇત્યાદિ
સાંસ્કૃતિ તે સ્પર્શમાં લાવી સ્વરૂપાનન્દના સંગતિમાં નિશ્ચલ-
દાસે મુક્તિપુરી કાશી પ્રતિ પ્રયાણ કર્યું.

નિશ્ચલદાસને કાશીમાં આવતાં જણાયું કે-અન્ય
સ્થલના જે પષિડતંમન્યો તે કાશીવાસી મૂર્ખમન્યો સમાન

पण नथी होता, एम लोकोक्ति छे ए सत्यमूलक छे. निश्चलदासना बयादिना प्रमाणमां तेओ दिल्लीमांना साधु-
 भोना पठितवर्गमां गणाय पटलुं जाणता हता; परंतु ते कई ज
 न हतुं, एहुं निश्चलदासने प्रतीत थयुं. सद्बुद्धिमानोने
 पोतानी न्यूनतानुं भान ए अभ्युदयनुं सोपान थाय छे, ए
 यथार्थ छे. निश्चलदासे प्रथम महात्मा विशुद्धानन्दजीना स्थान-
 मां जवा मांड्युं. त्यां सत्समागमीओना परिचयथी निश्चल-
 दासने स्पष्ट थयुं के, पोतामां अजी शाखनुं श्रवण करवा
 जेडलो पण अधिकार नथी, तो अध्ययन तो दूर ज रहे.
 एयो सद्बुद्धि थतां आरंभथी ज अभ्यास करवानो निर्णय
 करी ते सारू यथाशक्य व्यवस्थानो प्रयत्न करवा मांड्यो.
 अन्ते धुरंधर पण्डित काकारामजीना अनुचर थई रही अव-
 काशसमयमां विद्याभ्यास करवा निश्चलदासे निश्चय
 कन्यो. जे काकाराम पण्डित, श्रीशंकरानन्दरुत आत्म-
 पुराण नामे ग्रंथ उपर उत्तम टीका रची छे ए आदिथी-
 अजी पण बहु प्रख्यात छे. ए पण्डित पासे बहु विद्यार्थीओ
 विद्याभ्यास करता. निश्चलदासनो उत्साह अने स्वाश्रय अने
 निश्चय कईक विलक्षण हतां. प्रथम काकारामजीना शिष्यो
 पासेथी कोशव्याकरणादि साधनग्रंथोनो अभ्यास आरंभ्यो.
 निश्चलदासमां असाधारण शक्ति जोई शिक्षक प्रसन्न थाय
 ए स्वामाविक हतुं. यथाविधि साधनशास्त्रो संपादन करी,
 पछी साप्यशास्त्रोमां प्रवेश कन्यो. विद्या सकला थाय एया
 आशाजनक शिष्यो प्रति विद्यागुरु प्रसन्न थाय छे ए तो
 प्रसिद्ध ज छे. काशरामे पण निश्चलदासने उत्तेजन आप्युं.
 काकारामजी पासे बहु शिष्यां हता. त्यां पद्दशास्त्रोनां
 अभ्यास प्रचलित हतां. काकारामना अन्यर्थ अनुधररूपे निश्चल-

दास रहता. पट्टे शिष्यो, पृथक् पृथक् शास्त्रोनुं अध्य-
यन करता होय त्यारं अव्यापक काकारामनी छायामां
अनुचर निश्चलदास पण होय ज. निश्चलदासनी धारणा-
शक्ति उत्कृष्टा होवार्थी यथाविधि शास्त्रधारणा करवा
लागी. गुरुना प्रसादधी शिष्यना सामर्थ्यमां विद्यानां विस्तरं
यथेच्छ थयो. न्यायशास्त्रना अभ्यास दामोदरशास्त्रीसमीप
निश्चलदासने कन्यो हतो.

एवी वार्ता चाले छे के, एक समये केटलाक पंडितोनी
सभा मली हती. त्यां नाना प्रकारना संवाद थता हता.
तेमां एक कठिन प्रसंग उपर कोई समाधान करी शक्युं नहि.
निश्चलदास पण त्यां एक श्रोतारूपे गया हता. तेओए नम्रता-
पूर्वक आशा मागी ते प्रसंग संबंधना शास्त्रसंमत विचार प
समाने समर्पण कन्या; तेथी सर्वना मननुं समाधान थयुं.
एथी तत्रस्य पण्डितो सानन्दाश्चर्य पाय्या; अने काकाराम
पण्डितनी कीर्ति अधिक विस्तरी. लोको कहेवा लाग्या के,
जे वेदशास्त्रसंपन्न स्वामीना अनुचरनी स्थितिमां रही निश्चल-
दास जेया शक्तिमान् थवाय, ते स्वामीनी स्वीया शक्तिनी
सीमा कोण कली शके.

ते समये प्रख्यात तुलसीदासजी काशीपुरीमां मुमु-
क्षुधोने वेदान्तशास्त्रनुं श्रवण करावता, एक दिवसे मायानी-
अविद्यानी-अज्ञाननी-‘आवरण’ ‘विक्षेप’ शक्ति संबंधी प्रसंग
आच्यो. ते प्रसंग चर्चतां एवो प्रश्न थयो के, ईश्वरमां ए आव-
रणविक्षेपशक्तिओ छे के नहि. कोई कहे के ईश्वरमां
आवरणशक्ति तो नथी परंतु विक्षेपशक्ति छे. ए अवसरे
निश्चलदास पण धोतामंडलमां हता. तेओए तुलसीदासनी

અનુજ્ઞા માગી, પવો સારો શાસ્ત્રાર્થ કન્યો કે સર્વને સમાધાન અને પ્રસન્નતા થયાં.

અજ્ઞાનની આવરણ અને વિક્ષેપ નામે બે શક્તિઓ છે. કાર્ય; જનનઅનુકૂલ-કારણનિષ્ઠ સામર્થ્યને 'શક્તિ' કહે છે. અજ્ઞાન એ આવરણશક્તિપકરી અન્તરના દ્રષ્ટા અને દૃષ્યના ભેદને આવરે છે તથા બહિરૂના બ્રહ્મ અને સર્ગના ભેદને આચ્છાદે છે, અને વિક્ષેપશક્તિપકરી એ જ અજ્ઞાન, લિંગાદિ બ્રહ્માબ્દાન્ત વિવિધસ્વરૂપે કરી વિક્ષિપ્ત થઈ પરિણામને પામે છે. વિક્ષેપ-શક્તિને 'બ્રાન્તિ' પણ કહે છે. એ વિષયે વિચારસાગરના અંક ૨૦૭ માં પણ નિશ્ચલદાસે વિચાર લયેલ છે.

નિશ્ચલદાસ વહુ ભાગ્યશાલી જણાય છે. તેઓને વિદ્યા સંપાદન કરવાની જેવી તીવ્રચ્છા હતી તેવી અનુકૂલતાનો યોગ પણ ઈશ્વરાનુગ્રહથી થયો હતો. સદ્ભાગ્ય વિના સદ્ગુણોનો સમાગમ દુર્લભ છે. સદ્બુદ્ધિ થાય એ જ સદ્ભાગ્યનું પ્રત્યક્ષ ચિહ્ન છે.

કાશીનાસ કરી શાસ્ત્રની સંપત્તિથી તેઓ વિભૂષિત થયા-વિદ્યાસંબંધમાં કદંક આયો પ્રકાર છે. જે વિદ્યાર્થી વહુ પ્રયાસ-વતે વિદ્યાનો રાગિનો (રાગનો) તલસ્પર્શ કરવા, જે પ્રમાણ-માં તે રાગિ રોડી નીચે સંચરે છે, તે પ્રમાણમાં તે રાગિ-માંના પદાર્થનો ઉષ્ણ સંચય કરી શકે છે. નિશ્ચલદાસજીએ શાસ્ત્રના તલસ્પર્શ ત્રાસ પ્રશંસનીય ધમ કન્યો હતો; તેવી તેઓનો સંચય અપિ ઉષ્ણ અને આકર્ષક થયો હતો. પછી અમા-ધારણયોગ્યતાયુગ થઈ, તેનો વહુ જાનોને લાભ જાપવા સ્વામી થઈ, નિશ્ચલદાસે વિચર્યાનો વિચાર કન્યો. કાશીન્ય મહા-ત્માઓના આશીર્વાદ સહિત તેઓ સ્વામી પ્રિદાય થયા. અને યજ્ઞયોગ્ય ત્રાપુ થઈ ઉપદેશ કરવાનો આરંભ કન્યો.

“આત્માનં પીડયિત્વાઽપિ સાધુઃ સુખયતે પરં ।
આહ્વાદયન્નાશ્રિતાન્ વૃક્ષો દુઃર્સં ચ સહને સ્વયં ॥
પરદુઃખાતુરા નિત્યં સ્વસુપ્તાનિ મહાન્ત્યપિ ।
નાપેક્ષન્તે મહાત્માનઃ સર્વભૂતહિતે રતાઃ ॥”

‘જેમ વૃક્ષ, આશ્રિતજનોને સુખ આપતો પોતે દુઃખ સહે છે,
તેમ સાધુ, પોતાને પીડીને પણ પરને સુખ આપે છે.

નિત્ય સર્વભૂતોના હિતમાં રત, અને પરના દુઃખથી આતુર,
એવા મહાત્મા સાધુઓ, પોતાનાં મહત્સુપ્તાંને પણ અપેક્ષતા નથી.”

એવા ગુણી સાધુ સમીપ અનેક શિષ્યાં આકર્ષાઈ આવે
એ સ્વાભાવિક છે. તેઓની કીર્તિ વધુ પ્રસરવા લાગી અને વધુ
વિદ્યાર્થીઓ આવવા માહ્યા.

તેઓનામાં જ્ઞાનપ્રદાન કરવાની શક્તિ જેવી અસાધારણી
હતી તેવી જ જ્ઞાનદાન કરવાની શક્તિ પણ અસાધારણી હતી.
તેઓએ પદ્મશાસ્ત્રનો યથાવિધિ અભ્યાસ કર્યો હતો. પરંતુ
પરમપુરુષાર્થપ્રાપક સર્વોપરી વેદાન્તશાસ્ત્ર જ છે એવો તેઓને
નિશ્ચય થયાથી, તે શાસ્ત્ર પ્રતિ તેઓની અપ્રતિમપ્રીતિ હતી.
અન્ય શાસ્ત્રોનો અભ્યાસ દિવસમાં અનુકૂલતાનુસાર ગમે તે
સમયે શિષ્યોને કરાવતા. પરંતુ વેદાન્તશાસ્ત્રનું અધ્યયન તો
પ્રાતઃકાલમાં જ ચલાવતા. કારણ જે વેલા અન્તઃકરણ શાન્ત
હોય તે સમયે જ તત્ત્વજ્ઞાનના અલૌકિક વિચારોના સંસ્કાર સારા
થઈ શકે છે. એ અનુભવસિદ્ધ સંપ્રદાય છે.

નિશ્ચલદાસ વિચરતા વિચરતા દિલ્હીમાં ગુરુસ્થાનમાં
આવ્યા. અને ત્યાં વેદાન્તશ્રવણ કરાવવા લાગ્યા. તત્કાલ
સામાન્ય સાધુઓને તેવા ઉત્કૃષ્ટ વિચારો સમજવા જેટલો અધિ-
કાર ન હોવાથી, તેઓની રુચિ યથેચ્છ જોવામાં ન આવતી.
પરંતુ ગુરુનામ અને ગુરુસ્થાન ઉપર નિશ્ચલદાસનો ભક્તિ-

ભાવ અને મમતા પ્રશંસનીય અને અચલ હતાં; તેથી દાદુપંથી સાધુઓનો ઉત્કર્ષ ઇચ્છી તેઓમાં જ્ઞાનની વૃદ્ધિ કરવા પ્રયત્ન-શીલ હતા. પોતાના ગ્રંથમાં પણ ગુરુસ્મરણ દાદુજીના નામથી જ કરે છે. નિશ્ચલદાસ, અને સુંદરવિલાસ ગ્રંથના કર્તા સુંદરદાસ, પઓથી દાદુજીના નામના અને પંથના મહિમામાં વહુવૃદ્ધિ થઈ છે.

૫૫ દિવસ નિશ્ચલદાસના વિદ્યાર્થીશિષ્યવર્ગમાં કલહ થયો, તેમાં અનેક પંથના સાધુઓ હતા. ૫૫ વિદ્યાર્થી, વીજા દાદુપંથી વિદ્યાર્થીને કહ્યું કે, તારા ગુરુ તો કુકડા જેવા હતા. ૫થી દાદુપંથીને વહુ વિષમ લાગ્યું, અને તે પ્રસંગ નિશ્ચલદાસ પાસે ન્યાય થવા આવ્યો. તેઓની ગુણગ્રાહિણી વૃદ્ધિ તેમાંથી પણ સાર જ નિઃસાન્યો; અને સ્મિતપૂર્વક વધા કે:-‘ભાઈ! ૫ સત્ય કહે છે. શ્રી દાદુજી ૫ વહુજનોને મોહનિદ્રા-માંથી જગાડ્યા છે, તેથી તે પદ પણ અનુચિત નથી.’

નિશ્ચલદાસજીની વિદ્વત્તા તથા યોધશક્તિ અસાધારણી છે ૫ વહુ પ્રસિદ્ધ થયું. તે ઉપરથી ઘુંદીના ગુણશ રાજા રામ-સિંહે, નિશ્ચલદાસજીના સત્સમાગમનો અભિલાષ કન્યો; અને યથોચિત્ત આમન્ત્રણ મોકલ્યું. નિશ્ચલદાસજી શ્રદ્ધાલુ રાજાનો ભક્તિભાવ જોઈ ઘુંદીમાં પધાન્યા. નિશ્ચલદાસનો સત્સંગ રાજા રામસિંહે શ્રદ્ધાપૂર્વક કરવા માંડ્યો. તેઓની વહુ પ્રકારની યોગ્યતા અને સાધુતા અનુભવી રાજાનો ભક્તિભાવ ઉત્તરોત્તર વૃદ્ધિગત થયો. રાજા પોતે ઉત્તમ ગ્રંથોનો અભ્યાસ કરવા લાગ્યા, અને અલિલ રાજકુટુંબ નિશ્ચલદાસમાં ગુરુમાથ કરી તેઓના સદ્બોધ અનુસાર પ્રવર્તવા લાગ્યું. નિશ્ચલદાસની સૂચનાનુસાર રામસિંહે અનેક સત્કાર્યો અને સદ્વ્યય કરવા માંડ્યા.

महाभारतना घनपर्यमां व्यासनारायण घदे छे के:—

“मोहजालस्य योनिर्हि मूढरेव समागमः ।

अहन्यहनि धर्मस्य योनिः साधुसमागमः” ॥

‘मूढो साये समागम ए मोह दुःखना जालनुं कारण छे अने साधुनो समागम ए दिवसे दिवसे धर्मनुं कारण छे.’ ए यथार्थ छे.

विद्वानोना दर्शन-श्रवणथी अने समागमथी बहु शुभ थाय छे. ए रामसिंह जेवा राजाने तां प्रत्यक्ष जेबुं ज होय. निश्चलदासना प्रसंगोपात्त केवल सूचन उपरथी ते राजाए देशदेशान्तरना पण्डितोनो समाज पण बुंदीमां भयो हतो; अने विद्वानोनो बहु आदरसत्कार करी प्रोत्साहन अने अभिनंदन समर्थु हतुं. सत्संगथी ए राजामां पण एवी उत्तम विद्या अने उच्चा योग्यता आवी हती के, पण्डितोए सभामां ए राजानी विद्यासंपत्ति परीक्षी, एकमते तेने विद्वाननुं पद समर्थु हतुं.

रामसिंह राजानी प्रार्थनाने तथा केटलाक अन्य शिष्योनी प्रार्थनाने स्वीकारी ग्रंथ रचवानुं सर्वोत्कृष्ट कार्य निश्चलदासे आरंभ्युं. पठनपाठनथी निश्चलदासनी विद्यानो एवो सुरस परिपाक थयो हतो के अधधि; एथी तेओना लेख पण उत्तम थाय ए स्वाभाविक छे.

निश्चलदासना मुख्य प्रसिद्ध ग्रंथ वे छे. विचारसागर तथा वृत्तिप्रमाकर. तेओए ‘कठंबह्ली’ उपनिषद् उपरि संस्कृत भाषामां एक व्याख्यान लख्युं छे, अने वैद्यशास्त्रनो पण एक ग्रंथ रच्यो छे, एम कहैवाय छे. तेओए (२७) सप्तविंश लक्ष संस्कृत श्लोकानो संग्रह करेल छे, अने ते संग्रह

१. निश्चलदासना समकालीन केवलाश्रम नामे साधुए एम बहु हतुं के निश्चलदासे ईशावास्य उपनिषद् उपर संस्कृत टीका करी छे.

કોહડોલી ગ્રામમાં નિશ્ચલદાસ 'ગુરુદ્વાર' છે તેમાં વિદ્યમાન છે એમ જણાય છે. —

વિચારસાગર એ પ્રમેય ગ્રંથ ગણાય છે. એ ગ્રંથ વિક્રમ સંવત્ ૧૯૦૫ ના ચાતુર્માસમાં રચાયો હતો. તેમાં વેદાન્તની મુખ્યમુખ્યપ્રક્રિયાઓ વહુ સરલતાપૂર્વક દર્શાવી છે. તેનું નામ 'વિચાર' નો 'સાગર' એમ છે તેથી તેમાંનાં સસ પ્રકરણોનું નામ મુખ્યનામાનુસાર 'તરંગ' રાખ્યું છે.

પ્રથમતરંગમાં અનુવંધસામાન્યનિરૂપણ નામ ગ્રંથના અનુ-
બંધચતુષ્ટય-(૧) અધિકારી, (૨) સંબંધ, (૩) વિષય,
અને (૪) પ્રયોજન-एનું વર્ણન છે.

દ્વિતીયતરંગમાં અનુબંધવિશેષનિરૂપણ નામ એ અનુબંધચતુ-
ષ્ટયના નિમિત્તેકરી શાસ્ત્રાધાર એકાર્થપ્રતિપાદક અધિકરણના
પંચ અવયવ-(૧) વિષય, (૨) સન્દેહ, (૩) સંગતિ, (૪)
પૂર્વપક્ષ, અને (૫) સિદ્ધાન્ત-દર્શાવવા યત્ન કન્યો હોય એમ
પ્રતીત થાય છે. તેમાં વિષય, પૂર્વપક્ષ, અને સિદ્ધાન્ત તો સ્પષ્ટ
કન્યા છે.

તૃતીયતરંગમાં ગુરુશિષ્યનાં લક્ષણ તથા ગુરુમક્તિફલના
પ્રકારનું નિરૂપણ છે.

ચતુર્થતરંગમાં ઉત્તમઅધિકારિઉપદેશનિરૂપણ છે, અર્થાત્
ઉત્તમઅધિકારિ પ્રતિ કેવલ જ્ઞાનના ઉપદેશકરી, અજ્ઞાન
અને અજ્ઞાનનાં કાર્યોના ઉપાધિના સંબંધના ઘટાથી
જીવત્વને પામેલા સાધનચતુષ્ટયસંપન્ન ઉત્તમ શુદ્ધ શુદ્ધિમાન્
મુમુક્ષુ અધિકારીને, મહાવાન્યે કરી પ્રત્યક્ષૈતન્યના પ્રહ્લ-
યેદનમાત્રથી, અવિદ્યાની નિવૃત્તિદ્વારા નિરતિશયાનન્દ અદ્વિતીય
બ્રહ્મની પ્રાપ્તિ થાય છે, તે પ્રકાર છે.

પંચમતરંગમાં મધ્યમ અધિકારીનાં સાધનનું વર્ણન ઉપા-

સનાના ઉપદેશનો પ્રકાર છે. મધ્યમ અધિકારીનો વિહિત-કર્મોના કરણપૂર્વક સોપાધિ વ્રહ્મના ઉપાસનમાં અધિકાર ગણાય છે. તે સારૂ ગુરુચેદાદિ વ્યાવહારિક પ્રતિપાદનપૂર્વક મધ્યમ અધિકારી અર્થે 'અહંપ્રહ' ઉપાસનાનો વિધિ કહ્યો છે.

પષ્ટતરંગમાં મિથ્યા ગુરુ ચેદાદિ સાધને મિથ્યા જગત્નો નિવૃત્તિનું વર્ણન કરી કુતર્કબુદ્ધિ કનિષ્ઠ અધિકારી પ્રતિ કર્મ-ઉપાસનાનો પ્રકાર છે. તેમાં અનેક શંકાઓ અને તેઓનાં યુક્તિપૂર્વક સમાધાનો આપ્યાં છે.

સત્તમતરંગમાં જીવનમુક્તિનું અને વિદેહમુક્તિનું વર્ણન છે. અને પ્રથમી સમાપ્તિ થાય છે.

વિચારસાગરના ચતુર્થતરંગથી ગુરુશિષ્યના સંવાદની ગાથા લખી છે. ૫ રૂપકમાં શુભસંતતિ નામે પિતા કલ્પ્યો છે. તેને તત્ત્વદષ્ટિ, અદષ્ટિ અને તર્કદષ્ટિ ૫ નામે પુત્રપ્રયત્ની સારી સન્તતિ કલ્પી છે. તેમાં ઉત્તમ અધિકારી તત્ત્વદષ્ટિ છે. તેની બુદ્ધિ શુદ્ધસંસ્કારવતી અને મહતી છે. તેને સદૃશ ઉપદેશ કરી વ્રહ્મભાવ-વ્રહ્મબુદ્ધિ-ધાય છે મધ્યમ અધિકારી અદષ્ટિ છે તેની બુદ્ધિમાં પ્રવચન કંઈ સંસ્કાર નથી તેમ તેની બુદ્ધિમાં મલિનતા પણ નથી. તેને કાલેઠરી અધિકાર પ્રાપ્ત થયે વ્રહ્મબુદ્ધિ ધાય છે. કનિષ્ઠ અધિકારી તર્કદષ્ટિ છે. તેની બુદ્ધિમાં અનેક યોગ્ય તર્કવિતર્કોના વિકારો થઈ તે બુદ્ધિ મલિનતા તથા અતિ ચંચલા થઈ છે. તેમાં વિપરીતભાવના થયાં જાય છે. તેથી વહુ પ્રયાસપૂર્વક અનેક શાસ્ત્ર ગુરુઓપ કરી તેનું સમાધાન થયે નિર્ણય કરે છે કે, સરૂલ શાસ્ત્રનું પરમ પ્રયોજન મોક્ષ છે, અને તેનું સાધન વ્રહ્મબુદ્ધિ યા તત્ત્વ-જ્ઞાન છે. સર્વ શાસ્ત્રો સાક્ષાત્ અથવા પરંપરાથી વ્રહ્મજ્ઞાનના હેતુ છે. ૫ શુભસન્તતિ રાજાનું રૂપક લલતાં શુંદીના તન્નમવાન્

મહારાજ રામસિંહજી લક્ષમાં હોય એમ અનુમાન થાય છે.

વિચારસાગરમાં જે જે પ્રસંગો લખ્યા છે, તે તે સર્વ શાસ્ત્ર-સંમત અને પ્રામાણિક છે. પૂર્વ મહાત્માઓએ જે જે ઉત્તમ પ્રસંગો સંસ્કૃત ગ્રંથોમાં ગુંથ્યા છે, તેમાંથી વહુ વિવેકથી સાર તારવી અધિકારીઓને અતિ ઉપયોગી થાય એવા પ્રસંગો એકત્ર કરી સંગ્રહવામાં આવ્યા છે. અને તે પળ પ્રાયશઃ મૂલના પારિભાષિક પદ-પદાર્થોમાં જ લખ્યા છે. તેની શૈલી-લેખન-પદ્ધતિ-ઉત્તમપ્રકારની-ગંભીરા, સરલા અને શુદ્ધા છે. પટ્ટલે અધિકારીનો અભ્યાસ વધતાં તેને અન્યસ્થ ઉત્તમ વિચારો પણ વહુ સુલભ થાય છે.

ઉચ્ચ પંક્તિના સંસ્કૃત ગ્રંથ સમજવામાં વિચારસાગરને પ્રવેશક ગ્રંથ ગણ્યો હોય તો યોગ્ય ગણાય એમ છે. એ ગ્રંથનાં વંગ ભાષામાં, મહારાષ્ટ્ર ભાષામાં, ઇંગ્લિશ ભાષામાં ભાષાંતર થયાં છે. અને સર્વત્ર એકમતે તેની પ્રશંસા થાય છે. તે વહુ સ્થલે શિલાંકિત અને મુદ્રાંકિત થયો છે. અને તેની વહુ આવૃત્તિઓ થયાં જાય છે. તેમાં પण्डित पीताम्बरजीकृत टिप्पणी અને वृत्तिरत्नावली समेता मूलग्रंथनी आवृत्ति श्रीमत् शरीफ सालेमहंमदे मुद्रांकिता करावी છે એ ઉત્તમા છે.

આ દેશમાં તત્ત્વજ્ઞાન વિષયના ગ્રંથસહ જે ક્રિયાપદ યોજાય છે તે ગ્રંથ 'વાચવો' એમ નહિ કિન્તુ ગ્રંથ 'વિચારવો' એમ કહેવાય છે. એ યથાર્થ છે. એવા ઉત્તમ ગ્રંથો વિચારવ્યેથી જ તેમાંનું સૌંદર્ય ઘુદ્ધિગોચર થાય છે.

વૃત્તિપ્રમાણકર એ પ્રમાણાદિનો ગ્રંથ છે. તેમાં વૃત્તિનાં પ્રમાણાદિ કારણ, વૃત્તિનું પ્રમા અપ્રમાદિ ભેદયુક્ત સ્વરૂપ, અને વૃત્તિનું વ્યવહારસિદ્ધિ તથા મોક્ષસિદ્ધિરૂપ ફલ, એ ત્રિવિધ પદાર્થનું નિરૂપણ છે. એવો એક સિદ્ધાન્ત છે કે, મહાવાક્યના

વૃત્તિરૂપ પ્રમાણાનથી વિષયસહિત અપ્રમાણરૂપ બંધની નિવૃત્તિ અને પરમાનન્દની પ્રાપ્તિ એ જ મોક્ષ છે.

એ ગ્રંથનું નામ પ્રથમ વૃત્તિદીપિકા હતું. નિશ્ચલદાસ યુદીમાં વિરાજતા હતા તે સમયે એ ગ્રંથ તત્ત્રભવાન્ મહારાજ શ્રીરામસિંહજીની વૃત્તિ અનુસાર તેઓની જ પ્રાર્થનાથી રચ્યો હતો અને ત્યાં જ છપાયો હતો તેમા પ્રથમ સત્ત પ્રકાશ હતા.—
 (૧) પ્રત્યક્ષપ્રમાણનિરૂપણ, (૨) અનુમાનપ્રમાણનિરૂપણ,
 (૩) શબ્દપ્રમાણનિરૂપણ, (૪) ઉપમાનપ્રમાણનિરૂપણ,
 (૫) અર્થાપત્તિપ્રમાણનિરૂપણ, (૬) અનુપલન્ધિપ્રમાણ-
 નિરૂપણ, (૭) વૃત્તિભેદનિરૂપણ, પ્રસંગપ્રાપ્ત સત્કથા
 ત્યાદિ નિરાકરણ પ્રયોજક સ્વત પ્રમાત્વપ્રમાણનિરૂપણ. તેમાં
 પશ્ચાત્ જીર્ણશ્વરસ્વરૂપ નિરૂપણપૂર્વક વૃત્તિપ્રયોજનનિરૂપણ-
 સહિત કટિપતસ્વરૂપનિરૂપણનામ (૮) અષ્ટમ પ્રકાશ ઉમે-
 ન્યો અને તે ગ્રંથને શ્રી વૃત્તિપ્રભાકર નામ આપ્યું.

મીમાંસા, ન્યાયવૈશેષિક, સાંખ્યયોગાદિ શાસ્ત્રોના અનેક સિદ્ધાન્ત ગ્રંથોમાંથી ઉપયોગી પ્રકાશ લઈ વિચારોપયોગી અનેક પદપદાર્થ તથા પ્રસંગોનો ઉત્તમ સંગ્રહ એ ગ્રંથમા સંગ્રહ્યો છે, એવો એકત્ર સંગ્રહ વહુ દુર્લભ છે નિશ્ચલદાસની મહત્તી વિદ્વત્તાનો એ પ્રદર્શક છે.

એ ગ્રંથ સવત્ ૧૯૧૬ માં યુદીકોટામાં ગ્રંથિત થયો હતો. એ વૃત્તિપ્રભાકર ગ્રંથનું ગૂર્જરાતીમા પ્રત્યયાન્તર રા૦ સાક્ષર મણિલાલ ન૦ દ્વિવેદીએ કર્યું છે.

નિશ્ચલદાસનું ચન્નત્વ અપિ તેનું જ ઉત્કૃષ્ટ હતું તેઓ યોગવાસિષ્ઠાદિ વેદાન્તગ્રંથોમાંથી શ્રવણ કરાવતા ત્યાં અનેક શ્રાતાઓનો સમર્થ થતો, અને સસારના સતાપથી સતત

ते श्रोताओ निश्चलदासना वचनामृतथी शान्ति अने संतोप
पामी जता. अनेक शिष्यो विचारसागरनो अभ्यास
निश्चलदास पासे ज करता. तेओ पण सिद्ध जेवा थता.

निश्चलदासनां दर्शन करनार मनुष्यो कहे छे के, तेओनुं
शरीर कृश हतुं; पंचकेश धारण करता, मुख लंबगोल हतुं,
शरीरमां उवरनी पीडा रहेती; रंक वा धनी, राजा वा प्रजा,
पण्डित वा अज्ञ, सर्व उपर समभाव राखता; शिष्यवर्ग
समीप सते पण देहोपयोगिक्रियाओ, स्वतंत्रतार्थे, स्पृहस्ते ज
करता; कटिप्रदेश उपर एक वस्त्र लपेट्टी राखता अने निरं-
तर स्वसंग्रहमांथी ग्रंथो विचारता.

एम कई काल भ्रमण करी प्रारब्ध भोगवी सुज्ञ निश्चल-
दासना प्राण, दिल्लीमां गुरुस्थान विषे, विक्रम संवत् १९१६
ना श्रावण वदि ३० ने दिने मध्याह्नोत्तर, ७० वर्षना वये,
लीन थतां उपाधिविनिर्मुक्त थई सुज्ञ निश्चलदास विदेह-
कैवल्य थया.

दुहरो.

ज्ञानवीर, अने शूरवीर, दानवीर, धीरवीर
अनेक गुणवीर, ईश ! अहिं धाय मागिये चिर.



ॐ

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीविचारसागरप्रारंभः ।

प्रथमतरंगः ।

अथ अनुबंध-सामान्य-निरूपण.

१. (वस्तुनिर्देशरूप मंगल.)

इहो

जे सुख नित्य प्रकाश विभु, नामरूपआधार;

जेने मति न लखे लखे, ते हुं शुद्ध अपार.

१.

१. भा मंगलाचरणना दुहामां बहु गंभीर विचार अने अर्थ छे. समग्र ग्रथ वाची प्र येरु व्यावर्तक, विधेय, वा हेतुगर्भ शब्दना यथार्थ अर्थ जाण्या पछी एनां सौंदर्य, गंभीरता अने कारण विशेष जणाई आउशे. अर्हियां शब्दार्थ मान लख्यो छे.

जे (ब्रह्म) सुख (आनंद) छे, नित्य (सत्) छे, प्रकाश (चित्) छे. अर्थात् सच्चिदानन्द छे, विभु (व्यापक) छे, नामरूपतुं आधार (अधिष्ठान) छे, अने जे ब्रह्मने बुद्धि प्रकाशी शकती नथी, पण जे बुद्धिने प्रकाशे छे, अथवा जे ब्रह्मने (मलविक्षेपदोषवती) मति जाणी शकती नथी, (परतु मलविक्षेप-दोषरहिता साधनचतुष्टयसंपन्ना शुद्धा) मति जे (स्वयंप्रकाश) ब्रह्मने (वृत्ति-व्याप्ति) जाणे छे, एखु जे शुद्धनाम, माया अने तेना कार्यरूप मलथी रहित अने अपार जे परब्रह्म, ते (प्रत्यगभिन्न ब्रह्म) हुं छुं. १.

मास (प्रत्यक् आत्मानुं ?) स्वरूप सागर जेवु अपार छे, ते मारा प्रत्यक् आत्मस्वरूपभूत समुद्रनी, विष्णु, शिव, ब्रह्मा, सूर्य, चंद्र, वरुण, यम, शक्ति, कुबेर, अने गणपति ए सर्व लहरिओ (मोजा छे.) २.

जे कृपालु सर्वज्ञ ईश्वरनु योगिलोक मनमां ध्यान घरे छे, ते ईश्वरनुं (माया) उपाधिप करी मारा (शुद्ध प्रत्यक् तरंग) स्वरूपविषे मिथ्या भान घाय छे. ३

- મમ અપાર રૂપ અધિચત્, લહરી-વિષ્ણુ, મહેશ,
વિધિ, રવિ, ચંદ્ર, વરુણ, યમ, શક્તિ, ધનેશ, ગણેશ. ૨.
- જે કૃપાલુ સર્વજ્ઞનું, હૃદય ધરે મુનિ ધ્યાન;
તેનું થાય ઉપાધિથી મજમાં મિથ્યા ભાન. ૩.
- જે જાણ્યા વિણ થાય જગત્, જેમ રજ્જુમાં સાપ;
નાશે અહિ જગ જે લહે, સોડહં આપો આપ. ૪.
- જેનો બોધ યાહી સુશ્રુતી, મજે રામ નિષ્કામ;
તે છે મમ આત્મા સહિ, કોને કરું પ્રણામ. ૫

૨. (ગ્રંથમહિમા.)

- મચ્યું વેદસિદ્ધાન્તજલ, જેમાં અતિગંભીર,
૯ વિચારસાગર કહું, પેહીં થાય સુખીં ધીર. ૬.

જેમ રજ્જુ (દોરી) જાણી ના હોય ત્યાંસુધી તે રજ્જુમાં સર્પ પ્રતીત થાય છે, તેમ જે બ્રહ્મને જાણ્યા વિના જગત્ પ્રતીત થાય છે, પરંતુ એમ ભ્રમથી દેખાતા સર્પનું અને જગત્નું અધિષ્ઠાન જે રજ્જુ અને બ્રહ્મ, તે રજ્જુ જાણ્યેથી સર્પની, અને તે બ્રહ્મ જાણ્યેથી જગત્ની ભ્રાન્તિ નાશ પામે છે, તે (અધિષ્ઠાન પરબ્રહ્મ) હું (પ્રત્યગભિન્ન બ્રહ્મ) સ્વયં આત્મા છું. ૪.

જેનો બોધ ઈચ્છી પુણ્યશીલ મનુષ્ય પરમાત્મારૂપ શ્રીરામને નિષ્કામ થઈને મજે છે, તે શ્રીરામ જ મારો આત્મા (સ્વરૂપ) છે. (મારાથી ભિન્ન અન્ય કોઈ વસ્તુ છે જ નહિ તો) હું કોને પ્રણામ કરું? ૫.

૨. સ્વઆત્માનુ શુભ ઈચ્છનાર સાધનસપત્ર અધિકારી ૯ જ્ઞાનની સિદ્ધિઅર્થે જ વિચાર કર્તવ્ય છે તે આ છે:—

કોડહં કથમિદં જાતં કો વૈ કર્તાસ્ય વિચતે ।

ઉપાદાનં કિમસ્તીહ વિચારઃ સોડ્યમીદશઃ ॥

અપરોક્ષાનુભૂતિઃ ॥ ૧૨ ॥

હું (જીવ) કોણ છું (૧), આ (જગત્) કેમ ઉપજ્યું છે (૨), એનો કર્તા કોણ છે (૩), અને હાં ઉપાદાન કારણ) કોણ છે (૪), એવો (સદ્વિચાર) તે જ વિચાર છે. અર્થાત્ જીવ, જગત્, ઈશ્વર, અને બ્રહ્મવિષયક પરમપુરુષાર્થપ્રદ જ્ઞાનના સાધનરૂપ 'વિચાર' તેનો 'સાગર,' જેમાં વેદના સિદ્ધાન્તરૂપ અમૃત જલ ભર્યું છે—તે 'વિચારસાગર' નામક ગ્રંથ.

सूत्र, भाष्य वार्तिक प्रभृति, ग्रंथ बहु सुरवाणो;

तथापि हुं भाषा करुं, लर्पी मतिमंद अजाणो. ७.

टीका: यद्यपि सूत्र, भाष्य, वार्तिक प्रभृति नाम ते आदि लई, सुरवाणी नाम संस्कृत (भाषामां) ग्रंथ बहु छे, तथापि संस्कृत ग्रंथोथी मंदबुद्धि पुरुषोने बोध थाय नहि, अने भाषाना ग्रंथोथी मंदबुद्धि पुरुषोने पण बोध थाय छे; एथी भाषाग्रंथनो आरंभ निष्फल (छे) नहि. किन्तु संस्कृत ग्रंथोना विचारवाविपे जेओनी बुद्धि समर्थ छे नहि, तेओना निमित्त ग्रंथनो आरंभ सकल छे. ७.

३. उत्तरमीमांसानां वादरायणव्यासप्रणीत ब्रह्मसूत्र.

‘स्वल्पाक्षरमसंदिग्धं सारवद् विभ्वतोमुखं ।

अस्तोभमनवद्यञ्च सूत्रं सूत्रविदो विदुः’ ॥

स्वल्प अक्षरोवाळुं, असंदिग्ध (सदेहविनानुं) सारवाळु, (यथाधिरार)सकल दिशामां मुखवाळुं, अस्तोभ (जेमा निरर्थक शब्द नथी,) अने निर्दोष शास्त्रवाक्य ते सूत्र, एम सूत्रविद् पुरुषो जाणे छे. एवां ५५६ ब्रह्मसूत्र छे.

४. श्रीशंकरभगवत्प्रणीत ब्रह्मसूत्रउपर शारीरकभाष्य.

‘सूत्रार्थां वर्णयते यत्र पदैः सूत्रानुसारिभिः ।

स्वपदानि च वर्णयन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः’ ॥

जेमां सूत्रने अनुसार पदोए सूत्रनो, अर्थ वर्णाय छे, अने (सूत्रअनुसार पदना पर्यायरूप जे) स्वपदो ते पण जमां वर्णाय छे (एयो सूत्रना व्याख्यान-ननो ग्रंथ तेने) भाष्यविद् महाजनो ‘भाष्य’ जाणे छे.

५. शंकरशिष्य श्रीसुरेश्वराचार्य(मण्डनमिथ्र)कृत वार्तिकग्रंथ.

उक्तानुक्तद्विरुक्तादिचिन्ता यत्र प्रवर्तते ।

तं ग्रंथं वार्तिकं प्राहुर्वार्तिकज्ञा मनीषिणः ॥

(सूत्र-भाष्यमां) कथित, अकथित, पुनः कथित आदिना विचार जेमां करवामां आवे छे ते ग्रंथने, वार्तिक जाणनार बुद्धिमानो, वार्तिक कहे छे.

प्रयान्तरमां आवो पाठ पण छे:—

‘उक्तानुक्तदुरुक्तार्थव्यक्तकारि तु वार्तिकं’ ।

कथित, अकथित, दुःकथित अर्थोने स्पष्ट करनार ते वार्तिक.

૩. ડહો.

કવિકૃત ભાષાગ્રંથ વહુ, ય્યાત જગત્વિપે જ;
પણ વિચારસાગર વિના, ન સંદેહ નાશે જ.

ટીકા:-યદ્યપિ ભાષાગ્રંથ વહુ છે, તથાપિ વિચારસાગર વિના અન્ય ભાષાના ગ્રંથોવડે આત્મવસ્તુવિપે સંદેહ દૂર થાય નહિ; પનાવિપે આ હેતુ છે:-કેટલાક ભાષાગ્રંથ તો શ્રવણ કરીને રચેલા છે, જેમકે, પંચભાષા છે. તેમની પ્રક્રિયા કોઈ અંશમાં તો શાસ્ત્રને અનુસાર છે, અને શ્રવણ કરેલો જે અર્થ યદ્યર્થ ગ્રહણ નહિ થયો, તે અંશમાં શાસ્ત્રથી વિરુદ્ધ છે; યથી શ્રોતાકૃત ગ્રંથવડે સંદેહરહિત બોધ થાય નહિ. અને કોઈ ભાષાગ્રંથ કિંચિત્ શાસ્ત્ર મળીને રચેલા છે, જેમ આત્મવોધ છે. તેમનાવડે પણ સંદેહરહિત બોધ થાય નહિ, જેમકે તેઓમાં વેદાન્તની પ્રક્રિયા સંપૂર્ણ છે નહિ. અને વિચારસાગરગ્રંથમાં સંપૂર્ણ પ્રક્રિયા છે, અને વેદાન્તશાસ્ત્રના અનુસાર છે; કોઈ સ્થાનમાં પણ વિરુદ્ધ છે નહિ. અને આત્મજ્ઞાનમાં ઉપયોગી જે પદાર્થ છે, તેમનું નિરૂપણ વિસ્તારવડે કન્યું છે; યથી અન્ય ભાષાગ્રંથો જેવો આ ગ્રંથ નથી. કિન્તુ સર્વ ભાષાગ્રંથોથી આ ગ્રંથ ઉત્તમ છે. ૮.

૪. (ગ્રંથનો અનુવંધ.)

ચોપાઈ (હિંદુસ્થાની.)

નહિ અનુવંધ પિછાળ્યા જ્યાંલગો પ્રવૃત્તસુઘડ નર થાય ન ત્યાંલગો,
જાણો જેહ આ શુણે પ્રવંધ, યથી હયે કહું તે અનુબંધ. ૯.

૬. પંજાબના મનોહરદાસ નિરંજનીકૃત પદ્મશ્રી, શતપ્રશ્ની, જ્ઞાનમંજરી, જ્ઞાન-ચૂર્ણ અને વેદાન્તસાર ૫ નામે ભાષામાં પંચ ગ્રંથ છે તે 'પંચભાષા' કહેવાય છે.

૭. સાધુ માણિક્યદાસજીકૃત 'માણિક્યબોધ' જેને 'આત્મવિચાર' પણ કહે છે તે ઉપર મૂલચંદ્ર જ્ઞાની ૫ 'સારોદ્ધાર' નામક વ્યાખ્યાન કર્યું છે.

ટીકા:-અધિકારી, સંવંધ, વિષય, અને પ્રયોજન (૫ ચાર)નું નામ અનુવંધ છે. અધિકારી આદિક પ્રંથના અનુવંધ જાણ્યા ઘિના 'સુઘડ' નામ વિવેકી પુરુષની પ્રંથોમાં પ્રવૃત્તિ થાય નહિ. યથી જે અનુવંધોને જાણીને પ્રવંધ નામ પ્રંથને સાંમલે, તે અનુવંધોને હવે કહું છું. ૯.

સોરઠો,

અધિકારી, સંવંધ, વિષય, પ્રયોજન, જાર મિલ્લી,
કહે સુકવિ અનુવંધ, તેમાં અધિકારી શુણો. ૧૦

૬. (અધિકારિવર્ણન.)

હો.

જેને મલ વિક્ષેપ નહિ, કિન્તુ એક અજ્ઞાન;
સાધન ચાર સહિત નર, તે અધિકૃત મતિમાન. ૧૧

ટીકા:- (પ્રાણીમાત્રના) અંતઃકરણવિષે ત્રણ દોષ હોય છે. એક તો મલ હોય છે, યીજો વિક્ષેપ હોય છે, અને ત્રીજો આવરણ (અજ્ઞાન) હોય છે. (એ ત્રણે દોષનો નાશ કરમે કરી કર્મ, ઉપાસના અને જ્ઞાનથી થાય છે.) નિષ્કામ-કર્મે અંતઃકરણનો મલદોષ દૂર થાય છે; ઉપાસના-એ વિક્ષેપદોષ દૂર થાય છે; અને જ્ઞાને આવરણદોષ દૂર થાય છે. જે પુરુષે નિષ્કામકર્મ-અને-ઉપાસના કરીને મલ-અને વિક્ષેપદોષ દૂર કન્યા છે, અને એક અજ્ઞાન નામ સ્વરૂપનું આવરણ જેના ચિત્તમાં હોય, અને ચાર સાધનસં-યુક્ત હોય તે પુરુષ 'અધિકૃત' નામ અધિકારી છે. ૧૧.

૮. 'પુરુષ'='પુર' નામ મનુષ્યશરીર તેમાં 'ઉપતિ' નામ અશ્મ આકારે વસે છે; યથી પુરુષ એ શબ્દમાં નરનારી આદિ સર્વ જીવ ગણાય છે. સાધનચતુષ્ટયસંપન્ન પ્રમાતા વેદાન્તમાં અધિકારી છે. પછી તે ગમે તે હોય તો પણ તેને પુરુષ કહે છે.

૬. અથ ચાર સાધનનામવર્ણન.

દુહો.

પ્રથમ વિવેક, વિરાગ પછિ શમાદિ પદ્સંપત્તિ,

જોથી મુમુક્ષુતા જ એ ચારે સાધન સત્તિ

૧૨.

૭. અથ વિવેકલક્ષણ.

દુહો.

આત્મા અવિનાશી અચલ, તેથી જગત્ પ્રતિકૂલ;

પદ્મ જ્ઞાન વિવેક છે, સૌ સાધનનું મૂલ.

૧૩.

ટીકા:-આત્મા અવિનાશી નામ નાશરહિત છે, અને અચલ નામ ક્રિયારહિત છે, અને જગત્ આત્માથી પ્રતિકૂલ નામ વિપરીત સ્વભાવવાળું છે, (અર્થાત્ જગત્) વિનાશિ છે અને ચલ છે, એ જ્ઞાનનું નામ વિવેક છે એ વિવેક જ સર્વ સાધનનું મૂલ (કારણ) છે, કેમકે, પ્રથમ વિવેક થાય તો વૈરાગ્યથી આદિ લઈને ઉત્તર સાધન (પદ્સંપત્તિ અને મુમુક્ષુતા) થાય છે: અને વિવેક નહિ થાય તો ઉત્તર સાધન થાય નહિ. યથી વૈરાગ્ય શમાદિ પદ્સંપત્તિ, અને) મુમુક્ષુતા, એમનો વિવેક હેતુ (મૂલ) છે. ૧૩.

૮. અથ વૈરાગ્યલક્ષણ.

દુહો.

બ્રહ્મલોકલગી મોજ જે વહે સર્વનો ત્યાગ,

વેદ-અર્ધ-જ્ઞાતા મુનિ, તેને કહે વિરાગ.

૧૪.

૯. અથ શમાદિપદ્ (સંપત્તિ) નામ.

દુહો

શમ, દમ, શ્રદ્ધા ત્રિજી ને, સમાધાન, ઉપરામ,

છટ્ટોં તિતિક્ષા, જાણિયે, મિત્ર મિત્ર એ નામ

૧૫.

१०. अथ शमदमलक्षण.

इति.

विषयोर्था मन रोक्युं, तेने शम फंद घोर,

इंद्रियगणनुं रोक्युं, दम भागे सुधर्यात्.

१६.

११. अथ श्रद्धा अने समाधानलक्षण.

इति.

सत्य यंद गुरुवाक्य छे श्रद्धा इम विद्याम,

समाधान तेने फंदे, मनविशेष-धिनाश.

१७.

१२. अथ उपरामलक्षण.

योगात्.

साधन सहित कर्म सह्य त्यागे, विषसम लयीं विषयोर्था भागे,

दृग् लयीं नारीं थाय जीव ग्यान ज, ए लक्षण उपराम

घटाण ज. १८.

१३. अथ तितिक्षालक्षण.

इति.

आनप, शीत, क्षुधा, तृषा, पनो सहन स्थमाय,

फंदे तितिक्षा तेहने, कोयिद मुनिवर राव.

१९.

शमादि षट्मंपत्तिने, भायत साधन एक;

एम न नय साधन भणे, किंतु चार सवियेक.

२०.

टीका:-शमादि छनी जे संपत्ति नाम प्राप्ति, ते एक साधन करी गणाय छे; पथी (वियेक, विराम, षट्मंपत्ति=शम, दम, श्रद्धा, समाधान, उपराम तथा तितिक्षा, अने मुमुक्षुता ए सर्व मली,) नय साधन नहि, किंतु चार ज साधन (छे, एम) सवियेक नाम वियेकी जना फंदे छे. २०.

१. उपरति. वृत्तिने वाक्य (विषय)तुं अनालंन.

१०. अपनीकारपूर्वक अने चिन्ताविलापरहिा मुलदुःखोतुं सहन.

૧૪. મુમુક્ષુતાલક્ષણ.

દ્વહો

બ્રહ્મપ્રાપ્તિ, ને વંધની હાનિ મોક્ષનું રૂપ;

ઇચ્છા તેની મુમુક્ષુતા, ભાષે મુનિવર મૂપ. ૨૧.

ટીકા:-બ્રહ્મની પ્રાપ્તિ અને અનર્થની નિવૃત્તિ મોક્ષનું સ્વરૂપ છે. તે(મોક્ષ)ની ઇચ્છાનું નામ મુમુક્ષુતા છે. મુમુક્ષુતા અને મુમુક્ષુત્વ એ પર્યાય (સમાનાર્થબોધક) શબ્દ છે. ૨૧.

જ્ઞાનનાં આઠ સાધન.

એ ચો સાધન જ્ઞાનનાં શ્રવણાદિ ત્રણ મેલી,

તત્પદ ત્વંપદ-અર્થનું, શોધન, અષ્ટમ મેઢી. ૨૨.

ટીકા:-વિવેકાદિ (વિરાગ, પદ્સંપત્તિ, અને મુમુક્ષુતા એ) ચાર; શ્રવણ, મનન, નિદિધ્યાસન એ ત્રણ; (એમ સાત, તથા) તત્પદનાં અર્થનું અને ત્વંપદનાં અર્થનું શોધન એ અષ્ટ સાધન જ્ઞાનનાં છે ૨૨.

૧૫. અંતરંગ અને બહિરંગ સાધન.

દ્વહો.

અંતરંગ એ આઠ છે, યજ્ઞાદિક બહિરંગ;

અંતરંગ ધારે, ત્યજે બહિરંગોનો સંગ. ૨૩.

ટીકા:-પૂર્વ દુહામાં કહેલાં વિવેકાદિક આઠ તે (જ્ઞાનનાં)

૧૧. અજ્ઞાનકલ્પિત મહાકારાદિયી દેશાન્ત મધોને, સ્વસ્વરૂપના બોધેન્દ્રી, મૂલવાની ઇચ્છાવાન્ પુણ્ય તેનો ધર્મ.

૧૨. 'તે' (ईश्वर) પદનું.

૧૩. 'તું' (जीव) પદનું.

૧૪. જડચેતનનું તાદાત્મ્ય-(સંયોગ-મિશ્રણ)-પ્રતીત યાય છે તેમાંથી વિવેકેન્દ્રી મલકત જડમાગને દૂર કરી શુદ્ધિ કરવી.

અંતરંગસાધન કહેવાય છે અને યજ્ઞાદિક કર્મ વહિરંગ-સાધન કહેવાય છે, તેઓમાંથી જિજ્ઞાસુ વહિરંગ(સાધનો)ને ત્યાગે, અને અતરંગ(સાધનો)ને ધારે જેમનુ શ્રવણમાં અથવા જ્ઞાનમાં પ્રત્યક્ષ ફલ હોય, તે અતરંગ સાધન કહેવાય છે વિવેકાદિક ચાર(સાધન)નો શ્રવણમાં ઉપયોગ છે, કેમકે વિવેકાદિક વિના વહિર્મુખને શ્રવણ વને નહિ. તેમ શ્રવણ, મનન (અને) નિદિધ્યાસનનાં જ્ઞાનમાં ઉપયાગ છે. શ્રવણાદિક વિના જ્ઞાન થાય નહિ તેમ તત્પદના અર્થ અને ત્વંપદનો અર્થ જાણ્યા વિના પળ, અભેદજ્ઞાન થાય નહિ, એ રીતિએ વિવેકાદિ ચાર સાધનાના શ્રવણમાં ઉપયોગ છે, અને શ્રવણાદિ ચારે સાધનોનો જ્ઞાનમાં ઉપયોગ છે એથી આઠ અંતરંગ સાધન છે.

૧૬ જેનુ જ્ઞાનમાં અથવા શ્રવણમાં પ્રત્યક્ષ ફલ હોય નહિ, કિંતુ અત કરણની શુદ્ધિ જેનુ ફલ હોય, તે જ્ઞાનનુ વહિરંગ સાધન કહેવાય છે. એમ યજ્ઞાદિક કર્મ છે યદ્યપિ યજ્ઞાદિક કર્મ સસારનાં સાધન છે, તેમનાથી અત કરણની શુદ્ધિ પણ કહેવી સમર્થ નહિ, તથાપિ (તે યજ્ઞાદિક કર્મ) સકામ-પુરુષને સસારના હેતુ છે, અને નિષ્કામપુરુષને અત કરણની શુદ્ધિના હેતુ છે એ રીતિએ નિષ્કામપુરુષને અત કરણની શુદ્ધિદ્વારા (યજ્ઞાદિક કર્મ) જ્ઞાનના હેતુ છે, એથી (તે યજ્ઞાદિક) વહિરંગસાધન કહેવાય છે અને વિવેકાદિક અતરંગસાધન કહેવાય છે. [વહિરંગ નામ દૂરનુ છે, અને અતરંગ નામ સમીપ નુ છે] યજ્ઞાદિક કર્મ અને તેમનાં સાધન-સ્ત્રોધનપુત્રાદિ-

૧૫ અન્તર (સમીપવર્તિ) અગ, સાક્ષાત્ ઉપકારક હેતુ-નરણ-ઉપાય

૧૬ વહિર્ (દૂરવર્તિ) અગ, પરપરાથી ઉપકારક હેતુ-નરણ ઉપાય

૧૭, જેને (વ્રહ્મ) જાણવાની ઇચ્છા છે તે

કો-ને, (જે) ત્યાગે, તે જ્ઞાનનો અધિકારી છે. જ્ઞાનના અધિકારીમાં યજ્ઞાદિક સંભવે નહિ યથી દૂર છે.

૧૭. વિવેકાદિકોની અંતરંગસાધનતા.

વિવેકાદિક જ્ઞાનના અધિકારીમાં સંભવે છે યથી છે. સમીપ તેમાં પળ આટલો ભેદ છે-વિવેકાદિકોનો શ્રવણમાં ઉપયોગ છે, અને શ્રવણાદિકોનો જ્ઞાનમાં ઉપયોગ છે. યથી વિવેકાદિકોની અપેક્ષાથી શ્રવણાદિક અંતરંગ છે, તેમની (શ્રવણાદિકની અપેક્ષાથી વિવેકાદિક વહિરંગ છે. યદ્યપિ વિવેકાદિક પળ જ્ઞાનનાં અંતરંગ સાધન જ સર્વ ગ્રંથોમાં કહ્યાં છે, વહિરંગ નથી કહ્યાં, તથાપિ વિવેકાદિકોનું, જ્ઞાનના સાધન શ્રવણમાં પ્રત્યક્ષ ફલ છે. અને શ્રવણાદિકોની પેઠે વિવેકાદિક, જિજ્ઞાસુને ઉપાદેય (પ્રહણ-યોગ્ય) છે; યજ્ઞાદિકોની પેઠે (શ્રવણાદિક,) જિજ્ઞાસુને હેય(ત્યાગ-યોગ્ય) નથી યથી અંતરંગ (સાધન) કહ્યાં છે અને યજ્ઞાદિકોની અપેક્ષાથી પળ (વિવેકાદિક) અંતરંગ છે, યથી પળ અંતરંગ સાધનોમાં કહ્યાં છે.

૧૮. જ્ઞાનનાં મુખ્ય અંતરંગ સાધન (મહાવાક્ય છે.)

શ્રવણ-મનન-નિદિધ્યાસનનાં લક્ષણ.

અને વિચારથી જોડયે તે જ્ઞાનનાં મુખ્ય અંતરંગ સાધન તત્ત્વમસિ (તે તું છે.) આદિ મહાવાક્ય છે, શ્રવણાદિક પળ નહિ. કેમ કે યુક્તિષ્ઠ વેદાન્તવાક્યોના તેત્પર્યનો નિદ્ધય (૫)

૧૮. તાત્પર્યનિર્ણયાર્થ પદ્ધતિગ.

પ્રતિવાન પ્રખરણના તાત્પર્ય અર્થનો નિર્ણાયક પદ્ધતિગરૂપ મુક્તિ શ્લોક છે. અનોપ વેદાન્ત], આદિ મધ્ય અને અન્તમી. સધિદાનન્દ પ્રદર્શિને જ તાત્પર્ય છે. તે મધ્યમ સમગ્રવા મુક્તિના પદ્ધતિગની વ્યસ્થા છે.

ઉપક્રમોપસંહારાવભ્યાસોડપૂર્વતા ફલં ।

અર્થવાદોપપત્તી ચ લિઙ્ગં તાત્પર્યનિર્ણયે ॥

(૧) ઉપક્રમ અને ઉપસંહાર એ બેની એકરૂપતા, (૨) અમ્યાસ, (૩) અપૂર્વતા, (૪) ફલ, (૫) અર્થવાદ, (૬) ઉપવર્તિ, એ (છ લિંગ છે, તે પ્રત્યેક,) તાત્પર્યનિર્ણયવિષે લિંગ (ગુણાર્થતાપક અથવા અનુમાનસાધનરેતુ) છે.

(૧) પ્રવરણેકરી પ્રતિપાદન કરવાને યોગ્ય જે સચ્ચિદાનન્દ એક જ અદ્વિતીય બ્રહ્મ છે તેનું જ પ્રકરણના આદિવિષે તથા અન્તવિષે જે પ્રતિપાદન તે, 'ઉપક્રમ—ઉપસંહાર એ બેની એકતારૂપ' પ્રથમ લિંગ છે. જેમ છાન્દોગ્ય-ઉપનિષદ્ના પથ પ્રપાઠકમાં પ્રકરણના આરંભે સદાલક આરુણિમુનિ શ્વેતકેતુપુત્રને ઉપદેશે છે કે—'સદેવ સોમ્યેદમ પ્ર આસીદિંક્રમેવાદ્વિતીયમ્' (૨-૧) = 'હે સોમ્ય ! ઉપવર્તિથી પૂર્વે એક જ અદ્વિતીય સત્ જ હોતુ હ્યુ' એવો ઉપક્રમ (=પ્રથમ આરમ) કરીને પ્રકરણને અન્તે 'એતદ્વાત્મ્યમિદં સર્વં' (૨૬-૩) = 'આ સર્વ જગત્' એ (સત્સ્વરૂપ) આત્મમાવવાહુ છે. ' એવો ઉપસંહાર (=સમાપ્તિ) કર્યો છે. વક્તાની દૃષ્ટારૂપ તાત્પર્યનું નિશ્ચાયક એવું ઉપક્રમ ઉપસંહારની એકતારૂપ એ પ્રથમ લિંગ છે.

(૨) પ્રવરણેકરી પ્રતિપાદન કરવા યોગ્ય જે બ્રહ્મ, તેનું પ્રકરણના મધ્યમાં પુનઃ પુનઃ પઠન વા પ્રતિપાદન તે, 'અમ્યાસ' (=આવૃત્તિ) નામક દ્વિતીય લિંગ છે. જેમ છાન્દોગ્ય ઉપનિષદ્ના તે જ પ્રપાઠકમાં અષ્ટમ સ્કંધથી આરંભી ષોડશસ્કંધપર્યન્ત 'તત્ત્વમસિ' = 'તે તું છુ' એવો નિર્બુદ્ધ સદાત્મભાવ નવ વાર ઉપદેશ્યો છે. इहां 'તે' નામ, તે પદનો જે લક્ષ્યાર્થ પરમાર્થ સત્ જગત્નું પ્રત્યક્ સ્વરૂપ—છે, તે છે, (તે તારો પણ આત્મા છે એથી) 'તું' નામ, તું પદનો લક્ષ્યાર્થ આ કાય કરણસંઘાતરૂપ શરીરમાં, (જલાદિમાં સૂર્ય પ્રતિબિંબરૂપે પ્રવેશે છે તેમ,) જે પ્રવિષ્ટ છે, તે છે. (અસિ) 'હુ' એ ત્રિયાપદેકરીને 'તે હુ' એ બે શબ્દની એકતા પ્રહણ થાય છે. તેથી વિચાર—અનૃત—અધિનૃતજીવાત્મસ્વરૂપ જે વિજ્ઞાન તેનું નિવર્તક એ 'તત્ત્વમસિ' વાક્ય, તે પુનઃ પુનઃ નવ વાર ઉપદેશી તત્પદના અને ત્વપદના લક્ષ્યાર્થ—બ્રહ્મ અને આત્મા—તેમના એક્યનું જે પ્રતિપાદન તે 'અમ્યાસ' લિંગ છે.

(૩) પ્રવરણેકરી પ્રતિપાદ્ય જે બ્રહ્મ, તેની તે પ્રકરણથી ભિન્ન પ્રમાણેકરી અવિષયતા તે, 'અપૂર્વતા' (=પ્રમાણાન્તરથી અપ્રાપ્તિ) નામક તૃતીય લિંગ છે. જેમ છાન્દોગ્ય ઉપનિષદ્ના તે જ પ્રપાઠકમાં—'અત્ર વાન કિલ સત સોમ્ય ન નિભાલ્યસેડૅત્રૈવ કિલેતિ' (૧૩-૨) = 'હે સોમ્ય ! અત્ર જ રારે (તેજ, જલ અને પૃથ્વીનું કાર્ય જે વેદ, પૂર્વે કહ્યો છે, તેમાં જ, યદ્યપિ આ જગતનું મૂલ—કારણ) સત્ (—બ્રહ્મ—વિદ્યમાન છે પણ શ્ચિદ્રયથી) તુ નિભાલી—જોદ—શક્તો નથી. (તથાપિ એમાં જ (દેહમાં—જગત્માં) નિશ્ચયથી તે છ' એમ ઉપદેશી બ્રહ્મપ્રાપ્તિનો ઉપાય ત્યાં સૂચવ્યો છે. ત્યાં એવો પ્રસંગ છે કે, એક ઘટમાંના જલમાં લવણનો પિંડ રાને શિષ્યપાસે જ નલાથી બીજે દિવસે પ્રાપ્ત કાલમાં તે લવણપિંડ કહાઢી આપવા ગુરુદ્ વહ્યુ. તે લવણપિંડ

ચક્ષુથી અને સ્પર્શથી જાણવામાં આવ્યો નહિ. ગુરુષ્ણ ઉપાયાન્તર દર્શાવ્યો કે જિહ્વાથી જાણશે. એટલે આચમન કન્યેથી તે જ જલમાં લવણપિંડ લીન થયેલો વિદ્યમાન છે, એ શિષ્યે જાણ્યું, એમ પ્રત્યક્ષાદિ પ્રમાણાન્તરેકરી અગમ્ય સત્ બ્રહ્મ તેની પ્રાપ્તિસાધ તેનાં ઉપનિષદાદિમાં જે પ્રમાણવાક્યો અને પ્રકારાન્તરનું સૂચન તે ઉપનિષદાદિમાં 'અપૂર્વતા લિંગ' છે.

(૪) પ્રકરણેકરી પ્રતિપાઘ જે સચ્ચિદાનન્દ બ્રહ્મ, તેના જ્ઞાનથી તેની પ્રાપ્તિ-રૂપ પ્રકરણવિષે જે શ્રૂયમાણ (સંભળાતું) પ્રયોજન તે, 'ફલ' (=પ્રધાન લાભ) નામક ચતુર્થ લિંગ છે. જેમ છાંદોગ્યોપનિષદ્ના તે જ પ્રપાઠકમાં, 'અથ સમ્પત્સ્ય ઇતિ' (૧૪-૨) = 'સ્વારે જ (સત્ બ્રહ્મને) પામશે', અર્થાત્ કોઈ સત્ બ્રહ્માત્મવિદ્ બ્રહ્મિષ્ઠે દર્શાવેલા માર્ગેકરી વિરક્ત, અને અવિદ્યારૂપ મોહપટના બંધનથી મોક્ષિત, પુરુષ, પોતે સદાત્માને પામીને સુખી-નિર્વૃત્ત-યશો. જ્ઞાનપ્રાપ્તિસમ-કાલ જ શરીરાદિ દૃશ્યવિષે આત્મભાવના ત્યજીને સદાત્મૈકત્વદર્શી બ્રહ્મવિદ્ મુક્તપુરુષને સદાત્મસ્વરૂપાવસ્થાનરૂપ સંપત્તિનો તેટલા કાલમુધી જ વિલંબ છે, જેટલા કાલમુધી જે પ્રારંભ કર્મોથી શરીરનો આરંભ થયો છે, તે કર્મોનો ભોગેકરી ક્ષય થાય છે; પછી તે આત્મવિત્ કૃતાર્થ પુરુષને વિદેહકૈવલ્યની પ્રાપ્તિ થાય છે. એમ અદ્વિતીય સદ્બ્રહ્મના જ્ઞાનથી સચ્ચિદાનન્દસ્વરૂપ બ્રહ્મની પ્રાપ્તિરૂપ પરમ પુરુષાર્થ ઉપનિષદાદિમાં શ્રૂયમાણ છે તે તેમાં 'ફલલિંગ' છે.

(૫) પ્રકરણ પ્રતિપાઘ જે સત્-બ્રહ્મ-તેનું પ્રશંસન (ગુણકીર્તન કરી સ્તુતિ, અથવા સત્થી વિપરીત જે અદ્વૃત-જહ તેની નિન્દા) પ્રકરણવિષે હોય તે, 'અર્થવાદ' (=ગુણવાદ) નામક પંચમ લિંગ છે. (તે અર્થવાદ ત્રિવિધ છે- (૧) ગુણવાદ, (૨) અનુવાદ, (૩) મૂર્ત્યાર્થવાદ.) જેમ છાંદોગ્યુપનિષદ્ના તે જ પ્રપાઠકમાં, 'તમાદેશમપ્રાક્ષ્યો યેનાશ્રુતં શ્રુતં ભવતિ અમતં મત-અવિજ્ઞાતં વિજ્ઞાતં-ઇતિ' (૧-૨) = 'કેવલ શાસ્ત્ર અને આચાર્યના ઉપદેશથી ગમ્ય અને જેણેકરી પરબ્રહ્મ ઉપદેશાય છે એવો) તે આદેશને પૂછ્યો છે, જે આદેશેકરીને અન્યત્ અશ્રુત (નહિ સાંભળેલું) પણ શ્રુત (સાંભળેલું) થાય છે, અમત (અતર્કિત હોય તે) મત (તર્કિત) થાય છે, અવિજ્ઞાત (અનિશ્ચિત હોય તે) વિજ્ઞાત (નિશ્ચિત) થાય છે. ' એ પ્રકારે જે સત્ બ્રહ્મના ઉપદેશનું અદ્વૃત પ્રશંસન તે ઉપનિષદાદિમાં 'અર્થવાદલિંગ' છે.

(૬) પ્રકરણપ્રતિપાઘ સત્-બ્રહ્મ-તેનું યુક્તિઓષ અને દૃષ્ટાન્તોષકરી પ્રતિપાદન તે, 'ઉપપત્તિ' (=નિર્ણાયકયુક્તિ) નામક પટ્ટ લિંગ છે. જેમ છાંદોગ્ય-ઉપનિષદ્ના તે જ પટ્ટપ્રપાઠકમાં, 'યથા સોમ્યૈકેન મૃત્પિણ્ડેન સર્વં મૃષ્મયં વિજ્ઞાતં સ્યાત્, વાચારંભળં વિકારો નામધેયં મૃત્તિકેત્યેવ સત્યં'

श्रवणं कहेवाय छे. जीवब्रह्मना अभेदनी साधिका अने भेदनी वाधिका युक्तिओए अद्वितीय ब्रह्मनुं चिंतन मननं कहेवाय छे. अनात्माकारवृत्तिना व्यवधानरहित ब्रह्माकार-वृत्तिनी स्थिति निदिध्यासनं कहेवाय छे. निदिध्या-

(१-४)=हे सोम्य ! जेम (लोकमां) एक मूर्तिपटने जाण्यावडे ते मूर्तिपण्ड छे कारण जेनुं, एवा घट रुचक (पात्रआदि) सर्व मृण्मय (मृद्विकार समूह) छे एम जाणेहुं थाय छे. (केम के कार्यनु कारणसाथे अनन्यत्व छे, तेथी कारण जाण्याथी तेनां सर्व कार्य जाणेलां थाय छे.) (कारणना कार्यरूप जे विकार छे ते वाणीनुं अवलंबन मात्र-नाम ज केवल-छे, परमार्थथी (कारणरूप) मूर्तिका ए ज सत्य वस्तु छे, ए प्रकारे नामरूपक्रियावाहुं विवृत जगत् रूप कार्य प्रतीत थाय छे ते सर्वनुं कारण एक ज अद्वितीय सत्-ब्रह्म-छे ते सत् जाण्याथी-सर्व जाणवामां आवे छे; जेम मूर्तिकाना विकार घटपात्रादिनुं कारण मूर्तिका जाण्येथी तेनां सर्व कार्य जाणवामां आवे छे. ए आदि दृष्टान्तोएकरी जे सत्-ब्रह्म-नुं प्रतिपादन ते उपनिषदादिमां 'उपपत्ति लिंग' छे.

ए रीतिए सर्व उपनिषदोनां वाक्योनी कृतार्थता, सत् (ब्रह्म) परत्वारूप तात्पर्य छे, ए ज छे. छान्दोग्यउपनिषदनी पष्ठ अध्याय परमार्थ तत्त्व-उपदेश-प्रधानपर छे. तेनुं तात्पर्य, सत् ब्रह्म अने प्रत्यग आत्माना एकत्व निर्णयपर छे. ए प्रकारे गुह्यार्थशापक पङ्क्तिओएकरी शास्त्रोनां प्रकरणोनुं तात्पर्य विचारबुं अने निश्चय करवो.

१९. पंचदशीविषे तृप्तिदीपमां विद्यारण्यमुनि वदे छे के.—

वेदान्तानामशेषाणामादिमध्यावसानतः ।

ब्रह्मात्मन्येव तात्पर्यमिति धीः श्रवणं भवेत् ॥ १०१ ॥

(स्वतःसिद्ध ब्रह्म आत्माना एकत्वविषे) सकल वेदान्त (शास्त्रो) नुं आदि-मध्य अन्तथी ब्रह्मरूप प्रत्यगात्माविषे ज तात्पर्य छे (तेना अर्थनो गुरुमुखाद्वारा) तेवो निर्णय थाय ए 'श्रवण' छे. तेने 'वेदान्तविचार' पण कहे छे.

२०. वेदान्तनो (ब्रह्मात्माना) एकत्वरूप जे तात्पर्यार्थ, तेनी संभावनासार बुद्धिस्वास्थ्यकारी श्रुतिअविरोधिनी युक्तिओएकरी तेना अर्थनु पुनः पुनः चिन्तन ते 'मनन' कहेवाय छे.

२१. पूर्वोक्त श्रवणमननवडे जे शात, अने एकतानताएकरी साध्य जे ब्रह्मात्मैकत्व, तेनुं निरन्तर चिन्तन ए 'निदिध्यासन' छे.

निरन्तरं विचारो यः श्रुतार्थस्य गुरोर्मुखात् ।

तन्निदिध्यासनं प्रोक्तं तच्चैकाग्र्येण लभ्यते ॥

सननी परिपक्वा अवस्थाने ज समाधि कहे छे. एथी समाधिनी पण निदिध्यासनमां अंतर्भाव छे, पृथक् साधन नथी. ए श्रवण, मनन, अने निदिध्यासन, ज्ञाननां साक्षात् साधन नथी; किंतु बुद्धिना दोष जे असंभावना अने विपरीतभावना तेनां नाशक छे. [संशय (=संदेह)ने असंभावना कहे छे, अने विपर्ययने विपरीतभावनां कहे छे.]

१९. (श्रवणादिने परंपराए ज्ञाननी हेतुता छे.)

श्रवणेकरी प्रमाणनो संदेह (संशय) दूर थाय छे. अने मननेकरी प्रमेयनो संदेह दूर थाय छे. वेदान्तवाक्य

ए निदिध्यासन साधनकोटिनुं छे. तेनो परिपाक यई फलभूत साध्य जे साक्षात्कार छे, जे सप्तभूमिकामानी 'सत्त्वापत्ति' नामक चतुर्थभूमिका पण गणाय छे, तेनो पण 'निदिध्यासन' शब्दे व्यवहार कराय छे. तेनुं लक्षण आ छे:—देहादि विजातीयप्रत्यय(वृत्ति)ना तिरस्कारपूर्वक ब्रह्मात्मैकत्वाकार सजातीयप्रत्ययना प्रवाहेकरी ध्यानध्येयाकारवृत्तिरहित ब्रह्माकारमात्रताएकरी स्फुरण. एने 'समाधि' पण कहे छे.

वार्तिककार 'निदिध्यासन'नुं लक्षण आ प्रमाणे आपे छे.—

अपरायत्तबोधो हि निदिध्यासनमुच्यते ॥

अपराधीन बोध, वा बोधविषयरहित स्वतंत्र बोध, वा अनात्मवृत्ति निरसन ज निदिध्यासन कहेवाय छे.

२२. 'आ रज्जु छे वा सर्प छे' ए प्रकारे कोटिद्वय(=पक्षद्वय)ने अवलंबन वा विषय करवावाञ्छु ज्ञान. वा एरु धर्मीमां विरुद्धकोटिद्वय-अवगाहि ज्ञान. जेम के 'वेदान्तमां—आत्मा कर्तृत्वादिधर्मरहित छे वा कर्तृत्वादिधर्मरहित छे' इत्यादि ए संशय-ज्ञान कहेवाय छे.

२३. रज्जु होय त्यां 'आ सर्प छे' एवी अविद्यानी वृत्ति. जेमके:—'देहादिरूप ज आत्मा छे' इत्यादि ए विपरीतज्ञान कहेवाय छे. भ्रम, मिथ्याज्ञान, ज्ञानाध्यास, भ्रान्तिज्ञान, विपरीतज्ञान आदि पण तेने कहे छे. अतत्मां (जे ते नथी तेमां) ते बुद्धि. ए ज्ञानमां एककोटि(पक्ष)नुं अवलंबन होय छे. कोई जलाशयने तीरे वृक्ष होय तेनुं प्रतिबिंब जलमां ऊंधुं जणाय छे. त्यां बिबादिने जोई योग्य विचार कर्त्या बिना जलमां जेवो जणाय छे तेवो, ऊंधो वृक्ष छे, एम मानी लेखुं ए 'विपरीतभाषना' छे.

અદ્વિતીય બ્રહ્મનાં પ્રતિપાદક છે, અથવા અન્ય અર્થનાં પ્રતિપાદક છે, એવો પ્રમાણમાં સંદેહ થાય, તે શ્રવણવતે દૂર થાય છે. અને જીવબ્રહ્મનો અભેદ સત્ય છે, અથવા ભેદ સત્ય છે, એવો પ્રમેયમાં સંદેહ થાય તે મનનવતે દૂર થાય છે. દેહાદિક સત્ય છે અને જીવબ્રહ્મનો ભેદ સત્ય છે, એવા જ્ઞાનને વિપરીતભાવના કહે છે. [તેને જ વિપર્યય કહે છે] તે (વિપરીતભાવના)ને નિદિધ્યાસન દૂર કરે છે. એ રીતિએ શ્રવણાદિકત્રય, અસંભાવના-વિપરીતભાવનાનાં નાશક છે; અને અસંભાવના અને વિપરીતભાવના જ્ઞાનનાં પ્રતિવંધક છે, એથી જ્ઞાનના જે પ્રતિવંધક તેના નાશદ્વારા શ્રવણાદિક જ્ઞાનના હેતુ કહેવાય છે; સાક્ષાત્ હેતુ નહિ.

૨૦. (અર્વાંતરવાક્ય અને મહાવાક્યને જ્ઞાનની હેતુતા.)

જ્ઞાનનાં સાક્ષાત્ સાધન શ્રોત્રસંવંધિ વેદાંતવાક્ય છે. તે વેદાંતવાક્ય વે પ્રકારનાં છે:-એક અર્વાંતરવાક્ય છે અને એક મહાવાક્ય છે. [પરમાત્માના અથવા જીવના સ્વરૂપનું ઘોષક જે વાક્ય, તે અર્વાંતરવાક્ય કહેવાય છે જીવપરમાત્માની એકતાનું ઘોષક વાક્ય તે મહાવાક્ય કહેવાય છે.] અર્વાંતરવાક્યે પરોક્ષ જ્ઞાન થાય છે. મહાવાક્યે અપરોક્ષ જ્ઞાન થાય છે. “બ્રહ્મ છે” એ જ્ઞાનને પરોક્ષજ્ઞાન કહે છે. “હું બ્રહ્મ છું” એ જ્ઞાનને અપરોક્ષજ્ઞાન કહે છે.

“ત્વં બ્રહ્માસિ” (નામ ‘તું બ્રહ્મ છું,’) એવું આવાયે ઉચ્ચારણ કર્યું જે વાક્ય, તેનો શ્રોતાના કર્ણે સંવધ થતાં જ (“અહં બ્રહ્માસ્મિ”) “હું બ્રહ્મ છું” એવું અપરોક્ષજ્ઞાન શ્રોતાને થાય છે. અને શ્રોતાના કર્ણે વાક્યનો સંવધ થયા વિના જ્ઞાન થાય નહિ, એથી શ્રોત્રસંવંધિ વાક્ય જ જ્ઞાનનો હેતુ છે. શ્રોત્રસંવંધિ અર્વાંતર વાક્ય પરોક્ષ જ્ઞાનનો હેતુ છે, અને શ્રોત્રસં-

વંધિ મહાવાન્ય અપરોક્ષ જ્ઞાનનો હેતુ છે. મહાવાન્યે કરી સર્વને અપરોક્ષ જ જ્ઞાન થાય છે, પરોક્ષ થતું નથી.

૨૧. (વેદાંતના એકદેશીનું જ્ઞાનની હેતુતાવિષે મત.)

અને એકદેશીનું આ મત છે-શ્રવણ-મનન-નિદિધ્યાસનસંહિત વાક્યથી અપરોક્ષ જ્ઞાન થાય છે. કેવલ વાન્યથી પરોક્ષ જ્ઞાન થાય છે, અપરોક્ષ નહિ. જો કેવલ વાક્યથી જ અપરોક્ષ જ્ઞાન થાય તો, શ્રવણ, મનન, નિદિધ્યાસન વ્યર્થ થવાનાં. યદ્યપિ સિદ્ધાન્ત મતમાં-‘કેવલ વાન્યથી અપરોક્ષ જ્ઞાન થાય છે, અને શ્રવણાદિકોથી અસંભાવના વિપરીતભાવનાનો નાશ થાય છે.-‘પથી શ્રવણાદિક વ્યર્થ નથી’.-તથાપિ જે વસ્તુનું અપરોક્ષ જ્ઞાન થાય તેવિષે અસંભાવના વિપરીતભાવના કોઈને પણ હોય નહિ; પથી કેવલ વાક્યથી અપરોક્ષજ્ઞાનવાદી(જે સિદ્ધાન્તી, તે)ના સિદ્ધાન્તમાં “તત્ત્વમસિ” (નામ ‘તે તું હું’) આદિક વાક્યોએ બ્રહ્મનું અપરોક્ષ જ્ઞાન થયેથી, પછી અસંભાવના વિપરીતભાવના સંભવે નહિ. પથી શ્રવણાદિક સાધન વ્યર્થ થવાનાં. અને ‘કેવલ વાન્યથી પરોક્ષજ્ઞાન થાય છે, અને શ્રવણ, મનન અને નિદિધ્યાસન કન્યાથી અપરોક્ષ જ્ઞાન થાય છે,’ એ મતમાં શ્રવણાદિક વ્યર્થ નથી. એ ઘટ્ટ ધ્રંચકારાંનું મત છે, તથાપિ એ મત સમીચીન (યથાર્થ સત્ય) નથી, કેમકે :-

૨૨. (ઉક્ત એકદેશીના મતની અસમીચીનતા.)

શબ્દનો આગો સ્વભાવ છે:-જે વસ્તુ વ્યવહિત્ત હોય તે- (વસ્તુ)નું શબ્દથી પરોક્ષ જ જ્ઞાન થાય છે; કોઈ પ્રકારથી વ્યવહિત વસ્તુનું શબ્દેકરી અપરોક્ષ જ્ઞાન થાય નહિ. જેમ વ્યવહિત સ્વર્ગનું અને ઇંદ્રાદિક દેવોનું શાસ્ત્રરૂપી શબ્દથી પરોક્ષ

૨૪. દેશરૂત વા કાલરૂત અન્તરાય તે વ્યવધાન. વ્યવધાનવાળા વસ્તુને વ્યવહિત કહે છે. જે વસ્તુ દૂરદેશમાં હોય તે ‘દેશેકરી’ વ્યવહિત છે. જે વસ્તુ મૂન વા મરિપ્પદ કાલમાં હોય તે ‘કાલેકરી’ વ્યવહિત છે.

જ જ્ઞાન થાય છે, અને જે વસ્તુ અવ્યવહિતં હોય, તેનું શબ્દેકરી અપરોક્ષજ્ઞાન અને પરોક્ષજ્ઞાન ઘટે થાય છે. જ્યાં અવ્યવહિત વસ્તુને શબ્દ, 'અસ્તિ' (= છે) રૂપથી યોગ્ય કરે, ત્યાં અવ્યવહિતનું પણ પરોક્ષ જ્ઞાન થાય છે:-જેમ 'દેશમો પુરુષ છે.' એ રીતિએ 'અસ્તિ' (છે) રૂપે યોગ્ય કર્યો જે અવ્યવહિત દેશમ (પુરુષ) તેનું શબ્દેકરી પરોક્ષ જ્ઞાન થયું છે, અને જ્યાં અવ્યવહિત વસ્તુને 'આ છે' એ રીતિએ શબ્દ યોગ્ય કરે, ત્યાં અવ્યવહિતનું શબ્દેકરી અપરોક્ષ જ્ઞાન જ થાય છે, પરોક્ષ નહિ.

૨૫. અન્તરાયરહિત. એક પદાર્થવદે સીમાપદાર્થનું આચ્છાદન તે વ્યવધાન-તિરોધાન-તે વાહું તે 'અવ્યવહિત' ને વ્યવધાન વિનાનું તે 'અવ્યવહિત.'

૨૬. એ પ્રસંગના દૃષ્ટાન્તની આ આખ્યાયિકા છે:-ફોઈ એક ગ્રામનાં દશ બાલક એકત્ર યદે પરગામ જતાં હતાં. માર્ગમાં મૃગજલની નદી આવી તેને ઉતર્યા. નદીમાં કોઈ ઘુઢી ગયું તો નથી એવી શંકાથી, તેમાંના એક પ્રમુલ્લ બાલકે ગણના કરી, તેમાં પોતાની ગણના ન કરી, એથી નર થયા. એમ પ્રથમ પોતાનું અગ્રહણ યતાં અન્યથાગ્રહણ યદે મય થયું, અને પ્રાન્તિયી કહેવા લાગ્યો કે-'દશમો માસતો નથી અને છે નહિ.' એમ અજ્ઞાનનું દ્વિવિધ આવરણ યતાં રોદનાદિ-રૂપ વિશેષ થયો, અને સર્વ શોકમાં પડ્યા. એવામાં કોઈ યયાર્થવત્તા આત્મ પુરુષ આવ્યો. તેણે અજ્ઞાનથી રોતાં બાલકોનો વૃત્તાન્ત સાંભળી પ્રથમ અવાન્તર વાક્યરૂપ 'દશમ છે' એમ કહ્યું. તેને શ્રુણીને તે બાલકને 'દશમ' છે, એવું પરોક્ષ જ્ઞાન થયું અને પછી તેણે પૂછ્યું કે:-'દશમ ક્યાં છે ?' આત્મ પુરુષે ઉત્તર આપ્યું કે:-'તે (દશમ) તું છું' એમ વોધ યતાં જ તે બાલકને-'તે (દશમ) હું છું'-એવું અપગોષ્ઠ જ્ઞાન થયું, અને તેથી અજ્ઞાનવૃત્ત આવરણસહિત રોદનાદિ વિશેષનો નાશ થયો અને હર્ષનો આર્વિર્માર્વ થયો. એ દૃષ્ટાન્ત વા આલ્યાયિકાની સંગતિ જીવ પ્રતિ આમ છે:-મનુષ્યજીવે, સ્થૂલ, સૂક્ષ્મ, કારણ એ શરીરત્રય, જાગ્રત્, સ્વપ્ન, સુષુપ્તિ એ અવસ્થાત્રય; અને વિશ્વ, તૈજસ, પ્રાજ્ઞ એ તેના અભિ-માનિત્રય, એમ નવની (અથવા પોતા આત્મા) વિના, શરીરસંઘાતની કોઈ પણ સંલ્યાની,) સાથે મલીને, સંસારરૂપ મૃગજલની નદીમાં પ્રવેશ કર્યો છે. અને પછી અજ્ઞાનથી આત્માને જ વિસરી, શોકમોહેકરી ડુરલી થયો છે. કોઈ બ્રહ્મણિઃ શ્રોત્રિય શુદ્ધરૂપ આત્મપુરુષના સમાગમથી તે જીવને, આત્મા-સાક્ષી-નું પ્રત્યક્ષ જ્ઞાન યદે, હર્ષ-તૃપ્તિ-પરમાનન્દનો આર્વિર્માર્વ થાય છે.

જેમ:—‘દશમો તું છું.’ એ રીતિએ શબ્દે ઘોષન કન્યો જે ‘દશમો’ તેનું અપરોક્ષ જ્ઞાન જ થયું છે; તેમ બ્રહ્મ, સર્વજ્ઞો આત્મા હોવાથી, અત્યંત અવ્યવહિત છે. તેને અઘાંતર વાક્ય અસ્તિરૂપથી ઘોષન કરે છે. એથી અવ્યવહિત બ્રહ્મનું પણ અવાન્તરવાક્યથી પરોક્ષજ્ઞાન થાય છે. અને ‘દશમો તું છું’ એ વાક્યની પેઠે શ્રોતાના આત્મારૂપ કરીને બ્રહ્મને મહાવાક્ય ઘોષન કરે છે, એથી મહાવાક્યથી અવ્યવહિત બ્રહ્મનું પરોક્ષજ્ઞાન સંભવે નહિ, કિંતુ અપરોક્ષ જ્ઞાન જ થાય છે.

૨૩. અને (પૂર્વપક્ષીએ) જે કહ્યું:—

‘જે વસ્તુનું અપરોક્ષજ્ઞાન થાય, તેનાવિષે અસંભાવના-વિપરીતમાત્રના થાય નહિ, એથી શ્રવણાદિ વિફલ થઈ જાય છે.’ તે શંકા વને નહિ. કેમકે:—

જેમ રાજાને મંદુરું નેત્રેકરી અપરોક્ષજ્ઞાન થયે સતે પણ

૨૭. આ રહસ્ય છે:—જેમ દશમ પુરુષને, પ્રત્યક્ષ કરવાની સામગ્રી જે મન અને નેત્ર, તે હતાં, તો પણ અપરોક્ષ બોધ થયો નહિ, કિંતુ ‘દશમ તુ છું’ એ વાક્યથી જ અપરોક્ષ બોધ થયો. એથી દશમને અપરોક્ષબોધરૂપ પ્રમાણાનુ ‘દશમ તુ છું’ એ વાક્ય—કરણ છે, તેથી તે વાક્યે પ્રમાણ છે. તેનું મન અને નેત્ર સહકારી છે. તેમ બ્રહ્મના અપરોક્ષબોધરૂપ પ્રમાણાનુ કરણ મહાવાક્ય છે. એથી તે પ્રમાણ છે. તેનું (શ્રવણાદિ) સાધનેકરી સસ્કૃત જે મન તે સહકારી છે.

પંડિત પીતામહી પુણ્યોત્તમજી.

૨૮. મંદુરુંની કથા પાંચમા તરંગમાં વિસ્તરથી આવે છે તે જોવી, એટલે આ વાતનો આગ્રય સમજાશે. સંક્ષેપમાં આમ છે:—એક રાજાપાસે મંદુરું નામે પ્રધાન હતો. તેનાઉપર તે રાજાનો બહુ પ્રેમ હતો, તેથી બીજા કારભારીઓને બહુ અદેલાઈ આવતી. તેમણે કુમાર રચ્યુ. પછી એક ભારે કાર્ય આવી પડતી તે કરવા, બીજા કારભારીઓએ મંદુરુંને રાજાપાસથી દૂર મોકલાવ્યો. તે કાર્ય તેણે કર્યુ. પણ તે બીજા કારભારીઓએ રાજાને એમ સમજાવ્યું કે, તે મંદુરું તો મરી ગયો. અને પછી સર્વેએ એકમતે એણે પ્રસિદ્ધ કર્યું કે,—મંદુરું તો મૃત થયો છે. રાજાએ એ વાત માની. મંદુરુંએ એ સર્વ જાણ્યું તેથી, અને પછી કંઈ વિવેક ઉત્પન્ન થયાથી, તેણે સસાર મિથ્યા માની વનવાસ કર્યો. એક સમયે મૃગયા કરતાં

વિપરીતભાવના દૂર થઈ નહિ, તેમ મહાવાક્યથી બ્રહ્મનું અપ-
રોક્ષજ્ઞાન થાય છે; પરંતુ જેની બુદ્ધિમાં અસંભાવનાવિપરીત-
ભાવનાદોષ હોય, તેનું દોષરૂપકલંકસહિત જ્ઞાન ફલનું હેતુ
નથી; (પથી તે) દોષની નિવૃત્તિઅર્થે શ્રવણાદિક કરે. જેની
બુદ્ધિમાં દોષ નથી તે ન કરે. પથી રીતિપ જ્ઞાનનાં સાધન મહા-
વાક્ય છે, શ્રવણાદિક નહિ, પરંતુ જ્ઞાનના પ્રતિવંધક જે દોષ
છે, તેનાં નાશક (શ્રવણાદિક) છે. પથી શ્રવણાદિક જ્ઞાનના
હેતુ કહેવાય છે. શ્રવણાદિકના હેતુ વિવેકાદિક છે, પથી વિવે-
કાદિક જ્ઞાનનાં સાધન (હેતુ) કહેવાય છે. વિવેકાદિક ચારે
સાધનસંયુક્ત જે પુરુષ છે તે અધિકારી છે. ૨૩.

૨૪. અથ સંબંધવર્ણન.

હો.

પ્રતિપાદકપ્રતિપાદ્યતા, ગ્રંથ બ્રહ્મ સંબંધ;

પ્રાપ્યપ્રાપકતા કહત, ફલ અધિકૃતનો વંધ.

૨૪

ટીકા:-ગ્રંથનો અને વિષયનો, પ્રતિપાદકપ્રતિપાદ્ય-
ભાવસંબંધ છે. ગ્રંથ પ્રતિપાદક છે અને વિષય પ્રતિપાદ્ય
છે. [જે પ્રતિપાદન કરનાર હોય તે પ્રતિપાદક કહેવાય છે; જે
પ્રતિપાદન કરવાને યોગ્ય હોય તે પ્રતિપાદ્ય કહેવાય છે.]
ફલનો અને અધિકારીનો પ્રાપ્યપ્રાપકભાવસંબંધ
છે. ફલ પ્રાપ્ય છે અને અધિકારી પ્રાપક છે. [જે વસ્તુ પ્રાપ્ત
થાય તે પ્રાપ્ય કહેવાય છે; જેને પ્રાપ્ત થાય તે પ્રાપક કહેવાય છે.]
અધિકારીનો અને વિચારનો કર્તૃકર્તવ્યભાવસંબંધ
છે. અધિકારી કર્તા છે અને વિચાર કર્તવ્ય છે. [જે કરનાર

જ્યાં મઠું હતો તે સ્થળે રાજા આવો પહોંચ્યો. ત્યાં મઠુંને પ્રત્યક્ષ પોને દીઠો.
પણ શીજા કારભારીઓએ તેને જે અસત્ય સમજાવેલું તે મૂર્ત્તનીપેટે માની બેઠેલો,
તેથી મઠુંને મૂત્ત માની ત્યાંથી નાશી ગયો. અર્થાત્ પ રીતિપ મઠુંનું અપરોક્ષ જ્ઞાન
રાજાને થયું, પણ તેના મનમાં વિપરીતભાવના થઈ હતી તે મટી નહિ.

હોય તે કર્તા કહેવાય છે; અને કરવાને યોગ્ય હોય તે કર્તવ્ય કહેવાય છે.] ગ્રંથનો અને જ્ઞાનનો જનકજન્યભાવસં-
વંધ છે. વિચારદ્વારા ગ્રંથ જ્ઞાનનો જનક છે, અને જ્ઞાન જન્ય
છે. [જે ઉત્પત્તિ કરનાર હોય તે જનક કહેવાય છે. જેની
ઉત્પત્તિ થાય છે તે જન્ય કહેવાય છે.] ૫ આદિલઈને ધીજા
સંબંધ પણ જાણી લેયા. ૨૪.

૨૫. અથ વિષયવર્ણન.

શ્લોકો.

જીવ બ્રહ્મની એકતા કહે વિષય જન બુધ;

વેનો જે અંતર ગણે, તે મતિમંદ અબુધ. ૨૫

ટીકા:—જીવબ્રહ્મની એકતા આ ગ્રંથનો વિષય
છે. [જે પ્રતિપાદન કરાય તે વિષય કહેવાય છે.] આ ગ્રંથ-
વિષયે જીવબ્રહ્મની એકતા પ્રતિપાદન કરાય છે, યથી તે એકતા
ગ્રંથનો વિષય છે. તે એકતાને સર્વ વેદનાં વચન પ્રતિપાદન
કરે છે, યથી જીવબ્રહ્મનો ભેદ કહે છે તે પુરુષ શઠ છે, અને વેદના
વિરોધી છે. ૨૫.

૨૬. અથ પ્રયોજનવર્ણન.

શ્લોકો.

પરમાનંદ સ્વરૂપની પ્રાપ્તિ પ્રયોજન જાણ;

જગત્ સમૂલ અનર્થ વઢી થાય તેનીં અનિ હાણ. ૨૬.

ટીકા:—પ્રવચ(સંસાર)નું કારણ જે અજ્ઞાન, અને પ્રવચ
(પોતે) જન્મમરણરૂપી દુઃખના હેતુ છે, યથી અનર્થ કહેવાય
છે. તે અનર્થની નિવૃત્તિ અને પરમાનંદની પ્રાપ્તિ મોક્ષ
કહેવાય છે. તે ગ્રંથનું પરમપ્રયોજન છે; અને અવાન્ત-
રપ્રયોજન જ્ઞાન છે. જેવિષયે પુરુષની અભિલાષા હોય તે
પરમપ્રયોજન કહેવાય છે, અને તે પુરુષાર્થ પણ કહેવાય છે.

તે અભિલાષા દુઃખની નિવૃત્તિવિષે અને સુખની પ્રાપ્તિવિષે સર્વ પુરુષાણી હોય છે તે જ મોક્ષનું સ્વરૂપ છે. યથી પરમપ્રયોજન મોક્ષ છે, અને જ્ઞાન નથી. કેમકે સુખની પ્રાપ્તિ અને દુઃખની નિવૃત્તિનું સાધન તા જ્ઞાન છે, પરંતુ સુખની પ્રાપ્તિ વા દુઃખની નિવૃત્તિરૂપ જ્ઞાન નથી, યથી અવાન્તરપ્રયોજન જ્ઞાન છે જે વસ્તુદ્વારા પરમપ્રયોજનની પ્રાપ્તિ થાય, તે અવાન્તર-પ્રયોજન કહેવાય છે. યહુ જ્ઞાન છે, કેમકે પ્રથેરુરીને જ્ઞાનદ્વારા મુક્તિરૂપ પરમપ્રયોજનની પ્રાપ્તિ થાય છે, યથી જ્ઞાન અવાન્તર-પ્રયોજન છે. ૨૬

૨૭. શંકાપૂર્વક ઉત્તરનુ ઋવિત.

(પ્રયોજનમા શકા)

જીવનુ સ્વરૂપ અતિઆનંદ કહે છે વેદ,
તેને સુખપ્રાપ્તિનો અસંભવ વચ્ચાણિયે
પૂર્વે જે અપ્રાપ્ત વસ્તુ, તેની પ્રાપ્તિ સમયે છે,
નિત્ય પ્રાપ્ત વસ્તુની તો પ્રાપ્તિ કેમ માનિયે?

(ઉપરની શકાનુ સમાધાન)

યવી શકા લેશ આણી કીજે ન ત્રિશ્વાસહાનિ,
શુરુના પ્રસાદથી કુતર્ક મલે માગિયે
કરનુ કકળ યોયુ યવો મ્રમ થયો જેને,
જ્ઞાનથી મલે છે યમ પ્રાપ્તપ્રાપ્તિ જાણિયે

૨૭

૨૮ ટીકા યવી કોઈ (પૂર્વપક્ષી) શકા કરે છે કે, પૂર્વે કહ્યુ હતુ 'અનર્થની નિવૃત્તિ અને પરમાનંદની પ્રાપ્તિ પ્રથમ પ્રયોજન છે,' તે વને નહિ કેમકે સર્વ વેદ જીવને પરમાનંદ સ્વરૂપ વર્ણન કરે છે, અને તમે અગીકાર પળ કરો છો અને જે વસ્તુ અપ્રાપ્ત હોય તેની પ્રાપ્તિ સમયે છે સદા-પ્રાપ્ત વસ્તુની પ્રાપ્તિ સર્વથા વને નહિ યથી સદા પરમાનંદસ્વરૂપ આત્માને પરમા

નંદની પ્રાપ્તિ કહેવી સર્વ પ્રકારેકરીને અસંભવ છે. ૨૭.

૨૯. (સિદ્ધાન્તી સમાધાન કહે છે કે:-)

તે શંકા સાંભળીને ગ્રંથના પ્રયોજનમાંથી વિશ્વાસ દૂર કરવા નહિ. કિન્તુ આત્મવિદ્યાનો ઉપદેશ કરવાવાલા જે ગુરુ છે, તેમની કૃપાથી શંકારૂપે જે કુતર્ક છે તે દૃષ્ટાન્તવતે દૂર કરી દેવો. તે દંટાંત કહેવાય છે. જેમ કોઈના હાથમાં કંકણ હોય, તેને યવો ભ્રમ થઈ જાય જે 'મારા હાથનું કંકણ યવો ચૂકાઈ ગયું.' ત્યારે તેને કોઈના કહેવાથી કંકણનું યવું જ્ઞાન થઈ જાય જે 'મારું કંકણ હાથમાં છે.' ત્યારે તે એમ કહે છે કે:-મારું કંકણ મળી ગયું છે.' એ રીતિએ પ્રાપ્ત જે કંકણ છે તેની પણ પ્રાપ્તિ કહેવાય છે. તેમ પરમાનંદસ્વરૂપ આત્માવિષે અવિદ્યાના વલેકરી આવી ભ્રાન્તિ થાય છે:-'આત્મા પરમાનંદસ્વરૂપ છે નહિ, કિન્તુ પરમાનંદસ્વરૂપ બ્રહ્મ છે. તે બ્રહ્મનો અને મારો વિયોગ થઈ ગયો છે. ઉપાસના કરીને તે બ્રહ્મને હું પ્રાપ્ત થઈશ.' એવી રીતિની ભ્રાન્તિ વધુ મૂર્ખ પ્રાણીઓને થઈ રહી છે. યદ્યપિ વધુ પંડિત પણ એમ કહે છે, તથાપિ તેઓ મૂર્ખ જ છે. કેમકે જીવબ્રહ્મનો વિયોગ જે અંગીકાર કરે છે, તે મૂર્ખ કહેવાય છે. તે પુરુષને ઉત્તમ સંસ્કારેકરી જો કદાચિત્ (શ્રોત્રિય) બ્રહ્મજ્ઞાની આચાર્યથી વેદાન્ત-ગ્રંથના શ્રવણની પ્રાપ્તિ થઈ જાય ત્યારે, સાંભળેલા અર્થને, નિશ્ચય કરીને, કહે છે કે:-'ગ્રંથ અને આચાર્યની કૃપાએ પરમાનંદ અમને પ્રાપ્ત થયો છે.' આ તેમના કહેવાનો અભિપ્રાય છે:-આત્મા તો પરમાનંદસ્વરૂપ આગલ પણ હતો, પરંતુ 'મારો

૨૯. જે અર્થમા વાદી-પ્રતિવાદી-ઉભયનુ બુદ્ધિસામ્ય હોય તે; યા સાધ્યની સાથે સમાનધર્મતાનેલીધે તત્ત્વધર્મભાવ; અથવા સામાન્ય લોકને અને પરીક્ષકને જે અર્થમાં બુદ્ધિની સમતા યાય છે તે-'દૃષ્ટાન્ત',

આત્મા પરમાનંદરૂપ છે' યથી રીતિપ માન નહોતું થયું, યથી અપ્રાપ્તની પેઠે હતો. આચાર્યદ્વારા ગ્રંથશ્રવણેકરી પરમાનંદનું વુદ્ધિવિષે માન થાય છે, યથી પરમાનંદની પ્રાપ્તિ કહે છે. યથી રીતિપ પ્રાપ્તની યણ પ્રાપ્તિ વનવાથી, પરમાનંદની પ્રાપ્તિ-રૂપ ગ્રંથનું પ્રયોજન સંભવે છે.

જેમ પ્રાપ્તની પ્રાપ્તિ ગ્રંથનું પ્રયોજન છે, તેમ:-

૩૦. નિત્યનિવૃત્તની નિવૃત્તિ યણ પ્રયોજન સંભવે છે. દષ્ટાન્ત.-રજ્જુવિષે સર્પ નિત્યનિવૃત્ત છે, અને રજ્જુના જ્ઞાનેકરી નિવૃત્ત થાય છે. તેમ આત્માવિષે સંસાર નિત્યનિવૃત્ત છે, તેની નિવૃત્તિ આત્માના જ્ઞાનેકરી થાય છે.

યથી નિત્યનિવૃત્તની નિવૃત્તિ અને નિત્યપ્રાપ્તની પ્રાપ્તિ ગ્રંથનું પ્રયોજન છે. (ય સિદ્ધ થયું.) ૨૭.

(શંકા:—એક જ પદાર્થ-મોક્ષ વિષે ભાવ અને અભાવ ય વેદ્ય હોય નહિ.)

૩૧. (કોઈ આથી શંકા કરે છે:-) 'કારણસહિત જગત્ની નિવૃત્તિ અને પરમાનંદની પ્રાપ્તિ, ગ્રંથનું પ્રયોજન છે.' ય પૂર્વે કહ્યું, ય સંભવે નહિ. કેમકે, નિવૃત્તિ નામ ધ્વંસનું છે, ધ્વંસ અને નાશ ય વે પર્યાયશબ્દ છે. તે નાશ અભાવરૂપ છે. યથી મોક્ષવિષે ભાવરૂપતા અને અભાવરૂપતા વન્ને પ્રતીત થાય છે; અનર્થની નિવૃત્તિ કહેવાવતે અભાવરૂપતા પ્રતીત થાય છે, અને પરમાનંદની પ્રાપ્તિ કહેવાવતે ભાવરૂપતા પ્રતીત થાય છે. તે વંને યક પદાર્થવિષે વને નહિ. કેમકે, અભાવરૂપતા અને ભાવરૂપતા વંને પરસ્પર વિરોધિની છે. જે વિરોધી ધર્મ હોય તે યક કાલમાં યક વસ્તુવિષે રહે નહિ. 'યથી ગ્રંથનું પ્રયોજન સંભવે નહિ.' યથી કોઈ શંકા કરે છે

३२. ते शंकाना उत्तरनो दुहो.

अधिष्ठानथी भिन्न नहि, जगत् निवृत्ति वखाण;

सर्पनिवृत्ति रज्जु ज्यम, थये रज्जुनुं ज्ञान. २८.

टीका:—कारणसहित जगत्नी निवृत्ति (ते) अधिष्ठान ब्रह्मरूप ज छे, ते(ब्रह्म)थी पृथक् नथी; जेम (रज्जुमां जे सर्प भास्यो ते रज्जुनुं ज्ञान थये ते) सर्पनिवृत्ति, ते अधिष्ठानरज्जुरूप छे. (तेम) ' सर्वत्र कल्पितवस्तुनी निवृत्ति अधिष्ठानरूप होय छे, तेथी पृथक् नहि.' ए भाष्यकार(शंकराचार्य)नो सिद्धान्त छे. एथी आ स्थानविषे अनर्थनी निवृत्ति ब्रह्मरूप (भावरूप) छे; (अभावरूप नथी;) केमके सर्व अनर्थनुं अधिष्ठान जे ब्रह्म छे, ते ब्रह्म भावरूप छे. एथी अनर्थनी निवृत्ति भावरूप होवाथी ग्रंथनुं प्रयोजन वने छे. ए वार्त्ता सिद्ध थई. २८.

दुहो.

जे जन प्रथम तरंग आ, पढे तेनी तत्काल,

करो मुक्ति गुरुमूर्ति थई, दादू दीनदयाल.

२९.

इति श्रीविचारसागरे अनुबंधसामान्यनिरूपणं नाम

प्रथमस्तरंगः

समाप्तः १.



ॐ

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीविचारसागरस्य

द्वितीयतरंगप्रारंभः.

अथ अनुबंधविशेषनिरूपणं.

इहो.

आना प्रथम तरंगमां, कीं अनुबंध विचार,
कहुं हुं द्वितीय तरंगमां, तेओनो विस्तार.

३३. (पूर्वपक्षी अनुबंधचतुष्टयविषे शंकाओ करे छे)

टीका:—चार साधनयुक्त अधिकारी कह्यो, ते चार साधनमां मुमुक्षुता गणी छे. [मोक्षनी इच्छानुं नाम मुमुक्षुता छे.] कारणसहित जगत्नी निवृत्ति (१) अने ब्रह्मनी प्राप्ति (२) मोक्ष कहैगय छे. तेनेविषे 'कारणसहित जगत्नी निवृत्तिरूप मोक्षनो अंश, तेने कोई चहातुं नथी,' ए वार्ता (प्रथम) पूर्वपक्षी प्रतिपादन करे छे

३४. अथ अधिकारिखंडन.

पूर्वपक्ष प्रमाणे (३४ थो ३८ पर्यन्त)

(प्रथम अंश-कारणसहित जगत्नी निवृत्तिनी इच्छा (१)
कोईने होय नहि.)

इहो.

जगद्धेसनो, मूलसहित कोई करे नहि आश,
किन्तु विवेकी चहाय छे, त्रिविधदुःखनो नाश. २.

ટીકા:—મૂલાવિદ્યાસહિત જગત્નો જે 'ધ્વંસ' 'નામ નિવૃત્તિ તેની 'આશા' નામ ઇચ્છા કોઈ પુરુષ કરતો નથી, 'કિન્તુ' નામ શું કરે છે ? (ઉત્તર:)—ત્રણ પ્રકારનાં જે દુઃખ છે, તેનો નાશ વિવેકી પુરુષ ઇચ્છે છે. (એવં ઉપરના દુહામાં કહ્યું.) અને આ અભિપ્રાય છે:—

દુઃખ ત્રણ પ્રકારનાં છે:—

૧. એક તો અધ્યાત્મદુઃખ છે, બીજું અધિભૂતદુઃખ છે અને ત્રીજું અધિદેવ દુઃખ છે. [રોગ-શ્લુઘાદિકોષ કરી જે દુઃખ થાય તે 'અધ્યાત્મદુઃખ' કહેવાય છે. ચોર-ચ્યાગ્ર-સર્પાદિકોષ-કરી જે દુઃખ થાય તે 'અધિભૂતદુઃખ' કહેવાય છે. યક્ષ-રાક્ષસ-પ્રેત-ગ્રહાદિક અને શીત, ઘાત અને આતપથી જે દુઃખ થાય તે 'અધિદેવદુઃખ' કહેવાય છે.]

૨. યથી રીતિય ત્રણ ભાતિનાં જે દુઃખ છે તેના નાશની સર્વ પુરુષોને ઇચ્છા છે. દુઃખથી ભિન્ન જે (કારણ-અજ્ઞાનસહિત જગત્) પદાર્થ છે તેના નાશની વિવેકી પુરુષ ઇચ્છા કરે નહિ. યથી અજ્ઞાન (કારણ) સહિત સમુલ જગત્ની નિવૃત્તિની કોઈને ઇચ્છા વને નહિ. એવું પૂર્વપક્ષીજું કહેવું છે.)

૩૫. (ઘઠી પૂર્વપક્ષી કહે છે કે, -) અને જાં સિદ્ધાન્તી આમ કહે કે:—'યદ્યપિ સકલ પુરુષ દુઃખની નિવૃત્તિની ઇચ્છા

૩૧. આત્માને આશ્રય કરીને વર્તનાર જે સ્થૂલ-સૂક્ષ્મ-શરીર તે આધ્યાત્મ કહેવાય છે. તે અધ્યાત્મથી જન્ય દુઃખ તે 'અધ્યાત્મદુઃખ' છે.

સ્વસંઘાત(શરીરાદિ)થી ભિન્ન હોય અને ચક્ષુન્દ્રિયનો વિષય હોય તે અધિભૂત કહેવાય છે. તે અધિભૂતથી જન્ય જે દુઃખ તે 'અધિભૂતદુઃખ' છે.

સ્વસંઘાતથી ભિન્ન હોય અને ચક્ષુન્દ્રિયનો અવિષય હોય તે અધિદેવ કહેવાય છે. તે અધિદેવની પ્રેરણા જન્ય જે દુઃખ તે 'અધિદેવદુઃખ' છે.

‘करे छे, तथापि (जगत्ना कारण) अज्ञानसहित सर्व जगत्नी
 ‘निवृत्ति विना दुःखनी निवृत्ति थाय नहि; एथी दुःखनिवृ-
 ‘त्तिना निमित्त, अज्ञानसहित जगत्नी निवृत्तिने पण (पुण्य)
 ‘चहाय छे.’ ते वने नहि; केम के:—

३६. आयुर्वेदमां जे औषध कहां छे, तेओपकरी रोग-
 जन्य दुःखनी निवृत्ति थाय छे; अने भोजनेकरी क्षुधाजन्य
 दुःखनी निवृत्ति थाय छे. ए रीतिए पोतपोताना उपायेकरी
 सर्व दुःखनी निवृत्ति थाय छे. एथी अज्ञानसहित जगत्नी निवृत्ति
 विना पण, दुःखनी निवृत्ति वने छे, (एम छे तो,) दुःखनी
 निवृत्तिना निमित्त, अज्ञानसहित जगत्नी निवृत्तिनी
 चाहना (इच्छा) वने नहि. ‘कारणसहित जगत्नी निवृत्ति (१)
 अने ब्रह्मनी प्राप्ति (२) मोक्ष कहवाय छे.’ (एयुं सिद्धान्तीनुं
 कह्युं हतुं,) तेनाविषे (१) कारणसहित जगत्नी निवृत्तिरूप
 मोक्षना (प्रथम) अंशनी पण इच्छा कोइने वने नहि, ए
 चार्त्ता उपर दुहाविषे (पूर्वपक्षीए) कही. (हवे)

(द्वितीय अंश ब्रह्मनी प्राप्तिरूप इच्छा (२.) कोइने वने नहि.)

३७. ब्रह्मप्राप्तिरूप मोक्षना द्वितीय अंशनी पण इच्छा
 कोइने वने नहि, ए चार्त्ता

पूर्वपक्षी कहे छे.

इहो.

कृत अनुभव जे वस्तुनो, तेनी इच्छा होय;

ब्रह्म न अनुभूत एहथी, चहे न तेने कोय. ३.

टीका:—जे वस्तुनो ‘अनुभव’ नाम ज्ञान होय, ते वस्तुनी
 प्राप्तिनी इच्छा थाय छे. जे वस्तुनुं ज्ञान होय नहि,
 तेनी प्राप्तिनी इच्छा पण थाय नहि. जेम अन्य देशना अनंत

પદાર્થ અજ્ઞાત છે, તેઓની પ્રાપ્તિની ઇચ્છા કોઈ પુરુષને થાય નહિ. અને અધિકારી પુરુષને બ્રહ્મનું જ્ઞાન છે નહિ. [અને જેને બ્રહ્મનું જ્ઞાન હોય તે અધિકારી નહિ કિંતુ મુક્ત છે.] તેને બ્રહ્મપ્રાપ્તિની ઇચ્છા વને નહિ. યથી વેદાન્તપ્રચરણથી પૂર્વ અજ્ઞાત જે બ્રહ્મ, તેનો પ્રાપ્તિની ઇચ્છા વને નહિ. યથી રીતિય 'અજ્ઞાન સહિત જગત્ની નિવૃત્તિ અને બ્રહ્મની પ્રાપ્તિરૂપ જે મોક્ષ' તેની ઇચ્છા કોઈને વને નહિ. યથી મુમુક્ષુ કોઈ છે નહિ. ૩. (ય પ્રમાણે શક્ત કરી, ય રીતિય કોઈ મુમુક્ષુ અથવા અધિકારી નથી યંતું પ્રતિવાદીય ઉપર વતાવ્યું.)

અન્યરીતિય અધિકારીનો અભાવ પૂર્વપક્ષી પ્રતિપાદન કરે છે.

૩૮. દ્વિ

ચહે વિપયસુખ સકલ જન, નહિ મોક્ષનો પંથ;
અધિકારી યથી નહિ, પઢે શુણે જે ઘથ. ૪'

ટીકા:—સર્વ પુરુષ વિપયસુખને ચહાય છે, અને જે કોઈ સકલ વિપયનો ત્યાગ કરીને નપરિવે આરૂઢ છે, તે યણ પરલોકના ઉત્તમ ભોગોની (વિપયસુખની) ઇચ્છા કરીને નાના ક્લેશ સહન કરે છે. યથી આ લોકનાં અથવા પરલોકનાં વિપયસુખને સર્વ ચહાય છે, તે વિપયસુખ મોક્ષવિપે છે નહિ યથી મોક્ષનો 'પથ' નામ સાધન તેને કોઈ પુરુષ ચાહે નહિ. ય રીતિય મોક્ષની ઇચ્છારૂપ મુમુક્ષુના વને નહિ. અને સકલ પુરુષોને વિપયસુખની ઇચ્છા હોય છે, યથી વૈરાગ્ય, શમ, દમ, ઉપરતિ યણ કોઈવિપે વને નહિ. યથી સાધનવતુષ્ટયસહિત અધિકારીનો અભાવ હોવાથી, ઘથનો આરમ્ભ નિષ્ફલ છે. (ય રીતિય પૂર્વપક્ષીય અધિકારીનું લંડન કરી દેલાડ્યું.) ૪.

૩૯. અથ વિષયસંહન.

પૂર્વપક્ષપ્રમાણે. (૩૯ થી ૪૪ પર્યન્ત.)

(જીવ અને બ્રહ્મની એકતાનો અસંભવ. નાના સાક્ષી.)

૬૦.

જીવબ્રહ્મની એકતા. કહ્યો વિષય તે મૂલ;

બ્રહ્મ એક અક્લેશ વિમ્બુ. જીવ ક્લેશનું મૂલ. ૫

ટીકા:—(પૂર્વપક્ષી સિદ્ધાન્તીને કહે છે કે:—તમે ૧ પૂર્વે કહ્યું જે 'જીવબ્રહ્મની એકતા આ પ્રથમો વિષય છે,' એ સંભવે નહિ. કેમકે, બ્રહ્મ તો, 'અક્લેશ' નામ અવિદ્યો, અસ્મિતો, રોંગ, ટુપે, અને અંભિનવેશ એ પંચક્લેશથી, રહિત છે. અને 'વિમ્બુ' નામ વ્યાપક છે. 'એક' નામ સજાતીયભેદરહિત છે. કેમકે બ્રહ્મનું સજાતીય થીજું બ્રહ્મ છે નહિ. અને જીવવિષે સર્વ ક્લેશ છે. અને (જીવ) પરિચ્છિન્ન છે અને જીવ નાના છે, કેમકે જેટલાં શરીર છે એટલા

૩૨. યથાયં જ્ઞાનું વિગોષિ વિપરીતજ્ઞાન, અથવા વિદ્યાએકરી જેને નાશ થાય, અથવા પ્રતીત થાય પણ વિચારને સહન ન કરે એ 'અવિદ્યા.' તે અવિદ્યા મૂલા અને તૂલા એ ભેદથી બે પ્રકારની છે. જે શુદ્ધ ચૈતન્યને આવરે તે 'મૂલા' કહેવાય છે, જે ઘટાદિ ઉપાધિવાલા ચૈતન્યને ઢાકે તે 'તૂલા' કહેવાય છે.

૩૩. સામાન્યઅહંકારરૂપ અન્તઃકરણવિષે ચેતનનો જે તાદાત્મ્યાધ્યાસ—અહં એ જ્ઞાનનો વિષય; વા અન્તઃકરણવિષે અભેદ અભિમાન, એ 'અસ્મિતા.'

૩૪. મુલ અને તેના સાધનોની રૂચ્છા; વા અનુકૂલતાના જ્ઞાનેકરી જન્યા જે બુદ્ધિવૃત્તિ, એ 'શામ.'

૩૫. દુઃસ અને તેના સાધનોના ક્રોધ; વા પ્રતિકૂલતાના જ્ઞાનેકરી જન્યા જે બુદ્ધિવૃત્તિ, એ 'દ્વેષ.'

૩૬. આ અવશ્ય કર્તવ્ય છે એવા આપ્રહયુક્ત મનનો સંયોગ; વા મરણનો સર્વદા જે ત્રાસ; વા મરણના ભયથી શરીરની રક્ષાવિષે જે આપ્રહ; વા સ્વીકૃતના પુનઃ ત્યાગની અસહિષ્ણુતા; વા લોકરંજનાર્ય તદુચિત્ત કર્મ ઉદ્યોગ અને તદનુસાર પ્રવૃત્તિ અને વેશાદિ ધારણ; એ 'અમિનિવેશ.'

જીવ છે. જો સર્વ શરીરવિષે જીવ એક હોય તો, એક શરીર-
માં સુખ અથવા દુઃખ થવાથી સર્વ શરીરવિષે સુખ અને
દુઃખ થયું જોડાયે.

૪૦. અને વેદાન્તી કહે છે જે:—‘સુખથી આદિ લઈને
‘અંતઃકરણના ધર્મ છે; તે અંતઃકરણ નાના છે, યથી એકન
‘સુખી દુઃખી થવાથી સર્વ સુખી દુઃખી થાય નહિ અને સાક્ષી
‘સુખદુઃખથી રહિત છે, એક છે, અને સર્વ ક્લેશથી રહિત
‘છે. અને તે(સાક્ષી)ની બ્રહ્મની સાથે એકતા વને છે.’ (ત્યાં
પૂર્વપક્ષી કહે છે.) પણ તે ઘાત્તા વને નહિ. કેમકે:—

૪૧. કર્તા મોક્ષા જે જીવ છે, તેનાથી ભિન્ન સાક્ષી વંધ્યા-
પુત્રના સમાન છે. અને જો સાક્ષી અંગીકાર પણ કરે, તો તે પણ
એક વને નહિ, નાના સાક્ષી માનવા પડશે, કેમ કે:—વેદા-
ન્તનો સિદ્ધાન્ત આ છે:—‘અંતઃકરણ અને સુખદુઃખથી આદિ
‘લઈ અંતઃકરણના ધર્મ એ ઇન્દ્રિય અને અંતઃકરણના વિષય
‘નથી, (અર્થાત્ ઇન્દ્રિય અને અંતઃકરણ તેમને જાણી
‘શક્તાં નથી,) કિન્તુ સાક્ષીના વિષય છે. (અર્થાત્ સાક્ષી
‘તેમને પ્રકાશે છે.) કેમકે, ઇન્દ્રિય તો પંચીકૃત ભૂતોને
‘વિષય કરે છે. યમાં આટલો ભેદ છે.—નેત્રઇન્દ્રિય તો
‘રૂપવાલું જે વસ્તુ છે, તેના રૂપને અને રૂપના આશ્રયને,
‘વંનેને વિષય કરે છે. (અર્થાત્ દેખે છે.) જેમકે નીલ, પીત
‘આદિક ઘટના રૂપને અને તે રૂપના આશ્રય ઘટને નેત્રઇન્દ્રિય
‘વિષય કરે છે. અને ત્વચાઇન્દ્રિય પણ સ્પર્શને અને તેના
‘આશ્રયને, વંનેને વિષય કરે છે. (=જાણે છે.) અને રસના, ઘ્રાણ

૩૭. ‘સાક્ષીના વિષય’ એમ કહે, ત્યારે ‘સાક્ષી પ્રકાશે છે’ એમ સમજવું.
અંતઃકરણના વિષય’ એમ કહે ત્યારે ‘અંતઃકરણેકરી આવરણ ભંગ થાય છે’ એમ.
સમજવું. ‘અજ્ઞાનના વિષય’ એમ કહે ત્યારે ‘અજ્ઞાન ઢાકે છે’ એમ સમજવું.

२ तरंग.) पूर्वपक्षीना विचारप्रमाणे ग्रंथनो आरंभ निष्कल छे. १८३

'अने श्रवण ए श्रवण (इंद्रिय) तो रस, गंध अने शब्द-
'मात्रने ज विषय करे छे. (=जाणे छे.) तेओना आश्रयने विषय
'करे नहि. एथी ए श्रवणकारी तो अंतःकरणनुं ज्ञान वने नहि
'अने नेत्रकारी अने त्वचाएकारी पण अंतःकरणनुं ज्ञान वने
'नहि. केमके, पंचीकृत भूत अथवा पंचीकृत भूतोनां कार्य
'जे रूपवान् अथवा स्पर्शवान् होय, ते नेत्रना अने त्वचाना
'विषय थाय छे. अंतःकरण अपंचीकृत भूतोनुं कार्य छे,
'(अने रूप अने स्पर्शरहित छे.) एथी नेत्र अने त्वचानो
'पण विषय नथी, ए ज कारणथी अपंचीकृत भूतोनुं कार्य नेत्र-
'इंद्रिय पण नेत्रनो विषय नथी. अने वाद्यवस्तु इंद्रियनो
'विषय होय छे अने अंतःकरण इंद्रियनी अपेक्षाथी अंतर
'छे. एथी पण इंद्रियनो विषय (अंतःकरण) नथी.'

४२. अने (पूर्वपक्षी कहे छे, वेदान्तनो ए पण सिद्धान्त छे.
के.—) 'अंतःकरणनी वृत्तिनो पण अंतःकरण
'विषय नथी. केमके, अंतःकरण, वृत्तिनुं आश्रय (उपादान)
'छे, एथी अंतःकरण पोतानी वृत्तिनो विषय वने नहि. जेम
'अग्नि, दाहनो आश्रय छे, ते (अग्नि) दाहनो विषय थाय
'नहि, 'किन्तु अग्निथी भिन्न जे काष्ठथी आदिलइने वस्तु छे,'
'ते दाहनो विषय थाय छे. तेम अंतःकरणथी भिन्न जे वस्तु
'छे ते अंतःकरणजन्य वृत्तिनो विषय छे, अने अंतःकरण नहि.'

४३. 'तेम (वेदान्तप्रमाणे) अंतःकरणना धर्म पण
'अंतःकरणनी वृत्तिना विषय नथी. केमके अंतः-
'करणने विषय करवानेसारू जो अंतःकरणनी वृत्ति होय
'तो अंतःकरणना धर्म जे सुखादिक छे, तेओने पण
'(अंतःकरणनी वृत्ति) विषय करे. ते अंतःकरणने विषय

३८. नेत्रनो विषय घडो ते घडाने नेत्र देखे तो ज घडानो धर्म जे रूप
तेने पण नेत्र देखी शके छे तेम.

‘કરવાવાળી વૃત્તિ તો અંતઃકરણના સન્મુખ થાય નહિ, યથી
 ‘અંતઃકરણના ધર્મ યણ અંતઃકરણની વૃત્તિના વિષય નથી,
 ‘અને આ નિયમ છે:—વૃત્તિના આશ્રયથી કિંચિત્ (યણ)
 ‘દૂર જે વસ્તુ હોય, તે (વસ્તુ) વૃત્તિનો વિષય થાય છે.
 ‘જે વસ્તુ વૃત્તિના આશ્રયથી અત્યંત સમીપ હોય, તે વૃત્તિનો
 ‘વિષય થાય નહિ. જેમ નેત્રની વૃત્તિનો આશ્રય જે નેત્ર, તેની
 ‘અત્યંત સમીપ અંજન, (તે અંજન,) નેત્રની વૃત્તિનો વિષય
 ‘નથી: તેમ અંતઃકરણની વૃત્તિનો આશ્રય જે અંતઃકરણ તેની
 ‘અત્યંત સમીપ જે સુખથી આદિ લઈને ધર્મ, તે (ધર્મ) અંતઃ-
 ‘કરણની વૃત્તિના વિષય વને નહિ ય રીતિય ધર્મસહિત અં-
 ‘તઃકરણનું, ઇન્દ્રિયથી અથવા પોતાથી (અંતઃકરણથી) માન
 ‘વને નહિ. કિન્તુ (અંતઃકરણ અને તેના ધર્મ ય) સાક્ષીના
 ‘વિષય છે’

૪૪. (પૂર્વપક્ષી ઉપર પ્રમાણે સિદ્ધાન્તના મતનો અનુવાદ
 કરી કહે છે કે:—જે અંતઃકરણને અને અંતઃકરણના ધર્મને
 પ્રકાશે છે, તેને વેદાન્તના સિદ્ધાન્તમાં સાક્ષી કહે છે.)
 તે સાક્ષી ઇક અંગીકાર કરિયે તો, જેમ ઇક અંતઃકરણના
 સુખદુઃખનું સાક્ષીપરૂરી માન થાય છે, તેમ સર્વના (અંતઃકર-
 ણના) દુઃખદુઃખનું માન (તે ઇક સાક્ષીપરૂરી) થવું જોઈયે.
 (પરંતુ તેમ થતું નથી.) યથી સાક્ષી નાના છે. જ્યારે નાના સાક્ષી
 અંગીકાર કરાય ત્યારે દ્વાંપ નહિ. કેમકે જે સાક્ષીનાં ઉપાધિ
 (જે) અંતઃકરણ છે, તે સાક્ષીપરૂરી પોતપોતાના ઉપાધિ-
 (અંતઃકરણ)ના ધર્મનું માન થાય છે, યથી સર્વના (અંતઃકરણના)
 સુખદુઃખનું માન થાય નહિ. (ઇમ નાના સાક્ષી સિદ્ધ થાય
 છે.) ય રીતિય નાના જે સાક્ષી તેમની ઇક બ્રહ્મની સાથે
 ઇકતા વને નહિ. (ઇમ છે તો, આ પ્રથમો વિષય જે—‘જીવબ્ર-
 હ્મની ઇકતા’-તે સંભવતો નથી. ઇતિ વિષયલંકન.)

૪૧. પ્રયોજનસંહન.

પૂર્વપક્ષપ્રમાણે. (૪૧ થી ૫૨ પર્યંત.)

(મિથ્યાવંધની સામગ્રીના અભાવથી તેની નિવૃત્તિરૂપ પ્રયોજનનો અસંભવ.)

દુષ્ટો.

વંધનિવૃત્તિ જ્ઞાનયી, વને ન વિન અધ્યાસ;

સામગ્રી તેની નહિ, તજો જ્ઞાનની આરા.

૬.

ટીકા:—‘અહંકારથી આદિલઈને જે અનાતમવસ્તુ છે, તે વંધ કહેવાય છે.’ તે વંધ જો અધ્યાસરૂપ હોય તો જ્ઞાનેકરી નિવૃત્ત થાય, અને અધ્યાસરૂપ ન હોય તો જ્ઞાનેકરી નિવૃત્ત થાય નહિ. કેમકે, જ્ઞાનનો આ સ્વમાવ છે:—જે વસ્તુનું જ્ઞાન થાય તે (વસ્તુ) વિષે, અધ્યાસ અને અજ્ઞાન, તેમને દૂર કરે છે. જેમ રજ્જુનું જ્ઞાન, રજ્જુવિષે સર્પ(ના) અધ્યાસને, અને રજ્જુના અજ્ઞાનને, દૂર કરે છે. [ભ્રાંતિજ્ઞાનનો વિષય જે મિથ્યાવસ્તુ, અને ભ્રાંતિજ્ઞાન, તેનું નામ અધ્યાસ છે.]

જેનેવિષે જે વસ્તુ મિથ્યા નથી કિન્તુ સત્ય છે, તેની જ્ઞાનેકરી નિવૃત્તિ થતી નથી. તેમ આત્માવિષે અહંકારથી આદિ લઈને વંધ જો અધ્યાસ (રૂપ) નામ મિથ્યા હોય તો જ્ઞાનેકરી (તેની) નિવૃત્તિ થાય. આત્માવિષે મિથ્યાવંધની સામગ્રી છે નહિ, અને વંધપ્રતીતિ થાય છે પણ વંધ સત્ય છે. તે સત્ય વંધની જ્ઞાનેકરી નિવૃત્તિની આરા નિષ્ફલ છે (૫ પ્રમાણે પૂર્વપક્ષી કહે છે.) ૬.

૪૬. અથ ઊંઘ્યાસસામગ્રીનિરૂપણ.

દ્વો.

સત્યવસ્તુના જ્ઞાનથી, જાણ એક સંસ્કાર,
ત્રિવિધદોષ, અજ્ઞાન વલી સામગ્રી ઇ ધાન્ય, ૭.

ટીકાઃ—સત્યવસ્તુના જ્ઞાનજન્ય સંસ્કાર (૧), ત્રણ પ્રકારના દોષ,—પ્રમાતાનો દોષ, પ્રમાણનો દોષ, અને પ્રમેયનો દોષ (૨)—અને અધિષ્ઠાનના વિશેષ રૂપતું અજ્ઞાન (૩), એટલી અધ્યાસની સામગ્રી છે. ઇ વિના અધ્યાસ થાય નહિ.

(૧) જેમ શુક્તિમાં રૂપાનો અને રજતુમાં સર્પનો અધ્યાસ થાય છે તે, જે પુરુષે સત્યરૂપું અને મત્યસર્પ દીઠાં છે તેને થાય

૪૦. મિથ્યાજ્ઞાન, અથવા ખ્રાન્તજ્ઞાનન વિષય જે મિથ્યાવસ્તુ અને ખ્રાન્તજ્ઞાન ઇ 'અધ્યાસ' છે. અધ્યામનાં અનેક અનિયમિત વિલક્ષણ કારણ હોય છે તેથી અધ્યાસ સંબંધમાં શાસ્ત્રકારોના અનેકધા વાદ છે. 'સ્મૃતિરૂપ. પરત્ર પૂર્વદૃષ્ટાવમાસઃ' (૧) 'સ્મૃતિરૂપઃ = સંસ્કારના પ્રભવત્વથી સ્મૃતિના રૂપ જેવું રૂપ છે જેનુ, 'પરત્ર' = સ્વામિત્ર અને સ્વઅમાવવાલા અન્યવિષે, 'પૂર્વદૃષ્ટ્ય' = પૂર્વ અનુભૂત (સજા િયપર) નો, 'અવમાસ' = જ્ઞાન, તે 'અધ્યાસ.' 'અધિષ્ઠાનથી વિપમ-સત્તાવાલો અવમાસ તે અધ્યાસ.' ડ્યા શુક્તિમાં રજતભ્રમ થાય ત્યા શુક્તિ-દેશમાં. રજત ઉપજે છે. તેનું જ્ઞાન અને તાત્કાલિક રજત ઇ વેને સિદ્ધાન્તમાં અવમાસ અને અધ્યાસ કહે છે. શારીરકમાધ્યાનુસાર અધ્યાસ દ્વિવિધ છેઃ (૧) જ્ઞાનાધ્યાસ—(૨) અર્થાધ્યાસ.

(૧) 'અ-તત્મા તત્ બુદ્ધિ' ઇ જ્ઞાનાધ્યાસઃ જેમ શુક્તિમાં રજતબુદ્ધિ અથવા આત્મામાં અનાત્મબુદ્ધિ.

(૨) પ્રમાણ અજન્ય જ્ઞાનનું વિષયત્વ સતે પૂર્વદૃષ્ટ સજાતીય હોય તે અર્થાધ્યાસઃ—જેમ શુક્તિમાં રજતનો અધ્યાસ અથવા આત્મામાં અનાત્માનો અધ્યાસ. અથવા (૧) મિથ્યાવસ્તુનુ મિથ્યા 'જ્ઞાન' ઇ જ્ઞાનાધ્યાસ. (૨) ખ્રાન્તિજ્ઞાનનો વિષય જે સર્પાદિક મિથ્યા 'વસ્તુ' ઇ અર્થાધ્યાસ.

૪૧. કાર્યથી નિયત અવશ્યંભાવિની પૂર્વક્ષણવૃત્તિ જેની તે 'કારણ' કહેવાય છે. તે કારણના સમૂહને સામગ્રી કહે છે. એવી અધ્યાસની સામગ્રીનું નિરૂપણ નામ લક્ષણાદિ પ્રકારેકરી જ્ઞાનને અનુકૂલ વચન, વિચાર.

છે. (અર્થાત્ સત્યવસ્તુના જ્ઞાનજન્ય સંસ્કાર જેને પ્રથમ હોય છે તેને અધ્યાસ થાય છે.) અને જેને સત્યરૂપાનું અને (સત્ય)-સર્પનું જ્ઞાન નહિ, તેને (અધ્યાસ) થાય નહિ. યથી યમ સિદ્ધ થાય છે કે:—સત્યવસ્તુના જ્ઞાનના સંસ્કાર અધ્યાસના હેતુ છે.

(૨) અને શુક્તિમાં સર્પનો (અને) રજ્જુમાં રૂપાનો અધ્યાસ થાય નહિ યથી (૧) પ્રમેય (અધિષ્ઠાન) વિષે સાદૃશ્ય દોષ અધ્યાસનો હેતુ છે. ય જ રીતે (૨) પ્રમાતાવિષે લોભ, મયથી આદિલઈને (જે દોષ), અને (૩) નેત્રાદિક પ્રમાણ વિષે પિત્ત કામલથી આદિલઈને જે દોષ, તે (ત્રણ દોષ) અધ્યાસના હેતુ છે.

(૩) અને શુક્તિનું 'ઈદં' રૂપેકરીને સામાન્યજ્ઞાન હોય અને 'આ શુક્તિ છે' યમ વિશેષજ્ઞાન ન હોય, ત્યારે અધ્યાસ થાય છે. 'શુક્તિ છે' યથું વિશેષરૂપેકરીને જ્ઞાન હોય, ત્યારે અધ્યાસ થાય નહિ; અને (આ કંઈક છે યમ) સામાન્યરૂપેકરીને જ્ઞાન ન હોય તો યણ અધ્યાસ થાય નહિ. યથી અધિષ્ઠાનનું વિશેષરૂપેકરી અજ્ઞાન અને (અધિષ્ઠાનનું) સામાન્યરૂપેકરી જ્ઞાન, અધ્યાસનાં હેતુ છે. યટલી અધ્યાસની સામગ્રી છે. યન્નોમાંથી કોઈ યકુ નહિ હોય, તા યણ અધ્યાસ થાય નહિ. જેમ કુલાલ (કુંભાર), ચક્ર, દંડ, મૃત્તિકા (ય) ઘટની સામગ્રી છે. (તેમાંથી) કોઈ યક ન હોય તો ઘટ થાય નહિ. તેમ અધ્યાસ યણ (ડપર કહેલી) સર્વ સામગ્રી યકરી થાય છે. ૭.

૪૨. પ્રમાજ્ઞાનનો વિષય. કલ્પિત સર્પ રજા આદિકનુ અધિષ્ઠાન જે રજ્જુ શુક્તિ આદિક તે પ્રમાજ્ઞાનનો 'વિષય' છે,—યથી તે રજ્જુ શુક્તિ આદિ ય 'પ્રમેય' છે. રજ્જુ શુક્તિ આદિવિષે સર્પ રજાદિની તુલ્યા તા 'સાદૃશ્ય દોષ' છે, 'પ્રમેય—દોષ' યણ યને જ કહે છે

(વંધના અધ્યાસમાં સત્યવસ્તુના જ્ઞાનજન્યસંસ્કાર-
રૂપ પૂર્વોક્ત (૧) સામગ્રીનો અભાવ.)

૪૭. અને 'વંધના અધ્યાસમાં એક પણ કારણ છે નહિ.' વંધ વ્યાજ સત્ય હોય, તો તેના જ્ઞાનજન્ય સંસ્કારથી આત્માવિષે મિથ્યાવંધ પ્રતીત થાય. જેથી સિદ્ધાન્તમાં આત્માથી ભિન્ન કોઈ સત્યવસ્તુ છે નહિ; યથી સત્ય-વંધના જ્ઞાનજન્યસંસ્કારનો અભાવ હોવાથી, આત્માવિષે વંધનો અધ્યાસ વને નહિ.

(વંધના અધ્યાસમાં પ્રમેયાદિદોષરૂપ પૂર્વોક્ત (૨) સામ-
ગ્રીનો અભાવ.)

૪૮. તેમ આત્માનું અને વંધનું સાદૃશ્ય પણ છે નહિ. ઊલટો તમ-પ્રકાશની પેઠે વિપરીત સ્વભાવ છે. આત્મા પ્રત્યક્ છે, અને વંધ પરાક્ છે. ['પ્રત્યક્' નામ અન્તરૂનું છે, અને 'પરાક્' નામ બાહ્યનું છે.] આત્મા વિષયી છે અને વંધ વિષય છે. [જે પ્રકાશ કરવાવાળો હોય તે 'વિષયી' કહેવાય છે. અને જેનો પ્રકાશ કરાય તે 'વિષય' કહેવાય છે.] પ્રત્યક્વિષે પરાક્નો તથા પરાક્વિષે પ્રત્યક્નો અધ્યાસ થાય નહિ. જેમ પુત્રાદિકોની અપેક્ષાથી દેહ પ્રત્યક્ છે, તેને-વિષે પુત્રાદિકોનો, અને પુત્રાદિકવિષે દેહનો, અધ્યાસ થાય નહિ. અને વિષયમાં વિષયીનો તથા 'વિષયીમાં વિષયનો અધ્યાસ થાય નહિ. જેમ વિષય જે ઘટાદિક તેમાં વિષયી દીપકનો, અને (વિષયી) દીપકમાં (વિષય) ઘટાદિકોનો, અધ્યાસ થાય નહિ. તેમ સાદૃશ્યનો અભાવ હોવાથી પ્રત્યક્ વિષયી જે આત્મા, તે (આત્મા) વિષે, પરાક્ વિષયરૂપ વંધનો અધ્યાસ વને નહિ. પ્રત્યક્નો અને પરાક્નો વિરોધ છે.

વિપરી અને વિપયનો વિરોધ છે, સાદૃશ્ય નથી; યથી વંધનો અધ્યાસ આત્માવિષે વને નહિ.

૪૯. તેમ જ પ્ર મા તા ના દો પ નો અને પ્ર મા ણ ના દો પ નો પ ણ અ મા ય છે. કેમકે, 'પ્રમાતાથી આદિલઈને સર્વ પ્રપંચ અધ્યાસરૂપ છે, તે જ વંધ છે,' એ વેદાન્તનો સિદ્ધાન્ત છે. એ રીતિએ વંધના અધ્યાસથી પૂર્વ પ્રમાતા-પ્રમાણનું સ્વરૂપ અસિદ્ધ છે; અને તેમનો દોષ પણ અસિદ્ધ છે. યથી વંધનો અધ્યાસ વને નહિ. (એમ પૂર્વપક્ષીનું કહેવું છે.)

(વંધના અધ્યાસમાં અધિષ્ઠાનના વિશેષરૂપનું અજ્ઞાન,
પરૂપ (૩) સામગ્રીનો અભાવ.)

૫૦ અને અધિષ્ઠાનના વિશેષરૂપે કરીને અજ્ઞાન પણ વને નહિ. કેમકે, 'વંધનું અધિષ્ઠાન જે બ્રહ્મ છે તે 'સ્વયંપ્રકાશ જ્ઞાનરૂપ છે.' તે સ્વયંપ્રકાશ જ્ઞાનરૂપ બ્રહ્મવિષે સૂર્યવિષે તમની પેઠે, અજ્ઞાન વને નહિ. જેમ પ્રકાશમાન સૂર્ય-સાથે તમનો વિરોધ છે, તેમ ચેતનપ્રકાશ અને તમરૂપ અજ્ઞાનનો પરસ્પર વિરોધ છે અને અધિષ્ઠાનનું અજ્ઞાન અંગીકાર કરિયે, તો પણ વંધનો અધ્યાસ વને નહિ. કેમકે, અત્યંત અજ્ઞાતવિષે તથા અત્યંત જ્ઞાતવિષે અધ્યાસ થાય નહિ. કિન્તુ વિશેષરૂપેકરી અજ્ઞાત અને સામાન્યરૂપેકરી જ્ઞાતવિષે (અધ્યાસ) થાય છે. અને 'બ્રહ્મ સામાન્યવિશેષભાગથી રહિત છે,'- ['નિર્વિશેષ છે'] એ સિદ્ધાન્ત છે. યથી વિશેષરૂપે અજ્ઞાત અને સામાન્યરૂપે જ્ઞાત, બ્રહ્મ વને નહિ. અને અધ્યાસના લોભે

૪૩ બ્રહ્મચેતનથી ભિન્ન જે અજ્ઞાન અને અજ્ઞાનનાં કાર્ય-સ્થૂલ સૂક્ષ્મ પ્રપંચ-એ સર્વ ચેતનવિષે અધ્યસ્ત છે એને જ અન્તર્ગત, અન્તઃકરણરૂપ પ્રમાતા અને ઇન્દ્રિયરૂપ પ્રમાણ છે, યથી એ પણ અધ્યસ્ત છે. તેથી પ્રપંચના અધ્યાસથી પૂર્વસિદ્ધ નથી. એ ઉપનિષદનો નિર્ણાતઅર્થરૂપ સિદ્ધાન્ત છે. પં પી. પુ.

બ્રહ્મવિષે 'સામાન્યવિશેષભાવ અંગીકાર કરશો, તો સિદ્ધાન્તનો ત્યાગ થશે. એ રીતિએ નિર્વિશેષપ્રકાશરૂપ જે બ્રહ્મ, તે(બ્રહ્મ)ના વિશેષરૂપે અજ્ઞાનનો અને સામાન્યરૂપે જ્ઞાનનો અભાવ હોવાથી, તેનાવિષે અધ્યાસ વને નહિ. યથી 'બ્રહ્મવિષે બંધ 'અ-ધ્યાસરૂપ છે.'-એ કહેવું વને નહિ. કિન્તુ બંધ સત્ય છે તે સત્ય બંધની જ્ઞાનેકરી નિવૃત્તિનો અસંભવ છે. યથી બંધનું જ્ઞાનદ્વારા મોક્ષરૂપ પ્રયોજન વને નહિ. અને જ્ઞાનેકરી મોક્ષનો પ્રતિપાદક જે સિદ્ધાન્ત તે સમીચીન નહિ. કિન્તુ-૫૧. (કેવલ કર્મેકરી મોક્ષની સિદ્ધિ. એકભવિકવાદ.)

કર્મેકરી મોક્ષ થાય છે એ વાર્તા (પૂર્વપક્ષી) એક-ભવિકર્વોદની રાતિએ પ્રતિપાદન કરે છે.

इहो.

સત્યબંધની જ્ઞાનથી નહિ નિવૃત્તિ સયુક્ત;

નિત્યકર્મ સંતત કરે, સહે થવા જે મુક્ત.

૮.

ટીકા:—સત્યબંધની જ્ઞાને નિવૃત્તિ માનથી 'સયુક્ત' નામ યુક્તિસહિત નથી; કિન્તુ અયુક્ત છે. યથી જે પુરુષ મુક્ત થવા યાહે, તે 'સંતત' નામ નિરંતર નિત્યકર્મ કરે ૮

યનો આ અભિપ્રાય છે:—

૫૨. (કર્મના પ્રકાર-વિહિત નિપિદ્ધ.)

કર્મ વે પ્રકારનું છે.—એક વિહિત છે અને એક નિપિદ્ધ છે. [પુરુષની પ્રવૃત્તિના નિમિત્ત જેનું સ્વરૂપ વેદે વોધન કન્યું છે, તે 'વિહિતકર્મ' કહેવાય છે. અને પુરુષની નિવૃત્તિ જેણે વોધન કરી છે, તે 'નિપિદ્ધકર્મ' કહેવાય છે.] અને સ્વભાવસિદ્ધ જે ક્રિયા છે તે કર્મ નથી; કેમકે, વેદે, પ્રવૃત્તિ

૪૪. પૂર્વમીમાંશાનો એકદશી એમ કહે છે કે,—કર્મને મોક્ષની દૃષ્ટા પછી એક જ જન્મ થાય છે, એ વાદ.

અથવા નિવૃત્તિના નિમિત્ત યોધન જે કન્યું છે, તે કર્મ કહેવાય છે. ઉદાસીનક્રિયા કર્મ નહિ. ઘ્યી થે પ્રકારનું કર્મ છે, ઘ્રણ પ્રકારનું નહિ.

૫૩. (પંચ પ્રકારનાં કર્મ.)

વિહિતકર્મ ચાર પ્રકારનું છે.—એક નિત્ય છે, અને (એક) નૈમિત્તિક છે, કામ્ય છે અને પ્રાયશ્ચિત્ત છે. પાપનાશના નિમિત્ત વિધાન કન્યું જે કર્મ, તે પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવાય છે. જેમ પ્રમાદેકરી યતિને દ્રવ્યના પ્રહણજન્ય જે પાપ (લાભે) તેના નાશના નિમિત્ત દ્રવ્યનો ત્યાગ અને ઘ્રણ ઉપવાસ છે. (એ પ્રાયશ્ચિત્તકર્મ છે.) ફલના નિમિત્ત વિધાન કન્યું જે કર્મ તે કામ્ય કહેવાય છે. જેમ વૃષ્ટિકામને કારીરીયાગ છે; અને સ્વર્ગકામને અગ્નિહોત્ર (અને) સાંમયાગથી આદિ લઈને (યાગો) છે. (તે કામ્યકર્મ છે.) જે કર્મને નહિ કન્યાથી પાપ થાય, અને કન્યાથી પુણ્યપાપરૂપ ફલ થાય નહિ. અને સદા જેનું વિધાન નહિ, કિન્તુ કંઈ નિમિત્તને લઈને (જેનું) વિધાન કન્યું હોય તે કર્મ નૈમિત્તિક કહેવાય છે, જેમ, -પ્રહણશ્રાદ્ધ છે; અને અવસ્થાવૃદ્ધ, જાતિવૃદ્ધ, આશ્રમવૃદ્ધ, વિદ્યાવૃદ્ધ, ધર્મવૃદ્ધ, જ્ઞાનવૃદ્ધ, પુરુષના આગમનથી ઉત્થાનરૂપ કર્મ છે. [વિદ્યાશબ્દે શાસ્ત્રજ્ઞાનનું પ્રહણ છે; અને જ્ઞાનશબ્દે અપરોક્ષ વિદ્યાનું પ્રહણ છે. પૂર્વપૂર્વથી ઉત્તર ઉત્તર ઉત્તમ છે.] (એ નૈમિત્તિક કર્મ છે.) જે(કર્મ)ના નહિ કરવાથી પાપ થાય, કરવાથી ફલ થાય નહિ, અને સદા જેનું વિધાન હોય, તે નિત્યકર્મ કહેવાય છે. જેમ

૪૫. વિદિત અને નિપિદ્યથી શેષ રહેતી સહજ ક્રિયા: રાગદ્વેષથી રહિત ગમનાગમન-શોચાદિ-ક્રિયા. ૪૬. 'વર્ષકામેષિ: કારીરી.'-વર્ષાની ઇચ્છાવાળા પુરુષે કરવાનો યત્ન. વર્ષાના હેતુવિષે શ્લોકે તે 'કારીરી'

જ્ઞાનસંઘ્શાદિક (કર્મ) છે (તે નિત્યકર્મ છે). ય રીતિય ચાર પ્રકારનાં વિહિત, અને (એક) નિપિદ્ધ મઢીને પંચ પ્રકારનું કર્મ છે.

૫૪. મોક્ષની ઇચ્છાવાન્ કામ્ય અને નિપિદ્ધ કર્મ કરે નહિ. કેમકે, કામ્યકર્મેકરી ઉત્તમલોક પ્રતિ જાય છે અને નિપિદ્ધ(કર્મે)કરી નીચલોક પ્રતિ જાયે છે. યથી ઘંનેને ત્યાગ કરે, અને નિત્યકર્મને સદા કરે, અને નૈમિત્તિક(કર્મ)નું જ્યારે નિમિત્ત હોય ત્યારે, નૈમિત્તિક પળ કરે, કેમકે નિત્ય-નૈમિત્તિકકર્મને નહિ કરે તો પાપ થશે, અને તે પાપેકરી નીચ યાંતિને પ્રાપ્ત થશે; યથી પાપને રોકવા અર્થે નિત્યનૈમિત્તિકકર્મ કરે. નિત્યનૈમિત્તિકકર્મનું અન્ય ફલ નથી, આ જ ફલ છે;--તેમને નહિ કન્યાથી જે પાપ થાય છે તે તેમના કરવાથી થાય નહિ. યથી મુમુક્ષુ નિત્યનૈમિત્તિકકર્મ અવશ્ય કરે.

૫૫. અને જો કદાચિત્ પ્રમાદથી નિપિદ્ધ કર્મ થઈ જાય તો તેનો દોષ દૂર કરવાસારૂ પ્રાયશ્ચિત્ત કરે. જો નિપિદ્ધ કર્મ ન કન્યું હોય, તો પળ જન્માન્તરનાં જે પાપ છે, તેમને દૂર કરવાસારૂ પ્રાયશ્ચિત્તકર્મ કરે, પરંતુ યદલો મેદ છે. પ્રાયશ્ચિત્ત વે પ્રકારનું છે;--એક તો અસાધારણ છે અને એક સાધારણ છે. કોઈ પાપવિશેષને દૂર કરવાસારૂ શાસ્ત્રે જે વિધાન કન્યું હોય, તે અસાધારણ પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવાય છે. જેમ,--પૂર્વે કહ્યા ઉપવાસ છે. અને સર્થ પાપને દૂર કરવાસારૂ શાસ્ત્રે વિધાન કરેલું જે કર્મ તે સાધારણ પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવાય છે. જેમ,--ગંગાજ્ઞાન અને ઈશ્વરનું નામઉચ્ચારણ છે. યથી આદિલઈને અન્ય પળ જાણો લેવાં. ય રીતિય વે પ્રકાર-નું પ્રાયશ્ચિત્ત છે. જો જ્ઞાત પાપ હોય, તો તે પાપનું નાશક

જે અસાધારણ પ્રાયશ્ચિત્ત શાસ્ત્રે વોધન કન્યું છે, તેને કરે; અને જન્માન્તરનાં જે અજ્ઞાત પાપ છે, તેમને દૂર કરવાસાદ સાધારણ પ્રાયશ્ચિત્ત કરે. કેમકે, અસાધારણ પ્રાયશ્ચિત્તનો આ સ્વભાવ છે,—જે પાપનો નાશ કરવાસાદ શાસ્ત્રે જે પ્રાયશ્ચિત્તવિધાન કન્યું છે, તે પાપ (તે) પ્રાયશ્ચિત્તેકરી દૂર થાય છે; અન્ય નહિ. અને જન્માન્તરનાં પાપનું આનું જ્ઞાન છે નહિ,—જે કન્યું પાપ છે; (અને) કિયા પ્રાયશ્ચિત્તેકરી દૂર થશે. યથી સાધારણ પ્રાયશ્ચિત્ત કરે.

૫૬. સા ધાર ણ પ્રાય શ્ચિત્તે કરી સર્વ પાપ દૂર થાય છે. યદ્યપિ ગંગાસ્નાનથી આદિ લઈને જે સાધારણ પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યાં, તે કેવલ પ્રાયશ્ચિત્તરૂપ નથી; કિન્તુ કામ્યરૂપ અને પ્રાયશ્ચિત્તરૂપ છે. કેમકે, ગંગાસ્નાનેકરી ઉત્તમલોકની પ્રાપ્તિ શાસ્ત્રમાં કહી છે; તેમ ઈશ્વરના નામ ઉચ્ચારણેકરી પણ ઉત્તમલોકની પ્રાપ્તિ કહી છે, યથી કામ્યરૂપ છે. અને પાપનાં નાશક છે યથી પ્રાયશ્ચિત્તરૂપ છે. જેમ અશ્વમેધ બ્રહ્મહત્યાદિક પાપનો નાશક છે, અને સ્વર્ગની પ્રાપ્તિરૂપ ફલનો હેતુ છે; તેમ ગંગાસ્નાનાદિક છે; કેવલ પ્રાયશ્ચિત્ત નથી. યથી ગંગાસ્નાનાદિકોપકરી ઉત્તમ લોકની પ્રાપ્તિ થાય છે. તે (ઉત્તમ લોક) મુમુક્ષુને વાંચ્છિત છે નહિ; તથાપિ જેને ઉત્તમલોકની વાંચ્છા છે, તેને તો ગંગાસ્નાનાદિક, પાપનો નાશ કરીને ઉત્તમલોકને પ્રાપ્ત કરે છે. જેને (ઉત્તમ) લોકની કામના છે નહિ, તેના કેવલ પાપનાં જ નાશક છે. યથી કામનાસહિત અનુષ્ઠાન કન્યાં 'કામ્યરૂપ' પ્રાયશ્ચિત્ત છે, (અને) લોકકામના વિના અનુષ્ઠાન કન્યાં 'કેવલ' પ્રાયશ્ચિત્તરૂપ છે. જેમ વેદાન્તમતમાં 'સંપૂર્ણ કર્મ સકામ પુરુષને સંસારનાં હેતુ છે, અને નિષ્કામ(પુરુષ)ને અંતઃકરણની શુદ્ધિ કરીને

મોક્ષનાં હેતુ છે, તેમ એક જ ગંગાજ્ઞાન તથા ઈશ્વરનું નામઉચ્ચારણ, સકામ(પુરુષ)ને કામ્યરૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત છે, અને નિષ્કામ(પુરુષ)ને કેવલ પ્રાયશ્ચિત્તરૂપ છે, યથી મુમુક્ષુ સાધારણ પ્રાયશ્ચિત્ત કરે. એ રીતિએ જન્માન્તરનાં સંપૂર્ણ પાપનો નાશ, જ્ઞાન વિના જ થાય છે. (એમ પૂર્વપક્ષી કહે છે.)

૫૭. તેમ મુમુક્ષુનાં જન્માન્તરનાં કામ્યકર્મ પણ વંધ્યાના સમાન છે, ફલનાં હેતુ નથી, કેમકે જેમ કર્મના અનુષ્ઠાન-કાલવિષે પુરુષની ઇચ્છા, ફલનો હેતુ, વેદાન્ત મતમાં, અંગીકાર કરી છે; ઇચ્છાસહિત અનુષ્ઠાન કન્યાં કર્મ સ્વર્ગાદિ ફલનાં હેતુ છે, અને નિષ્કામ અનુષ્ઠાન કન્યાં (કર્મ) સ્વર્ગાદિક ફલનાં હેતુ નથી, એ વેદાન્તનો સિદ્ધાન્ત છે; તેમ (અમારા એકમથિકવાદના સિદ્ધાન્તમાં) કર્મની સિદ્ધિથી અનંતર પણ પુરુષની ઇચ્છા ફલનો હેતુ છે. પુરુષની તે ઇચ્છા જે કાલમાં પુરુષ મુમુક્ષુ થયો ત્યારે દૂર થઈ ગઈ, યથી જન્માન્તરનાં કામ્યકર્મ પણ ફલનાં હેતુ નહિ. જેમ કોઈ પુરુષે ધનની પ્રાપ્તિની ઇચ્છાથી ધનની પુરુષનું આરાધન કન્યાં હોય, તે ધનના આરાધનથી અનંતર પણ જો ધનની ઇચ્છા દૂર થઈ જાય, તો ધનની પ્રાપ્તિરૂપ ફલ થાય નહિ; તેમ જન્માન્તરના કામ્યકર્મનું ફલ પણ, મુમુક્ષુને ઇચ્છાના અભાવથી, થતું નથી. એ રીતિએ કેવલ કર્મેકરી મોક્ષ થાય છે. (એમ પૂર્વપક્ષી કહે છે; ઘડી કહે છે કે:-)

૫૮. વર્તમાનજન્મવિષે કામ્ય અને નિષિદ્ધ (કર્મ) કન્યાં નથી જેથી ઊર્ધ્વલોક (સ્વર્ગ) કે અધોલોક (નરક) પ્રાપ્તિ જાય. જન્માન્તરનાં પ્રારબ્ધ-જે નિષિદ્ધ અને કામ્ય (કર્મ)-તેમનો મોળેકરી નાશ થાય છે. નિત્ય અને નૈમિત્તિક (કર્મ)

નહિ કરવાથી જે પાપ થાય તે, તે(કર્મ)ને કરવાથી મુમુક્ષુને થાય નહિ. અને જન્માન્તરનાં સંચિત જે નિપિદ્ધ (કર્મ) છે, તેમનો સાધારણ પ્રાયશ્ચિત્તેકરી નાશ થાય છે. જન્માન્તરનાં સંચિત કામ્યકર્મ, મુમુક્ષુને ઇચ્છાના અભાવથી, ફલ દે નહિ. ધર્મી મુમુક્ષુ નિત્યનૈમિત્તિક (કર્મ) અને સાધારણ પ્રાયશ્ચિત્ત-રૂપ કર્મ કરે. અને વર્તમાન જન્મનું જ્ઞાતનિપિદ્ધ કર્મ હોય તો, અસાધારણ પ્રાયશ્ચિત્ત કરે.

અથવા નિત્ય અને નૈમિત્તિક જ કરે, પ્રાયશ્ચિત્ત ન કરે. કેમકે, જે સંચિત નિપિદ્ધકર્મ અને કામ્યકર્મ, તે મુમુક્ષુનાં નાશ થઈ જાય છે. જેમ જ્ઞાનવાનનાં સંચિતકર્મનો નાશ વૈદાન્તમત-માં અંગીકાર કન્યો છે; તેમ નિપિદ્ધ (અને) કામ્ય- (કર્મ)નો ત્યાગ કરીને, નિત્યનૈમિત્તિકકર્મવિષે વર્તમાન જે મુમુક્ષુ તેનાં સંચિતકર્મનો નાશ થાય છે. અથવા સંચિત જે કામ્ય અને નિપિદ્ધ, તે સર્વ મઢીને એક જન્મનો આરંભ કરે છે, ધર્મી મુમુક્ષુને એક જન્મ અન્ય થાય છે. અથવા યોગીના કાર્યેન્ગૂહની પેઠે, એક જ કાલવિષે સર્વ સંચિત, અનંત શરીરો-નો આરંભ કરે છે; એવઢે મુમુક્ષુ ઉત્તરજન્મવિષે સર્વનું ફલ મોગથી લે છે. અથવા નિત્ય અને નૈમિત્તિક કર્મના અનુષ્ઠાનથી જે ક્લેશ થાય છે, તે જન્માન્તરના સંચિતનિપિદ્ધકર્મનું ફલ છે; ધર્મી જન્માન્તરનું સંચિતનિપિદ્ધ અન્ય જન્મનો આરંભ કરે નહિ. કામ્ય જે સંચિત છે, તે એક જન્મમાં અથવા એક કાલમાં અનંત શરીરોનો આરંભ કરે છે; ધર્મી મુમુક્ષુને ઉત્તરજન્મવિષે દુઃખનો લેશ પણ થાય નહિ; કેવલ સુખનો મોગ થાય છે. કેમ કે, જન્માન્તરનાં સંચિત જે વિહિતકર્મ છે, તેઓથી શરીર

૪૭. વેદસ્મૂહ. એકકાલે હજારો શરીરેકરી મોગ મોગથી લઈ કર્મનો ક્ષય કરવો તે.

૧૯૬ પ્રયોજનસંબંધન તથા સંબંધસંબંધન-પૂર્વપક્ષીપ્રમાણે. (વિચારસાગર.

થયું છે; અને સંચિત જે નિપિદ્ધ (કર્મ) છે, તે નિત્યનૈમિત્તિકના અનુષ્ઠાનના ક્લેશોકરી પૂર્વજન્મવિષે ભોગવી લીધાં. એ રીતિએ પ્રાયશ્ચિત્ત વિના, કેવલ નિત્ય અને નૈમિત્તિક કર્મના અનુષ્ઠાનથી મોક્ષ થાય છે. યથી નૈમિત્તિક કર્મના સમયે નૈમિત્તિક (કર્મનું) અનુષ્ઠાન કરે, અને નિત્યકર્મ(નું) સંતત અનુષ્ઠાન કરે. આ મતને શાસ્ત્રમાં 'એક-ભવિક-વાદ' કહે છે. (એ પ્રકારે પૂર્વપક્ષી-નું કહેવું છે.)

૫૯. (પુનઃ પૂર્વપક્ષી કહે છે કે:-) યથી પણ વંધની નિવૃત્તિ જ્ઞાનદ્વારા ગ્રંથનું પ્રયોજન નહિ. કેમકે, જે વસ્તુ અન્ય-વતે થાય નહિ તે મુખ્ય પ્રયોજન હોય છે. જેમ રૂપનું જ્ઞાન નેત્ર વિના અન્યવતે થાય નહિ, તે રૂપજ્ઞાન નેત્રનું પ્રયોજન છે. અને વંધની નિવૃત્તિ ગ્રંથ વિના કર્મકરી થાય છે યથી, વંધની નિવૃત્તિ ગ્રંથનું પ્રયોજન નથી. એ રીતિએ ગ્રંથનાં અધિકારી, વિષય, (અને) પ્રયોજન વને નહિ.

(અથ સંબંધસંબંધન-પૂર્વપક્ષપ્રમાણે.)

૬૦. અધિકારીઆદિકોના અભાવથી સંબંધ પણ વને નહિ. કેમકે, વિષયના અભાવથી, ગ્રંથનો અને વિષયનો પ્રતિ-પાદક-પ્રતિપાદ્ય-ભાવ-સંબંધ વને નહિ. અધિકારીના અને ફલના અભાવથી, તેમનો પ્રાપક-પ્રાપ્ય-ભાવ-સંબંધ વને નહિ. અધિકારીના અભાવથી, તેનો અને વિચારનો કર્તૃ કર્તવ્ય-ભાવ-સંબંધ વને નહિ. જ્ઞાનની નિષ્ફલતા હોવાથી, ગ્રંથનો અને જ્ઞાનનો જનક-જન્ય-ભાવ-સંબંધ વને નહિ સફલવસ્તુ જન્ય હોય છે. પૂર્વ કહી રીતિએ જ્ઞાન સફલ છે નહિ; અને જ્ઞાનના સ્વરૂપનો પણ અભાવ છે, યથી પણ જ્ઞાનનો અને ગ્રંથનો સંબંધ વને નહિ; કેમકે, સિદ્ધાન્તમાં જીવમહત્ત્વા અમેદનિશ્ચયનું નામ જ્ઞાન છે. તે અમેદનિશ્ચય વને નહિ; કેમકે, જીવમહત્ત્વા

૨ તરંગ.) પૂર્વપક્ષીના વિવાદનું સિદ્ધાન્તી ઉત્તર આપે છે. ૧૯૭

અમેદ છે નહિ; એ વાત્તા વિષયના નિરાકરણમાં પૂર્વે પ્રતિપા-
દન કરી છે; એથી અમેદનિશ્ચયરૂપજ્ઞાન વને નહિ. એ રીતિએ
અધિકારી આદિક અનુવંધના અમાવથી ગ્રંથનો આરંભ વને
નહિ.

(એ પ્રમાણે આ દ્વિતીય તરંગના આરંભથી તે અહિયાં સુધી
પૂર્વપક્ષીની શંકા છે.)

(પૂર્વપક્ષીના ક્રમપ્રમાણે)

૬૧. (સિદ્ધાન્તીનાં ઉત્તર.)

(અધિકારીસંબંધી પૂર્વપક્ષીનો અનુવાદ.)

પૂર્વપક્ષીએ (ગત અંક ૩૩ થી ૩૬ સુધીવિષે) પ્રથમ કહ્યું
જે- 'મોક્ષની ઇચ્છા કોઈને વને નહિ, કેમકે, મોક્ષવિષે એ
'અંશ છે:-એક તો કારણસહિત જગત્ની નિવૃત્તિ મોક્ષનો અંશ
'છે; અને વીજો અંશ બ્રહ્મની પ્રાપ્તિરૂપ છે. તેઓવિષે કારણ-
'સહિત જગત્ની નિવૃત્તિરૂપ મોક્ષના પ્રથમ અંશની ઇચ્છા
'કોઈને છે નહિ; કિન્તુ પ્રણ પ્રકારનાં દુઃખની નિવૃત્તિની
'ઇચ્છા સર્વ પુરુષોને છે. તે દુઃખની નિવૃત્તિ પોતપોતાના ઉપા-
યોથી થઈ જાય છે. એથી મૂલસહિત જગત્ની નિવૃત્તિની
'ઇચ્છાવાળો મુમુક્ષુ અધિકારી વને નહિ.' તેનું

૬૨. સમાધાન (સિદ્ધાન્તી) પ્રથમ કહે છે.

(અધિકારિમંડન ૬૨-૭૧.)

૩૭૦.

સમૂલ જગત્-હાનિ વિના, નહિ ત્રિવિધદુઃખધ્વંસ;

એથી યાહે સકલ જન, પ્રથમ મોક્ષનો અંશ. ૯.

ટીકા:-'મૂલ' નામ જગત્નું કારણ જે અજ્ઞાન, અને

જગત્ તેના નાશ વિના, ત્રણ પ્રકારનાં દુઃખનો, અન્ય ઉપાયોથી, 'ધ્વંસ' નામ નાશ થાય નહિ. અને મૂલ અવિદ્યાના નાશથી સર્વ દુઃખ, અને દુઃખનાં કારણ રોગાદિક, અને રોગાદિકનાં આશ્રય શરીરાદિકોનો નાશ થાય છે. યથી ત્રિવિધ દુઃખના નાશના નિમિત્તકારણસહિત જગત્ની નિવૃત્તિરૂપ મોક્ષના પ્રથમ અંશને સકલ પુરુષ ચહાય છે. ૯.

તાત્પર્ય આ છે:—સર્વ ઔષધ આદિ ઉપાય કરવાવિષે જે સમર્થ છે, તેમનાં પણ દુઃખ નિયમેકરી દૂર થાય નહિ. કોઈ પુરુષનાં રોગાદિજન્ય દુઃખ ઔષધાદિક ઉપાયોથી નાશ થાય છે; અને કોઈનાં દુઃખનો ઔષધાદિક ઉપાયોથી નાશ થાય નહિ, યથી ઔષધાદિક ઉપાયોથી રોગાદિજન્ય દુઃખની નિયમેકરીને નિવૃત્તિ થાય નહિ. અને ઔષધાદિક ઉપાયોથી જેના દુઃખની નિવૃત્તિ થાય છે, તેના પણ દુઃખની ઉત્પત્તિ ફરી થાય છે. યથી ઔષધાદિ ઉપાયોથી દુઃખની અત્યંતનિવૃત્તિ થાય નહિ. [જેની નિવૃત્તિ થઈ છે તેની ફરી ઉત્પત્તિ થાય નહિ, તે અત્યંતનિવૃત્તિ કહેવાય છે.] ઔષધાદિક ઉપાયોથી દુઃખની નિવૃત્તિ નિયમે કરીને થાય નહિ, અને નિવૃત્તિ જે દુઃખ તેનો ફરી પણ ઉત્પત્તિ થાય છે; યથી અત્યંતનિવૃત્તિ પણ તે ઉપાયોથી થાય નહિ. અને દુઃખના સફળ સાધનનો નાશ થાય તો સકલ દુઃખની નિયમેકરીને નિવૃત્તિ થાય, અને દુઃખનાં સાધનનો નાશ થયેથી ફરી દુઃખ થાય નહિ. યથી દુઃખની નિવૃત્તિના નિમિત્ત દુઃખનાં સાધનની નિવૃત્તિની ઇચ્છા સર્વને હોય છે.

તે દુઃખનું સાધન,—અજ્ઞાન અને તેનું કાર્ય પ્રવંચ છે. ય ઘાતાં છાન્દોગ્ય ઉપનિષદ્માં (સત્તમ પ્રપાટકગત) ભૂમયિઘાવિષે પ્રસિદ્ધ છે. ત્યાં આ પ્રસંગ છે:—પ્રક સમય સ્વત્કુ-

मार पासे नारद प्राप्त थया. अने नारदे कहुं, - 'हे भगवन् !
 'जे आत्मज्ञानी पुरुष छे, तेने शोक थतो नथी; अने हुं
 'शोकसहित छुं, पथी हुं अज्ञानी छुं, मने एवो उपदेश करो
 'के जेणे मारुं अज्ञान दूर थाय.' त्यारे सनत्कुमारें नारदने
 कहुं:- 'हे नारद ! भूमा शोकरहित छे. सुखरूप छे.
 '(भूमार्थी अल्पमां सुप्त नथी. कारण ते अल्पमां अधिक तृष्णा
 'छे अने तृष्णा छे ए दुःखनुं बीज छे. अने भूमार्थी भिन्न स-
 'कल तुच्छ छे; अने दुःखनुं साधन छे.)' ['भूमा' नाम ब्रह्मनुं
 छे.] ए रीतिए ब्रह्मार्थी भिन्न जे वस्तु ते सकल दुःखनुं साधन
 कहुं छे. अज्ञान अने तेनुं कार्य, ब्रह्मार्थी भिन्न छे;
 एथी दुःखनुं साधन छे. तेनी निवृत्ति थयेथी सर्व दुः-
 खनी नियमेकरीने अत्यंतनिवृत्ति बने छे; एथी सकल दुः-
 खनी निवृत्तिना निमित्त, अज्ञानसहित प्रपंचनी
 निवृत्तिरूप मोक्षना प्रथम अंशनी इच्छा बने छे.

६४. अने (गत अंक ३७-३८ विषे) पूर्वपक्षीए कहुं के:-
 'जे वस्तुनो अनुभव कन्यो होय, तेनी प्राप्तिनी इच्छा थाय
 'छे. ब्रह्मनो अनुभव कोईए कन्यो छे नहि. एथी ब्रह्मनी
 'प्राप्तिरूप मोक्षना द्वितीय अंशनी इच्छा कोईने थाय नहि'
 ते(बीजी शंका)नुं.

समाधान.

(सिद्धान्ती कहे छे.)

इहो.

सुप्तअनुभव सर्वे कन्यो, ब्रह्म शुष्यं सुखरूप;
 ब्रह्मप्राप्ति ए हेतुथी, चहै विवेकिभूप.

टीका:—सर्व पुरुषोए सुप्तनो अनुभव कन्यो छे, एथी

સુખની ઇચ્છા સર્વને છે. અને 'બ્રહ્મ નિત્ય સુખરૂપ છે.'
 एवं सत्शास्त्रमां सांभळ्यं છે. एषी 'विवेकिभूप' नाम उत्तम
 विवेकी (पुरुष) सुखस्वरूप ब्रह्मानी प्राप्तिने इच्छे છે. ૧૦.

૬૫. ડહો.

કેવલ સુખ સહુ જન ચહે, ન ચહે વિપય સમાજ;
 एषी अधिकारी बने, जे છે વિવેકિરાજ.

ટીકા:—(પૂર્વપક્ષીય) પૂર્વે કહ્યું જે,— 'સર્વ પુરુષ વિપય
 'जन्य सुखने चाहे છે, તે વિપયજન્ય સુખ મોક્ષવિપે પ્રાપ્ત
 'थाय नहि, किन्तु जगत्मां प्राप्त थाय છે; एषी मोक्षनी
 इच्छायान् अधिकारीना अभावथी ग्रंथनो आरंभ निष्फल છે.'
 તેને આ પૂછિયે છિયે જે,—(૧) કોઈ મુમુક્ષુ છે નહિ ? અથવા
 (૨) મુમુક્ષુ તો છે પરંતુ તેમની ગ્રંથવિપે પ્રવૃત્તિ થાય
 નહિ ? જો યમ કહે કે 'મુમુક્ષુ નથી,' (તો) તે બને નહિ;
 કેમકે, સર્વ પુરુષ સર્વ દુઃખનો નાશ અને નિત્યસુખની પ્રાપ્તિ
 चाहे છે. તે સર્વ દુઃખનો નાશ અને (નિત્ય) સુખની પ્રાપ્તિ-
 रूप-मोक्ष છે, एषी सर्व पुरुष मुमुक्षु છે.

અને (પૂર્વપક્ષીય) કહ્યું જે, '(સર્વ જન) વિપયજન્ય
 सुखने चाहे છે,' તે નહિ. किन्तु सुखमात्र चाहे છે. તે
 सुख विपयेकरी थाय, अथवा विपय घिना थाय. જો વિપય-
 जन्य सुखने ज चाहे तो सुंपुत्तिना सुखनी इच्छा नहि થવી
 જોઈયે. सुपुत्तिनुं सुख विपयजन्य છે નહિ, एषी केवल विपय-
 जन्य(सुख)ने ज नहि (किन्तु) सुखमात्रने चाहे છે, (पटलुं
 ज नहि पण) उलटुं आत्मसुखने चाहे છે; विपयजन्यने नथी

૪૮. જામત્-સ્વપ્ન ઉમયનાં ઉપભોગપ્રદ કમોનો ઉપરમ ધયે સવે સ્પૂલ્કશ્મ-
 देहना अभिमाननी निवृत्तिद्वारा विशेषविज्ञानोपरमात्मिकाशुदिनी कारणान्मा-
 एफरी अवस्थिति. स्वप्नयी मित्र गाढनिद्राशवस्था जेमां दुःखमात्रनो अभाव
 होय છે.

૨ તર્ગ.) સર્વ પુરુષ અવિનાશી મુલ્ક ઇચ્છે છે માટે મુમુક્ષુ છે. ૨૦૧

છહાતા. કેમકે સર્વ પુરુષો(જીવો)ને ન્યૂન અથવા અધિક વિષયસુખ પ્રાપ્ત પળ છે; પરંતુ આવી ઇચ્છા સદા રહે છે- 'અમને ઇચ્છું સુખ પ્રાપ્ત થાય કે જે સુખનો નાશ કદિ થાય નહિ.' ઇચ્છું સુખ (તે) આત્મસ્વરૂપ-મોક્ષ-છે ઇચ્છી સર્વ પુરુષ (મોક્ષની ઇચ્છાવાન્) મુમુક્ષુ છે. 'કોઈ મુમુક્ષુ નથી' ઇચ્છું કહેવું વને નહિ.

૬૬. અને (પૂર્વપક્ષી) જો આમ કહે કે:-'મુમુક્ષુ સો છે, 'પરંતુ ગ્રંથમાં પ્રવૃત્તિ થાય નહિ; ઇચ્છી ગ્રંથનો આરંભ નિષ્ફલ છે.' તેને આ પૂછિયે છિયે કે, (૧) ગ્રંથ મોક્ષનું સાધન છે નહિ ઇચ્છી ગ્રંથવિષે પ્રવૃત્તિ નહિ થાય? (૨) અથવા ગ્રંથથી અન્ય પળ કોઈ સાધન છે, જેનાવિષે પ્રવૃત્તિ હોવાથી ગ્રંથ-વિષે પ્રવૃત્તિ થાય નહિ? (૩) અથવા જે શમાદિકેકરી ગ્રંથમાં અધિકાર કહ્યો, તે શમાદિમાન્ જ્ઞાનને યોગ્ય કોઈ અધિકારી છે નહિ, ઇચ્છી ગ્રંથમાં પ્રવૃત્તિ થાય નહિ?

જો ઇચ્છી કહે કે (૧) 'ગ્રંથ મોક્ષનું સાધન નહિ.'-તે ઇચ્છી વને નહિ. કેમકે, મોક્ષ, જ્ઞાનથી નિયમેકરીને થાય છે, ઇ વેદનો સિદ્ધાન્ત છે. તે જ્ઞાન શ્રવણેકરી થાય છે.

શ્રવણ વે પ્રકારનું છે.

ઇચ્છી સો વેદાન્તવાક્યનું અને શ્રોત્રનું સંયોગરૂપ શ્રવણ છે. અને ઇચ્છી વેદાન્તવાક્યના વિચારરૂપ (શ્રવણ) છે. જ્ઞાનનો હેતુ પ્રથમ શ્રવણ છે; ઇચ્છી નહિ. કેમકે, શબ્દજન્ય જ્ઞાનવિષે, ઇન્દ્રિયોની સાથે શબ્દનો સંયોગ જ સર્વત્ર હેતુ છે, ઇચ્છી વેદાન્ત-વાક્યનું અને શ્રોત્રનું સંયોગરૂપ શ્રવણ બ્રહ્મજ્ઞાનનો હેતુ છે. અવાન્તરવાક્યનું શ્રવણ પરોક્ષજ્ઞાનનો હેતુ છે; અને મહા-

૪૯. પ્રથમ પ્રકારનું શ્રવણ 'અંગી' વા 'ઉપકાર્ય' પળ કહેવાય છે અને દ્વિતીય પ્રકારનું શ્રવણ 'અંગ' વા 'ઉપકારક' કહેવાય છે.

हावान्यनुं श्रवण अपरोक्षज्ञाननो हेतु छे. ए चार्त्ता पूर्वे प्रतिपादन करी छे. जेने ज्ञान थयेथी पण असंभावना, अने विपरीतभावना होय, ते वीजुं (वेदान्तवाक्यना विचाररूप) श्रवण अने मनन-निदिध्यासन करे. वेदान्तवाक्यनुं विचाररूप जे श्रवण, तेणे वेदान्तवाक्यविषे असंभावना दूर थाय छे. वेदान्तवान्य ब्रह्मनां प्रतिपादक छे, अथवा अन्य अर्थनां प्रतिपादक छे, एवो संशय वेदान्तवाक्यनी असंभावना छे ते(संशय) ते(वेदान्तवाक्य)ना विचारे दूर थाय छे. अने मननेकरी प्रमेयनी असंभावना दूर थाय छे. जीवब्रह्मनी एकता वेदान्तनो प्रमेय कहेवाय छे. ते (जीवब्रह्मनी) एकता सत्य छे, अथवा जीवब्रह्मनो भेद सत्य छे, एवो जे संशय ते प्रमेयनी असंभावना कहेवाय छे, ते मननवते दूर थाय छे. विपरीतभावना निदिध्यासनेकरी दूर थायछे. ए रीतिए प्रथमश्रवण तो ज्ञान द्वारा मोक्षनुं हेतु छे. अने विचाररूपश्रवण; अने मनन अने निदिध्यासन ए असंभावना अने विपरीतभावनानी निवृत्तिद्वारा मोक्षनां हेतु छे. वेदान्त नाम उपनिषदनुं छे. ते (उपनिषद्) यद्यपि आ ग्रंथथी भिन्न छे, तथापि तेमना समान अर्थवाळां भाषावाक्य आ ग्रंथमां छे, तेमना श्रवणवते पण ज्ञान थाय छे; ए चार्त्ता आगळ (तृतीय तरंगविषे १० मा दुहामां) प्रतिपादन करीशुं. ए रीतिए ज्ञानद्वारा ग्रंथ मोक्षनो हेतु छे. अने विचाररूप अने मननरूप आ ग्रंथ छे; एथी असंभावनादोषनी निवृत्तिद्वारा मोक्षनो हेतु छे. एथी 'ग्रंथेकरी शोक्ष थाय नहि' ए (पूर्वपक्षीनुं कहेयुं) केवल हठमात्र छे.

६७. अने जो एम कहे के:-'ग्रंथेकरी मोक्ष तां थाय छे,

‘પરંતુ અન્ય સાધનેકરી પણ મોક્ષ થાય છે, યથી ગ્રંથનો ‘આરંભ નિષ્ફલ છે.’ તેને આ પૂછિયે છિયે કે,—તે અન્ય સાધન શું છે, જેથી મોક્ષ થાય છે ? જો એમ કહે કે,—‘ઉપનિષદ્સૂત્ર-‘ભાષ્યથી આદિ લઈને સંસ્કૃત ગ્રંથ જીવ-બ્રહ્મની વક્તાના ‘પ્રતિ-પાદક વહુ છે. તેમણેકરી પણ જ્ઞાનદ્વારા મોક્ષ થાય છે. ‘આનો ભિન્ન અધિકારી નથી, યથી આ ગ્રંથ નિષ્ફલ છે.’ તે વાત્તા યદ્યપિ સત્ય છે, તથાવિ તેમનો (સંસ્કૃત ગ્રંથનો) અર્થ ગ્રહણ કરવાવિષે જેની યુદ્ધિ સમર્થા છે નહિ, એવો જે મુમુક્ષુ તેને તેઓપકરી જ્ઞાન થાય નહિ; યથી મંદયુદ્ધિ (અર્થાત્ સંસ્કૃત ભાષાથી અજાણ્યા) મુમુક્ષુની તેમનાવિષે પ્રવૃત્તિ થાય નહિ. (તેવાની) આ ગ્રંથવિષે જ પ્રવૃત્તિ થશે.

૬૮. અને જો એમ કહે કે:—‘ગ્રંથેકરી મોક્ષ પણ થાય છે, ‘અને સંસ્કૃત ગ્રંથેકરી મંદયુદ્ધિને વોધ પણ થાય નહિ, અને ‘મુમુક્ષુ પણ છે, તો પણ ગ્રંથવિષે પ્રવૃત્તિ થાય નહિ. કેમ કે, ‘વિવેકધૈરામ્યશમાદિમાન્ અધિકારી કહ્યો તે ડુર્લભ છે, યથી ‘વોતાવિષે સાધનનો અભાવ દેખીને ગ્રંથમાં પ્રવૃત્તિ થાય નહિ.’ તેને આ પૂછિયે છિયે કે:—‘વહુ અધિકારી નથી; અથવા કોઈ પણ (અધિકારી) નથી ? જો એમ કહે કે:—‘વહુ અધિકારી ‘નથી.’ તે તો અમે પણ અંગીકાર કરિયે છિયે. અને જો એમ કહે કે:—‘કોઈ પણ જ્ઞાનને યોગ્ય અધિકારી નથી.’ તે વાત્તા વને નહિ. કેમકે અંતઃકરણવિષે ત્રણ દોષ છે.

(અંતઃકરણના ત્રણ દોષ.)

એક મલ છે, અને વિક્ષેપ છે. અને સ્વરૂપનું આવ-રણ છે. [મલ નામ પાપનું છે; વિક્ષેપ નામ ચંચલતાનું છે; અને આવરણ નામ અજ્ઞાનનું છે.] શુભ કર્મેકરી મલ-દોષ દૂર થાય છે, ઉપાસનાપકરી વિક્ષેપદોષ દૂર થાય છે.

(અને) જ્ઞાને આધરણદોષ દૂર થાય છે. જેમના અંતઃકરણ-વિષે મલ અને વિક્ષેપ દોષ છે, તે અધિકારી નથી પણ સ્વરા. પરંતુ આ જન્મવિષે અર્થવા પૂર્વ જન્મવિષે, શુભકર્મ અને ઉપાસનાના અનુષ્ઠાનેકરી જેમના મલ અને વિક્ષેપદોષ નાશ થયા છે એવા, જ્ઞાનયોગ્ય અધિકારી છે. તેમની ગ્રંથમાં પ્રવૃત્તિ વને છે.

૬૯. અને જે પમ પૂર્વે કહ્યું કે:—‘સર્વને વિષયસુખમાં અલં-‘બુદ્ધિ (પર્યાપ્તબુદ્ધિ) છે, નિત્યસુખને કોઈ ચાહે નહિ.’ તે વને નહિ. કેમકે, ચાર પ્રકારના પુરુષો (જીવો) છે:—

(ચાર પ્રકારના પુરુષ.)

પામર, વિપયી, જિજ્ઞાસુ, અને મુક્ત. આ લોકના નિષિદ્ધ અને વિહિત ભોગોવિષે આસક્ત જે શાસ્ત્રસંસ્કારરહિત પુરુષ, તે પામર કહેવાય છે. શાસ્ત્રના અનુસાર વિષયોને ભોગવતો સતો પરલોકના અથવા આ લોકના ભોગના નિમિત્ત જે કર્મ કરે, તે વિપયી કહેવાય છે. અને આવો પુરુષ જિજ્ઞાસુ કહેવાય છે,—

જે પુરુષને ઉત્તમ સંસ્કારેકરી સત્શાસ્ત્રનું શ્રવણ હોય.

(જિજ્ઞાસુનો સત્શાસ્ત્રાનુસાર વિવેક.)

૭૦ તે ઉત્તમ(પુરુષ)ને આવો વિવેક હોય છે:—વિષય-સુખ અનિત્ય છે. જેટલો કાલ વિષયસુખ હોય છે, ત્યારે પણ કોઈ દુઃખ અવશ્ય રહે છે, અને પરિણામમાં વિનાશિ સુખ, દુઃખનો હેતુ છે; અને વર્તમાનકાલમાં પણ નાશના ભયથી દુઃખનો હેતુ છે. એ રીતિપ વિષયસુખ, દુઃખથી પ્રસાયલું છે. યથી દુઃખરૂપ છે. અને દુઃખની નિવૃત્તિ લૌકિક ઉપાયેકરી થાય નહિ; કેમકે, જેઓ ઉપાય કરે છે, તેઓનાં પણ સર્વ

દુઃખ નિવૃત્ત થાય નહિ; અને નિવૃત્ત થયાં પણ પુનઃ થાય છે. અને જેટલા કાલ શરીર છે ત્યાંપર્યંત દુઃખની નિવૃત્તિ સંભવે પણ નહિ; કેમકે, જે શરીર છે તે સર્વ, પુણ્ય અને પાપેકરી યાય છે. મનુષ્યશરીર તો મિથિત (શુભ અને અશુભ) કર્મનું ફલ (છે) પ્રસિદ્ધ છે, અને દેવશરીર પણ મિથિત કર્મનું જ ફલ છે. જો કેવલ પુણ્યનું ફલ દેવશરીર હોય તો, પોતાનાથી અધિક અન્ય દેવની વિભૂતિ देखીને દેવોને જે તાપ થાય છે, તે ન થયો જોડ્યે. સર્વ દેવોમાં પ્રધાન જે ઇંદ્ર તેને પણ અનેક દૈત્યદાનવનાં ભયજન્ય દુઃખ શાસ્ત્રમાં ફાટ્યાં છે. જો દેવશરીર કેવલ પુણ્યનું જ ફલ હોય તો, દેવોને દુઃખ ન થયું જોડ્યે. યથી દેવશરીર પણ પુણ્યપાપ વેનું ફલ છે. અને શ્રુતિમાં જે કહ્યું છે કે:-'દેવતા પાપરહિત છે'-તેનો આ અભિપ્રાય છે:- કર્મનો અધિકાર કેવલ મનુષ્યશરીરમાં છે, અન્યમાં નથી, યથી દેવશરીરમાં કન્યું જે શુભ અથવા અશુભ તેમનું ફલ દેવોને થાય નહિ. અને દેવશરીરથી પૂર્વશરીરમાં કરેલું જે શુભ અને અશુભ, તેમનું ફલ તો દેવશરીરમાં પણ થાય છે. ય રીતિય દેવશરીર (શુભાશુભ)મિથિત કર્મનું ફલ છે. અને તિર્યક્ પશુ-પક્ષીનું શરીર પણ મિથિત કર્મનું ફલ છે. કેમકે, તેમને જે પ્રસિદ્ધ દુઃખ છે, તે તો પાપનું ફલ છે. અને મૈથુનાદિકોનું સુખ છે, તે પુણ્યનું ફલ છે. [ઉદરેકરી જે ગમન કરે તે તિર્યક્ કહેવાય છે. ચારે પાદેકરી ગમન કરે તે પશુ કહેવાય છે. પક્ષેકરી ગમન કરે તે પક્ષી કહેવાય છે. કહિં પશુ પક્ષી પણ તિર્યક્ જ કહેવાય છે.] ય રીતિય સર્વ શરીર પુણ્ય અને પાપેકરી રચિત છે. કોઈ શરીર તો ન્યૂન પાપ અને અધિક પુણ્યે રચિત છે; જેમ દેવશરીર છે. પોતપોતાનાં જે પુણ્ય છે તેઓથી જ, સર્વ દેવોવિષે, પાપ

ન્યૂન છે; યથી ન્યૂન પાપ (અને) અધિક પુણ્યથી રચિત દેવશરીર કહેવાય છે. ય જ અભિપ્રાયથી શાસ્ત્રમાં કેવલ પુણ્યનું. ફલ દેવશરીર કહ્યું છે, યથી વિરોધ નથી. જેમ ઘડુ (અધિક) બ્રાહ્મણોથી 'બ્રાહ્મણગ્રામ' કહેવાય છે, તેમ અધિક પુણ્યનું. ફલ હોવાથી, દેવશરીર કેવલ પુણ્યનું ફલ કહેવાય છે, પરંતુ કેવલ પુણ્યનું ફલ (તે) નથી.

તિર્યક્-પશુ-પક્ષીનું શરીર અધિક પાપ અને ન્યૂન પુણ્યે રચિત છે. જે ઉત્તમ મનુષ્ય છે તેમની દેવોના સમાન રીતિ છે, અને નીચ (મનુષ્યો) છે તેની સર્પાદિકો(તિર્યગાદિકો)ના સમાન (રીતિ) છે. ય રીતિય સર્વ શરીર પુણ્ય-પાપરચિત છે. અને પાપનું ફલ દુઃખ છે, યથી શરીર રહે ત્યાંપર્યન્ત દુઃખની નિવૃત્તિ થાય નહિ. તે શરીર ધર્મ અને અધર્મનું ફલ છે તે(ધર્મ અને અધર્મ)ની નિવૃત્તિ વિના શરીરની નિવૃત્તિ થાય નહિ. કેમકે, વર્તમાન શરીર દૂર થયેથી પણ પુણ્યપાપેકરી અન્ય શરીર થશે; યથી પુણ્યપાપની નિવૃત્તિ વિના શરીરની નિવૃત્તિ થાય નહિ. તે પુણ્યપાપ રાગદ્વેષના નાશ વિના દૂર થતાં નથી. કેમકે વર્તમાન પુણ્યપાપની મોગેકરી નિવૃત્તિ થયેથી પણ રાગદ્વેષેકરી અન્ય પુણ્યપાપ થશે. યથી રાગદ્વેષની નિવૃત્તિ વિના પુણ્યપાપ દૂર થાય નહિ. તે રાગદ્વેષ અનુકૂલજ્ઞાન અને પ્રતિકૂલજ્ઞાનેકરી થાય છે. જેવિયે અનુકૂલજ્ઞાન હોય તેવિયે રાગ થાય છે. અને જેવિયે પ્રતિકૂલજ્ઞાન હોય તેવિયે દ્વેષ થાય છે. યથી અનુકૂલ જ્ઞાન અને પ્રતિકૂલજ્ઞાનની નિવૃત્તિ વિના રાગદ્વેષની નિવૃત્તિ થાય નહિ. તે અનુકૂલજ્ઞાન અને પ્રતિકૂલજ્ઞાન, મેદ જ્ઞાનેકરી, થાય છે. કેમકે, જે ઘસ્ટુને પાંતાના સ્વરૂપથી ભિન્ન જાણે, તેનેવિયે અનુકૂલજ્ઞાન અથવા પ્રતિકૂલજ્ઞાન થાય છે.

પોતાના સ્વરૂપમાં અનુકૂલજ્ઞાન અને પ્રતિકૂલજ્ઞાન થતું નથી. [સુખનાં સાધનનું નામ અનુકૂલ છે, અને દુઃખનાં સાધનનું નામ પ્રતિકૂલ છે.] પોતાનું સ્વરૂપ મુસનું અથવા દુઃખનું સાધન નથી. યદ્યપિ (પોતાનું સ્વરૂપ) સુખરૂપ છે, તથાપિ સુખનું સાધન નથી. યથી સ્વરૂપથી મિથ્ર જે વસ્તુ જાણી છે, તેવિષે અનુકૂલજ્ઞાન અને પ્રતિકૂલજ્ઞાન થાય છે. ય રીતિય પદાર્થોવિષે પોતાથી જે ભેદજ્ઞાન, તે અનુકૂલજ્ઞાન અને પ્રતિકૂલજ્ઞાનનો હેતુ છે. તે ભેદજ્ઞાનની નિવૃત્તિ વિના અનુકૂલજ્ઞાન અને પ્રતિકૂલજ્ઞાનની નિવૃત્તિ થાય નહિ. તે ભેદજ્ઞાન અવિદ્યાજન્ય છે. કેમકે, 'સંપૂર્ણ 'પ્રપંચ અને તેનું જ્ઞાન, સ્વરૂપના અજ્ઞાનકાલમાં 'છે,' ય સંપૂર્ણ વેદ અને શાસ્ત્રનો ઢંઢેરો છે. ય રીતિય સંપૂર્ણ દુઃખનો હેતુ સ્વરૂપનું અજ્ઞાન છે. તે સ્વરૂપનું અજ્ઞાન, સ્વરૂપના જ્ઞાન વિના દૂર થાય નહિ. કેમકે, જે વસ્તુનું અજ્ઞાન હોય, તે, તેના જ્ઞાનેકરી દૂર થાય છે; જેમ રજ્જુનું અજ્ઞાન રજ્જુના જ્ઞાનેકરી દૂર થાય, અન્યેકરી નહિ. યથી સ્વરૂપનું જ્ઞાન જ, અજ્ઞાનની નિવૃત્તિદ્વારા, દુઃખની નિવૃત્તિનો હેતુ છે. અને સ્વરૂપજ્ઞાનેકરી વ્રહ્મની પ્રાપ્તિ થાય છે. તે વ્રહ્મ નિત્ય છે, અને આનંદસ્વરૂપ છે, -દુઃખસંબંધથી રહિત છે; યથી સ્વરૂપજ્ઞાનેકરી, નિત્ય અને દુઃખના સંબંધથી રહિત જે વ્રહ્મસ્વરૂપાનંદ, તેની પ્રાપ્તિ પળ થાય છે. ય રીતિય દુઃખની

૫૦. અવિદ્યા-અજ્ઞાન-રૂપ મૂલ નિવૃત્તિ યથે જ્ઞાનીને, જોય ઈશ્વરનો ભેદ અને તેના અન્તરગત જીવ-જીવનો ભેદ, જીવ જઠનો ભેદ, જઠ જડનો ભેદ, અને જઠ-ઈશ્વરનો ભેદ, ય પંચભેદ વાસ્તવ્ય પ્રતીત થતા નથી; યિન્તુ કાલ્પિત્ત ઉપાધિદૃત્ત હોવાથી કલ્પિત પ્રતીત થાય છે. તેથી બાધિતાનુષ્ઠિત્તિયકરી દમ્બધાન્યસમ (-વા દર્પણગત સ્મલપ્રતિબિંબસમ) અનુકૂલપ્રતિબૂલજ્ઞાન, રાગદ્વેષાદિપચ્છેદન, અને શુભાશુભક્રિયા, પ્રતીત થાય છે. પરંતુ તેનું ફલ ભાવિજન્મ અને મુસદુઃખ થાય નહિ. પં. પી. પુ.

નિવૃત્તિ અને પરમાનંદની પ્રાપ્તિનો હેતુ, સ્વરૂપજ્ઞાન છે; ઇથી સ્વરૂપ જાણવાને યોગ્ય છે; ઇવો જેને વિવેક હોય, તે જિજ્ઞાસુ કહેવાય છે.

સ્થૂલ-સૂક્ષ્મ-કારણશરીરથી ભિન્ન જે પોતાનું સ્વરૂપ, તેનું બ્રહ્મરૂપેકરીને અપરોક્ષ જ્ઞાન જેને હોય તે મુક્ત કહેવાય છે.

(જિજ્ઞાસુની ગ્રંથમાં પ્રવૃત્તિ હોય છે.)

૭૧. ઇ રીતિ ઇ ચાર પ્રકારના પુરુષ (જીવ) છે. તેઓ-
વિષે પામર અને વિષયીને તો યદ્યપિ વિષયસુખમાં જ અલં-
બુદ્ધિ છે, અને કોઈ વિષયીને પરમસુખની ઇચ્છા પળ થાય,
ત્યારે પળ તેના જે ઉપાય નથી તેઓમાં ઉપાયબુદ્ધિ કરીને,
પ્રવૃત્ત થાય છે. કેમકે ઉપાયનું જ્ઞાન સત્સંગ અને સત્દાસૂત્રના
શ્રવણેકરી થાય છે, તે તે(વિષયી)ને છે નહિ; ઇથી પામર
અને વિષયીની, સુખપ્રાપ્તિના નિમિત્ત, ગ્રંથમાં પ્રવૃત્તિ થાય
નહિ. દુઃખની નિવૃત્તિના નિમિત્ત પળ (પામર અને
વિષયી) વંને અન્ય ઉપાયોમાં પ્રવૃત્ત થાય છે; (ઇથી) તેના
નિમિત્ત પળ ગ્રંથમાં પ્રવૃત્તિ થાય નહિ. ઇથી પામર અને
વિષયીની ગ્રંથમાં પ્રવૃત્તિ થાય નહિ. અને મુક્તની
પ્રવૃત્તિ પળ થાય નહિ. કેમકે, જ્ઞાનવાન મુક્ત કહેવાય છે, તે
જ્ઞાની કૃતકૃત્ય છે. તેને કશું કર્તવ્ય નથી, ઇ ઘાત્તા આગલ
(પંચમ તરંગવિષે અંક ૨૭૫ માં) પ્રતિપાદન કરીશું. અને
લીલાપ કરીને મુક્ત પ્રવૃત્ત થાય, તો પળ મુક્તને ગ્રંથમાં
પ્રવૃત્તિવતે કોઈ પ્રયોજન સિદ્ધ થતું નથી. ઇથી મુક્તના
નિમિત્ત પળ ગ્રંથ નથી. તથાપિ જિજ્ઞાસુ જે પુરુષ છે, તેને
વિષયસુખમાં અલંબુદ્ધિ થાય નહિ. કિન્તુ પરમસુખની તેને
ઇચ્છા છે, અને દુઃખની અત્યંતકરીને નિવૃત્તિની ઇચ્છા છે.
તે-‘પરમસુખની પ્રાપ્તિ અને દુઃખની અત્યંત નિવૃત્તિ,’ જ્ઞાન વિના

૨ તરંગ.) . વિપયમંડન. સાક્ષી અને કર્તામોક્તા સંસારી. ૨૦૯

ધાય નહિ, યવો જેને સત્સંગેકરી વિવેક થયો છે, તેની પ્રથમાં પ્રવૃત્તિ વને છે. ૫ રીતિય મોક્ષની ઇચ્છાવાનુ અધિકારી વને છે.

(વિપયમંડન ૭૨-૭૬.)

૩૬૦.

૭૨. સાક્ષી બ્રહ્મરૂપ એક છે, નહિ ભેદનો ગંધ;
દ્વેપરાગ મતિના ધરમ, તેમાં માને અંધ.

ટીકા:—પૂર્વે (અંક ૩૯ થી ૪૪ સુધીમાં પૂર્વપક્ષીય) કહ્યું જે,—‘જીવ રાગાદિક્લેશસહિત છે. અને બ્રહ્મ ક્લેશરહિત છે; યથી જીવબ્રહ્મની એકતા પ્રથનો વિપય વને નહિ.’ ૫ ઘાતાં યદપિ સત્ય છે, તથાપિ રાગદ્વેપરહિત જે સાક્ષી છે, તેની બ્રહ્મસાયે એકતા વને છે. અને જે આગલ કહ્યું કે,—‘કર્તા-મોક્તાથી ભિન્ન સાક્ષી વંધ્યાપુત્રના સમાન અસત્ છે,’ તે વને નહિ. કેમકે, કર્તામોક્તા જે સંસારી તેના વિશેષ્ય ભાગનું નામ સાક્ષી છે. જો સાક્ષીનો નિપેધ કરિયે તો, (અસત્ ગણિયે તો,) સંસારીના વિશેષ્યભાગનો નિપેધ થયાથી, કર્તા-મોક્તા જે સંસારી તેનો જ નિપેધ થવાનો.

એક જ ચૈતન્યવિષે સાક્ષીભાવનો અંતઃકરણ ઉપાધિ છે; અને કર્તામોક્તાપણાનું (અંતઃકરણ) વિશેષણ છે. વિશેષણસહિત (વિશેષ્ય) વિશિષ્ટ કહેવાય છે. ઉપાધિ-વાલું ઉપહિત કહેવાય છે. જે ઘસ્તુ જેટલા દેશમાં પોતે હોય, તે દેશમાં સ્થિત વસ્તુને જણાવે, અને પોતે પૃથક્ રહે, તે ઉપાધિ કહેવાય છે. જેમ નૈવ્યાયિકમતમાં કર્ણગોલક-

૫૧. જેને આધિત યદને વિશેષણ રહે તે. ધર્મી, અનુયોગી, આશ્રય, આધાર. હાં વિશેષણ નામ સામાસ અન્ત.કરણ, વિશેષ્ય નામ સાક્ષી, ૫ ઉભય મલી જે વિશિષ્ટચેતન ૫ જીવ.

વર્તિ આકાશ શ્રોત્ર કહેવાય છે. તે કર્ણગોલક, શ્રોત્રનો, ઉપાધિ છે. કેમકે તે કર્ણગોલક જેટલા દેશમાં પોતે છે, તેટલા દેશમાં સ્થિત આકાશને શ્રોત્રરૂપ કરીને જણાવે છે, અને પોતે પૃથક્ રહે છે. एथી કર્ણગોલક, શ્રોત્રનો ઉપાધિ છે. તેમ અંતઃકરણ પણ જેટલા દેશમાં પોતે છે, एટલા દેશમાં સ્થિત ચેતનને સાક્ષી સંજ્ઞા કરીને જણાવે છે, પોતે પૃથક્ રહે છે, एથી અંતઃકરણ સાક્ષીનો ઉપાધિ છે एथો આ અર્થ સિદ્ધ થયોઃ-
અં તઃ ક ર ણ વિ પે વ ર્તિ જે ચે ત ન મા ત્ર ને 'સાં ક્ષો' ક હે વા ય છે.

૭૩. પોતાનાસહિત વસ્તુને જે જણાવે, તે વિશેષણ કહેવાય છે,=જેમ 'કુંડલવાળો પુરુષ આવ્યો છે.' ए સ્થાનમાં 'પુરુષ'નું 'કુંડલ' વિશેષણ છે, કેમકે, પોતાનાસહિત પુરુષના આગમનને કુંડલ જણાવે છે, एથી (કુંડલ) વિશેષણ છે. (અને પુરુષ વિશેષ્ય છે.) 'નીલરૂપવાનુ ઘટને હું દેખું છું,' ए સ્થાનમાં પણ 'નીલરૂપ' 'ઘટ'નું વિશેષણ છે. (અને ઘટ વિશેષ્ય છે). તેમ અંતઃકરણ પણ કર્તા ભોક્તા જે જીવ-ચેતન, તેનું વિશેષણ છે; કેમકે, અંતઃકરણસહિત ચેતનને, કર્તાભોક્તારૂપેકરીને, અંતઃકરણ જણાવે છે. एથી સંસારીનું, અંતઃકરણ વિશેષણ છે. एથી આ સિદ્ધ થયું કે:-(૧) અંતઃકરણવિપે વર્તિ ચેતન, અને (૨) અંતઃકરણ, ए ઉભય મઠી સંસારી (અથવા જીવ) કહેવાય છે. ए અર્થને વિસ્તારથી આગલ કહિશું.

૭૪. રાગદ્વેષાદિક ક્લેશ સંસારીવિપે છે. અને સાક્ષીવિપે

૫૨. આ સાક્ષીના લક્ષણની પદ્ધત્ય-પરીક્ષા છે અન્તઃકરણ તો પોતે પણ છે; પરતુ તે તેનેવિપે 'વર્તિ' નામ યત્તરાવાહ્ય નથી. અને તે અન્તઃકરણવિપે વર્તિ પુરુષ-દુષ્ટાદિ અન્તઃકરણના ધર્મ પણ છે, તે ચેતન નથી. ચેતન તો ચિદાભાસ પણ છે તે ચેતનમાત્ર નથી. ચેતનમાત્ર તો બ્રહ્મ પણ છે, તે અન્તઃકરણવિપે યત્તરાવાહ્ય નથી. एથી ઉપર લખેલુ સાક્ષીનુ લક્ષણ નિર્દોષ છે. પં. પી. પુ.

નહિ. સંસારીનું પણ જે વિશેષણ અંતઃકરણ છે, તેનેવિષે (રાગદ્વેષાદિક) છે; અને વિશેષ્ય જે ચૈતન્ય તેનેવિષે નથી. કેમકે, સંસારીવિષે વિશેષ્ય જે ચૈતન્યભાગ, તેનો, સાક્ષીથી ભેદ નથી કેમકે, એક જ ચૈતન્ય, અંતઃકરણસહિત સંસારી છે, અંતઃકરણભાગ ત્યાગીને સાક્ષી કહેવાય છે. યથા સાક્ષીનો અને સંસારીના વિશેષ્યભાગનો ભેદ નથી. જો વિશેષ્યભાગમાં ક્લેશો અંગીકાર કરીયે તો સાક્ષીમાં પણ અંગીકાર કરવા પડશે. અને 'સાક્ષી સર્વક્લેશરહિત છે,' એ વેદનો સિદ્ધાન્ત છે. યથા સંસારીના વિશેષ્યભાગમાં ક્લેશ નથી; કિન્તુ વિશેષણમાત્ર (કેવલ) અંતઃકરણમાં છે. એ અભિપ્રાયથી દુહાના તૃતીય પાદમાં રાગદ્વેષ ('મતિ' નામ) વૃદ્ધિના ધર્મ કહ્યા, અને જીવના ન કહ્યા. એ રીતિએ અંતઃકરણવિશિષ્ટની બ્રહ્મસાચે એકતા ન પણ વને, પરંતુ અંતઃકરણ-ઉપહિત જે સાક્ષી તેની બ્રહ્મસાચે એકતા વને છે.

૭૫. અને પૂર્વે કહ્યું જે, - 'સાક્ષી નાના છે અને બ્રહ્મ એક છે, યથા નાના સાક્ષીની એક બ્રહ્મસાચે એકતા વને નહિ. અને 'જો વ્યાપક એક બ્રહ્મસાચે સાક્ષીનો અભેદ અંગીકાર કરશો 'તો સાક્ષી પણ સર્વ શરીરમાં વ્યાપક એક જ થશે, યથા 'સર્વ શરીરનાં સુખદુઃખનું માન થયું જોશ્યે.' તે શંકા વને નહિ. કેમકે, યદ્યપિ ઈશ્વરસાક્ષી એક છે, અને જીવસાક્ષી નાના છે, અને પરિચ્છિન્ન છે, તો પણ વ્યાપક બ્રહ્મથી ભિન્ન નથી. જેમ ઘટાકાશ નાના છે, અને પરિચ્છિન્ન છે, તો પણ મહાકાશથી ભિન્ન નથી. કિન્તુ તે મહાકાશરૂપ જ ઘટાકાશ છે; તેમ નાના અને પરિચ્છિન્ન સાક્ષી તે પણ બ્રહ્મરૂપ જ છે.

૭૬. અને પૂર્વે કહ્યું જે, - 'સુખ દુઃખ અંતઃકરણની વૃત્તિના વિષય નથી,' તે અસંગત છે. કેમકે, યદ્યપિ સુખદુઃખ સાક્ષિ-

ભાસ્ય છે; તે સાક્ષી નાના છે; તથાપિ જ્યારે અંતઃકરણનું પરિણામ સુખરૂપ વા દુઃખરૂપ થાય, તે જ સમયે અંતઃકરણની જ્ઞાનરૂપ ઘૃત્તિ, સુખદુઃખને વિષય કરવાવાળી થાય છે. તે ઘૃત્તિમાં આરૂઢ સાક્ષી તેઓને (સુખદુઃખને) પ્રકાશે છે. ય સીતિષ્ પ્રંથકારોષ્ સુખદુઃખ સાક્ષીના વિષય કદા છે. (પળ) ઘૃત્તિ વિના, કેવલ સાક્ષીના વિષય (સુખદુઃખ) નથી. આ સ્થાનમાં આ રહસ્ય છે:-આકાશમાં, ' ઘટાકાશ ' (ય) નામ અને જલના આનયનરૂપ જે કાર્ય પ્રતીત થાય છે, તે ઘટરૂપ ઉપાધિનો દષ્ટિષ્ પ્રતીત થાય છે. ઘટરૂપ ઉપાધિની દષ્ટિ વિના, ઘટાકાશ (ય) નામ અને જલને આળવારૂપ કાર્ય પ્રતીત થાય નહિ, કિન્તુ આકાશ માત્ર જ પ્રતીત થાય છે, યથી ઘટાકાશ (તે) મહાકાશરૂપ જ છે. તેમ ચેતનવિષે, સાક્ષી (ય) નામ, અને ધર્મસહિત અંતઃકરણનું પ્રકાશરૂપ કાર્ય, અંતઃકરણરૂપ ઉપાધિની દષ્ટિષ્ પ્રતીત થાય છે. અને અંતઃકરણરૂપ ઉપાધિની દષ્ટિ વિના, સાક્ષી નામ અને ધર્મસહિત અંતઃકરણનું પ્રકાશરૂપ કાર્ય, પ્રતીત થાય નહિ; કિન્તુ ચૈતન્ય માત્ર બ્રહ્મ જ પ્રતીત થાય. યથી સાક્ષી બ્રહ્મરૂપ છે ય અભિપ્રાયથી દુહાના પ્રથમ પાદમાં સાક્ષી ' યક ' કદા. કેમકે, ઉપાધિની દષ્ટિ વિના, સાક્ષીમાં નાનાત્વ અને પરિચ્છિન્નમાય પ્રતીત થાય નહિ. તે સાક્ષી જીવપદનો લક્ષ્ય છે. ય ઘાત્તી આગઢ. (ચતુર્થ તરંગવિષે અંક ૨૦૧-૨૦૨ માં અને પઠ્ઠ તરંગ-

૫૩. કોઈ કોરા મહત્પત્રઉપરના કોઈ યક અલ્પ ભાગના શાહીનો ગોળાદિ આકાર કરી, તેના મધ્યભાગમાં કોઈ અઘરનો આકાર દેવાય યદલો ભાગ શાહીવિનાનો રાણે. તે અઘર અને મૂલ્યત્ર યક જ સતે ભેદ જ્ઞવહાર યાય છે. તેમ શુદ્ધ બ્રહ્મ અને ઉપરિત સાધી યક જ સતે શાહીરૂપ ઉપાધિષ્કરી નામમાય ભેદજ્ઞવહાર યાય. પરંતુ યયાર્ય દષ્ટિષ્ જોતી તે યે યક જ જ્ઞવહાર છે. ઉપાધિની જ ભેદ પ્રતીત યાય છે.

ગત અંક ૩૪૧ માં) કહ્યાં. ૫ રીતિય જીવવ્રતની એકતા ગ્રંથનો વિષય વને છે. ૧૨.

(પ્રયોજનમંડન. ૭૭ થી ૯૨ પર્યંત.)

૭૭. અથ કૌર્વ્ય-અધ્યાસ-નિરૂપણ.

કવિન.

સ જા તી ય જ્ઞા ન સંસ્કારયી અધ્યાસ થાય,

સ ત્ય જ્ઞા ન જન્ય સંસ્કારનો ન નેમ છે;

દ્વાંપને ન હેતુતા અધ્યાસવિપે દેસાય જ,

પટવિપે હેતુ જેમ તુરી તંતુ વેમ છે.

આત્મા (સુ) દ્વિજાતિ, શંસ પીત, સિતા કટુ, માસે,

શુકિમાં વિરાગી, રુપું દેલે, વિના પ્રેમ છે;

નમ નીલરૂપવાન, માસે છે કટાહ તંયુ,

જેને પિત્ત પ્રભૃતિ ન કોઈ અશ્રેમ છે. ૧૩.

ટીકા—(પૂર્વપક્ષીય અંક ૪૫ થી ૪૮ પર્યંત) પૂર્વે કહ્યું જે:—‘ બંધ સત્ય છે, તેની જ્ઞાનેકરી નિવૃત્તિ થાય નહિ. ‘ અને મિથ્યાવસ્તુની જ્ઞાનેકરી નિવૃત્તિ થાય છે. આત્મામાં ‘મિથ્યાબંધની સામગ્રી છે નહિ. યથી બંધ સત્ય છે, તેની ‘જ્ઞાનેકરી નિવૃત્તિ થાય નહિ.’ તે વાર્તા વને નહિ. કેમકે બંધ મિથ્યા છે. તેની જ્ઞાનેકરી નિવૃત્તિ વને છે.

૭૮. અને પૂર્વે કહ્યું જે.—‘સત્યવસ્તુનું જ્ઞાન, (પોતાના) ‘સંસ્કારદ્વારા, અધ્યાસનો હેતુ છે. જેમ સત્યસર્પનું જ્ઞાન, ‘(પોતાના) સંસ્કારદ્વારા સર્પઅધ્યાસનો હેતુ છે; તેમ સત્ય-‘બંધ હોય, તો, સત્યબંધનું જ્ઞાન હોય. પણ સિદ્ધાન્તમાં ‘કોઈ અનાત્મવસ્તુ સત્ય છે નહિ. યથી સત્યવસ્તુનું જ્ઞાન,

‘જે, સંસ્કારદ્વારા, અધ્યાસની સામગ્રી (છે,) તેનો અભાવ ‘હોવાથી, વંધ અધ્યાસ (રૂપ) નથી, કિન્તુ સત્ય છે.’ તે શંકા વને નહિ. કેમકે, અધ્યાસવિષે સંસ્કારદ્વારા સત્યવસ્તુનું જ્ઞાન હેતુ નથી, કિન્તુ વસ્તુનું જ્ઞાન હેતુ છે. તે વસ્તુ સત્ય હોય અથવા મિથ્યા હોય. જો સત્યવસ્તુનું જ્ઞાન જ અધ્યાસ-વિષે હેતુ હોય, તો જે પુરુષે સત્ય છુદ્ધારાનો (સ્વારકનો) વૃક્ષ ન દીઠો હોય અને વાજીગરનો બનાવેલો મિથ્યા છુદ્ધારાનો વૃક્ષ વહુવાર દીઠો હોય, અને વાજીગરથી પણ સાંભળ્યું હોય કે, - ‘આ છુદ્ધારાનો વૃક્ષ છે.’ અને સજુરનો વૃક્ષ કદા દીઠો સાંભાલ્યો હોય નહિ, તે (મનુષ્ય) ને સજુરનો વૃક્ષ દેખીને છુદ્ધારાનો અધ્યાસ થાય છે, તે નહિ થવો જોઈએ કેમ કે સત્ય છુદ્ધારાનું તેને જ્ઞાન છે નહિ.

અને અમારી (સિદ્ધાન્તી) રીતિએ તો, વાજીગરનો દીઠેલો જે મિથ્યા છુદ્ધારો, તેનું જ્ઞાન છે પણ અધ્યાસ વને છે. પણ સ જા તી ય વસ્તુના જ્ઞાનજન્ય સંસ્કાર (સૂક્ષ્મ-અવસ્થા) જ અધ્યાસના હેતુ છે, - તે સંસ્કારનું જનક જ્ઞાન, અને તેનો વિષય, મિથ્યા હોય અથવા સત્ય હોય. ‘સંસ્કારદ્વારા ‘જ્ઞાન હેતુ છે,’ વા ‘જ્ઞાનજન્ય સંસ્કાર હેતુ છે,’ એ કહેવામાં અર્થનો ભેદ નથી; એક જ અર્થ છે. કેમકે, ‘સંસ્કારદ્વારા ‘જ્ઞાન હેતુ’ છે અને અર્થ આ છે: - જ્ઞાન, સંસ્કારનો હેતુ છે, અને સંસ્કાર, અધ્યાસનો હેતુ છે, પણ સંસ્કારદ્વારા જ્ઞાનને હેતુતા કહેવાથી પણ, જ્ઞાનજન્યસંસ્કારને જ અધ્યાસવિષે હેતુતા સિદ્ધ થાય છે.

૭૨. અને કેવલ વસ્તુના જ્ઞાનને જ અધ્યાસવિષે હેતુ કહે તો વને નહિ. કેમકે આ નિયમ છે: - ‘જે હેતુ હોય ‘તે કાર્યથી અવ્યવહિત પૂર્વકાલમાં હોય છે.’ [અંતરાપરહિત-

તું નામ 'અવ્યવહિત' છે, અને અંતરાયસહિતનું નામ 'વ્યવહિત' છે.] જેમ ઘટનો હેતુ ઢંડ છે તે ઘટથી અવ્યવહિત પૂર્વકાલમાં હોય છે; તેમ જો અધ્યાસથી હેતુ જ્ઞાન અંગીકાર કરિયે (તો,) તે પળ અધ્યાસથી અવ્યવહિત પૂર્વકાલમાં જોડાયે. તે વને નહિ. કેમકે, જે પુરુષને સર્પનું જ્ઞાન થાય તેને જ્ઞાનથી મહિના પછી પણ રજ્જુવિપે સર્પનો અધ્યાસ થાય છે, તે નહિ થવો જોડાયે. કેમકે, રજ્જુમાં સર્પના અધ્યાસનો હેતુ સર્પનું જે જ્ઞાન છે, તેનો નાશ થઈ ગયો (છે,) પથી અવ્યવહિત પૂર્વકાલમાં (તે જ્ઞાન) છે નહિ. યદ્યપિ પૂર્વકાલમાં તો છે, તથાપિ અવ્યવહિત પૂર્વકાલમાં છે નહિ.

અને જો આમ કહિયે કે:-કાર્યથી પૂર્વકાલમાં હેતુ જોડાયે, (તે હેતુ) અવ્યવહિત પૂર્વકાલમાં હોય અથવા અવ્યવહિત પૂર્વકાલમાં હોય. અને 'કાર્યથી અવ્યવહિત પૂર્વકાલમાં જ હેતુ હોય છે' એવો નિયમ અંગીકાર કરિયે તો, 'વિહિત કર્મ સ્વર્ગપ્રાપ્તિનો હેતુ છે, અને નિષિદ્ધ કર્મ નરકપ્રાપ્તિનો હેતુ છે,' એ શાસ્ત્રની વાર્તા અપ્રમાણ થઈ જશે. કેમકે, કાયિક-વાચિક-માનસિક ક્રિયાનું નામ કર્મ છે. તે ક્રિયા અનુષ્ઠાનકાલથી અનંતર જ નાશ થઈ જાય છે, અને સ્વર્ગ નરક કાલાંતરમાં થાય છે. પથી સ્વર્ગનરકપ્રાપ્તિના અવ્યવહિત પૂર્વકાલમાં, વિહિત કર્મ અને નિષિદ્ધ કર્મ છે નહિ. જેમ વ્યવહિત પૂર્વકાલમાં શુભ કર્મ અને અશુભ કર્મ, સ્વર્ગપ્રાપ્તિ અને નરકપ્રાપ્તિના હેતુ છે, તેમ વ્યવહિત પૂર્વકાલમાં જે સર્પનું જ્ઞાન, તે પણ રજ્જુમાં સર્પના અધ્યાસનો હેતુ છે.

તે વાર્તા વને નહિ. કેમકે જેમ નષ્ટ જ્ઞાન અને નષ્ટ કર્મથી અધ્યાસ અને સ્વર્ગનરકની પ્રાપ્તિ અંગીકાર કરી; તેમ મૃત

કુલ્લાલ અને નષ્ટ દંડથી પણ ઘટ થવો જોઈયે; કેમકે, જેમ રજ્જુમાં સર્પના અધ્યાસથી વ્યવહિત પૂર્વકાલમાં સર્પનું જ્ઞાન છે અને (જેમ) સ્વર્ગનરકની પ્રાપ્તિથી વ્યવહિત પૂર્વકાલમાં. શુભઅશુભ કર્મ છે, તેમ ઘટથી વ્યવહિત પૂર્વકાલમાં નષ્ટ દંડ અને મૃત કુલ્લાલ પણ છે, તેમનાથી પણ ઘટ થવો જોઈયે. તે થાય નહિ. યથી વ્યવહિત પૂર્વકાલમાં જે વસ્તુ હોય તે હેતુ નહિ, કિન્તુ અવ્યવહિત પૂર્વકાલમાં જે વસ્તુ હોય તે જ હેતુ હોય છે. અને શુભઅશુભ કર્મ પણ, કાલાંતર-ભાવિની જે સ્વર્ગનરકની પ્રાપ્તિ તેના હેતુ નથી. કિન્તુ શુભ-કર્મ તો પોતાથી અવ્યવહિત ઉત્તરકાલમાં ધર્મની ઉત્પત્તિ કરે છે; અને અશુભ કર્મ અધર્મની ઉત્પત્તિ કરે છે. તે ધર્મ-અધર્મ અંતઃકરણવિષે રહે છે, તેમનાથી કાલાંતરમાં સ્વર્ગ અને નરકની પ્રાપ્તિ થાય છે. તેથી અનન્તર ધર્મ અધર્મનો નાશ થાય છે. ય અભિપ્રાયે જ શાસ્ત્રમાં શુભકર્મ અને અશુભકર્મ અપૂર્વ-દ્વારા ફલના હેતુ કહ્યા છે, સાક્ષાત્ નહિ. [અપૂર્વ નામ ધર્મ અધર્મનું છે; અને અદૃષ્ટ પણ તેઓને જ કહે છે; અને પુણ્યપાપ પણ તેઓને જ કહે છે.] અને ધર્મઅધર્મની જનિકા જે શુભઅશુભક્રિયા છે તેને પણ કહિં ધર્મ-અધર્મ કહે છે. જેમ કોઈ શુભક્રિયા કરતો હોય તેને લોક આમ કહે છે:- 'આ ધર્મ કરે છે;' અને અશુભક્રિયા કરવાયાલાને આમ કહે છે:- 'આ અધર્મ કરે છે.' તે શુભઅશુભક્રિયાનું નામ ધર્મ-અધર્મ નથી; કિન્તુ શુભઅશુભક્રિયા ધર્મ-અધર્મની જનિકા છે. યથી ક્રિયાને ધર્મ-અધર્મ કહે છે; જેમ આયુનું ધર્મક જે ધૃત (ધી) છે; તેને શાસ્ત્રમાં આયુ કહે છે. ય રીતિય અવ્યવહિત પૂર્વકાલમાં હેતુ હોય છે.

૮૦. અને રજ્જુમાં સર્પઅધ્યાસથી અવ્યવહિત પૂર્વકાલમાં

સર્પનું જ્ઞાન છે નહિ; યથી સર્પનું જ્ઞાન, રજ્જુમાં સર્પઅધ્યાસનો હેતુ નથી, મિત્તુ સર્પજ્ઞાન-જન્ય-સંસ્કાર જ રજ્જુમાં સર્પના અધ્યાસનો હેતુ છે. તેમ શુક્તિમાં રૂપાના અધ્યાસનો હેતુ રૂપાના જ્ઞાનજન્યસંસ્કાર છે. ય રીતિય સર્વત્ર સંસ્કાર જ અધ્યાસના હેતુ છે, અને ઘસ્તુનું જ્ઞાન સંસ્કારનો હેતુ છે. જેમ શુભઅશુભકર્મજન્ય ધર્મઅધર્મ, અંતઃકરણમાં રહે છે, તેમ ઘસ્તુના જ્ઞાનજન્યસંસ્કાર પણ અંતઃકરણમાં રહે છે, જે પુરુષને પૂર્વે સર્પનું જ્ઞાન નથી થયું તેને પણ અન્ય ઘસ્તુના જ્ઞાનજન્ય સંસ્કાર તો છે, પરંતુ રજ્જુમાં સર્પની અધ્યાસ થાય નહિ. જે ઘસ્તુનો અધ્યાસ થાય, તેના સજાતીયઘસ્તુનાં જ્ઞાનના સંસ્કાર અધ્યાસના હેતુ છે; વિજાતીય(ઘસ્તુ)ના જ્ઞાનના સંસ્કાર (અધ્યાસના) હેતુ નથી. સર્પનો સજાતીય સર્પ હોય છે; અન્ય નહિ. સર્પનું જેને પૂર્વ જ્ઞાન નથી, અન્ય ઘસ્તુનું જ્ઞાન છે, તેને સજાતીયઘસ્તુના જ્ઞાન-જન્ય સંસ્કાર નથી, યથી રજ્જુમાં સર્પનો અધ્યાસ થાય નહિ. [સૂક્ષ્મ અઘસ્થાનું નામ સંસ્કાર છે.] ય રીતિય અધ્યાસથી પૂર્વ સજાતીયઘસ્તુનું જે જ્ઞાન, તેના સંસ્કાર અધ્યાસના હેતુ છે. અને 'સત્યઘસ્તુના જ્ઞાનના સંસ્કાર જ અધ્યાસના હેતુ છે. 'મિથ્યાઘસ્તુના જ્ઞાનના (સંસ્કાર હેતુ) નહિ.' (પણ પૂર્વપક્ષીનું કહેવું છે પણ) ય નિયમ નથી; ય વાર્તા હુદારાના (હુક્ષના) દષ્ટાન્તેરૂરી પ્રતિપાદન કરી છે. યથી મિથ્યાઘસ્તુના જ્ઞાન-જન્યસંસ્કાર પણ અધ્યાસના હેતુ છે.

૮૧. તે વંધના અધ્યાસવિષે પણ વને છે. કેમકે જે અહંકારથી આદિ લઈને અનાત્મઘસ્તુ અને તેનું જ્ઞાન વંધ કહેવાય છે, તે અનાત્મઘસ્તુ, રજ્જુના સર્પની પેઠે, જ્યારે પ્રતીત 'થાય, ત્યારે જ છે, અને પ્રતીત ન થાય ત્યારે, નથી.' ય

અમારો વેદસંમત સિદ્ધાન્ત છે. એ કારણથી જ સુપુત્તિવિષે સર્વ પ્રપંચનો અભાવ પ્રતિપાદન કન્યો છે. સુપુત્તિમાં કોઈ પદાર્થ પ્રતીત થાય નહિ. યથી સર્વ પ્રપંચનો સુપુત્તિમાં લય થાય છે. એનું નામ શાસ્ત્રમાં દૃષ્ટિસૃષ્ટિવાદ (જ્ઞાન-સમકાલદૃષ્ટિ-કથન) કહે છે. એ અર્થને આગલ (પૃષ્ઠ-તરંગ-ગત અંક ૩૧૭ થી ૩૨૨ પર્યન્ત) પ્રતિપાદન કરીશું. એ રીતિએ અનંત અહં-કારાદિ અને તેમનાં જ્ઞાન ઉત્પન્ન થાય છે, અને લય થાય છે. અહંકારાદિ અને તેમનાં જ્ઞાનની ઉત્પત્તિ અને લય સાથે જ થાય છે:-જ્યારે અહંકારાદિકોની પ્રતીતિ(=જ્ઞાન)ની ઉત્પત્તિ થાય, ત્યારે અહંકારાદિકોની ઉત્પત્તિ થાય છે; અને (તે) પ્રતી-તિનો લય થાય ત્યારે અહંકારાદિકોનો લય થાય છે. અહં-કારાદિક અને તેમના જ્ઞાન(એ વસ્ત્રે)નું નામ અધ્યાસ છે. એ યાત્ના અનિર્વચનીયરૂપાતિના પ્રતિપાદનમાં (ચતુર્થ) તરંગ-ગત અંક ૧૩૩ થી કહીશું.

(કોઈ એમ આશ્ચર્ય કરે કે) 'યદ્યપિ અહંકાર સાક્ષિભાસ્ય 'હે, એ યાત્ના 'વિષયપ્રતિપાદન'માં કહી છે, યથી અહંકારની 'પ્રતીતિ સાક્ષીરૂપ છે, તેનાં ઉત્પત્તિ અને લય વને નહિ.' તથાપિ (તેનું સમાધાન આ છે કે,-)અહંકારને પણ ઘૃત્તિએ કરીને જ સાક્ષી પ્રકાશ કરે છે, સાક્ષાત્ નહિ. તે ઘૃત્તિના ઉત્પત્તિ લય થાય છે, યથી અહંકારની પ્રતીતિના ઉત્પત્તિલય કહેવાય છે. એ રીતિએ ઉત્તરઉત્તર અહંકારાદિક અને તેમના જ્ઞાનની જે ઉત્પત્તિ, તેના હેતુ, પૂર્વપૂર્વમિષ્યાઅહંકારાદિકોના જ્ઞાનજન્ય સંસ્કાર વને છે.

૮૨. અને જો આમ કહે કે:-'ઉત્તરઉત્તરઅહંકારાદિકોના 'અધ્યાસવિષે નો યદ્યપિ પૂર્વપૂર્વઅધ્યાસના સંસ્કાર હેતુ વને

‘છે, તથાપિ પ્રથમ ઉત્પન્ન થયો) જે અહંકાર અને તેનું જ્ઞાન, તેના હેતુ, સંસ્કાર વને નહિ. કેમકે જો તેની પૂર્વે અન્ય અહંકાર ઉત્પન્ન થયો હોય, તો તેના જ્ઞાનના સંસ્કાર પૂર્ણ હોય. તે પ્રથમ અહંકારથી પૂર્વે અન્ય અહંકાર થયો નથી. તેમ સર્વ વસ્તુના પ્રથમ અધ્યાસના હેતુ, સંસ્કાર વને નહિ.’
 ૫ શંકા પણ સિદ્ધાન્તના અજ્ઞાનથી થાય છે. કેમકે વેદાન્તનો સિદ્ધાન્ત આ છે:-(૧) ‘એક (શુદ્ધ) બ્રહ્મ; અને (૨) ईश्वर; (૩) जीव; (૪) अविद्या અને (૫) अविद्याનો वै-
 ‘તન્યસહ સંયંધ; અને (૬) અનાદિવસ્તુનો ભેદ; ૫
 ‘પદ્મસ્તુ સ્વરૂપે અનાદિ’^૬ છે.’ [જે વસ્તુની ઉત્પત્તિ હોય

૫૬. जीव, ईश, विशुद्ध चित्, तथा जीवेशयोर्भिदा ।

अविद्या, तच्चित्तोर्योगः, पदस्माकमनादयः ॥

‘વિશુદ્ધ ચિત્’ નામ શુદ્ધ બ્રહ્મ (૧), ‘અવિદ્યા’ નામ માયા (૨) ‘તે’ અવિદ્યા, અને વિશુદ્ધ ‘ચિત્’ નો ‘યોગ’ નામ કલ્પિતભેદસહિત વાસ્તવભેદરૂપ તાદાત્મ્યસંબંધ (૩), ईश्वर (૪), जीव (૫), તથા जीव અને ईश्वरનો ભેદ (૬), ૫ પદ્મ અમારા (મતમા) ‘અનાદિ’ નામ ઉત્પત્તિરહિત છે, તથાપિ ૫ પદ્મ અનાદિમાંથી એક જ અદ્વિતીય બ્રહ્મ અનાદિ ‘અનન્ત’ છે. શેષ પંચ અનાદિ ‘સાન્ત’ છે. ૫ પ્રસંગમા પ૦ પીતામ્હી કહે છે.—“બ્રહ્મ અવિદ્યાનુ અધિગ્રાહ છે ૫થી બ્રહ્મની ઉત્પત્તિ અવિદ્યા જિંવા મૂલપ્રકૃતિથી સમ્ભવે નહિ. અને ईश्वर जीव आदिकनी सिद्धि तो ब्रह्म विना सम्भवे नहि, ૫થી તે ચારથી બ્રહ્મની ઉત્પત્તિ સમ્ભવે નહિ. ૫થી બ્રહ્મ અનાદિ છે. બ્રહ્મ નિર્વિકાર છે, ૫થી બ્રહ્મથી અવિદ્યાની ઉત્પત્તિ છે નહિ. અને ईश्वर आदिकनी सिद्धि तो अविद्यानी सिद्धिने अधीन છે, ૫થી ईश्वरदिधी अविद्यानी ઉત્પત્તિ સમ્ભવે નહિ. તેથી અવિદ્યા અનાદિ છે. કેવલ બ્રહ્મથી વા કેવલ માયાથી વા પરસ્પરથી વા (તેઓની) સ્વસિદ્ધિને અધીન જે ભેદ તેથી जीवईश्वरની ઉત્પત્તિ સમ્ભવે નહિ. અને અવિદ્યા તથા ચેતનના સંબંધની સિદ્ધિથી ईश्वर-जीव नी सिद्धि છે, તે સંબંધ પોતે પણ અનાદિ છે, ૫થી સંબંધની ઉત્પત્તિ નથી. તેથી ईश्वर जीव પણ अनादि છે. બ્રહ્મ અને अविद्या अनादि છે. ૫થી તેઓનો તાદાત્મ્યસંબંધ પણ અનાદિ છે. તેથી તે સંબંધની ઉત્પત્તિ નથી. અને ईश्वर जीव अविद्या ૫ શ્રણની સિદ્ધિ તો સંબંધની સિદ્ધિને અધીન છે, ૫થી તેમનાથી તે સંબંધની ઉત્પત્તિ નથી, તેથી અવિદ્યા અને ચેતનનો સંબંધ અનાદિ છે. ૫ પાંચે વસ્તુની પોતાની

નહિ તે વસ્તુ 'સ્વરૂપે અનાદિ' કહેવાય છે.] એ પદ્ધતી ઉત્પત્તિ થાય નહિ, એથી તે સ્વરૂપે અનાદિ છે. અને અહંકારાદિકોની તો શ્રુતિમાં ઉત્પત્તિ કહી છે, એથી સ્વરૂપે અનાદિ યદ્યપિ અહંકારાદિક નથી, તથાપિ પ્રવાહ રૂપે સર્વ વસ્તુ અનાદિ છે. સર્વ વસ્તુનો પ્રવાહ દૂર થાય નહિ અનાદિકાલમાં એવો સમય કોઈ પૂર્વે થયો નથી કે જે સમયે કોઈ (પ્રકારનો પણ) ઘટ નહિ હોય. એથી ઘટનો પ્રવાહ અનાદિ છે. એ રીતિએ સર્વ વસ્તુનો પ્રવાહ અનાદિ છે. પ્રલયકાલમાં પણ, સુષુપ્તિની પેઠે સર્વ વસ્તુ સંસ્કારરૂપ થઈને રહે છે. એથી પ્રપંચનો પ્રવાહ અનાદિ હોવાથી, પ્રપંચ અનાદિ કહેવાય છે. એણે જેને જ્ઞાન છે નહિ તેને આવી શંકા થાય છે જે- 'પ્રથમઅધ્યાસના હેતુ સંસ્કાર વને નહિ.' અને સિદ્ધાન્તમાં અહંકારાદિક કોઈ વસ્તુનો અધ્યાસ, સર્વથી પ્રથમ છે નહિ; કિન્તુ (પ્રવાહરૂપમાં) પોતાથી પૂર્વપૂર્વ અધ્યાસથી સંપૂર્ણ પોતાથી જ ઉત્પત્તિ માનિય તો આત્માધ્ય દોષ થશે. એથી એ પાંચ વસ્તુની પોત-પોતાથી પણ ઉત્પત્તિ નથી. જેથી એ પાંચવસ્તુની ઉત્પત્તિ નથી તેથી એ પાંચવસ્તુનો પરસ્પર ભેદ છે તેની પણ ઉત્પત્તિ વને નહિ. એ રીતિએ એ પદ્ધત્તુની ઉત્પત્તિ નથી. એથી એઓ સ્વરૂપે કરી અનાદિ છે. તેઓમાં ત્રણ ત્રિકાલ અષ્ટાપ્ય છે. એથી અનાદિ અનન્ત છે, અને (અવિદ્યા, ર્શ્વર, જીવ અવિદ્યાનો ચૈતન્યસહ સંબંધ, અને અનાદિ વસ્તુનો ભેદ,) એ પાંચ જ્ઞાનેકરી વાળને વામે છે એથી તેઓ અનાદિ સન્ત છે."

૫૭. 'પ્રપંચ (સર્વ વસ્તુ, અનાદિ છે એથી મહુકાલસ્થાયી હોવાથી સત્ય હશે, - એ શંકાતુ આ સમાધાન છે. જેમ રજુમાં સર્વનો ભ્રમ થાય છે, અને જીવોને સ્વપ્ન થાય છે, તે અમુક કાલપર્યન્ત, પૂર્વસિદ્ધ અને અનાદિસિદ્ધ પ્રતીતિ થાય છે, તો પણ રજુતું અને જાગ્રતું જ્ઞાન થયે તેમના ત્રિકાલ અમાય નિમ્બવસ્તુ વાપ થાય છે, એથી મિથ્યા છે. તેમ પ્રપંચ પણ આરોપદશાધિપે અનાદિસિદ્ધ માણે છે, તે પણ અધિગાનનું જ્ઞાન થયે એ પ્રપંચનો ત્રિકાલ-અમાય નિમ્બવસ્તુ વાપ થાય છે, એથી પ્રપંચ મિથ્યા છે. એથી જ પ્રવાહરૂપેકરી અનાદિ સન્ત કહેવાય છે.

(=સર્વ અધ્યાસ) ઉત્તર છે. યથી શકા વને નહિ. ય રીતિય સજાતીયના પૂર્વ-જ્ઞાન જન્ય-સસ્કારેકરી અહંકારાદિક વધના અધ્યાસ વને છે. ય (કવિતના) પ્રથમ પાદનો અર્થ છે.

૮૩. અને જે (અક ૪૯ માં) પૂર્વે કહ્યું, કે - ' ઘ્રણ પ્રકાર- 'નો દોષ, અધ્યાસનો હેતુ છે. અને વધના અધ્યાસમાં કોઈ ' ઘણ દોષ વને નહિ યથી વધ સત્ય છે ' તે શકા વને નહિ. કેમકે, જો દોષ વિના અધ્યાસ થાય નહિ, તો અધ્યાસનો હેતુ દોષ થાય જેમ તુરી તતુ વેમ પટના હેતુ છે, તુરી તતુ (અને) વેમ હોય તો પટ થાય, અને (તે ઘ્રણ) હોય નહિ તો પટ થાય નહિ, તેમ (અન્વયવ્યતિરેકેકરી) દાપ અધ્યાસના હેતુ નથી કેમકે, સાદૃશ્યદોષ વિના આત્મામા જાતિનો અધ્યાસ થાય છે બ્રાહ્મણત્વથી આદિ લઈને જે જાતિ છે, તે સ્થૂલશરીરનો ધર્મ છે, આત્માનો અને સૂક્ષ્મશરીરનો ધર્મ નથી, કેમકે (ડ્યારે) અન્ય શરીરને પ્રાપ્ત થાય છે, ત્યારે આત્મા અને સૂક્ષ્મશરીર તા જે પૂર્વશરીરમા છે તે જ રહે છે, અને જાતિ અન્ય ઘણ થાય છે આ નિયમ નથી - પૂર્વશરીરમા જે જાતિ હોય, તે જ ઉત્તરશરીરમા હોય છે આત્માનો અથવા સૂક્ષ્મશરીરનો ધર્મ જાતિ હોય તો, ઉત્તરશરીરવિષે અન્ય જાતિ ન થવી જોઈયે યથી આત્માનો અથવા સૂક્ષ્મશરીરનો ધર્મ જાતિ નથી કિન્તુ સ્થૂલશરીરના ધર્મ છે અને ' હુ દ્વિજાતિ હુ ' યથી રીતિય બ્રાહ્મણત્વ ક્ષત્રિયત્વ વૈશ્યત્વ-જાતિનુ આત્મામાં ભાન થાય છે, યથી આત્મામા જાતિનો અધ્યાસ છે જેમ રજ્જુમા સર્પ પરમાર્થેકરી નથી અને ભાન થાય છે, યથી રજ્જુમા સર્વનો અધ્યાસ છે તેમ આત્મામા જાતિ છે નહિ

૫૮ [દ્વિજાતિ નામ ત્રિવર્ણનુ છ] જેને ઉપનયનનો અધિકાર છ યવા બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય અને વૈશ્ય વર્ણ

અને ભાન થાય છે, ઈથી આત્મામાં જાતિનો અધ્યાસ છે. અને આત્માની સાથે જાતિનું સાદૃશ્ય છે નહિ. કેમકે, આત્મા વ્યાપક છે, અને જાતિ પરિહિન્ન છે. આત્મા પ્રત્યક્ છે અને જાતિ પરાક્ છે. આત્મા વિષયી (પ્રકાશક) છે અને જાતિ વિષય (પ્રકાશ્ય) છે. ઈ રીતિપ આત્મામાં વિરોધિની જાતિનો પણ અધ્યાસ થાય છે. જેમ આત્માવિષે સાદૃશ્ય વિના જાતિનો અધ્યાસ થાય છે, તેમ સાદૃશ્ય વિના અર્હકારાદિક વંધનો અધ્યાસ પણ આત્મામાં વને છે. સાદૃશ્યદોષ અધ્યાસનો હેતુ નથી. જો સાદૃશ્યદોષ જ અધ્યાસનો હેતુ હોય તો, આત્મામાં જાતિનો અધ્યાસ નહિ થયો જોઈયે, અને શંખમાં પીતતાનો અધ્યાસ નહિ થયો જોઈયે; અને શર્કરામાં કટુતાનો અધ્યાસ નહિ થયો જોઈયે; કેમકે, શ્વેતનો અને પીતનો વિરોધ છે, સાદૃશ્ય નથી. તેમ મધુર અને કટુનો વિરોધ છે, સાદૃશ્ય નથી. ઈથી અધિષ્ઠાનમા મિથ્યાવસ્તુનો સાદૃશ્યદોષ, અધ્યાસનો હેતુ નથી.

૮૪ તેમ પ્ર મા તા ના લોભભયઆદિ દોષ પણ અધ્યાસના હેતુ નહિ. કેમકે લોભરહિત ધૈરાગ્યવાન્ જે પુરુષ છે, તેને પણ શુક્તિમાં રૂપનો અધ્યાસ થાય છે, તે ન થયો જોઈયે. ઈથી પ્રમાણનો દોષ પણ અધ્યાસનો હેતુ નથી. અને પ્ર મા ણ નો દોષ પણ અધ્યાસનો હેતુ નથી. કેમકે, સર્વ પુરુષને, રૂપરહિત જે આકાશ છે, તે નીલરૂપવાલું પ્રતીત થાય છે; અને કટાહ(કઢાઈ)ના તથા તંબુના આકારે પ્રતીત થાય છે; ઈથી સર્વને આકાશમાં, નીલરૂપનો, કટાહનો, તથા તંબુનો, અધ્યાસ છે અને સર્વના નેત્રરૂપ પ્રમાણમાં દોષનું પચ્ચન વને નહિ. ઈથી પ્રમાણનો દોષ અધ્યાસનો હેતુ નથી. આકાશમાં નીલાદિયોનો જે અધ્યાસ છે, તેનેયિને ઈક પ્રમાણદાયનો જ

અભાવ નથી, કિન્તુ સર્વ દોષોનો અભાવ છે. સાદૃશ્ય (દોષ) પણ નથી, અને પ્રમાતાનો દોષ પણ નથી. જેમ સર્વદોષના અભાવથી પણ આકાશમાં નીલતાદિકોનો અધ્યાસ થાય છે; તેમ આત્માવિષે પણ વંધનો અધ્યાસ દોષવિના જ વને છે. યથી 'દોષના અભાવથી વંધ અધ્યાસરૂપ નથી,' એ શંકા વને નહિ. કેમકે, સર્વ દોષનો અભાવ પણ છે તો પણ આકાશમાં નીલાદિકોનો અધ્યાસ સર્વ પુરુષોને થાય છે; યથી દોષ અધ્યાસનો હેતુ નથી. કવિતના ચતુર્થ પાદનો આ અર્થ છે:— જેમને કોઈ 'પિત્તપ્રભૃતિ' નામ પિત્તથી આદિ લઈને 'અક્ષેમ' નામ દોષ નથી, તેમને પણ આકાશ નીલરૂપવાન કટાહ-આકાર (ગોઠ), અને તંતુના આકાર ભાસે છે, યથી પ્રમાણ-દોષ અધ્યાસનો હેતુ નથી. ['ક્ષેમ' નામ કુશલનું છે. તેનો વિરોધી જે પ્રમાણદોષ તે અક્ષેમ કહેવાય છે જ્ઞાનનું સાધન જે इन्द्रिय તે 'પ્રમાણ' કહેવાય છે.] એ રીતિપ દોષ અધ્યાસના હેતુ નથી; યથી વંધના અધ્યાસમાં દોષની અપેક્ષા નથી. અને સંક્ષેપશારીરિકમાં, વંધના અધ્યાસ સમય, દોષ પણ પ્રતિપાદન કન્યા છે. વિસ્તારના ભયથી અમે(તે અત્ર) નથી લર્યા. અને અધ્યાસના હેતુ જો દોષ હોય તો દોષ નિરૂપણ કરત; તે દોષ અધ્યાસના હેતુ છે નહિ યથી પણ દોષનું નિરૂપણ નથી કન્યું. ૧૩.

૫૯. આકાશમાં નીલાદિક વર્ણનો જે અધ્યાસ સર્વને છે તેમાં 'પ્રમાણદોષ'નો અભાવ છે, કારણ સર્વ પુરુષોના નેત્રમાં તિમિરાદિ દોષ છે નહિ. અને નીલાદિકોનું અને આકાશનું સાદૃશ્ય નથી, યથી 'પ્રમેયદોષ'નો પણ અભાવ છે. અને કોઈને આકાશના નીલ રંગનો, આકાશ જેવા કટાહનો, અને આકાશ જેવા તંતુનો લોભ પણ નથી; યથી 'પ્રમાણદોષ'નો પણ અભાવ છે. પં. પી. પુ.

૬૦. સર્વશક્તિમહામુનિએ શંકરકૃત શારીરિકમાખ્યઉપર રચેલો પદ્યાત્મક પ્રેષ. તેના સમયમાં રાજા મનુકુલાદિત્ય નામે હતો.

૮૬. અથ કારણાધ્યાસનિરૂપણ.

હો.

ચિત્ સામાન્ય-પ્રકાશથી, નહિ નાશે અજ્ઞાન;
 છે પ્રકાશ સુપુતિમાં, ચેતનથી અજ્ઞાન.

૧૪

ટીકા:—પૂર્વે કહ્યું જે:—‘વિશેષરૂપે અજ્ઞાત વસ્તુમાં અ-
 ‘ધ્યાસ થાય છે. અને આત્મા સ્વયંપ્રકાશ છે, તેનાવિષે અજ્ઞાન
 ‘બને નહિ; કેમકે તમનો અને પ્રકાશનો પરસ્પર વિરોધ છે.
 ‘પથી જેમ અત્યંત પ્રકાશમાં સ્થિત રજ્જુમાં સર્પનો અધ્યાસ
 ‘થાય નહિ; તેમ સ્વયંપ્રકાશ આત્મામાં બંધનો અધ્યાસ બને
 ‘નહિ.’ તે શંકા પણ બને નહિ. કેમકે, યદ્યપિ આત્મા
 પ્રકાશરૂપ છે, તથાપિ આત્માનો સ્વરૂપપ્રકાશ અજ્ઞાનનો
 વિરોધી નથી. જો આત્મ-સ્વરૂપ-પ્રકાશ અજ્ઞાનનો વિરોધી હોય,
 તો સુપુતિમાં પ્રકાશરૂપ આત્માવિષે અજ્ઞાન પ્રતીત થાય છે,
 તે નહિ થયું જોઈએ. ઘોરનિદ્રાથી જાગ્યો જે પુષ્પ છે તેને
 આવું જ્ઞાન થાય છે:—‘હું સુલે સૂતો હતો અને કિંચિત્ પણ ન
 ‘જાણતો હ્યો.’ એ જ્ઞાનનો મુલ અને અજ્ઞાન વિષય છે. તે
 મુલ અને અજ્ઞાનનું જે જાગ્રતમાં જ્ઞાન છે, તે પ્રત્યક્ષરૂપ નથી.
 કેમકે, જે જ્ઞાનનો વિષય સન્મુલ હોય, તે જ્ઞાન પ્રત્યક્ષરૂપ
 હોય છે. અને જાગ્રત્ કાલમાં (તે સુપુતિનું) મુલ અને
 અજ્ઞાન છે નહિ; પથી જાગ્રતમાં મુલ અને અજ્ઞાનનું જ્ઞાન પ્રત્ય-
 ક્ષરૂપ નથી, કિન્તુ સ્મૃતિરૂપ છે. તે સ્મૃતિ અજ્ઞાતવસ્તુની

૬૧. પ્રવચનું કારણ જે અધિજ્ઞાનના વિશેષરૂપનું અજ્ઞાન છે તે(અજ્ઞાન)નો
 જે (આત્મામાં) અધ્યાસ છે ‘કારણાધ્યાસ’ કહેવાય છે. યદ્યપિ પ્રવચના
 અધ્યાસનું કારણ અજ્ઞાન છે, અને અજ્ઞાનના અધ્યાસનું કારણ અન્ધ કોરું છે
 નહિ, પથી અજ્ઞાનનો અધ્યાસ બને નહિ; તથાપિ દ્વિતકના સમ, અને માંડ્યામિમત્
 સ્વપ્રકાશ આત્માના સમ, અને નૈવાપિકામિમત્ ભેદના સમ, અજ્ઞાન ૧૧-૧૨નું
 નિર્વાહક છે, પથી તેનો અધ્યાસ બને છે. વં. પી. પુ.

થાય નહિ, કિન્તુ ઘાતવસ્તુની ધાય છે; યથી સુપુતિમાં સુર અને અજ્ઞાનનું જ્ઞાન છે, તે સુપુતિનું જ્ઞાન અંતઃકરણ(જન્ય) અને ઇન્દ્રિયજન્ય તો છે નહિ. કેમકે સુપુતિમાં અંતઃકરણ અને ઇન્દ્રિયનો અભાવ છે. યથી સુપુતિમાં આત્મસ્વરૂપ જ જ્ઞાન છે. [જ્ઞાન અને પ્રકાશનો એક જ અર્થ છે.] ૫ રીતિપ સુપુતિમાં આત્મા પ્રકાશરૂપ છે. તે પ્રકાશરૂપ આત્માપ સ્વરૂપસુર અને અજ્ઞાનની પ્રતીતિ થાય છે. જો આત્મ-સ્વ-રૂપ-પ્રકાશ અજ્ઞાનનો વિરોધી હોય. તો, સુપુતિમાં અજ્ઞાનની પ્રતીતિ ન થવી જોઈએ. યથી આત્મા પ્રકાશરૂપ તો છે; પરંતુ આત્માનો સ્વરૂપ-પ્રકાશ અજ્ઞાનનો વિરોધી નથી. ઉલટો આત્માનો સ્વરૂપપ્રકાશ અજ્ઞાનનો સાધક છે. ૫ અભિ-પ્રાયથી જ વેદાન્તશાસ્ત્રમાં કહ્યું છે: 'સામાન્ય ચૈતન્ય અજ્ઞાન-નું વિરોધિ નથી. કિન્તુ વિશેષ ચૈતન્ય જે અજ્ઞાનનું 'વિરોધિ છે.' [વ્યાપક જે ચૈતન્ય છે તે સામાન્ય-ચૈતન્ય કહેવાય છે. અને વૃત્તિમાં સ્થિત જે ચૈતન્ય તે વિશેષ-ચૈતન્ય કહેવાય છે.] જેમ કાષ્ટમાં સ્થિત જે સામાન્ય અગ્નિ છે, તે અંધકારનો વિરોધી નથી; અને (તે જ કાષ્ટમાંથી) મયન-ઘટે પ્રકટ કન્યો જે અગ્નિ છે, તે, ઘર્તિ(ઘાટ)માં સ્થિત થઈને, અંધકારનો વિરોધિ છે; તેમ વ્યાપક જે ચૈતન્ય તે અજ્ઞાનનું વિરોધિ નથી પણ સરૂં, પરંતુ વેદાન્તના વિચારે અંતઃકર-ણની જે બ્રહ્માકારવૃત્તિ થઈ છે, તેનાવિષે સ્થિત ચૈતન્ય અજ્ઞાન-

૬૨. જેમ અંધકાર, ચાર મૂતો(આકાશ વાયુ-જલ-પૃથિવી) ના ગુણ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, અને ગંધ તેમને આધરણ કરતો નથી, કિન્તુ તેજનો ગુણ જે 'રૂપ' તેને જ આધરણ કરે છે; યથી અંધકાર, તેજના સામાન્યસ્વરૂપને આશ્રિત થઈને રહે છે, અને તેને જ વિષય કરે છે નામ ઢાંકે છે યથી સામાન્ય તેજ અંધકારનું વિરોધિ નથી, તેમ અજ્ઞાન પણ ચેતનના સામાન્ય પ્રકાશને આશ્રિત થઈને રહે છે અને તેને જ વિષય કરે છે. યથી સામાન્યચેતન અજ્ઞાનનું વિરોધિ નથી.

નું વિરોધિ છે. એ રીતિએ કેવલ ચૈતન્ય અજ્ઞાનનું વિરોધિ નથી; કિન્તુ વૃત્તિસહિત ચૈતન્ય અજ્ઞાનનું વિરોધિ છે, અથવા ચૈતન્યસહિત વૃત્તિ અજ્ઞાનની વિરોધિની છે.”

પ્રથમ પક્ષમાં તો ‘અજ્ઞાનના નાશનો હેતુ ચૈતન્ય છે, અને ‘વૃત્તિ સહાયક છે.’ દ્વિતીય પક્ષમાં ‘અજ્ઞાનના નાશનો હેતુ ‘વૃત્તિ છે. ચૈતન્ય સહાયક છે.’ એ અવચ્છેદવાદની રીતિ છે. અને આભાસવાદમાં તો ‘સામાન્ય ચૈતન્યની પેઠે ‘વિશેષ ચૈતન્ય પણ અજ્ઞાનનું વિરોધિ નથી; કિન્તુ વૃત્તિસહિત ‘આભાસ (અજ્ઞાનનો વિરોધિ છે); અથવા આભાસસહિત વૃત્તિ, ‘અજ્ઞાનની વિરોધિની છે.’ એ રીતિએ પ્રકાશરૂપ ચૈતન્ય અજ્ઞાનનું વિરોધિ નથી, યથી ચૈતન્યને આશ્રિત અજ્ઞાન છે. તે અજ્ઞાને આવૃત (વિંટાયલો) જે આત્મા તેના વિષે ધંધનો અધ્યાસ વને છે.

૮૬. અને પૂર્વે કહ્યું જે, - ‘સામાન્યરૂપે જ્ઞાત અને વિશેષરૂપે ‘અજ્ઞાતવસ્તુમાં અધ્યાસ થાય છે. અને આત્મામાં સામાન્ય-‘વિશેષ-ભાવ છે નહિ, યથી નિર્વિશેષ આત્મા, જ્ઞાત અને ‘અજ્ઞાત ધને નહિ, તેનાવિષે અધ્યાસનો અસંભવ છે.’ તે યાતાં પણ વને નહિ. કેમકે, ‘આત્મા છે’ એ પ્રતીતિ સર્વને યાય

૬૩. એકલું લાકડું શાદીને કાપી શકતું નથી પણ સ્પોદાના ફલ સહિત લાકડાનો શાયો શાદીને કાપી શકે છે; તેમ અજ્ઞાનરૂપ શાદીને ચૈતન્યસહિત વૃત્તિ કાપી શકે છે.

૬૪. અને પૂર્વે કહ્યું હતું જે સર્વવિષે અધિકારની પેઠે સ્વપ્રકાશરૂપ આત્મા વિષે અજ્ઞાન સંભવે નહિ, એ શંકા વને નહિ. કેમકે યથીંદિ યવોઠિ મજાતેજનું વિશેષરૂપ છે, સામાન્ય નહિ, અને આત્માનું રૂપ સો સામાન્ય પ્રકાશ છે. યથી તે અજ્ઞાનનો વિરોધિ નથી. તેથી દૃશ્યત્વ સર્વ અને સિદ્ધાન્ત પેઠેજની વિવિધતાએકી ઉક્ત શંકાનો અવકાશ નથી. પં. પી. પુ.

છે. [આત્મા નામ પોતાના સ્વરૂપનું છે] 'હું છુ નહિ' એ પ્રતીતિ કોઈને થાય નહિ, કિન્તુ 'હુ છુ' એ પ્રતીતિ સર્વને થાય છે એથી સત્સ્વરૂપે કરીને આત્મા(નુ) સર્વને માન થાય છે. અને 'ચૈતન્ય, આનન્દ, વ્યાપક, નિત્યશુદ્ધ, નિત્યમુક્તરૂપ આત્મા છે,' એ પ્રતીતિ સર્વને થાય નહિ એથી ચૈતન્ય, આનન્દ, વ્યાપક, નિત્યશુદ્ધ, નિત્યમુક્તરૂપે આત્મા અજ્ઞાત છે, અને સત્સ્વરૂપે કરીને જ્ઞાત છે એ વાર્તા અનુભવસિદ્ધ છે. તે અનુભવસિદ્ધ વાર્તા યુક્તિએ દૂર થાય નહિ. સર્વને પ્રતીત જે થાય છે, આત્માનું સત્સ્વરૂપ, તે તો (આત્માનુ) સા મા ન્ય રૂપ છે, અને કેવલ જ્ઞાનીને પ્રતીત થાય છે જે ચૈતન્ય આનન્દાદિક(રૂપ)તે (આત્માનુ) વિશેષ રૂપ છે. [જે અધિક કાલમા (અને) અધિક દેશમા હોય તે સામાન્યરૂપ કહેવાય છે, અને ન્યૂનદેશમા (અને) ન્યૂનકાલમા હાય તે વિશેષરૂપ કહેવાય છે.] યદ્યપિ આત્માનુ સ્વરૂપ જ ચૈતનઆનન્દાદિક છે, એથી સત્ની પેઠે ચૈતનઆનન્દાદિક સર્વત્ર વ્યાપક છે, સત્ની અપેક્ષાથી ચૈતન આનન્દાદિકને ન્યૂનદેશમા, અને ચૈતનઆનન્દાદિકની અપેક્ષાથી સત્સ્વરૂપને અધિક દેશમા કહેવું વને નહિ એથી સત્સ્વરૂપ આત્માનો સામાન્ય અર્થ છે, અને ચૈતનઆનન્દાદિક વિશેષ અર્થ છે, એ કહેવું પણ વને નહિ તથાપિ સત્ની પ્રતીતિ સર્વને અવિદ્યાકાલમા પણ હોય છે, અને 'ચૈતન આનન્દરૂપ આત્મા છે,' એ પ્રતીતિ સર્વને અવિદ્યાકાલમા હાય નહિ, કેવલ જ્ઞાનીને જ હાય છે. અવિદ્યાકાલમા ચૈતન, આનન્દ, મુક્તતા, શુદ્ધતા, પણ છે, પરંતુ પ્રતીતિ થાય નહિ, એથી ન હોવાના સમાન છે એ અભિપ્રાયથી ચૈતન્યઆનન્દાદિક ન્યૂનકાલવર્તિ કહેવાય છે, અને સત્સ્વરૂપ અધિકકાલવર્તિ કહેવાય છે એ રીતિએ સત્સ્વરૂપનો અને ચૈતનઆનન્દાદિકનો સામાન્યવિશેષ-

ભાવ નથી પણ સરો, પરંતુ અલ્પ કાલ અને અધિક કાલમાં પ્રતીતિ હોવાથી સામાન્યવિશેષભાવની પેઠે છે. ઇ કારણથી આત્માનું સત્ત્વ સા મા ન્ય અં શ કહેવાય છે, અને ચે ત ન આ નં દા દિ ક વિ શે પ અંશ કહેવાય છે.

અને આત્મા નિર્વિ શે પ છે, ઇ સિદ્ધાન્તની પણ હાનિ નથી. જો આત્મામાં સામાન્યવિશેષભાવ અંગીકાર કરિયે તો, નિર્વિ- 'શેષ આત્મા છે' ઇ સિદ્ધાન્તની હાનિ થાય. તે સામાન્યવિશેષ- ભાવ અંગીકાર કન્યો નહિ, કિન્તુ અવિદ્યાપ સામાન્યવિ- શેષની પેઠે પ્રતીતિ થાય છે, ઇથી સામાન્યવિશેષભાવ કહે છે, (ઇમ કહ્યું છે.) ઇ રીતિપ સત્ત્વરૂપે કરીને જ્ઞાત; અને ચેતન, આનંદ, નિત્યશુદ્ધ, નિત્યમુક્ત, બ્રહ્મરૂપે કરીને અજ્ઞાત; (ઇવા) આત્માવિષે વંધનો અધ્યાસ વને છે. અધ્યાસરૂપ વંધની જ્ઞાને નિવૃત્તિ પણ વને છે. ઇથી ગ્રં થ નું પ્ર યો જ ન સંભવે છે.

૮૭. અને પૂર્વે (અંક ૫૧-૫૮ એકમધિકયાદ પ્રમાણે પૂર્વ- પક્ષીપ) કહ્યું જે:- 'નિવિદ્ધકામ્યકર્મનો ત્યાગ કરીને, નિત્ય- નૈમિત્તિક અને પ્રાયશ્ચિત્ત કર્મ કરે, ઇથી નિવિદ્ધ કર્મના 'અભાવથી નીચ લોકને પ્રાપ્ત થાય નહિ; અને કામ્યકર્મન 'અભાવથી ઉત્તમ લોકને પ્રાપ્ત થાય નહિ. અને નિત્યનૈમિત્તિક 'કર્મ નહિ કરવાથી જે પાપ થાય, તે તેમના કરવાથી થાય 'નહિ, અને આ જન્મવિષે અથવા અન્ય જન્મવિષે પૂર્વે કન્યાં 'જે પાપ છે, તેમનો સાધારણ અને અસાધારણ પ્રાયશ્ચિત્તે 'નાશ થાય છે. અને પૂર્વે કન્યાં જે કામ્યકર્મ છે, તેમના ફલની 'ઇચ્છાના અભાવથી, મુમુક્ષુને, તેઓનું ફલ થાય નહિ ઇથી 'મુમુક્ષુને જ્ઞાન વિના જ જન્મના અભાવરૂપ મોક્ષ થાય છે.' તે વને નહિ. કેમકે:-

નિત્યનૈમિત્તિક કર્મનું પણ સ્વર્ગરૂપ ફલ છે, એ ઘાત માપ્ય-ફારે યુક્તિ અને પ્રમાણેકરી પ્રતિપાદન કરી છે; એથી નિત્ય-નૈમિત્તિક કર્મથી ઉત્તમ લોકને પ્રાપ્ત થશે; જન્મનો અભાવ વને નહિ, અને નિત્યનૈમિત્તિક કર્મનું ફલ જો અંગીકાર નહિ કરિયે તો નિત્યનૈમિત્તિક કર્મનો ઘોષક જે વેદ છે, તે નિષ્ફલ થશે. કેમકે, જો નિત્યનૈમિત્તિક કર્મના નહિ કરવાથી પાપ થાય, તો તે પાપની અનુત્પત્તિ (૫) તેઓનું ફલ વને, તે નિત્યનૈમિત્તિક કર્મના નહિ કરવાથી પાપ થાય નહિ. કેમકે, નિત્યનૈમિત્તિક કર્મનું જે નહિ કરવું તે અભાવ-રૂપ છે, અને પાપ ભાવરૂપ છે. અભાવથી ભાવની ઉત્પત્તિ થાય નહિ; એથી 'નિત્યનૈમિત્તિક કર્મના નહિ કરવાથી પાપ થાય છે,' એ કહેવું વને નહિ. જો નિત્યનૈમિત્તિક કર્મના નહિ કરવાથી પાપની ઉત્પત્તિ અંગીકાર કરિયે તો, 'અભાવથી ભાવની ઉત્પત્તિ થાય નહિ,' એ (ગીતાના) દ્વિતીય અધ્યાય-માં ભગવાને કહ્યું છે, તેથી વિરોધ થશે. એથી નિત્યનૈમિત્તિક કર્મના અભાવથી, ભાવરૂપ પાપની ઉત્પત્તિ વને નહિ. એ રીતિએ નિત્યનૈમિત્તિક કર્મનું પાપની અનુત્પત્તિ ફલ નથી, કિન્તુ નિત્યનૈમિત્તિક કર્મ વિના પણ પાપની અનુત્પત્તિ સિદ્ધ છે. એથી નિત્યનૈમિત્તિક કર્મનું જો સ્વર્ગરૂપ ફલ અંગીકાર નહિ કરિયે તો, કર્મ નિષ્ફલ થવાનાં. અને નિષ્ફલ જે નિત્ય નૈમિત્તિક કર્મ છે, તેઓનો ઘોષક વેદ પણ નિષ્ફલ થશે. એથી નિત્યનૈમિત્તિક કર્મને પણ સ્વર્ગ ફલ થાય છે.

૮૮. અને (પૂર્વપક્ષીએ કહ્યું કે:-) 'જન્માન્તરનાં જે કામ્ય 'કર્મ છે, તેઓનું, ઇચ્છાના અભાવથી, ફલ થાય નહિ.' તે વાર્તા પણ વને નહિ. કેમકે કર્મરૂપી વીજવતે એ અંકુર થાય છે. એક તો વાસના અને વીજું અટ્ટ. [ધર્મ અધર્મનું

નામ અદૃષ્ટ છે.] શુભકર્મવતે તો શુભવાસના અને ધર્મરૂપ અંકુર થાય છે; અને અશુભકર્મવતે અશુભવાસના અને અધર્મરૂપ અંકુર થાય છે. શુભવાસનાએ તો આગળ શુભકર્મમાં પ્રવૃત્તિ થાય છે, અને ધર્મેકરી સુખનો ભોગ થાય છે. એ જ રીતિએ અશુભવાસનાએ (આગળ) અશુભકર્મમાં પ્રવૃત્તિ થાય છે; અને અધર્મેકરી દુઃખનો ભોગ થાય છે. એ રીતિએ કર્મરૂપ વીજથી વાસનારૂપ અને અદૃષ્ટરૂપ અંકુર થાય છે. તે(વે અંકુર)-માંથી 'વાસનારૂપ અંકુરનો તો ઉપાયેકરી નાશ થાય છે; અને અદૃષ્ટરૂપ અંકુરનો તો ફલની ઉત્પત્તિ વિના કોઈ 'પ્રકારે પણ નાશ થાય નહિ.' એ શાસ્ત્રનો નિર્ણય છે. અશુભકર્મેકરી ઉત્પન્ન થયો જે અશુભવાસનારૂપ અંકુર છે, તેનો તો સત્સંગ આદિ ઉપાયેકરી નાશ થાય છે; અને શુભકર્મેકરી ઉત્પન્ન થઈ જે શુભવાસના તેનો કુસંગાદિકોથી નાશ થાય છે. શાસ્ત્રમાં જેટલો પુરુષાર્થ કહ્યો છે, તેણે(પુરુષાર્થે)કરી પ્રવૃત્તિનો હેતુ જે વાસના, તે(વાસના)નો જ નાશ થાય છે, એથી પુરુષાર્થ પણ સફળ છે. અને ભોગનો હેતુ જે અદૃષ્ટ તેનો નાશ થાય નહિ. એથી 'ફલ લીધા વિના કર્મની નિવૃત્તિ 'થાય નહિ,' એ વાર્તા શાસ્ત્રમાં જે કહી છે તે સાથે પણ વિરોધ નથી. એ રીતિએ અજ્ઞાનીને ફલભોગ વિના કર્મની નિવૃત્તિ બને નહિ; અને જ્ઞાનીને તો (ફલના) ભોગ વિના પણ કર્મની નિવૃત્તિ બને છે. કેમકે, કર્મ અને કર્તા તથા ફલ પરમાર્થથી તો છે નહિ, કિન્તુ અવિદ્યાએકરી કલ્પિત છે. તે અવિદ્યાનું જ્ઞાન વિરોધિ છે. એથી અવિદ્યાકલ્પિત જે કર્માદિક છે તેમનો પણ જ્ઞાનેકરી નાશ થાય છે. જેમ સ્વપ્નવિષે નિદ્રાએકરી જે પદાર્થ પ્રતીત થાય છે તેઓનો, જાગ્રત્માં, નિદ્રાની નિવૃત્તિ-એકરી, અમાલ થાય છે. તેમ અવિદ્યારૂપ નિદ્રાએકરી

પ્રતીત થાય છે જે કર્મ, કર્તા, અને ફલ, તેઓનો પણ જ્ઞાન-દશારૂપ જામત્વિપે, અવિદ્યાની નિવૃત્તિપકરી, અભાવ થાય છે, અને જ્ઞાન વિના અભાવ થાય નહિ. અને ઇચ્છાના અભાવથી જો કર્મનો ફલભોગ થાય નહિ, નો ઈશ્વરનો સંકલ્પ મિથ્યા થશે. કેમકે, 'ફલભોગ વિના અજ્ઞાનીના કર્મની 'નિવૃત્તિ થાય નહિ,' એ ઈશ્વરનો સંકલ્પ છે. જો ઇચ્છાના અભાવથી કન્યાં કર્મનું ફલ થાય નહિ, તો ઈશ્વરનો સંકલ્પ મિથ્યા જ થશે. અને 'સત્યસંકલ્પ ઈશ્વર છે,' એ વાર્તા શાસ્ત્રમાં પ્રસિદ્ધ છે. યથી 'ઇચ્છાના અભાવથી પૂર્વે કરેલા કામ્ય- 'કર્મનું ફલ થાય નહિ,' એ વાર્તા (જે પૂર્વપક્ષીય કહી તે) વિરુદ્ધ છે. જો ઇચ્છાના અભાવથી જ કામ્યકર્મનું ફલ ન થાય તો, અશુભ કર્મનું ફલ કોઈને પણ ન થવું જોઈએ. કેમકે, અશુભ કર્મનું ફલ દુઃખ છે, તેની કોઈને પણ ઇચ્છા છે નહિ. યથી જ્ઞાન વિના કર્મના ફલનો અભાવ થાય નહિ.

~

૮૯. અને પૂર્વે કહ્યું જે:-'જેમ કર્મના અનુષ્ઠાનકાલમાં 'ઇચ્છારહિત જે પુરુષ છે, તેને કર્મનું ફલ વેદાન્તમાં અંગી- 'કાર કન્યું નથી; તેમ કર્મના અનુષ્ઠાનથી અનન્તર પણ જો પુરુષની ઇચ્છા દૂર થઈ જાય, તો કર્મનું ફલ થાય નહિ,' તે વાર્તા પણ વેદાન્તમતને નહિ જાણીને કહી છે. કેમકે, ફલની ઇચ્છાસહિત જે કર્મ કરે છે, અથવા ફલની ઇચ્છા-રહિત જે કર્મ કરે છે, તેઓને કર્મનો ફલભોગ તો નિશ્ચય થાય છે. પરંતુ ઇચ્છારહિતકર્મેકરી અંતઃકરણ શુદ્ધ થાય છે; અને ઇચ્છાસહિત જે કર્મ કરે છે, તેને કેવલ ભોગ તો થાય છે, પરંતુ અંતઃકરણ શુદ્ધ થાય નહિ. ઇચ્છારહિતકર્મ કરવાથી (જેને) શુદ્ધ અંતઃકરણ થઈને શ્રવણથી જો જ્ઞાન થઈ

જાય તો તેને કર્મનું ફલ થાય નહિ. અને 'જેણે કર્મ તો, 'ફલની ઇચ્છારહિત, કન્યાં છે, પરંતુ, શ્રવણના અભાવેકરી 'અથવા કોઈ વીજા નિમિત્તેકરી, જ્ઞાન થાય નહિ, તેને તો, 'ઇચ્છારહિતકર્મનાં ફલનો ભોગ, દૂર થાય નહિ,'-૫ વેદાન્તનો સિદ્ધાન્ત છે. યથી જ્ઞાન વિના કર્મનો ફલભોગ દૂર થાય નહિ.

૧૦. અને પૂર્વે કહ્યું, જે:-'પ્રાયશ્ચિત્તવતે સંપૂર્ણ અશુભ- 'કર્મનો નાશ થાય છે,' તે વાર્તા પળ વને નહિ. કેમકે, અનંત કલ્પનાં જે અશુભકર્મ છે, તેઓનું ઇક જન્મનેવિપે પ્રાયશ્ચિત્ત વને નહિ. અને ગંગાજ્ઞાન અને ઈશ્વરનું નામઉચ્ચારણ આદિ લઈને સર્વ પાપનાં નાશક જે સાધારણ પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યાં છે, તે પળ જ્ઞાનનાં જ સાધન છે; યથી સર્વ પાપનાં નાશક કહ્યાં છે. યથી જ્ઞાનેકરી જ સર્વ પાપનો નાશ થાય છે.

૧૧. અને પૂર્વે કહ્યું જે:-'નિત્યનૈમિત્તિક કર્મ કરવાથી જે ક્લેશ થાય છે, તે પૂર્વસંચિત નિષિદ્ધકર્મનું ફલ છે; યથી 'સંચિત નિષિદ્ધકર્મનું ફલ વીઝું હોય નહિ.'-તે વાર્તા પળ વને નહિ. કેમકે, અનેક પ્રકારનાં સંચિતનિષિદ્ધ જે કર્મ છે, તેઓનું ફલ પળ અનંત પ્રકારનું દુઃખ છે. કેવલ કર્મનાં અનુષ્ઠાનનો ક્લેશ જ તેમનું ફલ વને નહિ.

૧૨. અને પૂર્વે કહ્યું, જે:-'સંપૂર્ણ સંચિતકામ્યકર્મથી ઇક જ શરીર થાય છે.' તે વાર્તા પળ વને નહિ. કેમકે સંચિત-કામ્યકર્મ અનંત છે, તેઓનો ઇક જન્મવિપે ભોગ વને નહિ. અને ઇક પુરુષને ઇક કાલમાં નાના શરીરેકરી જે ભોગ કહ્યો, તે પળ સિદ્ધ યોગી વિના અન્યને વને નહિ. અને 'સિદ્ધ યોગીને 'વળ અન્ય તો સંપૂર્ણ સામર્થ્ય હોય છે, પરંતુ જ્ઞાન વિના મોક્ષ 'થાય નહિ.' ૫ વેદાન્તનો સિદ્ધાન્ત છે. ૫ રીતિય કામ્યકર્મ

અને નિપિદ્ધકર્મને ત્યાગીને, જો કેવલ નિત્યનૈમિત્તિક કર્મ અજ્ઞાની કરે, તેને નિત્યનૈમિત્તિક કર્મના ફલને મોગવવા-સાર અને પૂર્વે જે શુભ અશુભ કર્મ કન્યાં છે તેઓના ફલને મોગવવાસાર અનંતશરીર થશે, મોક્ષ થાય નહિ. યથી જ્ઞાન-દ્વારા વંધની નિવૃત્તિ ગ્રંથનું પ્રયોજન વને છે. જેમ સ્વપ્નવિપે જે મિથ્યાપદાર્થ પ્રતીત થાય છે, તેઓની જાગ્રત્વિના નિવૃત્તિ થાય નહિ; તેમ વંધ પણ મિથ્યા પ્રતીત થાય છે, તેની પણ જ્ઞાનરૂપ જાગ્રત્વિના નિવૃત્તિ થાય નહિ.

૧૩. ૫ રીતિષ ગ્રંથના અધિકારી, વિષય, (અને) પ્રયોજન સંભવે છે. અને અધિકારિઆદિકોના સંભવથી સંવંધ પણ સંભવે છે. યથી ગ્રંથનો આરંભ વને છે.

इहो.

दादु दीनदयाल ह्यो, सत्-सुख-परमप्रकाश;
जेमां मतिनी गति नहि, ते छे निश्चलदास.

१५.

इति श्रीविचारसागरे अनुबंधविशेषनिरूपणं नाम

द्वितीयस्तरंगः समाप्तः. २.



अथ श्रीविचारसागरस्य

तृतीयतरंगप्रारंभः.

अथ श्रीगुरुशिष्यलक्षण.

गुरुभक्तिफलप्रकारनिरूपण.

९४ इति.

पेखी चार-अनुबंधयुत, पढे शुणे आ ग्रंथ;
ज्ञानसहित गुरुथी ज नर, लहे मोक्षनो पंथ. १.

टीका:—चारे अनुबंधसहित ग्रंथने जाणीने ज्ञानसहित-
गुरुथी जे पुरुष भणे अथवा एकाग्रचित्त करीने सांभळे, ते
पुरुष, मोक्षनो पंथ जे ज्ञान छे, तेने प्राप्त थाय. १.

इति.

अनायास मति भूमिमां, ज्ञानवाडी आवाद
थाय, ए ज कारण कहुं, गुरुशिष्यसंवाद. २.

टीका:—गुरुशिष्यना संवादवते अर्थ निरूपण करेथी थोताने
बोध सुखेकरी थाय छे, ए कारणथी गुरुशिष्यना संवादे
ग्रंथनो आरंभ कराय छे. २.

९५. अथ श्रीगुरुलक्षण.

चोपाई.

वेद अर्थने भला पिछाणे, आत्मा ब्रह्मरूप इक जाणे,
पंचभेदनी बुद्धि नसाडे, अद्वय अमल ब्रह्म देखाडे. ३.
भव मिथ्या मृगतृपा समान ज, अनुभव भाखे एम, न अन्य ज,
ते गुरु दे अद्भुत उपदेश ज, छेदक शिखा, न, लुंचितकेश ज. ४.

ટીકા—‘વેદના અર્થને મહાપ્રકાર પીછાણે’ એ કહેવાથી અધીતવેદ (ધોમ્પ્રિય) આચાર્ય હોય છે એ કહ્યું. અને ‘જીવમહાની ‘એકતા નિશ્ચય કરીને જાણે’ યથી આત્મજ્ઞાનવિષે જેની સ્થિતિ હોય તે (બ્રહ્મનિષ્ઠ) આચાર્ય (ગુરુ) હોય છે; એ કહ્યું. જે વેદ મળ્યો હોય, અને જ્ઞાનવિષે જેની નિષ્ઠા ન હોય, તે આચાર્ય નથી. અને જ્ઞાનવિષે જેની નિષ્ઠા હોય, અને વેદ ન મળ્યો હોય, તે પણ પાંતે તો મુક્ત છે, પરંતુ ઉપદેશ કરવાને યોગ્ય આચાર્ય (તે) નથી, કેમકે, તેને જિજ્ઞાસુની શંકા મટાડવાની યુક્તિ આવડતી નથી. જેના ચિત્તવિષે શંકા ઉઠે નહિ, યવો ઉત્તમ સંસ્કારવાળો જે જિજ્ઞાસુ છે, તેને તો ઉપદેશ કરવાવિષે (પાછલ કહ્યા તેવા આચાર્ય) સમર્થ પણ છે, પરંતુ સર્વને ઉપદેશ કરવાને યોગ્ય નથી, યથી (યથાર્થ) આચાર્ય નહિ. કિંતુ અધીતવેદ હોય અને જ્ઞાનવિષે જેની નિષ્ઠા હોય, તે આચાર્ય કહેવાય છે. અને શિષ્યની યુદ્ધિમાં માન જે થાય છે તે પંચપ્રકારના ભેદ, તેને નાના (પ્રકારની) યુક્તિવતે દૂર કરવાવિષે સમર્થ હોય, (તે આચાર્ય કહેવાય છે.)

(પંચપ્રકારના ભેદ.)

૧. જીવ ઈશનો ભેદ; ૨. જીવોનો પરસ્પર ભેદ; ૩. જીવ

૬૫. પચ્ચભેદના જાડનની યુક્તિયો આ છે.—(૧) જીવઈશ્વરનો ભેદ કલ્પિત છે, અવિદ્યામાયારૂપ ઉપાધિકૃત હોવાથી, ઘટાકાશ મટાકાશ ભેદની પેઠે. (૨) જીવોનો પરસ્પર ભેદ કલ્પિત છે, સામાસ અન્ત.વરણરૂપ ઉપાધિકૃત હોવાથી, નાના ઘટાકાશનો ભેદની પેઠે. (૩) જીવ-જાડનો ભેદ કલ્પિત છે, સામાસ અન્ત.વરણ અને નિરામાસ નામરૂપમય ઉપાધિકૃત હોવાથી, સ્વમ્પ્રગત ચર અચર જીવ-જાડની પેઠે. (૪) ઈશ જાડનો ભેદ કલ્પિત છે, સામાસમાયા અને નામરૂપમય ઉપાધિકૃત હોવાથી, સાક્ષી અને સ્વમ્પ્રવચના ભેદની પેઠે. (૫) જાડ જાડનો (પરસ્પર) ભેદ કલ્પિત છે, નામરૂપમય ઉપાધિકૃત હોવાથી, રજુવિષે કલ્પિત સર્પદાડ ધારાદિકના ભેદની પેઠે. એ પંચપ્રકારના અનુમાન પચ્ચભેદના જાડનમાં યુક્તિયો છે. પં. પી. પુ.

जडनो भेद; ४. ईश जडनो भेद; ५. जड जडनो भेद. ए पंचप्रकारना भेद, तेनुं खंडन करे, (ते आचार्य). केमके, भेद भयनो हेतु छे. एथी भेदनुं निराकरण अवश्य कर्तव्य छे. भेदनुं निराकरण करीने, अद्वय अने अमल नाम अविद्यादिमलरहित जे ब्रह्म तेने देखाडे कहेतां आत्मरूपेकरीने साक्षात्कार करावे; अने सर्व संसारने मिथ्यारूप करीने उपदेश करे; ते अद्भुत उपदेश देवावाळो आचार्य कहेवाय छे. अने केवल पोते मुंडन करावीने, शिष्यनी शिखाने छेदन मात्र करवावाळो, अथवा अन्य कोई संप्रदायनां चिह्नमात्रेकरी अंकित करवावाळो, आचार्य नथी कहेवातो. ४.

इहो.

करे मोक्ष भवप्राहथी, दै असि निज उपदेश;

ते दैशिक बुधजन कहे, नहि कृतगैरिकवेश.

५.

(भावार्थ. संसाररूप मगरथी, निज उपदेशरूप तरवार आपीने जे छोडावे तेने बुद्धिमान् लोक, 'दैशिक' नाम गुरु कहे छे. कन्यो छे गेरूथी भगवां लूगडान्तो वेश जेणे तेने गुरु नथी कहेता.)

९६. इहो.

दैशिकना लक्षण कक्षां, श्रुति मुनिवच अनुसार;

ते लक्षण छे शिष्यनां, थाय जेथी अधिकार.

६.

टीका:—शास्त्रने अनुसार, दैशिक नाम गुरु तेनां लक्षण (पूर्व) कक्षां. अने जे साधनोप ग्रंथमां अधिकार थाय ते साधन शिष्यनां लक्षण छे. एनो आ अभिप्राय छे:—अधिकारीना लक्षण पूर्वं (प्रथम तरंगचिपे विवेकादि साधनचतुष्टय) कक्षां, ते ज लक्षण शिष्यनां जाणी छेवां. ६.

૧૭. અથ ગુરુમક્તિના ફલનું વર્ણન.

૬૦.

ઈશ્વરથી ગુરુમાં અધિક, ધારે ભક્તિ સુજાન;
પ્રવીણ પળ ગુરુમક્તિવિન, લહે ન આત્મજ્ઞાન. ૭.

ટીકા:-ગુરુમાં ઈશ્વરથી અધિક ભક્તિ કરે કેમકે, સર્વ શાસ્ત્રમાં પ્રવીણ પળ જે પુરુષ હોય, તે પળ ગુરુના ઉપદેશ-વિના જ્ઞાનને પ્રાપ્ત થાય નહિ. ૭.

પૂર્વે ડુહામાં જે વાર્તા કહી તે જ દૃષ્ટાન્તેકરી પ્રતિપાદન કરે છે.

૬૧.

ગુરુવિન વેદઉદ્ધિ લહે, લાગે લચણસમાન;
વાદલ ગુરુમુખદ્વાર થઈ, અધિક સુધાયી માન. ૮.

ટીકા:-વેદરૂપી જે 'ઉદ્ધિ' નામ સમુદ્ર છે, તે ગુરુ વિના લચણના સમાન સ્વારો છે. જેમ ક્ષારસમુદ્રમાં પેશીને તેના જલનું જે પાન કરે, તે કેવલ ક્ષારતાનો અનુભવ કરે છે; અને તેથી ક્લેશને પ્રાપ્ત થાય છે; તેમ ગુરુ વિના જે વેદના અર્થને વિચારે છે, તે ભેદરૂપ ક્ષારનો અનુભવ કરીને જન્મ-મરણરૂપ સ્વેદને પ્રાપ્ત થાય છે. ૫ કારણેકરી રામાનુજ અને મધ્વને આદિ લઈને જે નાના પુરુષ થયા છે, તેઓ વેદના અર્થનો વિચાર પણ કન્યો છે, પરંતુ ગુરુદ્વારા નહિ કન્યો પથી ભેદવિષે નિશ્ચય કરીને જન્મ-મરણરૂપી સ્વેદને જ પ્રાપ્ત થયા, મુક્તિરૂપ આનંદ તેઓને પ્રાપ્ત ન થયો. યદ્યપિ રામાનુજ આદિ (દ્વિતવાદી) જે થયા છે તેઓ પણ વેદ પોતપોતાના ગુરુથી જ મળીને વિચાર્યો છે, અને વિચારીને વ્યાખ્યાન કન્યું છે; તથાપિ જેઓની પાસેથી તેઓ વેદ મળ્યો, તે ગુરુ નહિ. કેમકે, 'જીવ-મ્હણની ઇકતાનો જે ઉપદેશ કરે

જડનો ભેદ; ૪. ઈશ જડનો ભેદ; ૫. જડ જડનો ભેદ. ૫ પંચપ્રકારના ભેદ, તેનું ખંડન કરે, (તે આચાર્ય). કેમકે, ભેદ મયનો હેતુ છે. યથી ભેદનું નિરાકરણ અવદ્ય કર્તવ્ય છે. ભેદનું નિરાકરણ કરીને, અદ્ય અને અમલ નામ અવિદ્યાદિમલરહિત જે બ્રહ્મ તેને દેલાડે કહેતાં આત્મરૂપેકરીને સાક્ષાત્કાર કરાવે; અને સર્વ સંસારને મિથ્યારૂપ કરીને ઉપદેશ કરે; તે અદ્ભુત ઉપદેશ દેવાવાળો આચાર્ય કહેવાય છે. અને કેવલ પોતે મુંડન કરાવીને, શિષ્યની શિલાને છેદન માત્ર કરવાવાળો, અથવા અન્ય કોઈ સંપ્રદાયનાં ચિહ્નમાત્રેકરી અંકિત કરવાવાળો, આચાર્ય નથી કહેવાતો. ૪.

૬૦.

કરે મોક્ષ મવપ્રાહથી, દૈ અસિ નિજ ઉપદેશ;

તે દૈશિક યુધજન કહે, નહિ કૃતગૈરિકવેશ.

૫.

(ભાવાર્થ. સંસારરૂપ મગરથી, નિજ ઉપદેશરૂપ તરવાર આપીને જે છોડાવે તેને બુદ્ધિમાનુલોક, 'દૈશિક' નામ ગુરુ કહે છે. કન્થો છે ગેરૂથી મગવાં ત્લૂગડાંનો વેશ જેને તેને ગુરુ નથી કહેતા.)

૯૬. ૬૦.

દૈશિકના લક્ષણ કહ્યાં, શ્રુતિ મુનિવચ અનુસાર;

તે લક્ષણ છે શિષ્યનાં, યાય જેથી અધિકાર.

૬.

ટીકા:—શાસ્ત્રને અનુસાર, દૈશિક નામ ગુરુ તેનાં લક્ષણ (પૂર્વે) કહ્યાં. અને જે સાધનોપ પ્રથમા અધિકાર યાય તે સાધન શિષ્યનાં લક્ષણ છે. યનો આ અભિપ્રાય છે:—અધિકારીના લક્ષણ પૂર્વે (પ્રથમ તરંગવિષે વિવેકાદિ સાધનચતુષ્ટય) કહ્યાં, તે જ લક્ષણ શિષ્યનાં જાણી લેયાં. ૬.

ટીકા:-'અહ' નામ અજ્ઞાની જે જન છે તે 'દત્તિપુટ' નામ મશક આદિ ચર્મપાત્ર અથવા ઘટ (સમાન છે), તે દ્વારા પ્રહ્ણ કન્યું જે મમુદ્રનું જલ તે (જેમ) ચિલક્ષણ સ્વાદનો હેતુ નથી, તેમ અજ્ઞાની પુરુષદ્વારા પ્રહ્ણ કરેલું જે વેદરૂપ સમુદ્રનું અર્થરૂપ જલ, તે ચિલક્ષણ આનંદનો હેતુ નથી; યથી અજ્ઞાની પાટક ચર્મ-પાત્ર અને ઘટ સમાન છે. અને 'સુદ' નામ સારા જ્ઞાની મેઘના સમાન છે, ય વાર્તા પૂર્વે પ્રતિપાદન કરી છે; યથી ચર્મપાત્ર અને ઘટના સમાન જે અજ્ઞાની પાટક છે, તેને ત્યાગીને, મેઘ-સમાન જે જ્ઞાની, તેનાથી જ વેદનો અર્થ મળે અથવા સાંભળે. ૯

૯૯. 'જ્ઞાનવાનની પાસે વેદ પઠે' ય કહેવાથી આ શંકા-થાય છે જે; વેદનો શ્રુતિ છે, તેદ્વારા જ જીવબ્રહ્મનું સ્વરૂપ વિચારવાથી જ્ઞાન થાય છે, અન્ય સંસ્કૃત પ્રંથોષ અને ભાષા-પ્રંથોષ જ્ઞાન થાય નહિ; યથી ભાષાપ્રંથનો આરંભ નિષ્ફલ થશે.

તે ના સ મા ધા ન નો

હો.

બ્રહ્મરૂપ છે બ્રહ્મવિત્, તેની વાણી વેદ;

ભાષા અથવા સંસ્કૃત, કરે વેદ-મ્રમ છેદ. ૧૦.

ટીકા:-'બ્ર હ્મ વે વ્તા જે પુ રુ પ છે તે બ્ર હ્મ રૂ પ છે,' ય વાર્તા શ્રુતિવિષે પ્રસિદ્ધ છે; યથી 'તેની વાણી વેદરૂપ છે. તે ભાષારૂપ થાય, અથવા સંસ્કૃતરૂપ હોય (પણ તે વાણી) સર્વથા મેદમ્રમનો ઉદ્દ કરે છે. અને કહે છે 'વેદનાં વચન વિના જ્ઞાન થાય નહિ,' તે-જેમ નથી. જેમ આગુવેદમાં કહ્યા જે રોગ અને તેઓનાં ત્રિદાન, અને ઔષધ, તે સંપૂર્ણનું અન્ય સંસ્કૃત પ્રંથોષકરી, અને ભાષા, કારણી પ્રંથોષકરી જ્ઞાન થઈ જાય છે, તેમ સર્વનો આત્મા જે બ્રહ્મ, તેનું જ્ઞાન પણ ભાષાદિક પ્રંથોષકરી થાય છે. યત્લા

‘તે ગુરુ હોય છે’ એ ગુરુલક્ષણના પ્રસંગમાં કહી આવ્યા અને તેઓ(રામાનુજાદિ)ના જે પાઠક થયા છે, તે જીવ બ્રહ્મનો ભેદ ઉપદેશ દેવાવાલા થયા છે, યથી તેમનાવિષે જે ગુરુ-શબ્દનો પ્રયોગ કરે છે તે અર્હતના સમાન કરે છે. જેમ અર્હતના શિષ્ય અર્હતને ગુરુ કહે છે, પરંતુ અર્હત ગુરુપદનો વિષય (અર્થ) નથી, તેમ ભેદવાદી પુરુષોના જે શિષ્ય છે, તે પોતાના પાઠકોને ગુરુ કહે છે, પરંતુ તે ગુરુ છે નહિ. યથી રામાનુજ થી આદિર્હને જે ભેદવાદી થયા છે, તેઓએ ગુરુદ્વારા વિચાર નથી કન્યો, એ કારણથી ભેદમાં અભિનિવેશ કરીને જન્મ મરણરૂપી ક્લેશને જ પ્રાપ્ત થયા. તેમ અન્ય પણ જે કોઈ, પૂર્વલક્ષણયુક્ત ગુરુ વિના, પોતે જ વેદના અર્થનો વિચાર કરે, અથવા ભેદવાદી પુરુષોથી ભળીને વિચારે, તેઓ પણ ભેદરૂપી ક્ષારનો અનુભવ કરીને જન્મ મરણરૂપ ક્લેશને જ અનુભવ કરે છે. એ દુહાના પૂર્વાર્ધનો અર્થ છે. અને ઘાદલરૂપ બ્રહ્મવિદ્ગુરુના મુખદ્વારા જે (પુરુષ) સાંભળીને વિચારે, તેને ઘેદ અમૃતથી પણ અધિક આનંદનો હેતુ થાય છે. જેમ સમુદ્રનું જલ સ્વરૂપ-થી સ્વાદ છે, અને ઘાદલદ્વારા મધુર થાય છે, તેમ વેદનો અર્થ બ્રહ્મજ્ઞાની ગુરુદ્વારા આનંદનો હેતુ છે. ૮

૧૮. પૂર્વ દુહામાં એ વાત્તા કહી જે.-‘ગુરુથી ભળ્યો જે ‘વેદનો અર્થ છે, તેના વિચારેકરી મુક્તિરૂપ ફલ પ્રાપ્ત થાય છે.’ તેથી ગુરુ જ્ઞાની હોય અથવા અજ્ઞાની હોય યથુ વિશેષ નથી કહ્યું તે હવે કહે છે. યદ્યપિ ‘જ્ઞાનહીન ગુરુ નહિ’ એ પૂર્વે કહી આવ્યા, તથાપિ પૂર્વે કહેલી વાત્તાને દૃષ્ટાન્તરતે પ્રતિ-પાદન કરે છે.

૩૬૦

દત્તિપુટઘટસમ અજ્ઞજન, મેઘસમાન જ મુગ;
પદે પદ એ હેતુથી, જ્ઞાનીથી, તજ્ઞિ અજ્ઞ.

ટીકા:-'બ્રહ્મ' નામ અજ્ઞાની જે જન છે તે 'દત્તિપુટ' નામ મશક આદિ ચર્મપાત્ર અથવા ઘટ (સમાન છે), તે ઠારા ગ્રહણ કન્યું જે સમુદ્રનું જલ તે (જેમ) વિલક્ષણ સ્વાદનો હેતુ નથી, તેમ અજ્ઞાની પુરુષદ્વારા ગ્રહણ કરેલું જે વેદરૂપ સમુદ્રનું અર્થરૂપ જલ, તે વિલક્ષણ આનંદનો હેતુ નથી; યથી અજ્ઞાની પાટક ચર્મ-પાત્ર અને ઘટ સમાન છે. અને 'સુહ' નામ સારા જ્ઞાની મેઘના સમાન છે, એ વાત્તાં પૂર્વે પ્રતિપાદન કરી છે; યથી ચર્મપાત્ર અને ઘટના સમાન જે અજ્ઞાની પાટક છે, તેને ત્યાગીને, મેઘ-સમાન જે જ્ઞાની, તેનાથી જ વેદનો અર્થ મળે અથવા સાંભળે. ૯

૧૧. 'જ્ઞાનવાનની પાસે વેદ પઠે' એ કહેવાથી આ શંકા-થાય છે જે; વેદની શ્રુતિ છે, તેદ્વારા જ જીવવ્રહ્મનું સ્વરૂપ વિચારવાથી જ્ઞાન થાય છે, અન્ય સંસ્કૃત ગ્રંથોએ અને ભાષા-ગ્રંથોએ જ્ઞાન થાય નહિ; યથી ભાષાગ્રંથનો આરંભ નિષ્ફલ થશે.

તે ના સ મા ધા ન નો

હો.

વ્રહ્મરૂપ છે વ્રહ્મવિત્, તેની વાણી વેદ;

ભાષા અથવા સંસ્કૃત, કરે વેદ-ભ્રમ છેદ.

૧૦.

ટીકા:-'બ્રહ્મ વેત્તા જે પુરુષ છે તે વ્રહ્મરૂપ છે,' એ વાત્તાં શ્રુતિધિપે પ્રસિદ્ધ છે; યથી 'તેની વાણી વેદરૂપ છે. તે ભાષારૂપ હોય, અથવા સંસ્કૃતરૂપ હોય (પણ તે વાણી) સર્વથા ભેદભ્રમનો છેદ કરે છે. અને કહે છે 'વેદનાં વચન વિના જ્ઞાન થાય નહિ,' તે-નિયમ નથી. જેમ આયુર્વેદમાં કહ્યા જે રોગ અને તેઓનાં નિદાન, અને ઔષધ, તે સંપૂર્ણનું અન્ય સંસ્કૃત ગ્રંથોએકરી, અને ભાષા, ફારસી ગ્રંથોએકરી જ્ઞાન થઈ જાય છે, તેમ સર્વનો આત્મા જે વ્રહ્મ, તેનું જ્ઞાન પણ ભાષાદિક ગ્રંથોએકરી થાય છે. પટલા

સારુ સર્વજ્ઞ જે ઋષિ અને મુનિ થયા છે, તેઓએ સ્મૃતિ અને પુરાણ અને ઇતિહાસગ્રંથોમાં બ્રહ્મવિદ્યાનાં પ્રકરણ કહ્યાં છે. જો વેદ વિના જ્ઞાન ન થાય તો, તે સંપૂર્ણ પ્રકરણ નિષ્ફલ થઈ જશે. યથી આત્માના સ્વરૂપનું પ્રતિપાદક જે વાક્ય છે, તેવતે જ્ઞાન થાય છે; તે (વાક્ય) વેદનું હોય અથવા અન્ય હોય. યથી ભાષાગ્રંથેકરી પણ જ્ઞાન થાય છે, એ વાર્તા સિદ્ધા થઈ. ૧૦.

૧૦૦. દુહો.

વાણી જેની વેદ સમ, કરિયે તેની સેવ;

સેવાથી થાય પ્રસન્ન, જણવી દે નિજભેવ.

૧૧.

ટીકા:—જે, બ્રહ્મવેદાની 'વાણી' નામ વચન વેદના સમાન છે, તે બ્રહ્મવેદા આચાર્યની સેવા જિજ્ઞાસુ કરે. કેમકે સેવાથી જ્યારે આચાર્ય પ્રસન્ન થાય, ત્યારે 'નિજભેવ' નામ પોતાનું સ્વરૂપ જાણે. એ કહેવાથી આ વાર્તા જણાવી:—આચાર્યની જે સેવા છે, તે ઈશ્વરની સેવાથી પણ અધિક છે, કેમકે, ઈશ્વરની જે સેવા છે, તે તો અદૃષ્ટફલનો હેતુ છે, અને આચાર્યની સેવા છે તે અદૃષ્ટફલ અને દૃષ્ટફલ વંનેનો હેતુ છે. [જે વસ્તુ ધર્મઅધર્મની ઉત્પત્તિદ્વારા ફલનો હેતુ હોય તે અદૃષ્ટફલનો હેતુ કહેવાય છે; અને જે વસ્તુ ધર્મઅધર્મની ઉત્પત્તિ વિના સાક્ષાત્ ફલનો હેતુ હોય તે દૃષ્ટફલનો હેતુ કહેવાય છે.] ઈશ્વરની જે સેવા છે તે ધર્મની ઉત્પત્તિદ્વારા અંતઃકરણની શુદ્ધિરૂપ ફલનો હેતુ છે, યથી ઈશ્વરની સેવા અદૃષ્ટફલનો હેતુ છે. અને આચાર્યની સેવા ધર્મની અપેક્ષા વિના આચાર્યની પ્રસન્નતાપ કરીને ઉપદેશરૂપ ફલનો હેતુ છે, યથી દૃષ્ટ(પ્રત્યક્ષ, ફલનો હેતુ છે; અને ધર્મની ઉત્પત્તિદ્વારા અંતઃકરણની શુદ્ધિરૂપ ફલનો હેતુ છે, યથી અદૃષ્ટફલનો પણ હેતુ છે. એ રીતિપ આચાર્યની સેવા ઈશ્વરની સેવાથી પણ ઉત્તમ છે. યથી જિજ્ઞાસુ સર્વ પ્રકારે બ્રહ્મવેદા આચાર્યની સેવા કરે. ૧૧.

१०१. अथ आचार्यसेवाप्रकार.

सोरठो.

थाय जिहां गुहसंग, करे प्रणाम ज दंडवत् ;

धारे उत्तम अंग, पावन पादसरोजरज.

१२.

टीका:—ज्यारे गुह प्राप्त थाय त्यारे दंडनी पेटे सांष्टांग प्रणाम करे; अने 'पावन' नाम पवित्र जे छे पादरूप 'सरोज' नाम कमल तेनी 'रज' नाम धूलि तेने 'उत्तम अंग' नाम मस्तक (ते उपर) धारे. १२.

चोपाई.

गुरु समीप चळी कराय वास, जो छे अति उत्कट जिज्ञासा,
तन मन धन वच अर्पि दे ए, हृदयबंधछेदन चाहे जे. १३.
अर्थ स्पष्ट. १३.

१०२. अथ तनअर्पणप्रकार.

(अर्थ चोपाई) तनुएकरी सेवा विस्तारे,

गुरुनी आज्ञा कदा न वारे.

१०३. अथ मनअर्पणप्रकार.

मनमां प्रेम रामसम राखे, थाय प्रसन्न एम अभिलाखे. १४
दोषदृष्टि स्वप्ने नहि आणे, हंरि, हर, अज, गंगा, रवि, जाणे,
गुरुमूर्तिनुं हृदये ध्यान ज धारे जो इच्छे कल्याण ज. १५.

६६. वे पग, वे ढीचण, वे हाथ, छाती, अने शिर, दृष्टि, वाणी, अने मन, ए
रीते आठ अंगसहित गुरुना जागळ नमशुं.

जानुभ्याश्च तथा पद्भ्यां पाणिभ्यामुरसा धिया ।

शिरसा वचसा दृष्ट्या प्रणामोष्ठाङ्ग ईरितः ॥

६७. ए नामकपनमां आ रहस्य छे:—गुरु शिष्यउपर ज्यारे वत्सलता करे त्यारे तेने हरि (विष्णु) रूप जाणे, ज्यारे क्रोध करे त्यारे तेने हर (शिव) रूप जाणे; ज्यारे राजसी व्यवहारविषे होय त्यारे तेने अज (ब्रह्मा) रूप जाणे; ज्यारे शान्तिविषे होय त्यारे शीगादेवीरूप जाणे; अने गुरु ज्यारे वचनरूप किरणोप शिष्यना भ्रम-संदेहसहित अज्ञानने दूर करे त्यारे तेने रवि (सूर्य) रूप जाणे; एम ब्रह्मवेत्ता गुरु विषे सर्वदा ईश्वरभाव शिष्य राखे, स्वप्नमां पण दोषदृष्टि लावे नहि. पं. पी. पु.

૧૦૪. અથ ધનઅર્પણપ્રકાર

ચોવાઈ.

પત્ની, પુત્ર, ભૂમિ, પશુ, દાસી, દાસ, દ્રવ્ય, ગ્રહ, વ્રીહિ વિનાશી;
'ધન'પદ ય સર્વને જ માલે, ગુરુ શરણે થઈ તે દુર નાલે. ૧૬.
સોરઠો

ધનઅર્પણનો ભેદ, એક કહ્યો, વીજો શુણો,
હોય ગૃહી ગુરુદેવ યાજ્ઞવલ્ક્ય સમ ત્યાહિ દે. ૧૭

ટીકા—પત્નીથી આદિલઈને તે 'વ્રીહિ' નામ ધાન્યપર્યંત
સર્વ 'ધન' કહેવાય છે, (જે નાશવાન છે) તે સર્વને ત્યજીને,
ત્યાગી જે ગુરુ હોય તેને શરણે થાય. ય ધનઅર્પણ કહેવાય
છે. કેમકે, ગુરુ ત્યાગી છે, તે પોતે અગીકાર કરે નહિ. પરંતુ
તે ગુરુની પ્રાપ્તિસાર ધનનો ત્યાગ કન્યો છે યથી યવા
જે ત્યાગ છે તે યજ, ગુરુને જ અર્પણ કહેવાય છે.

અને જો ગુરુ ગૃહસ્થ હોય તો તેમને સમગ્ર ચઢાવી દે ય વીજા
પ્રકારનુ ધનઅર્પણ કહેવાય છે

એમા કોઈ શકા કરે છે જે, બ્રહ્મવિદ્યાના આચાર્ય, ગૃહસ્થ
નથી હતા; તે શકા થને નહિ. કેમકે, યાજ્ઞવલ્ક્ય અને
ઉદ્દાલકથી આદિ લઈને બ્રહ્મવિદ્યાના આચાર્ય ગૃહસ્થ જ વેદવિપે
બહુ સામલ્લવામાં આવે છે, યથી ગૃહસ્થ યજ આચાર્ય સમવે છે

૧૦૫. અથ ઘાણીઅર્પણવિપે.

૪૬

માલે ગુણગણ ગુરુના, ઘાણી શુદ્ધ,
દાય ન કદા અર્પણ કરે પ્રયુદ્ધ ૧૮

૧૦૬. શિષ્યનો ગુરુના સંબંધમાં વ્યવહાર.

સોરઠો

જો ઇચ્છે કલ્યાણ, તન મન ધન ઘચ એમ દે,
ઘસે થદુ ગુરુસ્થાન, મિશ્યાથી જીવન કરે. ૧૯.

ટીકા:—જે પુરુષ પોતાનું કલ્યાણ ઇચ્છે તે પૂર્વ રીતિપ તનુ (શરીર) આદિ અર્પણ કરીને, ગુરુ જ્યાં હોય તે સ્થાનવિષે ઘા (ગુરુના) સમીપમાં વહુ કાલ પોતે વાસ કરે. અને પોતે મિહંસાથી 'જીવન' નામ પ્રાણ ધારણ કરે. ૧૯.

૧૦૭. ચોપાઈ.

તે મિહંસા ધરી દૈશિક આગે. વહી નિજ ભોજનને નહિ માગે, જો ગુરુ દે તો જાઠર ધરે, નહિ, થીજે દિન વૃત્તિ સ્મરે. ૨૦.

ટીકા:—જે મિહંસાનું અન્ન શિષ્ય લાવે તે પોતે જ ભોજન ન કરી લે, કિન્તુ દૈશિક જે ગુરુ છે તેના આગળ ધરી દે. અને ગુરુના આગળ મિહંસા ધરીને પોતાના ભોજનને ગુરુથી માગે નહિ. અને ઇક દિનમાં વીજી વાર ગ્રામમાં ષણ મિહંસા માગે નહિ. કિન્તુ ગુરુ જો કૃપા કરી દે તો ભોજન કરે અને ગુરુ જો શિષ્યની શ્રદ્ધાની પરીક્ષાના નિમિત્ત ન દે તો થીજે દિને 'વૃત્તિ' જે મિહંસા તેને સંભારે. ૨૦.

૩૩.

વહી ગુરુના આગળ ધરે, મિહંસા શિષ્ય સુજાણ;
ન નિવેદ જીવમાં કરે, જો ઇચ્છે કલ્યાણ. ૨૧.

ટીકા:—'નિવેદ' નામ મ્લાનિ(લેદ)નું છે. અન્ય અર્થ સ્પષ્ટ છે.

૧૦૮. ચોપાઈ.

ઇમ કરતાં જ્યાં અવસર પેણે, મુખપ્રસન્ન ગુરુ સન્મુખ લેણે.
ઘે કર જોડી વિનતિ કરે, ગુરુ આશ્ચર્ય પ્રશ્ન ઉચ્ચરે. ૨૨.

ટીકા—૫ રીતિનો વ્યવહાર કરતાં જ્યારે ગુરુનો અવ-કાશ દેખે, અને પ્રસન્નમુખથી ગુરુ જ્યારે પોતાના સન્મુખ જુવે, ત્યારે હસ્ત જોડીને ગુરુની સ્તુતિ કરે. અને વિનતિ કરે,—

૧ ૫ રીતિ બ્રહ્મચારી વા ત્યાગી શિષ્યની છે, ગૃહસ્થની નથી.

‘હે ભગવન્ ! હું પૂછવા ઇચ્છુ છું.’ ત્યારે ગુરુ આજ્ઞા કરે તો પ્રશ્ન કર.

અને કદાચિત્ જન્માન્તરનાં ઉત્તમ કર્મથી ગુરુ કૃપા કરીને, તનુઅર્પણ આદિ સેવા વિના જ શિષ્યને ઉપદેશ કરી દે, તો વિશુદ્ધ અધિકારીનું કલ્યાણ થઈ જાય છે. કેમકે, ગુરુ-સેવાનાં વે ફલ છે.—પ્રક તો ગુરુની પ્રસન્નતા અને વીજું અંતઃ-કરણની શુદ્ધિ, તે ઘેણ તેને સિદ્ધ હોય છે. ૨૨.

દુહો.

તનુ મન ધન વચ અર્પિને, ચિત દઈ જે સેવાય,

સકલરૂપ તે આપ છે, દાદુ સદા સહાય. ૨૩.

॥ इति श्रीविचारसागरे गुरुशिष्यलक्षण-गुरुभक्तिफलप्रकार-
निरूपणं नाम तृतीयस्तरंगः समाप्तः ३.



अथ श्रीविचारसागरस्य

चतुर्थतरंगप्रारंभः.

अथ उत्तमाधिकारी-उपदेशनिरूपणम्
(शुभसंतति नामे राजा तथा तेना त्रिपुत्रनी गाथा.)

१०९. दुहा.

गुरु-शिष्य-संवादनी, गार्थी कहुं नवीन,

जे पेखी जिज्ञासु जन, थाय विचारप्रवीण.

२.

६८. वेदान्तज्ञानना अधिकारीतुं लक्षण आ छे:-जेणे आ जन्ममा वा जन्मान्तरमा विधियत् अधीत वेद-वेदाङ्गत्वेऽपि आपाततः (यथार्थरहस्य जाण्या विना) अखिल वेदना अर्थने जाण्या छे, काम्य-निषद्(कर्म) वर्जनपुर सर (शुद्धिनी शुद्धि छे परम प्रयोजन जेनुं एवां) नित्य नैमित्तिक प्रायश्चित्त (कर्म) अने (चित्तैकाग्र्य छे प्रयोजन जेनुं एवी) उपासना एओना अनुष्ठानेऽपि निखिल कल्मषता (मलिनता-पाप) गयेली तेणेऽपि नितान्त (अत्यंत) निर्मल स्वान्त (अन्तःकरण) छे जेनुं एवो साधनचतुष्टयसम्पन्न प्रमाता (अन्तःकरणप्रतिबिम्बित चैतन्य) ते 'अधिकारी.'

उत्तम-मध्यम-अधम भेदेऽपि अधिकारी त्रिविध होय छे:-

'उत्तम अधिकारी' विशुद्धसत्त्वसमाहितचेता होय छे. तेने वेदान्तश्रवणमात्र ए ज ज्ञाननो उपाय (साधन) छे. अने विधानेऽपि विहितसर्वकर्मत्यागपूर्वक निराकारब्रह्मज्ञानमा तेनो अधिकार छे.

'मध्यम अधिकारी' विवेकवैराग्यसंपन्न पण रजोगुणना लेशनी अवृत्तिःऽपि विक्षिप्तचेता होय छे. ते सहसा ज चित्तना एकाग्रचने पामे नहि. तेने अष्टांग योग ए ज्ञाननु साधन छे. अने विहितवर्णाश्रमादिकर्मकरणपूर्वक सोपाधिक ब्रह्मोपासनमा तेनो अधिकार छे.

'अधम अधिकारी' प्रबलतर-दुरितप्रतियद्-चित्तवान्, औत्सुक्यमात्रेऽपि प्रवृत्त, पण जेनी जिज्ञासा अप्रतिष्ठिता होय छे, तेने जिज्ञासानी प्रतिश्राभर्थे वर्णाश्रमधर्म, अने तेणेऽपि विशुद्ध शयेलाने दानधर्मादिक, ज्ञाननिमित्त उपाय छे. (तेणेऽपि ज्ञानप्रतिबंधक मित्या तर्कानु शमन भई ज्ञानाधिकार प्राप्त थाय छे.) अने वर्णाश्रमविहितकर्मविधानपूर्वक साकारब्रह्मोपासनमा तेनो अधिकार छे. एप्रमाणे सूतसंहिताना ज्ञानयोगखण्डगत द्वितीय अध्यायनी टीकामा विद्यारण्य-मुनिः कथ्यु छे त्यांथी अने अन्यस्थलथी अत्र संगृहीत छे.

आ विचारसागरमा तद्वदष्टि उत्तमअधिकारी छे, अदष्टि मध्यमअधिकारी छे, अने तर्कदष्टि अधमअधिकारी छे.

६९. पुराणादि प्राचीन ग्रंथमा कथेली नही एवी, गुरुशिष्यना संवादनी, बोधनी सुगमतासारु, स्वशुद्धिकल्पित नवीन कथा.

त्रिसहोदर* संतान शुभ, चक्रवर्तिना बाल;
शुभसंतति पितुने नमे, स्वर्ग-पृथिव-पाताल. २.

त्रणे बालकनां नाम.

एक तत्त्वदृष्टि, बीजो तेनुं नाम अदृष्टि,
तर्कदृष्टि पलीं ते बीजो, उत्तम मध्य कनिष्ठ. ३.

चोपाई.

बालकाल सहु खेले खोयो, तत्रण पामो पळीं मदन घगोव्यो;
धारि नारो गृह मारप्रकाशी, भोग लीधा त्रिणे सुखराशी. ४.

११०. दुहा.

स्वर्ग भूमि पातालना, भोगवी सर्व सुसमाज;
शुभसंतति निज तेजबल, करे राजनां काज. ५.

एक समय ते तातने, उपज्यो हृदे विचार;
आत्मा सुखरूप आज, तेथी भिन्न असार. ६.

ए कारण तर्जी राज आ, जाणुं आत्मसुरूप;
स्वर्ग-भूमि-पातालना, त्रिपुत्रने करी भूप. ७.

शुभसंतति(राजा)ए एवो विचार कन्यो. पळी मंत्रीने
संज्ञा करीने पोताना त्रणे प्रवीण पुत्रोने एकान्त देशमां
(पोतानी) समीप बोलाव्या; अने पोताना विरागनां वचन
संभळाव्यां. (८). घळी कहुं के:-आ राज्यने तमे संभाळो. एक
पाताल प्रति अने एक स्वर्ग प्रति सिधावो; अने भूमि(पृथिवी)नो
स्वामी थई एक काशीमां घसो-ज्यां अंतर्यामी शिव
रहे छे, (९.) अने ज्यां मरती वेला शिवनो उपदेश सांभ-

* एक उदरना-एक माताना. † शुभानीने.

‡ काम. § भोगनी सामग्री. ¶ जेने जन्म नथी एवो

ळीने अनाथासे ते शिवना लोकमां प्रवेशे छे, अने ज्यां उत्तर-
वाहिनी गंगानुं अंग जाणे कीर्ति प्रकाशती होय तेम, अधिक
प्रकाशे छे. (१०). तमे त्रणे ए रीतिए मित्र राज करो अने
पोतपोताना देशने पाळो. विभाग विना भूमिस्तार भ्राताओनां
क्लेश थाय छे, (माटे हुं तमने वहेंची आपुं छुं.) (११). अवे हुं
ते सर्व राजसमाजने असार अने दुःखरूप हृदयमां जाणीने
त्यजुं छुं. बीजा लोको तो पोताना दुःखयी दुःखी छे, पण में
(राजाए) तो सर्व जगत्नो अपार क्लेश भोगव्यो छे. जे भगवान्-
(ऐश्वर्यवान्)मां प्रधान सते अज्ञानी छे ते सर्वजन दरिद्री-
ओना समान छे. (अर्थात् अन्तरमां दुःखी छे). एवां कारणोने
हृदयमां विचारीने जगत्ना भगने (ऐश्वर्योनि) त्यागीने सुखाला
निजरूपने जाणुं. (१२).

१११. एम अनेक चाक्यो (शुभसंतति) पिताए कक्षां.
तेओने सुखुद्धिना निधान त्रणे भ्राताए सांभळ्यां अने एकान्त
वेशी अपार विचारीने पछी ते सुजाण (भ्राता) पोतपोतामां
कहे छे के, - 'आ दुःखनुं मूल (राज) समाज आपणने दर्शने (राजा)
'पोते ब्रह्मसमान थया इच्छे छे. (पण) चतुर अने बुद्धिना
'सागर ते जन छे, जे दुःखनो आकर जे जगत् तेने त्यजे.' (१३).

१२ 'एथी दुःखनुं मूल आ राज्य त्यजीने पोतानुं
'कार्य करो.' एम विचार करीने भ्राताओनो समाज गृहथी
नीरुळ्यो. (१४). हृदयमां मोक्षनी कामना धारीने त्रणे जण सद्
गुहने खोळता चाल्या; अने तातनुं (पितानुं) 'शुभसंतति' ए
नाम अर्थसहित कर्नुं. (अर्थात् पोते सारा थया तेथी शुभ
(सारी) छे संतति (प्रजा) जेनी एवा अर्थवाळुं पितानुं नाम ज
'शुभसंतति' हतुं ते खरेखरा अर्थसहित कर्नुं.) (१५).

बहु देशमां खोळतां खोळतां गंगातीरे (तेओ आव्या त्यां)

પ્રકાન્તમાં, પલ્લવશાખાપ્કરી સઘન તરુનું વૈન હતું, તેમાં (૧૬) વટવૃક્ષની શાખા તલે ભદ્રામુદ્રા ધારીને ત્રિગુણને ત્યાગીને

૭૦. નવાં પત્રયુક્ત શારદાઓપ્કરી વિસ્તારવાળાં વૃક્ષોનું 'ધન' નામ વૃક્ષ-સમુદાયવાલું અરણ્ય.

૭૧. એ વિચાર દક્ષિણામૂર્તિનો પ્રસંગ મનમાં ધારીને ગ્રંથકારે લખેલો છે. એની આખ્યાયિકા આવી છે:—

સનકાદિક મુનિઓ જ્ઞાનાર્થે, અનુક્રમે, બ્રહ્મા, વિષ્ણુ, શિવના સમીપ ગયા, પરંતુ તેમને પ્રવૃત્તિમાનુ જોઈં યથેચ્છ શ્રદ્ધાનો અભાવ રહ્યો. સનકાદિક યોગ્ય અધિકારી હતા તેથી તેમના કલ્યાણાર્થે દક્ષિણામૂર્તિરૂપ દર્શન તેમને થયું.

'દક્ષિણા' નામ દક્ષિણદિશામિમુક્તા છે, વા અનુકૂલા છે, 'મૂર્તિ' નામ પ્રતિમા જેની, પદ્માસને વેઠેલા; (દ્વિમુજની માત્રના હોય તો) વામહસ્તમા પુસ્તક; કને દક્ષિણ હસ્તમાં અંગુષ્ઠ અને તર્જનીનો સંયોગ કરી, મધ્યમાદિ ત્રિઅંગુલિકા મિત્ર રાખતાં ચર્તી ભદ્રામુદ્રા, તેને ધારણ કરી સ્વરૂપાવસ્થાનમાં સ્થિત; (અને ચતુર્મુજની માવના હોય તો) તૃતીય હસ્તમાં જપમાલા; અને ચતુર્થ હસ્તમાં અમૃતકલશ, વા અમયદાન છે જેના એવા શાન્ત સદાશિવ મહાદેવ. એ સંજ્ઞાનો ભાવાર્થ આ છે:—પુસ્તક એમ સૂચવે છે કે,—અધિકારીએ અધ્યયન, શ્રવણ, મનન, નિદિશ્વાસન કરવું. ભદ્રામુદ્રા—જે પૂર્ણમુદ્રા, જ્ઞાનમુદ્રા, તર્કમુદ્રા, લોપામુદ્રા, વા મૌનવ્યાખ્યાન પણ કહેવાય છે,—તે એમ સૂચવે છે કે,—પરમાત્મા અને જી. વાત્મા એક છે અને ત્રિગુણાત્મ-માયા અધ્યસ્ત અને મિત્ર છે. જપમાલા એમ સૂચવે છે કે,—આત્મચિન્તન વારંવાર કરવું. અમૃતકલશ વા અમયદાન એમ સૂચવે છે કે,—સચ્ચિદાનન્દસાક્ષાત્કારે કરી અમૃતરૂપ અમયની પ્રાપ્તિ.

એવા દક્ષિણામૂર્તિ યુવા ગુરુનાં સનકાદિક શૃદ્ધ શિષ્યોને દર્શન થતાં જ યોગ્ય કષિત્કારી હોવાથી માત્ર મૌન વ્યાખ્યાનથી જ સંશય ઠિલ થઈ જઈં સર્વાપહ્લવ-સિદ્ધ—નિષ્પ્રતિયોગિક—નિત્યપ્રાપ્ત—બ્રહ્મની પ્રાપ્તિ થઈ તે શિષ્યો કૃતકૃત્ય થયા

ચિત્રં ઘટતરોમૂલે વૃદ્ધાઃ શિષ્યા ગુરુયુવા ।

ગુરોસ્તુ મૌનવ્યાખ્યાનં શિષ્યાસ્તુ હિન્નસંશયાઃ ॥

મગરાનુ શરરાચાર્યપ્રણીત 'દક્ષિણામૂર્તિ' સ્તોત્ર છે, તે ઉપર વાર્તિકકાર સુરેશ્વરચાર્યનો 'માનસોજ્ઞાસ' નામે વાર્તિકપ્રબંધ છે. તે ઉપર ગમતીયંની 'માનસોજ્ઞાસવૃત્તાન્તવિલાસ' નામે વ્યાખ્યા છે. તેના આરંભમાં દક્ષિણામૂર્તિધ્યાનનો આ શ્લોક છે:—

પ્રોઘચ્છાત્સમહાઘટદ્દુમતલે યોગામનસ્થં પ્રમું

પ્રત્યક્તત્વયુમ્ત્સુમિઃ પ્રતિદિશં પ્રોઘ્વીશ્યમાણાનનં ।

જીવ ગ્રહણની પરુતાને ઉપદેશતા ઇક સંત વેદા હતા. (૧૭). ત્યાં દોષરહિત ઇકાગ્રચિત્તયાત્રો પરિવારરૂપ શિષ્યસંઘ દેશિકુના ઉપદેશને જાણીને હૃદયમાં ચારે પાસ વિચાર કરે છે. (૧૮). જાણે કૈલાસમાં સનકાદિકુને શંભુ (મહાદેવ) ઉપદેશ કરે છે તે(સંત)ને દેવી તેને શરણ (સ્થક) જાણી પ્રયત્ન દંડવત્ પ્રણામ કરી (૧૯), પછી શિષ્યરીતિને અનુસાર છ માસ સુધી ત્યાં યાસ કન્યો, અને હૃદયમાં મોક્ષની કામના ધરીને તેમણે પ્રણે ગુરુની અધિક સેવા કરી. (૨૦). ત્યારે શ્રીગુરુપ પ્રસન્ન થઈને સૃદુવાણીવહે તેઓ પૂછાયા કે:-હિ તાત ! તમે પ્રણે શા કારણથી અહિયાં વસો છો અને (પરસ્પર) કોણ છો, અને કોના (પુત્ર) છો (૨૧). ત્યારે પોતાના અનુજની સંજાને હૃદયમાં સમજી તત્ત્વદષ્ટિ, ઉભય કર જોડીને, પોતાના અભિપ્રાયનાં વચન કહે છે. (૨૨).

મુદ્રાં તર્કમયીં દધાનમમલં કર્પૂરગૌરં શિવં

હૃદયન્તઃ કલયે સ્ફુરન્તમનિશં શ્રીદક્ષિણામૂર્તિઃ ॥

અર્થ:-વિસ્તૃતશાલાવાલા મહાવટ(વઢ)ના વૃક્ષતલે યોગાસને વિરાજેલા, જેઓનુ મુલ, પ્રત્યક્તત્ત્વ(અન્તરઆત્મા)ને જાણવા ઇચ્છતા(મુમુક્ષુઓ)ઇકરી સર્વ દિશામાં ઉચ દષ્ટિય જોયાય છે, જેઓઇ તર્કમયી મુદ્રાને ધારણ કરી છે, અને જેઓ સર્વદા સ્ફુરી (પ્રકાશી) રહ્યા છે, ઇવા કર્પૂરગૌર, અમલ, શોભાયમાન પ્રમુ દક્ષિણામૂર્તિ શિવને હું હૃદયમધ્યે ધારણ કરું છું જાણું છું.

વટવિટપસમીપે ભૂમિમાગે નિવર્ણં

સકલમુનિજનાના જ્ઞાનદાતારમારાત્ ।

ત્રિભુવનગુરૂપં દક્ષિણામૂર્તિદેવં

જનનમરણદુઃસ્રષ્ટેદ્દક્ષં નમામિ ॥

ઇવા અનેક શ્લોકો દક્ષિણામૂર્તિમહાદેવના ધ્યાનાર્થે પ્રચલિત છે.

૭૨. વિપયમોગોની અધિકતાથી દશ દોષ કહ્યા છે. ચોરી, વ્યમિચાર, દિસા ઇ વ્રણ શરીરના દોષ છે, નિદા, અવૃત, કઠોરતા અને યાચાલતા ઇ ચાર યાણીના દોષ છે, તૃણા, ચિન્તા, ઘુદ્ધિર્મદતા, ઇ ત્રણ મનના દોષ છે. ઇ દશ દોષોથી રહિત.

તત્ત્વદષ્ટિરૂવાચ.

હૃદો.

ભગવન્ ! વ્રણ ભ્રાતા અમે, શુભસંતતિસંતાન;
મર્મ જાણવા ઇચ્છિયે, દીન, નવીન, અજાણ. ૨૩.
જો આજ્ઞા મહારાજની, થઈયે પૂંછી પ્રવીણ;
આપ દયાનિધિ કલ્પતરુ, અમ અતિ દુઃખિત અધીન. ૨૪.

શ્રીગુરુરૂવાચ.

સોરઠો.

જે પૂછો તમ તે જ, શિષ્ય શુણો મમ વાત કહું;
પામો કુશલ મને જ, સંશય કોઈ નહિ રહે. ૨૫.

હૃદો.

ગુરુની દેહી દયાલુતા, થયું શિષ્યચિત્તે ચેન,
કાર્ય સિદ્ધ નિજ માની મન, ભાલ્લે સવિનય વેણ. ૨૬.

૧૧૪. તત્ત્વદષ્ટિરૂવાચ.

ઘોષાઈ.

ઓ ભગવન્ ! તમ કૃપાનિધાન, છો સર્વજ્ઞ મહેશ સમાન,
કંઈ ન જાણિયે, અમ અજાણમતિ, માનિયે મય જન્માદિ સંસ્કૃતિ. ૨૭.
કર્મ-ઉપાસન ભારે કીધાં અન્ય અધિક જગપાશો લીધા;
આપ ઉપાય કહો ગુરુ દેવ જ, જેથી થાય મવદુઃખનો છેદ જ. ૨૮.
પુનઃ ઇચ્છિયે પરમાનંદ, તેનો ઉપાય કહો સ્વહંદ.
તાત ! કૃપા કરી કહેશો જ્યારે, થશં કુશલતા અમને ત્યારે. ૨૯.

ટીકા:—હે ભગવન્ ! આપ કૃપાનિધાન છો, અને સદા-
શિવના સમાન આપ સર્વજ્ઞ છો. અને હે ભગવન્ ! જન્મમરણ-
થી આદિ લઈને જે દુઃખરૂપ સંસાર છે, તેથી અમે ડુન્યા
છિયે; તેની નિવૃત્તિનો ઉપાય આપ કહો; અને પરમાનંદની
પ્રાપ્તિનો ઉપાય કહો. અને હે ગુરો ! (પૂર્વે સકામ) ઉપાસના

અને કર્મનાં અનન્ત અનુપ્રાન પણ કન્યાં, પરંતુ તેમનાથી અમને વાઙ્મિત (માંશ્કરૂપ) ફલ પ્રાપ્ત થયું નહિ; અને તેમનાથી ઉલટો સંસાર યઘતો ગયો. યથી અન્ય ઉપાય આપ થતાવો; જે કરીને અમે હૈંતાર્થ થર્યે. ૨૯.

ત્રંથકારવચન.

૧૧૫ ડહો.

શિષ્ય મોશ્કકામી લડી, તેનું સાધન જ્ઞાન;

વેદુક્ત સદ્ગુરુ કહે, જીવ વ્રહ્મભિદ્ માન. ૩૦

ટીકા:-દુ:ખની નિવૃત્તિ અને પરમાનંદની પ્રાપ્તિને 'મોશ્ક' કહે છે; તેની કામના શિષ્યના હૃદયમાં દેખીને, તેનું સાધન જે વેદોક્ત જ્ઞાન છે, તે (ગુરુ) કહેતા હવા. યધપિ જ્ઞાનનું સ્વરૂપ અનેક શાસ્ત્રવિષે મિષ્ન મિષ્ન વર્ણન્ કન્યું છે, તથાપિ જીવવ્રહ્મનો 'ભિદ્' નામ ભેદ, તેને દૂર કરવાવાહું જે જ્ઞાન છે, તે જ વેદમાં મોશ્કનું સાધન કહ્યું છે, યથી તે (જ્ઞાનને) જ કહે છે.-

શ્રીગુરુવાચ.

ડહો.

પરમાનંદ મિલાપ તું, જે શિષ્ય વહે સુજ્ઞાન;

જન્માદિક દુ:ખનાશ વહી, આન્તિજન્ય તે માન. ૩૧.

પરમાનંદ સ્વરૂપ તું, નહિ તુંમાં દુ:ખ લેશ,

અજ અવિનાશી વ્રહ્મ ચિત્, રહે આજ મન ક્લેશ. ૩૨.

ટીકા:-હે શિષ્ય ! પરમાનંદની પ્રાપ્તિવિષે અને જન્મ-મરણથી આદિ લઈને જે દુ:ખરૂપ સંસાર છે, તેની નિવૃત્તિવિષે જે તને શ્ચ્છા થઈ છે, તે શ્ચ્છાની ઉત્પત્તિ આન્તિપ કરી થઈ છે, યમ તું જાણ. કેમકે, તું આપ પરમ આનંદ-

સ્વરૂપ છે. ઇથી તેની પ્રાપ્તિની ઇચ્છા વને નહિ. જે વસ્તુ અપ્રાપ્ત હોય તેની પ્રાપ્તિની ઇચ્છા વને છે. અને પોતાનું જે સ્વરૂપ છે, તે સદા પ્રાપ્ત છે, તેની પ્રાપ્તવિષે જે ઇચ્છા તે ભ્રાન્તિ વિના વને નહિ. અને જન્મથી આદિ લઈને જે સંસાર છે, તે જો કદાચિત્ હોય, તો તેની નિવૃત્તિવિષે ઇચ્છા વને તે જન્માદિક સંસારનો લેશ પણ તારાવિષે છે નહિ. ઇથી ન થયેલા દુઃખની નિવૃત્તિવિષે પણ ઇચ્છા ભ્રાન્તિ વિના વને નહિ. અને હે શિષ્ય ! જન્મ અને નાશથી રહિત જે ચેતનરૂપ બ્રહ્મ છે, તે તું છે. ઇથી પોતાના હૃદયવિષે જન્માદિક લેદ ન માન. ૩૨.

૧૧૬. તત્ત્વદષ્ટિરુવાચ-

इहो.

થાય વિષયસંગમાન ક્યમ, જો હું આનંદરૂપ ?

પનું ઉત્તર થય કહાં, શ્રીગુરુ મુનિવરભૂષ. ૩૩.

ટીકા.—હે ભગવન્ ! જો મારો આત્મા આનંદરૂપ હોય તો, વિષયના સંબંધથી આત્માવિષે આનંદનું માન ન થયું જોઈયે. ઇથી આત્મા આનંદરૂપ નથી, કિન્તુ વિષયના સંબંધથી આત્માવિષે આનંદ થાય છે. ૩૩.

૧૧૭ શ્રીગુરુરુવાચ.

(આત્મા જ આનંદરૂપ છે, વિષયમાં આનંદ નથી, તે વિષે)

चोपाई.

આત્માવિમુક્તયુદ્ધિ જન જે છે, વિષયેચ્છા તેને ધાયેછે,

તેથી બુદ્ધિ ચંચલ થઈ જાય, સુખામાસહાનિ ત્યાં ધાય. ૩૪

પામે દૃષ્ટ પદાર્થ જિહારે, મતિવિક્ષેપ નાસે ક્ષણ ત્યારે,

(થાય) આનંદ પ્રતિષિદ્ધ મતિમાં, પુનઃ વિહંબન ઇચ્છા ક્ષણમાં.

૩૪. આનંદના પ્રતિષિદ્ધને ઠાંધી યા અનુકરણ કરી તેને દૂર કરનારી.

તેથી સ્થિરતાદાનિ થાય જ, નાશક આનન્દ પ્રતિર્વિવ જ; વિષયસંગ આનન્દ હમ હોય, એ ગુરુ વિના ન જાણે કોય. ૩૬.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! આત્માથી વિમુક્ત છે બુદ્ધિ જેની ઇચ્છા છે પુરુષ, તેને વિષયની ઇચ્છા થાય છે. [આ સ્થાનમાં જે ભોગનું સાધન હોય તે વિષય કહેવાય છે; એ(વિષયશબ્દ)-થી ધનપુત્રાદિકનું પણ ગ્રહણ કરી લેવું.] તે વિષયની ઇચ્છાથી બુદ્ધિ ચંચલા રહે છે. તે ચંચલબુદ્ધિમાં આત્મસ્વરૂપ આનંદનો 'આભાસ' નામ પ્રતિર્વિવ થતું નથી, અને જે વિષયની ઇચ્છા થઈ હોય, તે વિષય એને પ્રાપ્ત થઈ જાય, ત્યારે એ પુરુષની બુદ્ધિ ક્ષણમાત્ર સ્થિતા થઈને બુદ્ધિની વૃત્તિ અંતર્મુખ થાય છે. તે અંતર્મુખવૃત્તિવિષે આત્માનું સ્વરૂપ જે આનંદ તેનું પ્રતિર્વિવ થાય છે. તે આત્મસ્વરૂપ આનંદના પ્રતિર્વિવને અનુભવ કરીને પુરુષને ભ્રાન્તિ થાય છે જે:-મને વિષયથી આનંદનો લાભ થયો છે, પરંતુ વિષયમાં આનંદ છે નહિ.

જો કદાચિત્ વિષયમાં આનંદ હોય, તો એક વિષયથી તૃપ્ત જે પુરુષ, તેને જ્યારે વીજા વિષયની ઇચ્છા થાય, ત્યારે પણ પ્રથમ વિષયથી આનંદ થવો જોઈએ; તે તો થતો નથી.

અને અમારી રીતિએ સ્વરૂપ-આનંદનું તો (ચંચલબુદ્ધિમાં) ભાન વને નહિ; કેમકે, જે વીજા વિષયની ઇચ્છાએ કરીને બુદ્ધિ ચંચલા છે, તેનાવિષે પ્રતિર્વિવ વને નહિ.

ક્રિયા:-જો વિષયમાં જ આનંદ હોય તો જે પુરુષનો પ્રિય પુત્ર અથવા અન્ય કોઈ અત્યંત પ્રિય, જો અકસ્માત્ વહુકાલ

૭૫. જેમાં પ્રતિર્વિવ પડે છે એજુ દર્પણ, પાળી, આદિ રામે તે તેમાં પ્રતિર્વિવ પાડવું હોય તો તે સ્થિતિ અવશ્ય જોઈએ. એક સ્થિરતા અને વીજી નિર્મલતા. જો દર્પણ આદિ વહુ હાલતું હોય અથવા તે ઉપર મેલ પડ્યો હોય તો તેમાં મુલ, દેલાય નહિ. તેમ ચંચલા અને મલિના, ક્રિવા ધોર અને મૂઢ, ક્રિવા રાજસી અને તામસી બુદ્ધિમાં આત્માના આનંદનું પ્રતિર્વિવ યાય નહિ.

पछी मिली जाय, त्यारे तेने देखतां ज प्रथम जे आनंद थाय, ते आनंद फरी सदा थतो नथी; ते सदैव थवो जोइये. कारण के आनंदनो हेतु जे पुरुष छे, ते तेनी समोप छे.

अने अमारी रीतिए तौ प्रथम ज आनंद वने छे, सदा वने नहि. केमके, एकवार प्रियने देखीने वृत्ति स्थिता थाय छे, पछी वृत्ति अन्य पदार्थमां लागी जाय छे, एथी चंचला छे. (अने चंचलवृत्तिमां आनंदनुं प्रतिर्विव पडे नहि.) एथी पदार्थमां आनंद नथी.

किंचा:-जो विषयमां आनंद होय तो समाधिकालविये जे योगानंदनुं भान थाय छे ते न थवुं जोइये, केमके समाधिमां कशा विषयनो संबंध छे नहि.

किंचा:-जो विषयमां ज आनंद होय तो सुषुप्तिमां आनंदनुं भान नहि थवुं जोइये; केमके सुषुप्तिविये पण कोई विषयनो संबंध छे नहि. एथी विषयमां आनंद नथी, किन्तु आत्मस्वरूप आनंद सर्वत्र भान थाय छे; एटला ज सार वेदमां लख्युं छे के:-“आत्मस्वरूप आनंदने लईने सर्व आनंद-वाळां थाय छे.”

इहो.

थाय विषयसंगथी प्रकट, आत्मा आनंदरूप;

शिष्य शुणाव्यो में तने, ए सिद्धान्त अनूप.

३७.

सो(बो).

ते तुं मजने भाव, जे एमां शंका रही;

निज मतिमां मा राख, हुं तेनो उत्तर कहुं.

३८.

(उपर प्रमाणे आत्मविमुख अज्ञानीनी रीति कही. ज्ञानी जनने आनन्द केइ रीतिए थाय छे, ए शिष्य पूछे छे.)

૧૧૮. તત્ત્વદષ્ટિરુવાચ.

ચોવાઈ.

. હે ભગવન્ ! તમ દીનદયાલ, ટાઢ્યો મમ સંશય તત્કાલ,
 ઇમાં કરંક રહી આરાંકા, તે ફહું હવે થાય નર્વકા. ૩૯.
 આત્મવિમુલ્લ-ચુદ્ધિ અજ્ઞાની, તેની સર્વ ઇ રીતિ વલ્લાણી,
 જ્ઞાનીજનનો ફહો વિચાર, ફો ન આપસમ અન્ય ઉદાર. ૪૦.

ટીકા:-હે ભગવન્ ! વિપયના સંબંધથી આત્માનંદના
 માનની જે રીતિ આપે પૂર્વે ફહી, તે અજ્ઞાની પુરુષની ફહી; અને
 જ્ઞાનીની ફહી નહિ. કેમકે આત્માથી વિમુલ્લા છે ચુદ્ધિ જેની
 તેનું નામ આપે લીધું છે. તે આત્માથી વિમુલ્લા ચુદ્ધિ અજ્ઞા-
 નીની હોય છે, જ્ઞાનીની નહિ. ઇથી આપ હવે જ્ઞાનીનો વિચાર
 ફહો જે, જ્ઞાનવાનને વિશ્યની ઇચ્છા અને તેના સંબંધથી, પૂર્વ
 રીતિફકરી, સુપ્તનું માન થાય છે અથવા નહિ. ઇ ઘાત્તા
 આપ ફહો. ૪૦.

૧૧૯. શ્રીગુરુરુવાચ.

(દ્વિવિધ આત્મવિમુલ્લ. જ્ઞાનીના આનંદની રીતિ.)

દ્વો.

શિષ્ય ! ઇક શુણ ઘાત મમ, સાવધાન મન કાન;
 આત્મવિમુલ્લ તે દ્વિવિધ છે, અજ્ઞાની ડને સુજાન. ૪૧.
 થાય ફદા ઇયવહારમાં, વિસ્મૃત જ્ઞાની સંત;
 અજ્ઞાની વિમુલ્લ જ રહે, જાણ તું ઇ સિદ્ધાન્ત. ૪૨.

ટીકા:-હે શિષ્ય ! તું વિચિત્તને અને ઇયપણને સાવધાન
 ફરીને સાંભલ્લ. પૂર્વે અમે જે આત્મવિમુલ્લ ફહો છે, તે આત્મ
 વિમુલ્લ અજ્ઞાની જ નથી હતાં. ફિન્તુ જ્ઞાનવાનની પળ ચુદ્ધિ
 જ્યારે ઇયવહારમાં આથી જાય ત્યારે તે તત્ત્વને મૂલી જાય છે,

૭૬. જ્ઞાનીના વિસ્મરણથી આરો પ્રકાર છે કે:-જેમ જ્યારે જાગ્રદાકારશુતિ
 હોય ત્યારે સ્વપ્નાકારશુતિ હોય નહિ. અને જ્યારે સ્વપ્નાકારશુતિ હોય ત્યારે જાગ્રદા-

તે કાલવિષે જ્ઞાનવાન પણ આત્મવિમુક્ત જ થાય છે. અને જ્ઞાનીની બુદ્ધિ જો સદા આત્માકાર જ રહે, તો ભોજનાદિક વ્યવહાર ન થાય, યથી આત્મવિમુક્તબુદ્ધિ (અજ્ઞાની અને જ્ઞાની) બંનેનો બને છે. અજ્ઞાનીની તો બુદ્ધિ સદા આત્મ-વિમુક્ત છે, અને જ્ઞાનીની બુદ્ધિ આત્મવિમુક્ત થાય તે કાલમાં જ્ઞાનીને પણ ઇચ્છા, અને વિષયના સંબંધથી આત્મસ્વરૂપ-આનંદ-નું ભાન, અજ્ઞાનીના સમાન છે; પરંતુ આટલો ભેદ છે:- વિષયના સંબંધથી જે આનંદનું ભાન થાય છે, તેને જ્ઞાની તો જાણે છે કે, જે એ આનંદ છે તે મારા સ્વરૂપથી અન્ય (ભિન્ન) નથી, કિન્તુ તેનો જ આભાસ છે. યથી જ્ઞાનીને વિષયમોગમાં પણ સમાધિ જ છે. અને અજ્ઞાની નથી જાણતો જે મારું જ સ્વરૂપ આનંદ છે. પરંતુ (અજ્ઞાની અને જ્ઞાની) બંનેનો સ્વરૂપાનંદ છે. વિષયકરી (આનંદ થાય છે યવી) કેવલ અજ્ઞાનીને ધ્રાન્તિ થાય છે.

૧૨૦. શિષ્ય ઉવાચ.

(તત્ત્વદષ્ટિ ગુહને પૂછે છે કે:-જન્મમરણાદિક દુઃખ મારાવિષે નથી તો કોનાવિષે છે !)

ચોપાદ્.

હે પ્રભુ ! પરમાનંદ વચ્ચાણ્યો, મમ રૂપ મેં પીછાણ્યું (જાણો); તેમાં નહિ ભવબંધન લેશ, તમે કહ્યો ચેલો એ ઉપદેશ. ૪૩.

કારવૃત્તિ હોય નહિ, તેમ જ્ઞાનવાની બુદ્ધિ પણ જ્યારે આત્માકાર હોય ત્યારે અનાત્માકાર હોય નહિ, અને જ્યારે અનાત્માકાર હોય ત્યારે આત્માકાર હોય નહિ. યદ્યપિ એક અન્ત કરણવિષે એક કાલમા ભિન્નવિષયાકાર સામાન્ય-વિશેષરૂપ યે વૃત્તિઓ હોય છે, તથાપિ બને વિશેષવૃત્તિઓ હોય નહિ. .. જ્ઞાનવાની બુદ્ધિ જ્યારે પ્રત્યક્ષાદિ વ્યવહારમાં વિશેષ સંલગ્ના હોય ત્યારે (અજ્ઞાનીના સમાન લેલાય છે,) અને તેને તત્ત્વનું કંઈક વિસ્મરણ લેલાય છે. પરંતુ જ્યારે વ્યવહારથી ઉપરામ થાય ત્યારે તેને પરિપૂર્ણ સ્મરણ હોય છે. પ. પી. પું

૭૭. વિષયના અનાદરપૂર્વક સ્વરૂપાનુસન્ધાન રહેતું હોય તો વિષયમોગમાં પણ મોગ સમાધિ મળાય છે. એ અર્થમાં અત્ર 'સમાધિ' શબ્દ છે.

૪ તરંગ.) આત્મામાં દુઃખ નથી તો પ્રતીત કેમ થાય છે ? ૨૧૭

પમાં આ શંકા મજ આવે, જેથી તવ વચન મન ન સુહાવે;
જો મુજમાં નહિ વંધ પ્રસારો, કહો કોણ તો આશ્રય ન્યારો. ૪૪.

ટીકા:—હે ભગવન્ ! આપે કહ્યું કે:—‘તું પરમાનંદસ્વ-
‘રૂપ છું.’ તે મેં સારા પ્રકારે જાણ્યું. અન્ય આપે કહ્યું કે.—
‘જન્મમરણથી આદિલઈને સંસારરૂપ દુઃખ તારાવિપે છે નહિ,
‘પથી તેની નિવૃત્તિ ઘને નહિ.’ ણનાવિપે મને શંકા છે. જો
જન્માદિક દુઃખ મારાવિપે નથી તો જેનામાં આ સંસાર છે,
પવો મારાથી ‘ન્યારો’ નામ (અન્ય) જુદો આશ્રય આપ કૃપા
કરીને ઘતાવો; કે જેનાવિપે સંસારદુઃખ જાણીને પોતાવિપે
માનું નહિ. ૪૪.

૧૨૧ શ્રીગુરુવાચ.

(ગુરુ ઉત્તર દે છે કે:—જન્માદિક દુઃખ કોઈનામાં નથી)

સોરઠો

શુણ શિષ્ય મમ ઘાળો, જેથી તવ શંકા મટે;

છે જગત્ની અતિહાનિ*, નહિ તુજ-મુજમાં, અન્યમાં. ૪૫.

અર્થ સ્પષ્ટ.

૧૨૨. તત્ત્વદષ્ટિરૂવાચ.

(પ્રશ્ન:—દુઃખ કોઈનામાં નથી તો પ્રતીત કેમ થાય છે ?)

દુહો.

જો ભગવન્ કહી છે નહિ, જન્મ, મરણ, જગલેદ;

છે પ્રત્યક્ષ પ્રતીત ઘ્યમ, કહો આપ ણ ભેદ. ૪૬.

ટીકા—હે, ભગવન્ ! જો જન્મમરણથી આદિલઈને સંસાર-
દુઃખ મારેવિપે તથા અન્યવિપે કહી ણ છે નહિ, તો
પ્રત્યક્ષ પ્રતીત કેમ થાય છે ? જે ઘસ્તુ હોય નહિ તે પ્રતીત થાય
નહિ. જેમ ઘંધ્યાનો પુષ્પ અને આકાશવિપે પુષ્પ છે નહિ, તે

* નિત્ય નિવૃત્તિ.

પ્રતીત થાય નહિ; તેમ સંસાર પળ ન હોય તો પ્રતીત ન થવો જોઈયે. અને જન્મથી આદિલઈને સંસાર પ્રતીત થાય છે, યથી 'જન્માદિક સંસારરૂપી દુઃખ છે નહિ,' એ કહેવું ઘને નહિ. ૪૬.

૧૨૩. શ્રીગુરુત્વાચ.

(ઉત્તર-આત્માના અજ્ઞાનથી મિથ્યાપ્રતીતિ થાય છે.)

इदो.

આત્મરૂપઅજ્ઞાનથી, મિથ્યા થાય પ્રતીતિ;
જગત્ , સ્વપ્ન, નભનીલતા, રજ્જુસર્પની રીતિ. ૪૭.

ટીકા:—જન્માદિક જગત્ પરમાર્થથી છે નહિ તોપણ, આત્માના વ્રહ્મસ્વરૂપે કરીને અજ્ઞાનથી મિથ્યા પ્રતીત થાય છે. જેમ સ્વપ્નના પદાર્થ, આકાશમાં નીલતા, અને રજ્જુમાં સર્પ, પરમાર્થથી છે નહિ અને મિથ્યા પ્રતીત થાય છે; તેમ જન્માદિક જગત્ પરમાર્થથી છે નહિ (અને) મિથ્યા પ્રતીત થાય છે. ૪૭.

૧૨૪. તત્ત્વદૃષ્ટિરુવાચ.

(મિથ્યાપ્રતીતિ કેવી રીતિએ થાય છે એવિષે લોકોની જે સમજણ છે તેનો અનુવાદ શિષ્ય કરે છે)

चोपाई.

મિથ્યા સર્પ રજ્જુમાં જેમ, માણ્યો ભવ આત્મામાં તેમ;
કેમ સર્પ રજ્જુમાં માણે; તે સંશય મન, બુદ્ધિ વિનાશે. ૪૮.

ટીકા:—જેમ રજ્જુમાં સર્પ મિથ્યા છે, તેમ આત્મામાં ભવ-દુઃખ મિથ્યા કહ્યું; ત્યાં દૃષ્ટાન્તના જ્ઞાન વિના દૌર્ણાન્તનું જ્ઞાન

૭૮. રજ્જુમાં સર્પ કેવી રીતિએ દેખાય છે તે હું સમજતો નથી, તેથી મનમાં સંશય આવી, 'બુદ્ધિ' નામ નિશ્ચય તેને નાશ કરે છે.

૭૯. જે અર્થમાં લોકની તથા પરીક્ષકની પળ બુદ્ધિનુ સામ્ય છે તે દૃષ્ટાન્ત કહેવાય છે. અથવા યાદિપ્રતિવાદીની સપ્રતિપત્તિ (વાદિઉત્તાર્ય વિષયનુ સ્વીકરણ) તેનો અર્થ તે દૃષ્ટાન્ત. (જુવો પૃષ્ઠ. ૧૭૪). દૃષ્ટાન્તયુક્ત ઉપમેય તે 'દાર્ણાન્ત'. સિદ્ધાન્ત.

थाय नहि. एथी रज्जुमां सर्प किये प्रफारे भासे छे, ए दृष्टा-
न्तमां प्रश्न छे. ४८.

१२५. (मिथ्याप्रतीति वा भ्रमस्थानमां चार मत.)

(ते चार ख्यातिनां नाम.)

बोपाई

असत्ख्याति, घळो आत्मख्याति, ख्याति अन्यथा, ने अख्याति,
भ्रमस्थले शुण्या मत चार ज, मानुं कियुं कहो ए सार ज ? ४९.

टीका:—ज्यां रज्जुमां सर्प अने शुक्तिमां रुपुं, इत्यादिक
भ्रम छे त्यां चार मत सांमळ्या छे. शून्यवादी असत्ख्याति
कहे छे. क्षणिकविज्ञानवादी आत्मख्याति कहे छे. न्याय
अने वैशेषिकमतमां अन्यथाख्याति कहे छे. सांख्य अने
प्रभाकर (मतमां) अख्याति कहे छे. तेमां

८०. पूर्वमीमांसाना चार्तिककार भट्टरादनो शिष्य. तेविपे आवी कया छे,—
भट्टपाद अभ्यास करो घेर आवता हता. मार्गमां ए प्रभाकर बालकवयमां एक
गाम बहिर रमतो हतो. तेने भट्टपादे पूठयुं के,—‘ग्राम वेच्छु दूर छे?’, ए प्रश्न
सामळी प्रभाकर हस्यो अने बोल्यो के,—‘महाराज ! आपना मुख अने वेश उप-
रथी एम अनुमान थाय छे के आपे बहु विद्याभ्यास कय्यो छे, तेम सते आवी
सुगम वातनु अनुमान नयी करी शकता ए आश्चर्य छे. ज्या मारा जेरडां
बालक रमतां होय त्यांथी गाम दूर केम होय ?’ प्रभाकरनी बुद्धि जोई भट्टपाद
बहु प्रसन्न थया, अने तेना मातापिताने कही पोतानी पास भणाववा तेने
लीधो. अभ्यास करतां बुद्धिबल बहु बध्यु, ते एटले सुधी के गुहने जेमां शका
रहे तनो पण कोई कोई वार ते निर्णय करी आपे

एक दिवस गुह एक ग्रय वांचता हता. तेमा आ पक्ति हती—

‘पूर्वतुनोक्तंअधुनापिनोच्यते’

ते विपे भ्रान्ति यई ते बहु समय सुधी विचारता पण स्पष्ट यई नही. भोजनसमय
वीती गयो. पत्नी प्रभाकरे कारण पूछयु ए गुहए पक्ति देलाडी. ते वांचतां ज
स्पष्ट समजी गुहने निवेदन कय्यु के,—पूर्व ‘तु’ना उक्त अधुना ‘अपि’ना उच्यते.

एथी गुहए प्रसन्न यई तेने कय्यु के,—‘जा (जय) तार मत गुहमत
‘कहेवाओ,’ आज पण प्रभाकरनुं मत ‘गुहमत’ कहेवाय छे

૧૨૬. (અસત્સ્વ્યાતિનો અનુવાદ.)

શૂન્યવૈદીનો આ અભિપ્રાય છે. રજ્જુદેશમાં સર્પ અત્યંત અસત્ છે, તેમ અન્યદેશમાં પણ અત્યંત અસત્ છે. પમ અત્યંત અસત્ સર્પની રજ્જુમાં પ્રતીતિ થાય છે, તેને અસત્ સ્વ્યાતિ કહે છે. અત્યંત અસત્ય સર્પની 'સ્વ્યાતિ' નામ ભાન અને કથન (તે અસત્સ્વ્યાતિ કહેવાય) છે.

૧૨૭. (આત્મસ્વ્યાતિનો અનુવાદ.)

(ક્ષણિક)વિજ્ઞાનવાદીનો આ અભિપ્રાય છે. રજ્જુદેશમાં તથા અન્યદેશમાં, બુદ્ધિની વહિર, કહિં સર્પ છે નહિ. સર્વ પદાર્થ બુદ્ધિથી ભિન્ન નથી. કિન્તુ સર્વ પદાર્થના આકારને બુદ્ધિ જ ધારે છે. (બુદ્ધિ જ પદાર્થરૂપ થાય છે) તે બુદ્ધિ, ક્ષણિકવિજ્ઞાનરૂપ છે. ક્ષણ ક્ષણમાં નાશ અને ઉત્પત્તિને પ્રાપ્ત થાય છું જે વિજ્ઞાન (બુદ્ધિ), તે જ સર્પરૂપ પ્રતીત થાય છે. અને 'આત્મસ્વ્યાતિ' કહે છે. 'આ ત્મા' નામ ભાન અને કથન (તે આત્મસ્વ્યાતિ કહેવાય) છે.

૧૨૮. (અન્યથાસ્વ્યાતિનો અનુવાદ.)

(પ્રાચ્યનૈયાયિકમત પ્રમાણે.)

નૈ યા યિ ક નો અને વૈ શે યિ ક નો આ અભિપ્રાય છે, - વલ્મીક (દર-રાફડો) આદિ સ્થાનમાં સાચો સર્પ છે, તેને નેત્રે-કરી દેખે છે અને નેત્રમાં દોષ છે તે(દોષ)ના વલથી સન્મુલ્લ (અને) સમીપ (રજ્જુદેશમાં સર્પ) પ્રતીત થાય છે. યદ્યપિ સાચો સર્પ અને નેત્રના મધ્યમાં મિત્તિ (ભોંત) આદિ અંતરાય છે, તથાપિ દોષસહિત નેત્રેકરી, અંતરાયસહિત પણ સર્પ દેખાય છે.

૮૧. કારણતાપ્ સર્વ અભાવમાત્ર વદનાર બુદ્ધધર્મો માધ્યમિક.

૮૨. બુદ્ધધર્મો યોગાચાર

અને એમાં કોઈ આવી શંકા કરે, - 'દોષથી તો સામર્થ્ય ઘટે છે. 'વધે નહિ; જેમ જટરાગ્નિમાં પાચનસામર્થ્ય, ઘાત-પિત્ત-ક્ષ-ક- 'દોષથી, ઘટે છે, તેમ નેત્રમાં પણ તિમિરાદિદોષથી સામર્થ્ય 'ઘટ્યું જોઈયે. અને ઘભ્રીક આદિ સ્થાનમાં સ્થિત સર્પનું, 'દોષસહિત નેત્રથી, જ્ઞાન કહ્યું, ત્યાં શુદ્ધ નેત્રે તો પરદેશમાં 'સ્થિતનું પ્રત્યક્ષ જ્ઞાન થાય નહિ, અને દોષસહિત(નેત્ર)થી 'થાય છે; એથી 'દોષથી નેત્રનું સામર્થ્ય અધિક થાય છે,' એ 'માનવામાં કંઈ દૃષ્ટાન્ત નથી.' તે શંકા વને નહિ. કેમકે, કોઈને પિત્તદોષથી એવો રોગ થાય છે કે ચતુર્ગુણ ભોજન કન્થથી પણ તૃપ્તિ થાય નહિ. જેમ પિત્તદોષથી જટરાગ્નિમાં પાચનસામર્થ્ય ઘટે છે, તેમ નેત્રમાં પણ તિમિરાદિદોષથી પર- દેશમાં સ્થિત સર્પને પ્રત્યક્ષ કરવાનું સામર્થ્ય ઘટે છે. એ રીતિએ ઘભ્રીક આદિક દેશમાં સ્થિત સર્પની 'અન્યથા' નામ ધીજા પ્રકારથી સન્મુલ રજ્જુદેશમાં જે 'સ્વાતિ' નામ ભાન અને કથન, તે ઐન્યથાસ્વાતિ કહેવાય છે. અને

૧૨૯. (નવીન-નૈયાયિક-મત પ્રમાણે.)

ચિન્તામણિકાર નૈયાયિકનું આ મત છે:—જો દોષસહિત નેત્રથી ઘભ્રીકમાં સ્થિત સર્પનું જ્ઞાન થાય તો, ઘચલા અન્ય પદાર્થનું જ્ઞાન પણ થવું જોઈયે. (પણ એમ થતું નથી) એથી પરદેશમાં સ્થિત વસ્તુનું નેત્રેકરી જ્ઞાન થાય નહિ; કિન્તુ દોષસહિત નેત્રેકરી રજ્જુનું તિજરૂપથી ભાન થાય નહિ, સર્પ- રૂપથી ભાન થાય છે. એથી રજ્જુની જ 'અન્યથા' નામ ધીજા

૮૩. એ મતમાં અન્યદેશધિપે સ્થિત વસ્તુની અન્ય દેશમાં પ્રતીતિ જ ભ્રાન્તિ કહેવાય છે, અર્થાધ્યાસ કિંવા જ્ઞાનાધ્યાસરૂપ ભ્રાન્તિ છે નહિ.

૮૪. ચિન્તામણિનામક મંથના કર્તા નવીન નૈયાયિક કહેવાય છે. તેનું મત એ છે:—તેમાં અન્ય વસ્તુની અન્ય રૂપથી પ્રતીતિ જ્ઞાનાધ્યાસને જ ભ્રાન્તિ કહે છે.

પ્રકારથી સર્પરૂપે જે 'સ્વ્યાતિ' નામ માન અને કથન, તે અન્યથાસ્વ્યાતિ કહેવાય છે.

૧૩૦. (અસ્વ્યાતિનો અનુવાદ.)

(સાં સ્વ્ય અને મી માં સા (વા પ્ર મા ક ર) મ ત પ્ર મા જે.)
(અને તેનેકરી ઉપરની ત્રણ સ્વ્યાતિઓનું સ્ફંડન.)

અને અસ્વ્યાતિવાદીનો આ અભિપ્રાય છે:-જો અસત્ની પ્રતીતિ હોય તો વંધ્યાપુત્ર અને શશભૃંગની પ્રતીતિ હોવી જોઈએ. (પણ હોતી નથી) યથી અસત્સ્વ્યાતિ અસંગત છે.

ક્ષણિકવિજ્ઞાનનો જ આકાર સર્પાદિક હોય તો, ક્ષણમાત્રથી અધિક કાલ સ્થિરપ્રતીતિ ન હોવી જોઈએ. (પણ તેમ હોય છે) યથી આત્મસ્વ્યાતિ અસંગત છે.

અને અન્યથાસ્વ્યાતિની પ્રથમ રીતિ તો ચિન્તામણિના મતથી દુષિત જ છે; તેમ ચિન્તામણિની રીતનું પણ અન્યથાસ્વ્યાતિ મત (છે તે) અસંગત છે, કેમકે, જ્ઞેયને અનુસાર જ્ઞાન હોય છે. જ્ઞેય રજ્જુ, અને જ્ઞાન સર્પનું, એ કહેવું એ અત્યંત વિરુદ્ધ છે. યથી આ રીતિ માનવી યોગ્ય છે:-

જહાં રજ્જુમાં સર્પધ્રમ છે તહાં રજ્જુસાથે નેત્રનો, પોતાની ઘૃત્તિદ્વારા, સંબંધ થઈને, રજ્જુનું 'ઈદં'(આ)રૂપથી સામાન્ય જ્ઞાન થાય છે, અને સર્પની સ્મૃતિ થાય છે. 'આ સર્પ છે,' યમાં વે જ્ઞાન છે. 'આ' અંશ તો રજ્જુનું સામાન્ય પ્રત્યક્ષજ્ઞાન છે. અને 'સર્પ છે' યમ સર્પનું સ્મૃતિરૂપ જ્ઞાન છે. એ રીતિપ 'આ 'સર્પ છે,' યમાં વે જ્ઞાન છે; પરંતુ ભયદોષ પ્રમાતામાં, અને તિમિરદોષ પ્રમાણમાં, તેઓના (એ વે દોષના) વલથી પુરુષને યથી વિવેક નથી થતો જે 'મને વે જ્ઞાન થયાં છે.' યદપિ 'આ' અંશ રજ્જુનું સામાન્ય જ્ઞાન (છે તે) યધાર્થ છે; અને પૂર્વે દેવેલા

સર્પનું સ્મૃતિજ્ઞાન પણ યથાર્થ જ છે. તો પણ 'મને વે જ્ઞાન યયાં છે, તેમાં રજ્જુનું સામાન્યપ્રત્યક્ષજ્ઞાન છે, અને સર્પનું 'સ્મૃતિજ્ઞાન છે,' એમ વિવેક નથી થતાં. તે વે જ્ઞાનના અવિવેકને જ, સાંખ્યપ્રમાકરમતમાં, 'મ્રમ' કહે છે.

એ જ રીતિ સર્વ મ્રમસ્થલમાં જાણવી. એ રીતિએ રજ્જુ આદિકોમાં સર્પાદિક મ્રમ જહાં થાય, ત્યાં ચાર મત સાંભળ્યાં છે, તેમાંથી સારું મત હોય તે કહો; તેને હું માનું. [એ શિષ્યનો પ્રશ્ન છે.] ૪૨.

૧૩૧. શ્રીગુરુસ્વાચ.

(એ ચારે મત યુક્તિહીન છે, એમ સંકન કરીને પાંચમી અનિર્વચનીયખ્યાતિ સિદ્ધ કરે છે.)

દુહો.

યુક્તિહીન મત ચાર એ, તેથી પંચમ અન્ય;

ખ્યાતિ અનિર્વચનીય છે, મ્રમસ્થાનમાં માન્ય.

૫૦.

ટીકા:-હે શિષ્ય ! તે ચારે ખ્યાતિથી અન્ય જ મ્રમસ્થાનમાં પંચમ અનિર્વચનીયખ્યાતિ જાણ. અને અસત્ખ્યાતિ, આત્મખ્યાતિ, અન્યથાખ્યાતિ, (અને) અખ્યાતિ, એ ચારે મત યુક્તિહીન છે. જેમ ઉત્તર ઉત્તર મત નિરૂપણમાં ત્રણે મત અસંગત કહ્યાં, તેમ અખ્યાતિમત પણ અસંગત છે.

(અન્તના અખ્યાતિમતનું સંકન સિદ્ધાન્તિ કરે છે.)

કેમકે:-'આ સર્પ છે,' એ જ્ઞાનમાં પ્રથમ 'આ'-અંશ તો રજ્જુનું સામાન્ય-જ્ઞાન પ્રત્યક્ષ છે; અને 'સર્પ છે' પદલો અંશ પૂર્વદષ્ટ સર્પનું સ્મરણજ્ઞાન છે, એ અખ્યાતિવાદિનું મત છે. ત્યાં (કદાપિ) પૂર્વદષ્ટ સર્પનું સ્મરણ જ માનિયે, અને સન્મુખ રજ્જુદેશમાં સર્પનું જ્ઞાન નહિ માનિયે, તો સન્મુખ રજ્જુથી

પુરુષને ભય થઈને ડલટો ભાગે છે, તે ભય અને ભાગવું નહિ થવું જોઈયે. યથી:-

૧૩૨. સન્મુલ્લ રજ્જુદેશમાં જ સર્પની પ્રતીતિ થાય છે; પૂર્વ-દૃષ્ટ સર્પની સ્મૃતિ નહિ. કિંચા રજ્જુનું વિશેષરૂપયી યથાર્થ જ્ઞાન થયાથી અનંતર યવો વાધ થાય છે કે:-'મને 'રજ્જુમાં સર્પની પ્રતીતિ મિથ્યા થઈ હતી.' ય વાધથી યણ અને 'આ સર્પ છે,' યમાં યક જ જ્ઞાન પ્રતીત થાય છે, યે નહિ; અને યક કાલમાં, અંતઃકરણથી સ્મૃતિરૂપ અને પ્રત્યક્ષરૂપ યે જ્ઞાન થાય યણ નહિ. યથી અલ્પ્યાતિમત યણ અત્યંત અસંગત છે. ય ચારે મતનું પ્રતિપાદન અને ળંડન, વિર્વેરણ અને સ્વારાજ્યસિદ્ધિ^{૧૦} આદિક ગ્રંથોમાં વિસ્તારેકરી લલ્પું છે. પ્રતિપાદન અને ળંડમની યુક્તિ કઠિન છે, યથી સંક્ષેપે જિજ્ઞાસુને રીતિ જણાવી છે. અમે વિસ્તાર લલ્પો નથી.

૧૩૩. (અનિર્વચનીયલ્પ્યાતિથી પ્રતીતિની રીતિ.)

સિદ્ધાન્તમાં અનિર્વચનીલ્પ્યાતિ છે. તેનો આ રીતિ છે:- અંતઃકરણની વૃત્તિ નેત્રાદિદ્વારા નીકલ્લીને, વિષયના સમાન આકારને પ્રાપ્ત થાય છે. તે(વૃત્તિ)થી વિષયનું આવરણ મંગ થઈને તે(વિષય)નો પ્રતીતિ થાય છે; ત્યાં (સૂર્યાદિકનો) પ્રકાશ યણ સહાયક હોય છે. (કેમકે) પ્રકાશ વિના યદાર્થનો

૮૬. ળ્યાસનારાયણ કિંવા વાદરાયણપ્રણીત 'બ્રહ્મલ્પ' ડપર મીશંકરાચાર્યનું 'માલ્પ,' તે 'માલ્પ' ડપર યગ્નરાદાચાર્યકૃત 'યંચપાદિકા' અથવા 'વિષરણચતુઃ-લ્પી' નામે ટીકા છે, તે ટીકા ડપર પ્રકાશાત્મચરણ(યતિ)કૃત (યંચપા-દિકા), 'વિષરણ' નામે ળ્યાલ્પ્યાતિ. ળે. અને ય. 'વિષરણ' ડપર. 'યંચપાદિકા વિષ-રણ-પ્રકાશિકા' નામે નૃસિંહાશ્રમમુનિકૃત ગ્રંથ છે.

૮૭. મંગાધરસરસ્વતીકૃત છે. તે ડપર તેમની જ ક્ષેત્ર 'યેષલ્પકલ્પદ્રુમા' નામે ટીકા છે.

પ્રતીતિ થાય નહિ. જ્યાં રજ્જુમાં સર્પન્નમ થાય છે, ત્યાં અંતઃ-
 કરણની વૃત્તિ નેત્રદ્વારા નીકળી પળ સ્વરી, અને રજ્જુસાથે
 તેનો સમ્બધ પળ થાય, પરતુ તિમિરાદિક વાંચ પ્રતિબંધક છે,
 યથી રજ્જુના સમાનાકાર વૃત્તિનું સ્વરૂપ થાય નહિ, યથી
 રજ્જુનું આવરણ નાશે નહિ (=મગ થાય નહિ). એ રીતિએ આ-
 વરણમંગનું નિમિત્ત, વૃત્તિનો (વિષયસાથે) સમ્બધ થયાથી પળ,
 જ્યારે રજ્જુનું આવરણ મગ થાય નહિ, ત્યારે રજ્જુચેતનમાં
 સ્થિત અવિદ્યામાં ક્ષોભ (વિકાર) થઈને, તે અવિદ્યા સર્પાંકાર
 પરિણામને પ્રાપ્ત થાય છે તે અવિદ્યાનું કાર્ય સર્પ સત્ હોય,
 તો રજ્જુના જ્ઞાને તે(સર્પ)નો વાધ થાય થાય નહિ, અને (રજ્જુનું
 જ્ઞાન થયા પછી તે સર્પનો) વાધ થાય છે, યથી (તે અવિદ્યાનું
 કાર્ય સર્પ) 'સત્' નથી. અને (તે અવિદ્યાનું કાર્ય સર્પ) અસત્
 હોય તો, વંધ્યાપુત્રની પેઠે (તેની) પ્રતીતિ થાય નહિ, અને
 પ્રતીતિ થાય છે, યથી 'અસત્' પળ નથી, કિન્તુ સત્અસત્થી
 વિલક્ષણ અનિર્વચનીય છે. શુક્તિ આદિકોમા રૂપાદિક

૮૮. ત્રિકાલ અવાધ્ય. મૂત, વર્તમાન અને મવિષ્યત્ એ ત્રણે કાલમાં રહે તેને
 'સત્' કહે છે, અને એ ત્રણે કાલમાં ન હોય એણે સ્વરૂપહીન તેને 'અસત્' કહે છે

૮૯. અનિર્વચનીયનું શક્તા સમાધાન અને સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે -સત્થી
 વિલક્ષણ અસત્ છે તે અસત્ને અસત્થી વિલક્ષણ કહેતુ એ વિષદ્ધ છે અને
 અસત્થી વિલક્ષણ સત્ છે, સત્ને સત્થી વિલક્ષણ કહેતુ એ વિષદ્ધ છે તેથી
 સત્ અસત્થી મિત્ર કોઈ તૃતીય પદાર્થ હોય તો 'સત્ અસત્થી વિલક્ષણ' એમ
 કહેવાય, પરતુ તેના તૃતીય પદાર્થનો અભાવ છે તેથી પરસ્પર વિષદ્ધ સત્ અસત્થી
 વિલક્ષણ 'અનિર્વચનીય' શબ્દાર્થ અસંગત લાગે છે અને અપલ્લિધ યતી નથી
 યથી શક્તા છે તેનું સમાધાન આ છે -ત્રિકાલ અવાધ્ય સત્ કહેવાય છે, તેથી
 વિલક્ષણ કહેવાથી 'વાધયોગ્ય'નું પ્રહણ છે અને સ્વરૂપહીન વધ્યાપુત્રાદિક
 અસત્ કહેવાય છે. તેથી વિલક્ષણ કહેવાથી 'સ્વરૂપનાનું' પ્રહણ છે યથી
 'વાધયોગ્ય સ્વરૂપનાનું' યથી અર્થ અનિર્વચનીય પદનો છે તેવા પ્રપચ અને રજ્જુ
 સર્પાદિક છે. તેની અપલ્લિધ (પ્રતીતિ) વેદાન્તનિપુણ પઠિતોને હોય છે

પં પી. પુ

૨૬૬ ઉત્તમઅધિકારીને ઉપદેશ. ઠ્યાતિવિચાર. (વિચારસાંગર.

પણ ઇ જ રીતિય અનિર્વચનીય ઉત્તર ઠાય છે. તે અનિર્વચનીય-
ની જે 'ઠ્યાતિ' નામ પ્રતીતિ અને કથન, તે અનિર્વચનીય-
ઠ્યાતિ કહેવાય છે.

૧૩૪. (ઢ્રમ-સ્વપ્ન-સાક્ષિઢાસ્ય છે.)

જેમ (રજ્જુમાં ઢાસેલો) સર્પ અવિદ્યાનો જ પરિણામ છે,
તેમ તે(સર્પ)માં જ્ઞાનરૂપ વૃત્તિ પણ અવિદ્યાનો જ પરિણામ
છે; અંતઃકરણનો (પરિણામ) નથી. કેમકે, જેમ રજ્જુજ્ઞાનથી
સર્પનો વાધ ઠાય છે, તેમ તે(સર્પ)ના જ્ઞાનનો પણ વાધ
ઠાય છે.

[અંતઃકરણનું જ્ઞાન હોય તો વાધ થવો જોડ્યે નહિ.] ઇથી
(સર્પનું) જ્ઞાન પણ, સર્પની પેઠે, અવિદ્યાનું કાર્ય, સત્-અસત્-
થી વિલક્ષણ અનિર્વચનીય છે. પરંતુ રજ્જુઉપહિતચેતનમાં
સ્થિત તમોગુણ-પ્રધાન-અવિદ્યાઅંશનો પરિણામ, (રજ્જુમાં
ઢાસેલો) સર્પ છે, અને સાક્ષિચેતનમાં સ્થિત અવિદ્યાના સત્ત્વગુણ-
નો પરિણામ, (રજ્જુમાં ઢાસેલા સર્પનું) વૃત્તિજ્ઞાન છે. રજ્જુ-
ચેતનની અવિદ્યાનો જે સમયે સર્પાકાર-પરિણામ ઠાય છે, તે જ
સમય સાક્ષિ-આધિત-અવિદ્યાનો જ્ઞાનાકાર-પરિણામ ઠાય છે.
કેમકે, રજ્જુચેતનઆધિત-અવિદ્યામાં ક્ષોભનું જે નિમિત્ત (આ-
વરણનું ઢંગ ન થવું તે) છે તે નિમિત્તથી જ સાક્ષિઆધિત-
અવિદ્યાઅંશમાં ક્ષોભ ઠાય છે ઇથી ઢ્રમસ્યલમાં સર્પાંદિક વિષય
અને તેનું જ્ઞાન, ઇક જ સમયે ઉત્પન્ન ઠાય છે; અને રજ્જુ-
આદિક અધિષ્ઠાનના જ્ઞાનથી ઇક જ સમય લીન ઠાય છે. ઇ
રીતિય સર્પાંદિક ઢ્રમચિત્રે, વાહ-અવિદ્યાઅંશ, સર્પાંદિક વિષ-
યનું ઉપાદાન કારણ છે; અને સાક્ષિચેતનઆધિત અંતર-
અવિદ્યા-અંશ, તે(સર્પાંદિક)ના જ્ઞાનરૂપ-વૃત્તિનું ઉપાદાન
કારણ છે.

४ तरंग.) अध्यास ए अविद्याનો परिणाम अने चेतननो विवर्त. २६७

अने स्वप्नमां तो साक्षि आश्रित अविद्यानो ज तमोगुण अंश, विषयरूप परिणामने प्राप्त थाय छे; अने ते (साक्षि-आश्रित) अविद्यामांनो सत्त्वगुण अंश, ज्ञानरूप परिणामने प्राप्त थाय छे. एथी, स्वप्नमां (साक्षी आश्रित) अंतरअविद्या ज विषय अने ज्ञान वनेनुं उपादानकारण छे. एथी ज बाह्य रज्जुमर्पादिक अने अंतर स्वप्नपदार्थ, साक्षिमास्य कहेवाय छे. [अविद्यानो घृत्तिद्वारा जेने साक्षी भासे, नाम प्रकाशे, ते (आ स्थले) साक्षिंभाम्य कहेवाय छे.]

१३५. (अध्यास वा भ्रम ए अविद्यानो परिणाम अने चेतननो विवर्त.)

रज्जु आदिकोमां, अनिर्वचनीय सर्पादिक अने तेनुं ज्ञान, भ्रम कहेवाय छे. अने अध्यास कहेवाय छे. ते भ्रम, (तुला)अविद्यानो परिणाम छे अने चेतननो विवर्त छे. (तेम आ जगत् पण (मूला) अविद्यानो परिणाम छे अने शुद्धचेतननो विवर्त छे.) [उपादानकारणना समान स्वभाववालुं अन्यथास्वरूप परिणाम कहेवाय छे; अने अधिष्ठानथी (=विवर्तरूपकार्यना उपादानथी) विपरीतस्वभाववालुं अन्यथास्वरूप विवर्त कहेवाय छे.] (भ्रमस्थ-लमां) उपादानकारण अविद्या, ते अनिर्वचनीया छे; तेम रज्जुमां सर्प अने तेनुं ज्ञान पण अनिर्वचनीय छे, एथी रज्जु-सर्प अने तेनुं ज्ञान, -अविद्याना समान स्वभाववाळो, (अने) 'अन्यथास्वरूप' नाम अविद्याथी अन्य प्रकारनो आकार छे,

१. रज्जुसर्पादिक, मुद्गदुःखादिक, स्वप्नमर्पादिक, ए विषये, प्रतीति-समकाल होवाथी प्रातिभासिक छे; अने ते साक्षिमास्य ज कहेवाय छे.

१. सर्वदाकार्योमां अनुगत एषुं कारण. कार्यसह अभिन्न कारण. जेम घटा-दिक प्रति मृत्तिका. जेथी उत्पत्ति, जेणेकरी स्थिति, अने जेमां लय थाय एषुं जे एक कारण. न्यायमतमां एने समवायिकारण कहे छे.

તે અવિદ્યાનો પરિણામ છે. - તેમ રજ્જુઅવહિંત્ર અધિષ્ઠાન-
ચેતન, સત્સ્વરૂપ છે; સર્પ અને તેનું જ્ઞાન સત્યથી વિલક્ષણ (અનિ-
ર્વચનીય) છે; યથી રજ્જુસર્પ અને તેનું જ્ઞાન, 'અધિષ્ઠાન-
ચેતનથી વિપરીત સ્વભાવવાળો,' 'અન્યથાસ્વરૂપ' નામ ચેતન-
થી અન્ય પ્રકારનો, આકાર છે. (=સ્વઅવસ્થાન ત્યજ્યા યિના
અવસ્થાન્તરપ્રાપ્તિ જેની યવા ચેતનનો તે વિવર્ત છે.)

૧૩૬. (ભ્રમસ્થાનમાં વિપયનું અને તેના જ્ઞાનનું ઉપાધિ-
ભેદથી અધિષ્ઠાન ભિન્ન છે.)

મિથ્યા સર્પનું અધિષ્ઠાન રજ્જુઉપહિતચેતન છે, રજ્જુ
નહિ. કેમકે સર્પની પેઠે રજ્જુ પળ કલ્પિત છે. કલ્પિત ઘસ્ટુ
અન્ય કલ્પિતનું અધિષ્ઠાન ઘને નહિ, યથી રજ્જુઉપહિતચેતન
જ અધિષ્ઠાન છે, રજ્જુ નહિ. અને રજ્જુવિશિષ્ટ(ચેતન)ને અધિ-
ષ્ઠાન કહિયે, તો પળ રજ્જુ અને ચેતન ઘંને અધિષ્ઠાન યશે;
ત્યાં રજ્જુભાગમાં અધિષ્ઠાનત્વ ઘાધિતં છે. યથી રજ્જુઉપહિત-
ચેતન જ અધિષ્ઠાન છે; રજ્જુવિશિષ્ટચેતન નહિ.

તેમ સર્પના જ્ઞાનનું, સાક્ષિ ચેતન અધિષ્ઠાન છે. ય રીતિપ
ભ્રમસ્થાનમાં, વિપયનું અને તેના જ્ઞાનનું, ઉપાધિભેદથી,
અધિષ્ઠાન ભિન્ન છે, યક નહિ. અને વિશેષરૂપથી રજ્જુની અપ્ર-
તીતિ, અવિદ્યામાં ધોમદ્વારા, ઘંનેની ઉત્પત્તિમાં નિમિત્ત છે;
તેમ રજ્જુનું જ્ઞાન ઘંનેની નિવૃત્તિમાં પળ નિમિત્ત કારું છે.
ય વિષે

૧૩૭. આવી શંકા ધાય છે.

રજ્જુના જ્ઞાનથી સર્પની નિવૃત્તિ ઘને નહિ. કેમકે 'મિથ્યા

૧૨. સીમાકરણ. અન્યથી ભિન્ન કરી જગારનાર રગુ તેનેકરી સીમા
કરાયટ. રગુ ડેટણુ.

૧૩. માધ યવેટ. ત્રિકાલ અભાવને અને ત્રિજાન અભાવના નિધવને
'માધ' કહે છે.

૪ તાંગ.) અનિર્વચનીયજ્ઞ્યાનિમાં વાદીની શંકાનું સમાધાન. ૨૬૯

‘વસ્તુનું જે અધિષ્ઠાન હોય, તે અધિષ્ઠાનના જ્ઞાનથી
‘મિથ્યાની નિવૃત્તિ થાય છે’, એ અદ્વૈતવાદનો સિદ્ધાન્ત છે.
અને મિથ્યા સર્પનું અધિષ્ઠાન રજ્જુઉપહિતચેતન છે, રજ્જુ નહિ.
પથી રજ્જુના ઘાનથી સર્પની નિવૃત્તિ વને નહિ. એ શંકાનું

૧૩૮. આ સમાધાન છે.

(રજ્જુનું ઘાન જ સર્પના અધિષ્ઠાનનું ઘાન છે.)

રજ્જુ આદિક જડ પદાર્થનું ઘાન, અંતઃકરણની વૃત્તિરૂપ
થાય, ત્યાં આવરણમંગ વૃત્તિનું પ્રયોજન છે. તે આવરણ, અજ્ઞાન-
ની શક્તિ છે. પથી આવરણ જડને આશ્રિત છે નહિ,
કિન્તુ જડનું અધિષ્ઠાન જે ચેતન, તેને આશ્રિત છે; પથી રજ્જુ-
સમાનાકાર અંતઃકરણની વૃત્તિએ રજ્જુઅવચ્છિન્નચેતનનું જ આવ-
રણ મંગ થાય છે; વૃત્તિમાં જે ચિદાભાસ છે, તેથી રજ્જુનો
પ્રકાશ થાય છે. ચેતન સ્વયંપ્રકાશ છે; તેમાં આભાસનો ઉપ-
યોગ નથી. એ પ્રક્રિયા સંપૂર્ણ આગલ (અંક ૧૮૭ માં) પ્રતિ-
પાદન કરીશું. એ રીતિએ ચિદાભાસસહિત અંતઃકરણની વૃત્તિ-
રૂપ જ્ઞાનમાં, જે વૃત્તિમાંગ, તેનું આવરણમંગરૂપ ફલ (રજ્જુ-
ઉપહિત) ચેતનમાં થાય છે, અને ચિદાભાસમાંગનું પ્રકાશ-
રૂપ ફલ રજ્જુમાં થાય છે. પથી વૃત્તિજ્ઞાનનો કેવલ જડરજ્જુ
વિષય નથી, કિન્તુ અધિષ્ઠાનચેતનસહિત રજ્જુ, સામાસ
(નામ ચિદાભાસસહિત) વૃત્તિનો વિષય છે. એ કારણથી
સિદ્ધાન્ત ગ્રંથમાં આ લખ્યું છે:-‘અંતઃકરણજન્ય સર્વ વૃત્તિજ્ઞાન,
‘બ્રહ્મને વિષય કરે છે’ (=આવરણ મંગ કરે છે.) એ પ્રકારે રજ્જુ-
જ્ઞાનથી નિરાવરણ થઈને, સર્પના અધિષ્ઠાન-રજ્જુઅવચ્છિન્નચે-
તનનું પળ, નિજપ્રકાશથી, માન થાય છે. પથી રજ્જુનું જ્ઞાન
જ સર્પના અધિષ્ઠાનનું જ્ઞાન છે, તેથી સર્પની નિવૃત્તિ સંભવે છે.

૨૬૮ ઉત્તમઅધિકારીને ઉપદેશ. સ્વાતિવિચાર. (વિચારસાગર.

તે અવિદ્યાનો પરિણામ છે. તેમ રજ્જુઅવહિંદ્ર અધિષ્ઠાન-
ચેતન, સત્સ્વરૂપ છે; સર્પ અને તેનું જ્ઞાન સત્યી વિલક્ષણ (અનિ-
ર્વચનીય) છે; યથી રજ્જુસર્પ અને તેનું જ્ઞાન, 'અધિષ્ઠાન-
ચેતનથી વિપરીત સ્વભાવવાલો,' 'અન્યથાસ્વરૂપ' નામ ચેતન-
થી અન્ય પ્રકારનો, આકાર છે. (=સ્વઅવસ્થાન ત્યજ્યા વિના
અવસ્થાન્તરપ્રાપ્તિ જેની યવા ચેતનનો તે વિવર્ત છે.)

૧૩૬. (મ્રમસ્થાનમાં વિપયનું અને તેના જ્ઞાનનું ઉપાધિ-
ભેદથી અધિષ્ઠાન ભિન્ન છે.)

મિથ્યા સર્પનું અધિષ્ઠાન રજ્જુઉપહિતચેતન છે, રજ્જુ
નહિ. કેમકે સર્પની પેઠે રજ્જુ પળ કલ્પિત છે. કલ્પિત યસ્તુ
અન્ય કલ્પિતનું અધિષ્ઠાન યને નહિ, યથી રજ્જુઉપહિતચેતન
જ અધિષ્ઠાન છે, રજ્જુ નહિ. અને રજ્જુવિશિષ્ટ(ચેતન)ને અધિ-
ષ્ઠાન કહિયે, તો પળ રજ્જુ અને ચેતન યંને અધિષ્ઠાન યશે;
ત્યાં રજ્જુભાગમાં અધિષ્ઠાનત્વ યાધિતં છે. યથી રજ્જુઉપહિત-
ચેતન જ અધિષ્ઠાન છે; રજ્જુવિશિષ્ટચેતન નહિ.

તેમ સર્પના જ્ઞાનનું, સાક્ષિ ચેતન અધિષ્ઠાન છે. ય રીતિય
મ્રમસ્થાનમાં, વિપયનું અને તેના જ્ઞાનનું, ઉપાધિભેદથી,
અધિષ્ઠાન ભિન્ન છે, યક નહિ. અને વિશેષરૂપથી રજ્જુની અપ્ર-
તીતિ, અવિદ્યામાં શોમદ્વારા, યંનેની ઉત્પત્તિમાં નિમિત્ત છે;
તેમ રજ્જુનું જ્ઞાન યંનેની નિવૃત્તિમાં પળ નિમિત્ત કાનું છે.
ય વિષે

૧૩૭. આવી શંકા યાય છે.

રજ્જુના જ્ઞાનથી સર્પની નિવૃત્તિ યને નહિ. કેમકે. 'મિષ્ટ્યા

૧૨. શીમાદરણ. અન્યથી ભિન્ન યી જગત્કાર રજ્જુ તેનેદરી શીમા
જગત્કાર. રજ્જુ હેટુ.

૧૩. યાધ યદેટુ. વિદ્યાદ ભયાયને અને વિદ્યાદ ભયાયના નિધયને
'યાધ' કદે છે.

૪ તરંગ.) અનિર્વચનીયલ્પ્યાતિમાં વાદીની શંકાનું સમાધાન. ૨૧૨

‘વસ્તુનું જે અધિષ્ઠાન હોય, તે અધિષ્ઠાનના જ્ઞાનથી
‘મિથ્યાની નિવૃત્તિ થાય છે’, એ અદ્વૈતવાદનો સિદ્ધાન્ત છે.
અને મિથ્યા સર્પનું અધિષ્ઠાન રજ્જુઉપહિતચેતન છે, રજ્જુ નહિ.
પથી રજ્જુના જ્ઞાનથી સર્પની નિવૃત્તિ વને નહિ. એ શંકાનું

૧૩૮. આ સમાધાન છે.

(રજ્જુનું જ્ઞાન જ સર્પના અધિષ્ઠાનનું જ્ઞાન છે.)

રજ્જુ આદિક જડ પદાર્થનું જ્ઞાન, અંતઃકરણની વૃત્તિરૂપ
થાય, ત્યાં આવરણભંગ વૃત્તિનું પ્રયોજન છે. તે આવરણ, અજ્ઞાન-
ની શક્તિ છે. પથી આવરણ જડને આશ્રિત છે નહિ,
કિન્તુ જડનું અધિષ્ઠાન જે ચેતન, તેને આશ્રિત છે; પથી રજ્જુ-
સમાનાકાર અંતઃકરણની વૃત્તિએ રજ્જુઅવચ્છિન્નચેતનનું જ આવ-
રણ ભંગ થાય છે; વૃત્તિમાં જે ચિદાભાસ છે, તેથી રજ્જુનો
પ્રકાશ થાય છે. ચેતન સ્વયંપ્રકાશ છે; તેમાં આભાસનો ઉપ-
યોગ નથી. એ પ્રક્રિયા સંપૂર્ણ આગલ (અંક ૧૮૭ માં) પ્રતિ-
પાદન કરીશું. એ રીતિએ ચિદાભાસસહિત અંતઃકરણની વૃત્તિ-
રૂપ જ્ઞાનમાં, જે વૃત્તિભાગ, તેનું આવરણભંગરૂપ ફલ (રજ્જુ-
ઉપહિત) ચેતનમાં થાય છે, અને ચિદાભાસભાગનું પ્રકાશ-
રૂપ ફલ રજ્જુમાં થાય છે. પથી વૃત્તિજ્ઞાનનો કેવલ જડરજ્જુ
વિષય નથી, કિન્તુ અધિષ્ઠાનચેતનસહિત રજ્જુ, સામાસ
(નામ ચિદાભાસસહિત) વૃત્તિનો વિષય છે. એ કારણથી
સિદ્ધાન્ત ગ્રંથમાં આ લખ્યું છે:—‘અંતઃકરણજન્ય સર્વ વૃત્તિજ્ઞાન,
‘બ્રહ્મને વિષય કરે છે’ (=આવરણ ભંગ કરે છે.) એ પ્રકારે રજ્જુ-
જ્ઞાનથી નિરાવરણ થઈને, સર્પના અધિષ્ઠાન-રજ્જુઅવચ્છિન્નચે-
તનનું પળ, નિજપ્રકાશથી, જ્ઞાન થાય છે. પથી રજ્જુનું જ્ઞાન
જ સર્પના અધિષ્ઠાનનું જ્ઞાન છે, તેથી સર્પની નિવૃત્તિ સંભવે છે.

૧૩૯. અન્યશંકા.

યદ્યપિ ય રીતિય સ પં ની નિવૃત્તિ રજ્જુના જ્ઞાનથી સંભવે છે, તથાપિ સ પં ના જ્ઞા ન ની નિવૃત્તિ સંભવે નહિ. કેમકે, સર્પનું અધિષ્ઠાન રજ્જુઅવચ્છિદ્ધચેતન છે; અને સર્પના જ્ઞાનનું અધિષ્ઠાન સાક્ષિચેતન છે. પૂર્વોક્ત પ્રકારથી રજ્જુજ્ઞાનથી રજ્જુ-અવચ્છિદ્ધચેતનનું જ જ્ઞાન થાય છે, સાક્ષિચેતનનું (જ્ઞાન) નહિ. યથી રજ્જુનું જ્ઞાન થયાથી પણ, સર્પજ્ઞાનનું અધિષ્ઠાન સાક્ષિચેતન અજ્ઞાત છે; અને અજ્ઞાત અધિષ્ઠાનમાં કલ્પિતની નિવૃત્તિ થાય નહિ; કિંતુ જ્ઞાત અધિષ્ઠાનમાં જ કલ્પિતની નિવૃત્તિ થાય છે. યથી રજ્જુજ્ઞાનથી સ પં જ્ઞા ન ની નિવૃત્તિ થને નહિ. તે (શંકા)નું-

૧૪૦. સમાધાન આ છે.

વિષયને અર્થીન જ્ઞાન થાય છે. વિષય જે સર્પ, તેની નિવૃત્તિ થતે જ, સર્પના જ્ઞાનની, વિષયના અભાયથી, પોતાની મેલે જ નિવૃત્તિ થાય છે.

૧૪૧. અને જો યમ કહે કે:-'કલ્પિત(જ્ઞાન)ની નિવૃત્તિ 'અધિષ્ઠાનજ્ઞાન વિના થાય નહિ; અને સર્પનું જ્ઞાન પણ કલ્પિત છે, તેનું અધિષ્ઠાન સાક્ષિચેતન છે, તે(સાક્ષિચેતન)ના જ્ઞાન 'વિના કલ્પિત સર્પના જ્ઞાનની નિવૃત્તિ થને નહિ.'

૧૪૨. તેનું સમાધાન આ છે:-નિવૃત્તિ એ પ્રકારની હોય છે. યક તો અત્યંતનિવૃત્તિ હોય છે; અને યીર્જી કારણમાં જે હય તે પણ નિવૃત્તિ કહેવાય છે. [કારણમહિત કાર્યનો નિવૃત્તિ અત્યંતનિવૃત્તિ કહેવાય છે.] સર્પ કલ્પિત વસ્તુનું કારણ, અધિષ્ઠાનને આધિત અજ્ઞાન છે. તે અજ્ઞાન(કલ્પ

૧૪. જેમ દુગ્ધને અર્થીન અગ્નિ છે; તેમ દુગ્ધનકલ્પ વિષયને અર્થીન જ્ઞાન-કલ્પ અગ્નિ છે. દુગ્ધનો નાશ થવેથી અગ્નિ પ્રગટ થને નથી.

૪ તાંગ) ઉપાધિ૯ ચેતનનો ભેદ દેશાય છે પણ સ્વરૂપે નથી. ૨૭૧

કારણ)સહિત કલ્પિત કાર્ય(વસ્તુ)ની (અત્યત) નિવૃત્તિ તો, અધિષ્ઠાનજ્ઞાનથી જ થાય છે. પરંતુ કારણમાં લયરૂપ જે નિવૃત્તિ, તે અધિષ્ઠાનજ્ઞાન વિના પણ થાય છે. જેમ સુપુત્રિ અને પ્રલયમા સર્પ પદાર્થનો અજ્ઞાનમાં લય, અધિષ્ઠાનજ્ઞાનના વિના, થાય છે. ત્યા સર્વ પદાર્થના લયમાં નિમિત્ત, ભોગના સન્મુખ કર્મનો અભાવ છે તેમ અધિષ્ઠાનસાક્ષીના જ્ઞાન વિના પણ સર્પજ્ઞાનનો (સાક્ષિ આધિત અવિદ્યારૂપ કારણમા) લય થાય છે. ત્યા સર્પજ્ઞાનનો વિષય જે સર્પ, તે(સર્પ)નો અભાવ સર્પજ્ઞાનના લયમા નિમિત્ત છે એ પ્રકારે સર્પની નિવૃત્તિ રજ્જુજ્ઞાનથી થાય છે. અને સર્પજ્ઞાનનો વિષય જે સર્પ તેના અભાવથી, સર્પજ્ઞાનનો લય થાય છે

૧૪૩ અથવા સર્પ અને તેજુ જ્ઞાન ઘેની નિવૃત્તિ રજ્જુજ્ઞાનથી જ થાય છે કેમકે, જ્યારે રજ્જુ પ્રત્યક્ષ જ્ઞાન થાય, ત્યારે અત્ત કરણની વૃત્તિ નેત્રદ્વારા નીકળીને રજ્જુદેશમાં પ્રાપ્ત થાય છે, અને રજ્જુના સમાન વૃત્તિના આકાર થાય છે એથી રજ્જુના પ્રત્યક્ષ (જ્ઞાન) સમયે, વૃત્તિઉપહિતચેતન અને રજ્જુઉપહિતચેતન બને એક થાય છે, તેમના ભેદ રહેતો નથી એમા આ હેતુ છે -ચેતનના સ્વરૂપે તો ભેદ કહી પણ નથી, કિન્તુ ઉપાધિના ભેદે ચેતનના ભેદ થાય છે વૃત્તિઉપહિતચેતન અને રજ્જુઉપહિતચેતનના ભેદક ઉપાધિ, વૃત્તિ અને રજ્જુ છે તે વૃત્તિ અને રજ્જુ ભિન્ન ભિન્ન દેશમા સ્થિત હોય, ત્યારે તા ઉપાધિગાળ્યા ચેતનના ભેદ હાય છે, પણ બને ઉપાધિ એક દેશમા સ્થિત હોય, ત્યારે ઉપહિતચેતનનો ભેદ બને નહિ, એ વાસ્તી (ધર્મરાજ અધ્ધરીન્દ્રવરતે) વેદાન્તપરિભાષાદિક ગ્રન્થમા લખી છે ભિન્ન દેશમા સ્થિત ઉપાધિથી જ ઉપહિત ચેતનના ભેદ થાય છે એક દેશમા જ્યારે બને ઉપાધિ પણ

સ્થિત હોય, ત્યારે ધંને ઉપાધિય ઉપહિતચેતન પણ એક જ હોય છે. એ પ્રકારથી રજ્જુના પ્રત્યક્ષજ્ઞાન સમયે, રજ્જુઉપહિત-ચેતન અને વૃત્તિઉપહિતચેતન એક છે. ત્યાં સાક્ષિચેતન જ વૃત્તિઉપહિતચેતન છે; કેમકે, અંતઃકરણ અને તેની વૃત્તિમાં સ્થિત, જે તેમનો પ્રકાશક ચેતનમાત્ર, તે સાક્ષી કહેવાય છે. એ રીતિય રજ્જુજ્ઞાનસમયે, સાક્ષિચેતન અને રજ્જુઉપહિત-ચેતનનો અભેદ થાય છે. અને રજ્જુઉપહિતચેતનનું રજ્જુજ્ઞાને-કરી ભાન થાય છે, અને રજ્જુઉપહિતચેતનથી અભિન્ન સાક્ષીનું પણ, રજ્જુજ્ઞાનેકરી ભાન થાય છે. એ પ્રકારથી રજ્જુજ્ઞાનસમયે, અધિષ્ઠાનસાક્ષીનું ભાન હોવાથી, કલ્પિત સર્પજ્ઞાનની નિવૃત્તિ સંભવે છે.

(સર્વ ત્રિપુટીઓના જ્ઞાનમાં અધિષ્ઠાનસાક્ષીનું જ્ઞાન હોય છે.)

૧૪૪. કિંવા:- (પંચદશીનામે પ્રથના) કૂટસ્થ દીપમાં વિદ્યારણ્યસ્વામીય આ પ્રક્રિયા કહી છે:- 'આભાસ સહિત 'અંતઃકરણની વૃત્તિ, ઇન્દ્રિયદ્વારા નીકળીને, ઘટાદિક વિષયને 'પ્રકાશે છે. ઘટાદિક વિષય (જ્ઞેય), અને તેમ આભાસસહિત 'વૃત્તિરૂપ તે(ઘટ)નું જ્ઞાન, તથા આભાસસહિત અંતઃકરણ-રૂપ જ્ઞાતા, એ ત્રણેને સાક્ષી પ્રકાશે છે.'

'ઐં ઘટ છે' એ રીતિય આભાસસહિત વૃત્તિય ઘટમાત્રનો પ્રકાશ થાય છે. 'હું ઘટને જાણું છું' એ રીતિય 'હું' શબ્દનો અર્થ જ્ઞાતા, અને જ્ઞેય (જે) ઘટ, અને તેનું જ્ઞાન, એ ત્રિપુટીનો સાક્ષીવકરી પ્રકાશ થાય છે. એ પ્રકારથી સર્વ ત્રિપુટી-

૧૫. યદું જ્ઞાન તે ન્યાયમતમાં 'વ્યવસાય' જ્ઞાન કહેવાય છે.

૧૬. વ્યવસાયજ્ઞાનનું જે જ્ઞાન તેને ન્યાયમતમાં 'અનુબ્ધવસાયજ્ઞાન' કહેવાય છે. શ્વેદાન્તમતમાં વ્યવસાયજ્ઞાનને 'વૃત્તિજ્ઞાનવિશેષ' કહે છે; અને અનુબ્ધવસાય-જ્ઞાનને 'સાક્ષિજ્ઞાન' કહે છે, કારણ કે એ જ્ઞાન ત્રિપુટીનું પ્રકાશક છે.

૪ તાંગ.) ઉપાવિષ્ ચેતનનો ભેદ દેખાય છે પણ સ્વરૂપે નથી. ૨૭^૩

ઓનો પ્રકાશક સાક્ષી છે. સાક્ષી પોતે અજ્ઞાન હોય તો, ત્રિપુટીનું જ્ઞાન સાક્ષીપૂર્વક વને નહિ. ઈથી સર્વ ત્રિપુટી-ઓના જ્ઞાનમાં સાક્ષીનું જ્ઞાન અવશ્ય થાય છે. તે સાક્ષીજ્ઞાન-થી સર્પજ્ઞાનની નિવૃત્તિ સંભવે છે. એ પૂર્વ રીતિએ સર્પ અને તેના જ્ઞાનનું અધિષ્ઠાન મિશ્ર મિશ્ર કહ્યું, તેમાં ઘટલાં શંકા-સમાધાન છે. [એ પક્ષમાં શંકાસમાધાનરૂપ વિવાદ અન્ય પણ વહુ છે.]

(ભ્રમસ્થાનમાં વિચર્તોપાદાનકારણરૂપ અધિષ્ઠાન સાક્ષી છે.)

૧૪૫. ઈથી સર્પ અને તે(સર્પ)ના જ્ઞાનનું અધિષ્ઠાન એક જ છે, એ પક્ષ કહિયે છિયે. ત્યાં વાહ્ય જે રજ્જુચેતન છે, તેને સર્પ અને તેના જ્ઞાનનું અધિષ્ઠાન કહિયે તો વને નહિ. કેમકે, જેટલાં જ્ઞાન હોય છે તે પ્રમાતા અથવા સાક્ષીને આશ્રિત હોય છે. વાહ્ય જે રજ્જુચેતન, તેને આશ્રિત જ્ઞાન વને નહિ. તેમ સર્પ અને સર્પના જ્ઞાનનું અધિષ્ઠાન, અંતઃકરણઉપહિત સાક્ષિ-ચેતનને માનિયે, તો શરીરના અંતર અંતઃકરણદેશમાં સર્પની પ્રતીતિ જોઈયે, રજ્જુદેશમાં સર્પની પ્રતીતિ ન જોઈયે. અંતર ઉપજ્યા સર્પની વહિરપ્રતીતિ માયાના વલયી માનિયે તો, 'આ ત્મ સ્વ્યા તિ મ ત' ની સિદ્ધિ થશે. (કે જે ઓટી છે એવું પૂર્વે સિદ્ધ થયું છે.) એ રીતિએ રજ્જુઉપહિતચેતન, (સર્પના) જ્ઞાનનું અધિષ્ઠાન વને નહિ; અને અંતઃકરણઉપહિતચેતન, સર્પનું અધિષ્ઠાન વને નહિ. ઈથી સર્પ અને તે(સર્પ)ના જ્ઞાનનું અધિષ્ઠાન એક વને નહિ. તથાપિ રજ્જુના સમીપપ્રાપ્તા જે અંતઃકરણની શ્દમાકારવૃત્તિ (આ છે એવા આકારવાલી વૃત્તિ), તેમાં સ્થિતચેતનને આશ્રિત (જે) અવિદ્યા, (તે અવિદ્યા) સર્પા-કાર અને જ્ઞાનાકાર પરિણામને પ્રાપ્ત થાય છે. વૃત્તિઉપહિત-ચેતનમાં સ્થિતા અવિદ્યાનો તમોગુણઅંશ, સર્પનું (પરિ-

ણામિ) ઉપાદાનકારણ છે; અને તે(અવિદ્યા)માં જ સ્થિત સર્વ-
ગુણઅશ સર્પના જ્ઞાનનું (પરિણામિ) ઉપાદાનકારણ છે.
સર્પ અને તેના જ્ઞાનનું, વૃત્તિઉપહિતચેતન અધિષ્ઠાન (=વિવર્તો-
પાદાન કારણ) છે. વૃત્તિ રજ્જુદેશમાં વહિર્ ગઈ, પથી વૃત્તિઉ-
પહિતચેતન પણ વહિર્ છે; પથી સર્પનો આશ્રય (અધિષ્ઠાન)
બને છે. જેટલું અંતઃકરણનું સ્વરૂપ હોય ષટ્તલું જ સાક્ષીનું
સ્વરૂપ હોય છે. શરીરના અંતર્સ્થિત જે અંતઃકરણ, તે જ
વૃત્તિસ્વરૂપપરિણામને પ્રાપ્ત થાય છે; પથી વૃત્તિઉપહિતચેતન
સાક્ષી છે; પથી (સર્પના) જ્ઞાનનો આશ્રય બને છે. રજ્જુનો
જ્યારે સાક્ષાત્કાર થાય, ત્યારે રજ્જુચેતન અને વૃત્તિચેતન બંને
એક થાય છે. પથી રજ્જુના જ્ઞાનથી સર્પ અને તે(સર્પ)ના
જ્ઞાનનો નિવૃત્તિ પણ બને છે.

૧૪૬. જ્યાં એક રજ્જુમાં, દશ પુરુષને, ફોઈને સર્પ, ફોઈને
વંદ, ફોઈને માલા, ફોઈને પૃથિવીની ફાટ, ફોઈને જલની
ધારા, પથી રીતિએ ભિન્ન ભિન્ન પ્રતીતિ થાય, અથવા સર્પને
સર્પ જ પ્રતીત થાય, ત્યાં જે પુરુષને રજ્જુનો સાક્ષાત્કાર
થાય છે, તેની વૃત્તિચેતનમાં કલ્પિત અધ્યાસની (મિથ્યા સર્પ
અને સર્પજ્ઞાનનો) નિવૃત્તિ થાય છે. જેને રજ્જુજ્ઞાન નહિ થાય
તેના અધ્યાસની નિવૃત્તિ થાય નહિ. પથી વૃત્તિ(ઉપહિત)-
ચેતન જ કલ્પિતનું અધિષ્ઠાન છે, રજ્જુ આદિક વિષય—ઉપ-
હિતચેતન (અધિષ્ઠાન) નહિ. જો રજ્જુઉપહિતચેતનને સર્પ-
વંદાદિકનું અધિષ્ઠાન માનિયે, તો દશ પુરુષને પ્રતીત જે થાય
દશ પદાર્થ તે એકએકને સર્પ પ્રતીત થયા જોઈયે. અને
અમારી રીતિએ તો જેની વૃત્તિચેતનમાં જે પદાર્થ કલ્પિત છે, તે
તેને જ પ્રતીત થાય; અન્યને નહિ. એ રીતિએ ઘાટસપાંદિષ
અને તેના જ્ઞાનનું, વૃત્તિઉપહિતસાક્ષી, અધિષ્ઠાન છે. મ્યગ્ના

પદાર્થ અને તેમના જ્ઞાનનું પણ અંતઃકરણઉપહિતસૌક્ષી જ અધિષ્ઠાન છે. ૫ પ્રકારે સત્સસત્થી વિલક્ષણ જે અનિર્વચનીય-અધિષ્ઠાનો પરિણામ, અનિર્વચનીય સર્પાદિક, -તેમની 'હ્યાતિ' નામ પ્રતીતિ અને કથન; તે 'અનિર્વચનીયહ્યાતિ' કહેવાય છે. ૫૦.

૧૪૭. શિષ્ય ઉવાચ.

(આ જગત્ના આધારવિષે શિષ્યનું પ્રશ્ન.)

હો.

મિથ્યા પ્રતીત થાય આ, જેમાં જગત્ અપાર,
તે ભગવન્ ! મુજને કહો, કો પનો આધાર. ૫૧.

(હે સદ્ગુરો ! આ અપાર જગત્ જેમાં મિથ્યા પ્રતીત થાય છે, યવો આ જગત્નો આધાર કોણ છે તે મને કહો.)

૧૪૮. શ્રીગુરુવાચ.

(મિથ્યા જગત્નો આધાર તથા અધિષ્ઠાન તું હું)

હો.

તવ નિજરૂપ અજ્ઞાનથી, થયું મિથ્યા જગંમાન;
અધિષ્ઠાન, આધાર, તું, રજ્જુમુજંગ સમાન. ૫૨.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! તારું જે 'નિજરૂપે' નામ બ્રહ્મરૂપે કરીને અજ્ઞાન, તેથી મિથ્યા જગત્ પ્રતીત થાય છે, યથી જગત્નો આધાર અને અધિષ્ઠાન તું હું. જેમ રજ્જુના અજ્ઞાનથી મિથ્યા સર્પ પ્રતીત થાય છે, ત્યાં મિથ્યા સર્પનો આધાર અને અધિષ્ઠાન રજ્જુ છે. યદ્યપિ મિથ્યા સર્પનું અધિષ્ઠાન મુખ્ય, દ્વિતીય-પક્ષમાં, વૃત્તિઉપહિતચેતન છે, અને પ્રથમપક્ષમાં રજ્જુઉપહિત-ચેતન છે, કોઈ પક્ષમાં (એકલી) રજ્જુ અધિષ્ઠાન નથી. તથાપિ પ્રથમ પક્ષમાં ચેતનમાં અધિષ્ઠાનત્વનો ઉપાધિ રજ્જુ છે, યથી સ્થૂલ દષ્ટિ, રજ્જુ અધિષ્ઠાન કહેવાય છે. જેમ મિથ્યા-

સર્પનું અધિષ્ઠાન તથા આધાર રજ્જું છે, તેમ મિથ્યા જગત્તું અધિષ્ઠાન તથા આધાર તું છે.

૧૪૯. (આત્માનું સામાન્ય-વિશેષરૂપ. જે સામાન્યરૂપ છે તે આધાર છે, અને જે વિશેષરૂપ છે તે અધિષ્ઠાન છે.)

૫ સ્થાનમાં આ રહસ્ય છે:—જેમ રજ્જુનાં યે સ્વરૂપ છે—
 ૧. એક તો સામાન્યરૂપ છે, એક વિશેષરૂપ છે. સામાન્યરૂપ 'ઈ' ('આ') છે, અને વિશેષરૂપ 'રજ્જુ' છે. 'આ સર્પ છે,' ૫
 રીતિપ મિથ્યા સર્પસાયે અભિપ્ર (એકરૂપ) થઈને જ્ઞાન્તિકાલ-
 માં પણ પ્રતીત ધાય જે 'આ' રૂપ, તે 'સામાન્યરૂપ' છે, અને
 જે સ્વરૂપની જ્ઞાન્તિકાલમાં પ્રતીતિ ન ધાય, વિન્નુ જેની
 પ્રતીતિ ધવાથી જ્ઞાન્તિ દૂર ધાય, તે રજ્જુનું 'વિશેષરૂપ'
 છે. તેમ આત્માનાં પણ યે સ્વરૂપ છે,—એક સામાન્યરૂપ અને
 યે વિશેષરૂપ. સત્-રૂપ સામાન્ય (રૂપ) છે. અસંગતા, કૃટ-
 સ્યતા, નિત્યમુક્તાદિક, વિશેષરૂપ છે. કેમકે: "સ્થૂલગૂરુમ-
 સંઘાત 'ઉ'." એમાં સ્થૂલગૂરુમસંઘાતની જ્ઞાન્તિમયે પણ
 મિથ્યા સંઘાતમાયે અભિપ્ર થઈને સત્ (ઉ) રૂપ પ્રતીત
 ધાય છે. યથી આત્માનું 'સત્' સ્વરૂપ સામાન્યરૂપ છે અને સ્થૂલ-
 ગૂરુમસંઘાતની જ્ઞાન્તિમયે, આત્માનું અસંગ, કૃટસ્ય, નિત્ય-
 મુક્ત સ્વરૂપ પ્રતીત ધાય નહિ. વિન્નુ અસંગાદિસ્વરૂપ-
 આત્માની પ્રતીતિ થયેથી, સંઘાતજ્ઞાન્તિ કૃટ ધાય છે. યથી અસંગતા,
 કૃટસ્યતા, નિત્યમુક્તા, સ્વાયમતાદિક (આત્માની) 'વિશેષ
 રૂપ' છે. સર્વ જ્ઞાન્તિમાં સામાન્યરૂપ 'આધાર' કહેવાય
 છે, અને વિશેષરૂપ 'અધિષ્ઠાન' કહેવાય છે. એમ સર્વનો
 આધાર જે રજ્જુ. તેનું સામાન્ય 'ઈ' (આ) સ્વરૂપ સર્વનો
 આધાર છે, અને વિશેષ 'રજ્જુ' સ્વરૂપ (સર્પનું) અધિષ્ઠાન છે
 તેમ મિથ્યા પ્રાણનો આધાર જે જ્ઞાન્તિ, તેનું સામાન્ય સત્-રૂપ,

પ્રપંચનો આધાર છે; અને અસંગતાદિ વિશેષરૂપ અધિષ્ઠાન છે. આ રીતિ આધાર અને અધિષ્ઠાનનો કિંચિત્ ભેદ, સર્વજ્ઞાત્માનાં નામે મુનિષ (સંશ્લેષશાસીરૂઢ ગ્રંથમાં) પ્રતિપાદન કર્યો છે. ૫૨.

૧૫૦. ઝિવ્ય ઉવાચ.

(જગત્ના અધિષ્ઠાન આત્માથી દ્રષ્ટા ભિન્ન હોયો જોઈયે.)

હો.

મગવન્ ! મિથ્યા જગત્નો, દ્રષ્ટા કો કહિયે ય;

અધિષ્ઠાન, આધાર જે, દ્રષ્ટા થાય ન તેય. ૫૩.

અર્થ સ્પષ્ટ. માથ આ છે:-જગત્નો આધાર અને અધિષ્ઠાન આત્મા છે, યથી જગત્નો દ્રષ્ટા (દેખનાર) આત્માથી ભિન્ન કહ્યો જોઈયે; જેમ સર્પનો આધાર અને અધિષ્ઠાન જે રજ્જુ, તેનાથી ભિન્ન પુરુષ, સર્પનો દ્રષ્ટા છે. ૫૩.

૧૫૧. શ્રીગુરુરુવાચ.

(સર્વત્ર કલ્પિતનું અધિષ્ઠાન જ દ્રષ્ટા છે.)

ઘોષાઈ.

મિથ્યા વસ્તુ જગત્માં જે છે, અધિષ્ઠાનમાં કલ્પિત તે છે;

અધિષ્ઠાન તે દ્વિવિધ પીછાળો, ચેતન ઇક, ઘીજું જડ માનો. ૫૪.

અધિષ્ઠાન જડ વસ્તુ જહાં છે, દ્રષ્ટા તેથી ભિન્ન તહાં છે,

જહાં હોય ચેતન આધાર, તહાં ભિન્ન દ્રષ્ટા નહિ ઘાર. ૫૫.

અર્થ સ્પષ્ટ. માથ આ છે:-જ્યાં જડ અધિષ્ઠાન હોય, ત્યાં અધિષ્ઠાનથી ભિન્ન દ્રષ્ટા હોય છે જ્યાં ચેતન અધિષ્ઠાન હોય, ત્યાં અધિષ્ઠાન જ દ્રષ્ટા હોય છે, ભિન્ન (દ્રષ્ટા) નહિ. ૫૫.

હો.

ચેતન, મિથ્યા સ્વપ્નનું, અધિષ્ઠાન નિર્ધાર;

તેહ જ દ્રષ્ટા, ભિન્ન નહિ; તેમ જ જગત્ વિચાર. ૫૬.

૫૬.

૧૭. શંકરના પ્રકિત્ત્વ અને દેવેશ્વરના શિષ્ય સર્વશાત્મન્ મુનિ. ઇમના સમયમાં મનુકુલાદિત્વ રાજા હતા.

ટીકા:—જેમ સ્વપ્નનું અધિષ્ઠાન સાક્ષિચેતન છે, તે જ (સાક્ષિ-
ચેતન) સ્વપ્નનો દ્રષ્ટા છે; તેમ જગત્નું આત્મા જ અધિષ્ઠાન
છે, તે જ (આત્મા) દ્રષ્ટા છે. એ શંકા અને સમાધાન, સ્થૂલ-
દષ્ટિય રજ્જુને સર્પનું અધિષ્ઠાન માનીને, કહ્યાં છે. અને સિદ્ધાન્ત-
મતમાં તો સર્પનું અધિષ્ઠાન સાક્ષિચેતન છે, તે જ દ્રષ્ટા
છે. યથી સર્વ કલ્પિતનો અધિષ્ઠાન જ દ્રષ્ટા છે. શંકાસમા-
ધાન બને નહિ. ૫૬.

૧૫૨. ૩૬૦.

इम मिथ्या संसार-दुःख, थाय तुमां भ्रमभान;
तेनी शी निवृत्ति तुं, इच्छुं शिष्य सुजान. ५७.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! એ રીતિય તું-વિષે સંસારરૂપી દુઃખ
મિથ્યા જ ભ્રાન્તિથી પ્રતીત થાય છે. તે મિથ્યાની નિવૃત્તિની
ઈચ્છા બને નહિ. દષ્ટાન્ત:—જેમ વાજીગરે (માયિકે) મંત્રના
બલથી કોઈ પુરુષને મિથ્યા શત્રુ દેખાડ્યો હોય, તેને મારવા-
વિષે તે પુરુષ ડહોળ નથી કરતો. તેમ મિથ્યા સંસારની
નિવૃત્તિની ઈચ્છા બને નહિ ૫૭.

૧૫૩. શિષ્ય ઉવાચ.

(મિથ્યા સંસાર પણ દુઃખનો હેતુ છે તેથી તેની નિવૃત્તિ-
નો ઉપાય ઈચ્છે છે.)

शोराहं.

यद्यपि जग मिथ्या गुरुदेव ज, तथापि हुं इच्छुं ते छेद् ज;
स्वप्न मयानक जेने भासे, करी साधन जम तेने नाशे. ५८.
एयीं थाय जगहानि जेणे; कहो भगवन् उपाय ज तेने;
तमसमान सद्वृत्त नदि अन्य ज, ध्रवण फुंकी दे अन्य घंचक ज. ५९.

ટીકા:—હે ભગવન્ ! આપે કહ્યું જા-‘જગત્ તારાવિષે મિ-
થ્યારૂપે કરીને છે અને સત્યરૂપે કરીને નથી.’ તે યદ્યપિ

४ तर्ग.) दुःखमय संसारની નિવૃત્તિનો ઉપાય આત્મજ્ઞાન છે. ૨૭૯

સત્ય છે, તથાપિ હે ભગવન્ ! તે મિથ્યારૂપે કરીને, યા જે ઉપાયે કરીને, (જન્મ) મરણાદિક સંસાર મારાચિપે માન ન થાય, તે ઉપાય આપ કહો. અને આપે કહ્યું હતું જે 'મિ-
'થ્યાની નિવૃત્તિને અર્થે સાધન જોડાયે નહિ.' તે યાતાં પણ સત્ય છે. પરંતુ હે ભગવન્ ! જેને મિથ્યા પદાર્થ પણ દુઃખના હેતુ હોય, તેને ય મિથ્યા પણ સાધનેકરી દૂર કરવા યોગ્ય છે. જેમ કોઈ પુરુષને પ્રતિદિન મયાનક સ્વપ્ન આવતાં હોય, તે મિથ્યા પણ છે, પરંતુ તેમને પણ દૂર કરવાને, પાદમશા-
લન અને જપ આદિક નાના સાધનને અનુષ્ઠાન કરે છે. તેમ આ સંસાર મિથ્યા પણ છે, પરંતુ જન્માદિક દુઃખનો હેતુ (સંસાર) મને પ્રતીત થાય છે, યથી સંસારની નિવૃત્તિ ચાહું છું. આપ કૃપા કરીને ઉપાય બતાવો. ૫૯.

૧૫૪. શ્રીગુરુસ્વાચ.

સોરઠો

તે મેં કહ્યું ઘરણી, જે સાધન તે પૃછિયું;

નિજ મન નિશ્ચય આણી, રહે ન રંચક શ્વેદ જગ. ૬૦.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! જગત્ક્રૂપી દુઃખની નિવૃત્તિનું જે સાધન તે પૃછ્યું, તે (આત્મજ્ઞાન છે તે) મેં તુને પ્રથમ જ (અઢ્ક ૧૧૫ અને ૧૨૩ માં) કહી દીધું. તેવિષે તું દૃઢ નિશ્ચય કર. તેથી જગત્ક્રૂપી શ્વેદ રહે નહિ. ૬૦.

૩મો

(સંસારનિવૃત્તિનો ઉપાય આત્મજ્ઞાન છે.)

સ્વાત્માના અજ્ઞાનથી, થાય પ્રતીત જગ શ્વેદ;

નાસે તેના ઘોઘથી, યમ વદે મુનિ-શ્વેદ. ૬૧.

જગત્ હુંમાં નહિ બ્રહ્મ હું, 'અહં બ્રહ્મ' ય જ્ઞાન;

શિષ્ય તને તે મેં કહ્યું, અન્ય ઉપાય ન જાણ. ૬૨.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! પોતાના આત્મસ્વરૂપના અજ્ઞાનથી જગત્-રૂપી લેદ પ્રતીત થાય છે, તે આત્મજ્ઞાનથી મટે છે. જે વસ્તુ જેના અજ્ઞાનથી પ્રતીત થાય, તે તેના જ્ઞાનથી મટે છે, એ નિયમ છે. જેમ રજ્જુના અજ્ઞાનથી સર્પ પ્રતીત થાય છે, તે રજ્જુના વોધથી મટે છે; તેમ આત્મજ્ઞાનથી જગત્ મટે છે. તે આત્મજ્ઞાન અમે કહી દીધું. 'જગત્ તો મારાવિપે ત્રણ કાલમાં 'છે નહિ, કેમકે મિથ્યા છે. જે મિથ્યાવસ્તુ હોય છે તે અધિ- 'ઘાનની હાનિ કરે નહિ. જેમ મરોચિકાનું (હાંશવાનું) જે 'જલ છે, તે પૃથિવીને ભીતી ન કરે; તેમ જગત્ પ્રતીત પણ 'થાય છે પરંતુ મિથ્યા છે, કંઈ મારી હાનિ કરવાવિપે સમર્થ 'છે નહિ. અને (બ્રહ્મ હું છું અને) હું સત્-ચિત્ આનંદરૂપ 'બ્રહ્મસ્વરૂપ છું.' એવો જે નિશ્ચય, તેનું નામ જ્ઞાન છે. તે જ મોક્ષનું સાધન છે. અન્ય કોઈ નથી. તે જ્ઞાન મેં પ્રથમ ઉપદેશ કરી દીધું. ૬૨.

(જ્ઞાનથી જ અજ્ઞાનનો નાશ થાય છે, કર્મઉપાસનાથી નહિ.)

૧૫૫. ડહો.

કર્મ-ઉપાસનાથી નહિ, જગ નિદાન-તમ નાશ;

અંધકાર જમ ગૃહવિપે, જાય ન વિના પ્રકાશ.

૬૩.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! જગત્નું 'નિદાન,' નામ ઉપાદાનકારણ (જે) 'તમ' નામ અજ્ઞાન છે, તે અજ્ઞાનના નાશથી (અજ્ઞાનના કાર્યરૂપ) જગત્નો પોતાની મેલે નાશ થઈ જાય છે. કેમકે, ઉપાદાનનો નાશ થયા પછે કાર્ય રહે નહિ તે અજ્ઞાનનો નાશ કેવલ જ્ઞાનેકરીને છે, કર્મ અને ઉપાસનાપકરીને નાશ

૧૮. અમેદ વોધની દૃઢતાદ્વારા પરોક્ષતા અને પરિહિલ્લતા ભ્રાન્તિની નિવૃત્તિ-અર્થે એ વે વાચ્યોમા ઓતમોત ભાવ દર્શાવ્યો છે. એને (૧૨૧૨) અન્ય અપના વ્યતિહાર પણ કરે છે.

४ तरंग.) शिष्यनो प्रश्नः जीव ब्रह्म एक शी रीते छे ? २८१

यनां नयी, केमके अज्ञाननुं विरोधि ज्ञान छे; कर्मउपासना विरोधि नयी. दृष्टान्तः-जेम गृहनेविषे जे अंधकार छे, ते कोई (अन्या) क्रियाथी दूर थाय नहि, केवल प्रकाशेकरी दूर थाय छे; तेम अज्ञानरूप जे अंधकार छे, ते ज्ञानरूप प्रकाशेकरी दूर थाय छे; अन्य कोई साधनेकरी नयी थतो. ६३.

(ए प्रकारे उपदेशकरी संशय होय ते पूछवा शिष्यने गुरु सूचये छे.)

इहां.

कहो शिष्य उपदेश में, जगभंजक मन धारो;
जे एमां संशय रह्यो, ते तुं पूछ विचारो.

६४

१५६. शिष्य उवाच.

(शिष्यना संशय.)

चोपाई.

भो भगवन् ! जे कई तम भाख्युं, ते सउ सत्य जाणीं मन राख्युं;
जग निदान अज्ञान घराण्युं, तेनुं भंजक ज्ञान पिछाण्युं. ६५.
ज्ञानरूप चर्णन बळीं कीधुं, जगमिथ्या ते में ब्रही लीधुं;
सुखस्वरूप आत्मा परकादयो, आप दयाथी मुजने भादयो. ६६.
बळीं भाख्युं 'तुं ब्रह्म स्वरूप' ते में लह्यो न भेद अनूप;
एमां मुज शंका इक आवे, जीवब्रह्मनो भेद जणावे. ६७.

टीकाः—हे भगवन् ! आपे कह्युं जे ते आपनां चचन हुं सत्य जाणुं छुं. आपे जे कह्युं 'जगत्तुं कारण अज्ञान छे, ते 'अज्ञानने. नाश करीने, जगत्तनी निवृत्ति ज्ञानेकरीने थाय छे.' ते चात्ता में जाणी. ते ज्ञाननुं स्वरूप आपे कह्युंः—'जगत् 'मिथ्या छे (१), अने जीव आनंदस्वरूप छे (२), ते (जीव) 'ब्रह्मथी भिन्न नयी' 'किन्तु ब्रह्मरूप छे (जीव ब्रह्म बंने एक छे.) (३), एवा निश्चयनुं ताम ज्ञान छे. तेनेविषे जगत्

‘મિથ્યા છે (૧), અને જીવ આનંદસ્વરૂપ છે (૨)’, ૫ (વે) વાર્તા
મેં જાણી, પરંતુ ‘જીવ બ્રહ્મ વસ્તુ એક છે’ ૫ (૩) વાર્તા (યથાર્થ)
નથી જાણી. કેમકે જીવબ્રહ્મના ભેદને જણાવવાપાઠી શક્તી
મારા હૃદયમાં સ્ફુરે છે ૬૭

(જીવ બ્રહ્મમાં ભેદ છે એથી એકતા વને નહિ)

૧૫૭. (પ્રમેયગત સંશય.)

ધોષાઈ

પુણ્યપાપનો છુ હુ કર્તા, જન્મમરણ ને સુખદુઃખ ધર્તા,
વહ્લીં અનેક ભાતે જગ ભાસે, ચાહુ જ્ઞાન અજ્ઞાન જ નાસે ૬૮.
જે એથી વિપરીત સ્વરૂપ તેને બ્રહ્મ કહે મુનિભૂય,
કહા એકતા ક્યમ કરી જાણુ રૂપ વિરુદ્ધ હૃદયમાં માનુ. ૬૯.

ટીકા.—હે ભગવન્ ! હુ પુણ્યપાપનો કર્તા છુ અને તેમણુ
જે ફલ, જન્મમરણ અને સુખદુઃખ, તેમને ધારણ કરુ છુ.
અને નાના પ્રકારના જગત્ મારેવિષે પ્રતીત થાય છે અને
જગત્નુ ધારણ જે અજ્ઞાન છે તેને દૂર કરવાને હુ જ્ઞાન ઇચ્છુ
છુ અને બ્રહ્મવિષે ન પુણ્ય છે, ન પાપ છે, ન જન્મ છે ન મરણ
છે, ન સુખ છે, ન દુઃખ છે, અન્ય વાઈ જ્ઞેશ બ્રહ્મવિષે નથી.
અને જ્ઞાનની ઇચ્છા છે નહિ એથી બ્રહ્મણુ અને માગ સ્વરૂપ
પરસ્પર વિરુદ્ધ છે, એથી ધનેનાં એકતા વને નહિ યદ્યપિ
મારેવિષે પણ જન્માદિક સસાર પરમાયકરોતે છે નહિ.
તથાપિ મિથ્યા જે જન્માદિક છે તે મને પ્રાપ્તિએ પ્રતીત થાય છે;
અને બ્રહ્મમાં નથી એથી એટલા ભેદ છે, એકતા વને નહિ ૬૯.

૧૫૮. (પ્રમાણગત સંશય.)

ધોષાઈ

વળા ગુરૂં ધીજો વહ્લીં સદાય, જીવત્રાણપકવ પ્રણયાય;
વહુ વૃથામાં સમ થે પશી, ફલ માગે ફલ ધીજા સ્વચ્છ ૭૦

પ્રકાશ, ભોગરહિત, અસંગ, વેદવચન એ કહે પ્રસંગ;
કર્મ-ઉપાસન વઢી વહુ માયે, જીવ બ્રહ્મ યથી યે રાયે. ૭૧.

ટીકા:—હે ગુરો ! મને એક અન્ય સંશય છે, તે આપ સાંમલો. કેવો એ સંશય છે ! જેથી જીવબ્રહ્મની એકતાનો નિશ્ચય 'પ્રણંશય' નામ દૂર થઈ જાય (છે). તે સંશય હું આપને કહું છું, આપ સાંમલોને તે સંશયને દૂર કરો. વેદવિષે મેં પવું શીટું છે કે:—'એક ચુદ્ધિરૂપી વૃક્ષમાં બે પક્ષી છે; તે બંને 'સમાન છે. તેઓમાંથી એક તો કર્મનાં ફલને ભોગવે છે. એક 'સ્વચ્છ'—નામ શુદ્ધ છે, ભોગરહિત છે, અસંગ છે, અને તે 'ભોગવવાવાલોને પ્રકાશે છે.'

એઓનેવિષે (ભોગ) ભોગવવાવાલો જીવ પ્રતીત થાય છે; અને શીજો પરમાત્મા પ્રતીત થાય છે. યથી એમની એકતા વને નહિ.

અને વેદવિષે કર્મ અને ઉપાસના વહુપ્રકારનાં કહ્યાં છે; તે જીવબ્રહ્મની એકતાવિષે નિષ્ફલ થઈ જશે. કેમકે, આપ જીવબ્રહ્મની જે એકતા કહો છો, તે, બ્રહ્મવિષે જીવના સ્વરૂપનો અંતર્ભાવ કહો છો અથવા જીવવિષે બ્રહ્મના સ્વરૂપનો અંતર્ભાવ કહો છો ? જો કદાચિત્ બ્રહ્મવિષે જીવના સ્વરૂપનો અંતર્ભાવ કહેશે તો જીવને, બ્રહ્મરૂપ હોવાથી, અધિકારીનો અભાવ થશે, યથી કર્મ અને ઉપાસના નિષ્ફલ થશે. અને જો જીવવિષે બ્રહ્મના સ્વરૂપનો અંતર્ભાવ કહેશે, તો બ્રહ્મને, જીવરૂપ હોવાથી, જેની ઉપાસના કરાય છે, તે ઉપાસ્યનો, અભાવ થશે; યથી ઉપાસના નિષ્ફલ થશે, અને કર્મનાં ફલ દેવાવાલો જે પરમાત્મા (ઈશ્વર) તેનો અભાવ થશે; યથી કર્મ નિષ્ફલ થશે. અને મીમાંસક જે કહે છે કે:—'કર્મ 'જ ઈશ્વર છે, તેમનાથી જ ફલ થાય છે.' તે વાર્તા સમીચીન

(સમ્યક્) નથી. કેમકે, જે કર્મ છે તે જડ છે, તેમને ફલ દેવાનું સામર્થ્ય વને નહિ; યથી કર્મનું ફલ ઈશ્વર જ દે છે. ય રીતિય પરમાત્મા અને જીવની યકતા વને નહિ. ૭૧.

૧૫૯. શ્રીગુરુવાચ.

(શિષ્યશંકાના સમાધાનાર્થે ચાર આકાશ અને ચાર ચેત-
નની વ્યવસ્થા દર્શાવે છે.)

ચોપાદ.

ગુણ શિષ્ય યેક કહુ વિચાર, થાય જેથી શંકા નિસ્તાર;
ઘટાકાશ યક, જલઆકાશ, મેઘાકાશ, મહા-આકાશ. ૭૨.
ચાર ભેદ ય નમના જાણ, વર્તી ચેતનના તથા યીછાણ;
યક કૂટસ્થ, જીવ વર્તી કહિયે, ઈશ, બ્રહ્મ, મન જાણી રહિયે. ૭૩.
જ્યારે રૂપ તેમનું તું જાણીશ, ત્યારે નિજ શંકા સડ ભાગીશ;
યથી ગુણ તેનો અવ ભેદ, ગુણે જાય જન્માદિક લેદ. ૭૪.

ટીકા:—જે તને શંકા થઈ છે, તેમનો 'નિસ્તાર' નામ નિરા-
કરણ જેથી થાય, તે વિચાર હું કહું છું. તું સાંભલ. જેમ
યક આકાશમાં ચાર ભેદ છે:—યક (૧) ઘટાકાશ છે,
અને યક (૨) જલાકાશ છે; અને (૩) મેઘાકાશ છે, અને
(૪) મહાકાશ છે; તેમ યક ચેતનના ચાર ભેદ છે:—યક
(૧) કૂટસ્થ છે, અને (૨) જીવ છે, અને (૩) ઈશ્વર છે, અને
(૪) બ્રહ્મ છે. ય ચારે ભેદ, આકાશની પેઠે, ચેતનવિંય છે.
હે શિષ્ય ! જ્યારે યમના સ્વરૂપને તું મલા પ્રકારે યીછાણીશ,
ત્યારે પોતાની શંકાનું તું પોતે જ સમાધાન જાણી રાશ.
યથી હું યમનું સ્વરૂપ ઘર્ણન કરું છું. તું સાંભલ. જેને સાંભલી-
ને સંશયરહિત જ્ઞાન થઈને જન્માદિક દુ:સનો નાશ થશે. ૭૪.

(ચતુર્વિધઆકાશ.)

૧૬૦. અથ ઘટાકાશવર્ણન.

દ્વો.

જલપૂરિત ઘટને જ દેવ યાવત્ નમ અવકાશ;

યુક્તિનિપુણ પંડિત કહે, તેને ઘટ આકાશ.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! જલે ભરેલા ઘટને જેટલું આકાશ અવકાશ દે છે, તેટલા આકાશને પંડિતજન ઘટાકાશ કહે છે. ૭૫

૧૬૧. અથ જલાકાશવર્ણન.

દ્વો.

જલપૂરિત ઘટમાં જ વહી, છે નમનો આભાસ;

ઘટાકાશયુત વિશ જન માપે જલ-આકાશ. ૭૬.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! જલે ભરેલો જે ઘટ છે, તેનેવિપે નક્ષત્રાદિસહિત (ઉપરના) આકાશનું પ્રતિવિંચ થાય છે, તે (જલ વિના પ્રતિવિંચ થાય નહિ એથી ઘટમાંના જલસહિત) આકાશનું પ્રતિવિંચ, અને ઘટાકાશ (ઘટ જેમાં રહેલો છે તે અને ઘટના અન્તરનું આકાશ) એ બે (આકાશ) મળેલાં સતે જલાકાશ કહેવાય છે. ૭૬.

એનાવિપે કોઈ શંકા કરે છે કે:—આકાશનું પ્રતિવિંચ નથી થતું. ફિતુ કેવલ નક્ષત્રાદિકનું જ પ્રતિવિંચ થાય છે. કેમકે

૧૧. અર્હિ આ શંકા છે,—(૧) ઘટથી બહિર જે આકાશ છે તે 'મહાકાશ' છે. તેથી મિત્ર ઘટના અન્તરમાં જે આકાશ છે તે 'ઘટાકાશ' છે. એ ઘટાકાશનું મુગમ લક્ષણ છે. તે છોડીને,—(૨) જલપૂરિત ઘટને જેટલું મહાકાશ અવકાશ દે તેટલું આકાશ ઘટાકાશ છે,—એ રીતિએ લક્ષણ કરવાનું શુ પ્રયોજન છે ? એનું આ સમાધાન છે. પ્રથમ (૧) કહ્યાપ્રમાણે લક્ષણ કરિયે તો ઘટના કપાલની જેમાં સ્થિતિ છે તે આકાશને પાંચમું 'કપાલાકાશ' કહેયું પડે. તે શાસ્ત્રથી વિરુદ્ધ છે. એથી દ્વિતીય (૨) લક્ષણ કરવું યચિત છે.

પં. પી. ડુ.

૨૮૬ ઉત્તમઅધિકારીને ઉપદેશ આકાશના મેદ. (વિચારસાગર.

રૂપવાનુ પદાર્થનું પ્રતિવિંવ થાય છે, આકાશ સ્વરૂપેકરીને રહિત છે, યથી આકાશનું પ્રતિવિંવ વને નહિ. યથી શંકા કરે છે તેના સમાધાનના—

શ્લોક.

જો જલમાં આકાશનું, પ્રતિવિંવ નવ હોય;
થોડામાં ગંભીરતા, પ્રતીત થાય ક્યમ્ સોય. ૭૭.
યથી જલમાં માનિયે, વ્યોમાભાસ સુજાણ;
જ્યમ રૂપરહિત શબ્દથી, પ્રતિધ્વનિનું માન. ૭૮.

ટીકા:—જો જલવિંવે આકાશનું પ્રતિવિંવ ન હોય તો જાનુપરિમાણ જલવિંવે, મનુષ્યપરિમાણ ગંભીરતાની જે પ્રતીતિ થાય છે, તે નહિ થવી જોઈયે, (તે ગંભીરતાની પ્રતીતિ થાય છે.) યથી આકાશનું પ્રતિવિંવ અંગીકાર કરવું યોગ્ય છે. અન્ય જે કહે છે કે,—‘રૂપરહિત પદાર્થનું પ્રતિવિંવ નથી થતું’ તે યણ નિયમ નથી. કેમકે, રૂપરહિત જે શબ્દ છે, તેનો પ્રતિધ્વનિ થાય છે તે શબ્દનું પ્રતિવિંવ છે. યથી રૂપરહિત જે આકાશ છે તેનું યણ પ્રતિવિંવ વને છે ૭૮.

૧૬૨. અથ મેઘાકાશવર્ણન.

શ્લોક.

જે અવકાશ દે મેઘને ઘઢી તેમાં આમાસ;
તે વંનેને કેહ છે, વુધ્ધજન મેઘાકાશ.

ટીકા:—મેઘ જે ઘાદલ, (તેઓને જે આકાશ) અવકાશ દે છે, અને મેઘના જલમાં જે (તે મેઘોના ઉપરના) આકાશનું પ્રતિવિંવ છે, તે વંને(આકાશ)ને મેઘાકાશ કહે છે. યને વિંવે કોઈ શંકા કરે છે જે, મેઘ તો આકાશવિંવે છે, તેઓમાં જલ અને આકાશનું પ્રતિવિંવ, ઘીટા વિના, કેમ જાણ્યું જાય છે ?

તેના સમાધાનો દુહો.

વષે મેઘ અનંતજલ, સજલ જ હેતુ પર્યો;

જલ નહિ નમ આભાસવિણ પ્રતિર્વિવ સહ તેર્યો ૮૦.

ટીકા:—યદ્યપિ મેઘવિષે, જલ અને આકાશનું પ્રતિર્વિવ પ્રત્યક્ષ છે નહિ, તથાપિ અનુમાને કરીને જાણ્યું જાય છે. મેઘ જે જલની ઘટ્ટિ કરે છે, પર્યો પર્યું અનુમાન થાય છે જે, મેઘોવિષે જલ છે. જો મેઘોવિષે જલ ન હોય તો જલની ઘટ્ટિ મેઘોથી ન થાય. અને મેઘોવિષે જલ છે; તે, આકાશના પ્રતિર્વિવ સહિત છે; કેમકે જલ હોય છે તે આકાશના પ્રતિર્વિવ વિના નથી હતું. પર્યો મેઘોવિષે જે જલ છે, તે પણ આકાશના પ્રતિર્વિવવાલું છે. ૫ રીતિપ મેઘવિષે, જલ અને આકાશના પ્રતિર્વિવનું અનુમાન થાય છે. ૮૦.

૧૬૩. અથ મહાકાશવર્ણન.

દુહો.

વાહ્યામ્યન્તર પરુરસ, વ્યાપક જે નમરૂપ;

મહાકાશ તેને કહે, કૌવિદ વુદ્ધિ અનૂપ ૮૧.

ટીકા:—(વહ્યાખંડના) વહિર્ અને અન્તર્ સર્વથ પરુરસ વ્યાપક જે 'નમ (રૂપ)' નામ આકાશનું સ્વરૂપ છે, તેને 'અનૂપ' નામ અદ્વૈત વુદ્ધિમાન્ પંડિત, મહાકાશ કહે છે. ૮૧.

૧૬૪. ચતુર્વિધ ચેતન.

દુહો.

ચાર ભાતિ નમનાં કહ્યાં લક્ષણ શ્રુતિ અનુસાર;

અવ ચેતનનાં શિષ્ય ગુણ, જેથી મલે વિચાર. ૮૨.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! ચાર પ્રકારનાં આકાશનાં લક્ષણ કહ્યાં. હવે ચાર ભાતિનાં ચેતનનાં લક્ષણ સાંભલ; જેઓને સાંભલેથી 'વિચાર' નામ વિચારનું ફલ જ્ઞાન પ્રાપ્ત થાય. ૮૨.

૧૬૫. અથ (ઘટાકાશસમાન) કૂટંસ્થ(ચેતન)વર્ણન.

દ્વો.

મતિ યા વ્યંષ્ટિઅજ્ઞાનનું અધિષ્ઠાન ચૈતન્ય;
ઘટાકાશ સમ માનિયે, તે કૂટસ્થ અજન્ય. ૮૩.

ટીકા:—બુદ્ધિ(નું) અથવા વ્યષ્ટિઅજ્ઞાનનું જે અધિષ્ઠાન-ચેતન છે, તે કૂટસ્થ કહેવાય છે. જે પક્ષમાં બુદ્ધિ સહિત છે તે ન જીવ છે, તે પક્ષમાં બુદ્ધિનું (જે) અધિષ્ઠાન (છે તે) 'કૂટસ્થ' કહેવાય છે; અને જે પક્ષમાં વ્યષ્ટિઅજ્ઞાન સહિત છે તે ન જીવ કહેવાય છે, તે પક્ષમાં વ્યષ્ટિઅજ્ઞાનનું જે અધિષ્ઠાન છે, તે કૂટસ્થ કહેવાય છે. આ સ્થાનમાં આ સિદ્ધાન્ત છે:—જીવત્વનું જે વિશેષણ છે તેના અધિષ્ઠાનનું નામ કૂટસ્થ કહેવાય છે. તે કૂટસ્થ 'અજન્ય' છે (નામ) ઉત્પત્તિથી રહિત છે. યનો અભિપ્રાય આ છે:—બ્રહ્મથી મિદ્ધ જેમ ચિદા-ભાસ ઉત્પન્ન થાય છે તેમ, આ ઉત્પન્ન નથી થયો કિન્તુ બ્રહ્મ-રૂપ જ છે. જેમ ઘટાકાશ મહાકાશથી મિદ્ધ નથી થઈ ગયું, કિન્તુ મહાકાશરૂપ છે. એ જે કૂટસ્થ છે તે જ આત્મપદનો લક્ષ્યઅર્થ છે; અને યને જ પ્રત્યક્ (આત્મા) કહે છે; અને યને જ નિજરૂપ કહે છે; અને એ જ જીવસાક્ષી છે. ૮૩.

૧૬૬. અથ (જલાકાશસમાન) જીવ(ચેતન)વર્ણન.

દ્વો.

કામકર્મયુત બુદ્ધિમાં, જે ચેતન-પ્રતિવિંચ;
તેને જીવ વિદ્યાન્ કહે, જલનમતુલ્ય સર્વિચ. ૮૪.

ટીકા:—નાના કામ (ઘાસના) અને (અટ્ટ) કર્મસહિત

૧૦૦. કૂટસ્થના પર્વાય:—આત્મપદનો લક્ષ્યઅર્થ, પ્રત્યગાત્મા, નિજરૂપ, જીવસાક્ષી, અન્તમાં કહેશે.

૧૦૧. વ્યષ્ટિ એ જ અજ્ઞાન. પ્રતિજીવમત ભંગ—અજ્ઞાન.

જે શુદ્ધિ છે, તેમાં જે ચેતનનું પ્રતિબિંબ છે, તેને 'વિદ્યાનો' નામ ધાર્નાઓ જીવ કહે છે. તેઓ કેવળ પ્રતિબિંબમાત્રને જીવ નથી કહેતા; કિન્તુ જેમ ચટ્ટાકાતમ્હિત આકાશના પ્રતિબિંબને જલ્યાકાશ કહે છે, તેમ 'મર્બિવ' નામ વિંબ જે કૃટસ્થ તેમ્હિત ચિદામાત્રને જીવ કહે છે. ઈર્ષા આ તિદ્યાન્ત યયોઃ—શુદ્ધિમાં જે વિદ્યાનામ (૧) અને શુદ્ધિનું અધિષ્ઠાનચેતન (૨) એ ઘેનું નામ જીવ છે. ૮૫.

૧૬૭. ૩૦.

અધિષ્ઠાન કૃટસ્થર્ષા, યાય 'આમાત્ર' વહાન્ડ;

રક્તપુષ્પ ઉપર ઘન્ધો, મ્હાટિક યાય જમ લાલ. ૮૫.

ટીકાઃ—પૂર્વ દુહાવિંબે, વિંબ જે કૃટસ્થ, તે(કૃટસ્થ)સહિત આમાત્રને જીવ યાઓ, ઈર્ષા આ પ્રતીતિ યાય છેઃ—જે શુદ્ધિમાં પ્રતિબિંબ છે તે કૃટસ્થનું છે, અને વહિરના પ્રલ્લચેતનનું નદિ, કેમકે, જેનું પ્રતિબિંબ દ્વાય તે વિંબ કહેવાય છે. તે કૃટસ્થને વિંબ યાઓ, ઈર્ષા તેનું પ્રતિબિંબ છે, એ પ્રતીતિ યાય છે. તે આ દુહાપ્કરી પ્રતિપાદન કરે છે. જેમ ત્માંટા લાલ પુષ્પ-ઉપર મૂકેલાં જે શ્વેત સ્ફાટિક (પારદર્શક પથ્થર) છે, તેવિંબે

૧૦૨. વિચિત્રવૃત્તિઓના શિષ્યોને મુગમતા સારૂ જીવનાં યનવ લ્ધન કરા-ય છેઃ—સ્પૂલ્લદેશ્વર ઘટમાં નવશિષ્યાપર્યન્ત મરેડું શુદ્ધિરૂપ જટ છે, તે શુદ્ધિરૂપ જલમાં ચેતનનું પ્રતિબિંબ (૧) અને કૃટસ્થ (૨) એ ડમવનું નામ જીવ છે.

વંચદશીમાં, શુદ્ધિ (૧) અને તેમાં સ્થિત ચિદામાત્ર (૨) અને એ બંનેનું અધિષ્ઠાન કૃટસ્થ ચેતન્ય (૩) એ પ્રળના સમૂહને જીવ કહ્યો છે.

ચિદામાત્રસહિત શુદ્ધિવિગિષ્ટ કૃટસ્થચેતન એ જીવ છે. કિન્તા ચિદામાત્રયુક્ત અન્તઃકરણસહિત કૃટસ્થચેતન્ય, એ જીવ છે. અથવા અધિગ્રાહ્ય અને તેમાં સ્થિત ચિદામાત્ર અને તેમનું અધિષ્ઠાનકૃટસ્થ એ મિલીને જાવ છે.

ઈર્ષવ્ (ફિચિવ્) ઉદ્ભૂત રજ્જ્મમથી મલિનક્ષત્રપ્રધાના માયા (અધિચા) જે માર્યાને (સ્વનિગ્ન ચિદામાત્રને) ઘસ કરે છે તે યશીકૃત ચેતન્ય એ 'જીવ' તે સંસારી કર્તા, ભોક્તા, સંયોગી રત્વાદિ કરેવાય છે.

પુષ્પની લાલીની ધમક હોય છે, તે (ધમક) લાલ પુષ્પનું પ્રતિ-
વિંબ છે; તેમ કૂટસ્થને આશ્રિત જે બુદ્ધિ, તે (બુદ્ધિ) વિષે
કૂટસ્થના પ્રકાશની ધમક હોય છે. [જેમ સ્ફટિક અત્યંત
ઉજ્જ્વલ છે, તેમ બુદ્ધિ પણ અત્યંત શુદ્ધા છે. કેમકે બુદ્ધિ સત્વ-
ગુણનું કાર્ય છે] યથી કૂટસ્થની ધમકનું નામ પ્રતિવિંબ છે.

અથવા બ્રહ્મચેતનનું પ્રતિવિંબ છે. જેમ મહાકાશનું ઘટના
જલમાં-પ્રતિવિંબ થાય છે, અને (ઘટના) અન્તરના આકાશનું
નહિ, કેમકે જેટલી ગંભીરતા જલવિષે પ્રતીત થાય છે, એટલી
ગંભીરતા અન્તરના આકાશમાં છે નહિ. તે ગંભીરતા આકા-
શનું પ્રતિવિંબ છે, યથી તે વહિરના (મહા)આકાશનું પ્રતિ-
વિંબ છે.

જે આ કહે છે:—‘વ્યાપક ચેતનનું પ્રતિવિંબ વને નહિ;’ તે
શંકા આકાશના દૃષ્ટાન્તથી દૂર થાય છે, કેમકે જેમ આકાશ
પણ વ્યાપક છે; અને તેનું પ્રતિવિંબ થાય છે, તેમ વ્યાપકચેતન-
નું પણ પ્રતિવિંબ વને છે.

અને જે કહે છે કે:—‘રૂપવાન્ પદાર્થનું રૂપવાન્ પદાર્થમાં
‘પ્રતિવિંબ થાય છે,’ તે પણ નિયમ છે નહિ; કેમકે, રૂપરહિત
શબ્દનું રૂપરહિત આકાશમાં પ્રતિવિંબ થાય છે. એ પૂર્વે કહી
આવ્યા યથી ચેતનનું પ્રતિવિંબ વને છે.

એ રીતિય બુદ્ધિમાં આભાસ અને બુદ્ધિનું અધિષ્ઠાનચેતન
એ ઘંનેનું નામ જીવ છે, એમ કહ્યું; તે જીવ, ત્વંપદનો વાચ્ય
(અર્થ) કહેવાય છે; અને તેમાંથી ચિદાભાસનો (બુદ્ધિમાંનો
આભાસ) ત્યાગ કરીને કેવલ જે કૂટસ્થ છે. તે ત્વંપદનો
લેક્ષ્ય (અર્થ) કહેવાય છે. અને અહં શબ્દનો વાચ્ય પણ જીવ
છે, કેવલ કૂટસ્થ લક્ષ્ય છે.

૧૦૩. તુ એ પદનો વાણીયકરી સાક્ષાત્ જાગવાયોગ્ય અર્થ.

૧૦૪. શબ્દનો પરપરાસંબંધ જે લક્ષણા તેજોકરી જાગવા યોગ્ય અર્થ.

૨૬૮. ડહા.

બુદ્ધિમાંહિ આભાસ જે, પુણ્ય પાપફલ-ભોગ;
ગમન આગમન તે કરે, નહિ ચેતનમાં યોગ. ૮૬.

મિથ્યા જ્યમ ઘટસંગ નમ, કરે ક્રિયા વહુ ભાત;
(પણ) ઘટાકાશ અક્રિય સદા, રહે ઇકરસ શાન્ત. ૮૭.

ટીકા:—યદ્યપિ જીવ (૫) નામ ચિદાભાસ અને કૃટસ્થ વનેનું છે, તથાપિ જીવતરના જે ધર્મ છે, તે સર્વ આભાસવિષે છે. પુણ્ય અને પાપ, અને પુણ્યપાપનાં ફલ—સુખદુઃખ, અને લોકાન્તરવિષે ગમન, અને આ લોકવિષે આગમન, -૫ આદિ લઈને સર્વ, આભાસસહિત-બુદ્ધિ કરે છે; અને કૃટસ્થ નથી કરતો. કૃટસ્થવિષે કેવલ ભ્રાન્તિ૫ (ભ્રાન્તિમાનને) પ્રતીતિ થાય છે. તે ભ્રાન્તિ૫ પ્રતીતિ પણ બુદ્ધિસહિત આભાસને થાય છે; કૃટસ્થને નહિ. કેમકે 'કૃટ' જે લઘારની પરણ, તેની પેઠે નિર્વિકારરૂપે 'સ્થિત' હોય, તે કૃટસ્થ કહેવાય છે. અથવા 'કૃટ' નામ મિથ્યા જે બુદ્ધિ અને ચિદાભાસ, તેમનાવિષે અસંગરૂપથી 'સ્થિત' હોય, તે કૃટસ્થ કહેવાય છે. ૫થી કૃટસ્થવિષે ભ્રાન્તિ આદિક વને નહિ, કિન્તુ ચિદાભાસમાં વને છે.

૧૬૯. અને અત્યંત વિચારેકરી દેલિયે તો, પુણ્ય-પાપ, સુખદુઃખ, લોકાન્તરમાં ગમન અને આગમન, કેવલ બુદ્ધિમાં છે, આભાસમાં પણ નહિ; બુદ્ધિના સંયોગેકરી આભાસમાં છે. જેમ જલસહિત જે ઘટ છે, તે ઘાંજો થાય છે અને સીધો થાય છે, અને જાય છે આવે છે, અને તેના સંબંધેકરી આકાશનો આભાસ સંપૂર્ણ ક્રિયા કરે છે, અને (આભાસ) સ્વતંત્ર કશું પણ નથી કરતો; તેમ કામકર્મરૂપી જલથી ભયોં જે બુદ્ધિ-રૂપી ઘટ છે, તે પુણ્યથી આદિલઈને સંપૂર્ણ વિકાર ધારે છે,

અને તેના સંબંધકરી ચિદાભાસ ધારે છે, પણ કૂટસ્થ સર્વ વિકારથી રહિત છે. જેમ જલપૂરિતઘટના વિકારથી રહિત ઘટાકાશ છે, તેનો પેઠે કૂટસ્થને જાણ, યથી જીવત્વના ધર્મ ચિદાભાસમાં છે; તથાપિ અજ્ઞાનેકરી કૂટસ્થમાં પ્રતીત થાય છે. યથી બુદ્ધિવિપે કૂટસ્થસહિત જે ચિદાભાસ તે જીવ કહેવાય છે. ૮૭.

૧૭૦. ય જે જીવનું સ્વરૂપ વર્ણન કન્યું, યનેવિપે પ્રાજ્ઞની હાનિ થાય છે. કેમકે, જે સુપુત્તિના અભિમાની જીવનું નામ પ્રાજ્ઞ છે, તે સુપુત્તિવિપે બુદ્ધિનો અભાવ થાય છે. યથી બુદ્ધિમાં આભાસ પણ વને નહિ. યથી પ્રાજ્ઞના સ્વરૂપનું પ્રતિ-પાદક જે શાસ્ત્ર છે, તેનો વિરોધ થશે. ય કારણથી જીવનું સ્વરૂપ ઘોઝું પ્રતિપાદન કરે છે.

(વ્યષ્ટિ અને સમષ્ટિ અજ્ઞાન.)

દ્વશે.

વા વ્યષ્ટિ અજ્ઞાનમાં, ચિદાભાસ જે રેહ;

અધિષ્ઠાન કૂટસ્થયુત, જીવ પદ તેને કહે.

૮૮.

ટીકા:—(પ્રત્યેક જીવસંબંધિ) અજ્ઞાનના અંશનું નામ વ્યષ્ટિ-અજ્ઞાન કહેવાય છે; અને સંપૂર્ણ અજ્ઞાનનું નામ સમષ્ટિ-અજ્ઞાન છે. તે અજ્ઞાનના અંશવિપે જે ચેતનનો આભાસ, અને અજ્ઞાનના અંશનું અધિષ્ઠાન જે કૂટસ્થ છે, તે વંનેને જીવપદ કહે છે. યથી પ્રાજ્ઞનો અભાવ નથી થતો.

૧૦૫. જેમ લોહની કઢાઈમાં તપાવ્યુ જે તૈલ તેમા આકાશનું પ્રતિબિંબ હોય છે, ય સમય અગ્નિનો તાપ તૈલને જ છે, તદ્વત આકાશના પ્રતિબિંબને નથી. તો તૈલ-પૂરિત કઢાઈના અધિષ્ઠાનરૂપ આકાશને તો ક્યાંયી જ હોય. તેમ પુષ્પવાપાદિરૂપ જે સંસાર છે તે કેવલ બુદ્ધિમાં છે. આભાસમાં પણ નથી, તો, તેમનું અધિષ્ઠાન કૂટસ્થમાં તો ક્યાંયી જ હોય. પરંતુ તેની કૂટસ્થમાં પ્રતીતિ ય અજ્ઞાનરૂતા ધ્રાન્તિ છે.

પં. પી. પું.

केमके, सुपुत्रिविषे अज्ञान रहे छे. सुपुत्रिविषे चेतनना प्रतिषिय-
सहित जे अज्ञाननो अंश छे, ते ज बुद्धिरूपने प्राप्त थाय छे,
अने चेतननुं प्रतिषिव साये ज होय छे. ते चिदाभाससहित
बुद्धिमां पुण्यादिक संसार प्रतीत थाय छे. ए अभिप्रायेकरी
शास्त्राधिषे फयांक बुद्धिने ज जीवत्वनो उपाधि वर्णन करायो
छे. एण विचारदृष्टिए जीवत्वनो उपाधि अदानं छे. ८८

१७१. जय (मेघाकाश समान) ईश्वर(चेतन)वर्णन,
दो.

चिद्-छाया मायाविषे, अधिष्ठान संयुक्तः

मेघव्योम सम ईश ते, अंतर्धामी, मुक्त. ८९.

टीकाः—मेंयाविषे, जे चेतननी छाया नाम (मायासहित)
आमास, अने मायानुं अधिष्ठान चेतन, (ए) घनेने ईश्वर
कहे छे. ते ईश्वर मेघाकाश सम छे. ते ईश्वर अंतर्धामी छे,
केमके सर्वने अंतर प्रेरणा करे छे, एथी अन्तर्धामी छे. अने

१०६. ए जीवनुं लक्षण छे. एमां बुद्धि किंवा बुद्धिना संस्काररूप घट छे,
तेमां व्यष्टिअज्ञानरूप जल भन्नुं छे, तेमां चेतननु प्रतिषिव छे. अथवा व्यष्टिअज्ञान-
रूप घट छे, तेमा मलिनस्वरूप जल भन्नुं छे, तेमां चेतननु प्रतिषिव छे, ते
अधिष्ठानचेतनसहित जीव कहेवाय छे. ९. पी. पु.

१०७ अन्यथामानहेतुत्वादियं मायेति कीर्तिता ॥ १८ ॥

आत्मतत्त्वतिरस्कारात् तम इत्युच्यते बुधैः ।

विद्यानाश्रयत्वतोऽविद्या मोहस्तत्कारणत्वतः ॥ १९ ॥

सद्वैलक्षण्यदृष्टेयमसदित्युदिता बुधैः ।

कार्यनिष्पत्तिहेतुत्वात्कारणं प्रोच्यते बुधैः ॥ २० ॥

स्कंदपुराणान्तरगाता सूतसंहिता प्रथमखण्ड. अ ८.

अन्यथामाननो हेतु होवाथी ए 'माया' एम कहेवाय छे, आत्मतत्त्वना तिर-
स्कार(आवरण दांकव)थी 'तम' एम बुद्धिमन्तोए कहेवाय छे, विद्याएकरी नाश
यना योग्य होवाथी 'अविद्या,' ते(आवरण)नुं कारण होवाथी 'मोह,' सत्थी
विलक्षणतानी दृष्टिए 'असत्' एम बुद्धिमानोए कहेवाई छे. कार्यनी निष्पत्ति
(उत्पत्ति)नो हेतु होवाथी 'कारण' (प्रकृति) कहेवाय छे.

સદામુક્ત છે, કેમકે તેને પોતાના સ્વરૂપમાં આવરણ નથી, યથી જન્મમરણાદિક વંધની પ્રતીતિ નથી, ય હેતુથી ઈશ્વર નિત્ય-મુક્ત છે અને (ઈશ્વર) સર્વજ્ઞ છે, (કેમકે) સવે પદાર્થોને જાણવા વાઠો છે તેને વિષે આ હેતુ છે-માયાવિષે શુદ્ધસત્ત્વગુણ છે. [તમોગુણ અને રજોગુણથી દવાયલો સત્ત્વગુણ ન હોય, કિન્તુ તમોગુણ અને રજાગુણને પાતે દવાવવાવાઠો હોય તે શુદ્ધસત્ત્વગુણ કહેવાય છે.] સત્ત્વગુણથી જ્ઞાનની ઉત્પત્તિ થાય છે, યથી પ્રકાશસ્વમાયવાન્ સત્ત્વગુણ છે. યત્રી સત્ત્વગુણ વતી માયાવિષે જે ચેતનનો આભાસ તેને સ્વરૂપવિષે અથવા અન્યપદાર્થવિષે આવરણ સમવે નહિ, યથી (ઈશ્વર) મુક્ત છે અને સવજ્ઞ છે (કેમકે-)

અધિષ્ઠાન જે ચેતન છે, તે તો જીવ અને ઈશ્વર યનેનેવિષે વધમોક્ષભેદથી રહિત છે (તે અધિષ્ઠાનચેતન) આકાશના સમાન યકરસ છે. પરંતુ આભાસઅશવિષે વધમાશ છે. અધિષ્ઠાનવિષે, આભાસને ઝાન્તિપકરી (વધમોક્ષ) પ્રતીત થાય છે, યથી કેવલ આભાસમાં વધમોક્ષ છે તેવિષે યણ આટલો ભેદ છે-જે આભાસમા આવરણ છે, તેવિષે વધ છે; જે- (આભાસ)વિષે સ્વરૂપનુ આવરણ નથી, તે મુક્ત છે ઈશ્વરમા આવરણ નથી, યથી ઈશ્વર સદા મુક્ત છે. અને જીવવિષે આવરણ છે, (તેથી) તે વદ્ધ છે. [વદ્ધ નામ વધાયલો છે] કેમકે જે અધિષ્ઠાના અશમા ચેતનના આભાસને જીવ કહ્યો, તે અધિષ્ઠાના સ્વભાવ આવરણ ઘરવાના છે યઘપિ અધિષ્ઠા, અને અજ્ઞાન, અને માયા યક જ ઘસ્તુને યદે છે

૧૦૮ ઈશ્વરનો માયા ઉપાધિ છે ત વારદર્શક ઠાવના અતિમહાત્મ્ય જેનો છે જેમાંથી સર્વ જોઈ જાણી શકાય છે યીવનો અજ્ઞા ઉપાધિ છે તે આવરણ વદ્ધ જ ન્હાના મૃતિકાના ઘટ જેવો છે, જેમાંથી સર્વ જાણી શકાતું નથી.

તથાપિ શુદ્ધમત્ત્વગુણની પ્રધાનતાપ માયા કહેવાય છે, અને મલિનસત્ત્વગુણની પ્રધાનતાપ અજ્ઞાન અને અવિદ્યા કહે છે. [રજોગુણ અને તમોગુણથી દવાયલો જે સત્ત્વગુણ છે તે મલિનસત્ત્વગુણ કહેવાય છે.] યથી તમોગુણ અને રજોગુણનો અધિકૃતા હોવાથી, અવિદ્યામાં જે જીવનો આભાસ-અંશ તેને, અવિદ્યા, સ્વરૂપનું આવરણ કરે છે, યથી જીવમાં વંધન છે, અને ઈશ્વરમાં નથી.

અધિષ્ઠાનચેતનસહિત માયામાં જે આભાસરૂપ ઈશ્વર છે, તે તત્પદનો વાચ્ય(અર્થ) કહેવાય છે. કેવલ અધિષ્ઠાન-ચેતન તત્પદનો લક્ષ્ય(અર્થ) છે. 'જે ઈશ્વર છે તે જ જગત્ની 'ઉત્પત્તિ, પાલન અને સંહાર કરે છે;' એ સંપૂર્ણ શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે, તેનો આ અભિપ્રાય છે:—ચેતનઅંશ તો આકાશની પેઠે અસંગ છે. અને આભાસઅંશ જગત્ની ઉત્પત્તિ આદિ કરે છે, અને તેને જ (આભાસને જ) વિષે સર્વશતા છે. અને મક્તજન-નાડપર અનુગ્રહ (ઠપાનું ફલ=ઉદ્ધાર) જે કરે છે તે પણ કેવલ આભાસઅંશ કરે છે. અને જે કાંઈ પેશ્વર્ય છે તે કેવલ આભાસ-માં છે. અને ચેતનઅંશ એકરત્ન છે, અને વિષે સત્તાસ્ફૂર્તિ દેવાયિના અન્ય પેશ્વર્ય વને નહિ. ૮૯.

૧૭૨. અથ (મહાકાશસમાન) બ્રહ્મ(ચેતન)સ્વરૂપવર્ણન.

દુહો.

અંતર વહિર્ એક રસ, જે ચેતન ભરપૂર;

વિભુ નમસમ તે બ્રહ્મ છે, નહિ સમીપ નહિ દૂર. ૯૦.

ટીકા:—બ્રહ્માણ્ડની 'અંતર' નામ મીતર અને વહિર્ જે મહાકાશની પેઠે, ભરપૂર ચેતન છે, તે બ્રહ્મ કહેવાય છે. તે બ્રહ્મ સમીપે નથી અને દૂરે નથી. કેમકે જે ઘસ્તુ આપણાથી ભિન્ન હોય અને દેશરૂપ ઉપાધિવાલું હોય. તે સમીપ અને

दूर कही शक्याय छे. ब्रह्म (कोई वस्तुथी) भिन्न नथी, किन्तु सर्वनो आत्मा छे; अने देशादिक सर्व उपाधिथी रहित छे, एथी समीपे के दूर कहुं जाय नहि. यद्यपि ब्रह्मशब्दनुं वाच्य सोपाधिक पण छे, केमके व्यापक वस्तुनुं नाम ब्रह्म छे. ते व्यापकता वे प्रकारनी छे,—एक तो आपेक्षिकव्यापकता छे, अने एक निरपेक्षिकव्यापकता छे. जे वस्तु कोई पदार्थनी अपेक्षाथी व्यापक होय, अने कोईनी अपेक्षाथी न होय, तेना(वस्तुना)विषे आपेक्षिकव्यापकता कहेवाय छे. जेम पृथिवी आदिनी अपेक्षाए माया व्यापक छे, अने चेतननी अपेक्षाए छे नहि; एथी मायाविषे आपेक्षिकव्यापकता छे. अने जे वस्तु सर्वनी अपेक्षाए व्यापक होय, तेनेविषे जे व्यापकता, ते निरपेक्षिकव्यापकता कहेवाय छे. ते निरपेक्षिकव्यापकता चेतन(ब्रह्म) विषे छे, केमके चेतनना समान अथवा चेतनथी अधिक अन्य कोई व्यापक छे नहि; किन्तु चेतन ज सर्वथी व्यापक छे. एथी चेतनविषे निरपेक्षिकव्यापकता छे. ए धने प्रकारनी व्यापकतासहित जे वस्तु छे, ते ब्रह्म शब्दना वाच्य(अर्थ) छे. ते धने प्रकारनी व्यापकता मायाविशिष्टचेतनविषे छे. केमके विशिष्टविषे जे माया-अंश छे, ते(माया)नेविषे तो आपेक्षिकव्यापकता छे, अने (विशिष्टविषे जे चेतनअंश छे ते) चेतनअंशविषे निरपेक्षिकव्यापकता छे. यद्यपि मायाविशिष्टचेतनविषे निरपेक्षिकव्यापकता बने नहि; केमके माया, चेतनता एकदेशविषे छे, ते मायाविशिष्टचेतनथी, शुद्धचेतननी व्यापकता अधिक छे; एथी शुद्धचेतनविषे निरपेक्षिकव्यापकता छे. तथापि माया-विशिष्ट जे चेतन छे ते, परमार्थदृष्टिफरिने, शुद्ध(चेतन)-थी भिन्न नथी, किन्तु शुद्धरूप ज छे. एथी मायाविशिष्टमां

પણ જે ચેતનઅંશ છે, તેનેવિષે નિરપેક્ષિક જ વ્યાપકતા છે. એ સૌનિષ માયાવિશિષ્ટ જ બ્રહ્મશબ્દનું વાચ્ય બને છે. અને શુદ્ધચેતન બ્રહ્મશબ્દનું લક્ષ્ય છે. યથી ईश्वरशब्द અને ब्रह्मशब्द બંનેનો સમાન જ અર્થ પ્રતીત થાય છે; મિત્ર અર્થ નહિ. તથાપિ બ્રહ્મશબ્દનો તો આ સ્વભાવ છે:-જે વહુ સ્થાનવિષે લક્ષ્યઅર્થને બોધન કરે છે, અને કોઈક સ્થાનવિષે વાચ્ય અર્થને કહે છે. અને ईश्वरशब्दનો આ સ્વભાવ છે જે:-વહુ સ્થાનમાં વાચ્ય અર્થને બોધન કરે છે. પટલો મેદ છે. યથી લક્ષ્ય અર્થને લઈને બ્રહ્મશબ્દનો અર્થ મિત્ર નિરૂપણ કન્યો છે. ૧૦.

(અંક ૧૫૮ માં ગિણ્યે શંકા કરેલી તેનું સમાધાન.)

૧૭૩. દ્વો

ચાર માત ચેતન કહ્યું, તેમાં મિથ્યા જીવ;
પુણ્ય-પાપફલ ભોગવે, ચિત્ કૃટસ્થ તે શિવ. ૧૧.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! ચાર પ્રકારનું ચેતન કહ્યું, તેમાં જીવના સ્વરૂપમાં જે મિથ્યા આભાસઅંશ છે, તે પુણ્યપાપ કરે છે, અને તેઓનાં ફલને ભોગવે છે; અને કૃટસ્થ જે ચેતન છે તે 'શિવ'નામ શિવરૂપ છે. ('શિવ'નામ કલ્યાણનું છે.) ૧૧.

યથી પ્રથમ જે શંકા કરી હતી જે:-'બુદ્ધિરૂપી વૃક્ષમાં જે 'પક્ષી છે,-એક પરમાત્મા અને (બીજો) જીવ.' તેનું આ ઉત્તર કહ્યું:-પરમાત્મા અને જીવનું પ્રહણ નહિ કર્યું. કિન્તુ કૃટસ્થ તો પ્રકાશમાન છે, અને આભાસ ભોગવે છે.

(જીવમાંનો આભાસઅંશ કર્મ કરે છે, અને તેનાં ફલ ભોગવે છે. ईश्वरમાંનો આભાસઅંશ ફલ દે છે.)

૧૭૪. દ્વો.

કર્મા છાયા દેય ફલ, નહિ ચેતનમાં યોગ;
તે છે અસંગ એકરૂપ, જાણે મિત્ર કુલોક. ૧૨.

ટીકા:—જીવના સ્વરૂપમાં જે ચૈતનની 'છાયા' નામ આભાસ-અંશ છે, તે 'કર્મી' નામ કર્મ કરે છે. તે કર્મ કરવા-વાલાને, (ઈશ્વરના સ્વરૂપમાં જે ચૈતનની) છાયા જે ઈશ્વરનો આભાસઅંશ છે, તે ફલ દે છે. [(દુહામાં) 'છા યા' શબ્દ- (છે તે)નો દેહલીકીપક ન્યાયેકરીને પૂર્વે ઉત્તર વંને પાસ સંબંધ છે. જેમ દેહલીનાડપર ધરેલો જે કીપક છે તે વંને પાસાને પ્રકાશે છે, તેમ 'છાયા' કર્મી છે અને 'છાયા' ફલ દે છે. (એમ વંને પદમાં 'છાયા' શબ્દ આવે છે.)] પથી આ વાર્તા સિદ્ધ થઈ:— જીવના સ્વરૂપમાં જે આભાસઅંશ છે, તે તો પુણ્ય-પાપ કરે છે, અને તેઓનું ફલ ભોગવે છે. અને ઈશ્વરમાં જે આભાસઅંશ છે, તે કર્મનું ફલ આપે છે. અને વંનેનેવિપે જે ચૈતનઅંશ છે, તે- (ચૈતનઅંશ)માં કોઈ ઘાતનો યોગ નથી. જીવમાં જે ચૈતનઅંશ છે તેવિપે તો કર્મ અને ફલનો યોગ નથી; અને ઈશ્વરમાં જે ચૈતનઅંશ છે, તેમાં ફલ દેવાનો યોગ નથી. તે (કર્મ કરવાનો અને ફલ દેવાનો યોગ) ચૈતનમાં જે કહે છે તે મૂર્ખ છે. કેમકે ચૈતન તે વંનેવિપે અસંગ છે; અને એકરૂપ છે. ચૈતનમાં ભેદ નથી. જીવચૈતનને ઈશ્વરચૈતનથી અથવા ઈશ્વર-ચૈતનને જીવચૈતનથી 'ભિન્ન' નામ જુદો જે જાણે, તે 'કુલોઠ' નામ નિંદન કરવાયોગ્ય લોક છે. ૫ કહેવાથી ધીજો જે પ્રશ્ન કન્યો હતો કે:—'જીવ અને પરમાત્માની એકતા અંગી-કાર કરવાથી કર્મ અને ઉપાસનાનો પ્રતિપાદક યેદ નિષ્ફલ 'થશે,' તેનું ઉત્તર કહ્યું જે,—જીવ અને ઈશ્વરમાં ચૈતનભાગ છે તેઓનો તો અભેદ છે, અને આભાસનો ભેદ છે, પથી વંને પ્રકાર-નાં વચન વને છે. ૧૨.

(જીવ બ્રહ્મના લક્ષ્યાર્થનો અભેદ છે તેથી એકતા બને છે)

૧૭૫. ઘોષાર્.

તેં હે શિષ્ય ! પ્રશ્ન જે કીધા, તેનાં એ ઉત્તર મેં દીધાં;
 કહ્યાં જે તે તરમાં બે પક્ષી, મોક્ષા એક, એક અનિચ્છી. ૧૩.
 તે ચેતન આભાસ લગ્નાવ્યાં, જમ નમ છાયા મિશ્ર વતાવ્યાં,
 કહ્યો મિશ્ર, કર્મી, ફલદાતા, મતિ-માયા-છાયા, તે તાતા. ૧૪.
 જીવ-ઈશમાં ચેતનરૂપ, ભેદ-બંધથી રહિત અનૂપ;

એથી 'અહં બ્રહ્મ' એ જાણો, 'અહં' શબ્દ કૃતસ્થ પિછાળો. ૧૫.
 'બ્રહ્મ' શબ્દનાં અર્થ સુમાર્યો, મહાકાશસમં લક્ષ્ય જ રાખ્યો.
 'અહંબ્રહ્મ' યાવત્ નહિ જાણે, તાવત્ દીન દુઃખિત ભય માને. ૧૬.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! તેં જે પ્રશ્ન કન્યા તેઓનાં મેં ઉત્તર
 કહ્યાં. તેં જે કહ્યું હતું કે, -'એક વૃક્ષમાં બે પક્ષી છે. એક મો-
 ગયે છે અને એક ઇચ્છાથી રહિત છે; એથી જીવબ્રહ્મની એકતા
 બને નહિ.' એનું મેં ઉત્તર કહ્યું જે -આ સ્થાનમાં જીવ-બ્રહ્મનું
 ગ્રહણ કર્યું નહિ, કિન્તુ કૃતસ્થ અને યુદ્ધિમાં જે આભાસ,
 તેઓનું ગ્રહણ કર્યું. તેઓ પોતપોતામાં ઘટાકાશ અને આકાશ
 ની છાયાની પેટે મિશ્ર છે.

અને તેં પ્રશ્ન કન્યા હતો જે: -'જીવ તો કર્મક્રમ-પાસના-
 કરવાવાળો છે, અને પરમાત્મા ફલ દેવાવાળો છે, તેઓની
 એકતા બને નહિ.' એનું પણ મેં આ ઉત્તર કહ્યું જે, -કર્મ કરવા-
 વાળો જીવ છે નહિ; અને ફલ દેવાવાળો ઈશ્વર છે નહિ;
 કિન્તુ જીવમાં જે આભાસઅંશ છે તે (કર્મ) કરે છે; અને
 ઈશ્વરમાં જે આભાસઅંશ છે તે ફલ દે છે. અને જીવ-ઈશ્વરમાં જે
 ચેતનઅંશ છે, તે ઘટાકાશ મહાકાશની પેટે, ભેદનો જે 'ગંધ'
 નામ લેશ તેથી રહિત છે.' હે શિષ્ય ! એ રીતિએ જીવ અને
 બ્રહ્મની એકતા બને છે. એથી 'અહં બ્રહ્માસ્મિ' નામ 'હું બ્રહ્મ છું'

પમ તું જાણ. 'અહં' શબ્દનો અર્થ તો 'કૂટસ્થને જાણ, અને 'બ્રહ્મ' શબ્દનો જે મહાકાશના સમ લક્ષ્યઅર્થ કહ્યો છે, તે જાણ. 'અહં' શબ્દ અને 'બ્રહ્મ' શબ્દના વાચ્ય અર્થનો અભેદ નથી પણ ધરો; પરંતુ લક્ષ્ય અર્થ નો અભેદ છે. અને હે શિષ્ય ! ઝ્યાંલગી (ઉપરની સમજ પ્રમાણે) તું 'અહં બ્રહ્માસ્મિ' (હું બ્રહ્મ છું) પમ નહિ જાણીશ, ટ્યાંલગી તું પોતાને દીન માનીશ; અને દુઃખી માનીશ. અને અન્ય જે પરમાત્મા જાણ્યો છે, તે તુંને ભયનો હેતુ થશે. યથી 'હું બ્રહ્મ છું' પમ જાણ. ૧૬.

૧૭૬. તત્ત્વદષ્ટિરુવાચ.

('અહં બ્રહ્મ' યું જ્ઞાન જીવમાં કયા અંશને થાય છે ?)

હો.

કોને થાય, ગુરુ કહો, 'અહં બ્રહ્મ' ય જ્ઞાન ?;

નહિ જાણું હું આપના કહ્યા વિના સુજાણ. ૧૭.

ટીકા:—હે ગુરુ ! આપ રૂપા કરીને કહો 'અહં બ્રહ્માસ્મિ' (હું બ્રહ્મ છું) યું જ્ઞાન કોને થાય છે ? આપના કહ્યા વિના ય વાત્તાં હું જાણતો નથી. શિષ્યના ચિત્તમાં આ ગૂઢ અભિપ્રાય છે;—'હું બ્રહ્મ છું,' યું જ્ઞાન કૂટસ્થવિષે થાય છે, અથવા આભાસસહિત યુદ્ધિમાં થાય છે. જો કૂટસ્થમાં કહેશો તો કૂટસ્થ વિકારી થશે; અને આભાસસહિત યુદ્ધિમાં કહેશો તો તેને 'હું બ્રહ્મ છું' યું જ્ઞાન ધ્રાન્તિરૂપ થશે. કેમકે આપે પૂર્વે યું કાણું જે,—'કૂટસ્થની અને બ્રહ્મની યકતા છે, અને આભાસ 'ભિન્ન છે' યથી બ્રહ્મથી ભિન્ન જે આભાસ, તેને યત્નરૂપ કરીને જે જ્ઞાન, તે ધ્રાન્તિ જ થશે. જેમ સર્પથી ભિન્ન જે રજ્જુ, તેનું સર્પરૂપ કરીને જ્ઞાન, ધ્રાન્તિ છે. ય રીતિય આભાસસહિત યુદ્ધિને 'હું બ્રહ્મ છું' ય જ્ઞાન યયાર્થ નહિ થશે, કિન્તુ ધ્રાન્તિરૂપ થશે. અને જો કદાચિત્ 'અહં બ્રહ્માસ્મિ' ય જ્ઞાનને

આન્તિરૂપ જ અંગીકાર કરશો, તો એ જ્ઞાનથી મિથ્યા જગત્ની નિવૃત્તિ નહિ થશે. કિન્તુ યથાર્થ જ્ઞાનેકરી મિથ્યાની નિવૃત્તિ થાય છે. જેમ રજ્જુના યથાર્થ જ્ઞાનેકરી મિથ્યા સર્પની નિવૃત્તિ થાય છે. એ રીતિએ આભાસસહિત યુદ્ધિને 'હું બ્રહ્મ છું' એ જ્ઞાન બને નહિ. ૧૭.

૧૭૭. શ્રીગુરુવાચ.

(ગુરુ ઘડે છે કે 'અહં બ્રહ્મ' એ જ્ઞાન ચિદાભાસને થાય છે તેની સત્ત અવસ્થાનાં નામ.)

સોરઠો.

કહું અવસ્થા સાત; શુણ તું અવે આભાસની,
નહિ ચેતનની યાત, તેઓમાં એ જ્ઞાન છે.

૧૮.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! હવે આભાસની સાત અવસ્થા હું કહું છું, તે તું સાંભલ. તે સત્ત અવસ્થામાંથી કોઈ પણ (અવસ્થા ચેતન જે કૃદસ્ય તેની છે નહિ. 'અને હું બ્રહ્મ છું' એ જ્ઞાન પણ તે સત્ત(અવસ્થા)ના અન્તર્ જ છે. ૧૮.

૧૭૮. ચોપાઈ.

એક અજ્ઞાન, આચરણ જાણો, આન્તિ, દ્વિવિધ વલ્લી જ્ઞાન, પિછાનો;
શોકનાશ, અતિહર્ષ અપાર, સત્તઅવસ્થા એ નિર્ધાર. ૧૯.

(૧ અજ્ઞાન, ૨ આચરણ, ૩ આન્તિ, ૪ પરોક્ષ અને ૫ અપરોક્ષ એમ બે પ્રકારનું જ્ઞાન, ૬ શોકનાશ, ૭ અતિ અપાર હર્ષ, ૮ સાત અવસ્થા નિશ્ચય જાણ.

૧૭૯. અથ અજ્ઞાન અને આચરણ સ્વરૂપવર્ણન.

રૂઠો.

'ના જાણું હું બ્રહ્મને', એને કહે અજ્ઞાન,

'નથી બ્રહ્મ, નથી જ્ઞાન થતું', એ આચરણ સુજાણ. ૨૦૦.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! 'હું બ્રહ્મને નથી જાણતો', એ જે પુરુષ કહે છે, એ વ્યવહાર(કથન અને પ્રતીતિ)ના હેતુ અજ્ઞાન છે.

‘બ્રહ્મ છે નહિ’ અને (બ્રહ્મનું) ‘માન નથી થતું,’ (બ્રહ્મ માસતું નથી) (એમ જે પુરુષ કહે છે) વ્યવહારનો હેતુ આવરણ છે. આવરણથી જ વ્યવહાર થાય છે. કેમકે જે પ્રકારની અજ્ઞાનની શક્તિ છે—એક તો અસત્ત્વાપાદક છે; અને એક અમાનાપાદક છે, તેઓ ઘંનેને આવરણ કહે છે. ‘વસ્તુ છે નહિ’ એવી પ્રતીતિ કરાવવાવાળી જે શક્તિ, તે અસત્ત્વાપાદક કહેવાય છે. અને ‘વસ્તુનું માન નથી થતું’ એવી પ્રતીતિ કરાવવાવાળી જે અજ્ઞાનની શક્તિ તે અમાનાપાદક કહેવાય છે. એવી રીતિએ ‘બ્રહ્મ છે નહિ’ એવા વ્યવહારનો હેતુ, અજ્ઞાનની અસત્ત્વાપાદકશક્તિ છે. અને ‘બ્રહ્મ માન નથી થતું’ એવા વ્યવહારનો હેતુ અજ્ઞાનની અમાનાપાદકશક્તિ છે. જ ઘંને(શક્તિઓ)નું નામ ‘આવરણ’ છે ૧૦૦.

૧૮૦. અથ આન્તિ(કિંચા વિક્ષેપ)વર્ણન.

૩૧૦.

જન્મમરણ, ગમનાગમન, પુણ્યપાપ, મુગ્ધરોદ,
થાય માન નિજરૂપમાં, આન્તિ ઘરાણી યેદ.

૧૦૧.

ટીકા:—જન્મથી આદિલઈને જે સંમાર છે, તેની જે ‘નિજ-રૂપ’ નામ ફટકરૂપમાં પ્રતીતિ તે યેદમાં ‘આન્તિ’ કહેવાય છે. અને એને જ શોક કહે છે. ૧૦૧.

૧૦૧. આન્તિને અપ્યાત, વિક્ષેપ, મોઢ પળ કહે છે:—

અહં મમેતિ યો માયો દેહાસાશયનાત્મનિ ।

અચ્યાસોડયં નિરત્નવયો વિદુયા સ્યાન્મનિષ્ઠયા ॥ ૨૭૧ ॥

ઘારયા સ્યં પ્રત્યમાતમાનં મુદ્ધિતદ્વૃષ્ટિમાશિનમ્ ।

સોડદમિરેયેય સદ્વૃત્યાડનાતમન્યામમતિ જાદિ ॥ ૨૭૨ ॥

વિરેદ્મૂલમતિ:

દેહ-શુદ્ધિનો આદિ અનુભવકિને ‘અહં મમ’ (અહં મામ) એવી જો માલ તે મામ’ (=આન્તિ) છે. જ વિદ્યાને ૧ સામનિતા ૨૪૧ નિરત્નવય (દૂર ૪૨૪૧૦૧) (જ આન્તિનામ છે.) ૨૭૧. યોગી મુદ્ધિ અને તેની વૃષ્ટિઓનો મર્ષા મ ક-

૧૮૧. અથ ઠિવિઘ(પરોક્ષ અપરોક્ષ) જ્ઞાનવર્ણન.

૩૩૧.

ઠિવિઘ ઘ્વાન વગ્વાણિયે પરોક્ષઽને અપરોક્ષઃ
 'અસ્તિ ઘ્વાત્' પરોક્ષ છે, 'અહં ઘ્વાત્' અપરોક્ષ. ૧૦૨.
 'નાસ્તિ ઘ્વાત્' ય અંશનો, કરે પરોક્ષ વિનાશ,
 સફલ અધિઘ્વાજાલને, નાશે અન્ય પ્રકાશ. ૧૦૩.

ટીકા:—'ઘ્વાત્ છે નહિ' ય આવરણના અંશને, 'ઘ્વાત્ છે' યું પરોક્ષઘ્વાન વિનાશે છે. કેમકે, 'સત્યઘ્વાનઅનંતરૂપ ઘ્વાત્ છે' યું જે ઘ્વાન તેનું નામ પરોક્ષઘ્વાન છે. તે (પરોક્ષ ઘ્વાન) 'ઘ્વાત્ છે નહિ' યવી પ્રતીતિનું વિરોધિ છે; અન્ય(પ્રતીતિ)નું નથી. અને 'હું ઘ્વાત્ હું' યું જે અપરોક્ષઘ્વાન તે સકલ અધિઘ્વા-જાલનું વિરોધિ છે. ય કારણથી 'હું ઘ્વાત્ને નથી જાણતો' ય અજ્ઞાન, અને 'ઘ્વાત્ છે નહિ અને (ઘ્વાત્નું) માન 'નથી થતું' ય આવરણ, અને 'હું ઘ્વાત્ નથી, કિન્તુ પુણ્ય-પાપનો કત્તા, અને સુપ્તદુઃખનો મોકા જીવ હું,' ય ઘ્વાન્તિ, પટલું જે અધિઘ્વાજાલ છે તેને અપરોક્ષઘ્વાન નાશ કરે છે. ૧૦૩.

૧૮૨. અથ ઘ્વાન્તિ(=શોક)નાશવર્ણન.

૩૩૨.

જન્મમરણ મુજમાં નહિ, નહિ સુપ્તદુઃખનો લેશઃ
 કિન્તુ અજન્ય કૂંટસ્થ હું, ઘ્વાન્તિનાશ ય વેશ. ૧૦૪.

ઘ્વાત્મા જાગીને તે (પ્રત્યઘ્વાત્મા) જ હું હું યવી સદૃત્તિપ્રકરી, અનાત્મા(દેહાદિ)મા આત્મમતિને દુઃખ, ય જ્ઞાન છે. ૨૭૨. ઘ્વાત્ અને આત્માના પ્રકરનું વિજ્ઞાન તે જ 'સમ્યજ્ઞાન' કહેવાય છે.

ઘ્વાત્માર્મકત્વવિજ્ઞાનં સમ્યજ્ઞાનં શ્રુતેર્મતં ૨૦૫. ત્રિ. ૫.

૧૧૦. 'અહં ઘ્વાત્માસ્મિ' = હું ઘ્વાત્ હું - ય જ્ઞાન સર્વ દૈત વા દૃશ્યજાલનો પરો-ક્ષવાચ ધયેથી જ થાય છે. અને તે દૃશ્યજાલનો જે અપરોક્ષવાચ તે મીઘનું ફલ છે.

ટીકા:—મારેવિપે જન્મ અને મરણ નહિ, અને સુખદુઃખનો લેશ પણ છે નહિ. અને કોઈ પણ સંસારધર્મ મારેવિપે છે નહિ. કિન્તુ 'અજન્ય' નામ જન્મથી રહિત જે કૂટસ્થ, તે 'હું છું.' હે શિષ્ય ! એ રીતિએ સર્વ અનર્થનો જે નિપેધ, એ ભ્રાંતિનાશનો 'વેશ' નામ સ્વરૂપ છે; અથવા એ ભ્રાંતિનાશ 'વેશ' નામ ઉત્તમ છે. આ જગે કૂટસ્થમાં જન્મનો નિપેધ કરવાથી સર્વ(અનર્થ)નો નિપેધ જાણી લેવો. કેમકે જન્મપ્રતીતિથી અનંતર, અન્ય અનર્થ પ્રતીત થાય છે; પથી જન્મના નિપેધથી સર્વ અનર્થનો નિપેધ છે. એ જે ભ્રાંતિનાશ છે એને જ શોકનાશ પણ કહે છે. ૧૦૪.

૧૮૩. અથ હર્પસ્વરૂપવર્ણન.

હો.

સંશયરહિત સ્વરૂપનું, થાય જ અદ્વયજ્ઞાન;

હૃદયે ઉપજે મોદ તવ, તે તું હર્પ પિછાન;

૧૦૫.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! જ્યારે તને સંશયરહિત પાંતાના સ્વરૂપનું એવું જ્ઞાન થશે જે:—'હું અદ્વય વ્રહ્મરૂપ છું' ત્યારે તને જે મોદ થશે, તેને તું હર્પ (અતિપ્રિય આત્મલાભથી અન્તઃકરણનો ઉત્કર્ષ) જાણ. ૧૦૫.

૧૧૧. 'પ્રમોદ' અર્થમાં અત્ર 'મોદ' શબ્દ છે. તેને નિઃકુળાતૃપ્તિ પણ કહે છે. કોઈ પદાર્થની 'દૃષ્ટા' થાય ત્યારે તેને 'પ્રીતિ' કહે છે, તે પદાર્થ 'મલેથી' જે મનમાં હર્ષ થાય તેને 'મોદ' કહે છે, અને તે પદાર્થ 'મોગ્ધેયી' જે આનંદ થાય તેને 'પ્રમોદ' કહે છે. એમ અપરોક્ષજ્ઞાનથી ભ્રાંતિ નાશ થઈ અલંક અધ્યય પરમાનંદની પ્રાપ્તિ જે અધિકારીને થાય છે તેના અન્તરનો ઉદ્ધાર કર્ષક આ પ્રકારે હોય છે:—

ધન્યોઽહં છત્ત્વત્તયોશ્નં વિમુક્તોઽહં મયપ્રદાત્ ।

નિઃપ્રાપ્ત્વન્નદસ્પરુષોઽહં પૂર્ણોઽહં ત્વદનુપ્રદાત્ ॥ ૪૨૧ ॥

વિ. ચૂ.

આપ(ગુહ)ના અનુપ્રદથી આ સંસારરૂપ પ્રદ(રાહ)થી હું વિમુક્ત છું; હું છત્વત્તય છું; હું ધન્ય છું; હું પૂર્ણ છું; હું નિત્ય આનંદસ્વરૂપ છું.

दुहा.

कही अवस्था सत में, तुजने शिष्य सुजाग;
 ते सकला आभासनी, छे तेओमां ज्ञान. १०६.
 “ज्ञान धाय छे कोहने,” ए प्रछी ते चात;
 में तेनुं उत्तर कह्युं, इच्छे ते प्रेछ तात. १०७.
 अर्थ स्पष्ट छे.

१८४. जे गूढ अभिप्रायथी प्रश्न कस्यो हतो, तेने हवे शिष्य
 प्रकट करे छे. (शिष्यनो प्रश्न.)

प्रभु ! धाय आभासने, ‘अहं ब्रह्म’ ए ज्ञान,
 तमे भाष्युं ते जाण्युं में, पण शंका एऊ आन. १०८.

चोपाई

छे भिन्न ब्रह्मथी आभास ज, एम कस्यो पूर्व निर्धार ज.
 ‘अहं ब्रह्म’ ते केम ज जाणे ? पोते भिन्न ब्रह्मथी माने. १०९.
 जो जाणे तो मिथ्या ज्ञान थाये, रज्जु सर्प समान,
 श्रीगुरु ए संदेह मिटावो, युक्तिसहित निजउक्ति सुणावो. ११०.

टीका:—हे भगवन् ! आपे पूर्व ए कह्युं जे:—‘कूटस्थ अने
 ‘ब्रह्म तो वे एक छे, अने आभास ब्रह्मथी भिन्न छे.’ ते ब्रह्मथी
 भिन्न आभासने ‘हुं ब्रह्म छुं’ एवुं ब्रह्मरूप करीने ज्ञान
 बने नहि. मां अधिष्ठान जे कूटस्थ ते ब्रह्मरूप छे एवुं जो

धन्योऽहं धन्योऽहं कर्तव्य मे न विद्यते किञ्चित् ।

धन्योऽहं धन्योऽहं प्राप्तव्यं सर्वमद्य संपन्नम् ॥ २९४ ॥

धन्योऽहं धन्योऽहं तृप्तेर्मे कोपमा भवेल्लोके ।

धन्योऽहं धन्योऽहं धन्यो धन्यः पुनः पुनर्धन्यः ॥ २९५ ॥

पंचदशी वृत्तिदीपः.

हुं धन्य छु, हु धन्य छु. इने मारे किञ्चित् कर्तव्य छे नहि. हु धन्य छु, हु
 धन्य छुं, इने सर्व प्राप्तव्य प्राप्त भयु छे, हु धन्य छु, हु धन्य छु, मारी वृत्तिनी
 लोकमा केह उपमा होई शके ! (कोई नहि.) हुं ध य छु, हुं धन्य छु, धन्य
 धन्य पुनः पुनः धन्य इत्यादि.

આભાસને જ્ઞાન થાય, તો (તે) યથાર્થ જ્ઞાન થાય. અને 'અહં બ્રહ્મ' (હું બ્રહ્મ) ય જ્ઞાન યથાર્થ નહિ યને. કેમકે 'અહં' (હું) નામ પોતાના સ્વરૂપનું છે જેને 'હુ' કહે છે, તે આભાસનું સ્વરૂપ મિથ્યા છે, યથી ભિન્ન છે. યથી બ્રહ્મથી ભિન્ન આભાસનું જે સ્વરૂપ, તેને બ્રહ્મરૂપ કરીને જ્ઞાન થાય તો મિથ્યા જ્ઞાન થાય; જેમ સર્પથી ભિન્ન જે રજ્જુ, તેનું સર્પરૂપ કરીને જ્ઞાન મિથ્યા થાય-છે. 'મિથ્યા' નામ ભ્રાન્તિનું છે. તે બ્રહ્મજ્ઞાનને ભ્રાન્તિરૂપ કહેવું યને નહિ. ૧૧૦.

(ગુરુનું ઉત્તર:-અહંશબ્દના યે અર્થ.)

૧૮૫. ડુહા.

અહં શબ્દના અર્થનો, શુણ તું શિષ્ય વિવેક;

તુજ મનનાં જેથી નશે શંકુકલંકુ અનેક. ૧૧૧.

(હિ શિષ્ય! 'અહંશબ્દ'ના અર્થનો વિવેક (ભેદ) તું હવે સાંભલ. જેથીકરીને તારા હૃદયમાંથી શંકારૂપી અનેક કલકનો નાશ થાય.)

યદ્યપિ યાય આભાસમાં, 'અહં બ્રહ્મ' ય જ્ઞાન;

તથાપિ તે કૃટસ્થનું, લહે આપ અભિમાન. ૧૧૨.

તેનો સદા અભેદ છે, વિભુચેતનસહ તાત;

યાધસમય નિજરૂપ તે, બ્રહ્મરૂપ દર્શાત. ૧૧૩.

ટીકા:-હે શિષ્ય! યદ્યપિ 'હું બ્રહ્મ છું' યવું જ્ઞાન યુદ્ધિસહિત આભાસને થાય છે, અને કૃટસ્થને નહિ; તથાપિ તે (યુદ્ધિસહિત) આભાસ, કૃટસ્થને અને પોતાના સ્વરૂપને, યનેને પોતાનો આત્મા જાણે છ: તે આત્માનું 'હું'શબ્દે કરીને બ્રહ્મ થાય છે તે જ અહં (હું) શબ્દનો અર્થ છે.

૧૧૨. ય મુલ્યાય કહેવાય છ. તેને જ જ્ઞાન, વાચ્ય યા અભિપેય અર્થ કહે તે.

(મુખ્યસામાનાધિકરણ્ય અને ષાધસામાનાધિકરણ્ય).

તે 'અહં' શબ્દમાં માન જે થાય છે કૃટસ્થ તેનો તો વ્રહ્મના સંગે સદા અભેદ (એકતા) છે; જેમ ઘટાકાશનો અને મહાકાશનો સદા અભેદ છે. એ જ કારણથી કૃટસ્થનું વ્રહ્મનાસાથે મુખ્યસામાનાધિકરણ્ય વેદાન્તશાસ્ત્રમાં વધું છે. [જે વસ્તુનો જે વસ્તુના સંગે સદા અભેદ હોય, તે વસ્તુનું તેના સંગે મુખ્યસામાનાધિકરણ્ય કહેવાય છે. જેમ ઘટાકાશનો મહાકાશના સંગે સદા અભેદ છે, એથી ઘટાકાશ (તે) મહાકાશ છે.] જે રીતિએ ઘટાકાશનું મહાકાશની સાથે મુખ્ય સામાનાધિકરણ્ય છે; તે રીતિએ કૃટસ્થનું વ્રહ્મના સંગે મુખ્ય સામાનાધિકરણ્ય છે; કેમકે કૃટસ્થનો વ્રહ્મનાથે સદા અભેદ છે. એથી હુંશબ્દમાં માન જે થાય છે કૃટસ્થ, તેનો તો વ્રહ્મના સંગે સદા અભેદ છે.

અને હુંશબ્દમાં માન જે થાય છે આભાસ, તેનો વ્રહ્મનાથે, પોતાના સ્વરૂપને ધારીને (મિથ્યા જાણીને) અભેદ થાય છે; જેમ મુખનું જે પ્રતિબિંબ (આરોપિતા દર્પણસ્થિત અને અમિમુખતા,) તેનો વિંધસ્વરૂપ (ગ્રીવાસ્થ)મુખનાસાથે, પ્રતિબિંબસ્વરૂપને

૧૧૩. એકત્વ વૃત્તિરથે શબ્દાનાં ભિન્નવૃત્તિદેતૂનામ્ ।

સામાનાધિકરણ્યં ભવતીત્યેયં ઘટન્તિ લાક્ષણિકાઃ ॥૩૦॥

સ્વાત્મનિમ્બણ.

મિત્રવૃત્તિદેતુઓના (મિત્રઅર્થનિષ્ઠ) શબ્દોની એક અર્થવિષે વૃત્તિ (વર્તન) એ સામાનાધિકરણ્ય છે, એણે લાક્ષણિકો (લક્ષણાપ્રતિપાદકો) વદે છે.

સમાન વિમત્તિના ત્રણેરી 'સમાન' નામ એક છે 'અધિકરણ' નામ અર્થ-રૂપ આશ્રય જેનો એવા જે એ શબ્દ તે સમાનાધિકરણ્ય કહેવાય છે. તે એ શબ્દનો જે પરાપર સંબંધ તે સામાનાધિકરણ્ય (એકઅર્થવચ્ચા) કહેવાય છે. તેમાં એક સત્તા અને સ્વરૂપગાઠા હોવાથી વાસ્તવ ભેદરહિત એ અર્થના બોધક વાક્યગત એ પદોનું 'મુખ્ય સામાનાધિકરણ્ય' કહેવાય છે, જેમ ઘટાકાશ પદ અને મહાકાશ-પદનું અથવા કૃટસ્થપદ અને વ્રહ્મપદનું મુખ્ય સામાનાધિકરણ્ય (અભેદ અન્યથા-બોધકત્વ કિંવા એકઅર્થવચ્ચા) છે.

વાધોને, અભેદ થાય છે. એ જ કારણથી વેદાન્તશાસ્ત્રવિષે આભાસનું વ્રહ્મનાસંગે વાધસામાનાધિકરણ્યે કહ્યું છે. [જે વસ્તુનો વાધ થઈને જેનો સંગે અભેદ થાય, તે વસ્તુનું તેના સંગે વાધસામાનાધિકરણ્ય કહેવાય છે.] જેમ મુલના પ્રતિ-
વિવનો વાધ થઈને મુલની સાથે અભેદ થાય છે; એથી પ્રતિવિવ મુલ છે, મુલથી ભિન્ન નથી, પણ પ્રતિવિવનું મુલના સાથે વાધસામાનાધિકરણ્ય છે. કિંવા જેમ સ્થાણુ(થાંભલા)માં પુરુષનો ભ્રમ થઈને, સ્થાણુજ્ઞાનથી અનંતર પુરુષ સ્થાણુ છે, એ રીતિએ પુરુષનું સ્થાણુસાથે વાધસામાનાધિકરણ્ય થાય છે. તેમ આભાસનો વાધ થઈને વ્રહ્મના સાથે અભેદ થાય છે. એથી 'હું' શબ્દવિષે 'માન જે થાય આભાસ, તે, વ્રહ્મ છે. ભિન્ન નથી. પણ વાધસામાનાધિકરણ્ય આભાસનું વ્રહ્મના સાથે થાય છે. એ રીતિએ હે શિષ્ય ! 'અહં' શબ્દમાં માન જે થાય છે કૃદસ્થ, તેનો તો મુલ્ય અભેદ છે, અને આભાસનો વાધ કરીને અભેદ છે. ૧૧૩.

૧૮૬. તત્ત્વદષ્ટિરુવાચ.

(શિષ્યનો પ્રશ્ન-અહંવૃત્તિવિષે કૃદસ્થ અને આમામનું માન ક્રમથી થાય છે કે ક્રમવિના ?)

હો.

થાય માન ઠુંવૃત્તિમાં, સાક્ષી ને આભાસ;
તે ક્રમથી વા ક્રમ વિના, એનો કરો પ્રકાશ. ૧૧૪.

૧૧૪. સમાન વિમલિના ચણેદરી મિલસતાવાનુ મે પદાર્થોની વદતાનુ ચોષક વાચયગા મે પદોનું 'વાધસામાનાધિકરણ્ય' કહેવાય છે. જેમ સ્થાણુવદ અને પુરુષવદની વદતા અયરા જગત્વદ અને વ્રહ્મવદની વદતા છે, અયરા પ્રતિવિવવદ અને વિવવદની વદતા છે, તે 'વાધસામાનાધિકરણ્ય' છે. વાધવિષે માપનાધિકરણ્ય=વાધવયોગ્ય સામાનાધિકરણ્ય. મિલસતૂતિ નિમિત્તકલ્ય ઠણે વદાર્થસાય.

૧૧૫. એ આભાસવાદની રીતિએ કહ્યું છે. પ્રતિવિવવદની રીતિ વરી છે; તેમાં વિવપ્રતિવિવનો મેદ જ ગણા નથી.

૪તરંગ.) અહંવૃત્તિમાં સાક્ષીને આમાસનું જ્ઞાન એક જ સમયે થાય છે. ૩૦૯

ટીકા:—હે મગવન્ ! આપે કહ્યું જે 'અહંવૃત્તિમાં સાક્ષી અને આમાસ યંનેનું માન થાય છે,' અનેવિષે હું એક વાર્તા નથી જાણતો. (પૃથી પૃનું હું કે) તે કૃટસ્થ અને આમાસનું માન અહવૃત્તિવિષે ક્રમથી થાય છે, અથવા ક્રમ વિના થાય છે? [પનો અર્થ આ છે.] 'ક્રમથી' નામ ભિન્ન ભિન્ન કાલમાં થાય છે અથવા યંનેનું એક જ કાલમાં માન થાય છે અને આપ મને 'પ્રકાશ' નામ ઘોષ કરો. ૧૧૪.

૧૮૭. શ્રીગુરુશ્વાન્.

(ગુરુનું ઉત્તર-અહંવૃત્તિવિષે કૃટસ્થ (=સાક્ષી) અને આમાસનું માન એક જ સમયે થાય છે.)

દુહો.

સાવધાન થઈ શિષ્ય શુણ, કહુ ઉત્તર નિર્ધાર,
શુણે જાય અજ્ઞાનતમ, યાધમાનુ ઉર્ગો સાર. ૧૧૫.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! તે જે પ્રશ્ન કન્યો, તેનું સારભૂત ઉત્તર હું કહુ હું. તુ સાવધાન થઈને સાંમઝ. કેવું ઉત્તર છે કે જેને સાંમઝતાં જ ઘોષરૂપી સૂર્યનો પ્રકાશ થઈને અજ્ઞાનરૂપી તમને નાશાય છે. ૧૧૫.

દુહો.

માન થાય એક જ સમય, સાક્ષી અને આમાસ,
ધીજો ચેતનનો વિષય, સાક્ષી સ્વયંપ્રકાશ. ૧૧૬.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! એક જ સમય સાક્ષીનું અને આમાસનું અહવૃત્તિવિષે માન થાય છે. [સર્વે પ્રકરણમાં 'આમાસ' શબ્દથી 'અત ઋણસહિત આમાસનું' ગ્રહણ કરવું] પૃથી, 'ધીજો' નામ અંત.કરણસહિત જે આમાસ છે, તે તો ચેતન જે સાક્ષી, તેનો વિષય (તેનાથી પ્રકાશિત) થઈને માન થાય

છે. અને સાક્ષી સ્વયંપ્રકાશરૂપેકરીને ભાન થાય છે અને અંત-કરણની જે આભાસસહિતવૃત્તિ તેનો વિષય સાક્ષી નથી.

અને ઘટાદિક વહિરના પદાર્થોવિષે તો આવી રીતિ છે:- જ્યારે ઇન્દ્રિયનો અને ઘટનો સંયોગ થાય, ત્યારે ઇન્દ્રિયદ્વારા અંતઃકરણની વૃત્તિ નીકળીને ઘટના સમાન આકારને પ્રાપ્ત થાય છે. જેમ ઘીવામાં રેહેલો જે તાપ્ર(નો રસ) તેનો ઘીવાના આકારના સમાન આકાર થાય છે, તેમ અંતઃકરણની વૃત્તિનો પણ ઘટના આકારના સમાન આકાર થાય છે. તે વૃત્તિ આભાસ-વિના નથી હતી, કિન્તુ આભાસસહિત હોય છે, કેમકે વૃત્તિ અંતઃકરણનો પરિણામ છે. [અંતઃકરણનો જે પરિણામ તેને વૃત્તિ કહે છે.] જેમ અંતઃકરણ સત્ત્વગુણનું કાર્ય હોવાથી સ્વચ્છ છે, યથી અંતઃકરણવિષે ચેતનનો આભાસ થાય છે; તેમ વૃત્તિ પણ સ્વચ્છ અંતઃકરણનું કાર્ય છે, યથી વૃત્તિવિષે ચેતનનો આભાસ થાય છે અને વૃત્તિ જે ઉત્પન્ન થાય છે તે આભાસસહિત અંતઃકરણથી ઉત્પન્ન થાય છે, ય કારણથી પણ વૃત્તિ આભાસસહિત જ હોય છે.

૧૮૮. (અજ્ઞાનનો આધ્ય અને વિષય, ચેતન છે.)

વિષય જે ઘટ છે તે તમોગુણનું કાર્ય છે યથી સ્વરૂપથી જડ છે, અને તેવિષે અજ્ઞાન અને તેનું આવરણ છે. યમાં આવી શંકા થાય છે:-અજ્ઞાન અને તેનું આવરણ, વિચાર-દૃષ્ટિથી, ચેતનવિષે છે, ઘટવિષે નહિ. કેમકે અજ્ઞાન ચેતનને આશ્રિત છે, અને ચેતનને જ વિષય કરે છે (=ઢાંકે છે.) યવો યેદાન્તનો સિદ્ધાન્ત છે. અને સત્ત્વઅવસ્થાના પ્રસંગમાં જે અજ્ઞાનનો આધ્ય અંતઃકરણસહિત આભાસ કરાવે, તે અજ્ઞાનનો અભિમાની છે. 'હું અજ્ઞાની છું' યવું અભિમાન અંતઃકરણસહિત આભાસને થાય છે; ય કારણથી અજ્ઞાનનો આધ્ય

(આમાસ) કહેવાય છે અને મુખ્ય આશ્રય ચેતન છે, આમાસ-સહિત અંતઃકરણ નહિ. કેમકે આમાસસહિત અંતઃકરણ અજ્ઞાન-નું કાર્ય છે. જે જેનું કાર્ય હોય છે, તે તેનો આશ્રય વને નહિ. ઈથી ચેતન જ અજ્ઞાનનો અધિષ્ઠાનરૂપ આશ્રય છે, અને ચેતનને જ અજ્ઞાન વિષય કરે છે. [સ્વરૂપનું જે આવરણ કરવું તે જ અજ્ઞાનનું વિષય કરવું છે.] તે અજ્ઞાનરૂત આવરણ જડવસ્તુવિષે વને નહિ; કેમકે જડવસ્તુ સ્વરૂપથી જ આવૃત છે, તે(જડ)નેવિષે અજ્ઞાનરૂત આવરણનો કંઈ ઉપયોગ નથી. ૫ રીતિ ૫ અજ્ઞાનનો આશ્રય અને વિષય ચૈતન્ય છે. જેમ ગૃહના મધ્યમાં જે અંધકાર છે, તે ગૃહના મધ્યને (આશ્રયે છે અને તેને જ) આવરણ કરે છે. ઈથી ઘટનેવિષે અજ્ઞાન અને તેનું આવરણ વને નહિ. (ઈથી પૂર્વપક્ષીની ડાંકા છે.) તેનું આ સમાધાન છે:—

(વસ્તુના પ્રત્યક્ષજ્ઞાનની રીતિ.)

૧૮૯. (વહિરપદાર્થના જ્ઞાનમાં વૃત્તિ અને આમાસ ૫ વેનો ઉપયોગ છે.)

જેમ ચેતનના સ્વરૂપથી મિત્ર, સત્-અસત્-થી વિલક્ષણ અજ્ઞાન, ચેતનને આશ્રિત છે, તે અજ્ઞાનેકરી ચેતન આવૃત થાય છે: તેમ ઘટના સ્વરૂપથી મિત્ર અજ્ઞાન, યદ્યપિ ઘટને આશ્રિત છે નહિ, તથાપિ અજ્ઞાને ઘટાદિક સ્વરૂપેકરી પ્રકાશ-રહિત જડસ્વરૂપ-રચ્યાં છે, ઈથી સદ્વા જ અંધના સમાન

૧૧૬. જેમ ધનનો મુખ્ય આશ્રય કોશ-પેટી આદિ ધનના મહાર-છે, અને 'હું ધની છું' ઈવો ધનનો અભિમાનીરૂપ આશ્રય પુરુષ છે, તેમ અજ્ઞાનનો મુખ્ય આશ્રય ચેતન છે, અને અભિમાનીમ્ય આશ્રય સામાસ અન્તઃકરણ છે. વં. પી. પુ.

૧૧૭. ન્યાયમતાનુસાર-ઇન્દ્રિયના અર્થસહ સનિર્મયથી ઉપજે જે જ્ઞાન તે 'પ્રત્યક્ષજ્ઞાન' કહેવાય છે. વેદાન્તમતાનુસાર,-વિષયચૈતન્ય અભિત્ર પ્રમાણચૈતન્ય ૫ 'પ્રત્યક્ષજ્ઞાન' કહેવાય છે.

આવૃત છે. ઘટાદિકનો તે આવૃત સ્વભાવ અજ્ઞાને કન્યો છે. કેમકે તમોગુણપ્રધાન અજ્ઞાનથી ભૂતની ઉત્પત્તિદ્વારા ઘટાદિક ઉપજે છે. તે તમોગુણ આવરણસ્વભાવવાનુ છે, યથી ઘટાદિક પ્રકાશરહિત અંધ જ થાય છે. એ રીતિએ અંધતારૂપ આવરણ, ઘટાદિકોમાં અજ્ઞાનદ્વારા 'સ્વભાવસિદ્ધ' છે. અને ઘટાદિકોના અધિષ્ઠાનચેતનઅશ્રિત અજ્ઞાન, ચેતનને આચ્છાદિત કરીને, સ્વભાવથી આવૃત ઘટાદિકોને પણ આવૃત કરે છે. યદ્યપિ સ્વભાવથી આવૃત પદાર્થના આવરણમાં પ્રયોજન છે નહિ, તથાપિ આવરણક્ષર્તા પદાર્થ, પ્રયોજનની અપેક્ષા વિના પણ નિરાવરણની પેઠે આવરણસહિતમાં પણ આવરણ કરે છે; એ લોકમાં પ્રસિદ્ધ છે. તે અજ્ઞાનથી આવૃત ઘટને વ્યાપ્ત જે થાય છે અંતઃકરણની આભાસસહિત ઘટાકારવૃત્તિ, તેમાં વૃત્તિભાવ તો ઘટના આવરણને દૂર કરે છે, અને વૃત્તિમાં (તે વૃત્તિસાથે) જે આભાસમાગ છે તે ઘટનો પ્રકાશ કરે છે. એ રીતિએ વહિરના પદાર્થ-વિષે વૃત્તિ અને આભાસ એ બંનેનો ઉપયોગ છે. (તેવિષે) દૃષ્ટાન્ત.

૧૯૦. જેમ અંધકારમાં કુંડાથી મૃત્તિકા અથવા લોહનું પાષ ઢાંકી મુક્યું હોય, ત્યાં દંડેકરી કુંડાને ફોડી પણ નાંચે, પછી દીપક વિના તે નિરાવરણ ઘાતનો પણ પ્રકાશ થાય નહિ, કિન્તુ દીપકેકરી પ્રકાશ થાય છે. તેમ અજ્ઞાને આવૃત જે ઘટ તે(ઘટ)ના આવરણને (અંતઃકરણનો) વૃત્તિ(માગ દંડની પેઠે) ભંગ પણ કરે છે, તથાપિ ઘટનો પ્રકાશ થાય નહિ. કેમકે ઘટ તો સ્વરૂપે જડ છે, અને વૃત્તિ પણ જડ છે, તેનું આવરણ-ભંગ માત્ર પ્રયોજન છે; તેને પ્રકાશ થાય નહિ. યથી ઘટનો પ્રકાશક આભાસ છે. નેત્રનો વિષય જે વસ્તુ છે, તેના પ્રત્યક્ષ-જ્ઞાનની એ રીતિ વહી. અને શ્રવણાદિકનો જે વિષય છે, તેના પ્રત્યક્ષની પણ રીતિ એમ જ જાણી લેવી.

વૃત્તિ અને ઘટ એ એકદેશમાં સ્થિત થયાથી ઘટનું જ્ઞાન પ્રત્યક્ષ કહેવાય છે. અને ધંતઃકરણની વૃત્તિ તો (અન્તર્મા મનો-મય) ઘટાકાર હોય અને ઘટના સંગે વૃત્તિનો સમ્બન્ધ ન હોય, કિન્તુ અન્તર્ જ વૃત્તિ હોય, તે ઘટનું પરોક્ષજ્ઞાન કહેવાય છે. 'આ ઘટ છે' એવો અપરોક્ષ (નામ પ્રત્યક્ષ) જ્ઞાનનો આકાર છે; અને 'ઘંટ છે' અથવા 'તે ઘટ છે' એવો પરોક્ષ-જ્ઞાનનો આકાર છે. યદ્યપિ સ્મૃતિજ્ઞાન પણ પરોક્ષજ્ઞાન જ છે, તથાપિ સ્મૃતિજ્ઞાન તો 'સંસ્કારજન્ય' છે; અને અનુમિતિઆદિ પરોક્ષજ્ઞાન 'પ્રમાણજન્ય' છે, પટલો ભેદ છે. પ્રમાણના પ્રસંગ-થી અમે પ્રમાણનિરૂપણ કરિયે છિયે.

(પ્રમાણનિરૂપેણં.)

૧૧૧. (પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ.)

ચાર્વાકે' જે છે તે એક 'પ્રત્યક્ષપ્રમાણ' અંગીકાર કરે છે.

૧૧૨. (અનુમાનપ્રમાણ.)

અને કૃણોદે' અને સુગતમતના જે અનુસારી છે, તે ધીજું 'અનુમાનપ્રમાણ' પણ અંગીકાર કરે છે. કેમકે એક પ્રત્યક્ષ જ પ્રમાણ અંગીકાર કરે તો તૃપ્તિના અર્થાની ભોજનવિષે પ્રવૃત્તિ નહિ થશે. કેમકે અમુક્તભોજનવિષે તૃપ્તિની હેતુતાનું,

૧૧૮. શબ્દબોધથી જનિત અનુભવજ્ઞાનનું રૂપ.

૧૧૯. સ્મૃતિજ્ઞાનનું રૂપ, વા આકાર, વા અભિનય.

૧૨૦. પ્રમાણનું કરણ; વા અનધિગતાર્થક—અનુમય-કારણત્વ; અથવા બોદેદ્વાવૃત્તિ વા વૃત્તીદ્વષોષઃ એ 'પ્રમા' અને તેનું કરણ એ 'પ્રમાણ.' તેનું 'નિરૂપણ' નામ લઙ્ગણાદિપ્રકારેકરી જ્ઞાનઅનુકૂલ વચન.

૧૨૧ નાસ્તિકમતવાલા દેહાત્મવાદી.

૧૨૨. ઇન્દ્રિયના અર્થસદ્ સંનિકર્ષેથી उत्पन्न થાય જે જ્ઞાન તે 'પ્રત્યક્ષપ્રમા,' તેનું 'કરણ' નામ પ્રત્યક્ષપ્રમાનું અસાધારણ સાધન જે નેત્રાદિક ઇન્દ્રિય છે તે પ્રત્યક્ષપ્રમાણ.'

૧૨૩. વૈશેષિક શાસ્ત્રના વર્તી, જેને, કળમુક્ પણ કહે છે.

પ્રત્યક્ષપ્રમાણજન્ય પ્રત્યક્ષજ્ઞાન છે નહિ. યથી (પૂર્વ) મુક્તમો-
જનમાં અનુભવ જે કરી છે તૃપ્તિની હેતુતા, તે અમુક્તમોજન-
માં પણ અનુમાનેકરી જાણીને, તૃપ્તિના અર્થાંત્રી મોજનમાં
પ્રવૃત્તિ હોવાથી, અનુમાનપ્રમાણ પણ અંગીકાર કર્યું જોઈયે. ય
રીતિપ કળાદ અને સુગતમતના અનુસારી પ્રત્યક્ષ અને અનુ-
માન બે પ્રમાણ અંગીકાર કરે છે.

૧૯૩. (શબ્દપ્રમાણ.)

અને ચાંચ્યશાસ્ત્રના કર્તા જે કપિલ છે તેના મતના
અનુસારી શ્રીકું 'શબ્દપ્રમાણ' પણ અંગીકાર કરે છે. કેમકે
જો પ્રત્યક્ષ અને અનુમાન બે જ પ્રમાણ અંગીકાર કરે તો
દેશાન્તરવિષે જેનો પિતા મરી ગયો હોય તેને કોઈ યથાર્થવક્તા
આવીને કહે:-'તારો પિતા મરી ગયો છે.' ત્યારે શ્રોતાને પિતાના
મરણનો નિશ્ચય નહિ થયો જોઈયે. કેમકે દેશાન્તરવિષે
સ્થિત પિતાના મરણનું જ્ઞાન પ્રત્યક્ષ અને અનુમાને કરીને
વને નહિ. ય રીતિપ કપિલમતના અનુસારી, પ્રત્યક્ષ, અનુ-
માન, અને શબ્દ, ય ત્રણ પ્રમાણ અંગીકાર કરે છે.

૧૯૪. (ઉપમાનપ્રમાણ.)

અને ન્યાયશાસ્ત્રના કર્તા જે ગૌતમ છે, તેના મતના
અનુસારી ચતુર્થપ્રમાણ 'ઉપમાન' પણ અંગીકાર કરે છે. કેમકે
પ્રત્યક્ષ આદિક ત્રણ જ પ્રમાણ અંગીકાર કરે તો, જે પુદ્ગલ
ગય (વલદ જેનું પશુ, રોક્ષ) નહિ ઢીઠો હોય અને ઘનવાસી
પુદ્ગલથી પશું સાંમલ્લું હોય કે, 'ગોના સદશ ગયય હોય છે,'
તે પુદ્ગલ જો ઘનમાં ચાલશે જાય અને (ત્યાં) ગયયને દેખી લે,
ત્યારે તેને ઘનવાસી પુદ્ગલે કહેતું જે:-'ગોના સદશ ગયય
હોય છે' ય વાક્ય, તેના અર્થનું સ્મરણ ઘાય છે, તે સ્મૃતિથી
અનંતર પુદ્ગલને આણું ઘાન થાય છે:-'આ પશુ ગયય છે,' ય

જ્ઞાન ન થવું ઝોડયે. યથી યના વિલક્ષણ જ્ઞાનનો હેતુ 'ઉપમાન-પ્રમાણ' પણ અંગીકાર કરે છે.

૧૨૫. (અર્થાપત્તિપ્રમાણ નામ અનુકાર્યની સિદ્ધિ થાય છે જેથી તે પ્રમાણ.)

અને પૂર્વમીમાંસાનો એકદેશી જે ભટ્ટનો શિષ્ય પ્રમા-કર છે, તે પંચમ 'અર્થાપત્તિ' (કાર્યથી કારણની કલ્પના) પ્રમાણ પણ અંગીકાર કરે છે. દિનમાં મોજનત્યાગી પુરુષને સ્થૂલ દેખીને આવું જ્ઞાન થાય છે:- 'આ પુરુષ રાત્રિપ મોજન કરે છે.' ત્યાં રાત્રિમોજનવિના દિનમાં મોજનત્યાગીના ઘિપે સ્થૂલતા વને નહિ. યથી રાત્રિમોજન(ના જ્ઞાનનું) સ્થૂલતા-(જ્ઞાન) 'સંપાદક' છે, અને રાત્રિમોજન 'સંપાદ' છે. સંપાદ જે રાત્રિમોજન તેના જ્ઞાનનો હેતુ સ્થૂલતાનું જ્ઞાન તે 'અર્થા-પત્તિપ્રમાણ' કહેવાય છે.

૧૨૬. (અનુપલબ્ધિપ્રમાણ.)

અને પૂર્વમીમાંસક જે ભટ્ટ છે તે છઠ્ઠું 'અનુપલબ્ધિપ્રમાણ' પણ અંગીકાર કરે છે. અને વેદાન્તશાસ્ત્રઘિપે પણ પદ્મ પ્રમાણ અંગીકાર કન્યાં છે. અનુપલબ્ધિપ્રમાણનું પ્રયોજન આ છે:-ગૃ-હાદિકર્મા ઘટાદિકોના અભાવનું જ્ઞાન થાય છે, ત્યાં જે પદાર્થ-ની પ્રતીતિ નથી થતી, તેના અભાવનું જ્ઞાન થાય છે. [અપ્ર-તીતિને 'અનુપલબ્ધિ' કહે છે.] ઘટની જે અનુપલબ્ધિ નામ અપ્રતીતિ (ન જણાવું), તેથી ઘટના અભાવ(નો) નિશ્ચય થાય છે. એમ પદાર્થના અભાવનિશ્ચયનો હેતુ જે પદાર્થની અપ્ર-તીતિ તેને 'અનુપલબ્ધિપ્રમાણ' કહે છે.

૧૨૭. (પ્રમાજ્ઞાનનું લક્ષણ.)

પ્રમાજ્ઞાન(યથાર્થજ્ઞાન)નું જે કરણ છે તે 'પ્રમાણ' કહેવાય છે.

પ્રત્યક્ષપ્રમાણજન્ય પ્રત્યક્ષજ્ઞાન છે નહિ. યથી (પૂર્વ) મુક્તમો-
જનમાં અનુભવ જે કરી છે તૃપ્તિનો હેતુતા, તે અમુક્તમોજન-
માં પણ અનુમાનેકરી જાણીને, તૃપ્તિના અર્થાન્ની મોજનમાં
પ્રવૃત્તિ હોવાથી, અનુમાનપ્રમાણ પણ અંગીકાર કર્યું જોઈયે. ય
રીતિપ કૃણાદ અને સુગતમત્તના અનુસારી પ્રત્યક્ષ અને અનુ-
માન યે પ્રમાણ અંગીકાર કરે છે.

૧૯૩. (શબ્દપ્રમાણ.)

અને સાંખ્યશાસ્ત્રના કર્તા જે કપિલ છે તેના મતના
અનુસારી ત્રીજું 'શબ્દપ્રમાણ' પણ અંગીકાર કરે છે. કેમકે
જો પ્રત્યક્ષ અને અનુમાન યે જ પ્રમાણ અંગીકાર કરે તો
દેશાન્તરવિષે જેનો પિતા મરી ગયો હોય તેને કોઈ યથાર્થવક્તા
આવીને કહે:-'તારો પિતા મરી ગયો છે.' ત્યારે થોતાને પિતાના
મરણનો નિશ્ચય નહિ થયો જોઈયે. કેમકે દેશાન્તરવિષે
સ્થિત પિતાના મરણનું જ્ઞાન પ્રત્યક્ષ અને અનુમાને ફરીને
ધને નહિ. ય રીતિપ કપિલમતના અનુસારી, પ્રત્યક્ષ, અનુ-
માન, અને શબ્દ, ય ત્રણ પ્રમાણ અંગીકાર કરે છે.

૧૯૪. (ઉપમાનપ્રમાણ.)

અને ન્યાયશાસ્ત્રના કર્તા જે ગૌતમ છે, તેના મતના
અનુસારી ચતુર્થપ્રમાણ 'ઉપમાન' પણ અંગીકાર કરે છે. કેમકે
પ્રત્યક્ષ આદિક ત્રણ જ પ્રમાણ અંગીકાર કરે તો, જે પુરુષ
મધ્ય (બલદ જેવું પશુ, રોત્ર) નહિ દોઠો હોય અને યનયાત્રી
પુરુષથી યવું સાંભળું હોય કે, 'ગોના સરસ મધ્ય હોય છે,'
તે પુરુષ જો યનમાં ઘાલ્યો જાય અને (ત્યાં) મધ્યને દેલી લે,
ત્યારે તેને યનયાત્રી પુરુષે કહેલું જે:-'ગોના સરસ મધ્ય
હોય છે' ય યાચ્ય, તેના અર્થનું સ્મરણ યાય છે; તે સ્મૃતિથી
અનંતર પુરુષને આયું જ્ઞાન યાય છે:-'આ પશુ મધ્ય છે,' યવું

જ્ઞાન ન થવું જોઈયે. યથી યવા વિલક્ષણ જ્ઞાનનો હેતુ 'ઉપમાન-પ્રમાણ' પણ અંગીકાર કરે છે.

૧૯૫. (અર્થાપત્તિપ્રમાણ નામ અનુક્તાર્થની સિદ્ધિ થાય છે
જેથી તે પ્રમાણ.)

અને પૂર્વમીમાંસાનો એકદેશી જે ભટ્ટનો શિષ્ય પ્રમા-કર છે, તે પંચમ 'અર્થાપત્તિ' (કાર્યથી કારણની કલ્પના) પ્રમાણ પણ અંગીકાર કરે છે. દિનમાં મોજનત્યાગી પુરુષને સ્થૂલ દેહીને ઝાણું જ્ઞાન થાય છે.- 'આ પુરુષ રાત્રિએ મોજન કરે છે.' ત્યાં રાત્રિમોજનવિના દિનમાં મોજનત્યાગીના ઘિપે સ્થૂલતા વને નહિ. યથી રાત્રિમોજન(ના જ્ઞાનનું) સ્થૂલતા-(જ્ઞાન) 'સંપાદક' છે, અને રાત્રિમોજન 'સંપાદ્ય' છે. સંપાદ્ય જે રાત્રિમોજન તેના જ્ઞાનનો હેતુ સ્થૂલતાનું જ્ઞાન તે 'અર્થા-પત્તિપ્રમાણ' કહેવાય છે.

૧૯૬. (અનુપલબ્ધિપ્રમાણ.)

અને પૂર્વમીમાંસક જે ભટ્ટ છે તે છટું 'અનુપલબ્ધિપ્રમાણ' પણ અંગીકાર કરે છે. અને વેદાન્તશાસ્ત્રવિપે પણ પદ્ પ્રમાણ અંગીકાર કન્યાં છે. અનુપલબ્ધિપ્રમાણનું પ્રયોજન આ છે:-શૃ-હાદિકમાં ઘટાદિકોના અભાવનું જ્ઞાન થાય છે, ત્યાં જે પદાર્થ-ની પ્રતીતિ નથી થતી, તેના અભાવનું જ્ઞાન થાય છે. [અપ્ર-તીતિને 'અનુપલબ્ધિ' કહે છે.] ઘટની જે અનુપલબ્ધિ નામ અપ્રતીતિ (ન જણાવું), તેથી ઘટના અભાવ(નો) નિશ્ચય થાય છે. એમ પદાર્થના અભાવનિશ્ચયનો હેતુ જે પદાર્થની અપ્ર-તીતિ તેને 'અનુપલબ્ધિપ્રમાણ' કહે છે.

૧૯૭. (પ્રમાજ્ઞાનનું લક્ષણ.)

પ્રમાજ્ઞાન(યથાર્થજ્ઞાન)નું જે કરણ છે તે 'પ્રમાણ' કહેવાય છે.

[સ્મૃતિથી ભિન્ન જે અવાધિત (નામ વ્યવહારદશામાં જે વાધને પ્રાપ્ત ન થાય એવા) અર્થને વિષય કરવાવાળું જ્ઞાન છે તે 'પ્રમા' કહેવાય છે.] 'સ્મૃતિજ્ઞાન' જે છે તે 'પ્રમા' નથી, કેમકે જે પ્રમાજ્ઞાન છે તે પ્રમાતાને આધિત હોય છે. અને સ્મૃતિ પ્રમાતાને આધિત નથી; કિન્તુ સાક્ષીને આધિત અંગીકાર કરી છે. અને भ्रान્તિજ્ઞાન અને સંશય(જ્ઞાન) પણ સાક્ષીને આધિત અંગીકાર કર્યાં છે. એ કારણથી 'સ્મૃતિ' અને 'ભ્રાન્તિ' અને 'સંશય' એ ત્રણે જ્ઞાન, (બ્રહ્મના) આભાસ-સહિત અવિદ્યાની વૃત્તિરૂપ છે, અંતઃકરણની વૃત્તિરૂપ નહિ; એથી (એ ત્રણ જ્ઞાન) પ્રમાતાને આધિત નથી, કિન્તુ સાક્ષીને આધિત છે. જે અંતઃકરણની વૃત્તિરૂપ જ્ઞાન હોય, તે પ્રમાતાને આધિત હોય છે, અને તે જ 'પ્રમા' (કિંવા પ્રમાજ્ઞાન) કહેવાય છે. સ્મૃતિજ્ઞાન અંતઃકરણની વૃત્તિ નથી, એથી પ્રમાતાને આધિત નહિ, અને પ્રમા પણ નહિ. એથી પ્રમાનાં લક્ષણવિષે 'સ્મૃતિથી ભિન્ન' કહ્યું જોડયે. અવાધિત અર્થને વિષય કરવાવાળું (નામ ગ્રહણ કરનાર-જણાવનાર) જ્ઞાન તો સ્મૃતિજ્ઞાન પણ છે; પરંતુ સ્મૃતિજ્ઞાન 'સ્મૃતિથી ભિન્ન' નહિ. એથી અવાધિત અર્થને વિષય કરવાવાળું જે સ્મૃતિથી ભિન્ન જ્ઞાન છે તે 'પ્રમા' (યથાર્થ અનુભવ) કહેવાય છે. એ લક્ષણવિષે કોઈ દોષ નથી.

૧૯૮. (સ્મૃતિજ્ઞાન, ભ્રાન્તિજ્ઞાન, સંશયજ્ઞાન.)

અને કોઈ સ્મૃતિજ્ઞાનને પણ પ્રમારૂપ માને છે. તેમના મતમાં પ્રમાનાં લક્ષણવિષે 'સ્મૃતિથી ભિન્ન' એવું ન કહેયું. કિન્તુ 'અવાધિતઅર્થને વિષય કરવાવાળું જે જ્ઞાન છે તે પ્રમા (યથાર્થજ્ઞાન) કહેવાય છે' (એમ કહેયું). ભ્રાન્તિજ્ઞાન જે છે તે અવાધિતઅર્થને વિષય નથી કરતું; કિન્તુ આધિતઅર્થને વિષય કરે છે. એથી પ્રમાનું લક્ષણ ભ્રાન્તિજ્ઞાનમાં નથી જતું.

जेमना मतमां स्मृतिज्ञानविषे पण प्रमाव्यवहार छे, तेमना मतमां स्मृतिज्ञान अंतःकरणनी वृत्ति छे, अविद्यानी वृत्ति नहि; अने साक्षीने आश्रित पण नहि. किन्तु प्रमाताने आश्रित छे. केमके अंतःकरणनी वृत्तिनो आश्रय प्रमाता ज वने छे, साक्षी वने नहि. ए रीतिप स्मृतिज्ञान कोईना मतमां तो अंतःकरणनी वृत्ति छे, एथी प्रमारूप छे, अने कोईना मतमां अविद्यानी वृत्ति छे, एथी प्रमारूप नथी. अने 'भ्रान्तिज्ञान' अने 'संशयज्ञान' ए धने सर्वना मतमां अविद्यानी वृत्ति छे; अने साक्षीने आश्रित छे; एमां कोई विवाद नथी. अने विचार करीने देखिए तो स्मृतिज्ञान पण अविद्यानी वृत्ति छे, अने साक्षीने आश्रित छे, प्रमारूप नथी. केमके जे वेदान्त-संप्रदायना वेत्तों छे, तेमणे प्रमाज्ञान पट्ट प्रकारजुं कह्युं छे. ते छ प्रकारमां स्मृतिज्ञान छे नहि, एथी (ते) प्रमा नहि.

१९९ (पट्टप्रमा. करण. कारण.)

अने मधुसूदनस्वामीए 'स्मृतिज्ञान' साक्षीने आश्रित ज कह्युं छे. एक तो प्रत्यक्षप्रमा छे. अने बीजी अनुमिति प्रमां छे, अने त्रीजी उपमितिप्रमा छे, अने चौथी शाब्दीप्रमा छे, अने पांचमी अर्थापत्तिप्रमा छे, अने छठी अभावप्रमा (अनुपलब्धिप्रमा) छे. ए पट्टप्रमा छे अने पूर्वे कहां जे प्रत्यक्षादि 'पट्टप्रमाण' छे ते तेओनां क्रमथी करेण छे 'प्रत्यक्षप्रमाणुं' जे करण होय ते 'प्रत्यक्षप्रमाण' कहेवाय छे. अ सा धारण का रण जे होय ते करण कहेवाय छे. जे सर्व कार्यजुं

१२४. वेदान्तपरिभाषाप्रथमा कर्ता धर्मराजाध्वरीन्द्रादि वेदान्त जणनार.
 १२५. प्रत्यक्षप्रमाणजन्य ज्ञान. १२६. अनुमानप्रमाणजन्य ज्ञान. १२७. उपमानप्रमाणजन्य ज्ञान. १२८. शब्दप्रमाणजन्य ज्ञान. १२९. अर्थापत्तिप्रमाणजन्य ज्ञान. १३०. अनुपलब्धिप्रमाणजन्य ज्ञान. १३१. व्यापारमित्तत्वे सति असाधारणकारणत्वं.

કારણ હોય તે સાધારણ કારણ કહેવાય છે. જેમ ધર્મઅ-ધર્માદિક, સર્વ કાર્યનાં કારણ છે, એથી સાધારણ કારણ છે. સર્વ કાર્યનું કારણ ન હોય, કિન્તુ કોઈક કાર્યનું કારણ હોય તે અસાધારણ કારણ કહેવાય છે. જેમ દંડ જે છે તે સર્વ કાર્યનું કારણ નથી, કિન્તુ ઘટાદિક જે કાર્યવિશેષ છે તેમનું કારણ છે; એથી દંડ 'અસાધારણ કારણ' કહેવાય છે અને ઘટનું 'કરણ' પણ કહેવાય છે; તેમ પ્રત્યક્ષપ્રમાનાં, ईश्वर અને તેની इच्छाથી આદિલईને (નંબં કારણો છે તે) તો, 'સાધારણ કારણ' છે; કેમકે ईश्वરાદિ લईને સર્વ કાર્યનાં કારણ છે. તેનાવિના કોઈ કાર્ય થતું નથી; એથી ईश्वરાદિક 'સાધારણ કારણ' છે; અને નેત્રથી આદિલईને જે इन्द्रिय છે તે પ્રત્યક્ષપ્રમાનાં 'અસાધારણ કારણ' છે. એથી નેત્રાદિક જે इन्द्रिय છે તે પ્રત્યક્ષપ્રમાનાં 'કરણ' છે. એ રીતિએ નેત્રાદિ જે इन्द्रिय છે તે પ્રત્યક્ષપ્રમાણ કહેવાય છે.

૨૦૦. (ચાર ચેતનઃ—પ્રમાતા પ્રમાણ, પ્રમિતિ ઘા પ્રમા, પ્રમેય)

યદ્યપિ इन्द्रियને, वेदान्तસિદ્ધાન્તવિષે, પ્રમાજ્ઞાનની કારણતા, કહેવું વને નહિ; કેમકે ચેતનના ચાર ભેદ છે:—એક તો 'પ્રમાનાચેતન' છે; અને ત્રીજું 'પ્રમાણચેતન' છે; અને ત્રીજું 'પ્રમિતિચેતન' છે, [તેને જ 'પ્રમાચેતન' પણ કહે છે.] અને ચોથું 'પ્રમેયચેતન' છે; [તેને જ 'વિષયચેતન' પણ કહે છે.] એ રીતિએ પ્રમા નામ ચેતનનું છે; તે નિત્ય છે, इन्द्रियजन्य નથી. એથી इन्द्रिय તેનું (પ્રમાચેતનનું) કારણ નથી, તથાપિ ચેતનમાં પ્રમાવ્યવહારનાં સંપાદક (સાધક) વૃત્તિ પણ 'પ્રમા'

૨૩૨. નવ સાધારણ કારણ—ईश्वर (૧). ईश्वરની ईच्छा (૨). ईश्वરનું જ્ઞાન (૩). ईश्वરનું પ્રયત્ન (૪). શાલ (૫). દિશા (૬). અદૃષ્ટ (૭). પ્રાગભાવ (૮) પ્રતિબંધનાભાવ (૯).

કહેવાય છે, (અને તે પ્રમાવ્યવહારસંપાદકવૃત્તિરૂપ જે પ્રમા) તેનાં ઇન્દ્રિય કરણ છે.

દેહના મધ્યે જે અંતઃકરણ તેણેકરીને અવચ્છિન્ન જે ચેતન તે પ્રમાતા કહેવાય છે, તે જ અંતઃકરણ નેત્રાદિક ઇન્દ્રિયદ્વારા નિકલીને જેટલે દૂર ઘટાદિક વિષય સ્થિત હોય પટલો લાંબો પરિણામ અંતઃકરણનો થાય છે. અને આગલ વિષય જે ઘટાદિક છે તેઓની સાથે મિલીને જેવો ઘટાદિકનો આકાર હોય તેવો જ અંતઃકરણનો આકાર થાય છે, - જેમ કુંડ(જલાશય)માં મચ્યું જે જલ તે છિદ્રદ્વારા નિકલીને; લાંબી નીકના આકારે થઈને, વાટિકાના કેદાર(ક્યારા)માં જાય છે; અને કેદારમાં જઈને જેવો કેદારનો આકાર હોય, તેવા આકારને તે જલ પ્રાપ્ત થાય છે: - તેમ અંતઃકરણ પણ ઇન્દ્રિયરૂપી છિદ્રદ્વારા નિકલીને વિષયરૂપી કેદારમાં જાય છે; ત્યાં શરીરથી લઈને ઘટાદિક વિષયપર્યંત જે અંતઃકરણનો નીકના સમાન પરિણામ-તેને વૃત્તિજ્ઞાન કહે છે; તેણે કરીને અવચ્છિન્ન (આ સ્થલે વિશિષ્ટ) જે ચેતન તેને પ્રમાણચેતન કહે છે; અને વૃત્તિજ્ઞાનરૂપ જે અંતઃકરણનો પરિણામ તેને પ્રમાણ કહે છે. જેમ કેદારવિપે, જલ જઈને કેદારના સમાનાકાર થાય છે, તેમ ઘટાદિક જે વિષય છે તેઓમાં વૃત્તિ જઈને ઘટાદિકના સમાન આકારને પ્રાપ્ત થાય છે, તેણેકરીને અવચ્છિન્ન જે ચેતન તે પ્રમાચેતન કહેવાય છે. જ્ઞાનના વિષય જે ઘટાદિક તેણેકરીને અવચ્છિન્ન જે ચેતન તે વિષયચેતન

૧૩૩. આ સ્થાનમાં કુંડનું જલ, નીકનું જલ, કેદારનું જલ, અને કેદાર શબ્દ છે ત્યાં ત્યાં તેણે તેણે અવચ્છિન્ન (વિશિષ્ટ) આકાશનું પણ મદ્દન છે. તે આકાશ ચેતનસ્થાનીય છે.

કહેવાય છે; અને પ્રમેયચેતન પણ કહેવાય છે. એ વેદઅર્થના જાણવાવાલા જે આચાર્ય છે તેમની પરિભોંપા છે.

૨૦૧. (અવચ્છેદવાદ.)

અમાં આટલો ભેદ છે. જે અવચ્છેદવાદ અંગીકાર કરે છે; તેઓના મતમાં તો અંતઃકરણવિશિષ્ટ જે ચેતન છે તે પ્રમાતા છે; અને તે જ કર્તાભોક્તા છે. અને અંતઃકરણઉપહિત (ચેતન) સાક્ષી છે. એક જ અંતઃકરણ પ્રમાતાનું તો વિશેષણ છે, અને સાક્ષીનો ઉપાધિ છે.

(વિશેષણ લક્ષણ.)

સ્વરૂપવિષે જેનો પ્રવેશ હોય એવું જે વ્યાવર્ત્તક વસ્તુ છે તે વિશેષણ કહેવાય છે. [અન્ય પદાર્થથી ભિન્નતા કરીને વસ્તુના સ્વરૂપને જે જણાવે તે વ્યાવર્ત્તક કહેવાય છે. (અને) જેને ભિન્નતા કરીને જણાવે તે વ્યાવર્ત્ત્ય કહેવાય છે.] જેમ 'નીલ ઘટ છે,' એ સ્થાનમાં ઘટનું નીલતા વિશેષણ છે, કેમકે નીલ ઘટનેવિષે નીલતાનો પ્રવેશ છે, અને પીતશ્વેતાદિકોથી ભિન્નતા કરીને જણાવે છે, એથી (નીલતા) વ્યાવર્ત્તક છે, એ રીતિએ નીલતા ઘટનું 'વિશેષણ' છે; અને ઘટ પરિછેદ્ય છે, કેમકે પીતશ્વેતાદિકોથી ભિન્નતા નામ જૂદો કરીને જણાવાય છે. જે ભિન્નતા કરીને જણાવાય છે તે પરિછેદ્ય કહેવાય છે, વ્યાવર્ત્ત્ય કહેવાય છે (અને) વિશેષ્ય પણ કહેવાય છે. અને 'દંડી પુરુષ છે' એ સ્થાનમાં પણ પુરુષનું દંડ વિશેષણ છે; એ રીતિએ પ્રમાતાનું અંતઃકરણ વિશેષણ છે કેમકે પ્રમાતાના સ્વરૂપવિષે અંતઃકરણનો પ્રવેશ છે, અને પ્રમેય-

૧૩૪. પરિતઃ વ્યાપ્તતા માયા. શાસ્ત્રજ્ઞાની વિશિષ્ટ સજ્ઞા. જેમ મુખ્યમ્ભવિત્વ દીનક કોઈએક સ્વભાવો સથે સ્વપ્રમાદ્વારા સર્વ પરને પ્રજ્ઞાને છે, તેમ કોઈએક વેદાસ્ય શેષા સર્વ જ્ઞાતને પ્રજ્ઞાને છે: અથવા સ્વકુદિમનનદ્વારા સર્વ જ્ઞાતનો ઉપકાર્ય સંકેત છે- 'પરિમાણ.'

ચેતનથી ભિન્નતા કરીને, પ્રમાતાના સ્વરૂપને જણાવે છે, ઈથી (અંતઃકરણ પ્રમાતાનું) 'વ્યાવર્તક' છે.

(ઉપાધિલક્ષણ, સાક્ષી અને પ્રમાતા.)

જે વસ્તુનો સ્વરૂપવિષે પ્રવેશ ન હોય, અને વ્યાવર્તક હોય, તે ઉપાધિ કહેવાય છે. જેમ નૈયાયિકના મતમાં કર્ણ-શંકુલીથી અવચ્છિન્ન જે આકાશ છે તે 'થોગ્ર' કહેવાય છે. એ સ્થાનમાં કર્ણશંકુલી થોગ્રનો ઉપાધિ છે; કેમકે થોગ્રના સ્વરૂપ-વિષે (નામ અન્તર્ આકાશવિષે) તે કર્ણશંકુલીનો પ્રવેશ છે નહિ; અને વહિરના આકાશથી ભિન્નતા કરીને થોગ્રને જણાવે છે, ઈથી વ્યાવર્તક છે. અને 'ઘટાકાશ' જે છે તે મળ પરિમાણ અગ્રને અવકાશ દે છે, એ સ્થાનમાં પણ આકાશનો ઘટ ઉપાધિ છે. કેમકે મળ અગ્રને અવકાશ દેવાવાળું જે આકાશ છે, તે(આકાશ)ના સ્વરૂપવિષે તે ઘટનો પ્રવેશ છે નહિ. ઘટ પાર્થિવ (પૃથ્વીનું કાર્ય માટીનો) છે, તે(ઘટ)નાવિષે અવકાશ દેવો વને નહિ, ઈથી (ઘટાકાશના) સ્વરૂપમાં ઘટનો પ્રવેશ વને નહિ, અને વ્યાપક આકાશથી ભિન્નતા કરીને જણાવે છે: ઈથી મળ અગ્રને અવકાશ દેવાવાળું જે આકાશ તેનો ઘટ ઉપાધિ છે. તેમ અંતઃકરણઉપહિત જે ચેતન છે, તે સાક્ષી છે. એ સ્થાનમાં અંતઃકરણ 'સાક્ષીનો ઉપાધિ' છે. કેમકે સાક્ષીના સ્વરૂપવિષે તે અંતઃકરણનો પ્રવેશ છે નહિ, અને 'પ્રમેયચેતનથી' સાક્ષીને ભિન્નતા કરીને જણાવે છે. ઈથી એ ક જ અં તઃ ક ર ણ સા ક્ષી નો તો ઉ પા ધિ છે, અને પ્ર મા તા નું વિ શે પ ણ છે. એ રીતિએ અંતઃકરણઉપહિત જે ચેતન છે, તે તો સાક્ષી છે, અને અંતઃકરણવિશિષ્ટ (જે) ચેતન (છે, તે) પ્રમાતા છે, [જે ઉપાધિવાળું હોય તે 'ઉપહિત' કહેવાય છે, અને વિશેષણવાળું હોય તે

‘વિશિષ્ટ’ કહેવાય છે.] જે અંતઃકરણ વિશિષ્ટ પ્રમાતા છે. તે જ કર્તા મોક્તા સુખી દુઃખી સંસારી જીવ છે. એ અવચ્છેદ-વાદની રીતિ છે.

૨૦૨. (આભાસવાદ.)

અને આભાસ-વાદમાં આભાસમહિત અંતઃકરણ જીવનું વિશેષણ છે; અને આભાસસહિત અંતઃકરણ સાક્ષીનો ઉપાધિ છે. યથી સામાસઅંતઃકરણવિશિષ્ટ-ચેતન જીવ છે, અને સામાસઅંતઃકરણઉપહિતચેતન સાક્ષી છે. યદ્યપિ ઘંને પક્ષમાં વિશેષણસહિત ચેતન જીવ છે તે જ સંસારી છે; તથાપિ વિશેષ્ય ભાગ જે ચેતન છે તેને-વિષે તો જન્મમરણઆદિલઈને સંસારનો સંભવ છે નહિ યથી વિશેષણમાત્રમાં (જે) સંસાર છે તે જ વિશિષ્ટચેતનમાં પ્રતીત થાય છે, (૧) કહીંક તો વિશેષણના ધર્મનો વિશિષ્ટ(વિશેષણસહિત વિશેષ્ય)માં વ્યવહાર થાય છે; અને (૨) કહીંક વિશેષ્યના ધર્મનો વિશિષ્ટમાં વ્યવહાર થાય છે; અને કહીંક (૩) વિશેષણવિશેષ્ય વંનેના ધર્મનો વિશિષ્ટમાં વ્યવહાર થાય છે.

(૧) જેમ ‘દંડેકરીને ઘટાકાશનો નાશ થાય છે.’ એ સ્થાનમાં વિશેષણ જે ઘટ છે, તેનો દંડેકરીને નાશ થાય છે. અને વિશેષ્ય જે આકાશ તેનો નાશ ઘને નહિ, તો પણ વિશિષ્ટ જે ઘટાકાશ છે તેનો નાશ પ્રતીત થાય છે. (એ રીતિએ વિશેષણના ધર્મનો વિશિષ્ટમાં વ્યવહાર થાય છે.)

(૨) અને ‘કુંડલી પુરુષ સુષે છે.’ એ સ્થાનમાં કુંડલ, વિશેષણ છે; અને પુરુષ વિશેષ્ય છે. વિશેષણ જે કુંડલ છે તેના-વિષે સુષું ઘને નહિ. કિન્તુ વિશેષ્ય જે પુરુષ છે તેનાવિષે સુષાનું છે. અને ‘કુંડલવિશિષ્ટ (=કુંડલી પુરુષ) સુષે છે’ યથી

વિશિષ્ટમાં વ્યવહાર થાય છે. (૫ રીતિ ૫ વિશેષ્યના ધર્મનો વિશિષ્ટમાં વ્યવહાર થાય છે).

(૩) અને 'શસ્ત્રી પુરુષ યુદ્ધમાં ગયો છે.' ૫ સ્થાનમાં વિશેષણ જે શસ્ત્ર અને વિશેષ્ય (જે) પુરુષ વસ્ત્રે યુદ્ધમાં ગયા છે, ૫થી (વિશેષણ અને વિશેષ્ય ધંનેના ધર્મનો વિશિષ્ટમાં વ્યવહાર થાય છે).

૫ સ્થાનમાં અવચ્છેદવાદમાં તો (કેવલ) અંતઃકરણ વિશેષણ છે અને આમાસવાદમાં સામાસ અંતઃકરણ વિશેષણ છે; અને ધંને પક્ષમાં ચેતન 'વિશેષ્ય' છે. તેનેવિષે તો જન્માદિ સંસાર વને નહિ, કિન્તુ વિશેષણ અંતઃકરણ અથવા સામાસ-અંતઃકરણ, તેનો ધર્મ જે જન્માદિક સંસાર, તેનો વિશિષ્ટચેતનમાં વ્યવહાર કરાય છે. [વ્યવહાર નામ પ્રતીતિ અને કથનનું છે.] ૫ રીતિ ૫ આમાસવાદ અને અવચ્છેદવાદનો ભેદ છે.

૨૦૩. (અધિકારીપરત્વે આમાસવાદની શ્રેષ્ઠતા.)

આમાસવાદમાં તો અંતઃકરણ 'આમાસસહિત' છે; અને અવચ્છેદવાદમાં અંતઃકરણ 'આમાસરહિત' છે. વસ્ત્રે પક્ષમાં આમાસવાદ શ્રેષ્ઠ છે કેમકે ભાષ્યકારે (ઉપદેશસાહસ્રીમાં) આમાસવાદ અંગીકાર કન્યો છે. અને અવચ્છેદવાદમાં વિદ્યારણ્યસ્વામી ૫ (પંચદશીમાં) દોષ પણ કહ્યો છે:-જો આમાસરહિત અંતઃકરણઅવચ્છિન્નચેતનને પ્રમાતા માનિયે, તો ઘટઅવચ્છિન્નચેતન પણ પ્રમાતા થવું જોઈયે. કેમકે, જેમ અંતઃકરણ ભૂતોનું કાર્ય છે તેમ ઘટ પણ ભૂતોનું કાર્ય છે, અને જેમ અંતઃકરણ ચેતનનું 'અવચ્છેદક' નામ વ્યાવર્તક છે, તેમ ઘટ પણ ચેતનનો અવચ્છેદક છે; ૫થી અંતઃકરણવિશિષ્ટની પેઠે ઘટવિશિષ્ટ પણ પ્રમાતા થવું જોઈયે. અને અંતઃકરણ-

માં આ ભા સ અંગીકાર કન્યાથી એ દોષ (આવતો) નથી. કેમકે અંતઃકરણ તો ભૂતોના સત્ત્વગુણનું કાર્ય છે એથી સ્વચ્છ છે; અને ઘટાદિક ભૂતોના તમોગુણનાં કાર્ય છે એથી સ્વચ્છ નથી. જે સ્વચ્છ પદાર્થ હોય તે જ આભાસને યોગ્ય હોય છે, મલિન પદાર્થ આભાસને યોગ્ય નથી. જેમ કાચ અને તેનું ઢાંકણું બન્ને પૃથિવીનાં કાર્ય છે, પરંતુ કાચ તો સ્વચ્છ છે તેમાં મુખનો આભાસ થાય છે, ઢાંકણું સ્વચ્છ નથી એથી તેમાં આભાસ થાય નહિ. તેમ સત્ત્વગુણનું કાર્ય હોવાથી અંતઃકરણ સ્વચ્છ છે, તેમાં ચેતનનો આભાસ થાય છે; શરીરાદિક અને ઘટાદિક તમોગુણનાં કાર્ય હોવાથી સ્વચ્છ નથી, તેઓમાં ચેતનનો આભાસ થાય નહિ.

૨૦૪ (અંતઃકરણમાં દ્વિવિધ પ્રકાશ છે એથી તે જ પ્રમાતા છે.)

એ રીતિએ અંતઃકરણમાં દ્વિવિધ પ્રકાશ છે. એક તો વ્યાપક ચેતનનો પ્રકાશ, અને બીજો આભાસનો પ્રકાશ છે. શરીરાદિક અને ઘટાદિકોમાં એક વ્યાપક ચેતનનો પ્રકાશ તો છે, (પણ) બીજો આભાસનો પ્રકાશ નથી. એથી દ્વિવિધ પ્રકાશસહિત અંતઃકરણવિશિષ્ટચેતન જ પ્રમાતા કહેવાય છે. એક પ્રકાશસહિત જે ઘટાદિક તેઓએકરીને સંયુક્ત ચેતન પ્રમાતા નહિ. જેઓના મતમાં અંતઃકરણમાં આભાસ નથી તેઓના મતમાં, ઘટાદિકોની પેઠે, અંતઃકરણમાં પણ આભાસનો બીજો પ્રકાશ તો છે નહિ. વ્યાપક ચેતનનો જે એક પ્રકાશ અંતઃકરણમાં છે તે જ વ્યાપકચેતનનો પ્રકાશ ઘટાદિકોમાં છે, એથી અંતઃકરણવિશિષ્ટની પેઠે ઘટ્ટવિશિષ્ટ, યા શરીરવિશિષ્ટ, યા ભિત્તિવિશિષ્ટચેતન પણ, પ્રમાતા થવો જોઈએ. એ રીતિએ ઘટ્ટશરીરાદિકોથી અંતઃકરણમાં આ જ વિલક્ષણતા છે. અંતઃકરણ સત્ત્વગુણનું કાર્ય છે, એથી

સ્વચ્છ દ્વાંવાથી ચેતનનો આમાસ પ્રહણ કરવાને યોગ્ય છે; ધીજ્ઞા પદાર્થ સ્વચ્છ નથી, યથી આમાસ પ્રહણ કરવાને યોગ્ય નથી. આમાસ પ્રહણને યોગ્ય જે અંતઃકરણ તેણેકરીને સંયુક્ત ચેતન જ 'પ્રમાતા' કહેવાય છે. ઘટ્ટાદિક અને શરીરાદિક આમાસપ્રહણને યોગ્ય નથી, યથી તેઓંપકરીને વિશિષ્ટ-ચેતન પ્રમાતા નથી. ય રીતિય આમાસશબ્દ જ ઉત્તમ છે અચ્છેદવાદ નહિ.

૨૦૫. (પ્રમાણ અને પ્રમા-ચેતન.)

જેમ અંતઃકરણ આમાસસહિત છે તેમ અંતઃકરણની વૃત્તિ પણ આમાસસહિત જ દ્વાંય છે. સામાસવૃત્તિવિશિષ્ટ ચેતન પ્રમાણચેતન કહેવાય છે.

અંતઃકરણની, ઘટ્ટાદિવિષયાકાર જે વૃત્તિ તેમાં આરુઢચે-તનને પ્રમા અને યથાર્થજ્ઞાન કહે છે. તેનું સાધન જે ઇન્દ્રિય તે પ્રમાણ કહેવાય છે. કેમકે વિષયાકાર વૃત્તિમાં આરુઢચેતનને પ્રમા (ચેતન) કહે છે, ત્યાં ચેતન યદ્યપિ સ્વરૂપે કરીને નિત્ય છે, યથી ઇન્દ્રિયજન્યતાના અભાવથી, પ્રમાચેતનનું સાધન ઇન્દ્રિય નથી, તથાપિ નિરુપાધિક ચેત-નમાં તે પ્રમાધ્યવહાર છે નહિ; કિન્તુ વિષયાકારવૃત્તિઉપ-હિત ચેતનમાં પ્રમાધ્યવહાર થાય છે, યથી ચેતનવિષે પ્રમાશબ્દ-ની પ્રવૃત્તિમાં વિષયાકારવૃત્તિ ઉપાધિ છે. તે વિષયાકાર-વૃત્તિ ઇન્દ્રિયજન્ય છે, ઇન્દ્રિય તેનું સાધન છે. પ્રમાત્વનો ઉપાધિ જે વૃત્તિ, તે ઇન્દ્રિયજન્ય હોવાથી, ઉપહિતા જે પ્રમા તે પણ ઇન્દ્રિયજન્યા કહેવાય છે. યથી ઇન્દ્રિય પ્રમાનું સાધન કહેવાય છે; પરંતુ અંતઃકરણનો સર્વ પરિણામ 'પ્રમા' નથી કહેવાતો, કિન્તુ શરીરના અન્તરૂ જે અંતઃકરણ, તેનો વિષય ઘટ્ટાદિકાંસુધી પરિણામ તેને પ્રમાણ કહે છે, (અને) વિષય-

થી (સાથે) મઢીને વિષયના સમાન જે અંતઃકરણનો પરિણામ પટલાને પ્રેમો કહે છે. શરીરના અન્તર્ જે અંતઃકરણ ત્યાંથી લઈને ઘટાદિક વિષયસુધી પહોંચ્યો જે અંતઃકરણનો પરિણામ તે જ પ્રમારૂપને ધારે છે; યથી પ્રમાનો, પ્રમાણરૂપ અંતઃકરણની વૃત્તિથી, અત્યંત ભેદ નથી. ય રીતિપ વહિરના પદાર્થનું પ્રત્યક્ષ જ્ઞાન જ્યાં થાય, ત્યાં અંતઃકરણની વૃત્તિ વહિર્ જઈને, વિષય જે ઘટાદિક તેમના સમાનાકારરૂપને ધારે છે. અને શરીરના અંતર્ જે આત્મા, તેનું પ્રત્યક્ષ થાય, ત્યારે અંતઃકરણની વૃત્તિ વહિર્ જાય નહિ; કિન્તુ શરીરના અન્તર્ જ વૃત્તિ આત્માકાર થાય છે. તે વૃત્તિપકરી આત્માને આશ્રિત આવરણ દૂર થાય છે, અને આત્મા પોતાના પ્રકાશકરી તે વૃત્તિમાં પ્રકાશે છે. ય કારણથી વૃત્તિ નો વિષય આત્મા ને કહ્યો છે. અને ચિદાભાસરૂપ જે વૃત્તિમાં ફલ, તે(ત્રિવા-ભાસ)નો વિષય આત્મા નથી. ય પ્રકારે સાક્ષિઆત્મા સ્વયંપ્રકાશરૂપ ભાન થાય છે. ય સિદ્ધ થયું. ૧૧૬.

તત્ત્વદટ્ટિરૂવાચ.

૧૦૬. (બ્રહ્મજ્ઞાન પ્રત્યક્ષ વને નહિ.)

હો.

ઈન્દ્રિયના સંબંધ વિણ, 'અહં પ્રત્ન' ય જ્ઞાન;

કેમ થાય પ્રત્યક્ષ પ્રમુ ? મજને કહો મુજાન. ૧૧૭.

ટીકા:—'બ્રહ્મના અપરોક્ષજ્ઞાનથી સકલઅધિયાજાલનો નાશ થાય છે, પરોક્ષજ્ઞાનથી (થાય) નહિ'. ય પૂર્યે કહ્યું તેનાયિવે શંકા કરે છે. પ્રત્નનું જ્ઞાન પ્રત્યક્ષ વને નહિ; કેમકે ઇન્દ્રિયજ્ઞાન

૧૧૫. લોહની કાઠીમાં લોહદટ્ટ અને લોહપત્ત એમ બે ભાગ હોય છે, તેમ અવઃકરણનું સર્વ પરિણામ કાઠીરૂપ છે, તેમાં 'પ્રમાણ' ય દંશ્યુત્ત્વ છે, મને 'પ્રમા' ય પત્ત જેવી છે.

૪ તરંગ.)કેવા અભિપ્રાયથી રામકૃષ્ણાદિને પરમેશ્વર કહે છે. ૩૨૭

જ્ઞાન પ્રત્યક્ષ હોય છે. બ્રહ્મનું જ્ઞાન ઇન્દ્રિયજન્ય બને નહિ. કેમકે નેત્રઇન્દ્રિયે રૂપવાન્નું અથવા નીલાદિક રૂપનું જ્ઞાન થાય છે, પણ બ્રહ્મ નથી, યથી નેત્રઇન્દ્રિયજન્ય જ્ઞાન બ્રહ્મનું બને નહિ.

૨૦૭ (કેવા અભિપ્રાયથી રામકૃષ્ણાદિ પરમેશ્વર કહેવાય છે.)

રામકૃષ્ણાદિકોની જે મનુષ્યાકાર મૂર્તિ છે તે યદ્યપિ રૂપવતી છે, તથાપિ તે મૂર્તિ માયારચિતા છે, મિથ્યા છે, તે મૂર્તિ બ્રહ્મ નથી, અને પુરાણમાં રામકૃષ્ણાદિકોને બ્રહ્મરૂપતા કહી છે, તે તેમની શરીરરૂપ મૂર્તિ બ્રહ્મરૂપ છે એ અભિપ્રાયથી નથી કહી, કિન્તુ તેમના શરીરનું અધિષ્ઠાનચેતન બ્રહ્મ છે, એ અભિપ્રાયથી કહી છે. યદિપે આવી શંકા થાય છે:- 'સર્વ શરીરનું અધિષ્ઠાનચેતન બ્રહ્મ છે; યથી અધિષ્ઠાન-ચેતનઅભિપ્રાયથી રામકૃષ્ણાદિકને બ્રહ્મરૂપતા કહી હોય તો સર્વ શરીરનું અધિષ્ઠાનચેતન બ્રહ્મ હોવાથી, મનુષ્ય, 'પશુ, પક્ષી, આદિ સર્વ જ બ્રહ્મરૂપ છે, તેઓને સમાન જ 'રામકૃષ્ણાદિકો થશે, યથી રામકૃષ્ણાદિકોને, અધિષ્ઠાનચેતન બ્રહ્મ 'છે, એ અભિપ્રાયથી બ્રહ્મરૂપતા નથી કહી, કિન્તુ તેઓને અન્ય 'જીવોથી વિશેષરૂપતાની સિદ્ધિઅર્થે, તેઓનું શરીર જ બ્રહ્મ છે 'પણુ માનવું યોગ્ય છે'.

એ બને નહિ. કેમકે શરીરનો વાધ કરીને તેમનાં શરીરો-ને બ્રહ્મરૂપતા માનિયે તો, સર્વ શરીરોનો વાધ કરીને સર્વ જ શરીર બ્રહ્મરૂપ છે. અને વાધ કન્યા વિના તો અન્ય શરીરની પેઠે હસ્તપાદાદિક અવયવસહિત રૂપવાન્ ક્રિયાવાન્ શરીરનો, નિરવયવ નીરૂપ અક્રિય બ્રહ્મસહ અભેદ બને નહિ. યથી રામકૃષ્ણાદિકોનું શરીર બ્રહ્મ નહિ; પરંતુ પટલો ભેદ છે. જીવોનાં શરીર પુણ્યપાપને અર્થીન છે, મૂતોનાં કાર્ય છે; અને જીવોને દેહાદિક અનાત્મપદાર્થોવિષે, અવિદ્યાબલથી અહં-

મમઅધ્યાસ છે: આચાર્યના ઉપદેશે તે અધ્યાસની નિવૃત્તિ થાય છે.

અને રામકૃષ્ણાદિકોનાં શરીર પોતાનાં પુણ્યપાપથી રચિત નથી, (અને) ભૂતોનાં કાર્ય નથી. કિન્તુ જેવાં સૃષ્ટિના આદિ-માં પ્રાણિયોનાં કર્મ ભોગ દેવાને સમ્મુલ્લ થાય, ત્યારે આત્મ-કામ ઈશ્વરમાં પણ પ્રાણિયોના કર્મના અનુસાર, 'હું જગત્ની 'ઉત્પત્તિ કરું,' એવો સંકલ્પ થાય છે. તે સંકલ્પથી જગત્ની ઉત્પત્તિરૂપ સૃષ્ટિ થાય છે. તેમ સૃષ્ટિથી અન્તર પણ. 'હું જગત- 'તું પાલન કરું,' એવો ઈશ્વરનો સંકલ્પ થાય છે, તે સંકલ્પ-થી જગત્તું પાલન થાય છે. [કર્મોના અનુસાર સુખદુઃખ-નો સંબંધ (કરી દેયો તે) પાલન કહેવાય છે.] તે પાલન-સંકલ્પના મધ્યે, ઉપાસક પુરુષોની ઉપાસનાના વલથી, ઈશ્વરને આવો સંકલ્પ થાય છે:—'રામકૃષ્ણાદિકનામસહિત મૂર્તિ સર્વ- 'ને પ્રતીત થાય.' તે ઈશ્વસંકલ્પથી, વિશેષનામરૂપરહિત ઈશ્વરમાં, રામકૃષ્ણાદિક નામ પીતામ્બરધરાદિ શ્યામ-સુંદરવિગ્રહરૂપની, ઉત્પત્તિ થાય છે. તે વિગ્રહ (દેહ) કર્મને અધીન નથી. યદ્યપિ રામકૃષ્ણાદિ વિગ્રહથી સાધુ અને દુષ્ટોને ક્રમથી સુખ દુઃખ થાય છે. જે જેના સુખદુઃખનો હેતુ હોય છે તે તેનાં પુણ્યપાપથી રચિત હાંચ છે, એથી પુણ્યપાપ અધીન કહેવાય છે. એ રીતિએ અવતારોનાં શરીર, સાધુ પુરુષોને સુખનો હેતુ હોવાથી, સાધુ પુરુષોના પુણ્યસમુદાયથી રચિત છે. તેમ અસુરાદિક અસાધુ પુરુષોને દુઃખનો હેતુ હોવાથી, તેમના (અસાધુ પુરુષના) પાપથી રચિત છે. એથી 'અવતારોનાં શરીર પુણ્યપાપને અધીન નહિ,' એ કહેવું નહિ સંભવે. તથાપિ જેમ જીવે પૂર્વશરીરમાં પુણ્યપાપકર્મ કર્યાં છે, તેમનું ફલ-સુખદુઃખ-ઉત્તરશરીરમાં તે જીવને થાય છે.

त्यां शरीरअभिमानी जीवना पूर्य शरीरना पोताना पुण्यपाप-
ने अधीन उत्तरशरीर कहेवाय छे; तेम रामरुष्णादिकनां
शरीर, यद्यपि साधु असाधु पुरुषोनां पुण्यपापने अधीन छे,
अने तेओने सुखदुःखनो हेतु छे, परंतु रामरुष्णादिकोनां,
(पोतानां) पुण्यपापथी रचित अवतारशरीर नथी. अने
तेओने पोताना शरीरथी सुखनो तथा दुःखनो भोग थाय नहि.
एथी रामरुष्णादिकोनां शरीर पोताना पुण्यपापने अधीन
नथी, ए संभवे छे.

तेम भूतोना परिणाम पण रामरुष्णादिक शरीर नथी;
किन्तु चेतनआश्रितमायानो परिणाम छे. जो पंचीकृतभूतोना
परिणाम होय तो रुष्णाशरीरविषे रज्जुकृत बंधनादिकोना
अभाव शास्त्रमां कह्यो छे, ते असंगत थगे. यद्यपि पंचभूत-
रचित सिद्धयोगिशरीरमां पण बंधनादिक थाय नहि, तथापि
योगिशरीरमां (योग सिद्ध थयाथी) प्रथम बंधनादि-
कोना संभव होय छे. पछी योगाभ्यासरूप पुरुषार्थथी बंधन-
दाहादिकोनी योग्यता नाश थाय छे. रुष्णादिकोनां शरीरमां
योगीनी पेंठे कई पुरुषार्थेकरी बंधनादिकोना अभाव नथी.
किन्तु तेओनां शरीर सहज ज बंधनादियोग्य नथी; एथी
भूतोना परिणाम नथी. अने माण्डूक्येभाष्यनी टीकामां आ-
नंदगिरिप रामादिकशरीर भूतोना परिणाम कहा छे, ते
स्थूलदृष्टिप अन्यशरीरना समान ते शरीर प्रतीत थाय छे,
ए अभिप्रायथी कहां छे. केमके भाष्यकारे गीताभाष्यमां आ

१३६. ए नामनी एक उपनिषद् छे. तेना उपर शंकरना परमगुरु गौड-
पादाचार्यनी जे कारिकाओ छे, ते उपर शंकरनुं भाष्य छे. ते भाष्यनी टीकामां
ए उपनिषद्संबंधमां आ वाक्य प्रचलित छे:—

माण्डूक्यमेकमेवालं मुमुक्षूणां हिताप्तये ।
तथाप्यसिद्धं चेत् ज्ञानं दशोपनिषदं पठ् ॥

કહ્યું છે:—‘જીવોના ઉપર અનુગ્રહ કરીને શરીરધારીની પેઠે ‘માયાના વલથી પરમાત્મા કૃષ્ણરૂપ પ્રતીત થાય છે. તે જન્માદિકરહિત છે. વસુદેવદ્વારા દેવકીથી તેનો જન્મ પણ ‘માયાથી પ્રતીત થાય છે.’ એ રીતિએ ભાષ્યકારે કૃષ્ણશરીર માયાનું કાર્ય કહ્યું છે. યથી (પંચ)ભૂતોથી અવતાર શરીરની ઉત્પત્તિ નથી; કિન્તુ તેઓનાં શરીરોનું ઉપાદાનકારણ સાક્ષાત્ માયા છે.

અન્ય જીવોને દેહાદિકોમાં આત્મભ્રાન્તિ છે, રામકૃષ્ણાદિકોને નથી. કેમકે જીવનો ઉપાધિ,—અવિદ્યા, મલિનસત્ત્વ-ગુણવતી છે, રામકૃષ્ણાદિકોનો ઉપાધિ,—માયા, શુદ્ધસત્ત્વ-ગુણવતી છે; યથી જીવોને અવિદ્યાકૃતભ્રાન્તિ અને રામકૃષ્ણાદિકોને માયાકૃત સર્વજ્ઞતા હોય છે. જીવોને અજ્ઞાનકૃત આવરણ અને ભ્રાન્તિના નાશનિમિત્ત, આચાર્યદ્વારા મહાવાક્યના ઉપદેશજન્ય જ્ઞાનની અપેક્ષા છે. તેમ રામકૃષ્ણાદિકોને આવરણ અને ભ્રાન્તિ નથી, યથી ઉપદેશજન્ય જ્ઞાનની અપેક્ષા નથી. કિન્તુ જીવને અંતઃકરણની ઘૃત્તિરૂપ (ઉપદેશજન્ય) જ્ઞાનની પેઠે, ઈશ્વરને માયાની ઘૃત્તિરૂપ આત્માનું જ્ઞાન તો ઉપદેશાદિ વિના પણ હોય છે, પરંતુ તે જ્ઞાનથી કશું પ્રયોજન તેમને (રામાદિકોને) સિદ્ધ થતું નથી. કેમકે જીવોને ઘટાદિકના જ્ઞાનથી, આવરણભંગ અને વિષય જે ઘટાદિક તેઓને પ્રકાશ થાય છે. અને બ્રહ્મરૂપે આત્માનું જ્ઞાન જે જીવોને થાય છે; ત્યાં જ્ઞાનનો વિષય જે આત્મા તેનો આવરણભંગ તો જ્ઞાનથી થાય છે, અને આત્મા (રૂપ) વિષય સ્વયંપ્રકાશ છે, યથી આત્મજ્ઞાનેકરી વિષયનો પ્રકાશ થાય નહિ. તેમ ઈશ્વરને માયાની ઘૃત્તિરૂપ જે ‘અહં બ્રહ્માસ્મિ’ યથું જ્ઞાન, તે(જ્ઞાન)નો વિષય ઈશ્વરનો આત્મા, તે આવરણરહિત સ્વયંપ્રકાશ છે; યથી આવરણભંગ

યા વિષયનો પ્રકાશ, ईश्वरના જ્ઞાનનું પ્રયોજન નથી. જેમ જીવન્મુક્ત વિદ્વાનને, નિરાવરણ આત્માને વિષય કરવાવાળી અંતઃકરણની 'અહં બ્રહ્માસ્મિ' યથી વૃત્તિ, આવરણભંગાદિક પ્રયોજનરહિતા હોય છે, તેમ ईश्वરને પણ આવરણભંગાદિક પ્રયોજનવિના માયાની વૃત્તિરૂપ 'અહં બ્રહ્માસ્મિ' યવું જ્ઞાન, ઉપ-દેશાદિક વિના, હોય છે.

૫ રીતિય રામકૃષ્ણાદિકોને જીવોથી વિલક્ષણતા(રૂપ) ईश्वરતા હોય છે, તોપણ તેઓનું શરીર માયારચિત છે યથી બ્રહ્મ નથી, કિન્તુ મિથ્યા છે. માયાય ઉત્પન્ન કર્મ્યુ જે અવતાર-નું શરીર તે હસ્તપાદાદિક અવયવસહિત અને રૂપસહિત કર્મ્યુ છે; યથી નેત્રઇન્દ્રિયેનો વિષય તેઓનું શરીર હોય છે. બ્રહ્મને નેત્રઇન્દ્રિય વિષય કરે નહિ.

૨૦૮. તેમ ત્વચાઇન્દ્રિય પણ સ્પર્શને અને સ્પર્શના આશ્રયને વિષય કરે છે. બ્રહ્મ સ્પર્શ નથી અને સ્પર્શનો આશ્રય નથી, યથી ત્વચાઇન્દ્રિયનો વિષય નથી.

૨૦૯. રસનાઇન્દ્રિયે રસનું જ્ઞાન, ઘ્રાણે ગંધનું જ્ઞાન, શ્રોત્રે શબ્દનું જ્ઞાન થાય છે. રસ-ગંધ-શબ્દથી બ્રહ્મ વિલક્ષણ છે; યથી રસનાય, ઘ્રાણે, અને શ્રોત્રેકરી બ્રહ્મનું જ્ઞાન થાય નહિ.

૨૧૦. અને કર્મઇન્દ્રિય જ્ઞાનનાં સાધન નથી, કિન્તુ વચ-નાદિક ક્રિયાનાં સાધન છે; યથી તેઓપકરી તો કર્મનાં જ્ઞાન થાય નહિ.

૫ રીતિય કોઈ ઇન્દ્રિયવતે બ્રહ્મનું જ્ઞાન વને નહિ, ઇન્દ્રિય

૧૩૭ નેત્ર અને ત્વચા ૫ ને ઇન્દ્રિયોમાં, ગુણ અને ગુણી ૫ ઉમયના મહાનું સામર્થ્ય છે. શ્રોત્ર, રસના, અને ઘ્રાણ ૫ ત્રણ ઇન્દ્રિયોમાં, કેવલ ગુણના મહાનું સામર્થ્ય છે, ગુણીના મહાનું સામર્થ્ય નથી.

વતે જે જ્ઞાન, તે જ્ઞાન પ્રત્યક્ષ કહેવાય છે. [પ્રત્યક્ષને જ અપરોક્ષ કહે છે.] યથી બ્રહ્મનું અપરોક્ષજ્ઞાન થને નહિ, કિન્તુ શબ્દેકરી બ્રહ્મનું જ્ઞાન થાય છે. જે શબ્દેકરી જ્ઞાન હોય તે પરોક્ષ હોય છે, યથી બ્રહ્મનું જ્ઞાન પણ પરોક્ષ જ થાય છે. (૫ પ્રમાણે તત્ત્વદષ્ટિની શંકા છે.)

શ્રીગુરુત્વાચ.

૨૧૧. (ગતઅંક ૨૦૬ થી ૨૧૦ પર્યન્તની શંકાનું સમાધાન.
પ્રત્યક્ષજ્ઞાનને ઇન્દ્રિયજન્યતાનો અનિયમ.)

દુહો.

ઇન્દ્રિયવિન પ્રત્યક્ષ નહિ, શિષ્ય ? ૫ નિયમ ન જાણ;
વિનેન્દ્રિય પ્રત્યક્ષ છે, જેમ દુઃખસુખ જ્ઞાન. ૨૧૮.

ટીકા:—‘ઇન્દ્રિયસંબંધ વિના પ્રત્યક્ષજ્ઞાન થાય નહિ;’ ૫ નિયમ નથી. કેમકે, જેમ સુખનું અને દુઃખનું જ્ઞાન થાય તે કોઈ ઇન્દ્રિયેકરી થાય નહિ, (તેમ સતે) તે સુખદુઃખનું જ્ઞાન પણ પ્રત્યક્ષ હોય છે. યથી ઇન્દ્રિયસંબંધેકરી જે જ્ઞાન થાય તે જ પ્રત્યક્ષ જ્ઞાન થાય, ૫ નિયમ નથી. કિન્તુ વિષયમંગ વૃત્તિનો સંબંધ થઈને વિષયાકારવૃત્તિ ત્યાં થાય ત્યાં પ્રત્યક્ષજ્ઞાન

૨૧૮. પ્રત્યક્ષજ્ઞાન કિંવા અપરોક્ષજ્ઞાનનું લક્ષણ આ પ્રમાણે કહેવાય છે.—અન-
ધિગતઅનાધિતવર્તમાનયોગ્યવિષયચૈતન્યઅભિન્ન-પ્રમાણચૈતન્ય.

નિરુક્તવિષયચૈતન્યઅભિન્ન પ્રમાણચૈતન્ય ૫ પરોક્ષજ્ઞાન કહેવાય છે.

‘વિષયચૈતનનો વૃત્તિચૈતનસદ્ અમેદ,’ ૫ વિગોપણ પ્રત્યક્ષજ્ઞાનનું વ્યાર્થલક્ષ-
ણ છે. તે અમેદ કહી ઇન્દ્રિયદ્વારા (૧) હોય છે, કહી શબ્દેકરી (૨) હોય છે. અને કહી ઇન્દ્રિય શબ્દ રૂપ શબ્દનિમિત્ત વિના પણ અન્તઃપરણની કેવલવૃત્તિ,
દ્વારા (૩) હોય છે. ચૈતનનો સ્વરૂપેકરીને તો કહી મેદ છે જ નહિ. કિન્તુ વિષય
અને વૃત્તિરૂપ ઉપાધિય કરેલ મેદ છે, તે ઉપાધિ વ્યારે મિત્ત દેગમી રિયત
હોય, ત્યારે તે ઉપાધિમત્ ચૈતનનો મેદ કહેવાય છે. વ્યારે વિષયાકારવૃત્તિ
થાય ત્યારે ઉમવત્તુપાધિ વિષયરૂપઉપાધિ અને વૃત્તિરૂપઉપાધિ-૫કરેગરિયે
રિયત થાય છે, યથી તે ઉપાધિમત્વિષયવચેતન અને વૃત્તિચૈતનનો અમેદ

૪ તરંગ.) વિષયાકાર વૃત્તિ થાય ત્યાં પ્રત્યક્ષજ્ઞાન કહેવાય છે. ૩૩૩

કહેવાય છે. વિષયસંગ વૃત્તિનો તે સંબંધ કહીક શબ્દો દ્વારા થાય છે, અને કહીક શબ્દોથી થાય છે. જેમ 'દશમો તું છું,' (જુઓ પૃષ્ઠ ૧૧૭. ટિપ્પણી ૨૬.) એ શબ્દોથી દશમો જે પોતે, તેસાથે અંતઃકરણની વૃત્તિનો સંબંધ થઈને, દશમાકારવૃત્તિ થાય છે; એથી શબ્દજન્ય પણ દશમાનું જ્ઞાન પ્રત્યક્ષ થાય છે.

તેમ પ્રમાતાવિષે સુખદુઃખ થાય, ત્યારે સુખાકાર દુઃખાકાર અંતઃકરણની વૃત્તિ થાય, (તથા) તે વૃત્તિસાથે સુખદુઃખનો સંબંધ થાય છે, એથી સુખદુઃખનું જ્ઞાન પ્રત્યક્ષ કહેવાય છે. પૂર્વઉત્પન્ન સુખદુઃખ નષ્ટ થયા પછી જ્યાં પુરુષને સાંભરી આવે, ત્યાં સુખાકાર-દુઃખાકાર અંતઃકરણની વૃત્તિ તો થાય છે, પરંતુ નષ્ટ થયેલાં સુખદુઃખસાથે વૃત્તિનો સંબંધ નથી; એથી તે જ્ઞાન સ્મૃતિરૂપ છે, પ્રત્યક્ષરૂપ નથી. યદ્યપિ અંતઃકરણના ધર્મ સુખદુઃખ સાક્ષિભાસ્ય છે, તથાપિ સુખાકાર-દુઃખાકાર અંતઃકરણની વૃત્તિદ્વારા સાક્ષી સુખદુઃખનો પ્રકાશ કરે છે. જે સાક્ષિભાસ્ય પદાર્થ છે તેમને પણ સાક્ષી, વૃત્તિની અપેક્ષાથી જ, પ્રકાશે છે. જેમ શુકિરજત સાક્ષિભાસ્ય છે, ત્યાં અધિયાની વૃત્તિની અપેક્ષાકરીને સાક્ષી રજતને પ્રકાશે છે. પરંતુ સુખદુઃખના પ્રકાશમાં અંતઃકરણની વૃત્તિ સાક્ષીની સહાયિકા છે, અને મિથ્યા રજતાદિકના પ્રકાશમાં અધિયાની વૃત્તિ (સાક્ષીની) સહાયિકા છે.

કહેવાય છે. તે 'વિષયચેતનસહ વૃત્તિચેતનનો અમેદ,' એ જ પ્રત્યક્ષજ્ઞાન કહેવાય છે. અને અપરોક્ષજ્ઞાન અને સાધાત્કાર પણ કહે છે. એ પ્રત્યક્ષજ્ઞાનનું લક્ષણ,— શબ્દો દ્વારા (૧) શબ્દોજન્ય બાહ્ય ઘટાદિકોના પ્રત્યક્ષ જ્ઞાનવિષે, અને શબ્દો દ્વારા (૨) મહાશક્તિજન્ય વ્રહ્મના પ્રત્યક્ષજ્ઞાનવિષે, અને શબ્દો-રૂપ બાહ્યનીમત્ત વિના (૩) અન્તરૂપમત્તા સુખદુઃખના પ્રત્યક્ષજ્ઞાનવિષે, અનુગત છે; અને અધિયાની વૃત્તિરૂપ જીવના રજતસપાદિકના જ્ઞાનવિષે, અને વિદ્યા ક્રિયા માયાની વૃત્તિરૂપ શિશ્વરના જ્ઞાનવિષે પણ, અનુગત છે.

પં. પી. પુ.

પરીતિપ સાક્ષિભાસ્ય પદાર્થના જ્ઞાનમાં પણ વૃત્તિની અપેક્ષા છે. તે વૃત્તિ જ્યાં ઇન્દ્રિયાદિક વાહ્યસાધનથી થાય, (ત્યાં) તે(વૃત્તિ)નો વિષય સાક્ષિભાસ્ય નથી કહેવાતો. સુખદુઃખને વિષય કરવાવાઢી વૃત્તિમાં વાહ્યેન્દ્રિયાદિક હેતુ નથી; કિન્તુ જ્યારે સુખાદિક ઉત્પન્ન થાય, તે જ કાલમાં અન્ય સાધનની અપેક્ષા વિના, સુખાકાર-દુઃખાકાર અંતઃકરણની વૃત્તિ થાય છે, તે વૃત્તિમાં આરૂઢ સાક્ષી સુખદુઃખને પ્રકાશે છે, યથી સુખદુઃખ સાક્ષિભાસ્ય કહેવાય છે.

૨૧૨. અને વાહ્ય જે ઘટાદિક છે તેમનીસાથે અંતઃકરણની વૃત્તિનો સંબંધ નેત્રાદિક ઇન્દ્રિયદ્વારા થાય છે; યથી ઘટાદિક સાક્ષિભાસ્ય નથી.

(બ્રહ્મનું જ્ઞાન પ્રત્યક્ષ સંભવે છે.)

તેમ બ્રહ્માકારે અંતઃકરણની વૃત્તિ થાય છે, તે અંતઃકરણની વૃત્તિ વહિર્ જતી નથી, કિન્તુ શરીરના અંતર્ જ થાય છે. તે વૃત્તિસાથે બ્રહ્મનો સંબંધ છે; યથી બ્રહ્મનું જ્ઞાન પણ, સુખદુઃખના જ્ઞાનની પેઠે, પ્રત્યક્ષ રૂપ છે. પરંતુ સુખાકારદુઃખાકાર-વૃત્તિમાં વાહ્ય (પ્રમાણરૂપ) સાધનની અપેક્ષા નથી; યથી સુખદુઃખ સાક્ષિભાસ્ય છે. અને બ્રહ્માકાર જે અંતઃકરણની

૧૩૯. જેમ ચક્ષુવિપે ઈર્ષ્યની અભેદતા છે. તે અભેદતા, અંગુલિ આદિરૂપ સ્વલ્પ આવરણેકરી આચ્છાદિત થયે, બ્રહ્માણ્ડવર્તિ ઈર્ષ્યનો પ્રકાશ દેલાતો નથી. અને તે આવરણ નિવૃત્ત થયે ચક્ષુગત અન્તઃકરણની વૃત્તિપ્ બ્રહ્માણ્ડવર્તિ ઈર્ષ્યનો પ્રકાશ દેલાય છે; તેમ સાક્ષીઆત્માવિપે બ્રહ્મની અભેદતા છે. તે અભેદતા અન્તઃકરણગત અજ્ઞાનાંશરૂપ સ્વલ્પ આવરણેકરી આચ્છાદિત થયે, સર્વત્ર પરિપૂર્ણ બ્રહ્મ પ્રત્યક્ષ માસતું નથી. જ્યારે શરીરના અન્તર્ ઉપજી બ્રહ્મ-આત્માની અભેદતાના આકાર-વૃત્તિપ્કરી ઉક્ત આવરણખંગ થાય, ત્યારે ગૃહગત આકાશના અસંગતાદિકના શનેકરી મહાકાશના અસંગતાદિકના જ્ઞાનની પેઠે, સર્વત્ર પરિપૂર્ણ બ્રહ્મનું સ્વપ્રકાશ-તાપ્કરીને માન થાય છે.

४ तरंग.) विषयसाथे वृत्तिनो संबन्ध थाय ते प्रत्यक्ष ज्ञान. ३३९

वृत्ति, तेमा तो गुरुद्वारा वेदवचननो श्रोत्र साथे संबन्ध (रूप) वाह्यसाधन जोइये छिये, एथी ब्रह्म साक्षिमास्य नहि ए रीतिए ज्या विषयसाथे वृत्तिनो संबन्ध थाय त्या प्रत्यक्ष-ज्ञान कहेवाय छे 'अह ब्रह्मास्मि' ए वृत्तिना, विषय जे ब्रह्म, तेसाथे संबन्ध छे, एथी ब्रह्मनु ज्ञान प्रत्यक्ष सभवे छे

(प्रत्यक्ष-परोक्ष ज्ञान)

अने ज्या धूमने देखीने अग्निनु ज्ञान धाय छे, त्यां धूमनुं ज्ञान तो प्रत्यक्ष छे, पण अग्निनु ज्ञान प्रत्यक्ष नथी. केमके, नेत्रद्वारा अंत करणनी वृत्तिनो धूमसाथे संबन्ध छे, एथी धूमनु ज्ञान प्रत्यक्ष कहेवाय छे, अने अनुमानथी, अंत करणनी वृत्ति शरीरना अतर् अग्निना आकारने ग्रहण करवावाळी तो थई, परंतु अग्निसाथे वृत्तिनो संबन्ध नथी; एथी अग्निनु ज्ञान प्रत्यक्ष नथी ए रीतिए ज्या वृत्ति साथे विषयनो संबन्ध थाय, त्या 'प्रत्यक्ष' ज्ञान कहेवाय छे ज्या वृत्तिसाथे विषयना संबन्ध होय नहि, विषय बहिर दूर होय, अथवा भूत वा भविष्यत् हाय अने अनुमाने अथवा शब्दे विषयाकार वृत्ति अतर् थाय ते ज्ञान 'परोक्ष' कहेवाय छे इन्द्रियजन्य ज्ञान ज प्रत्यक्ष होय छे ए नियम नथी जेम सुखदुःखनु ज्ञान

१४० जेम ब्रह्म साक्षिमास्य नहि, तेम ब्रह्म, चिदाभाससहित अन्त करणनी वृत्तिरूप प्रमातानो पण, विषय नहि अन्त दीपकनी अपेक्षाए रहित केवल चक्षुना विषय दीपकनी पंटे, अन्त करणनी 'अह ब्रह्मास्मि', ए आकारवती केवल वृत्तिनो विषय ब्रह्म छे एथी ब्रह्म प्रमाताभास्य पण नथी किन्तु पोताना प्रकाशमा अन्य प्रकाशनी अपेक्षाए रहित सर्वनुं प्रकाशक एव स्वयंप्रकाशरूप ब्रह्म छे वृत्ति पण, जेम क्षार, बखना मलने दूर करे छे, तेनी पंटे, ब्रह्मपरनु आवरण मग्न करे छ—त ज वृत्तिनु विषय बरखु छे वृत्तिनु अन्य प्रकारनु विषय बरखु नथी अने 'अह ब्रह्मास्मि' एथी वृत्तिरूप तत्त्वज्ञानने बाह्यसाधननी अपेक्षा विना साक्षी प्रकाश छ एथी तत्त्वज्ञान साक्षिमास्य छे

इन्द्रियजन्य नथी अने प्रत्यक्ष छे; तेम दशमपुरुषनुं ज्ञान शब्द-
जन्य छे तो पण प्रत्यक्ष होय छे. ए रीतिप गुरुद्वारा श्रवण
कन्यो जे महावाक्यरूप वेदशब्द, ते(शब्द)थी उत्पन्न थयुं ब्रह्म-
ज्ञान पण प्रत्यक्ष ज संभवे छे. ११८.

(ब्रह्मात्मैकत्व उपदेशे तत्त्वदृष्टिना भेदभ्रमनो अन्त.)

इहा.

गुरुनो ए उपदेश शुणो, तत्त्वदृष्टि धीमंत;

आत्मा जाणी ब्रह्मरूप, कथो भेदभ्रम अंत. ११९.

'अहं ब्रह्म' ए वृत्तिमां, निराचरण छे भान;

दादु आदिरूप ते, इम लीधुं अमे पिछानि. १२०.

इति श्रीविचारसागरे उत्तमाधिकाऽयुपदेशनिरूपणं नाम

चतुर्थस्तरंगः

समाप्तः ४.



अथ श्रीविचारसागरस्य

पंचमतरंगप्रारंभः

अथ श्रीगुरुवेदादिव्यावहारिकप्रतिपादन
मध्यमाधिकारिसाधननिरूपणं.

२१३. (अद्वैतमतविषे अदृष्टिनी शंका.)

पूर्व तरंगमां एम कहुं के:- 'गुरुमुखद्वारा श्रवण
'कन्या वेदवान्पथी अद्वैत ब्रह्मनो साक्षात्कार थाय छे.' तेने
सांभळीने अदृष्टिनाम द्वितीयशिष्य आ शका करे छे.-
वेदगुरु सत्य होय तो अद्वैतनी हानि, असत्य होय तो तेमना
थी पुरुषार्थनी प्राप्ति वने नहि. वने रीतिप वेदगुरुथी अद्वैत-
ज्ञान वने नहि.

चोपाई

वेद गुरु जो मिथ्या कहिये, तेथी भवदुख नाशुं न जोइये;
जेम ज मिथ्या मरुस्थलनुं जल, तृपानाशनु तेमां नहि बल. १.
सत्य वेदगुरु कहे तो द्वैत थाय, जाय सिद्धान्त अद्वैत,
एम जोई शंकरमत अशुद्ध, त्यजो सकल मध्यादि प्रशुद्ध. २
ए शंका भगवन् मम उपजे, धो उत्तर दयालु विण खीजे,

२१४ (गुरुनुं उत्तर-शंकरमतनी प्रमाणता)

गुरु बोल्या शिष्यनी शुणी घाणी, शंकरनुं मत परम प्रमाणि. ३.
चारमित्र मध्यादिक जे छे, वेदविरुद्ध कहे सर्वे ते छे,
एमां व्यास-वचन शुणी लइये, शंकरमत ज प्रमाण कारये. ४.

(व्यासनारायणनां वचन)

- 'कलिमां वेदार्थं बहु करशे, श्रीशंकर शिव तदावतरशे;
 'जैनबुद्धमत मूल उखाडशे, गंगाथी प्रभुमूर्ति काडशे. ५.
 'जेम जगत्तमां-सूर्यप्रकाश, अंधकारनो करे ज नाश;
 'सर्वं वस्तु ज्यमत्यम भासे, संशय अने विपर्यय नासे. ६.
 'वेदार्थमां तेम अज्ञान, दूर करे शंकर-व्याख्यान;
 'करशे ते उपदेश यथार्थ, नासे संशय ने अर्थधार्थ. ७.
 'वेदार्थं बीजा जे करशे, ते शठ वृथा परिश्रम धरशे.'
 एम व्यास पुराणे के छे, प्रमाण शंकरमतमां ए छे. ८.
 मध्वादिकतुं मत न प्रमाण्युं, ए अम व्यासवचनथी जाण्युं.
 अन्य प्रमाण कहुं ते शुणिये, वाल्मीकि ऋषि मुख्य जे गणिये. ९.
 ते मुनिवृत्त ग्रंथ वासिष्ठ, तेमां मत अद्वैत स्पष्ट;
 शंकरे अद्वैत यखाण्युं, तेतुं मत ए हेतु प्रमाण्युं. १०
 वाल्मीकिऋषि वचनविरुद्ध, भेदवाद लख सकल अनुद्ध. ११.

२१५. (भेदवादनी अप्रमाणता.)

टीका:—सर्वं प्ररुणनो भाव आ छे:—व्यासभगवाने पुराणमां आ कहुं छे:—'ज्यारे कलिमां वेदना अर्थ (लोक) नानाप्रकारे करशे त्यारे कृपालु शिव, श्रीशंकर नाम धरतेने अरतार लईने, षड्विनाथनी मूर्तिनो देवनदीमांथी उदार, स्वस्थानमां स्थापन, जैनबुद्धमतखंडन अने वेदतुं यथार्थ व्याख्यान करशे. (वायु-कूर्मादिपुराणमेंत) ए व्यासवचन-

१४२. अयथार्थ=भ्रान्ति.

१४३. (शंकराचार्यविये व्यासतुं भविष्यहृषण.)

कलीं यद्रो महादेवो लोकानामीश्वरः परः ।
 फरिष्यत्यवतारं स्वं शंकरो नीललोहितः ॥
 धौतस्मार्तप्रतिष्ठार्थं भक्तानां हितकाम्यया ।
 उपदेश्यति तत्तानां शिष्याणां ब्रह्मसंमितं ॥
 सर्वेष्वेदान्तसारं च धर्मान्वेदनिर्दानम् ।

થી શ્રીશંકરમત પ્રમાણ છે; અને મધ્વાદિકોનું ભેદમત અપ્રમાણ છે. અને ઉપનિષદ્, ગીતા, સૂત્ર, ૫ ઘ્રણ જે વેદાન્તનાં પ્રસ્થાન (ઉપદેશના ઉપાય) છે, તેમનાં યદ્યપિ મધ્વાદિકે કોઈ રીતિપ સંચીને સ્વસ્વમતને અનુસાર વ્યાખ્યાન કન્યાં છે, તથાપિ ળ્યાસવચનથી શ્રીશંકરકૃત વ્યાખ્યાન જ યથાર્થ છે. અને આદિકાપિ સર્વજ્ઞ વાલ્મીકિ ઋપિપ ઉત્તરરામાયણ (યોગ) વાસિષ્ઠનામે ગ્રંથ કન્યો છે, ત્યાં અદ્વૈતમતમાં પ્રધાન જે દૃષ્ટિ-સૃષ્ટિર્વાદ છે, તે અનેક ઇતિહાસોથી પ્રતિપાદન કન્યો છે. ૫થી વાલ્મીકિવચન અનુસાર અદ્વૈતમત પ્રમાણ છે; અને વાલ્મીકિવચન વિરુદ્ધ ભેદમત અપ્રમાણ છે. ૫ રીતિપ સર્વજ્ઞ ઋપિમુનિવચનવિરોધથી ભેદવાદ અપ્રમાણ કહ્યો, અને યુક્તિથી ૫ણ ભેદવાદ વિરુદ્ધ છે, ૫ લંડન (લંડન) આદિક ગ્રંથમાં શ્રીહર્ષાદિકે પ્રતિપાદન કન્યું છે. યુક્તિ કઠિન છે ૫થી ભેદમતલંડનની યુક્તિ લખી નથી.

૨૧૬. અને ઋપિમુનિવચનથી વિરુદ્ધ ભેદમતમાં જૈન-મતની પેઠે અપ્રમાણતા નિશ્ચય થયાથી, યુક્તિથી લંડનની આસ્તિક અધિકારીને અપેક્ષા ૫ણ નથી ૫ કહે છે -

શ્રીહર્ષે 'લંડન' નામે જે ગ્રંથ કન્યો છે તેમાં ભેદનું લંડન અને ૫કતાનું મંડન કન્યું છે. તે(ગ્રંથ)માં વહુ વિસ્તાર-થી લખ્યું છે કે, - 'ભેદવાદ યુક્તિ સહન કરી શકતો નથી.' (૧૨) વીજો 'ભેદધિકાર' નામે જે ગ્રંથ છે તેમાં ભેદલં-

૧૪૪. દૃષ્ટિ સમયે સૃષ્ટિ. વા દૃષ્ટિ ૫ જ સૃષ્ટિ.

૧૪૫. ૫ને 'ન્યાયલંડનલઢરાદ' ૫ણ કહે છે. નૈવધીયચરિતના કર્તા હીરના ૫ત્ર શ્રીહર્ષ કવિ ૫ના કર્તા છે.

૧૪૬. ગીર્વાણેન્દ્રસસ્વતી અને જગન્નાયાશ્રમના શિષ્ય અને નારાયણાશ્રમના ગુરુ નૃસિંહાશ્રમકૃત ૫ 'ભેદધિકાર' ગ્રંથ છે. તેઓ ૫ અદ્વૈતદીપિકા, તત્ત્વવિવેક, વેદાન્તવિવેક આદિ વહુ ગ્રંથ રચ્યા છે.

डननो मार्ग छे. (पण तेमांन) ते तर्को (मीमांसारूप विचार) अति कठिन दुरूह (दुःखेकरी कल्पना-परीक्षा-थाय पवो) छे. हे शिष्य ! तेआंमां तारी मति प्रवेश करी शकरो नहि; (१३). एथी जे युक्तिए भेदने खंडन करे छे ते उक्ति (कथन) तने कही नथी. ज्यारे भेदमत अप्रमाण जाण्यो त्यारे खंडनमां युक्तिनी अपेक्षा पण नथी. (१४).

वेदवचनथी पण भेदमत विरुद्ध छे ए कहे छे. कठउपनि-पद्मां यमराजा (नचिकेता प्रति) पोकारी कहे छे,-‘हि तात ! ‘भेदप्रतीति महादुःखदात्री छे, एथी चित्तथी भेदवादनो त्याग कर अने परु अद्वैतवादप्रति अनुराग राख.’ (१५).

“ ॥ मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्य-ति” ॥ इति श्रुतेः (जे (पुरुष) इहां (परमात्माधिपे) नाना (भेद) पेठे देखे छे ते मृत्युथी मृत्यु पामे छे.)

“द्वितीयाद्वै भयं भवति ॥”

“ ॥ अन्योसावन्योह्मस्मीति न स वेद यथा पशु-रेव स देवानाम् ॥” इति द्वे श्रुती.

अर्थः—जे (पोतानी) मतिमां ‘द्वितीयने धारे तेने तेथी ‘भय थाय छे,’ एम वेद पोकारे छे. ‘ज्ञेय अने ध्येय ए अन्य ‘छे हुं अन्य छुं एम जाणे, ते देवोना पशु ज जेवो छे. ते कई ‘जाणतो नथी.’ एम वेदनां ढंढेरो छे. (१६). एथी हे शिष्य ! अति दु खदाता मन्त्रादिकनी वाणी तें सांभळी होय ते विसारी मूक. तारा हृदयमां ज्यां लगी द्वैतवचन हरो त्यां लगी अद्वैतनो साक्षात्कार नहि थाय. (१७).

२१७. द्वैतवचननुं जो स्मरण थाय तो साक्षात् थाय तेमां पण संशय उत्पन्न थायः छे; (कारण के) पूर्वस्मृति,

साक्षात् विनाशे छे. तेचिपे एक आवी कथा प्रकाशुं छुं ते
सांमळ. (१८).

(भर्तृनी वार्त्ता.)

भर्तृ नामे एक राजानो मंत्री हतो. सर्व राजकार्य ते
भर्तृने तंत्र (अधीन) हतुं, तेथी अन्य जेठला अमात्यमंत्रीओ
हता तेठला तेनी साथे ईर्षा करता; (१९). (पण) भर्तृनी कशी
हानि करी शकता नहि. (कारणके) महाराजे पोताना जीव-
समान प्रिय तेने जाण्यो हतो. पछी सर्वेए मलीने आ उपाय
रच्यो. दोंडघाड नंखावी दंगो मचवाव्यो. (२०). ए घात
सांभली राजाए पोतानी सभा भरी सर्व उग्र अमात्यांने बोलावी
लीथा अने तेमने फलुं के:-'वेगथी चढी जाथो अने घाड-
'दंगाने नसाडो.' (२१). त्यारे सर्वेए मलीने आ उत्तर आप्युं
के:-'तमे तो सदा भर्तृने ज जाण्यो छे. अने मरवासारू अये
'अमने मोकलो छो. भर्तृने कर्हि केम नथी चढावता?' (२२).
(ए सांभली) पछी भर्तृ करजोडी बोल्यो के:-'हे महाराज !
'मारी धिनती सांभलिये. महाराजानी आज्ञा होय तो छुं
'दोडी सकल धाडने माहं.' (२३). त्यारे राजा भर्तृ प्रति
बोल्यो के:-'तमे चढी जाओ, कार्य समारो.' भर्तृए जतां ज ते
सर्वने मान्या. अने घणिक अने कृपीबल(खेडुत)ने सुखी
कन्या. (२४). तेओए (पेला बीजा अदेखा मंत्रीओए) भर्तृनो
विजय ज्यारे सांभळ्यो त्यारे (बीजो प्रपंच रच्यो अने) राजा
प्रति आ कलुं, - 'भर्तृ मान्यो गयो. अने कार्य सुधन्युं 'नहि.'
ए मिथ्या घचन सांभलतां ज (२५) राजाए तेने स्थानके बीजो
अमात्य प्रधान कन्यो. अने तेने छत्र, सुखपाल, पंखादि दीधां.
पछी पेला बीजा मंत्रीओए पोतामां एवी युक्ति करी के राजा
स्वप्नमां पण भर्तृने सांभळे नहि. (२६).

ત્યારે 'મહ્યુષ્ સર્વ વૃત્તાન્ત સાંમલી અને આતું ગણીને કે:-
'(પેલા લોકો) હવે રાજા પ્રતિ મને જવા દેશે નહિ; દ્વારલગી
'ગયે તો મારા પ્રાણ જ લેશે,'-તેણે તપસ્વીતું રૂપ ધન્યું (૨૭).
(અને વિચાર કરવા માંડ્યા કે:-)

આજ લગી સર્વ પદાર્થ ભોગવ્યા, દેહ અને ઇન્દ્રિય નીરોગી
રહ્યાં, સુંદર તેંઈણી જે ચાર ચતુષ્પાદ, ચાર પુષ્પ, ચાર ફલ અને
ચાર પક્ષીથી સોહ્યામણી થઈને મનને મોહમાં નાંચે છે," (૨૮).

૧૪૭. શ્વાથી-સ્રીનાં અંગોના વર્ણનરૂપ આરોપ કન્યા છે તે દોષદટ્ટિરૂપ
અપવાદઅર્થ છે.....અથી સ્રીના અંગની ઉપમામાં તાત્પર્ય નથી. કિન્તુ
તેવી ઉપમા દેવાવાઢા વિષયલંપટ જનોના ઉપહાસમાં તાત્પર્ય છે. સર્વ કાવ્યમંથનો
પણ એ જ અભિપ્રાય છે. પં. પી. પું.

૧૪૮. અક ૨૯-૩૦-૩૧-૩૨ ના દુહા મૂલમાંથી ટીપમાં નાંચ્યા છે.
કામશાસ્ત્રમાં સ્રીના શરીરનાં અવયવોને ચાર પશુ, ચાર ફૂલ, ચાર ફલ, અને
ચાર પક્ષીની ઉપમા આપેલી છે, તે:-

ચાર ચતુષ્પદનાં નામ. દુહો.

[કરિકર ઉરુ, મૃગચુરી પુરજ, કેસરી સમ કટિ માન;

લોચન ચપલ કુરંગસમ, વર્ષે પરમ સુજાણ] ૨૯.

(હાથીની શુદ્ધ જેવી સાચલ-જાંગ, મૃગની રસરી જેવું ગુહ્યસ્થાન, સિંહની કેડ
જેવી પાતલી કમર, અને હરણની આંચ જેવાં ચંચલ નેત્ર, એ રીતિએ ચારપગાં
પ્રાણીનાં ચાર ઘાનાંસહિત સુંદર સ્રી.)

ચાર ફલનાં નામ. દુહો.

[કમલ વદન, અલસી કુસુમ ચિત્રુક ચિન્હ મતિધામ;

તિલપ્રયુક્તસમ નાસિકા, ચંપક તનુ અભિરામ.] ૩૦.

(કમલના જેવું મુલ; અલસીના ફૂલ જેવું-બુદ્ધિના ધામ જેવી હૃદયની ઉપર-
ઘનશ્યામ હુંદરુ; તલના ફૂલ જેવી નાસિકા; અને ચંપાના ફૂલ જેવું સુંદર શરીર,
આં ચાર ફૂલ જેની પાસે છે એવી સ્રી.)

ચાર ફલનાં નામ. દુહો.

[શિવ અધર, દાહિમ દરન, ડરજ બિહસમ ધીર,

કોહર સમ એઢી કહત, કોવિદ મતિગંભીર.] ૩૧.

(પાકા ધીલોઢા જેવો નીચેનો હોઠ, દાહિમના બીજ જેવા દન્ત, 'સીલાનાં

२१८. जेम सागर गंगाने कदि पण त्याग करतो नथी, तेम जे स्त्रीथी रसिक(पुरुष)नुं मन अनुरागे छे एधी अने वली ब्रह्माए जाणे अपर तिलोत्तमा ज [जेणे सुंदने हण्यो तेथी ते श्रेष्ठ नहि.] वनाची होय एधी, (अति सुंदर स्त्री) (३३). जेना हाथपगनो रंग मंडी अने जपा पुष्प जेवो छे, तेनो मं निमित्त त्याग कऱ्यो नथी. ते स्त्रीभोगनां उपकरण-बीजा सर्व भोग भोगव्या छे. मरण निकट आऱ्युं छे (३४). अरे ! मारा जेवो जगत्मां मूढ कोण छे ?

जेम कठिन अने स्थिर स्तन, कोहर (सलगमनां लाल कंद) जेरी एडी, ए रीतिए चार फलगाळी छी.)

चार पक्षीनां नाम. दुहो.

[मराल सम छे मद गति, कपोत कठ ज बेग,
कोकिल-वाणी अति मधुर, मयूरपुच्छसम केश.] ३२.

(हंसना जेरी मदगति, कपोत (होला वा कनूतर) ना जेवो कठनो आकार कोयलना जेवी बहु मधुर वाणी, अने मोरना पीठां जेरा बाल, ए रीते चार पक्षी जेनी पासे छे एधी.)

१४९. स्वर्गनी मुख्य अप्सरामानी एक अप्सरा. तेविधे एवी कथा छे केः—
सुंद अने उपसुंद नामे बे दैत्य निमुन्दना पुन हता. तेने ब्रह्मानु एधु वरदान हतुं के तेओनामां अन्योन्य विरोध पेशी तेओ परस्पर लढे त्यारे ज मरे. बीजा कोईथी मरे नहि. तेओने परस्पर परमस्नेह हतो. तेओ सपथी महाबलवान् यथा अने इन्दने इन्द्रासन उपरथी उटाडी मूक्यो अने देवोने सतापवा लाग्था तेथी देवो ब्रह्मा पासे आख्या अने ते दैत्योनी नाश करवा उपाय योजवा प्रार्थना करी. तेथी ब्रह्माए निलतिल जेवा रखनी एक अति सुंदर स्त्री घडी अने तेनुं नाम 'तिलोत्तमा' पाड्यु. पठी ज्यां सुदउपसुद रहेता हता त्यां ते स्त्रीने मोक्ली. एने जोतां ज बने भाश्यो दोडी आख्या अने एकैको हाथ झाल्यो. पठी ते स्त्रीने लेंवा बनेए परस्पर सुद कऱ्यु. ते एटले मुधी के बने जण परस्परना प्रहारथी मरण पाग्या. ए तिलोत्तमा सुदउपसुंदना मरणमा निमित्त मई तेथी इत्यारी गणाई एटले ते श्रेष्ठ नहि. पण पोतानी स्त्री तेवी नहि एधी तिलोत्तमाथी पण श्रेष्ठ, एवो अभिप्राय छे. स्त्रीमां मोहित थयेथी विवेक जई महाबलवानोमां कुसंप मई मरण थाय छे,

હું આજસુધી ભગમાં લંપટ થયો. (અરે ઇ ધિ:કારવા યોગ્ય છે !) મલિન માંસઉપર ચામડું લપેટેલું અને ઉપર અલિન્ (વિછીના દંશવાલા)વાલ ઇવું, અશુદ્ધ અને નિશદિન અંદર મૂત્રથી ગંદું અને ખીનું રહેનાર અને જેમાંથી ક્ષતવિના માંસ-મય રુધિર સ્રવે છે ઇવું, અતિ અપવિત્ર અને ગ્લાનિનું સ્થાન,-ઈમાં કિયો પદાર્થ સુંદર છે. (૩૫-૩૬) જેને કેલના સ્તંભ અને હાથોની સુંઢની ઉપમા આપે છે તે સ્ત્રીની જાંઘ તો સદા નિન્દિત જ છે, અને હાડકાં, માંસ, લોહી, અને ચાંમડી-નો પસારો અને મૂત્રનો પચપચો ચાલ ન હોય, તેવી છે. સ્કૂલ નિતંબ (ધગડા) જે સારા લાગે છે તેના મધ્યમાં તો મલનો મલિન નલ (ગુદ) રહ્યો છે, જેને તટે અતિ દુર્ગંધ રહે છે. અરે ! ત્યાં જે આસક્ત થાય તે અંધ છે. (૩૭-૩૮).

ધુંક અને લાલથી ખીના થતા અધરને ગ્લાનિ ત્યજી પોતાના મુખમાં દે છે. દષ્ટમદા (જેને દેખતાં જ મદ્ ચઢી જાય ઇવી) નારીરૂપ મદિરાને સેવીને શુદ્ધઅશુદ્ધનો વિવેક તજી દીધો (૩૯). (ધિ.કાર છે.) નારીનાં જે અંગ સારાં કહે છે, (તે તો,) વિચાર કરતાં ઇવાં ફીકાં લાગે છે. મેં હવે નારીને કુડ-કપટનો ધાણ જાણી અને ત્યજવા વિચારી છે (૪૦).

૨૧૯. કાલકંદ (વરફી), પંડા, કંદ, દુગ્ધપાક, વહીં, તંદુલ, વહુપ્રકારનાં વ્યંજન (શાકાદિ), ઘૂત, અને વીજાં વિવિધ ભોજન જે ક-યાં તે સર્વના રસ જીમે લીધા છે (૪૧), ઇણ હજી-સુધી ઇ(શરીર)ને તૃપ્તિ થઈ નહિ, ઇથી તેને પોપણું વૃથા છે. ઘનનાં ફલકંદ ક્ષુધાનો નાશ કરે છે. (ઈમ સતે) આ જીવ ઇરાધીન કેમ થાય છે ! (૪૨). ગુફારૂપી મહાલય અને ઘન-રૂપી ઘાગ ઘણા છે, તો રાજાનો ચેલો (ચાકર) શાસાઘં હું ધાઉં ! શિલારૂપી સેજ છે, અને પોતાના મુજરૂપી ડસીકું છે.

કરૂપી પાત્રમાં નિર્મલ નિર્ઝરાનાં જલ છે જે કોઈ રોકે નહિ. (૪૩). હે મર્તુ ! એકાન્તમાં જ ઘેસીને સ્વચ્છૈદ થઈને પરમાનંદને લક્ષ. સમુદ્રપર્યન્ત સર્વ જ પૃથ્વી મળે (તોપણ) એકાન્ત વિના આનંદ કદિ પળ છે નહિ. (૪૪).

૨૨૦. (સર્વને એકાન્તમાં જ સુખ છે) પૃથ્વીપતી, નીરોગી, યુવા, દૃઢ અને વલવાન્ સ્થૂલ(શરીર), વિદ્વાન્, યૌ જે રાજા હોય તેમાં મનુષ્યસુખનો અંત છે (અન્ત આવ્યો એમ ગણાય છે.) (૪૫).

અને જે માનવગંધર્વ કહેવાય છે તે ઉપર કહેલા રાજાથી સોગુણ સુખ પામે છે. અન્ય જે દેવગંધર્વ હોય છે, તેને માનવગંધર્વથી સોગુણ સુખ વધારે છે. (૪૬). દેવગંધર્વનું જે સુખ છે તેથી પિતૃલોકનું (સુખ) સોગુણ છે. વલી તે પિતૃલોકથી આજ્ઞાન(સ્વર્ગજ્ઞાત)દેવમાં સોગુણ સુખ છે. આજ્ઞાનદેવથી કર્મદેવમાં સોગુણ સુખ છે (૪૭). તેમાં વલી જે મુખ્યદેવ છે તેઓમાં કર્મદેવથી સોગુણ (સુખ) છે. અને જે ત્રિલોકપતિ ઇંદ્ર કહેવાય છે તેમાં (તે મુખ્યદેવથી) પણ સાંગુણ (સુખ) ગણીલ્યો (૪૮) સર્વ દેવના ગુરુ વૃહસ્પતિ છે તે ઇંદ્રથી સોગુણ સુખની ગતિને લે છે. જેનું નામ પ્રજાપતિ કહે છે તે વૃહસ્પતિથી સોગુણ સુખ રાખે છે. (૪૯). તેના કરતાં પણ બ્રહ્મનું સુખ સોગુણ છે તે લેશ પણ દુઃખ કદિ લેતા નથી. પટલા એ બ્રમયી સુખને પામે છે એમ તૈત્તિરીય શ્રુતિ સમજાવે છે. (૫૦),

સોલો

રાજાથી બ્રહ્માન્ત, કહ્યું જે સુખ તે સકલ લે,
રહે સદા એકાન્ત, કામદગ્ધ જેનું ન હૃદય. ૫૧.

૧૫૦. [મુખ્ય દેવ એકત્રીસ (૩૧) છે. તેમાં ૧૧ વદ્ર, ૧૨ આદિત્ય, ૮ વસુ. તેમાં ઇન્દ્ર અને પ્રજાપતિ મલી ૩૩ દેવ યાવ છે.

૨૨૧. અથ યુવતીસંગદુઃસવર્ણન.

પ્રકાન્ત દેશમાં પણ સુખ છે. યુવતી, પુત્ર, ધનના સંગથી સદા દુઃખ છે. જેની સ્ત્રી કુરૂપ અને કુવચની હોય છે તેને હૃદયે સદા આ શોક થાય છે. (૫૨):-હે પ્રભુ! પુરીપનો પિંડ આ રંડા, એ મને કયા પાપનો દંડ દીધો છે. સર્પિણી, યાગડી, વોકડી, મેંશ, નોલી અને નાગણીના (૫૩) ભૂતભાવતી (ચુડેલ) ઉટણીના જેવા તો ઘોલો વોલે છે. ગધેડીનું ઘોલવું સાંભલી ગધેડા મોહે છે. શીયાલી જે ડંચા સ્વરને રાત્રે ઉચારે છે તે સાંભલી હજારો શીયાલવા પોકારે છે (૫૪.) (પ્રાણીને ગમતી સ્ત્રીનું વોલવું પ્રિય છે.) નિરપરાધિની સ્ત્રીને તજવી એ, યિરાગ વિના, વનતું નથી તેથી (પૂર્વજન્મમાં કરેલા) પાપનું (સ્ત્રીરૂપ ફલ) જીવને લાપ્યું છે-આવ્યું છે. સ્ત્રીના કુવોલ સાંભલીને અને કુરૂપ તનુ જોઈને નિશાદિન પ્રિયનું મન દુઃખિત રહે છે. (૫૫.) જે કામિની સુરૂપ અને સુવાણી-વાલી છે, તે ઘલી કુરૂપ સ્ત્રીથી (અધિકુ) દુઃખદાત્રી છે. ચમકતી ચામડીની તે પ્રિયને પ્રિયા છે; તેથી તેના ધર્મ અને અર્થનો નાશ કરનારી અને મોક્ષને વિગાડનારી છે. (૫૬.) સ્ત્રીનાં મીઠાં વેળ છે તે ફેરવાલા લાઠૂ જેવાં છે, તેને સાઈ વુદ્ધિને ગુમાવી મહવો થાય છે, અને તે કામથી અંધ થઈ એક કામિની વિના વીજું સ્વપ્નમાં પણ દેખતો નથી. (૫૭.)

૨૨૨. અથ યુવતીસંગે ધર્મવિગાહ

જે કંઈ ધન વહિરથી કે ઘરમાંથી મળે છે સર્વ કામિનીને સાહ સરચે છે. તેને ભૂષણવસ્ત્ર પહેરાવે છે પણ ગુરુ, પિતા માતા તો તેને સાંભરતાં પણ નથી. (૫૮.) દુધપાક, મીઠાઈ, મેવા, પાન, નિજદેવ (જે તે સ્ત્રી) તેને ભક્તિથી દે છે. સ્ત્રી છે તે સ્નેહિત જેવી છે અને તેનો પ્રિય તે ઘલદ જેવો છે. તે

નાયને સ્નેહરૂપી નાથે સ્ત્રીપ નાથ્યો છે, તે છુટી શક્તો નથી, તેને કૂટ્યાં જ કરે છે. (૫૯).

૨૨૩. અથ યુવતિસંગે પર્મરિગાદ.

જેમ પિંજરામાં રાત્રેલો પાંપટ શુદ્ધ અશુદ્ધ જે શિષ્યવ્યું હોય તે ઘાંટે છે, તેમ (પેલો ઘર્ષી) જે કંદ તે નારી શિષ્યવે છે તે જ (પોતાનાં) માતાપિતા અને ગુરુને સંમળાવે છે. (૬૦.) જેમ મોર મોરલી આગલ નાચી રીજાશીને પોતે અગુરાગે છે તેમ વિવિધ વેપેકરી સ્ત્રીનું મન રીજાશીને પ્રિયનું મન રીજે છે. (૬૧.) જ્યારે વંનેનું મન અનુરાગવાલું થાય છે ત્યારે મદનરૂપ મદિરાનો મદ જાગે છે. પછી વાવરા થઈ ઘસ્રનો ત્યાગ કરે છે. અને અતિ ઉન્મત્ત થઈ ઘઠી ઘૂર્ણમા લાગે છે. (૬૨.) નમ્ર અમંગલ પ્રેતરૂપ ઘરી (વાય) મીઠી કરી મીઠે છે. જાણે ઘે ઘેટાનું ઢંગલ (લડવું થતું) હોય. જેમ કોઈ મતવાલો દારુડિયો ગંદકી મલિનતા કે ચાલ ગળ્યા વિના ગમે ત્યાં આલોટ્યાં કરે છે. (૬૩.) તેમ નરનારી મદનના મદથી અંધ થઈને અતિ મલિન અંગમાં વંધાય છે. મનને મદનમદ જે ભ્રમ કરે છે, તે સાંમળી ત્યાગી જનને આશ્ચર્ય થાય છે. (૬૪.) મદનના મદથી નરની યુદ્ધિ નાશ પામે છે, (તેથી તે સ્ત્રી) ઉચ્ચ છે કે નીચ છે; ઘરની છે કે પરની છે, એ કંઈ જોતો નથી. સ્ત્રીને પણ મદને વાવરી વનાવી છે. (તેથી) જે નિચા દુઃખદા છે તે સુખદા થાય છે. (૬૫.) પ્રવલ કામની મદિરાથી મદ જાગે છે ત્યારે ઢિજની સ્ત્રી ધાનક (વાંઘરી-ફોલી) સાથે લાગે છે. નર નારી મદનરૂપી મદિરા પીય છે (તેથી) પથી અનત સુવારી કરે છે. (૬૬.) કામરૂપ દોષ એ રીતિય નરને ઘગોવે છે તે સુંદરસ્ત્રીને જોયાથી પ્રકટે છે. પથી અતિ સુરૂપવતી સ્ત્રી દુઃખદાત્રી છે, -પથી તેના ત્યાગને મુનિ સુખદાતા કહે છે. (૬૭.)

જે સુરૂપા સ્ત્રીમાં અનુરાગ કરે છે અને તેને વિપ્સમ દુઃસદા છે પણ દેસી ભાગતા નથી, તેઓ ઉભય લોકની વહુ હાનિ કરે છે. એમ મુનિજનના ગણ, પ્રમાણ ઘણાની, ગણે છે. (૬૮.)

૨૨૪. (પ્રતિસગધી વિંદુનો નાશ.)

(મનુષ્ય) જે નાનાવિધ ભોજન રાચ છે તેનો રસ ફલભૂષ વિંદુ(ધીર્ય)ને ઉપજાયે છે. સર્વનું જીવન વિંદુને અધીન છે. મનનો શોક વિંદુષ નાશ પામે છે. (૬૯.) જ્યારે જનનું મન મલગાસિ થાય છે ત્યારે શોક કરે છે અને અતિ-ઉદાસીનતા (મૂઢતા) ધરે છે. જ્યારે મન રધિરમાં નિવાસ ધરે છે ત્યારે ચંચલ થઈ અધિક રજો ગુણ ધારે છે. (૭૦.) પણ જ્યારે મન વિંદુમાં ઘાસ કરે છે ત્યારે, શોક અને ચંચલતા નાશે છે; (પટલું જ નહિ પણ) પોતાને જ વલવાન જન જાણે છે અને પ્રમદ્ન થઈ શુભકાર્ય કરે છે. (૭૧.) જે જનમાં અધિક વિંદુ હોય છે તેના તનુમાં સુંદર કાન્તિ અને રૂપ હોય છે. શરીરમાં વિંદુનું જ અજવાલું છે. વિંદુનો નાશ થતાં શરીર હત્યારા જેવું થાય છે. (૭૨.) જેના વિંદુનો કદિ પણ નાશ થતો નથી, તેના શરીરમાં ઘલિયાં (પડતાં નથી) અને પલ્લિયાં પ્રકાશતાં નથી. યોગી સ્વેચરી-મુંદ્રા કરે છે તેથી વિંદુને રક્ષીને

૧૫૧. દોષેણ તીવ્રો વિપયઃ કૃષ્ણસર્પવિપાદપિ ।

વિપં નિહન્તિ ભોક્તારં દષ્ટાં ચશ્ચુવાપ્યયં ॥ ૭૧ ॥

વિવેકચૂડામણિઃ

દુહો. અહિવિપ તનુ કાટે ચઢે, યહિ ચિતવત, ચઢી જાત,

જ્ઞાન ધ્યાન પુનિ પ્રાણ હું, ભેત મૂલ યુત સાત.

૧૫૨. કપાલકુહરે જિહ્વા પ્રતિષ્ઠા વિપરીતગા ।

મુચોરન્તર્ગતા દષ્ટિમુંદ્રા ભવતિ સ્વેચરી ॥

મદ્ર થાય છે. (૭૩.) યોગીઓ જે અષ્ટસિદ્ધિ ધારણ કરે છે તે (યોગી) વિંદુ રસેથી મોગી થઈ હારે છે. જગત્માં પયું અતિ ઉત્તમ જે વિંદુ છે, તેને સ્ત્રી પોતાના માગમાં છીનાવી લે છે. (૭૪.) જેમ છેદુત શેલડીને વારંવાર ફોલમાં ઘાલી પીલે છે અને તેના રસને નીચોવી લે છે અને પછી (તે શેલડીનો) પુલો અસાર (કુંચા) થાય ત્યારે તેને વાળે છે. (૭૫.) તેમ સ્ત્રી પ્રિયને વાથમાં પીશીને, તેના અમીરસને સૂંચી લઈ પોતાની.. રૂપ ઘટને ભરે છે. અને જ્યાંસુધી તેના અંગમાં વિંદુનું પગ વિંદુ શેષ રહે ત્યાંસુધી (સ્ત્રી) પવો ક્રિયા વારંવાર નિત્ય કન્યાં કરે છે. (૭૬.) ફુલમાંથી ફુલેલ સૂંચી જેમ કુંચા રાખે છે તેમ નારી નરનો દેહ (કુંચા જેવો) અસાર કરી નાંચીને પછી તે અકામ શય થાય ત્યારે તેને, અલાત (બલ્લતાં) સોયણાંના જેવા સૂક્ષ્ણ વોલથી, વાળે છે. (૭૭.)

જે સુરૂપવાન્ બલવાન્ અને ધનવાન્ હોય છે તે નરના ઉપર નારી બલિહારી થાય છે, અને તેનાં રૂપ, ધન અને બલનો અંત કરી પછી તેને કહે છે કે-તું કોનો કાન્ત ! (૭૮.) (પમ છતાં પળ) વહી જે અનાહી તેને ફરી મલ્લા ચહાય છે, તેને ઘડઝપર હાથ મૂકતાં જ (રાંડ) ગાલો દે છે, નારુ ચઢાવીને આંખ મરડે છે, જેથી પતિ સહેજપાસે જાય જ નહિ. (૭૯.) કોટિ ઘણનો સંઘાત કરાય અને તે સર્વનો સાર સૂંચી પકટો મૂકાય, તે પળ સ્ત્રીના હૃદયા જેવું કટોર નથી,—પવો શ્રુપિ

ચિત્ત ચરતિ સ્વે યસ્માત્ જિહ્વા ચરતિ સ્વે ગતા

તેનેપા સ્વેચ્છરી નામ મુદ્રા સિદ્ધૈર્નિપેવિતા ॥

યાવદ્વિંદુઃ સ્થિરો દેહે તાયન્મૃત્યુભયં કુત ।

યાવદ્બલ્લા ચ સા મુદ્રા તાયદ્વિન્દુર્ન ગચ્છતિ ॥

૧૫૩. અણિમા લઘિમા પ્રાપ્તિઃ પ્રાકામ્યં મહિમા તથા ।

ઈશિત્વં ચ ધશિત્વં ચ તથા કામાવસાયિતા ॥

મુનિના ગણ ઢંદેરો પીટી દે છે. (૮૦.) જેમ જેમ સ્ત્રી ગુમાન કરે છે અને હુઠે છે તેમ તેમ શઠમતિ જનનું મન (વધારે વધારે) વાંટે છે. કોઈક ઘાર તેનું વાંછિત કરીને તેને પઠડીને મરણ સુધી છોડતી નથી. (૮૧.) શ્રુતિ, સ્મૃતિ, ગીતા, ને પુરાણ મળેલો, તર્કમાં નિપુણ અને વહી કોઈપ જિતાયલો નહિ પણ નરને પળ, જેમ ઘાઝીગર વાનરને અધીન કરે છે તેમ, નારી અધીન કરે છે. (૮૨.) (તેની પાસે) સર્વ કંઈ મન-ભાવનું કરાવે છે, અને પ મળેલા પશુને મલી માતે નવાવે છે. જ્યારે પંડિત પઠીને સ્ત્રી પ્રતિ જાય ત્યારે ઉક્તિ (બોલવું) અને યુક્તિ પ સર્વ જ વિસરે છે. (૮૩.) જ્યારે કદા વેદ(નામ વિદ્યા)ને પ સંભારે છે ત્યારે કંઈક સ્ત્રીમાં સ્વેદ માને છે; અને તેનો ત્યાગ કરવાની ઇચ્છાને ધારે છે; (પળ તેને) ફરી સ્ત્રીનાં નયનની સેનરૂપી શર (વાળ) શારે છે. (૮૪.) નયનકટાક્ષરૂપી વહુ ઢેરી શર, શુકુટીયુગલરૂપી કમાનને જોડી તાળીને તેપર ચઢાવી સ્ત્રી મારે છે, તે સર્વ જનનાં હૃદય શારે છે. તેમાંથી વિદ્વાન્ પળ વચ્ચતા નથી, તો શઠગણની ગણત્રી જ શી? (૮૫.) સ્ત્રીમાં તીવ્ર પ્રિયાગ થયો નથી (પથી) પમ મતિમદ (લોક) ફરીથી તેમાં રાગ કરે છે. જેમ ચાકરડપર હુકમ કરે તેમ ઠાકુર-પેઠે વેઠેલી (પતિપર) વિવિધ આજ્ઞા કરે છે. (૮૬.) નારીના નયનશરે જે નર વિધાયા છે તેનાં હૃદય સીધાં હોતાં નથી. સારઅસાર, સુખદુઃખ, સર્વ તે વીસરી જાય છે, -તો તે ભવ-દુઃખમાંથી કેમ નીસરે! (૮૭.) નારી વેશ્યા હો, પરબીયા હો, તે વુરી છે. શ્રીઝી ઘરની (સ્વકીયા) પળ નરકનીશાની છે. વિવેકો (જન) ત્રણેમાં સ્નેહ ત્યજે છે. જે સ્નેહ કરે તે શઠના મ્હોડપર ધૂલ (પડો.) (૮૮.)

દુઃખ.

અર્થ, ધર્મ, ને મોક્ષને, નારી વિગાટે પન;
જાણી સર્થ અનર્થ-મૂલ, ધાય ત્યજે તે, ચેન. ૮૯.

૨૨૫. (પુત્ર આસક્તિમાં દુઃખ.)

પુત્ર સદા આમ દુઃખ દે છે:-તેની પ્રાપ્તિ નહિ પ (પ્રથમ)
પરુ દુઃખ, ગર્ભસમય દુઃખ, જન્મતાં દુઃખ, અને મરે તો અનેક
દુઃખ. (૧૦) જ્યાં લગી નારી ગર્ભને ધારે નહિ ત્યાં લગી
દંપતી (વચ્ચે) ના મનમાં મારે દુઃખ થાય છે. જો ગર્ભ રહે તો
પણ પ ચિંતા (દુઃખ) નાશતી નથી. પુત્ર કે પુત્રી થશે (પ ચિન્તા)
પ્રકાશે છે. (૧૧.) ગર્ભ ગર્યાના અનન્ત હેતુઓ તેઓથી
ડરીને અતિ ચિન્તા કરે છે. જો નવમાસ ચિતી ગયે પુત્ર
થાય તો જનનીજનક અધિક દુઃખે મરાય છે. (૧૨.) સકલ
જગતમાં કોઈ જનનો પશું જન્મ નથી કે, જેમાં નવગ્રહ-
માંથી એક એ ધીગદ્યા હોય નહિ. તે વિગટેલા ગ્રહની નિશિ-
દિન ચિંતા, માતાપિતા પકાન્ત વેશી કન્યાં કરે છે. (૧૩.)
ધાવણું ત્યજીને જ્યારે શિશુ (બાલક) ઉદાસ થાય છે ત્યારે
બંને મઝીને રોવા લાગે છે. એમ ચિંતા કરતાં કરતાં કેટલાક માસ
જાય છે પટલે પુત્રના શીળા દાંત નીકળે છે, (૧૪.) ત્યારે-
દાંત નીકળતાં વહુ બાલકો મરી જાય છે-પશું ચિંતાદુઃખ
સ્ત્રીપુરુષને થાય છે. પ દુઃખમાંથી દુર્બલ બાલક જીવે (તે
સારુ) ચકલું જોઈ ઉતાર મૂકે છે. (૧૫.) મ્લેચ્છ, ચમાર,
ચંડાલ અને કોઝી પવાનીપાસે, ધોરી દિજ (હોય તે પણ)
પીઝી (ઉજળી) નંણાવે છે, અને સર્શ્યદ રજ્વાજા (જોજા), પીર,
અને ફકીરો પાસે નમે છે અને અધીરા થઈને હાથ જોડે છે.
(૧૬.) જેને આર્ય લોક (હિન્દુ) કદા માને નહિ, તેને પુત્ર
સાદુ શુદ્ર જાણે છે. નાના મૂત મેરવને મનાવે છે, અને શ્મશાન-

ભૂમિમાં શિવાશ્લિ (શિયાલને વલિદાન) ધરે છે. (૧૭.) ઘરમાં
 વાઘરીનાં (ભૂવાનાં) ઢાકલાં વાગે છે અને (તેને) હાથ જોડતાં
 અને પૂજતાં લાજતા નથી. ઘીજાં વહુ તાઘીજ અને ચંદ્ર લપ્તી
 મઢાવીને પુત્રને ગલે ઘાલે છે. (૧૮.) નિજ કુલમાં પક અચ્યુત-
 (દેશ્વર)ની પૂજા છે. કોળે પળ ઘીજાને સ્વપ્નમાં સંમારેલા
 નહિ, તે કુલનો નિયમ, પુત્રહિત સારૂ ત્યાગે છે, અને વ્યભિ-
 ચારિણીની પેઠે, જહિં તહિં લાગે છે. (૧૯.) જ્યારે શીતલાનું
 નીકલવું થાય છે ત્યારે માતાપિતાના મનનું વિક્કસવું નાશે છે.
 આનક્રિયા તજીને (તેઓં) મલિન રહેતાં પરમદેવ ગઘેડાને
 ફર્યો છે. (૨૦૦.) અને વાગ(હોરડા)ને મરડીને કહે છે કે
 'હે માતા (ગઘેડી) ! મારો શિશુ મને વકસજે અને હું તારા
 'ગઘેડાને ચરાવું છું.' પમ કહી ઘોઢામાં ઘણા ઘરી ઘિનતિ
 ફરી ગઘેડાને ચારે છે. (૨૦૧.) ઘ્યાં અનંત દુઃસથી શિશુનું
 પાલન થાય છે; અને ઘીજાં હજારો (દુઃસ) તે યુવા થાય
 ત્યાંલગી ઘેઢવાં પઢે છે, પળ જો પુત્રનું ઘય થોડું હોય છે તો,
 ફરોડાં ઉપાય ફરો પળ તે મરે છે જ. (૨૦૨.) અને મરે સતે
 માતાપિતા પોતાને અનાથ દીન માનીને માર્યાં ફૂટે છે, અને
 હાયહાય કહી નિશદિન રોંયાં ફરે છે તથા ઘિક્કઘિક્ક કહી
 પોતાના જન્મને ઘગોવે છે. (૨૦૩) પુત્રમરણનું દુઃસ છે તે
 જેવું પુત્રઘાઢાં જાળે છે તેવું અપુત્ર જાળતાં નથી. જો (પુત્ર)
 જીવે તો તે તરુળ થતે જ નારીનું મરણપોપળ ફરવા
 લાગે છે. (૨૦૪.) જેઓં અનેક ઘલોંપ ફરીને પ્રતિપાલ્યો
 તેઓંને તો જલ પાવું પળ મારે પઢે છે. રાત્રે પલંગપર નારી શિખઘે
 જે તારાં માતાપિતા મને ગાલો દે છે. (૨૦૫.) (તે સાંમલી)
 જો સુપુત્ર હોય તો પ્રાતઃકાલમાં ઉઢીને મસ્તકને નમાઘી
 દૂરથી માઘાપને નમે છે, માતાપિતા ઇચ્છે છે કે (પુત્ર) પાસે

આવે (પણ) પુત્ર આંગણથી સન્મુલ હેરતો નથી. (૧૦૬.) કુપુત્ર હોય તો પ્રાતઃકાલનાં ઉઠતાં જ ગાઝોના જેવાં અસહ્ય ઘચન વકો ઘરનું સર્વ ધન લઈ જૂદો થાય છે. માવાપને તેમનું શરીર જ એકલું દે છે. (૧૦૭.) પછી તેઓને કદા સંમારતો પણ નથી. પોતાના અને સ્ત્રીના શરીરનું સર્વ દિન પોષણ કરે છે. એણે જાંઈ માવાપ નિઃશ્વાસ મૂકે છે. એ પ્રકારે પુત્ર સદા દુઃસ્વનો ઢગલો છે. (૧૦૮.) વિચાર કરી દેલિયે (તો એમ) પુત્ર સદા દુઃસ્વરૂપ છે. પુત્રથી જે સુલ્લ ચહાય છે તે મૂઢોના રાજા છે. (૧૦૯).

૨૨૬. (ધનઆસક્તિમાં દુઃખ.)

શ્લો.

સ્ત્રી પુત્ર લ્યજી જે ધન ચહે, તેના મુલમાં ધૂલ;

ધનજોડન, રક્ષાકરણ, સરચ, નાશ, દુઃસ્વમૂલ. ૧૧૦

જે વહુ માયા (ધન) જોડવાને ઇચ્છે છે તે લાસો અને કોડો અનર્થ કરે છે. જે જન ધનને જોડવા લાગે છે, તે જાતિના ધર્મ અને કુલના ધર્મનો પણ ત્યાગ કરે છે (૧૧૧). તદ્વિ ભાગ્ય-વિના ધન એકલું થતું નથી. (કદાપિ) એકલું થયું તો તેની રક્ષા કરી કરીને મરે છે. સરચતાં ધન ઘટી જશે એ ઘિંતા થાય છે, અને નાશ થયેથી નિશદિન અનન્ત તાપ થાય છે. (૧૧૨). એમ ધન, મનને સદા દુઃસ્વ કરે છે. તે(ધન)ને જે ચાહાય છે તે જનને ધિક્ક ધિક્ક છે.

(એ પ્રમાણે)સ્ત્રી, પુત્ર, અને ધન, એઓને દુઃસ્વદાતા જાણીને મહુપ (તિમના ઉપરથી) મમતાનો નાતો લ્યજ્યો. (૧૧૩.) પછી મહુ એકાન્ત વનમાં ગયો અને ચિત્તને શાન્ત કર્યું.

૧૫૪. અર્થાનામર્જને દુઃખં તથૈવ પરિપાલને ।

નાશે દુઃખં વ્યયે દુઃખં ધિગર્થ ચ પુનઃ પુનઃ ॥ ૧ ॥

૨૨૭. (અયે પેલા રાજાપાને) જે નવો મંત્રી થયો તેણે એ સર્થ ઘૃતાન્ત સાંભળ્યો. તેને આ ચિન્તા ઉપજી, -જો 'ભરુ' જીવે છે (એ ઘાતા) રાજા સાંભલશે અથવા કોઈ નાકે એ મળી જશે તો અમે જુટા ઠરીશું, અને રાજા સર્વને વંડ દેશે. યથી અયે (સર્વે) મળીને કહો કે, -'ભરુ પ્રચંડ પ્રેત થયો છે'. (૧૧૪.) એ સલાહ પરસ્પર કરીને, (સર્વે) રાજસભામાં ગયા; અને સર્વે એ મળીને રાજાને કહ્યું કે, -'ભરુ નીચ પ્રેત થયો છે.' (૧૧૫.) દેહપર રાજ લગાવે છે, અને જેને મળે તેને ઘાત કરે છે અને પછી મારે છે. અને તે જ નર ષચે છે જે તેને દેખી પછી (નાશી) જાય છે. (૧૧૬.)

(એ ઘાત) સાંભળી રાજાએ, પ્રમાદી અને અચેત થઈને સાચજુટ જાણ્યા વિના, એવો નિશ્ચય કન્યો કે, -'ભરુ મરીને 'પ્રેત થયો છે.' (૧૧૭.) કેટલાક દિવસ વિતી ગયા પછી રાજા શિકાર મારવા ગયો. ત્યાં એક સઘન ગિરિધનમાં જ્યાં હજારો મૃગરાજ (સિંહ) હતા ત્યાં પેઠો. (૧૧૮.) ત્યાં પોતાનો મંત્રી 'ભરુ' એક તરતલે તપ કરતો હતો તેને દેખી દુઃખ દાતા પ્રેત માનીને રાજા ઉલટો ભાગ્યો. (૧૧૯.)

૨૨૮. જેમ, 'ભરુ મુલો અને પ્રેત થયો છે, -એ અસત્ય વાક્યને સત્ય જાણ્યું તેથી, પોતાની આંખે (રાજાએ ભરુને) જીવતો દેખી લીધો તોપણ (તેને) પ્રેત માની ભાગ્યો; તેમ જે અજાણ (લોક) બંચરૂથી (ઠગ લોકથી) દ્વૈતને સાંભળીને મતિમાં વિશ્વાસ કરે છે, તે અદ્વૈત બ્રહ્મને પ્રત્યક્ષ જાણે તોપણ તેના (ઠગાઈ ગયેલા મોઢાના) હૃદયમાં તે ઠસતું નથી. (૧૨૦)

જે કોઈ અજાણ્યા, ભેદવચનઉપર વિશ્વાસ કરીને સાંભળે છે, તે જન સદા દુઃખ ભોગવે છે, અને (તેમને) બ્રહ્મનુ જ્ઞાન

१ तंग.) मिथ्या दुःख मिथ्या साधनयी ज छेदाय छे. ३१९

यनुं नयो. (१२१.) एथी भेदनां वचन सांभळ्ळे तो (तेने) असत्य जाणे त्यारे तेने महावाक्ययी सत्य ज्ञान थाय. (१२२.)

हे शिष्य ! तें जे भेदनी कहाणियो सांभळी होय तेने नर-कनी निशानी अने जुठी जाण. तेओना कोहनारा पण सर्व पुण्यार्थसुखयी म्हेला पद्या शठ अने जुठा छे. (१२३.) तेओना संग कदापि न करवो, जो संग थाय तो (तेमनां जुठां) वचन सांभळ्यां नहि, (जो जुठां वचन) सांभळ्यामां आवे तो सांभळतां ज त्यज्यां अने म्हेच्छ अने जैन वचनसम जाणीने तेथी भागवुं. (१२४.)

२२९. (मिथ्या दुःख मिथ्याए ज छेदाय.)

(हे शिष्य ! तारी शंका हती के) 'जो वैशिक (गुरु) अने वेद मिथ्या होय तो, (तेओ केम करी भवदुःखनो छेद्र करी शके ?' एनो अये उत्तर (तुं) सांभळी ले. मिथ्या दुःख छे ते मिथ्याथी ज छेदाय छे. (१२५.)

(ए पिपे दृष्टान्त. एक राजानुं स्वप्न.)

बोवाई.

वेद गुरु सत्य ज जो होय, तो मिथ्या भवदुःख न सोय,
एमां एक दृष्टान्त शृण्वावुं, जेथी तु ज संदेह नशावुं. १२६.
सुरपति इंद्र स्वर्गमां जेवो, प्रबल प्रताप एक भूप एवो;
भीमसमान शूर बहु नित्ये, चार पास तेनी रहे प्रीते. १२७.
योद्धा लई निजनिज हथियारो, खडा रहे ते द्वार हजारो;
मंदिर अंतर, दोढी, उभा, लई खड्गाने काशथी काढी सहि. १२८.
उच्च महालय अटारी जेमां, फूल सेज सूवे नृप तेमां;
पक्षी पोचवाने पामे नहि, अन्य केम चाली जाये तहि ? १२९.
आवुं स्वप्न त्यां दीतुं नृपे, परुड्यो स्वपग शियाले झडपे;
इच्छे भूप छोटाया निज पग, शियाल न मूके परुडी पगरग. १३०.

तदा उभां नृप एम पुकारे, छे को एवो शियाल मारे;
 उमा यांदा जे निजद्वारे, सहाय तेणे न दोंधों त्यारे. १३१.
 नृपे दंड लीधो निज करमां, पांते मान्यो शियाल शिरमां;
 दंड लागी थयो तेनो अन्त ज, पगरगथी निःसन्या तव दंत ज. १३२.
 लाग्या गाढ दंत नृपपगमां, चाले लंगटतो मारगमां;
 तव चाल्यो लई लाकटी करमां, पहोच्यां घावैद्यतणा घरमां. १३३.
 तेने कशुं मलम धो एवो, पग-घा तुरत भराए तेयो ;
 कशुं आ नृपने घावैथे तर्हि, घरमां मलम तयार ज छे नहि. १३४.
 जो तुं दे एक पैसो मजने, तो तयार करी देउं तजने;
 तव पलठ्यो नृप लाकडी टंके, नहि देवाने कोडी ज एके. १३५.
 ते घरथो टली शोक करे छे, कोण धनविना वात बुजे छे !
 जो बहुभागी ने धनी हुं हत, घावैद्य ज दोड्यो घर आवत. १३६.
 मने नकामो रंक जाणी त्यम, टाल्यो घरथी तुरत रोग ज्यम;
 दोष कशो नव देवो एने, प्रीति स्वार्थविना छे केने ? १३७.
 मातपिता वान्धव सुत नारी, करे प्रीति स्वार्थथी भारी;
 जो स्वार्थ सिद्धि नहि पामे, जोतुं एमने गमे न सामे. १३८.
 जे विना घडी एक न रहे, अपार दुःख विरहे सड लहे;
 गृह-पदपर आव्यो देखीने, गृहनां धाई मले भेटीने. १३९.
 विधि अधीन ते पतियो थाय, सौ अंगे पाणी चुतुं जाय;
 आंगळियो जेनी खरी पडती, तेने मुख भाखी वणवणती. १४०.
 तेने कहे गृहनां ते प्यारां, अवे तुं मर पापी हत्यारा;
 नेत्र न वृत्त थतां जोई जेने, ग्लानि वमनवत् देखी तेने. १४१.
 जे पति प्रिय लागतो हृदयथी, पल न च्हाती वृर करवा उरथी;
 तेनो पवन वचवा चाये, लुगडुं नाक दे समीप जाये. १४२.
 मातपिता जे खोळे लेतां, संकोचे करथी कंई देतां;
 मळता भुज भेटी जे म्नातो, करे पशान्तर राखी वातो. १४३.

५ तरंग.) मिथ्या दुःख मिथ्या साधनयी न छेदाय छे. ३५७

एम स्वार्थनुं जगत महु सहि, स्वार्थविना कोई कोईनुं प्रिय नहि.
विधिप स्वार्थ योग्य नव कीधो, पथी पणे मलम न दीधो. १४४.
ए चिंततां मळ्यो मुनि एर, दई जडी मटाड्युं घाडुंख छेक;
निद्राथी नृप जाग्यो ज्यारे, घाडुःख, मुनि, नाश्यां त्यारे. १४५.
शिय ! ए ज दृष्टान्त प्रकाश्युं, लख्य,-मिथ्याथी मिथ्या नाश्युं;
राजाए दीटुं मिथ्या दुःख, साच समाजे न कस्युं कोई सुर. १४६.

२३०. टीकाः—मर्थ प्रकरणनो अर्थ स्पष्ट (छे); भाव
आ छेः—संसाररूप दुःख मिथ्या छे; पथी तेने दूर करवानां
साधन-वेदगुरु-मिथ्या ज जोइये. मिथ्याना नाशमां सत्य साध-
ननी अपेक्षा नथी. अने सत्य साधन होय तो तेथोथी
मिथ्यानो नाश थाय नहि. जेम राजाना समीप मिथ्या
शियाल स्वप्नमां पडोची (ते) कोई सत्य बोद्धाथी रोनाई
नहि, अने राजाए पानान्यु त्यारे कोईथी पण (ते शियाल)
मरी नहि. अने राजानी पामे अनेक साचां राख्नां मूस्यां
हतां; तोपण (ते काममां आत्र्यां नहि अने) मिथ्या दंडे मरी.
अने राजाने मिथ्या घा थयो त्यारे कोई वैद्य के पाटो बांध-
नार साचो मळ्यो नहि. मिथ्या पाटो बांधनार पासे गयो
तेणे पैसो माग्यो, तो अनत साचा खजाना धन्या ज रह्या.
एर पैसो पण राजाने मळ्यो नहि, कोई पण सत्य साधन
राजानां दुःखनो नाश करवामां समर्थ थयुं नहि; किन्तु
मिथ्या मुनिप मिथ्या जडी (बुटी) दईने मिथ्या दुःखनो
नाश कर्यो. एवी रीतिनां स्वप्न सर्जने अनुभवसिद्ध छे.
जाग्रत पदार्थनो स्वप्नमां कोईने कदा पण उपयोग थतो नथी.
तेम मिथ्या जे संसारदुःख तेनो नाश (चेतननी अपेक्षाथी)
मिथ्या वेदगुरुथी थाय छे. साचा वेदगुरु अपेक्षित नथी.

२३१. जेम मरस्थल(क्षांजना)नां मिथ्या जलथी तृपानो

‘નાશ થાય નહિ; તેમ મિથ્યા વેદગુરથી સંસારદુઃખનો નાશ થાય નહિ; અને મિથ્યા વેદગુર માનીને સંસારદુઃખનો તે ‘ઓનાથી નાશ અંગીકાર કરશે, તો મરુમૂમિના જલથી પણ ‘તૃપાનો નાશ થવો જોઈયે,’ એ શંકા શિષ્યે કરી હતી તેનું સમાધાન.

ચોપાઈ.

યદપિ મિથ્યા મરસ્થલપાણી, તેથી તૃપા મટાડોં ન જાણી; તદપિ તવ દૃષ્ટાન્ત વિપમ છે, જો વેમાં સત્તાભેદ જ છે. ૧૪૭.

ટીકા:—યદપિ મિથ્યા જે મરુમૂમિનું પાણી તેથી કોઈપણ તૃપા મટાડી નથી, અને મિથ્યા ગુરુવેદથી દુઃખના નાશની પેટે, મિથ્યા જલથી તૃપાનો નાશ થવો જોઈયે, અને તૃપાનો નાશ થતો નથી; તેમ મિથ્યા ગુરુવેદથી સંસારનો નાશ વને નહિ. ‘તદપિ’, નામ તો પણ, તારું દૃષ્ટાન્ત વિપમ છે. કેમકે, ‘વેમાં’ નામ મરસ્થલના જલમાં અને તૃપા-પ વેમાં, સત્તાનો ભેદ છે, તે જુવો. ૧૪૭.

૨૩૨. ત્રિવિધા સત્તા=વિદ્યમાનતા.

ચોપાઈ.

સૈમસત્તા, ભવદુઃખ, ગુરુ વેદ, ઇમ ગુરુ વેદ કરે ભવછેદ; આપસમાં સમસત્તા જેની, લખ્ય સાધકવાધકતા તેની. ૧૪ .

૧૫૫. હર્ષા આ શકા છે:—‘સમસત્તાવાલા પદાર્થ જ પરસ્પર સાધક વાધક છે,’ એ નિયમ ઘટિત છે નહિ. કિન્તુ વિપમસત્તાવાલા પદાર્થો પણ કઈક પરસ્પર સાધક વાધક હોય છે. કેમકે, સર્વત્ર આતેપની અધિષ્ઠાનથી વિપમસત્તા છે, તે (આરોવ)ની સાધકતા (કારણતા) અધિષ્ઠાનમાં છે, જેમ કલ્પિતરજતનુ અધિષ્ઠાન શુક્તિ છે. તે (શુક્તિ)ની વ્યાવહારિકસત્તા છે, રજતનો પ્રતિભાસસત્તા છે. તે પ્રતિભાસ-સત્તાવાલા રજનની સાધકતા (કારણતા) શુક્તિમાં છે, કિંવા જગતેનું અધિષ્ઠાન બ્રહ્મ છે, તેની પરમાર્થ-સત્તા છે, અને જગત્ની વ્યાવહારિકસત્તા છે. તે વ્યાવહારિકસત્તાવાલા જગત્ની સાધકતા બ્રહ્મમાં છે. એથી વિપમસત્તાવાલું પણ સાધક હોય છે. અને અન્ત,કરણની શુક્તિરૂપ શુક્તિના યથાર્થ શાનેરી

ટીકા:—મથદુઃખ અને ગુરુવેદની 'સમસત્તા' નામ પરસત્તા છે; એથી ગુરુવેદથી મથદુઃખનો છેદ થાય છે. જેમની પરસ્પરમાં સમસત્તા હોય છે, તેઓની પરસ્પરમાં સાધકતા અને વાધકતા હોય છે. જેમ સૃષ્ટિકા અને ઘટની સમસત્તા છે, એથી સૃષ્ટિકા ઘટની સાધિકા છે; અગ્નિ અને ફાટની સમસત્તા છે ત્યાં અગ્નિ ફાટનો વાધક છે. [સાધક નામ કારણ અને વાધક નામ નાશક.] મસ્થલના જલની અને તૃપાની સમસત્તા નથી; એથી મસ્થલનું જલ તૃપાનું વાધક નથી. ૧ સ્યાનમાં આ રહસ્ય છે:—ચેતનમાં પરમાર્થસત્તા છે, અને જ્ઞાનસહિત રજતનો વાધ થાય છે. ત્યા જ્ઞાનસહિત રજતની પ્રતિભાસ-સત્તા છે, અને શુક્તિના જ્ઞાનની વ્યાવહારિકસત્તા છે; એથી વિપમસત્તાવાલું પળ વાધક હોય છે. તેથી 'વિપમસત્તાવાલા પદાર્થ પરસ્પરમાં સાધકવાધક હોય નહિ,'—૧ નિયમ અસંગત છે.

૧(શકા)નું આ સમાધાન છે.—કેવલ (શુદ્ધ) શુક્તિ કિવા બ્રહ્મ, કમચી, રજતની કિવા જગત્ની વચ્ચનાનાં અધિગ્ઠાન (=વિવર્તિતઉપાદાનકારણ) છે નહિ. કિન્તુ તૂલાવિદ્યાસહિત શુક્તિ રજતનું અધિગ્ઠાન છે; અને મૂલાવિદ્યાસહિત બ્રહ્મચેતન જગત્નું અધિગ્ઠાન છે. કહિં 'વિશેષણના ધર્મનો ધિશિષ્ટમાં વ્યવહાર થાય છે,'—૧ નિયમથી પ્રાતિમાસિક તૂલાવિદ્યાસહિત શુક્તિ 'પ્રાતિમાસિક' કહેવાય છે; અને વ્યાવહારિકમૂલાવિદ્યા સહિત બ્રહ્મચેતન પળ વ્યાવહારિક કહેવાય છે. યદ્યપિ હહાં અગ્નિયા 'ઉપાધિ' છે, વિશેષણ નથી; તથાપિ અવિવેકી જનોની દષ્ટિએ વિશેષણની પેટે પ્રતીત થાય છે, એથી 'વિશેષણ' કહેવાય છે. એથી જ તે અવિદ્યાના ધર્મ-પ્રાતિમાસિકતા અને વ્યાવહારિકતા-(તેમનો) પોતાનાં વિશેષ્ય (આશ્રય જે) શુક્તિ અને બ્રહ્મ તેમો વ્યવહાર થાય છે. એથી હહાં વિ પ મ-સત્તા-વાલું સાધક નથી પળ સમ-સત્તાવાલું જ સાધક છે.

અને પંચાદિકાકારની રીતિએ મૂલ અવિદ્યાથી મિત્ર તૂલ-અવિદ્યા નથી, એથી તેની નિવૃત્તિ (વાધ) શુક્તિના જ્ઞાનેકરી થાય નહિ; કિન્તુ બ્રહ્મજ્ઞાનેકરી થાય છે. પરંતુ વ્યાવહારિક અન્ત-કરણની વૃત્તિરૂપ શુક્તિના યથાર્થ જ્ઞાનેકરી શુક્તિનિત મૂલાવિદ્યાનો તિરસ્કાર થાય છે. (વાધ નથી યતો.) તેથી તેનાં કાર્ય જ્ઞાનસહિત રજતનો પળ તિરસ્કાર થાય છે; એથી હહાં વિપમસત્તાવાલું વાધક નથી ૧ (મૂલમયમોના) પ્રસંગતુભારી સમાધાન છે. પં. પી. પુ.

ચેતનથી ભિન્ન જે મિથ્યા પદાર્થ, તેમાં જે પ્રકારની સત્તા છે:-એક તો વ્યવહારસત્તા છે અને વીજી પ્રતિભાસસત્તા છે.

૨૨૩. (વ્યાવહારિકસત્તાં.)

જે પદાર્થનો બ્રહ્મજ્ઞાનવિના વાધ થાય નહિ, કિન્તુ બ્રહ્મજ્ઞાનથી જ વાધ થાય, તે પદાર્થમાં વ્યવહારસત્તા કહેવાય છે. તે વ્યવહારસત્તા ઈશ્વરસૃષ્ટિમાં છે. કેમકે દેહઇન્દ્રિયાદિ પ્રપંચ જે ઈશ્વરસૃષ્ટિ, તેનો બ્રહ્મજ્ઞાનવિના વાધ થાય નહિ. બ્રહ્મજ્ઞાનથી જ વાધ થાય છે. યદ્યપિ ઈશ્વરસૃષ્ટિના પદાર્થોનો બ્રહ્મજ્ઞાનવિના નાશ તો થાય છે પણ સ્વરો; પરંતુ બ્રહ્મજ્ઞાનવિના વાધ થાય નહિ. [અપરોક્ષમિથ્યા-નિશ્ચયનું નામ વાધ છે.] તે અપરોક્ષમિથ્યા-નિશ્ચય ઈશ્વરસૃષ્ટિના પદાર્થોમાં બ્રહ્મજ્ઞાનથી પ્રથમ (પૂર્વ) કોઈને થાય નહિ, બ્રહ્મજ્ઞાનથી અનંતર જ થાય છે. યથી (શુદ્ધ ચેતનને આચ્છાદન કરનારી) મૂલ- (કારણ) અવિદ્યાનાં કાર્ય જે જાગ્રત્ત્વા પદાર્થ,-ઈશ્વરસૃષ્ટિ,- તેમાં વ્યવહારસત્તા છે. જન્મ, મરણ, ધંધ, મોક્ષ આદિક વ્યવહારને સિદ્ધ કરવાવાળી જે સત્તા નામ હોયું (વિદ્યમાનતા), તે વ્યવહારસત્તા કહેવાય છે.

૨૩૪. (પ્રાતિભાસિકસત્તાં)

અને બ્રહ્મજ્ઞાનવિના જ જેઓનો વાધ થાય તે પદાર્થોમાં પ્રતિભાસસત્તા કહેવાય છે. જેમ બ્રહ્મજ્ઞાનવિના જ, શુક્તિ, રજ્જુ, મગ્સ્યલ, આદિકોના જ્ઞાનથી, સ્વપ્ન, સર્વ, જલ, આદિકોનો વાધ થાય છે. તેમાં પ્રતિભાસસત્તા છે. [પ્રતિભાસ'

૧૫૬. જાગ્રત્ત્વા ઘટાદિપદાર્થની વ્યાવહારિકસત્તા ગણાય છે; અને તેનો વાધ સપ્તજ્ઞાનેશ્વરી થાય છે.

૧૫૭. શુધિરજ્જુતાદિની પ્રાતિભાસિકસત્તા ગણાય છે. અને તેનો વાધ તે ઓના અધિજ્ઞાનના સાક્ષાત્કારેશ્વરી થાય છે.

૧ તર્ગ.) મિથ્યા દુઃખ મિથ્યા સાવનથી જ હેદાય છે. ૩૧૧

નામ પ્રતીતિ માત્ર, જે 'મત્તા' નામ થયું- (ચિદમાનતા), તે પ્રતિભાસસત્તા કહેવાય છે.] (શુક્તિઆદિ જડ પદાર્થ ઉપહિત-ચેતનને આચ્છાદન કરનારી) મૂલાઅધિવાનાં કાર્ય,-રૂપા આદિ પદાર્થોનું પ્રતીતિ માત્ર જ હોયું (ચિદમાનતા) છે, યથી તેઓની પ્રતિભાસસત્તા છે.

૨૩૫. (પારમાર્થિકસેત્તા.)

જેનો વ્રણ કાલમાં વાધ થાય નહિ, તેનો પરમાર્થ-સત્તા કહેવાય છે. ચેતનનો વાધ કદા થાય નહિ. યથી પરમાર્થસત્તા ચેતનની છે.

૨૩૬. (વેદગુરુ અને સંસારદુઃખની સમાનસત્તા હોવાથી દુઃખનો નાશ થાય છે.)

૫ રીતિ ૫ વેદગુરુ અને સંસારદુઃખ, યઓની યક વ્યવહારસત્તા હોવાથી પરસ્પરમાં સમસત્તા છે, યથી મિથ્યા વેદગુરુથી મિથ્યા મધદુઃખનો નાશ વને છે. અને શુધાપિપાસા પ્રાણોના ધર્મ છે; પ્રાણ અને તેઓના ધર્મોનો વ્રહ્મજ્ઞાનવિના, વાધ થાય નહિ. યથી પિપાસાની વ્યવહારસત્તા છે. મરસ્થલના જલનો વ્રહ્મજ્ઞાનવિના જ, મરસ્થલના જ્ઞાનથી, વાધ હોવાથી, મરસ્થલના જલની પ્રતિભાસિકસત્તા છે. યથી પિપાસા અને મરસ્થલની સમસત્તા નહિ હોવાથી, તે જલથી પિપાસાનો નાશ થાય નહિ. ૫ પ્રકારે દાર્શન્ટવિષે વાધક વેદગુરુ અને વાધ્ય સંસારદુઃખ, તેઓની સત્તા યક છે. અને દૃષ્ટાંત વિષે જલ અને પિપાસાની સત્તાનો ભેદ છે, યથી દૃષ્ટાંત વિષે નાશ દાર્શન્ટના સમ નથી. ૧૫૮.

૧૫૮. વ્રહ્મની પારમાર્થિકસત્તા છે. અને તેનો વાધ ત્રિકાલમાં કદાપિ થતો જ નથી.

૨૩૭. શંકા.

(વાધમાં પૂર્વોક્ત સત્તાભેદ શા હેતુથી રાખ્યો છે ?)

ચોપાદ.

બ્રહ્મભિન્ન મિથ્યા સૌ માલ્યો, તેનો ભેદ શા કારણ રાલ્યો ?

ઉપજ્યો ય મજને સંદેહ, પ્રમુ કરો અવ છેદન તેહ. ૧૪૯.

ટીકા:—હે પ્રમુ ! બ્રહ્મથી ભિન્ન સર્વને આપ મિથ્યા કહો છો, તે મિથ્યા પદાર્થમાં શુક્તિરૂપ, રજ્જુસર્પ, મરુસ્થલજલ આદિકોનો બ્રહ્મજ્ઞાન વિના જ વાધ, અને સંસારદુઃખનો બ્રહ્મજ્ઞાનથી અનન્તર વાધ, ય ભેદ કયા હેતુથી રાલ્યો છો ? ૧૪૯.

૨૩૮. ઉત્તર.

(જેના અજ્ઞાનથી જે ઉપજે છે તેના જ્ઞાનથી તેનો વાધ ધાય છે.)

ચોપાદ.

સકલ અવિદ્યાકાર્ય જ મિથ્યા, શિષ્ય નહિ તેમાં કંઈ તથ્યા; જે અજ્ઞાનથી ઉપજે જેહ, ધાય વાધ તે જ્ઞાને તેહ. ૧૫૦.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! યદ્યપિ બ્રહ્મથી ભિન્ન સકલ, અવિદ્યાનુ કાર્ય છે તેથી, મિથ્યા છે, તેમાં કિંચિત્ પળ 'તથ્યા' નામ સત્ય નથી; પરંતુ જે ના અ જ્ઞા ન થી જે ઉ પ જે છે, તે ના જ્ઞા ન થી તે નો વા ધ ધા ય છે. શુક્તિ, રજ્જુ, મરુસ્થલ, આદિ-કોના અજ્ઞાનથી, રૂપ, સર્પ, જલ, આદિ ઉપજે છે, તેઓનો વાધ, શુક્તિ, રજ્જુ, મરુસ્થલ, આદિકોના જ્ઞાનથી ધાય છે; અને બ્રહ્મના અજ્ઞાનથી જે જન્મમરણાદિક સંસારદુઃખ ઉપજે છે, તેનો વાધ બ્રહ્મજ્ઞાનથી ધાય છે. ૧૫૦.

૨૩૯. શિષ્ય ઉવાચ.

(સંસાર કયા ક્રમેથી ઉપજે છે ?)

દ્વિતી

ભગવન્ ! બ્રહ્મ જ્ઞાનથી, જે ઉપજે સંસાર,
કયા ક્રમેથી ધાય તે, કહો મને નિર્ધાર.

अर्थ स्पष्ट. १५१.

२४०. श्री गुरुत्वाच्च.

(जगत्नी उत्पत्तिना क्रमनो अनियम.)

घोषाद्.

थाय स्वप्न ज्यम विनाक्रमथी, त्यम मिथ्या जग भासे भ्रमथी;
जाण्यो इच्छे तेनो क्रम जे, वसन निचांवे मरस्थल-जल ते.

अर्थ स्पष्ट. १५२.

इधो.

उपनिषदांमां बहु विधे, जगत्उत्पत्ति प्रकार;

अभिप्राय तेनो ज आ, - 'चेतन भिन्न असार.' १५३.

टीका.-यद्यपि उपनिषदांमां जगत्नी उत्पत्ति अनेक प्रकारे कही छे. छान्दोग्य(उपनिषद्)मां तो, - 'सत् रूप परमात्माथी अग्नि, जल, पृथ्वी, क्रमथी उपजे छे,' - ए कह्युं छे. अने तैत्तिरीयमां आकाश, वायु, अग्नि, जल अने पृथ्वी, क्रमथी थाय छे, ए रीतिप पंचभूतनी उत्पत्ति कही छे. अने कर्हि सर्वनी परमेश्वर उत्पत्ति करे छे, ए रीते क्रम विना पण उत्पत्ति कही छे. एम जगत्नी उत्पत्ति वेदमां अनेक प्रकारे कही छे. त्यां वेदना आवो अभिप्राय छे - जगत् मिथ्या छे, जो जगत् कइ पदार्थ होत तो तेनी उत्पत्ति अनेक प्रकारे वेद कहत नहि. अनेक प्रकारे जगत्नी उत्पत्ति कही छे, तेथी जगत्नी उत्पत्ति प्रतिपादनमां वेदना अभिप्राय नथी, किन्तु अद्वैत ब्रह्म लक्षावधाने, जगत्ना निषेध करवाअर्थे, मिथ्या जगत्ना कोई रीतिप आरोप कन्यो छे. दृष्टान्त.-जेम विना-दना निमित्त उडाववासारू दारूना हस्ती बनावे छे, तेनां काग-पूछडुं वामांचुंकां होय छे नो सुधां करवासारू यत्न नथी करता; तेम अद्वैतज्ञानना निमित्त प्रपंचने निषेधवासारू, प्रपंचना आरोप कन्यो छे. एथी वेदे, प्रपंचनो उत्पत्ति-क्रम, एक-

રૂપ કહેવામાં, યત્ન નથી કન્યો. પ્રપંચની ઉત્પત્તિ વેદે ઈકરૂપ નથી કહી, ઈથી આ જણાય છે:—વેદનો અભિપ્રાય પ્રપંચનિવેધનમાં છે; તેની ઉત્પત્તિમાં અભિપ્રાય નથી.

૨૪૧. અને સૂત્રકાર (વ્યાસનારાયણ) ભાષ્યકારે (શંકરે) બ્રહ્મસૂત્રના દ્વિતીય અધ્યાયમાં ઉત્પત્તિ કહેવાવાળાં શ્રુતિવચનનો વિરોધ દૂર કરીને જે ઈકરૂપે, તૈત્તિરીયશ્રુતિને અનુસાર ઉત્પત્તિમાં સર્વ ઉપનિષદોનો અભિપ્રાય કહ્યો છે, તે મંદજિજ્ઞાસુને નિમિત્ત કહ્યો છે. ઉત્પત્તિવાક્યોના પૂર્વે કહેલા અભિપ્રાયને જે નથી જાણતા, તે મંદજિજ્ઞાસુને, ઉપનિષદોમાં નાના પ્રકારે જગત્ની ઉત્પત્તિ દેખીને, પરસ્પરમાં ઉપનિષદોનો વિરોધ છે, ઈ મ્નાન્તિ થઈ જવાની. તેને દૂર કરવાને સર્વ ઉપનિષદોમાં ઈકરૂપેકરી જગત્ની ઉત્પત્તિ(ના)પ્રતિપાદનનો પ્રકાર (સૂત્રકાર અને ભાષ્યકારે) કહ્યો છે. અને જેને બ્રહ્મવિચારેકરી યથાર્થ જ્ઞાન ન હોય, તેને લંબેચિન્તનના નિમિત્ત પણ ઉત્પત્તિક્રમ કહ્યો છે. જે ક્રમથી ઉત્પત્તિ કહી છે, તેથી વિપરીતક્રમથી લયચિન્તન કરે, તે લયચિન્તનથી અઢેતમાં શુદ્ધિ સ્થિતા થાય છે. તે લયચિન્તનનો પ્રકાર પંચીકરણમાં ચાર્તિકકાર સુરેષ્વરાચાર્યે કહ્યો છે. આ ગ્રંથ ઉત્તમ જિજ્ઞાસુના નિમિત્ત છે. ઈથી જગત્ની ઉત્પત્તિ અને લયનો પ્રકાર નથી લઘ્યો. અને (આ) સાગરરૂપ છે, ઈથી સંક્ષેપે દેખાડે છે. શુદ્ધબ્રહ્મથી જગત્ની ઉત્પત્તિ થાય નહિ; કેમકે શુદ્ધબ્રહ્મ અસંગ છે અને અક્રિય છે; કિન્તુ માયાવિશિષ્ટ જે ઈશ્વર તેથી જગત્ની ઉત્પત્તિ થાય છે. ઈથી માયા અને ઈશ્વરનું સ્વરૂપ પ્રતિપાદન કરે છે. ૧૫૩.

૨૪૨. (માયા અને ईश्वરનું સ્વરૂપ.)

કવિત્ત.

જીવ ईश-ભેદહીન, ચેતનસ્વરૂપમાંહી
 માયા, તે, અનાદિ, એક, સાન્ત તેને માનિયે;
 સતઽને અમ્તથી ચિલક્ષણ સ્વરૂપ તેનાં
 તેને જ અવિદ્યા ઽને. અજ્ઞાન જ વણાણિયે.
 સામાન્ય-ચેતન ન વિરોધી તેનું સાધક છે,
 વૃત્તિમાં આરુઢ વા વિરોધી વૃત્તિ જાણિયે;
 માયામાં આભાસ, અધિષ્ઠાન, અને માયા મઢી,
 ईશ સર્વજ્ઞ જગત્હેતુ જ પીઢાણિયે. ૧૫૪.

(માયાનું સ્વરૂપ.)

ટીકા:—જીવ-ईશ્વર-ભેદરહિત જે શુદ્ધચેતન તેને આશ્રિતા
 માયા છે. તે માયા અનાદિ નામ આદિરહિત છે. [આદિ
 નામ ઉત્પત્તિનું છે.] જો માયાની ઉત્પત્તિ અંગીકાર કરિયે
 તો, માયાના કાર્યપ્રપંચથી તો, પુત્રથી પિતાની (ઉત્પત્તિની)
 પેઠે, માયાની ઉત્પત્તિ થને નહિ; ચેતનથી જ માયાની
 ઉત્પત્તિ માનવી પડશે. ત્યાં જીવભાવ અને ईશ્વરભાવ તો
 માયાનાં કાર્ય છે; માયાની સિદ્ધિ થયાવિના જીવ-ईશ્વરનું
 સ્વરૂપ અસિદ્ધ છે. યથી જીવચેતનથી વા ईશ્વરચેતનથી માયાની
 ઉત્પત્તિ કહેવી અસંભવ છે. અને શુદ્ધચેતન અસંગ છે,
 અક્રિય છે, નિર્વિકાર છે; તેથી માયાની ઉત્પત્તિ માને, (તે)
 વિકારી થશે. અને શુદ્ધચેતનથી માયાની ઉત્પત્તિ થાય તો
 મોક્ષદશાવિષે માયા પુનઃ ઉપજશે; યથી મોક્ષનિમિત્ત સાધન
 નિષ્ફલ થશે. ય રીતિય માયા ઉત્પત્તિરહિતા છે, યથી
 અનાદિ છે, અને એક છે, (અને) 'સાન્ત' નામ અંતવાઢી છે;
 (કારણ) જ્ઞાનેકરી માયાનો અન્ત થાય છે.

અને (માયા) સત્-અસત્થી વિલક્ષણા છે. [જેનો ત્રિકાલ-માં વાધ થાય નહિ તે સત્ કહેવાય છે. એવું ચેતન છે.] માયાનો જ્ઞાનથી વાધ થાય છે એથી સત્થી (તે) વિલક્ષણ છે. [જેનો ત્રિકાલમાં પ્રતીતિ થાય નહિ તે શશાઙ્ગ, વંધ્યાપુત્ર, આકાશફૂલ, આદિક અસત્ કહેવાય છે.] જ્ઞાનથી પૂર્વે માયા અને ને(માયા)નું કાર્ય પ્રતીત થાય છે. જાગ્રત્વિપે 'હું અજ્ઞાની છું, બ્રહ્મને નથી જાણતો,' એ રીતિએ માયા પ્રતીત થાય છે. અને સ્વપ્નવિપે જે નાના પદાર્થ પ્રતીત થાય છે, તેઓનું ઉપાદાનકારણ માયા છે. અને સુષુપ્તિથી અનંતર અજ્ઞાનની આ રીતિએ સ્મૃતિ થાય છે: -'હું સુખે સૂતો હતો, કશું પણ 'જાણતો ન હતો.' તે સ્મૃતિ અજ્ઞાતવસ્તુની થાય નહિ. એથી સુષુપ્તિમાં અજ્ઞાનનું ભાન થાય છે; તે અજ્ઞાન અને માયા એક જ છે, તેઓના ભેદ નથી. એ પ્રકારે પ્રણે અવસ્થાવિપે માયાની પ્રતીતિ થાય છે; એથી અસત્થી વિલક્ષણા છે. એ રીતિએ સત્-અસત્થી વિલક્ષણા જે માયા તેનું કાર્ય પણ સત્-અસત્થી વિલક્ષણ છે. [સત્-અસત્થી વિલક્ષણને જ અદ્વૈતમતમાં મિથ્યા કહે છે. અને અનિર્વચનોય પણ કહે છે.] એથી માયા અને તેનાં કાર્યથી દ્વૈતની સિદ્ધિ થાય નહિ. જેમકે જેમ ચેતન સત્રૂપ છે, તેમ માયા અને તેનું કાર્ય સત્રૂપ હોય તો દ્વૈત થાય; તે માયા અને તેનું કાર્ય સત્-અસત્થી વિલક્ષણ હોવાથી મિથ્યા છે. મિથ્યા પદાર્થથી દ્વૈત થાય નહિ. જેમ સ્વપ્નના પદાર્થ મિથ્યા છે, તેઓથી દ્વૈત થાય નહિ.

૨૪૩. (સ્વાશ્રય સ્વવિષય અજ્ઞાન.)

જીવઈશ્વરવિભાગરહિત શુદ્ધ બ્રહ્મને આશ્રિતા માયા છે, અને તે શુદ્ધ બ્રહ્મને જ આચ્છાદન કરે છે. જેમ ગૃહને આશ્રિત અંધકાર ગૃહને આચ્છાદન કરે છે. એ પક્ષને સ્વાશ્રયસ્વવિ-

પર્યપક્ષ કહે છે. 'સ્વ' નામ શુદ્ધ વ્રત્ત જ, 'આશ્રય,' અને 'સ્વ' નામ શુદ્ધ વ્રત્ત જ, 'વિષય,' નામ માયાયાં આચ્છાદિત છે [અર્થ આ, -ઢંકાયલું છે.] સંક્ષેપ-શારીરક, (પંચ-પાદિકા) ચિત્તરણ, વેદાન્તમુક્તાવલિ, અદ્વૈતસિદ્ધિ, અદ્વૈત દીપિકા, આદિકગ્રંથકારોણ સ્વાધ્યયસ્વવિષય જ અજ્ઞાન અંગી-કાર કન્યું છે.

૨૫૪. (અન્યાશ્રય અન્યવિષય અજ્ઞાન.)

અને વાચસ્પતિનું આ મત છે:-અજ્ઞાન જીવને આશ્રિત છે, અને વ્રહ્મને વિષય કરે છે (નામ ઢાંકે છે). 'હું અજ્ઞાની 'વ્રહ્મને નથી જાણતો', એ પ્રતીતિથી, 'હું' શબ્દનો અર્થ જીવ, 'અજ્ઞાની' કહેવાયાં અજ્ઞાનનું 'આશ્રયમાન' (તે જીવને) થાય છે; અને 'વ્રહ્મને નથી જાણતો' એથી અજ્ઞાનનાં વિષય વ્રહ્મ પ્રતીત થાય છે. એ રીતિએ અજ્ઞાન, જીવને આશ્રિત અને વ્રહ્મને વિષય નામ આચ્છાદન કરે છે. તે અજ્ઞાન એક નહિ, કિન્તુ અનંત છે. કેમકે જો એક અજ્ઞાન માને તો, એક અજ્ઞાનની, એકના જ્ઞાનથી, નિવૃત્તિ થવાથી, અન્યોને અજ્ઞાન અને તેનું કાર્ય સંસાર પ્રતીત નહિ થવો જાંરહે. જો એમ કહે કે, -આજ સુધી કોઈને જ્ઞાન થયું નથી, તો આગલ પળ કોઈને જ્ઞાન નહિ થશે; એથી શ્રવણાદિ સાધન નિષ્ફલ થશે. એથી અનંત જીવોને આશ્રિત અજ્ઞાન અનંત છે. અનંત જીવોનાં અનંત અજ્ઞાન-કલ્પિત, શેશ્વર અનંત અને વ્રહ્માંડ અનંત છે. જે જીવને જ્ઞાન થાય તેનું અજ્ઞાન, શેશ્વર, અને વ્રહ્માંડ(એ ત્રણે)ની નિવૃત્તિ

૧૬૦. જેમ અંગુણવતે આંતરને ઢાકિએ એટલે વસ્તુ દેલાહુ નથી. તે અંગુળો આંતરપાસે છે અને આંતરને આશ્રિત છે અને આકાશને વિષય કરે છે નામ 'ઢાકે છે' -દેલાવા દેતો નથી. તેમ અજ્ઞાન જીવની પાસે છે અને તેને આશ્રિત છે, અને વ્રહ્મને વિષય કરે છે=વ્રહ્મને ઢાકે છે.

પાય છે. જેને જ્ઞાન નહિ-થાય તેને વંધ રહે છે:—૧ વાચસ્પતિનું
 ૧૩ છે, તે સમીચીન નથી. કેમકે:—

૨૪૫. (અજ્ઞાન એક છે.)

‘ઈશ્વર જીવના અજ્ઞાનથી કલ્પિત છે’ એ કહેવું શ્રુતિ,
 સ્મૃતિ, પુરાણથી વિરુદ્ધ છે. ઈશ્વર અનંત અને જીવજીવમાં
 સૃષ્ટિનો ભેદ એ પણ વિરુદ્ધ છે, એથી નાના અજ્ઞાન માનવાં
 એ અસંગત છે. અને નાના અજ્ઞાન માનીને ઈશ્વર અને સૃષ્ટિ
 એક માનિયે તો વને નહિ. કેમકે, જીવ, ઈશ્વર, પ્રપંચ, (સૃષ્ટિ)
 અજ્ઞાનકલ્પિત છે. અનંત અજ્ઞાન માન્યેથી, એક એક અજ્ઞાન-
 કલ્પિત જીવની પેઠે ઈશ્વર અને પ્રપંચ પણ અનંત જ થશે.
 એથી જ વાચસ્પતિએ અનંત ઈશ્વર અને અનંત સૃષ્ટિ કહી છે.
 એથી અજ્ઞાન એક છે, એ મત સમીચીન છે.

૨૪૬. (સ્વાશ્રય સ્વવિષય અજ્ઞાન છે.)

તે એક અજ્ઞાન પણ જીવને આશ્રિત નથી, કિન્તુ
 શુદ્ધબ્રહ્મને આશ્રિત છે. કેમકે જીવભાવ અજ્ઞાનનું કાર્ય છે. તે
 અજ્ઞાન સ્વતંત્ર કદિ પણ રહે નહિ. એથી નિરાશ્રય અજ્ઞાનથી
 તો જીવભાવ વને નહિ. પ્રથમ કોઈને આશ્રિત અજ્ઞાન હોય,
 ત્યારે અજ્ઞાનનું કાર્ય જીવભાવ થાય. જીવત્વની પેઠે ઈશ્વરતા

૧૬૧. ‘અજ્ઞાન એક છે,’ એનો આ અભિપ્રાય છે.—જેમ અંશરૂપ અંધકાર
 એક છે તેના અંશરૂપ નાના અંધકાર પ્રતિગ્રહવિષે સ્થિત છે;—(તેમાંથી) જે ગૃહમાં
 દીપક થાય તે ગૃહનો અંશરૂપ અંધકાર નાશ થાય છે; તેમ અંશી (રૂપ) અજ્ઞાન
 એક છે, તેવા અંશરૂપ નાના અજ્ઞાન પ્રતિબન્ત:કરણદેશમાં ગત સાધિચેતન-વિષે
 સ્થિત છે;—(તેમાંથી) જે અન્ત:કરણદેશમાં જ્ઞાન થાય તે અન્ત:કરણ-દેશગત
 અજ્ઞાન અંશનો નાશ થાય છે, એથી એકને જ્ઞાન થાય તેથી સર્વને, અજ્ઞાન-
 તત્કાર્યની નિષ્ક્રિયાદ્વારા, મુક્તિ પ્રતીતિ થાય નહિ. એ રીતિએ એક અજ્ઞાને અંગીકાર
 કરે પણ બંધમોક્ષની વ્યવસ્થા વને છે. અને ‘જીવના અજ્ઞાને કલ્પિત ઈશ્વર
 અનન્ત છે અને જીવજીવમાં સૃષ્ટિનો ભેદ છે,’ એ શ્રુતિસ્મૃતિપુરાણથી વિરુદ્ધ
 વક્તવ્ય અંગીકાર કરવો પણ નથી પડતો. પં. પી. પુ.

પણ અજ્ઞાન(માયા)નું કાર્ય છે. તે(ઈશ્વર)ને આશ્રિત પણ અજ્ઞાન નથી, કિન્તુ શુદ્ધબ્રહ્મને આશ્રિત અનાદિ અજ્ઞાન છે. અનાદિ જે ચેતન અને અજ્ઞાન તેઓનો સંબંધ પણ અનાદિ છે. ચેતન-અજ્ઞાનના અનાદિ સંબંધથી, જીવભાવ ઈશ્વરભાવ પણ અનાદિ છે. પરંતુ જીવભાવ અને ઈશ્વરભાવ અજ્ઞાનને અધીન છે, યથી (તે) અજ્ઞાનનું કાર્ય કહેવાય છે. યદ્યપિ 'હું અજ્ઞાની છું,' એ રીતિએ જીવને આશ્રિત અજ્ઞાન પ્રતીત થાય છે; તથાપિ શુદ્ધબ્રહ્મને આશ્રિત જે અજ્ઞાન તેનું જીવને 'હું અજ્ઞાની છું,' એ અભિમાન થાય છે. અને જીવ અજ્ઞાનનું કાર્ય છે, યથી અજ્ઞાનનો અધિષ્ઠાનરૂપ આશ્રય, જીવ વને નહિ. કિન્તુ શુદ્ધ-બ્રહ્મ જ અજ્ઞાનનું અધિષ્ઠાનરૂપ આશ્રય છે. શુદ્ધબ્રહ્મ અધિષ્ઠાનને આશ્રિત જે અજ્ઞાન, તે(અજ્ઞાન) તે બ્રહ્મને જ આચ્છાદન કરે છે. ત્યારપછી 'હું અજ્ઞાની છું,' એ રીતિએ અજ્ઞાનનો અભિ-માનીરૂપ આશ્રય જીવ થાય છે. એ પ્રકારે સ્વા શ્રય સ્વ વિ પ-ય અ જ્ઞા ન છે.

૨૪૭. તે અજ્ઞાન યદ્યપિ એક છે અને જ્ઞાનથી નિવૃત્ત થાય છે, પરંતુ જે અંતઃકરણમાં અજ્ઞાન હોય, તે અંતઃકરણઅવ-ચ્છિન્ન ચેતનમાં સ્થિત જે અજ્ઞાનનો અંશ તેની નિવૃત્તિ જ્ઞાનથી થાય છે, તે જ મુક્ત થાય છે. જે અંતઃકરણમાં જ્ઞાન ન હોય, ત્યાં અજ્ઞાનનો અંશ રહે છે, અને વંધ રહે છે. એ રીતિએ એક અજ્ઞાન પક્ષમાં વંધ મોક્ષ વ્યવહાર વને છે. અને કોઈને વાચસ્પતિની રીતિએ નાનાઅજ્ઞાનવાદ જ બુદ્ધિમાં પ્રવેશ હોય તો, તે પણ અદ્વૈત જ્ઞાનનો ઉપાય છે. તેના સંબંધમાં કંઈ આગ્રહ નથી. જે રીતિએ જિજ્ઞાસુને અદ્વૈતગોષ્ઠ થાય તે રીતિએ બુદ્ધિની સ્થિતિ કરે. શુદ્ધબ્રહ્મને આશ્રિત જે માયા તેને અ-વિ દ્યા અને અ જ્ઞા ન કહે છે. [અચિન્ત્યશક્તિ અને યુક્તિને

સહન ન કરે યથી માયી કહે છે.] વિદ્યાથી નાશ થાય છે યથી અવિદ્યા કહે છે. સ્વરૂપનું આચ્છાદન કરે છે યથી અજ્ઞાન કહે છે. જે ચેતનને આશ્રિત (૫ માયા) છે તે સામાન્યચેતને તેનું વિરોધી નથી; કિન્તુ સામાન્યચેતન માયાનું સાધક છે; (અને) સત્તા સ્ફુરણ દે છે. અને વૃત્તિમાં 'આરૂઢ' નામ સ્થિત જે ચેતન અથવા ચેતનસહિત વૃત્તિ તેની (અજ્ઞાનની) વિરોધિની જાણિયે. કથિતના ત્રણ પાદથી માયાનું સ્વરૂપ કહ્યું.
૨૪૮. (ईश्वरનું સ્વરૂપ.)

'માયામાં આભાસ' ઇત્યાદિ (ગત ૨૪૨ ના અંકમાંના કથિતના) ચતુર્થ પાદથી ईश्वરનું સ્વરૂપ કહે છે:-શુદ્ધસત્ત્વગુણસહિત માયા (૧), અને માયાનું અધિષ્ઠાન ચેતન (૨), (અને) માયામાં આભાસ (૩), ૫ ત્રણ મઠ્ઠે સતે તે ईश्वર કહેવાય છે તે ईश्वર સર્વજ્ઞ છે; તે જ જગતનો 'હેતુ' નામ કારણ છે.
(ઉપાદાન અને નિમિત્ત ૫ વે પ્રકારનાં કારણ.)

કારણ વે પ્રકારનાં હોય છે:-૧૬૨ તો ઉપાદાનકારણ હોય છે. અને ૧૬૩ નિમિત્તકારણ હોય છે. જેનો કાર્યના સ્વરૂપમાં પ્રવેશ હોય, અને જે વિના કાર્યની સ્થિતિ હોય નહિ, તે ૩-

૧૬૨. अव्यक्तनाम्नी परमेशशक्तिरनाद्यविद्या त्रिगुणात्मिका परा ।
कार्यानुमेया सुधीयेव माया यया जगत्सर्वमिदं प्रसूयते ॥ ११० ॥
वि. च.

૧૬૩. જેમ સામાન્ય અગ્નિ, જલ અને વૃક્ષીનાં સર્વ કાર્યોમાં ગુત રહેલો છે, તે સામાન્ય અગ્નિ અંધકારનો વિરોધી યા નાશક નથી. પરંતુ સંપર્ષણદ્વારા વિશેષરૂપે થયે સતે તે અગ્નિ અંધકારનો વિરોધી યા નાશક છે. તેમ સામાન્યચેતન માયાનું વિરોધી નથી, પરંતુ જ્ઞાનેકરી પ્રકટિત વૃત્તિઆરૂઢ વિશેષચેતન માયાનું વિરોધિસાધક છે.

૧૬૪. ઉપાદાનકારણને નૈયાયિકો સમસાધિકારણ કહે છે. કાર્યઅભિપ્રકારણ, કાર્યાન્વિતકારણ, કાર્યની ઉત્પત્તિ સ્થિતિ અને સ્વ, ૫ ત્રણેનું જે કારણ (નામ કાર્યથી નિયત અધ્યવહિત પૂર્વવૃત્તિ) તે 'ઉપાદાનકારણ' કહેવાય છે.

પાદાન-કારણ કહેવાય છે. જેમ મૃત્તિકા ઘટનું ઉપાદાન-કારણ છે -ઘટના સ્વરૂપમાં તે(મૃત્તિકા)નો પ્રવેશ છે, અને મૃત્તિકા વિના ઘટની સ્થિતિ નથી.

જેનો સ્વરૂપમાં પ્રવેશ નથી, કિન્તુ મિશ્ર સ્થિત હોઈને કાર્યને કરે, અને જેના નાશથી કાર્ય વિગઢે નહિ, તે 'નિમિત્ત'-કારણ કહેવાય છે જેમ કુંભકાર, દંડ, ચક્ર આદિક ઘટનાં નિમિત્તકારણ છે. ઘટના સ્વરૂપમાં તેઓનો પ્રવેશ નથી, ઘટથી 'મિશ્ર' નામ કિનારે સ્થિત હોઈને ઘટની ઉત્પત્તિ કરે છે. અને ઉત્પત્તિ થયા પછી કુંભકાર, દંડ, ચક્ર આદિકોના નાશથી ઘટ વિગઢે નહિ. એ રીતિએ ઉપાદાન અને નિમિત્ત બે પ્રકારનાં કારણ હોય છે.

૨૪૯. અને જગતનું ઉપાદાન અને નિમિત્ત બંને પ્રકારથી ઈશ્વર જ કારણ છે. જેમ એક જ ઝર્ણનામિ (કરોલ્લિયો) જાલાંનું ઉપાદાન અને નિમિત્ત કારણ છે. અને જો આમ

૧૬૫. કાર્યની ઉત્પત્તિમાત્રમાં જે કારણ તે 'નિમિત્તકારણ' કહેવાય છે. નિમિત્તકારણ અનેક પ્રકારના હોય છે.

૧૬૬. ઉપાદાનં પ્રપચસ્ય મૃદ્ધાણ્ડસ્યેવ કથ્યતે ।

અજ્ઞાનં ચેતિ વેદાન્તૈસ્તસ્મિન્નષ્ટે ક વિશ્વતા ॥ ૧૪ ॥

અપરોક્ષાનુભૂતિ.

મૃત્તિકાના પાત્રનું મૃત્તિકા (ઉપાદાનકારણ) છે, તેમ આ પ્રપચનું અજ્ઞાન (માયા) અને (તેમાનો ચેતનભાગ ઈશ્વર) ઉપાદાન (કારણ) છે, એમ વેદાન્તો(ઉપ-નિપદો)બને કહેવાય છે. તે અજ્ઞાન નષ્ટ થયે સતે વિશ્વતા (પ્રપચ=જીવ-જગત્-ઈશ્વર=માવ) ક્યાં !

એનો આ ભાવ છે:-કેવલ ચેતનભાગ નિર્વિકાર છે (તેમાં કારણતા હોય નહિ), તેથી તે જગતનું કારણ અને નહિ. કેવલ માયા પણ જઠ્ઠ હોવાથી જગતનું કારણ બને નહિ તેથી ઉભય (માયા અને ચેતન અર્થાત્ ઈશ્વર) મિલીને જ જગતનું કારણ થાય છે. 'સત્યાનૃતે મિથુનીકરોતિ' એમ શ્રુતિ છે.

જ્યા પ્રજ્ઞ પ્રપચનું ઉપાદાનકારણ કહેવાય છે ત્યા પૂર્વ અવસ્થાના પરિત્યાગ વિના અવસ્થાતરપ્રાપ્તિ લક્ષણ છે જેનું, એવું 'વિચરિત્તિ ઉપાદાન-કારણ' ગણવું.

૩૭૨ મધ્યમાધિકારિસાધનનિરૂપણ. જીવનું સ્વરૂપ. (વિચારસાગર.

કહિય કે:-ઝર્ણનામિનુ જડ-શરીર જાલાંનું ઉપાદાન કારણ, અને ઝર્ણનામિના શરીરમાં 'જે' ચેતનભાગ તે નિમિત્ત-કારણ છે; યથી એક ઈશ્વરને નિમિત્તકારણ અને ઉપાદાનકારણ માનવામાં ફરિ (ઉક્ત) દૃષ્ટાન્ત(નું) સાદૃશ્ય) નથી. (૫ શ્લોક થાય) તો ઝર્ણનામિ પેઠે, ઈશ્વરનું શરીર (જે) જડમાયા, (તે) જગતનું ઉપાદાન કારણ, અને ચેતનભાગ નિમિત્તકારણ (એમ ગણવું). ૫ રીતિય ૫૪ જ ઈશ્વર, જગતનું ઉપાદાન અને નિમિત્તકારણ છે. તેમાં ઝર્ણનામિ(કરોલિયા)નું દૃષ્ટાન્ત અને મુખ્ય દૃષ્ટાંત સ્વંપ્રે છે. જે સમયે જીવોનાં કર્મ ફલ દેવાને સંમુખ હોય નહિ ત્યારે પ્રલય થાય છે. અને (જે સમય) જીવોનાં કર્મ, ફલ દેવાને સંમુખ હોય, ત્યારે સૃષ્ટિ થાય છે. ૫ રીતિય જીવકર્મને અધીન સૃષ્ટિ છે. યથી,

૨૫૦. (જીવનું સ્વરૂપ.)

દ્વયો

મલિનસત્ત્વ અજ્ઞાનમાં જે ચેતન-આભાસ,

અધિષ્ઠાનયુત જીવ તે, કરે કર્મ-ફલ-આશ.

૧૫૫.

ટીકા:-(જે) રજોગુણ-તમોગુણને ડાવી લે તે 'શુદ્ધ સત્ત્વ-ગુણ' કહેવાય છે. અને (જે) રજોગુણ તમોગુણથી પોતે ડવાય તે 'મલિન સત્ત્વગુણ' કહેવાય છે. તે (૧) મલિન-સત્ત્વગુણસહિત અજ્ઞાનના અંશમાં જે ચેતનનો આભાસ, અને (૨) અજ્ઞાન, અને (૩) તેનું અધિષ્ઠાન કૂટસ્થ, ૫ ત્રણે મલ્લે સતે જીવ કહેવાય છે. તે જીવ કર્મ કરે છે, અને ફલની આશા કરે છે. ૧૫૫.

૧૬૭. સ્વપ્ન થાય છે ત્યારે જે પ્રપચની ઉત્પત્તિ ભાસે છે, તેનું ઉપાદાનકારણ અને નિમિત્તકારણ ૫ યે, મલિનસત્ત્વગુણ અધિષ્ઠાનપરિહિત સાક્ષિચેતન જીવ પોતે છે, તેમ આ વ્યાવહારિક જગતનું ઉપાદાન અને નિમિત્તકારણ—કિંવા 'અમિત્તનિમિત્તઉપાદાનકારણ—શુદ્ધસત્ત્વગુણમાયાઉપરિહિત' સાક્ષિચેતન—ઈશ્વર છે.

૨૫૧. (ઈશ્વરમાં વેપમ્ય-નેઘૃણ્ય-દોષ છે નહિ.)

તે જીવનાં કર્મને અનુસાર ઉચ્ચનીચભોગનિમિત્ત ઈશ્વર સૃષ્ટિ રચે છે. યથી ઈશ્વરમાં વિપમદષ્ટિ અને ધૂરતા નથી. અને જો આમ કહિયે:-સર્વથી પ્રથમ સૃષ્ટિથી પૂર્વ કર્મ ન હતાં, અને પ્રથમ સૃષ્ટિમાં ઉચ્ચ-નીચ શરીર અને ભોગ ઈશ્વરે રચ્યાં છે; યથી ઈશ્વર વિપમ દષ્ટિ છે. તે વને નાહ. કેમકે સંસાર (પ્રવાહરૂપે) અનાદિ છે. ઉત્તરઉત્તર સૃષ્ટિમાં પૂર્વપૂર્વસૃષ્ટિનાં કર્મ હેતુ છે. સર્વથી પ્રથમ કોઈ સૃષ્ટિ નથી, યથી ઈશ્વરમાં દોષ નથી.

૨૫૨. (જગત્ની ઉત્પત્તિ)

કવિત.

જીવોનાં પૂર્વસૃષ્ટિનાં કર્મઅનુસાર, ઈશ-
 ઇચ્છા થાય, -'જીવભોગ જગ ઉપજાવિયે.'
 નભ, વાયુ, તેજ, જલ, ભૂમિ, ભૂત રચ્યાં તહાં
 શબ્દ, સ્પર્શ, રૂપ, રસ, ગંધ, ગુણ ગાદયે;
 સત્યઅંશ પાંચતણો મઝી ઉપજે છે સંત્રવ,
 રજોગુણઅંશ મઝી પ્રાણ તેમ જાણિયે;
 યક યક ભૂત સત્યઅંશ જ્ઞાનેન્દ્રિય રચે,
 કર્મેન્દ્રિય રજોગુણ અંશથી પ્રમાણિયે. ૧૫૬.

ટીકા:-જ્યારે જીવોનાં કર્મ, ભોગ દેવાથી ઉદાસીન થાય, ત્યારે પ્રલય થાય છે. પ્રલયમાં સર્વ પદાર્થોના સંસ્કાર માયામાં રહે છે. યથી જીવોનાં કર્મ યણ જે વાકી રહ્યાં હતાં; તે સૂક્ષ્મ થઈને માયામાં રહે છે. જ્યારે કર્મ, ભોગ દેવાને સમુલ્લ થાય છે, ત્યારે ઈશ્વરને આ ઇચ્છા થાય છે:-'જીવોના ભોગનિમિત્ત 'જગત્ ઉપજાવિયે.'

૨૫૩. (પંચમહાભૂત. સૂક્ષ્મસૃષ્ટિનિરૂપણ.)

ઈશ્વરની પૈવી ઇચ્છાથી માયા તમોગુણપ્રધાના થાય છે. તે તમોગુણપ્રધાનમાયાથી આકાશ, વાયુ, તેજ, જલ, ભૂમિ એ પંચભૂત રચ્યાં જાય છે. તે(પંચ)ભૂતોમાં ક્રમથી, શબ્દ, સ્પર્શ, રૂપ, રસ, ગંધ, એ પાંચ ગુણ થાય છે. માયાથી શબ્દસહિત આકાશની ઉત્પત્તિ. અને આકાશથી વાયુની ઉત્પત્તિ. વાયુ આકાશનું કાર્ય છે, પથી આકાશનો શબ્દગુણ વાયુમાં હોય છે, અને પોતાનો સ્પર્શ (ગુણ) હોય છે. વાયુથી તેજની ઉત્પત્તિ. અને તેજમાં આકાશનો શબ્દ અને વાયુનો સ્પર્શ હોય છે, તથા પોતાનો રૂપ(ગુણ) હોય છે. તેજથી જલની ઉત્પત્તિ. આકાશનો શબ્દ, વાયુનો સ્પર્શ, અને તેજનું રૂપ જલમાં હોય છે, તથા પોતાનો રસ(ગુણ) હોય છે. જલથી પૃથ્વીની ઉત્પત્તિ. અને આકાશનો શબ્દ, વાયુનો સ્પર્શ, તેજનું રૂપ, અને જલનો રસ પૃથ્વીમાં હોય છે, પોતાનો ગંધ (ગુણ) હોય છે. આકાશમાં પ્રતિધ્વનિરૂપ શબ્દ છે. વાયુમાં, શીશીશબ્દ અને ઉષ્ણ-શીત-કઠિનથી ઘિલક્ષણ સ્પર્શ છે. અગ્નિરૂપ તેજમાં, મુક્કુશબ્દ, અને ઉષ્ણ સ્પર્શ, અને પ્રકાશ રૂપ છે. જલમાં, ચુલ્ચુલ્ શબ્દ, શીત સ્પર્શ, શુક્લ રૂપ, અને મધુર રસ છે. [અને પૃથ્વીના સંબંધથી ક્ષાર તથા કટુ જલ પ્રતીત થાય છે, (પરંતુ) જલનો રસ મધુર જ છે તે મધુરતા, હરીતકી (હરદે) આદિક ભક્ષણ કરીને જલપાન કન્યાથી, પ્રકટ થાય છે.] પૃથ્વીમાં કટુકટુશબ્દ; ઉષ્ણશીતથી ઘિલક્ષણ કઠિન સ્પર્શ છે; શ્વેત, નીલ, પીત, રક્ત, હરિત આદિ રૂપ છે; મધુર, આમ્લ, ક્ષાર, કટુ, કપાય, તિક્ત રસ છે; અને મુગંધ અને દુર્ગંધ એ પ્રકારનો ગંધ છે. એ રીતિય આકાશમાં એક, વાયુમાં ઘે, તેજમાં ત્રણ, જલમાં ચાર, પૃથ્વીમાં પાંચ ગુણ છે. તે-

ઓમાં એક એક (ગુણ) પોતાનો છે અને અધિક કારણના (ગુણ) છે. અને સર્વનું મૂલકારણ ઈશ્વર છે, તેમાં માયા અને ચેતન બે ભાગ છે. સર્વ ભૂતમાં મિથ્યાત્વ માયાનું છે અને સત્તાસ્ફૂર્તિ ચેતનનાં છે. કવિતના બે પાદનો એ અર્થ છે.

૨૫૪. (અંતઃકરણ.)

પંચભૂતનો સત્ત્વગુણઅંશ મળીને, 'સત્ત્વ' નામ અંતઃકરણને ઉપજાવે છે. અંતઃકરણ જ્ઞાનનો હેતુ છે; અને જ્ઞાનની ઉત્પત્તિ સત્ત્વગુણથી અંગીકાર કરી છે. યથી અંતઃકરણ ભૂતોના સત્ત્વગુણનું કાર્ય છે. અને પંચભૂતોનાં કાર્ય-પંચજ્ઞાનઇન્દ્રિય-તે સર્વનું (અંતઃકરણ) સહાયક છે, યથી પંચભૂતોના મળેલા સત્ત્વગુણથી અંતઃકરણની ઉત્પત્તિ કહી છે. દેહની 'અંતર' નામ (અભ્યંતર) ખીતર છે, અને 'કરણ' નામ જ્ઞાનનું સાધન છે, યથી અંતઃકરણ કહેવાય છે. અને ભૂતોના સત્ત્વગુણનું કાર્ય છે, યથી અંતઃકરણનું 'સત્ત્વ' પણ નામ છે.

(અંતઃકરણની ચાર વૃત્તિઓ.)

અંતઃકરણનો જે પરિણામ તેને 'વૃત્તિ' કહે છે. તે અંતઃકરણની વૃત્તિ ચાર છે. પદાર્થના સાર અસાર સ્વરૂપને નિશ્ચય કરવાઘાઢી (નિશ્ચયાત્મિકા) વૃત્તિ 'બુદ્ધિ' કહેવાય છે; સંકલ્પવિકલ્પ (આત્મ) વૃત્તિ 'મન' કહેવાય છે; ચિન્તા(પરા-પરઅનુસંધાનઆત્મિકા)વૃત્તિ 'ચિત્ત' કહેવાય છે; 'અહં' (હું) યવી અભિમાન(આત્મિકા) વૃત્તિ 'અહંકાર' કહેવાય છે.

૨૫૫. (પંચપ્રાણ.)

પંચભૂતોના મળેલા રજોગુણઅંશથી પ્રાણની ઉત્પત્તિ યાય

૧૬૮. વૃત્તિનું યયાર્ય લક્ષણ આ છે:—'અસ્તિ' વ્યવહારનો હેતુ જે—(સુપ્તિમા) અધિધાનો અને (જાગ્રત્સ્વપ્નમા) અન્તઃકરણનો—પરિણામ, તે વૃત્તિ.

છે. તે પ્રાણ, ક્રિયાભેદથી અને સ્થાનભેદથી, પાંચ પ્રકારના છે. જેનું હૃદયસ્થાન, અને શુધાપિપાસા (લાવાપીથાની ઇચ્છારૂપ) ક્રિયા (છે), તે 'પ્રાણ' કહેવાય છે. અને જેનું ગુદસ્થાન અને મૂત્રમલ અધોનયન (નીચે આણવારૂપ) ક્રિયા તે અપાન (કહેવાય છે). જેનું નાભિસ્થાન અને ભુક્તપીત (લાધેલાં પીધેલાં) અન્નજલને પાચનયોગ્ય (જે) સમ કરે તે સમાન. જેનું કંઠસ્થાન અને શ્વાસક્રિયા તે ઉદાન, જેનું સર્વ શરીરસ્થાન, રસમેલન ક્રિયા તે વ્યાન. (૫) પ્રકારે પંચપ્રાણ છે. અને કહિં નાગ, કુર્મ, કૃકલ, દેવદત્ત, અને ધનંજય (૫) પંચ (૩૫)પ્રાણ અધિક કહ્યા છે. તેઓની ઉદ્ધાર, નિમેષ, ઈંક, જૂમ અને મૃત શરીરને ફુલાવવું, ૫ ક્રમથી, ક્રિયા કહી છે. પૃથ્વી, જલ, તેજ, વાયુ, અને આકાશ, ૫ પાં છે ના રજોગુણઅંશથી ૫ક ૫કની (૩૫પ્રાણની) ક્રમથી ઉત્પત્તિ કહી છે. અને અપાન, સમાન, પ્રાણ, ઉદાન, અને વ્યાન, ૫ઓની ૫૫ પૃથ્વીઆદિક ૫ ૫ ૫ ૫ ના રજોગુણઅંશથી ઉત્પત્તિ કહી છે; સર્વના મ લે લા રજોગુણઅંશથી નહિ. પરંતુ અદ્વૈતસિદ્ધાન્તમાં ૫ પ્રક્રિયા નથી; કેમકે પંચદશીવિપે વિદ્યારણ્યસ્વામી ૫ તથા પંચીકરણવિપે (સુરેશ્વરાચાર્ય) ધાર્તિકકારે સૂક્ષ્મશરીરમાં અને પંચકોશોમાં, નાગ, કુર્મઆદિકોનું પ્રહણ કન્યું નથી; અને તેઓ ૫ અપાનાદિ પંચપ્રાણની ઉત્પત્તિ ૫૫, ભૂતોના મ લે લા રજોગુણ અંશથી કહી છે. યથી ૫ ૫ ૫કના રજોગુણ અંશથી આપાનાદિની ઉત્પત્તિકથન અસંગત (છે), અને સૂક્ષ્મશરીરમાં, નાગ, કુર્મઆદિકોનું પ્રહણ (૫૫) અસંગત (છે); પંચપ્રાણનું જ સૂક્ષ્મશરીરમાં પ્રહણ છે. પ્રાણ વિશેષ(પ્રિરણ)રૂપ છે, અને વિશેષસ્વભાવ રજોગુણનો છે. યથી ભૂતોના રજોગુણઅંશથી પ્રાણની ઉત્પત્તિ કહી છે. ૫ તૃતીય પાદનો અર્થ છે.

૨૫૬. (પંચજ્ઞાનેન્દ્રિય.)

एक एक भूतनो सत्त्वगुणअंश, पंचज्ञानइन्द्रिय रचे छे; अने एक एकनो रजोगुणअंश एक एक कर्मइन्द्रिय रचे छे. आकाशना सत्त्वगुण(अंश)धी श्रोत्र, वायुना सत्त्वगुणअंशधी त्वक्, तेजना सत्त्वगुणअंशधी नेत्र, जलना सत्त्वगुणअंशधी रसना, अने पृथ्वीना सत्त्वगुणअंशधी घ्राण थाय छे. ए पंच-इन्द्रिय ज्ञाननां साधन छे, एथी ज्ञानेन्द्रिय कहेवाय छे. अने ज्ञान सत्त्वगुणधी थाय छे, एथी भूतना सत्त्वगुणधी (ज्ञानेन्द्रियनी) उत्पत्ति कही छे. श्रोत्रेन्द्रिय आकाशना गुणने ग्रहण करे छे, एथी श्रोत्रेन्द्रियनी आकाशधी उत्पत्ति कही. तेम जे भूतना गुणने जे इन्द्रिय ग्रहण करे, ते भूतधी ते इन्द्रियनी उत्पत्ति कही छे.

(पंचकर्मेन्द्रिय.)

आकाशना रजोगुणअंशधी वाक्इन्द्रियनी उत्पत्ति, वायुना रजोगुणअंशधी पाणिनी, तेजना रजोगुणअंशधी पादनी, जलना रजोगुणअंशधी उपस्थनी, अने पृथ्वीना रजोगुणअंशधी गुदानी, उत्पत्ति थाय छे. [खीना अने पुढप-ना गुह्यस्थानमां जे विषयानंदनुं साधन इन्द्रिय ते 'उपस्थ' कहेवाय छे.] 'कर्म' नाम क्रियानुं छे. (उपरनां) ए पांच इन्द्रियो क्रियानां साधन छे; एथी कर्मेन्द्रिय कहेवाय छे. क्रिया रजोगुणधी थाय छे; एथी भूतना रजोगुण-अंशधी तेमनी उत्पत्ति कही छे. २५६.

२५७. (आत्म-अनात्मविवेक.)

सर्वथा शत.

भूत अपंचीकृतऽने तेनुं कार्यं सूक्ष्मसृष्टि ए जाण;
पंचीकृतभूतोथी उपज्यो स्थूल प्रसारो सर्वे मान्

કારણ-સૂક્ષ્મ સ્થૂલ દેહ, ડને પંચકોશ એમાં પરમાણ;
કરી વિવેક, લક્ષ્ય આત્મા ભિન્ન જ, મુંજ ઈપીકાથી જ્યમ લાણ.

ટીકા:—અપંચીકૃત ભૂત અને તેમનું કાર્ય,—અંતઃકરણ, પ્રાણ, જ્ઞાનેન્દ્રિય, કર્મન્દ્રિય, ઘટલી સૂક્ષ્મસૃષ્ટિ કહેવાય છે. સૂક્ષ્મસૃષ્ટિનું જ્ઞાન ઇન્દ્રિયથી થાય નહિ. નેત્રનાસિકાદિક ગોલક તો ઇન્દ્રિયોના વિષય છે. પરંતુ તે ગોલકોમાં સ્થિત જે ઇન્દ્રિય, તે કોઈનાં ઇન્દ્રિયોના વિષય નથી. સૂક્ષ્મસૃષ્ટિની ઉત્પત્તિથી અનંતર, ઈશ્વરની ઇચ્છાથી, સ્થૂલસૃષ્ટિના નિમિત્ત (અપંચીકૃત) ભૂતોનું પંચીકરણ હતું હવું.

૨૫૮. (પંચીકરણ અને તેના બે પ્રકાર.)

પંચીકરણ બે પ્રકારે કહ્યું છે. (એક તો) એક એક ભૂતના બે બે ભાગ સમ થઈને એક એક ભાગના ચાર ચાર ભાગ થયા. પાંચ ભૂતોના અર્ધ અર્ધ ભાગ પૃથક્, જેમના તેમ રહ્યા છે, અને અર્ધ અર્ધ ભાગના જે ચાર ભાગ તે પૃથક્ રહ્યા. મોટા અર્ધ ભાગોમાં (વાકીના ચાર) પોતપોતાના ભાગને છોડીને મીલેથી સર્વ ભૂતોમાં અર્ધ ભાગ પોતાનો, અને અર્ધ ભાગ પોતાથી ઇતર ચારે ભૂતોનો (ચોથો ચોથો ભાગ) મીલીને પંચીકરણ કહેવાય છે. અને વીજો પ્રકાર આ છે:—એક એક ભૂતના

૧ આશપાશ વિંટાણા તૂળ-છાલ-થી મુંજના-સરકટના શલિયાને જૂરો કરે તેમ.

૧૬૯. ધારો કે:—પંચભૂતોને સ્થાને, ચાલીસ રૂપીઆ મારના એક શેર ચોલા, એક શેર ઘડું, એક શેર દાઢ, એક શેર મોગ, અને એક શેર બાજરી, એવી પચધાન્ય છે. તેની પાંચ ઢગલિયો કરી. ઉપર કહ્યા પ્રમાણે તે પ્રત્યેકના બે બે સમ ભાગ પચ્યા, તો વિશ વિશ રૂપીઆ મારના બે અર્ધા શેર ચોલા, બે અર્ધા શેર ઘડું, બે અર્ધા શેર દાઢ, બે અર્ધા શેર મોગ, અને બે અર્ધા શેર બાજરી, એવી દસ ઢગલિયો થઈ. તેમાંથી પ્રત્યેક ધાન્યની યોગ રૂપીઆ મારની અર્ધ શેરની એકેકી ઢગલિયો એમની એમ રાગી; તે પાંચ આવી રહી. બાકીની યોગ રૂપીઆ મારના અર્ધા અર્ધા

થે થે ભાગ થયા તે સમ નહિ; કિન્તુ (એકેક ભૂતના પંચમાગ કરી) એક ભાગ ચાર અંશનો (મોટો) અને એક ભાગ પાંચમા (એક) અંશનો (નહાનો) એ રીતિએ અધિક ન્યૂન થે ભાગ થયા. તેઓમાંથી સર્વ (ભૂતોના) અધિક ભાગ જેવાના તેવા પૃથક્ સ્થિત રહે; અને પંચભૂતોના ન્યૂન જે પંચમાગ તેઓના એક એક ભાગના પાંચ પાંચ ભાગ કરીને, પૃથક્ સ્થિત અધિક પંચ ભાગોમાં (ન્યૂન ભાગનો પાંચમો પાંચમો) એક એક ભાગ મિલિને પંચીકરણ થાય છે.

પ્રથમ પક્ષમાં એક ભાગના ચારે ભાગ, પૃથક્ રહેલા અર્ધા અર્ધા ભાગોમાં પોતાના ભાગને છોડીને મીલે. અને ઘોઝા પક્ષમાં ન્યૂન ભાગના પાંચ ભાગ, પૃથક્ રહેલા અધિક પંચભાગોમાં પોતાના ભાગસહિત[માં], મીલે. અને પ્રથમ પક્ષમાં પંચીકૃત ભૂતોમાં, પોતાનો અર્ધ અંશ, અને અર્ધ અંશ અન્યોનો (જે ચાર ભૂતો રહ્યાં તેનો ચોથો ચોથો ભાગ મઝીને થયેલો અર્ધ ભાગ); ઘોઝા પક્ષમાં પંચીકરણ કન્યેથી પોતાના એક-ઘોઝા (અંશ) અને અન્ય(ભૂત)ના ચાર અંશ.

અને ઘોઝા પક્ષની સુગમ રીતિ આ છે:-એક એક ભૂતના પચીસ પચીસ ભાગ હોય. (તિમાંથી) એકત્રીસ એકત્રીસ ભાગ

શેરની પાંચ ઢગલીઓ રહિયો, તે પ્રત્યેકના ચાર ચાર ભાગ કન્યા, એટલે એકેકી પાંચ સ્પીઆ મારના નવટાંકની એવી પ્રત્યેક ધાન્યની ચાર ચાર ઢગલીઓ થઈ. કુલ ૨૦ ઢગલીઓ નવટાંક નવટાંકની થઈ. અથવા ચોલાની જે પ્રથમ જુદી રાસેલી વીસ સ્પીઆ મારના અર્ધા શેરની ઢગલી છે તે, અને તેમા નવટાંક ઘડ, નવટાંક દાલ, નવટાંક મોગ, અને નવટાંક નાજરી, એ રીતે ચારે વાનાં નવટાંક નવટાંક મેલવતાં એ ચારે મઝી વીસ સ્પીઆમાર અર્ધો શેર થયું તે એકટું કરિયે એટલે કુલ ચાલીસ સ્પીઆમાર શેર એક થાય, એ પ્રમાણે બીજા ધાન્યમાં અનુક્રમે કરવું એ રીતિએ જે સીંચદું થયું તે પંચીકરણ કહેવાય છે. સોલ ભાગ કરી અંગણિત રીતિએ લખિયે તો $-૧૬ = (૮+૮) = (૮+[૪\times ૨]) = ૧૬.$

અને ચાર ચાર ભાગ પૃથક્ થયા. ચાર ચાર ભાગોમાંથી એક એક ભાગ પોતાના એકવીશ ભાગને છોડી (અન્યના) એકવીશ એકવીશ ભાગમાં મળે. (એમ કન્યે ચારે ભૂતના ચાર ભાગ પેલા પોતાના એકવીશ ભાગમાં મીલેથી કુલ પચીશ પચીશ પૂરા થાય.) એ રીતિએ બે પ્રકારનું પંચીકરણ કહ્યું છે. એક એક ભૂતમાં પાંચ પાંચ ભૂતને મેલવીને જે કરવું તેનું નામ પંચીકરણ છે. જે ભૂતોનું પંચીકરણ કન્યું છે તેઓને પંચીકૃત (ભૂત) કહે છે.

૨૫૯. (સ્થૂલસૃષ્ટિ. ચૌદ લોક.)

તે પંચીકૃત ભૂતોથી, ઇન્દ્રિયોના વિષય જે સ્થૂલબ્રહ્માણ્ડ તે થતું હવું. તે બ્રહ્માણ્ડના અંતર, ભૂલોક, ભુવલોક, સ્વલોક, મહલોક, જનલોક, તપોલોક, અને સત્યલોક, એ સત્-ભુવન ઉપરનાં થતાં હવાં. અને અતલ, સુતલ, પાતાલ, વિતલ, રસાતલ, તલાતલ, મહાતલ, એ સાત લોક નીચેના થતા હવા. તે ચતુર્દશ લોકોમાં જીવોના ભોગયોગ્ય અઘ્નાદિક; અને ભોગનાં સ્થાન, -દેવ મનુષ્ય પશુ આદિ સ્થૂલશરીર થતાં હવાં. સક્ષેપથી સૃષ્ટિનું એ નિરૂપણ કન્યું. અને માયાનાં કાર્યનું વિસ્તરથી નિરૂપણ કરતે, કોટિ બ્રહ્માના વચથી પણ, માયાકૃતપદાર્થનિરૂપણનો અન્ત થાય નહિ. એ વાલ્મીકિએ અનેક ઇતિહાસેકરી (યોગ)વાસિષ્ઠમાં નિરૂપણ કન્યું છે. સવૈયાના બે પાદનો એ અર્થ છે.

૨૬૦. (શરીરત્રય.)

(સવૈયાના) કૃતોથ શબ્દનો અર્થ આ છે: - 'એમનાં' નામ માયા અને તેનાં કાર્યમાં, ત્રણ શરીર અને પંચકોશ છે. શુદ્ધ-સત્ત્વગુણસહિત માયા, ઈશ્વરનું કારણ શરીર છે; અને મલિનસત્ત્વગુણસહિત અવિદ્યા અંશ, જીવનું કારણ શરીર

છે. (તે કારણ શરીરથી) ઉત્તર શરીરનાં આરંભક, પંચસૂક્ષ્મ-મૂત (છે; અને તે પંચસૂક્ષ્મમૂતનાં કાર્ય-) મન, બુદ્ધિ, ચિત્ત, અહંકાર; પંચપ્રાણ; પંચજ્ઞાનેન્દ્રિય, અને પંચકર્મદન્દ્રિય; (૫ સર્વ મઝી) જી ધ નું સૂક્ષ્મ શરીર છે. અને સર્વ જીવોનાં સૂક્ષ્મશરીર જ મિલીને ઈશ્વર નું સૂક્ષ્મશરીર છે. સંપૂર્ણ સ્થૂલબ્રહ્માણ્ડ ઈશ્વર નું સ્થૂલશરીર છે. અને જીવોનાં વ્યષ્ટિ સ્થૂલશરીર (તો) પ્રસિદ્ધ છે.

(પંચકોશ.)

૫ ઘણે શરીરોમાં જ પંચકોશ છે. કારણશરીરને આ નં દ-મ ય કોશ કહે છે. વિજ્ઞાનમય, મનોમય, અને પ્રાણમય, ૫ ઘણ કોશ સૂક્ષ્મશરીરમાં છે. [પંચજ્ઞાનેન્દ્રિય, અને નિશ્ચય-રૂપ અંતઃકર્મણની વૃત્તિ (જે) બુદ્ધિ તે વિજ્ઞાનમયકોશ કહેવાય છે. પંચજ્ઞાનેન્દ્રિય અને સંકલ્પવિકલ્પરૂપ અંતઃકર્મ-ની વૃત્તિ (જે) મન તે મનોમયકોશ કહેવાય છે. પંચ-પ્રાણ અને પંચકર્મેન્દ્રિય પ્રાણમય કોશ છે.] સ્થૂલશરીરને અન્નમયકોશ કહે છે. ૫ રીતિ ૫ ઘણ શરીરમાં જ પંચકોશ છે. ઈશ્વરનો શરીરમાં ઈશ્વરના કોશ, અને જીવના શરીરમાં

૧૭૦. ઈશ્વરશરીરના પંચકોશ. સમષ્ટિ અજ્ઞાનરૂપિણી માયા ઈશ્વરનું કારણ શરીર છે, તે ઈશ્વરનો આ નં દ-મ ય કોશ છે. અને જીવોના સૂક્ષ્મશરીરની સમષ્ટિ જે દિવ્યગર્ભ, તે ઈશ્વરનું સૂક્ષ્મ શરીર છે, તેમાં વિજ્ઞાનમય, મનોમય, અને પ્રાણમય, ૫ ઘણ કોશ આ પ્રમાણે છે. -શ્રોત્રાદિક જ્ઞાનેન્દ્રિયની-અધિષ્ટાત્રી દેવતા-દિવપાલ, -વાયુ, સૂર્ય, વરુણ, અને અશ્વિનીકુમાર, ૫ પાંચ ઈશ્વરના જ્ઞાનેન્દ્રિય, અને સમષ્ટિબુદ્ધિમય મહાસુત્ર વા સર્વે બુદ્ધિઓનો અભિમાની બ્રહ્મારૂપ ઈશ્વરની બુદ્ધિ, ૫ મિલીને, ઈશ્વરનો વિજ્ઞાનમય કોશ કહેવાય છે. અને ઈશ્વરનાં પૂર્વોક્ત જ્ઞાનેન્દ્રિય, અને સમષ્ટિમનરૂપ અહંકારમય, વા સર્વેના મનોનો અભિમાની ચંદ્રમા-રૂપ ઈશ્વરનું મન, ૫ મિલીને, ઈશ્વરનો મનોમય કોશ કહેવાય છે. અને વાણી આદિ કર્મેન્દ્રિયની અધિષ્ટાત્રી દેવતા-અમિ, ઇન્દ્ર, ઉપેન્દ્ર, પ્રજાપતિ અને યમ (મૃત્યુ) ૫ પાંચ ઈશ્વરનાં કર્મેન્દ્રિય, અને સમષ્ટિપ્રાણ વા વાયુના અભિમાની દેવતા-

જીવના કોશ છે. કોશ નામ મ્યાનનું છે. (તરવારના) મ્યાનની પેટે પંચકોશ આત્માના સ્વરૂપને આચ્છાદન કરે છે; યથી અન્નમયાદિક 'કોશ' કહેવાય છે. અનેક મંદમતિ પુરુષ પંચકોશમાં જે અનાત્મપદાર્થ છે, તેમાંના કોઈ એકને આત્મા માનીને, મુખ્ય સાક્ષિઆત્મસ્વરૂપથી વિમુક્ત જ રહે છે. યથી અન્નમયાદિક (કોશ) આત્મસ્વરૂપને આચ્છાદન કરે છે.

૨૬૧. (વિરોચનમતવાલા સ્થૂલશરીરને આત્મા માને છે.)

ત્યાં કેટલાક પામર વિરોચનમતના અનુસારી સ્થૂલશરીરરૂપ અન્નમયકોશને જ આત્મા કહે છે અને આ યુક્તિ કહે છે:—જેમાં અહંબુદ્ધિ હોય તે આત્મા છે. તે અહંબુદ્ધિ સ્થૂલશરીરમાં હોય છે. 'હું મનુષ્ય છું. હું બ્રાહ્મણ છું' યથી પ્રતીતિ સર્વને થાય છે; અને તે મનુષ્યપણું, બ્રાહ્મણપણું, સ્થૂલશરીરમાં જ છે. યથી સ્થૂલશરીર જ અહંબુદ્ધિનાં વિષય હોવાથી આત્મા છે. ક્રિયા જેમાં મુખ્યપ્રીતિ હોય તે આત્મા છે. સ્ત્રી, પુત્ર, ધન, પશુ, આદિ સ્થૂલશરીરના ઉપકારક હોય તો, તેમાં પ્રીતિ હોય છે; અને સ્થૂલશરીરનાં ઉપકારક હોય નહિ તો પ્રીતિ થાય નહિ. જેના નિમિત્ત અન્યપદાર્થમાં પ્રીતિ થાય તે સ્થૂલશરીરમાં જ મુખ્ય પ્રીતિ છે. યથી સ્થૂલશરીર

રૂપ ર્શ્વરના પ્રાણ, એ મિલીને ર્શ્વરનો પ્રાણમય કોશ કહેવાય છે. અને સમષ્ટિ-સ્થૂલસૃષ્ટિસ્વ વિગટ એ ર્શ્વરનું સ્થૂલશરીર છે. તે ર્શ્વરનો અધમય કોશ છે.

જેમ, જીવના શરીરમાં જે જીવના કોશો છે, તે જીવની દષ્ટિએ જીવનું નિજરૂપ જે પ્રત્યગાત્મા તેના આચ્છાદક છે; તેમ ર્શ્વરના શરીરમાં જે ર્શ્વરના કોશો છે, તે, ર્શ્વરની દષ્ટિએ ર્શ્વરનું નિજરૂપ જે બ્રહ્મ તેના આચ્છાદક નહિ, કિન્તુ જીવની દષ્ટિએ બ્રહ્મના આચ્છાદક છે. યથી જીવને જેમ અષ્ટિપંચકોશોથી પ્રત્યગાત્માનું વિવેચન કર્તવ્ય છે, તેમ સમષ્ટિપંચકોશોથી બ્રહ્મનું વિવેચન પણ જીવને જ કર્તવ્ય છે. ર્શ્વરને આચરણના અધ્યયનો નિમિત્ત હોવાએકરી, કંઈ પણ કર્તવ્ય છે નહિ.

ज आत्मा छे. ते(स्थूलशरीर)नुं, चरन, भूषण, अंजन, मंजन, अने नानाविध भोजनेकरी, थुंगारपोषण ज परम पुरु-
पार्थ छे. ए असुरस्वामी विरोचननो सिद्धान्त छे.

२६२. (कांई स्थूलशरीरने नहि पण इन्द्रियोने ज
आत्मा माने छे.)

अन्य कांई आम कहे छे:-स्थूलशरीर ज आत्मा नयी
किन्तु स्थूलशरीरमां जेना होवाथी जीवनव्यवहार थाय छे
अने जेना न होवाथी मरणव्यवहार थाय छे ते आत्मा स्थूल
शरीरथी भिन्न छे. जीवनमरण इन्द्रियोने अधीन छे. जेटला
काल सुधी शरीरमां इन्द्रिय होय तेटला काल सुधी जीवन
छे. अने कांई इन्द्रिय न होय त्यारे मरण कहेवाय छे. अने
'हुं देखुं छुं, हुं सांभळुं छुं, हुं बोळुं छुं,' ए रीतिप अहंबुद्धि
पण इन्द्रियमां होय छे. एथी इन्द्रिय ज आत्मा छे.

२६३. (कांई इन्द्रियोने नहि पण प्राणने ज आत्मा माने छे.)

अने हिरण्यगर्भना उपासी प्राणन आत्मा कहे छे. तेमा
युक्ति कहे छे के.-ज्यारे मरणसमये मूर्च्छा थाय छे त्यारे तेनां
संबंधी पुत्रादिक, प्राण शेष होय तो जीवन (छे एम) जाणे
छे, अने प्राण शेष न होय तो मरण जाणे छे. किंवा शरीर-
मां नेत्रइन्द्रिय न होय तो अंधशरीर रहे छे, श्रोत्र विना
बधिर रहे छे, वाक् विना मूक रहे छे, एम जो इन्द्रिय न होय
तेना व्यापार विना पण शरीर स्थित ज रहे छे: अने प्राण विना
ते ज क्षणमां इमशानना समान अमगल भयंकर थईन पडी
जाय छे. अने 'हुं देखुं छुं, सांभळुं छुं,' ए प्रतीतिप पण इन्द्रि-
यांथी भिन्न ज आत्मा सिद्ध थाय छे. केमके नेत्रस्वरूप हुं
देखुं छुं, श्रवणस्वरूप हुं सांभळुं छुं,' जो एवी प्रतीति थाय
तो इन्द्रियरूप आत्मा सिद्ध थाय. किन्तु 'हुं नेत्रवाळो देखुं

‘હું, શ્રોત્રવાલો હું સાંભળું હું,’ યવી પ્રતીતિ થાય છે. યથી ઇન્દ્રિયથી ભિન્ન જ આત્મા છે. અને સુપુત્રિમાં સર્વ ઇન્દ્રિયનો અભાવ છે, તોપણ પ્રાણના હોવાથી જીવનવ્યવહાર થાય છે, યથી જીવન-મરણ પણ ઇન્દ્રિયોને અધીન નહિ. કિન્તુ સ્થૂલ-શરીર અને પ્રાણના વિયોગને મરણ કહે છે. યથી જીવન-મરણ પ્રાણને જ અધીન છે. તે(પ્રાણ) જ આત્મા છે.

૨૬૪. (કોઈ પ્રાણને નહિ પણ મનને આત્મા માને છે.)

અન્ય કોઈ આણું કહે છે:-પ્રાણ જડ છે, યથી ઘટની પેઠે અનાત્મા છે. અને બંધમોક્ષ મનને અધીન છે. વિપયમાં આસક્ત જે મન, તે બંધનનો હેતુ છે. વિપયવાસનારહિત મન મોક્ષનો હેતુ છે. અને મનના સંબંધથી જ ઇન્દ્રિય જ્ઞાનના હેતુ છે. મનના સંબંધ વિના ઇન્દ્રિયથી જ્ઞાન થાય નહિ. યથી સર્વ વ્યવહારનો હેતુ મન છે તે (મન) જ આત્મા છે.

૨૬૫. (ક્ષણિકવિજ્ઞાનવાદી વૌદ્ધ, મનને નહિ પણ
બુદ્ધિને આત્મા માને છે.)

અને ક્ષણિકવિજ્ઞાનવાદી વૌદ્ધ આ કહે છે:-મનનો વ્યાપાર બુદ્ધિને અધીન છે. કેમકે બુદ્ધિનો જ આકાર મન થાય છે, યથી ક્ષણિકવિજ્ઞાનરૂપ બુદ્ધિ જ આત્મા છે, મન નહિ. આ તેમનો અભિપ્રાય છે:-સંપૂર્ણ યદાર્થ, વિજ્ઞાનના જ આકાર છે; તે વિજ્ઞાન પ્રકાશરૂપ છે. અને ક્ષણક્ષણમાં વિજ્ઞાનનાં ઉત્પત્તિનાશ થાય છે. પૂર્વવિજ્ઞાનના સમાન અન્યવિજ્ઞાનની ઉત્પત્તિ થયેથી પૂર્વવિજ્ઞાનનો નાશ થાય છે. તેમ તૃતીય વિજ્ઞાનની ઉત્પત્તિ અને દ્વિતીય વિજ્ઞાનનો નાશ, ચતુર્થ- (વિજ્ઞાન)ની ઉત્પત્તિ અને તૃતીય(વિજ્ઞાન)નો નાશ થાય છે. ય રીતિય નદીના પ્રવાહનો પેઠે વિજ્ઞાનની ધારા બની રહે છે. તે

વિદ્યાનનો ધારા થે પ્રકારનો છે. પક્ તો આલયવિજ્ઞાનધારા છે, અને થીજી પ્રવૃત્તિવિદ્યાનધારા છે. 'અહં અહં' (હું હું) યથી વિજ્ઞાનધારાને 'આલયવિજ્ઞાનધારા' કહે છે. તેને જ વુદ્ધિ કહે છે. 'આ ઘટ છે, આ શરીર છે,' યથી વિજ્ઞાનધારાને 'પ્રવૃત્તિવિજ્ઞાનધારા' કહે છે. આલયવિજ્ઞાનધારાથી પ્રવૃત્તિવિજ્ઞાનધારાની ઉત્પત્તિ થાય છે. મનનું સ્વરૂપ યણ પ્રવૃત્તિવિજ્ઞાનધારામાં છે, યથી આલયવિજ્ઞાનધારારૂપ વુદ્ધિનું (મન) કાર્ય છે, તે વુદ્ધિ જ આત્મા છે. આલયવિજ્ઞાનધારાવિષે, પ્રવૃત્તિવિજ્ઞાનધારાના વાધચિન્તનથી નિર્વિશેષક્ષણિકવિજ્ઞાનધારાની સ્થિતિ જ, તેમના મતમાં, મોક્ષ છે. ય રીતિય વિજ્ઞાનગ્રાહી વુદ્ધિને જ ક્ષણિકરૂપ અને સ્વયંપ્રકાશરૂપ કલ્પના કરીને આત્મા કહે છે.

૨૬૬. (ભટ્ટમત પ્રમાણે વુદ્ધિ નહિ યણ આનંદમય-કોશ તે આત્મા મનાય છે.)

અને પૂર્વમીમાંસાનો વાર્તિકકાર ભટ્ટ આ કહે છે:-વિદ્યુત્નો પેઠે ક્ષણિકરૂપ આત્મા નહિ, કિન્તુ સ્થિરસ્વરૂપઆત્મા, જડસ્વરૂપ અને ચેતનરૂપ છે. તેનો અભિપ્રાય આ છે-સુપુત્તિથી જાગીને પુષ્પ આ કહે છે.-'હુ જડ થઈને સૂતો 'હતો.' યથી આત્મા જડરૂપ છે, અને જાગેલાને સ્મૃતિ થાય છે, અજ્ઞાતની સ્મૃતિ થાય નહિ. આત્મસ્વરૂપથી ભિન્ન જ્ઞાનનાં અન્ય સાધન સુપુત્તિમા નથી, યથી સુપુત્તિમાં સ્મૃતિનો હેતુ જ્ઞાન છે, તે આત્માનું સ્વરૂપ જ છે. ય રીતિય રાઘોત- (આગિયા)ની પેઠે આત્મા પ્રકાશ અને અપ્રકાશરૂપ છે:-જ્ઞાનરૂપ છે યથી પ્રકાશરૂપ, અને જડ છે યથી અપ્રકાશરૂપ છે. તે પ્રકાશરૂપ અને અપ્રકાશરૂપ આનંદમયકોશ છે. કેમકે સુપુત્તિમાં ચેતનના આભાસસહિત જે અજ્ઞાન તેને આનંદમય

કોશ કહે છે. ત્યાં આભાસ તો પ્રકાશરૂપ, અને અજ્ઞાન અપ્રકાશરૂપ છે. યથો ભટ્ટના મતમાં આનંદમયકોશ જ આત્મા છે.

૨૬૭. (શૂન્યવાદી માધ્યમિકવૌદ્ધ શૂન્યને જ આત્મા માને છે.)

અને શૂન્યવાદી વૌદ્ધ આ કહે છે:—આત્મા નિરંશ છે, યથી એક આત્માને પ્રકાશરૂપ અને અપ્રકાશરૂપ કહેવો વને નહિ. અને સ્વયંતનો તો એક અંશ પ્રકાશરૂપ છે અને વીજો અંશ અપ્રકાશરૂપ છે. તેની પેઠે અંશરહિત આત્માવિષે ઉભયરૂપ કહેવું અમગત છે. યથી ઉભયરૂપની સિદ્ધિસારૂ આત્મા અંશસહિત જ માનવો પડશે. જે અંશવાળા પદાર્થ ઘટાદિ છે તે ઉત્પત્તિ અને નાશવાળા હોય છે; તેમ આત્મા પણ અંશસહિત હોવાથી ઉત્પત્તિ-નાશવાળો જ માનવો પડશે. જે ઉત્પત્તિ-નાશવાળો પદાર્થ હોય તે ઉત્પત્તિથી પૂર્વે અને નાશથી અનંતર અસત્ હોય છે. જે આદિઅંતમાં અસત્ હોય તે મધ્યમાં પણ સત્ હોય નહિ; કિન્તુ મધ્યમાં પણ અસત્ જ હોય છે. યથી આત્મા અસત્રૂપ છે. તેમ આત્માથી ભિન્ન પણ સંપૂર્ણ પદાર્થ ઉત્પત્તિનાશવાળા છે, યથી અસત્રૂપ છે. એ રીતિય આત્મા અને અનાત્મા સમગ્ર ઘસ્તુ અસત્રૂપ હોવાથી શૂન્ય જ પરમતત્ત્વ છે, એ શૂન્યવાદી માધ્યમિકવૌદ્ધનું મત છે.

તે પણ અજ્ઞાનરૂપ આનંદમયકોશને પ્રતિપાદન કરે છે. કેમકે અજ્ઞાન ત્રણ રૂપથી પ્રતીત થાય છે. અદ્વૈતશાસ્ત્રના સંસ્કારરહિત જે મૂઢ, તેઓને તો જગત્રૂપ પરિણામને પ્રાપ્ત અજ્ઞાન, સત્ય પ્રતીત થાય છે. અને અદ્વૈતશાસ્ત્રના અનુસાર યુક્તિનિપુણ પંડિતોને સત્-અસત્થી વિલક્ષણ અનિર્વચનીયરૂપ અજ્ઞાન અને તેનું કાર્ય જગત્, પ્રતીત થાય છે. જ્ઞાનનિષ્ઠાને પ્રાપ્ત જે જીવન્મુક્તવિદ્વાન્ તેઓને, કાર્યસહિત અજ્ઞાન, તુ-

ચ્છરૂપ પ્રતીત થાય છે. તુચ્છ, અસત્, અને શૂન્ય, એ પ્રણે શબ્દ એક જ અર્થને કહે છે. એ રીતિએ જીવન્મુક્તને તુચ્છ-રૂપ જે પ્રતીત થાય અજ્ઞાન, તેનેવિષે મોહિત શૂન્યવાદી પરમપુરુષાર્થને નથી જાણતા; કિન્તુ તુચ્છરૂપ આનંદમયકોશને જ આત્મા કહે છે.

૨૬૮. (પૂર્વમીમાંસક પ્રમાકર અને નૈયાયિક, શૂન્યને નહિ પણ, આનંદમયકોશને આત્મા માને છે.)

અને પૂર્વમીમાંસાનો એકદેશી પ્રમાકર અને નૈયાયિક આ કહે છે:-આત્મા શૂન્યરૂપ નહિ. કેમકે જે શૂન્યરૂપ આત્મા માને છે તેને આ પૂછે છે:-‘શૂન્યરૂપનો તેં અનુભવ ક્યો છે, ‘અથવા નહિ ?’ જો આમ કહે:-‘શૂન્યરૂપનો અનુભવ નથી ક્યો,’ તો શૂન્ય છે નહિ, એમ સિદ્ધ થયું. અને જો કહે કે,-‘શૂન્યનો અનુભવ ક્યો છે,’ તો જેણે શૂન્યનો અનુભવ ક્યો છે, તે (અનુભવ કરનાર) આત્મા શૂન્યથી વિલક્ષણ સિદ્ધ થાય છે. એ રીતિએ શૂન્યથી વિલક્ષણ આત્મા છે. તેવિષે મનના સંયોગથી જ્ઞાન થાય છે. તે જ્ઞાનગુણથી આત્મા એ ત ન કહેવાય છે. અને સ્વરૂપથી આત્મા જડ છે. તેમ (ઘઠી જેમના મતમાં) સુષ્ણ, દુઃષ્ણ, શ્ચ્છા, દ્વેષ, પ્રયત્ન, ધર્મ, અધર્મ, આદિક ગુણ આત્માવિષે છે; તેઓના મતમાં પણ આનંદમય-કોશ જ આત્મા છે. અને વિજ્ઞાનમયકોશમાં જે ધુદ્ધિ છે, તે આત્માનો જ્ઞાનગુણ કહે છે;-કેમકે આનંદમયકોશમાં ચેતન ગૂઢ (ગુપ્ત) છે (તે) વિવેકહીનને પ્રતીત થાય નહિ. અને પ્રમા-કર તથા નૈયાયિક આત્માને સુપુષ્ણમાં જ્ઞાનહીન માનીને સ્વરૂપથી જડ કહે છે. એથી ગૂઢ (છે) ચેતન (જેમાં એવા) આનંદમયકોશમાં જ તેઓને (નૈયાયિકાદિકાંને) આત્મધ્રાન્તિ છે, અને આત્મસ્વરૂપ નિત્યજ્ઞાનને તો જીવ(આત્મા)માં માનતા

નથી, કિન્તુ અનિત્યજ્ઞાન (જીવાત્મામાં)માને છે. તે અનિત્ય-જ્ઞાન, સિદ્ધાન્તમાં, અંત.કરણની ઘટ્તિ (જે) બુદ્ધિ(તે)રૂપ છે. એ રીતિએ પ્રભાકર-નૈયાયિકમતમાં આનંદમયકોશ આત્મા છે; અને બુદ્ધિ તેનો ગુણ છે. તેઓનું મત પણ સમી-ચીન નથી. કેમકે—

૨૬૯. (ઉપરનાં મતોસંવંધમાં વિચાર.)

જ્ઞાનથી ભિન્ન જે જડવસ્તુ ઘટાદિ છે તે અનિત્ય છે. તેમ આત્મા પણ જ્ઞાનસ્વરૂપ ન હોય તો ઘટાદિકની પેઠે જડ હોવાથી અનિત્ય થશે. જો આત્મા અનિત્ય હોય તો મોક્ષને અર્થે સાધન નિષ્ફલ થશે. એ રીતિએ વેદાન્તગ્રાહ્યમાં વિશ્વાસ-હીન અનેક વહિર્મુખ પંચકોશમાં જ કોઈ પદાર્થને આત્મા માને છે; અને મુખ્ય આત્મસ્વરૂપ સાક્ષીને જાણતા નથી. યથી અન્નમયાદિક આત્માના આચ્છાદક હોવાથી કોશ કહેવાય છે.

(ઈશ્વરનું સ્વરૂપ.)

જેમ જીવના પંચકોશ, જીવનું યથાર્થ સ્વરૂપ સાક્ષીને આચ્છાદન કરે છે, તેમ ઈશ્વરના સમષ્ટિપંચકોશ ઈશ્વરના યથાર્થ સ્વરૂપને (જીવોની દૃષ્ટિથી) આચ્છાદન કરે છે. કેમકે ઈશ્વરનું યથાર્થ સ્વરૂપ તો તત્પદનું લક્ષ્ય છે, તેને ત્યાગીને, કોઈ તો માયારૂપ આનંદમયકોશવિશિષ્ટ જે અંતર્યામી તત્પદ-નું વાચ્ય, તેને જ પરમતત્ત્વ કહે છે; તેમ હિરણ્યગર્ભ, વૈશ્વા-નર, વિષ્ણુ, બ્રહ્મા, શિવ, ગણેશ, દેવી, સૂર્યથી આદિલઈને, અસિ, કુદાલી, પીપ્પલો, આકાશ, વાંસપર્ણત પદાર્થોમાં (એ જ) પરમાત્મા (છે એવી) ઝાનિત કરે છે: યદ્યપિ સર્વ પદાર્થોમાં લક્ષ્ય-ભાગ પરમાત્માથી ભિન્ન નથી; તથાપિ તે તે ઉપાધિસહિત-ને જે પરમાત્મા માને છે, તે તેને ઝાનિત છે; એ રીતિએ પંચ-

કોશથી આવૃત્ત જે જીવદેહ્યરનું પરમાર્થસ્વરૂપ, તેથી વિમુક્ત થઈને દેહાદિકોમાં આત્મપ્રાન્તિ કરીને પુણ્યપાપ કર્મ કરે છે. અને અંતર્યામીથી આદિલઈને યાંત્રપર્યતને દેહ્યરૂપ માનીને આરાધન કરીને સુખ રૂઝે છે. જેમા ઉપાધિનું આરાધન કરે છે, તેને અનુમાર જ તેઓને ફલ થાય છે. કેમકે, કારણ-સૂક્ષ્મ-સ્થૂલ-પ્રપંચ સર્વે દેહ્યરના પ્રણ શરીરના અંતર્ભૂત છે. તેમાં ઉપામનાના અનુસાર ફલ પગ મર્યથી જ થાય છે. પરંતુ બ્રહ્મજ્ઞાન વિના મોક્ષ થાય નહિ. જો મોક્ષની રૂઝા હોય તો વિવેકથી જીવદેહ્યરના સ્વરૂપને પંચકોશથી પૃથક્ કરે. દષ્ટાન્ત:-જેમ મુંજ અને રૂપીકા નામ તુલ (મુંજ જાતના મર-કટની શલાકા (શરિયો) અને મુંજનાં તૃણ) મલ્યાં હોય છે, તેઓને (શલાકાઉપરનાં પાત્રાંને)તોડીને (મધ્યની તુલથી વિટાયલી શલાકાને) પૃથક્ કરે છે; તેમ વિવેકથી જીવદેહ્યરના સ્વરૂપને પંચકોશથી પૃથક્ જાણે. ૫ (ઉપરના) સધૈયાનો અર્થ છે. ૧૫૭.

૨૭૦. (તે પંચકોશથી આત્મવિવેકનો પ્રકાર.)

સૈયો.

સ્થૂલદેહનું માન ન થાયે સ્વપ્નમાંહિ છે આત્મજ્ઞાન;
સુપુત્તિસમયે સૂક્ષ્મજ્ઞાન નહિ, સુપ્તસ્વરૂપ છે આત્મ જ માન;
માસે, થયે સમાધિ અવસ્થા, નિરાધરણ આત્મા, ન ડજ્ઞાન;
૫મ દેહ પ્રણ છે વ્યભિચારી, આત્મા અનુગત મિત્ર જ જાણ. ૧૫૮.

ટીકા:-સ્વપ્ન-અવસ્થામાં જ સ્થૂલદેહનું માન થાય નહિ અને આત્માનું 'માન' થાય છે. તેમ સુપુત્તિઅવસ્થામાં સૂક્ષ્મ-શરીરનું ઘાત થતું નથી, અને સુપ્તસ્વરૂપ આત્મા, સ્વયંપ્રકાશ-રૂપથી 'માન' નામ પ્રતીત થાય છે (જો) સુપ્તનું જ્ઞાન સુપુ-ત્તિમાં ન હોય તો 'હું સુપ્તે સૂતો હતો,' ૫થી સ્મૃતિ, જાગીને નહિ ધરે જોશ્યે. (પગ તે થાય છે) ૫થી સુપ્તનું જ્ઞાન

(મહાવાક્યના અર્થનો ઉપદેશ. આત્માનું સ્વરૂપ.)

સંગે.

પંચકોશથી આત્મા ભિન્ન જ જાણી જાણ તે બ્રહ્મસ્વરૂપ;
તેથી ભિન્ન જે દેહાય શુણાય જ, તે માનો મિથ્યા ભ્રમરૂપ;
મિથ્યા ન અધિષ્ઠાન વિગાડે, સ્વપ્નમીલે ન દરિદ્રી ભૂપ;
સહુ કંઈ કર્તા *તથાપ્યકર્તા તુજ અદ્ભુત રૂપ યં અનુપ. ૧૫૨.

ટીકા:-હે શિષ્ય ! પંચકોશથી આત્માને ભિન્ન જાણીને પછી
'તે' નામ તે આત્મા, બ્રહ્મસ્વરૂપ છે; જ જાણો.

(શંકા.)

૨૭૨. યનેવિપે આવી શંકા થાય છે:-આત્મા પુણ્યપાપ
કરે છે તેથી સ્વર્ગ નરક અને, મૃત્યુલોકમાં નાના પ્રકારનાં
સુખદુઃખ ભોગવે છે, તેની બ્રહ્મસંગે એકતા બને નહિ.

જ શંકાનું સમાધાન.

૨૭૩. (શરીરઅધ્યાસે કર્તા અને સ્વરૂપે અકર્તા આત્માનો
બ્રહ્મસંગે અભેદ છે.)

'તેથી ભિન્ન જે દેહાય' ઇત્યાદિ (સંધેયાનાં) ત્રણ પાશોથી
કહે છે. તે બ્રહ્મરૂપ આત્માથી ભિન્ન જે દેહાય છે, અને સ્વર્ગ,
નરક, પુણ્ય, પાપ, શાસ્ત્રકરી સમઢાય છે, તે સંપૂર્ણ મિથ્યા
ભ્રમ છે; એમ માનો. અને મિથ્યા વસ્તુ અધિષ્ઠાનને વિગાડે
નહિ. જેમ સ્વપ્નની મિથ્યા 'મીલ' નામ ભિક્ષા માગવાથી
ભૂપ (રાજા) દરિદ્રી થતો નથી, અને મરસ્થલનાં મિથ્યા
જલથી ભૂમિ મીનો થાય નહિ. (અને) મિથ્યા સર્પથી રજ્જુ
ઘિપસહિત થાય નહિ. યથી 'સહુ વડ કર્તા' નામ સંપૂર્ણ
મિથ્યા શુભ અશુભ ક્રિયાનો કર્તા છે, તોપણ 'અકર્તા' નામ

* તથાપિ અકર્તા, સર્વ વડ કર્તા સતે પણ અકર્તા.

પરમાર્થથી કર્તા નથી. એવું તારું અદ્ભુત (નામ) આશ્ચર્યરૂપ, 'અનુપમ' નામ ઉપમારહિત છે. એનાં ભાવ આ છે:-બ્રહ્મસાથે અભિન્ન તારા સ્વરૂપવિષે, સ્થૂલ-સૂક્ષ્મશરીર અને તેઓની શુભ-અશુભ-ક્રિયા અને તેનું ફલ-જન્મ મરણ, સ્વર્ગ-નરક, સુખ-દુઃખ, સંપૂર્ણ અગ્નિચાપ કલ્પિત છે. તે કલ્પિત સામગ્રી તારો બ્રહ્મભાવ વિગડતો નથી. ઈથી જ્ઞાનથી પ્રથમ પણ આત્મા બ્રહ્મસ્વરૂપ જ છે, તેનેવિષે વ્રણે કાલમાં શરીર અને તેના ધર્મોનો સંબંધ નથી. કિન્તુ આત્મા સદા જ નિત્યમુક્ત છે. તેનો બ્રહ્મથી કદિ પણ ભેદ નથી. ૧૫૯.

૨૭૩. જો આમ કહે'—આત્મા સદા જ નિત્યમુક્ત બ્રહ્મસ્વ-રૂપ હોય તો, શ્રવણાદિ જ્ઞાનનાં સાધન નિષ્ફલ થશે. તેનું સમાધાન.

(જીવન્મુક્તની દૃષ્ટિ.)

इन्द्रविजय अथवा मत्तगपंद एत.

જાં, ન, સ્વપુષ્પ મમાન પ્રવંચ જ, તો શૈશ પ્યાં કર્તાં જ વહાયે; સાશ્ય નહિ, શ્મ સાશ્ચીસ્વરૂપ ન, દશ્ય નહિ દક્ર કોને જણાયે. ઘંધ જ હોય તો મોક્ષ વને, વઢાં હોય અંજ્ઞાન તો જ્ઞાનથી શામે જાણો જ ઇ પરતવ્ય તજે સડ, નિશ્ચલ થતાં જ નિશ્ચલ પામે. ૧૬૦.

ટીકા -જીવન્મુક્ત વિદ્વાનની દૃષ્ટિમાં અજ્ઞાન અને તેનું કાર્ય તુચ્છ છે. તે જીવન્મુક્તનો નિશ્ચય થતાયે છે. દે શિષ્ય ! આ પ્રવંચ, 'સ્વપુષ્પમમાન' નામ આકાશના ફૂલની પેંઠે, છે નહિ; ઈથી તેનો પર્નાં શૈશ્યર પણ છે નહિ. માશીનો ત્રિષય અજ્ઞાનાદિક 'સાશ્ય' વહેવાય છે. તે 'માશ્ય' નથી ઈથી માશી પણ નથી. તેમ દશ્યનો પ્રજાણવ 'દક્ર' વહેવાય છે. અને પ્રજાણના યોગ્ય દેહાદિક 'દશ્ય' વહેવાય છે. તે દેશ

दिक दृश्य છે નહિ, યથી દક્ષ પળ નથી. યદપિ કેવલ કૃદસ્થ-ચેતનને સાક્ષી અને દક્ષ કહે છે; તેનો (સ્વરૂપેકરી) નિપેધ વને નહિ. તથાપિ સાક્ષ્યની અપેક્ષાએ 'સાક્ષી' નામ (છે), અને દૃશ્યની અપેક્ષાથી 'દક્ષ' નામ છે. સાક્ષ્ય અને દૃશ્યનો અભાવ છે. યથી સાક્ષી અને દક્ષ (પ) 'ના મ નો' નિપેધ કરે છે; 'સ્વ મ્ પ' નો નહિ. અને ઘંધ હોય તો ઘંધની નિવૃત્તિ-રૂપ મોક્ષ હોય; (પળ) ઘંધ જ નહિ તેથી મોક્ષ પળ નહિ. અને અજ્ઞાન હોય તો તેનો જ્ઞાનથી નાશ થાય. અજ્ઞાન છે નહિ યથી તેનું નાશક જ્ઞાન પળ નથી. એમ જાણીને 'કર્તવ્ય તજે' નામ 'મારે એ કરવા યોગ્ય છે' એ બુદ્ધિને ત્યાગે. કેમકે આ લોક તથા પરલોક તો તુચ્છ છે; તેથીના નિમિત્ત કંઈ કર્તવ્ય નથી. આત્મામાં ઘંધ નથી તેથી મોક્ષને નિમિત્ત પળ કર્તવ્ય નથી, એ રીતિએ આત્માને નિત્યમુક્તબ્રહ્મ-રૂપ જાણીને જ્યારે નિશ્ચલ થાય, સર્વ કર્તવ્ય ત્યાગે; ત્યારે 'નિશ્ચલ' નામ અક્રિય બ્રહ્મસ્વરૂપ વિદેહમોક્ષને પ્રાપ્ત થાય. એનો અભિપ્રાય આ છે:-

યદપિ આત્મા, જ્ઞાનથી પ્રથમ પળ, નિત્યમુક્ત બ્રહ્મસ્વરૂપ જ છે; પરંતુ જ્ઞાનથી પૂર્વે, આત્માને કર્તા ભોક્તા મિથ્યા માનીને, સુખપ્રાપ્તિ અને દુઃખની નિવૃત્તિ અર્થે અનેક સાધન કરે છે, તેથી ક્લેશને જ પ્રાપ્ત થાય છે. જો ઉત્તમ આચાર્ય મળે તો તે વેદાન્તવાક્યોનો ઉપદેશ કરે છે. તે વેદાન્તવાક્યોના શ્રવણથી આત્મ જ્ઞાન થાય છે:- 'હું કર્તા-ભોક્તા નહિ, કિન્તુ હું 'બ્રહ્મસ્વરૂપ છું. યથી મારે કિંચિત્ પળ કર્તવ્ય નથી.' એવું જાણવું જ શ્રવણાદિકોનું ફલ છે. અને બ્રહ્મની પ્રાપ્તિ વેદાન્ત-શ્રવણનું ફલ નથી. કારણ કે બ્રહ્મ પોતાનું સ્વરૂપ છે, યથી નિત્યપ્રાપ્ત છે. ૧૬૦.

૨૭૫. (ગોપ્ય તત્ત્વનો ઉપદેશ.)

દુષ્ટો.

ए ज चिन्ह अज्ञानमुं, जे माने कर्तव्य;

ते ज ज्ञानी सुघड नर, नहि जेने भवितव्य. १६१.

ટીકા:—જે કર્તવ્ય માને તે અજ્ઞાનનું ચિહ્ન છે; અને 'જેને 'ભવિતવ્ય નહિ' નામ જે અન્યરૂપ થવા નથી ચહાતો તે નર જ્ઞાની કહેવાય છે. ૧૬૧.

૨૭૬. (इन्द्रविजय वृत्त.)

एक अखंडित, ब्रह्म, असंग, अजन्म, अदृश्य, अरूप, अनामी;
मूल-अज्ञान न, सूक्ष्म न, स्थूल न, व्यष्टि समष्टि न, (अंतर्बोमी.)
ईश न, सूत्र विराट न, प्राज्ञ न, तेजस विश्वस्वरूप न जेमां; भोग
न, जोग न, बंध न मोक्ष, न काँइ तहि बली छे सहु तेमां. १६२.
जाग्रत्मांही प्रपंच प्रभासत ते सउ बुद्धिधिलास बन्यो छे.

स्वप्नविषे ज्यम भोग्य न, भोग न, तो एण चित्र विचित्र जण्यो छे.
लीन सुषुप्तिविषे मति थाय ज, भेद मटचे, रूप एक शुण्यो छे.
बुद्धिरचित मनोरथ मान ज, निश्चल बुद्धिप्रकाश मण्यो छे. १६३.

'संवेया वृत्त.

जेने हृदये ज्ञान प्रकाशे तमअंधारू थाय विनाश;

सदा असंग एक रस आत्मा ब्रह्मरूप ते स्वयंप्रकाश;

१ निश्चल नाम ब्रह्म तेने शास्त्रમાં બુદ્ધિનું 'પ્રકાશક' કહ્યું છે.

૧૭૧. શ્રીમદ્ભગવતગીતાના પંચમ અધ્યાયગત ૭ થી ૯ પર્યંત શ્લોકોનો અભિપ્રાય લઈને મંપકર્તાએ એ યુગલ સવેવા લખ્યા છે. તે મૂલશ્લોક:—

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रिय ।

सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥ ७ ॥

(કર્મરૂપયોગે યા બ્રહ્મનિષ્ઠારૂપ સંન્યાસ) યોગે જે યુક્ત છે, (અને તેનેદરી) શુદ્ધ (રાગદ્વેષરહિત) છે આત્મા (અન્ત:કરણ) જેનો, (અને તેનેદરી) જિ યાં છે (=વિષય ની પ્રવૃત્તાથી વિમુક્તતાને પ્રાપ્ત થયાં છે) બંને પ્રકારનાં ઈન્દ્રિય જેને, (અને એનેદરીને) જિત્યો છે આત્મા નામ સામ્યગતનારૂપ સ્વભાવ જેને તેથી બ્રહ્માયી

ना कई थयुं, न छे, नहि थारो; जगत मनोरथ मात्र विलास;
तेनी प्राप्ति निवृत्ति न जाइये, जेम शानीने कोई न आश. १६४.
देखे, शुणे, न देखे, न शुणे, सउ रस प्रहे, न ले चलीं स्वाद;
सुंधीं, स्पर्शीं, स्परें न, न सुंचे, वचन न बोले, करे धिवाद;
प्रहों, न प्रहे, मल न्यजे, न त्यागे, चाले नहि, चलीं धावे पाद;
युवतीं भोगवे, संन्यासी सदा, शिष्य ! जाण अद्भुत संवाद. १६५.

(एनो अभिप्राय कहे छे.)

निज विषयोमां इन्द्रिय घतें, तेओथी नहि मारो संग;
हुं इन्द्रिय नहि; मारू न इन्द्रिय, हुं साक्षी कूटस्थ असंग;
इन्द्रि विषय भोगवे त्यागे, लागे मने न किंचित् रंग;
ए निश्चय शानीनो, जेथी कर्ता भासे, करे न अंग ! १६६.

हे अंग ! नाम हे प्रिय ! अन्य अर्थ स्पष्ट. १६६.

आदि लईने स्तवपर्यन्त)सर्व भूतोना आत्मभूत (स्वरूपभूत) ययो छे (प्र यग्
रूप) आत्मा जेनो, [एवा सर्वात्मभावने प्राप्त ययो जे ब्रह्मवित्तम छे ते शरीरनो
याना (निर्वाह) अर्थ विधि अविधि पूर्वक] कई कर्म करे सते पण (ते पुण्य वा
अपुण्यरूप कर्मकरी) लेपानो नथी;—कर्मविषे अकर्मतानी दृष्टिए ते संबधने
पामतो नथी.

x x x x x x x x

नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ।

पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन्श्चन् गच्छन्स्वपन्धसन् ॥ ८ ॥

प्रलपन्विस्मृजन्वृहन्नुन्मिपन्निमिपन्नपि ।

इन्द्रियाणीन्द्रियायेंषु वर्तन्त इति धारयन् ॥ ९

अर्थ.—(आत्माना स्वमानने जाणनार जे ब्रह्मवित्) तत्त्ववित् (ते पोतानी
कूटस्थता असंगता अने अन्तर् बहिर् पूणताना दर्शनरूप प्रशाए) युक्त यई
(बहिर्) देखतो, सामळतो, स्पर्शतो, सुघतो, खातो, चालतो, सूतो, श्वास लेतो,
मूकतो, बोलतो, मल त्यागतो, लेतो, आपतो, उन्मेषनिमेषने करतो सतो पण,
इन्द्रियो ज इन्द्रियोना अर्थ जे शब्दस्पर्शादिविषयो तेमां रते छे, एम (अने पोते
दृष्टा, श्रोता, कर्ता, मोक्ता नथी एवा लक्ष्यवती वृत्तिने सर्वदा) धरतो सतो हुं
(साक्षी) किञ्चित् पण करतो ज नथी, एम माने छे.

૨૭૭. ય રીતિય આચાર્યે શિષ્યને ગોપ્ય તત્ત્વનો ઉપદેશ કન્યો; તો યણ શિષ્યનું મુખ અત્યંત પ્રસન્ન ન દેહીને આહું જાણ્યું; શિષ્ય કૃતાર્થ નથી થયો. જો કૃતાર્થ (થયો) હત તો તેનું મુખ પ્રસન્ન હત. યથી પુનઃ સ્થૂલ રીતિય ઉપદેશ કરવાને—

લયચિન્તન કહે છે:—

સવૈયા ઇત.

કાર્ય માટીનું છે ઘટ તેમાં માટી વાહ્યને અંતરૂ જેમ;
જલથી ફેન તરંગ બુદ્બુદા ઉપજે જલથી જુદા ન યમ;
જે જેનું કાર્ય જ છે તે તો કારણરૂપ પીછાળો તેમ;
કારણ ઈશ સકલનું તે હું, લયચિન્તન જાણો વિધ યમ. ૧૬૭.

ટીકા:—જેમ માટીનાં કાર્યની બહિરૂ અંતરૂ માટી છે, યથી માટીનાં સર્વ કાર્ય માટી સ્વરૂપ જ છે; ફેન આદિ જલનાં કાર્ય જલસ્વરૂપ જ છે, યમ જે જેનું કાર્ય છે, તે તે કારણ-સ્વરૂપથી ભિન્ન નથી. કિન્તુ કાર્ય કારણ જ સ્વરૂપ છે. અને સકલ પ્રવંચનું મૂલ કારણ ઈશ્વર છે, યથી સર્વ કાર્ય-પ્રવંચ ઈશ્વરરૂપથી ભિન્ન નથી; કિન્તુ સર્વ પ્રવંચનું સ્વરૂપ ઈશ્વર જ છે તે ઈશ્વર હું હું ય રીતિય લયચિન્તન (નામ કાર્યને કારણરૂપ) જાણી તું (યનું ધ્યાન) કર.

૨૭૮. લયચિન્તનનો સંક્ષેપથી આયો ક્રમ છે:—સ્થૂલ બ્રહ્માંડ સર્વ પંચીકૃત ભૂતોનું કાર્ય છે. ત્યાં જે પૃથ્વીનું કાર્ય તે પૃથ્વીસ્વરૂપ અને જલનું કાર્ય (તે) જલસ્વરૂપ, ય રીતિય જે ભૂતોનું જે કાર્ય તે તેનું જ સ્વરૂપ છે. ય રીતિય સર્વ સ્થૂલબ્રહ્માંડ પંચીકૃતભૂતસ્વરૂપ છે. તેમ પંચીકૃતભૂત યણ અપંચીકૃત-ભૂતોનાં કાર્ય છે. યથી અપંચીકૃત(ભૂત) સ્વરૂપ જ પંચીકૃત-ભૂત છે, ભિન્ન નથી. અને અંતઃકરણ આદિ સૂક્ષ્મચૃદિ યણ

અપંચીરૂતભૂતાનું કાર્ય હોવાથી, અપંચીરૂતભૂતસ્વરૂપ છે. તેમાં યંત્રકરણ સર્વ ભૂતાના સત્ત્વગુણનું કાર્ય છે, પૃથ્વી સત્ત્વગુણસ્વરૂપ છે. અને ભૂતાના રજોગુણઅંશનું કાર્ય પ્રાણ રજોગુણસ્વરૂપ છે. ગુદારન્દ્રિય પૃથ્વીના રજોગુણઅંશનું કાર્ય, તે પૃથ્વીના રજોગુણસ્વરૂપ; ગ્રાણન્દ્રિય પૃથ્વીના સત્ત્વગુણનું કાર્ય, તે સત્ત્વગુણસ્વરૂપ, ધમ રસના અને ઉપસ્થ જલના સત્ત્વગુણ-રજોગુણસ્વરૂપ; નેત્ર અને પાદ તેજના સત્ત્વગુણ-રજોગુણસ્વરૂપ; ત્વક્ અને પાણિ વાયુના સત્ત્વગુણ-રજોગુણસ્વરૂપ; શ્રોત્ર અને વાહુ આકાશના સત્ત્વગુણ-રજોગુણસ્વરૂપે; ૫ રીતિપ સર્વ સૂક્ષ્મષ્ટિ અપંચીરૂતભૂતસ્વરૂપ છે.

૨૭૨. ૫ ચિન્તન કરીને અપંચીરૂતભૂતાનું પણ લયચિન્તન કરે. પૃથ્વી જલનું કાર્ય છે, પૃથ્વી જલસ્વરૂપ છે. જલ તેજનું કાર્ય છે (પૃથ્વી) તેજસ્વરૂપ છે. તેજ વાયુનું કાર્ય હોવાથી વાયુસ્વરૂપ છે. (અને) વાયુ આકાશનું કાર્ય (હોવાથી) આકાશસ્વરૂપ છે. તમોગુણપ્રધાનપ્રકૃતિનું કાર્ય આકાશ પ્રકૃતિસ્વરૂપ છે.

(કારણસહિત માયાનાં જૂદાં જૂદાં નામ.)

અને માયાની અવસ્થાવિશેષ જ પ્રકૃતિ છે, પૃથ્વી પ્રકૃતિ માયાસ્વરૂપ છે. ૫ (જ) વસ્તુનાં પ્રધાન, પ્રકૃતિ, માયા, અવિદ્યા, અજ્ઞાન; ૫ નામ છે. સર્વ કાર્યને પોતાનામાં લીન કરીને પ્રલયમાં સ્થિત ઉદાસીનસ્વરૂપને પ્રધાન કહે છે. અને સૃષ્ટિના ઉપાદાન યોગ્ય તમોગુણપ્રધાનસ્વરૂપને પ્રકૃતિ કહે છે. જેમ દેશકાલાદિ સામગ્રીયિના દુર્ઘટ વધાર્થની ઇન્દ્રજાલેકરી ઉત્પત્તિ થાય છે, ત્યાં ઇન્દ્રજાલને માયા કહે છે; તેમ અસંગ અદ્વિતીય બ્રહ્મામાં ઇચ્છાદિક દુર્ઘટ છે, તેને કરે છે પૃથ્વી માયા કહે છે. સ્વરૂપને આચ્છાદન કરે છે

પથી અજ્ઞાન કહે છે. બ્રહ્મવિદ્યાપ નાશ થાય છે પથી અવિદ્યા કહે છે. અને સ્વતંત્ર કદા પણ રહે નહિ, કિન્તુ ચેતનને આધિત જ રહે છે પથી શક્તિ પણ કહે છે. એ સૌંતિય પ્રકૃતિ આદિક પ્રધાનતા જ ભેદ છે. જેમ પથી પ્રધાનરૂપ છે. તે પ્રધાન, બ્રહ્મચેતનની શક્તિ છે. જેમ પુરુષમાં સામર્થ્યરૂપ શક્તિ પુરુષથી ભિન્ન નથી, તેમ ચેતનમાં પ્રધાનરૂપ શક્તિ બ્રહ્મચેતનથી ભિન્ન નથી. એ પ્રકારે સર્વ અનાત્મપદાર્થોનો બ્રહ્મરૂપે લયચિન્તન કરીને “તે અદ્વય પ્રલ્લ હુ હું” એ ચિન્તન કરે.

(ધ્યાન અને જ્ઞાનનો ભેદ.)

૨૮૦. જેને મહાશાસ્ત્રવિચાર કન્યાથી પણ યુક્તિની મદ-તાદિક કોઈ પ્રતિબંધકથી અપરોક્ષ જ્ઞાન થાય નહિ, તેને એ

૧૭૨. યદ્વિ બ્રહ્મની શક્તિ બ્રહ્મથી ભિન્ન કહિયે તો અદ્વૈતધુતેથી વિદ્વદ યને, અને અભિન્ન કહિયે તો તેને બ્રહ્મરૂપ હોવાથી બ્રહ્મમાયે અભિન્નગુણે શક્તિ-નામેકરી કયન વ્યર્થ યશે. એથી શક્તિનો બ્રહ્મની સાથે ભેદ-અભેદ બંને કહેવું યશે. અને ભેદઅભેદ વે ધર્મ તન્ન-વ્રજાગ્નો પેટે એકઆધરૂપિયે રહે નહિ. પણ શક્તિનો બ્રહ્મની સાથે, —રજુમાયે સર્વના સ્વપની પેટે, —કલિતમ્ભેદ અને વાસ્તવઅભેદરૂપ અનિર્વચનીવ્રજાશાસ્ત્ર સંબંધ છે તેથી શક્તિનો વૈજ્ઞાનના રૂપ. આધરૂપ)થી વાસ્તવભેદના અભાવથી અને કોઈ પ્રમાણેથી ભિન્નગુણે ઈશ અમાર-થી તે શક્તિ બ્રહ્મથી નિન્ના નહિ, કિન્તુ જેમ કલિત સર્વ પરમાયે રજુરૂપ છે, તેમ શક્તિ પરમાયે બ્રહ્મરૂપા જ છે.

ધં. ધી. પુ

૧૭૩. માત્રમદર્શનરૂપે ઓક ઉગાનો છે. નાશારણ રીતિએ જ્ઞાનરૂપિ વિવર-થી, ઓકારી રૂપિયોનો મરૂપિય ઉત્સંહાર કરીને, તે મનનો મદરૂપેવરૂપિય રૂપિય ઉત્સંહાર કરીને-જાવ કરીને એકાવરૂપ છે (એવરૂપરૂ) ચિન્તન છે ‘પરુપ’ અપવા (એવરૂપે) વેલપ રાવદુ મરૂપ અરૂપિયમ મરૂપ (રૂપિ) એ, ‘પરુપ’ મદ અને ઓ મરૂપ એકલ અનુમરૂપ એ, ‘જા ન’

૧૭૪. આ મધિવચનો ત્રિવિધ પ્રતિબંધ કયા છે -

પુન. પુનર્વિચારેતિ ત્રિવિધપ્રતિબંધતઃ ।

ન પેલિ તત્પરિમિતેતદ્વાતિક સમ્યગ્ગીરિતમ ॥ ૩૮ ॥

વંચરૂપી ધ્યાનરૂપ ૧.

લયચિન્તનરૂપ ધ્યાન કશું છે. ધ્યાન અને જ્ઞાનનો આટલો મેદ છે:-જ્ઞાન તો પ્રમાણ અને પ્રમેયને અધીન છે, વિધિ (અસા-તાર્થશાપક વેદમાગ અથવા પુરુષપ્રેરક શાસ્ત્રવચન) અને પુરુષ-ની ઇચ્છાને અધીન નથી. અને ધ્યાન, વિધિને, અને પુરુષની ઇચ્છા અને વિશ્વાસ તથા હટને, અધીન છે. જેમ પ્રત્યક્ષજ્ઞાનમાં પ્રમાણ નેત્ર અને પ્રમેય ઘટાદિક, ત્યાં નેત્રનો અને ઘટનો સંબંધ થયાથી પુરુષની ઇચ્છા વિના પણ ઘટનું પ્રત્યક્ષજ્ઞાન થાય છે. ભાદ્રપદ શુદ્ધ ચતુર્થાંશિ દિને ચંદ્રદર્શનનો નિષેધ છે, વિધિ નથી. અને પુરુષને આ ઇચ્છા હોય છે:-'મને આજ ચંદ્રદર્શન ન થાય.' તો પણ કોઈ રીતિપ નેત્ર(રૂપ) પ્રમાણનો જો ચંદ્ર-(રૂપ) પ્રમેયસાથે સંબંધ થઈ જાય તો ચંદ્રનું પ્રત્યક્ષજ્ઞાન અવદ્ય જ થાય છે. પરિતિપ પ્રમાણપ્રમેયને અધીન જ્ઞાન છે; વિધિ અને ઇચ્છાને અધીન નથી. અને શાલગ્રામ વિષ્ણુરૂપ છે પર ધ્યાન કરે, તેને ઉત્તમ ફલ પ્રાપ્ત થાય છે, ત્યાં શાસ્ત્ર-પ્રમાણેકરી વિષ્ણુને તો ચતુર્ભુજ મૂર્તિ, શંખ, ચક્ર, ગદા, પદ્મ, લક્ષ્મીસહિત જાણે છે, અને નેત્રપ્રમાણે કરી શાલગ્રામને શિલા જાણે છે. તથાપિ વિધિ, વિશ્વાસ, (અને) ઇચ્છાથી શાલ-ગ્રામ વિષ્ણુ છે પર ધ્યાન થાય છે. પરંતુ તે ધ્યાન નાના

બહુવાર (તત્ત્વને) વિચારે સતે પણ ત્રિવિધ પ્રતિબંધ(ના બલ)થી તત્ત્વને નથી જાણતો (સાક્ષાત્કાર નથી થતો), એમ વાર્તિકમાં સારી રીતિપ કહ્યું છે.—કાર્યને અનુકૂલ કોઈ ધર્મનો વિષટક—વિગાહનાર નિવારનાર—તેને 'પ્રતિબંધ' કહે છે. પ્રારબ્ધેકરી પ્રાપ્ત થયેલા પ્રતિબંધ ત્રણ પ્રકારના છે:—ભૂતમાધિને, વર્તમાન. પ્રસ્તુતકાર્ય જે જ્ઞાન તેને અનુકૂલ ધર્મ—શ્રવણ-મનન નિદિધ્યાસનવિધે યોગ્યત્વ—તેને જે વિગાહે તેને 'પ્રતિબંધ' કહે છે. પૂર્વે અનુભવેલા વિષયે અગત્યેકરી પુનઃ પુનઃ સ્મરણ તે 'ભૂતપ્રતિબંધ'. ફલાભિભિન્ધિત પ્રારબ્ધશેષ, વ્રહ્મલોકેચ્છા, તે 'માધિ-પ્રતિબંધ.' વિપયાસક્તિ, પ્રજ્ઞા (બુદ્ધિ) માન્ધ, કુતર્ક, વિપર્યય, દુરાગ્રહ, પર ચતુર્વિધ 'વર્તમાનપ્રતિબંધ' છે.

પ્રકારનું છે. કહિં તો અન્યવસ્તુનું અન્યરૂપથી ધ્યાન, - જેમ શાલગ્રામનું વિષ્ણુરૂપથી ધ્યાન-પને 'પ્રતીકધ્યાન' કહે છે. અને વૈકુંઠલોકવાસી વિષ્ણુનું શંખચક્રાદિકસહિત ચતુર્ભુજ મૂર્તિરૂપે ધ્યાન છે, ત્યાં અન્યનું અન્યરૂપથી ધ્યાન નથી, કિન્તુ ધ્યેયરૂપના અનુસાર એ ધ્યાન છે. વૈકુંઠવાસી વિષ્ણુનું સ્વરૂપ પ્રત્યક્ષ તો છે નહિ, કેવલ શાસ્ત્રેકરી જણાય છે. અને શાસ્ત્રે શંખચક્રાદિકસહિત જ વિષ્ણુનું સ્વરૂપ કહ્યું છે, એથી ધ્યેયસ્વરૂપને અનુસાર જ એ ધ્યાન છે. વિધિ-વિશ્વાસ-ઈચ્છા વિના ધ્યાન ધ્યાય નહિ. 'આ ઉપાસના કરે,' એવું પુસ્તકનું પ્રેક્ષ વચન, તે વિધિ કહેવાય છે. તે વચનમાં શ્રદ્ધા, વિશ્વાસ કહેવાય છે. અને અંતઃકરણની કામનારૂપ રજોગુણની વૃત્તિ, તે ઈચ્છા કહેવાય છે. એ ત્રણ ધ્યાનના હેતુ છે; જ્ઞાનના નથી. અને ધ્યાન હઠેકરી થાય છે; જ્ઞાનમાં હઠની અપેક્ષા નથી. કેમકે નિરંતર ધ્યેયાકાર ચિત્તની વૃત્તિને ધ્યાન કહે છે; ત્યાં વૃત્તિમાં વિક્ષેપ હોય તો હઠેકરી વૃત્તિની સ્થિતિ કરે, અને જ્ઞાનરૂપ અંતઃકરણની વૃત્તિપ તત્કાલ આવ-રણમંગથયેથી, વૃત્તિની સ્થિતિનો ઉપયોગ નથી, એથી (જ્ઞાનવિષે) હઠની અપેક્ષા નથી.

(અહંગ્રહ-ઉપાસના)

વૈકુંઠવાસી ચતુર્ભુજ વિષ્ણુના ધ્યાનની પેઠે, 'હું બ્રહ્મ છું.' એ ધ્યાન પણ ધ્યેયને અનુસાર છે. પ્રતીક(ધ્યાન) (ધ્યાન)નહિ, પરંતુ એ અહંગ્રહધ્યાન છે. [ધ્યેયસ્વરૂપનું પોતા-સાથે અભેદ કરીને ચિન્તન અહંગ્રહધ્યાન કહેવાય છે.] જે પુસ્તકને અપરોક્ષજ્ઞાન ન થાય, અને ઘેદની આજ્ઞારૂપ વિધિમાં વિશ્વાસ કરીને હઠેકરી નિરંતર 'હું બ્રહ્મ છું' એ

वृत्तिनी स्थितिरूप 'अहंप्रहृष्यान' करे, तेने पण प्रान प्राप्त
यईने मोक्षनी प्राप्ति थोंय छे. १६७.

२८१. (प्रणवतुं अहंप्रहृष्यान.)

अन्यरीतिप अहंप्रहृउपासना कहे छे.

सायैवा वृत्त.

ध्यान अहंप्रहृ प्रणवरूपतुं कहुं सुरेश्वर श्रुतिअनुसार;

अक्षरप्रणव ब्रह्म ममरूप ते, इम अनुलव निजमतिगति धार;

एना समान अन्य ध्यान नहि; पंचीकरणप्रकार विचार;

जे मुनि करे उपामन ए ते नाजे द्रुतं मसार अपार. १६८.

टीका:—हे शिष्य ! 'प्रणवरूप' नाम अक्षररूपतुं
अहंप्रहृ ध्यान, मांडून्व्य प्रश्न आदिक श्रुतिने अनुसार सुरे-

१७१. वाप्य धूमतया बुद्ध्या तत्रांगारानुमानतः ।

यद्विद्यदृच्छुया लब्ध. स संवादिभ्रमो मतः ॥ ७ ॥

पंचदशी-ध्यानदीप. ९.

यद्यपि साधनचतुष्टयसंपन्न, सम्यक्श्रवणमनननिदिध्यासनना अनुष्ठानरान्
अधिसारीने 'तत् त्वं' पदना अर्थना विवेचनपूर्वक महापाक्यनो अर्थ (ब्रह्म-
आमानी एतता) तेना अपरोक्षज्ञानेरी ब्रह्मभाव-लक्षण मोक्ष थाय छे, एवो
वेदान्तशास्त्ररिपे प्रतिपादित सिद्धान्त छे, तथापि कोई बुद्धिमांथादि प्रतिबन्धे-
करी वाक्यार्थविषया अपरोक्षप्रमिति (यथार्थअनुभवज्ञान) उत्पन्न नहि यई,
त्या मोक्षफलक-उपासनाद्वारा ते प्रमितिने उत्पन्न करवा ब्रह्मरूपनी उपासनाए
पण (ज्ञान यई) मोक्ष थाय छे. ए मार्ग दर्शाने छे. तेविपे 'सत्रादिभ्रम' नु
दृष्टान्त आपे छे —

(कोईक प्रदेशमां स्थित) वाप्य(वाक)ने धूमत्व (धूमाटापणुं) मानीने तेना
मूलप्रदेशमां अंगार(अग्नि)ना अनुमानधी देवगतिए यद्वि (अग्नि) मळे छे.
त्यारे वाप्यविषय धूमज्ञानने 'सत्रादिभ्रम' मनाय छे.

ए दृष्टान्तनी दार्ष्टान्तविपे योजना आरी छे:—जेम वाप्यने धूम गणी-ज्या
धूम होय त्या अग्नि होय-ए अनुमानधी अग्नि लेवा गयेला पुरुषने, वाप्य ए
धूम न हतो तेथी मिथ्याज्ञान हतु, तो पण तेद्वारा अग्निनी प्राप्तिरूप फल
देवगतिए थाय छे, तेम 'अहंप्रहृ ध्यान' थी ब्रह्मात्मस्वज्ञान यई मोक्ष थाय छे.

१ तरित, शक्ति, विनाविल्वे

શ્વરાચાર્યે કહ્યું છે, તે તું કર તેનો સંક્ષેપથી પ્રકાર આ છે:-
 પ્રણવઅક્ષર બ્રહ્મસ્વરૂપ છે, 'તે પ્રણવરૂપ બ્રહ્મ હું છું.' એ
 રીતિએ 'અનુલવ' નામ ક્ષણમાત્રઅંતરાયરહિત નિજમતિની
 'ગતિ' નામ વૃત્તિ, ધાર, સ્થિત કર. એના સમાન અન્ય ધ્યાન
 છે નહિ. અને એ ધ્યાનનો પ્રકાર નામ વિશેષરીતિ સુરેશ્વર-
 રૂત પંચીકરણ નામના ગ્રંથેકરી વિચાર. ચતુર્થ પાદ સ્પષ્ટ.
 ૨૮૨. (પ્રણવ-ૐઉપાસનાની રીતિ.)

યદ્યપિ પ્રણવઉપાસના ઘડુ ઉપનિષદોમાં છે; તથાપિ
 (કારિકાસહિત) માંડૂક્યઉપનિષદમાં વિશેષ છે. તેના
 ધ્યાન્યાનમાં ભાગ્યકામ અને આનન્દગિરિએ તેની રીતિ સ્પષ્ટ
 લિખી છે. તે જ રીતિ વાર્તિકકારે (સુરેશ્વરાચાર્ય) પંચીકરણ-
 માં લિખી છે. તથાપિ તે ગ્રંથના વિચારોમાં જેમની વુદ્ધિ
 સમર્થ છે નહિ, તેમને અથે પ્રણવ ઉપાસનાની રીતિ અમે
 લલિયે છિયે. બે પ્રકારે પ્રણવનું ચિન્તન ઉપનિષદમાં કહ્યું છે;
 એક તો પરબ્રહ્મરૂપે પ્રણવનું ચિન્તન કહ્યું છે; અને વીજું
 અપરબ્રહ્મરૂપે કહ્યું છે. [નિર્ગુણબ્રહ્મને પરબ્રહ્મ કહે છે; અને
 સગુણબ્રહ્મને અપરબ્રહ્મ કહે છે.] પરબ્રહ્મરૂપે પ્રણવનું ચિન્તન
 કરે તે મોક્ષને પ્રાપ્ત થાય છે. અને અપરબ્રહ્મરૂપથી પ્રણવનું
 ચિન્તન કરે તે બ્રહ્મલોકને પ્રાપ્ત થાય છે. એમ નિર્ગુણ-સગુણ
 ભેદથી પ્રણવઉપાસના બે પ્રકારની છે.

૨૮૩. (નિર્ગુણરૂપ પ્રણવઉપાસના.)

તેમાં નિર્ગુણઉપાસનાની રીતિ લલિયે છિયે, સગુણ
 ની નહિ. કેમકે, જેને બ્રહ્મલોકની કામના હોય તેને
 નિર્ગુણઉપાસનાથી પણ (બ્રહ્મલોકની) કામનારૂપ પ્રતિવંધકથી,
 જ્ઞાનદ્વારા તત્કાલ મોક્ષ થાય નહિ, કિન્તુ બ્રહ્મલોકની જ
 પ્રાપ્તિ થાય છે. ત્યાં હિરણ્યગર્ભના સમાન ભોગોને ભોગવીને

જ્ઞાન થાય ત્યારે મોક્ષ થાય. અને જેને બ્રહ્મલોકની કામના નહિ હોય તેને આ લોકમાં જ જ્ઞાન થઈને મોક્ષ થાય છે. એ રીતિએ સમુજ્ઞઉપાસનાનું ફલ પણ નિર્ગુણઉપાસનાને અંતર્ભૂત છે. ઈથી નિર્ગુણ ઉપાસનાનો પ્રકાર કહિયે છિયે:-જે કઈ કારણકાર્યવસ્તુ છે તે ઐકારસ્વરૂપ છે; ઈથી સર્વરૂપ ઐકાર છે. સર્વ પદાર્થોમાં નામ અને રૂપ એ ભાગ છે. ત્યાં રૂપમાગ પોતપોતાના નામમાગથી જૂદો નથી, કિન્તુ નામસ્વરૂપ જ રૂપમાગ છે. કેમકે પદાર્થનું 'રૂપ' નામ આકાર, તેનું નામવતે નિરૂપણ કરીને ગ્રહણ ઘા ત્યાગ થાય છે, નામ જાણ્યા વિના કેવલ આકારથી વ્યવહાર સિદ્ધ થાય નહિ, ઈથી નામ જ સાર છે. અને આકારનો નાશ થયેથી પણ નામ શેષ રહે છે. જેમ ઘટનો નાશ થયેથી મૃત્તિકા શેષ રહે છે, ત્યાં ઘટ મૃત્તિકાથી પૃથક્ વસ્તુ નથી, મૃત્તિકાસ્વરૂપ છે; તેમ આકારનો નાશ થયેથી મૃત્તિકાની પેઠે શેષ રહે જે નામ, તેથી આકાર પૃથક્ નથી, -નામસ્વરૂપ જ આકાર છે. કિંચા જેમ ઘટશરાવાદિકોમાં મૃત્તિકા અનુગત છે, અને ઘટશરાવાદિક પરસ્પર વ્યભિચારી છે; ઈથી ઘટશરાવાદિક મિથ્યા, તેઓમાં અનુગત મૃત્તિકા સત્ય છે: તેમ ઘટઆકાર અનેક છે તે સર્વનું 'ઘટ' એ એ અક્ષર(નું)નામ એક છે; તે આકાર પરસ્પર વ્યભિચારી, અને સર્વ ઘટના આકારમાં નામ એક અનુગત છે; ઈથી મિથ્યા આકાર સત્ય નામથી પૃથક્ નથી. એ રીતિએ સર્વ પદાર્થોના આકાર પોતપોતાના નામથી મિથ્ય નથી, કિન્તુ નામસ્વરૂપ જ આકાર છે. તે સર્વ નામ ઐકારથી મિથ્ય નથી, કિન્તુ ઐકારસ્વરૂપ જ નામ છે કેમકે ઘાચક શબ્દને નામ કહે છે, અને લોકવેદના સર્વ શબ્દ ઐકારથી ઉત્પન્ન થયા છે, એ શ્રુતિમાં પ્રસિદ્ધ છે. સંપૂર્ણ કાર્ય,

કારણસ્વરૂપ હોય છે, યથી ઐકારનાં કાર્ય જે વાચક શબ્દ-રૂપ નામ તે ઐકારસ્વરૂપ છે. ય રીતિય રૂપભાગ જે પદાર્થોનો આકાર તે તો નામસ્વરૂપ છે, અને સર્વ નામ ઐકારસ્વરૂપ છે. યથી સર્વસ્વરૂપ ઐકાર છે.

૨૮૪. (ઐકાર અને બ્રહ્મનો અમેદ.)

જેમ સર્વસ્વરૂપ ઐકાર છે, તેમ સર્વસ્વરૂપ બ્રહ્મ છે, યથી ઐકાર બ્રહ્મરૂપ છે. કિંવા ઐકાર બ્રહ્મનો વાચક છે, બ્રહ્મ વાચ્ય છે. વાચ્યનો અને વાચકનો અમેદ હોય છે. યથી યણ ઐકાર બ્રહ્મરૂપ છે. અને વિચારદષ્ટિથી ઐ (ઓ) અક્ષરબ્રહ્મવિષે અધ્યસ્ત છે, બ્રહ્મ તેનું અધિષ્ઠાન છે. અધ્યસ્તનું સ્વરૂપ અધિષ્ઠાનથી અન્ય હોય નહિ, યથી યણ ઐકાર બ્રહ્મ-સ્વરૂપ છે. યથી ઐકારને બ્રહ્મરૂપે કરીને ચિન્તન કરે.

૨૮૫ (બ્રહ્મ અને જીવના ચાર ચાર પાદ.)

બ્રહ્મરૂપ ઐકારને આત્માસાથે યણ અમેદ ચિન્તન કરે. કેમકે આત્માનો બ્રહ્મસાથે મુખ્ય (સ્વરૂપે) અમેદ છે. અને બ્રહ્મને ચાર પાદ છે. તેમ આત્માને યણ ચાર પાદ છે. ['પાદ' નામ ભાગનું છે. તેને જ અણ યણ કહે છે] વિરાટ્, હિરણ્યગર્ભ, ઈશ્વર, અને તત્પદનું લક્ષ્ય ઈશ્વરસાક્ષી, ય ચાર પાદ બ્રહ્મના છે. વિશ્વ, તેજસ, પ્રાણ, અને ત્વપદનું લક્ષ્ય જીવસાક્ષી, ય ચાર પાદ આત્માના છે. જીવસાક્ષીને જે તુરીય (યણ) કહે છે.

(વિરાટ્ અને વિશ્વનાં સાત અગ)

સમષ્ટિસ્થૂલપ્રપચસહિત ચેતન વિરાટ્ કહેવાય છે. યષ્ટિસ્થૂલઅભિમાની વિશ્વ કહેવાય છે. વિરાટનો અને વિશ્વનો ઉપાધિ સ્થૂલ છે, યથી વિરાટ્રૂપ જ વિશ્વ છે, વિરાટ્ થી ભિન્ન નથી. વિરાટ્રૂપ વિશ્વનાં સાત અગ છે, સ્વર્ગ

લોક મૂઢાં છે, સૂર્ય નેત્ર છે, વાયુ પ્રાણ છે, આકાશ ધડ (કવંચ) છે; સમુદ્રાદિરૂપ જલ મૂત્રસ્થાન છે, પૃથિવી પાદ છે, જે અગ્નિમાં હોમ કરિયે તે અગ્નિ મુલ છે, ૫ સાત અંગ (વિરાટરૂપ વિશ્વનાં માંદ્વિક્યમાં કયાં છે. યદપિ સ્વર્ગ-લોખાદિક વિદ્યનાં અંગ યને નહિ, તથાપિ વિરાટનાં અંગ છે. તે વિરાટસાયે વિશ્વનો અમેદ છે. ૫થી વિશ્વનાં અંગ કયાં છે.

(વિરાટરૂપ વિશ્વનાં મુલ.)

તેમ વિરાટ(રૂપ)વિશ્વનાં ઓગળીશ મુલ છે-પંચપ્રાણ, પચકર્મઇન્દ્રિય, પંચજ્ઞાનઇન્દ્રિય, ચાર અતકરણ; ૫ ઓગળીશ, મુલની પેટે, ઓગળાં સાધન છે, ૫થી મુલ કહેવાય છે. ૫ ઓગળીશથી, સ્થૂલશબ્દાદિઓને, વાહ્યવૃત્તિકરીને, જાગ્રત અવસ્થાવિષે, ઓગળે છે, ૫થી વિગટરૂપ વિશ્વ સ્થૂલનો ઓક્તા, અને વાહ્યવૃત્તિ (વહિઃશ્રવ) કહેવાય છે, અને જાગ્રત અવસ્થાવાહ્યો કહેવાય છે.

૨૮૬. પ્રાણાદિક ઓગળીશ જે ઓગળાં સાધન છે, તેઓમાં શ્રોત્રાદિક (દશ) ઇન્દ્રિય, અને અતકરણ ચાર, ૫ ચતુર્દશ પોતપોતાના વિષય અને પોતપોતાની દેવતાનુ સાહાય્ય ચહાય છે. દેવતા (અને) વિષયના સાહાય્યવિના કેવલ ૫ઓથી (ઇન્દ્રિયો અને અતકરણ મઝી ચતુર્દશથી) ઓગ થાય નહિ. ૫થી પચપ્રાણ અને ચતુર્દશત્રિપુટી (ઇન્દ્રિયો અતકરણાદિ ૧૪ + તેમના વિષય ૧૪ + તેમની દેવતા ૧૪ ૫મ કરી=૪૨ વિરાટ-રૂપ વિશ્વનાં મુલ કહેવાય છે. [વ્રજના સમુદાયનું નામ ત્રિપુટી છે.] -

(ઇન્દ્રિય, વિષય અને દેવતાની ચતુર્દશ ત્રિપુટી.)

તે ત્રિપુટી આ રીતિ ૫ વહી છે.-શ્રોત્રઇન્દ્રિય અધ્યાત્મ છે, અને તેનાં વિષય શબ્દ અધિભૂત છે, દિશાની અમિમાનિની

દેવતા અધિદેવ છે. [આ પ્રકરણમાં ત્રિયાશકિતિવાલાં અને જ્ઞાનશકિતિવાલાં ઇન્દ્રિય અને અંતઃકરણ અધ્યાત્મ કહેવાય છે: તેમના વિષયો અધિભૂત કહેવાય છે; અને તેમની સહાયક દેવતા અધિદેવ કહેવાય છે.]

ત્વચ્છાન્દ્રિય અધ્યાત્મ છે, તેનો વિષય સ્પર્શ અધિભૂત છે, અને વાયુતત્ત્વની અભિમાનિની દેવતા અધિદેવ છે. નેત્રઇન્દ્રિય અધ્યાત્મ છે, રૂપ અધિભૂત છે, સૂર્ય અધિદેવ છે. રસનાન્દ્રિય અધ્યાત્મ છે, રસ અધિભૂત છે, વરુણ અધિદેવ છે. ગ્રાણન્દ્રિય અધ્યાત્મ છે, ગંધ અધિભૂત છે, અશ્વિનીકુમાર અધિદેવ છે. [અને વાર્ષ્ણિકકાર સુરેશ્વરાચાર્યે પૃથિવીની અભિમાનિની દેવતા ગ્રાણની અધિદેવ કહી છે, તે પણ વને છે. કેમકે પૃથિવીથી ગ્રાણની ઉત્પત્તિ છે યથી પૃથિવી (દેવતા) અધિદેવ કહી છે: અને સૂર્યની વડવાની (ઘોડોરૂપ થયેલી સ્ત્રીની) નાસિકાથી અશ્વિનીકુમારની ઉત્પત્તિ કહી છે; યથી નાસિકાનો અધિદેવ કહી અશ્વિનીકુમાર જ કહે છે.] વાક્-ઇન્દ્રિય અધ્યાત્મ છે, વક્તવ્ય અધિભૂત છે, અગ્નિદેવતા અધિદેવ છે. હસ્તન્દ્રિય અધ્યાત્મ છે, પદાર્થનું ગ્રહણ અધિભૂત છે, ઇન્દ્ર અધિદેવ છે. પાદન્દ્રિય અધ્યાત્મ છે, ગમન અધિભૂત છે, અને વિષ્ણુ અધિદેવ છે. ગુદ(ગોલકમાં સ્થિત પાયુ)ન્દ્રિય અધ્યાત્મ, મલત્યાગ અધિભૂત, યમ અધિદેવ છે. ઉપસ્થન્દ્રિય અધ્યાત્મ, ગ્રામ્યધર્મના (મૈથુનક્રિયારૂપ પશુધર્મના) સુલની ઉત્પત્તિ અધિભૂત, પ્રજાપતિ અધિદેવ છે. મન અધ્યાત્મ છે, મનનો વિષય (મન્તવ્ય) અધિભૂત છે, ચંદ્રમા અધિદેવ છે. બુદ્ધિ અધ્યાત્મ છે, વોદ્ધવ્ય અધિભૂત છે, વૃહસ્પતિ અધિદેવ છે. [જ્ઞાનનો વિષય વોદ્ધવ્ય કહેવાય છે.] અહંકાર અધ્યાત્મ છે, અહંકારનો વિષય અધિભૂત છે, રુદ્ર

૧ તરંગ.) વ્યષ્ટિ ક્ષમષ્ટિ અને ઐક્યારની માત્રાઓનું અભેદચિત્તન. ૪૦૭

અધિદેવ ટે ચિત્ત અપ્યાત્મ છે, ચિન્તનના વિષય અધિભૂત છે, ક્ષેત્રજ જે સાક્ષી તે અધિદેવ છે એ ચતુર્દશ ત્રિપુટી અને પ્રચપ્રાણ એ ઓગણીશ વિરાટરૂપ વિશ્વના મુલ છે.

૨૮૭ (વિશ્વ વિરાટ અને ઐક્યારની 'અ' માત્રાનું
અભેદચિન્તન.)

જેમ વિરાટસાયે વિશ્વના અભેદ છે, તેમ ઐક્યારની પ્રથમ માત્રા જે અકાર, તેનો પણ વિરાટરૂપ વિશ્વસાયે અભેદ છે કેમકે બ્રહ્મના ચારે પાદમા પ્રથમ પાદ વિરાટ છે, અને આત્માના ચાર પાદમા પ્રથમ વિશ્વ છે, તેમ ઐક્યારની ચાર માત્રારૂપ (ચાર) પાદમા પ્રથમ પાદ અકાર છે એથી 'પ્રથમતા' ધર્મ એ ત્રણેમા સમાન હારાથી, વિશ્વ, વિરાટ, (અને) અકાર, એમનો અભેદ ચિત્ત કરે

૨૮૮ જે સાત અંગ અને ઓગણીશ મુલ વિશ્વના કહ્યાં તે જ સાત અંગ અને ઓગણીશ મુલ તૈજસના પણ જાણવાને યાગ્ય છે પરંતુ આટલા ભેદ છે - વિશ્વના જે અંગ અને મુલ છે, તે તો ઈન્દ્રિયરૂપ છે, અને તૈજસના જે ઈન્દ્રિય, વિષય અને દેવતારૂપ ત્રિપુટી અને મૂર્દાદિક અંગ તે મનામય છે તેજસ્વતા ભાગ સૂક્ષ્મ છે યદ્યપિ ભાગ નામ સુલ અથવા દુલના જ્ઞાનનુ છે, તેનેવિષે સ્થૂલના અને સૂક્ષ્મતા કહેવી વને નહિ, તથાપિ વાહ્ય જે શબ્દાદિ વિષય છે, તેઓના સ્વધર્મી, જે સુલ અથવા દુલના સક્ષા કાર તેને સ્થૂલ (ભાગ) કહેવાય છે અને માનસ જે શબ્દાદિ તેઓના સ્વધર્મી જે ભાગ થાય તે સૂક્ષ્મ (ભાગ) કહેવાય છે એ જ કારણથી વિશ્વ તો સ્થૂલના ભાક્ષા શુનિવિષે કહ્યા છે અને તૈજસ સૂક્ષ્મના ભાક્ષા કહ્યા છે કેમકે તેજસના ભોગ્ય જે શબ્દાદિક છે તે તો માનસ છે એથી સૂક્ષ્મ છે અને તેઓની અપેક્ષા કરીને, વિશ્વના ભોગ્ય,

વાહ્ય શબ્દાદિક છે તે સ્થૂલ છે, અને વિશ્વ વહિઃપ્રજ્ઞ છે, તૈજસ અંતઃપ્રજ્ઞ છે. કેમકે જે વિશ્વની અંતઃકરણની વૃત્તિરૂપ પ્રજ્ઞા છે, તે વહિરૂ જાય છે, અને તૈજસની નથી જતી.

૨૮૯. (તૈજસ, હિરણ્યગર્ભ અને ઐકારની 'ઉ'માત્રાનું અભેદચિન્તન.)

જેમ વિશ્વનો અને વિરાટનો અભેદ છે, તેમ તૈજસને પણ હિરણ્યગર્ભરૂપ જાણે. કેમકે તૈજસનો સૂક્ષ્મ ઉપાધિ છે, અને હિરણ્યગર્ભનો પણ સૂક્ષ્મ જ છે, યથી વંનેની એકતા જાણે. તૈજસ-હિરણ્યગર્ભની એકતા જાણીને ઐકારની દ્વિતીય-માત્રા ઉચ્ચારસાથે તેમના અભેદ ચિન્તન કરે. કેમકે આત્માના ચાર પાદમાં દ્વિતીયપાદ તૈજસ છે, બ્રહ્મના પાદમાં હિરણ્યગર્ભ ધીજો પાદ છે, ઐકારની માત્રામાં દ્વિતીયમાત્રા ઉચ્ચાર છે. 'દ્વિતીયતા' ણેમાં સમાનધર્મ છે, યથી ણેની એકતા ચિન્તન કરે.

૨૯૦. (પ્રાજ્ઞ, ઈશ્વર અને ઐકારની 'મ'માત્રાનું અભેદચિન્તન.)

અને પ્રાજ્ઞને ઈશ્વરરૂપ જાણે. કેમકે પ્રાજ્ઞનો કારણ-ઉપાધિ છે. અને ઈશ્વરનો પણ કારણઉપાધિ છે. ઈશ્વર અને પ્રાજ્ઞ, પાદોમાં તૃતીય છે. ઐકારની તૃતીયમાત્રા મ્કાર છે. 'ત્રીજાપણું' ણેમાં સમાનધર્મ છે, યથી ણેની એકતા જાણે. અને એ પ્રાજ્ઞ પ્રજ્ઞાનધન છે. કેમકે જાગ્રત્ અને સ્વપ્નનાં જેટલાં જ્ઞાન છે તે સુષુપ્તિવિષે 'ધન' નામ એક અવિચારરૂપ થઈ જાય છે, યથી પ્રાજ્ઞધન કહેવાય છે; અને આનંદમુક્ત પણ એ પ્રાજ્ઞ શ્રુતિમાં કહ્યો છે. કેમકે અવિચાર આવૃત્ત જે આનંદ છે, તેને એ પ્રાજ્ઞ ભોગવે છે, યથી આનંદમુક્ત કહેવાય છે.

જેમ તૈજસ અને વિશ્વના ભોગ ત્રિપુટીય થાય છે, તેમ

પ્રાણના ભોગની પણ ત્રિપુટી ફહેવાય છે. ચેતનના પ્રતિવિંવ સહિત જે અવિદ્યાની ઘૃત્તિ છે તે અધ્યાત્મ છે, અજ્ઞાને આવૃત્ત જે સ્વરૂપ આનંદ તે અધિભૂત છે, અને ઈશ્વર અધિદેવ છે. એ રીતિએ વિશ્વ તો વહિ:પ્રજ્ઞ છે, તૈજસ અંત:પ્રજ્ઞ છે, અને પ્રાજ્ઞ પ્રજ્ઞાનઘન છે.

૨૯૧. (ઉપાધિહૃત જ મેદ. વાસ્તવ એકતા.)

એવાં જે ઘ્રણેનો મેદ છે તે ઉપાધિપકરીને છે. વિશ્વના સ્થૂલ, સૂક્ષ્મ, અને અજ્ઞાન, (એ) ઘ્રણ ઉપાધિ છે. અને તૈજસના, સૂક્ષ્મ અને અજ્ઞાન એ વે ઉપાધિ છે. અને પ્રાણના એક અજ્ઞાન ઉપાધિ છે. એ રીતિએ ઉપાધિની ન્યૂનતા-અધિકતાએ ઘ્રણનો મેદ છે. પરમાર્થેકરીને સ્વરૂપે મેદ નથી.

વિશ્વ, તૈજસ, પ્રાણ, એ ઘ્રણેધિએ અનુગત જે ચેતન છે, તે પરમાર્થેકરી ઘ્રણ ઉપાધિના સંબંધથી રહિત છે. ઘ્રણે ઉપાધિનું અધિષ્ઠાન તુરીય છે. તે વહિ:પ્રજ્ઞ નથી, અને અંત:પ્રજ્ઞ નથી, અને પ્રજ્ઞાનઘન પણ નથી; કર્મઇન્દ્રિયનો અને જ્ઞાન-ઇન્દ્રિયનો વિષય નહિ; અને બુદ્ધિનો વિષય નહિ; કોઈ શસ્ત્રનો વિષય નહિ; એવાં જે તુરીય છે, તેને પરમાત્માનો ચતુર્થ પાદ, ઈશ્વરસાક્ષી, શુદ્ધબ્રહ્મરૂપ, જાણે.

૨૯૨. (પરમાર્થ અને અપરમાર્થ એવાં આત્માનાં અને અંકારનાં વે સ્વરૂપનું અભેદચિન્તન)

એ રીતિએ વે પ્રકારનું આત્માનું સ્વરૂપ કહ્યું. એક તો પરમાર્થરૂપ છે અને એક અપરમાર્થરૂપ છે. ઘ્રણ પાદ તો અપરમાર્થરૂપ છે; અને એક પાદ, -તુરીય, -પરમાર્થરૂપ છે. જેમ આત્માનાં વે સ્વરૂપ છે, તેમ અંકારનાં પણ વે સ્વરૂપ છે. અકાર, ઉકાર, અને મકાર, એ ઘ્રણ માત્રારૂપ જે વર્ણ છે, તે તો અપરમાર્થરૂપ છે; અને ઘ્રણે માત્રાવિષે ધ્યાપક, અસ્તિ-

માતિપ્રિયરૂપ જે અધિષ્ઠાનચેતન છે, તે પરમાર્થરૂપ છે. જે ઐકારનું પરમાર્થરૂપ છે તેને શ્રુતિવિષે 'અમાત્ર' શબ્દ-કરીને કહ્યું છે. કેમ કે તે પરમાર્થસ્વરૂપવિષે 'માત્રા' વિભાગ છે નહિ, યથી 'અમાત્ર' કહેવાય છે. ય રીતિય વે સ્વરૂપવાળો જે ઐકાર છે, તેનો વે સ્વરૂપવાળા આત્માની સંગે અભેદ જાણે.

વ્યપ્તિ અને સમપ્તિ જે સ્થૂલપ્રપંચ, તે સહિત વિશ્વ અને વિરાટનો અકારસાથે અભેદ જાણે. આત્માના જે પાદ છે તેઓનાવિષે 'વિશ્વ આદિ' છે; અને ઐકારની માત્રાવિષે 'અ'કાર-આદિ છે, યથી વેને યક જાણે. સૂક્ષ્મપ્રપંચસહિત જે હિરણ્ય-ગર્ભરૂપ તૈજસ છે, તેને ઉકારરૂપ જાણે. તૈજસ યણ ઘીજો છે અને ઉકાર યણ ઘીજો છે, યથી વેને યક જાણે. કારણ ઉપાધિસહિત જે ઈશ્વરરૂપ પ્રાણ છે, તેને મકારરૂપ જાણે. જેમ ઈશ્વરરૂપ પ્રાણ ઘીજો છે તેમ મકાર યણ ઘીજો છે, યથી ઈશ્વરરૂપ પ્રાણ અને મકારને યક જાણે. (ય) ઘ્રણેવિષે અનુગત (વ્યાપેલો) જે પરમાર્થરૂપ તુરીય છે તેને, ઐકાર ઘ્રણની ઘ્રણ માત્રાવિષે અનુગત જે ઐકારનું પરમાર્થરૂપ 'અમાત્ર' છે, તેસાથે અભિન્ન જાણે. જેમ વિશ્વાદિક વિષે તુરીય અનુગત છે, તેમ અકારાદિક ઘ્રણે માત્રાવિષે અમાત્ર અનુગત છે; યથી ઐકારના અમાત્રરૂપને અને તુરીયને યક જાણે. ય રીતિય આત્માના પાદ અને ઐકારની જે માત્રા છે તેઓની યકતા જાણીને લયચિન્તન કરે.

૨૧૩. (લયચિન્તન અને ઐકારનું નિર્ગુણ ઉપાસન.)

તે લયચિન્તન કહેવાય છે. વિશ્વરૂપ જે અકાર છે તે તૈજસરૂપ ઉકારથી ભિન્ન નથી, વિન્તુ ઉકારરૂપ છે યયું જે ચિન્તન કર્યું તે આ સ્થાનમાં 'લય' કહેવાય છે.

પણું જ અન્ય માત્રાવિષે પણ જાણી લેવું. અને જે ઉચ્ચારવિષે અકારનો લય કન્યો છે, તે તૈજસરૂપ ઉચ્ચારનો, પ્રાણરૂપ જે મ્કાર છે તેને વિષે, લય કરે. અને પ્રાણરૂપ જે મ્કાર છે, તેને તુરીયરૂપ જે ઐકારનું પરમાર્થરૂપ અમાત્ર છે, તેનાવિષે લીન કરે. કેમકે સ્થૂલની ઉત્પત્તિ અને લય સૂક્ષ્મવિષે થાય છે. ધર્મી વિશ્વરૂપ જે અકાર છે તેનો તૈજસરૂપ ઉચ્ચારમાં લય વને છે. અને સૂક્ષ્મની ઉત્પત્તિ અને લય કારણમાં થાય છે. ધર્મી તૈજસરૂપ જે ઉચ્ચાર છે, તેનું કારણ પ્રાણરૂપ જે મ્કાર છે, તેનેવિષે લય વને છે. આ સ્થાનવિષે વિશ્વઆદિ-કોના ગ્રહણથી સમષ્ટિ જે ચિરાદ્ આદિક છે તેઓનું અને પોતપોતાની જે ત્રિપુટી છે તેઓ સર્વનું ગ્રહણ જાણવું. જે પ્રાણ-રૂપ મ્કારવિષે ઉચ્ચાર લય કન્યો છે, તે મ્કારને તુરીય રૂપ જે ઐકારનું પરમાર્થરૂપ અમાત્ર છે, તેનેવિષે લીન કરે. કેમકે ઐકારના પરમાર્થ સ્વરૂપનો તુરીયસાથે અભેદ છે, તે તુરીય ગ્રહણરૂપ છે. અને શુદ્ધ(ગ્રહણ)વિષે ઈશ્વર પ્રાણ વને કલ્પિત છે. 'જે જેને વિષે કલ્પિત હોય છે, તે તેનું સ્વરૂપ હોય છે.' ધર્મી ઈશ્વરસહિત પ્રાણરૂપ જે મ્કાર તેનો લય (શુદ્ધગ્રહણમાં) વને છે એ રીતિય જે ઐકારના પરમાર્થસ્વરૂપ અમાત્રવિષે સર્વનો લય કન્યો છે 'તે હું છું' (સોઽહં અથવા સોઽહમસ્મિ) પણું, પદ્માગ્રચિત્ત ધર્મને ચિન્તન કરે. સ્થાવરજંગમરૂપ અને અસંગ, અદ્વય, અસંસારી, નિત્યમુક્ત, નિર્ભય, ગ્રહણરૂપ ઐકારનું પરમાર્થસ્વરૂપ 'તે હું છું' પણું ચિન્તન કન્યાથી જ્ઞાન ઉદય થાય છે; ધર્મી જ્ઞાન-દ્વારા મુક્તિરૂપ ફલનું દેવાવાળું એ ઐકારનું નિર્ગુણ ઉપાસન છે, તે સર્વથી ઉત્તમ છે.

૨૯૪. (ૐકારચિન્તનમાં કેવલ પરહસનો અધિકાર)

જે પૂર્વરીતિય ૐકારના સ્વરૂપને જાણે છે તે મુનિ છે, જે નથી જાણતો તે મુનિ નહિ. કેમકે 'મુનિ' નામ મનન કરવાવાલાનું છે એ ૐકારનું ચિન્તન મનનરૂપ છે. જેને ૐકારનું ચિન્તનરૂપ મનન નહિ તે મુનિ નહિ. એ માંદૂમ્યુપનિપદ્ની રીતિય સક્ષેપથી ૐકારનું ચિન્તન કહ્યું છે. અન્ય પણ નૃસિંહતાપની આદિક ઉપનિષદોમાં પણ એનો પ્રકાર છે. એ 'ૐકારનું ચિન્તન પરમહંસોનું ગોપ્ય ધન છે.' વહિર્મુખ પુરુષનો એવિપે અધિકાર નથી, અત્યંત અંતરમુખનો અધિકાર છે. ગૃહસ્થનો એમાં અધિકાર નથી. ધન, પુન, સ્ત્રીસંગાદિકરહિત પરમહંસનો અધિકાર છે.

૨૯૫. (ૐકારના ધ્યાનનું ફલ)

પૂર્વ પ્રકારે ૐકારનું બ્રહ્મરૂપથી ધ્યાન કન્યાથી જ્ઞાન-દ્વારા મોક્ષ થાય છે. પરંતુ જે પુરુષની આ લોકના ભોગોમાં અથવા બ્રહ્મલોકના ભોગોમાં કામના હોય, તીવ્ર વૈરાગ્ય નહિ હોય, અને હઠેકરી કામનાને રોકીને, ધનપુત્રા-દિક્ષોને ત્યાગીને, પરમહંસગુણના ઉપદેશોકરી ૐકારરૂપ બ્રહ્મનું ધ્યાન કરે, તેને ભોગની કામના જ્ઞાનમાં પ્રતિવધ છે, એથી જ્ઞાન નથી થતું, કિન્તુ ધ્યાન કરતાં જ, શરીરત્યાગથી અનંતર અન્ય શરીરની પ્રાપ્તિ થાય. જો આ લોકમાં ભોગની કામના રોકીને ધ્યાનમાં લાગ્યો હોય, તો આ લોકમાં અત્યંત વિભૂતિવાળા પવિત્ર સત્સગિહુલમાં જન્મ થાય છે. ત્યાં પૂર્વકામનાના વિષય સર્વ ભોગ પ્રાપ્ત થાય છે, અને પૂર્વજન્મના ધ્યાનના સસ્કારોથી પુનઃ વિચારમાં અથવા ધ્યાનમાં પ્રવૃત્તિ થાય છે; તેથી જ્ઞાન થઈને મોક્ષ થાય છે.

૨૯૬. અને બ્રહ્મલોકના ભોગોની કામના રોકીને ૐકાર-

રૂપ બ્રહ્મના ધ્યાનમાં લાગ્યો હોય તો શરીર ત્યાગીને બ્રહ્મ લોક પ્રતિ જાય છે. ત્યાં મનુષ્યાંને, પિતૃઓને, અને દેવોને, દુર્લભ જે સ્વતંત્રતા છે તેના આનંદને મોંગવે છે. જેટલી હિરણ્ય-ગર્ભની વિભૂતિ છે તે સર્વ સત્યસંકલ્પાદિક વિભૂતિ एने પ્રાપ્તા થાય છે.

૨૧૭. (બ્રહ્મલોક પ્રતિ જવાના માર્ગનો ક્રમ.)

જે માર્ગે બ્રહ્મલોક પ્રતિ જાય છે તે માર્ગનો ક્રમ આ છે:- જે પુરુષ બ્રહ્મનો ઉપાસનામાં તત્પર છે, તેના મરણસમયે, ઇન્દ્રિય, અંતઃક્રમણ સર્વ યગ્નપિ મૂર્ચ્છિત છે, કાંઈ જવામાં સમર્થ નથી, અને યમદૂત તેના સમીપ આવે નહિ, જે તેનાં લિંગ-શરીરને લઈ જાય; પરંતુ અગ્નિની અભિમાનિની દેવતા, તેને મરણસમયે શરીરથી કહાડીને પોતાના લોક પ્રતિ લઈ જાય છે. તે અગ્નિલોકથી દિનની અભિમાનિની દેવતા લઈ જાય છે. ત્યાંથી શુક્રપક્ષની અભિમાનિની દેવતા પોતાના લોકમાં લઈ જાય છે. ત્યાંથી આગલ ઉત્તરાયણ જે પદ્માસ છે, તેઓની અભિમાનિની દેવતા લઈ જાય છે. ત્યાંથી આગલ સંવ-ત્સરની અભિમાનિની દેવતા લઈ જાય છે. ત્યાંથી આગલ દેવલોકની અભિમાનિની દેવતા લઈ જાય છે. ત્યાંથી આગલ વાયુની અભિમાનિની દેવતા લઈ જાય છે. ત્યાંથી આગલ ચંદ્રદેવતા લઈ જાય છે. ત્યાંથી આગલ સૂર્યદેવતા લઈ જાય છે. ત્યાંથી આગલ વિજલી(વિદ્યુત)ની અભિમાનિની દેવતા પોતાના લોક પ્રતિ લઈ જાય છે. ત્યાં વિજલીલોકમાં તે ઉપાસકના સામા,—હિરણ્યગર્ભની આશાપ દિવ્યપુરુષ હિરણ્યગર્ભલોક-ધાસી હિરણ્યગર્ભસમાનરૂપ તેને લેવાને આવે છે, તે પુરુષ વિજલીના લોકથી વરુણલોકમાં લઈ જાય છે. વિજલીની અભિ-

માનિની દેવતા સાથે આવે છે. વરુણ લોકથી ઇન્દ્રલોક પ્રતિ લઈ જાય છે. અને વરુણદેવતા પણ ઇન્દ્રલોકસુધી હિરણ્ય-ગર્ભલોકવાસી પુરુષ અને ઉપાસકની સાથે રહે છે. ત્યાંથી આગલ ઇન્દ્રદેવતા પ્રજાપતિના લોકસુધી બંનેની સાથે રહે છે. ત્યાંથી આગલ (દક્ષ)પ્રજાપતિ તેઓ બંનેની સાથે બ્રહ્મલોક પ્રતિ લઈ જવાવિષે સમર્થ નથી, યથી બ્રહ્મલોકમાં તે દિવ્ય-પુરુષની સાથે તે ઉપાસક પ્રાપ્ત થાય છે. બ્રહ્મલોકના અધિ-પતિ હિરણ્યગર્ભ છે. સૂક્ષ્મસમષ્ટિનું અભિમાની ચેતન હિરણ્યગર્ભ કહેવાય છે. તેને જ કાર્યબ્રહ્મ કહે છે. કાર્યબ્રહ્મના નિવાસસ્થાન-ને બ્રહ્મલોક કહે છે.

૨૯૮ (સાંયુજ્યમોક્ષ.)

યદ્યપિ પૂર્વ રોતિષ ઐકારની ઉપાસના શુદ્ધબ્રહ્મરૂપે કરીને કહી છે; (અને) શુદ્ધબ્રહ્મના ઉપાસકને શુદ્ધબ્રહ્મની પ્રાપ્તિ જોઈયે; તથાપિ શુદ્ધબ્રહ્મની પ્રાપ્તિ જ્ઞાનથી જ થાય છે. અને કામનારૂપ પ્રતિવંધેકરી, જેને જ્ઞાન થયું નહિ, તેને કાર્ય-બ્રહ્મની સાંયુજ્ય(મુક્તિ)રૂપ મોક્ષ થાય છે. બ્રહ્મલોકમાં પ્રાપ્ત જે ઉપાસક છે, તેને હિરણ્યગર્ભના સમાન વિભૂતિ પ્રાપ્તા થાય છે. (તે) સત્યસંકલ્પ થાય છે. જેવા શરીરની ઇચ્છા કરે તેયું જ તેનું શરીર થાય છે, જે ભોગોની ઇચ્છા કરે તે સર્વ

૧૭૭. સાલોક્યસાષ્ટિસામીપ્યસારૂપ્યૈકત્વમપ્યુત ।

દીયમાનં ન ગૃહ્ણન્તિ વિના મત્સેવનં જનાઃ ॥

માગવત ૩ રુઢ. ૨૧ અધ્યાય.

ઈશ્વરના લોકમાં પ્રજારૂપે રહેયુ એ 'સાલોક્ય'; ઈશ્વરના સુવરાજરૂપે રહેયું એ 'સાષ્ટિ' (વા સાંયુજ્ય), ઈશ્વરના સેવકરૂપે તેની સમીપમાં રહેયું એ 'સામીપ્ય' ઈશ્વરના અનુજરૂપે તેના સમાનરૂપની પ્રાપ્તિ એ 'સારૂપ્ય', અને એકત્ય પણ, મોઢ છે. તે અપાય તોપણ મારી સેવા વિના લોક લઈ શક્તા નથી, એમ મગવાનું વદે છે.

ભોગ સંકલ્પથી જ પ્રાપ્ત થાય છે. જો એક સમય હજાર શરીરો-
 ણ જૂદા જૂદા ભોગની ઇચ્છા કરે તો તે જ સમય હજાર
 શરીર અને તેઓના ભોગોની જૂદી જૂદી સામગ્રી ઉપજે છે.
 અને વહુ શું કહિયે ! જે કંઈ સંકલ્પ કરે તે સિદ્ધ થાય છે.
 પરંતુ જગત્ની ઉત્પત્તિ, પાલન, સંહાર, ણ વિના અન્ય સર્વ
 વિભૂતિ ઈશ્વરના સમાન થાય છે. અને જ સાયુજ્યમોક્ષ કહે
 છે. એવા હિરણ્યગર્ભના સમાન થયે સતે વહુકાલ સંકલ્પ-
 સિદ્ધ દિવ્યપદાર્થોને ભોગવીને, પ્રલયકાલમાં જ્યારે હિરણ્ય-
 ગર્ભના લોકનો નાશ થાય ત્યારે, જ્ઞાન થઈને ઉપાસકને ત્રિદેહ-
 મોક્ષની પ્રાપ્તિ થાય છે.

૨૯૯. (અહંબ્રહ્મધ્યાને જ સત્ત્વગુણી બ્રહ્મલોકની પ્રાપ્તિ થાય છે.)

જેમ ઁકારરૂપ બ્રહ્મની ઉપાસના કરવાવાલા બ્રહ્મલોકની
 પ્રાપ્તિદ્વારા મોક્ષને પ્રાપ્ત થાય છે, તેમ ઉપનિષદોમાં
 બ્રહ્મની અન્યા પણ ઉપાસના કહી છે, તેઓથી ણ જ ફલ
 થાય છે. પરંતુ અહંબ્રહ્મઉપાસના વિના અન્યઉપાસનાથી
 બ્રહ્મલોકની પ્રાપ્તિ થાય નહિ. ણ વાચ્તા સૂત્રકારે અને
 ભાષ્યકારે (શારીરકના) ચતુર્થ અધ્યાયમાં પ્રતિપાદન કરી
 છે. જેમ નર્મદેશ્વરનું શિવરૂપે, અને શાલગ્રામનું વિષ્ણુરૂપે
 ધ્યાન કહ્યું છે, તે પ્રતીકધ્યાન છે, અહંબ્રહ્મ નહિ: અને
 મનનું બ્રહ્મરૂપે, આદિત્યનું બ્રહ્મરૂપે, ધ્યાન કહ્યું છે, તે પણ
 પ્રતીકધ્યાન છે, અહંબ્રહ્મ નહિ. તેઓનાથી બ્રહ્મલોકની પ્રાપ્તિ
 થાય નહિ. સગુણ અથવા નિર્ગુણ બ્રહ્મને પોતાસાથે અભેદ
 કરીને ચિન્તન કરે, તેને અહંબ્રહ્મ ધ્યાન કહે છે. તેથી જ બ્રહ્મ
 લોકની પ્રાપ્તિ થાય છે.

૩૦૦. પૂર્વ કહ્યો જે માર્ગ છે તેને 'ઉત્તરાયણમાર્ગ' કહે
 છે, અને 'દેવમાર્ગ' પણ કહે છે. તે દેવમાર્ગે જે ઉપાસક બ્રહ્મ-

લોક પ્રતિ જાય છે, તેઓને ફરી સંસાર થતો નથી, કિન્તુ જ્ઞાન થઈને વિદેહમુક્તિને પ્રાપ્ત થાય છે. ત્યાં જ્ઞાનનાં સાધન જે ગુરુઉપદેશાદિક છે, તેઓની પણ અપેક્ષા નથી, કિન્તુ બ્રહ્મલોકમાં ગુરુઉપદેશાદિ સાધન વિના જ જ્ઞાન થાય છે. કેમકે બ્રહ્મલોકમાં તમોગુણ રજોગુણનો તો લેશ પણ નથી. કેવલ સત્ત્વગુણપ્રધાન એ લોક છે, તમોગુણ નહિ, યથી જડતા આલસ્યાદિક નહિ, રજોગુણ નહિ, યથી કામક્રોધાદિરૂપ રજોગુણનું કાર્ય, વિશ્લેષ નહિ, કેવલ સત્ત્વગુણ છે, યથી સત્ત્વગુણનું કાર્ય, જ્ઞાનરૂપ પ્રકાશ તે લોકમાં પ્રધાન છે.

૩૦૧. (આત્માનું પરમાર્થરૂપ.)

ઐકારની બ્રહ્મરૂપે પૂર્વ જે ઉપાસના કરી છે, ત્યારે ઐકારની માત્રાનો અર્થ આ રીતિએ ચિન્તન કવ્યો છે.—‘સ્થૂલ ઉપાધિસહિત વિરાટ્ વિશ્વ ચેતન, અકારનું વાચ્ય છે. સૂક્ષ્મ-ઉપાધિસહિત હિરણ્યગર્ભ તેજસ ચેતન ઉકારનું વાચ્ય છે. કારણઉપાધિસહિત ઈશ્વર પ્રાણ ચેતન મ્કારનું વાચ્ય છે.’ યવા અર્થ જે પૂર્વ ચિન્તન કવ્યો છે, તેની બ્રહ્મલોકમાં સ્મૃતિ થાય છે, અને સત્ત્વગુણપ્રમાણથી આનું વિવેચન થાય છે—સ્થૂલ, ઉપાધિપકરીને ચેતનમાં વિરાટ્પણુ અને ત્રિશ્વપણુ પ્રતીત થાય છે, સ્થૂલસમષ્ટિ(ઉપાધિ)ની દષ્ટિએ વિરાટ્પણુ છે, અને સ્થૂલ વ્યષ્ટિ(ઉપાધિ)ની દષ્ટિએ વિશ્વપણુ છે. અને સમષ્ટિવ્યષ્ટિ-સ્થૂલ- (ઉપાધિ)ની દષ્ટિ વિના, વિરાટ્ભાવ અને વિશ્વભાવ પ્રતીત થાય નહિ, કિન્તુ ચેતનમાત્ર જ પ્રતીત થાય છે. તેમ સૂક્ષ્મઉપાધિ સહિત હિરણ્યગર્ભ તેજસ ચેતન ઉકારનું વાચ્ય છે ત્યાં સમષ્ટિ સૂક્ષ્મઉપાધિની દષ્ટિએ ચેતનમા હિરણ્યગર્ભતા, અને વ્યષ્ટિસૂક્ષ્મ ઉપાધિની દષ્ટિએ તેજસતા પ્રતીત થાય છે. સૂક્ષ્મઉપાધિની દષ્ટિ વિના હિરણ્યગર્ભતા અને તેજસતા પ્રતીત થાય નહિ.

તેમ મૂકારનું વાચ્ય ईश्वर-પ્રાણ(ચેતન) છે. ત્યાં સમષ્ટિ-અજ્ઞાન(=કારણ)ઉપાધિની દષ્ટિએ ચેતનમાં ईश्वરતા, અને વ્યષ્ટિ-અજ્ઞાનઉપાધિની દષ્ટિએ ચેતનમાં પ્રાણતા પ્રતીત થાય છે. અજ્ઞાનઉપાધિની દષ્ટિ વિના, ईश्वરતા અને પ્રાણતા પ્રતીત થાય નહિ. જે વસ્તુ, જેનાવિષે, અન્યની દષ્ટિથી, પ્રતીત થાય, તે તેનાવિષે પરમાર્થકરી હોય નહિ. (અર્થાત્ જે 'વસ્તુ' નામ વિરાટ, હિરણ્યગર્ભ અને ईश्वર, તથા વિશ્વ, તૈજસ અને પ્રાણ, 'જેનાવિષે' નામ ચેતનનાવિષે, 'અન્યની દષ્ટિથી' નામ સ્થૂલ સૂક્ષ્મ અને અજ્ઞાત અથવા કારણની દષ્ટિથી પ્રતીત થાય છે, તે પરમાર્થકરી ચેતનવિષે નથી.) જે જેનું રૂપ, અન્યની દષ્ટિ વિના, પ્રતીત થાય, તે તેનું પરમાર્થરૂપ હોય છે. જેમ એક પુરુષમાં પિતાની દષ્ટિથી પુત્રતા અને પિતામહની દષ્ટિથી પૌત્રતાદિરૂપ ભાન થાય છે, તે પરમાર્થકરી નથી. પુરુષનો પિંડ જ પરમાર્થ છે, તેમ સ્થૂલસૂક્ષ્મ-કારણ-ઉપાધિની દષ્ટિથી જે વિરાટ વિશ્વાદિકરૂપ ભાન થાય છે, તે મિથ્યા છે; ચેતનમાત્ર જ સત્ય છે. તે ચેતન સર્વ-ભેદરહિત છે. કેમકે વિરાટ અને વિશ્વનો જે ભેદ છે, તે વંનેના ઉપાધિ તો યદ્યપિ 'સ્થૂલ' છે, તથાપિ 'સમષ્ટિઉપાધિ' વિરાટનો અને 'વ્યષ્ટિઉપાધિ'વિશ્વનો-તે 'સમષ્ટિ-વ્યષ્ટિ'ઉપાધિથી તેઓનો ભેદ છે; ણથી સ્વરૂપે ભેદ નથી. તેમ તૈજસનો હિરણ્યગર્ભથી ભેદ પણ 'સમષ્ટિ-વ્યષ્ટિ'ઉપાધિએ છે; સ્વરૂપથી નથી. તેમ ईश्वરથી પ્રાણનો ભેદ પણ 'સમષ્ટિ-વ્યષ્ટિ'ઉપાધિના ભેદથી છે; સ્વરૂપથી નથી. એમ પ્રાણનો ईश्वરસાથે અભેદ, અને તૈજસનો હિરણ્યગર્ભસાથે અભેદ, તથા વિશ્વનો વિરાટસાથે અભેદ છે. ૫ પ્રકારે સ્થૂલઉપાધિવાલાનો સૂક્ષ્મઉપાધિવાલાથી ઘા કારણઉપાધિવાલાથી ભેદ

નથી. કેમકે સ્થૂલસૂક્ષ્મકારણઉપાધિની દૃષ્ટિ ત્યાગ્યેથી, ચેતન-સ્વરૂપમાં કશા પ્રકારનો ભેદ પ્રતીત થાય નહિ. અને અનાત્માસાથે પણ ચેતનનો ભેદ નથી. કેમકે અનાત્મા દેહાદિક અવિદ્યાકાલમાં પ્રતીત થાય છે, પરમાર્થેકરી નથી; તેઓનો પણ ચેતનથી ભેદ વને નહિ. એમ સર્વ ભેદરહિત અસંગ, નિર્વિકાર, નિત્યમુક્ત, બ્રહ્મરૂપ આત્મા, ઐકારનો લક્ષ્ય, સ્વયંપ્રકાશરૂપ, તે ઉપાસકને માન થાય છે. તેથી હિરણ્યગર્ભલોકવાસીને સંસાર થાય નહિ. (અને જ્ઞાનદ્વારા અન્તે વિદેહમુક્તિને પ્રાપ્ત થાય છે.)

૩૦૨. (ઐકાર અને મહાવાક્યના અર્થનો એકતા.)—

યદ્યપિ મહાવાક્યના વિવેક વિના જ્ઞાન થાય નહિ; તથાપિ ઐકારનો વિવેક જ મહાવાક્યનો વિવેક છે. સ્થૂલઉપાધિ-સહિત ચેતન, અકારનું વાચ્ય (છે): સ્થૂલઉપાધિને ત્યાગીને ચેતનમાત્ર અકારનું લક્ષ્ય (છે). તેમ સૂક્ષ્મઉપાધિ-સહિત ચેતન ઉકારનું વાચ્ય (છે): સૂક્ષ્મઉપાધિને ત્યાગીને ચેતનમાત્ર (ઉકારનું) લક્ષ્ય (છે). કારણઉપાધિસહિત ચેતન મૂકારનું વાચ્ય (છે): કારણઉપાધિને ત્યાગીને ચેતનમાત્ર (મૂકારનું) લક્ષ્ય (છે). એ રીતિએ ઉપાધિસહિત વિશ્વાદિ, અકારાદિ માત્રાના વાચ્ય; અને ઉપાધિસહિત ચેતન ઐકારવર્ણનું વાચ્ય છે, અને તેમ નામરૂપ સકલ ઉપાધિસહિત ચેતન ઐકારવર્ણનું વાચ્ય છે, અને નામરૂપ સકલ ઉપાધિરહિત ચેતન ઐકારવર્ણનું લક્ષ્ય છે. એમ ઐકારનો અને મહાવાક્યોનો અર્થ એક જ છે. પૃથી ઐકારના વિવેકથી અદ્વૈતજ્ઞાન થાય છે.

એ રીતિએ આચાર્યના મુલથી શ્રવણ કરીને અદૃષ્ટિ નામે જે મધ્યમ શિષ્ય તે ઉપાસનમાં પ્રવૃત્ત થઈને જ્ઞાનદ્વારા પરમ-પુરુષાર્થ મોક્ષને પ્રાપ્ત થયો. ૧૬૮.

३०३. निर्गुण उपासनां जे नो अधिकार न थी
तेने कर्तव्य फहे छे.

सवेया.

जो ए निर्गुण ध्यान धाय नहि, (तो) सगुणईश फर मननुं धाम;
सगुणउपासन धाय ज नहि तो, करी निष्काम कर्म, भज राम;
जो निष्काम कर्म पण धाय न, तो कराय शुभ कर्म सकाम;
जो नव धाय सकाम कर्म पण, तो शठ ! चारंवार मरी जाम. १६९.

इहो.

अकारनो अर्य लखी, थयो रुतार्थ अदृष्टि;

आ तरंग भणनारने, दादु करो सुदृष्टि. १७०.

इति श्रीविचारसागरे गुरुदेवादिव्यावहारिकप्रतिपादन-
मध्यमाधिकारिसाधनवर्णनं नाम पंचमस्तरंगः

• समाप्तः ५

१७८. मोक्षनो उपाय तो ब्रह्मसैद्धांतिसंग किं ता सारंगहृदयिद्व निरति-
योगिक सधिशानंद ब्रह्मो साक्षात्कार छे. कोई प्रतिबंधपी सेना विचारमा
प्रवृत्ति बनी शके नहि तो, पछी निर्गुणउपासना करवी. ते निर्गुणउपासना
पण ओ बने नहि तो, पछी सगुण ईश्वरमां मननो निराम करवो. ते सगुण-
उपासन पण जो न बने तो निष्काम कर्म करी, राम भजना. ते निष्काम कर्म
पण धाय नहि तो, सकाम शुभकर्म करवां भने अजुकमे उतरां ऐलां ओ ते
सकामकर्म पण धाय नहि तो पछी, कहे छे के—हे शठ ! चारंवार ज-म-मर-
णनी महादुःखदायक पट्टमाजामा कयां कर.

श्रीगणेशाय नमः

अथ श्रीविचारसागरस्य

षष्ठतरंगप्रारंभः



अथ गुरुवेदादिसाधनमिथ्यावर्णनं.

३०४. उपोद्घात. दुहो.

“चेतनमिदं अनात्म सऽ, मिथ्या स्वप्नसमान. ”

एवम शुणी बोल्यो श्रीजो, नर्कदृष्टि मतिमान्. १.

टीका:-चतुर्थ तरंगमां उत्तमअधिकारीने उपदेशनो प्रकार फह्यो, पंचम तरंगमां मध्यम(अधिकारी)ने (उपदेशनो प्रकार) फह्यो; आ (षष्ठ) तरंगमां कनिष्ठअधिकारीने उपदेशनो प्रकार कहे छे. जेने शंका बहु उपजे, तेनी यद्यपि बुद्धि तीव्रा होय छे तथापि ते कनिष्ठ अधिकारी छे. आ तरंग युक्तिप्रधान छे; एथी सांभळेल्ला अर्थमां जेने कुतर्क उपजे तेने आ तरंगनो उपयोग छे. कुतर्कद्वेषितबुद्धि कनिष्ठ अधिकारी होय छे, तेने उपदेशनो प्रकार आ तरंगमां छे. पूर्व तरंगमां प्रणवउपासना अने जगत्नी उत्पत्तिनिरूपणथी पूर्वे आम कहुं:- “चेतनथी भिन्न जे अज्ञान अने तेनुं कार्य अनात्मा फहे- “घाय छे, ते अनात्मपदार्थ सर्व स्वप्नी पेठे मिथ्या छे.” ए वात्ताने सांभळीने बंने भ्राता(तत्त्वदृष्टि अने अदृष्टि)ने प्रअथी उपराम देखीने,

तर्कदृष्टि प्रश्न करे छे.

३०५. दुस्रो.

प्रथम घात ज यन्तुनी, स्मृति स्वप्नमां होय;
जाग्रतमां अशात अति, तेने जुये न कोय. २.

टीका:-पर्व जे अन्यंत अघात पदार्थ छे तेनुं स्वप्नमां ज्ञान थाय नहि; किन्तु जाग्रतमां जेनुं अनुभवज्ञान होय तेनी स्वप्न मां स्मृति थाय छे. एथी स्मृतिज्ञानना विषय जाग्रतना पदार्थो सत्य होरायी तेओनुं स्वप्नमां स्मृतिरूप ज्ञान पण सत्य छे. एथी स्वप्नना दृष्टान्तथी जाग्रतना पदार्थोने मिथ्या कहेचा संभवे नहि.

अन्यप्रकारथी स्वप्नज्ञानना विषयपदार्थोनी सत्यता(ने) प्रतिपादन कर छे.

३०६. दुस्रो.

अथवा स्थूल त्यजी, लिंग ते, बहिर् जोवा जाय,
गिरि, समुद्र, वन, वाजि, गज, ते मिथ्या कयम थाय. ३.

टीका:-'अथवा' नाम अन्य प्रकारथी स्वप्ननु ज्ञान अने तेना विषयपदार्थ सत्य छे, मिथ्या नथी. केमके स्वप्नावस्थांमां स्थूलशरीरने त्यागीने, लिंगशरीर बहिर् निकळीने, साचा गिरिसागरादिकोने देगे छे, एथी स्वप्न मिथ्या नहि.

३०७. (तर्कदृष्टिना उपरना प्रश्नना उत्तर,
अंक ३०७ थी ३२८ पर्यन्त.)

(स्वप्ननु ज्ञान स्मृतिज्ञान नथी.)

दुस्रो.

आ हस्ती आगळ उभो, एतुं थाये ज्ञान;
स्वप्नमां ज, स्मृतिरूप ते केम थाय? सुजान. ४.

टीका:-पूर्वकालसंबंधि पदार्थनुं ज्ञान 'स्मृति' (ज्ञान)

હોય છે. જેમ પૂર્વે દીઠેલા હસ્તીની 'તે હસ્તી' एवी स्मृति થાય છે. અને 'આ હસ્તી સંમુખ સ્થિત છે' एवुं જ્ઞાન (તે) સ્મૃતિ નહિ, કિન્તુ પ્રત્યક્ષ કહેવાય છે, અને સ્વપ્નમાં તો 'આ હસ્તી આગલ સ્થિત છે, આ પર્વત છે, આ નદી છે,' एवुं જ્ઞાન થાય છે. एथી જાગ્રત્માં દીઠેલા પદાર્થોની સ્વપ્નમાં સ્મૃતિ નથી, કિન્તુ હસ્તી આદિકનું પ્રત્યક્ષજ્ઞાન થાય છે.

(પ્રત્યક્ષજ્ઞાનના એ પ્રકાર-અભિજ્ઞારૂપ પ્રત્યક્ષ અને પ્રત્યભિજ્ઞારૂપ પ્રત્યક્ષ.)

અને જો આમ કહે:-'જાગ્રત્માં જાણેલા પદાર્થોનું જ સ્વપ્નમાં જ્ઞાન થાય છે. અજ્ઞાત પદાર્થનું જ્ઞાન થાય નહિ; एथી જાગ્રત્ પદાર્થોના જ્ઞાનના સંસ્કારોથી સ્વપ્નના જ્ઞાનની ઉત્પત્તિ થાય છે. સંસ્કારજન્યજ્ઞાન સ્મૃતિ કહેવાય છે. एथી સ્વપ્નનું જ્ઞાન સ્મૃતિરૂપ છે.' તે શંકા ધને નહિ. કેમકે, પ્રત્યક્ષ-જ્ઞાન એ પ્રકારનું હોય છે. एक અભિજ્ઞારૂપ પ્રત્યક્ષ હોય છે અને વીજું પ્રત્યભિજ્ઞારૂપ પ્રત્યક્ષ હોય છે. કેવલ ઇન્દ્રિયસંબંધથી જે જ્ઞાન થાય તે અભિજ્ઞાપ્રત્યક્ષ કહેવાય છે. જેમ નેત્રના સંબંધથી હસ્તીનું-'આ હસ્તી છે,' एवુं જ્ઞાન (તે) અભિજ્ઞાપ્રત્યક્ષ (જ્ઞાન) છે. અને પૂર્વજ્ઞાનના સંસ્કારથી અને ઇન્દ્રિયસંબંધથી જે જ્ઞાન થાય તે 'પ્રત્યભિજ્ઞાપ્રત્યક્ષ (જ્ઞાન), કહેવાય છે. જેમ પૂર્વે દીઠેલા હસ્તીનું-'તે હસ્તી આ છે,' एवું જ્ઞાન થાય, તે 'પ્રત્યભિજ્ઞાપ્રત્યક્ષ' (જ્ઞાન) કહેવાય છે. ત્યાં પૂર્વે હસ્તીના જ્ઞાનના સંસ્કાર, અને હસ્તીસાથે નેત્રનો સંબંધ, પ્રત્યભિજ્ઞાપ્રત્યક્ષનો હેતુ છે. एथી 'સંસ્કારજન્ય જ્ઞાન સ્મૃતિરૂપ જ હોય છે' ए નિયમ નથી; કિન્તુ પ્રત્યભિજ્ઞા-પ્રત્યક્ષ પણ સંસ્કારજન્ય હોય છે. પરંતુ ઇન્દ્રિયસંબંધ વિના

केवल सस्कारजन्य ज्ञान होय ते स्मृतिज्ञान कहेयाय छे. स्वप्नमां हस्तीआदिकनुं ज्ञान केवल सस्कारजन्य नथी, किन्तु निद्रान्ध्र दोषजन्य छे. अने हस्तीआदिकनीपेटे स्वप्नमां कल्पित इन्द्रिय पण छे, पथी इन्द्रियजन्य छे. यद्यपि स्वप्नना पदार्थ साक्षिमास्य छे, इन्द्रियजन्य ज्ञानना विषय नथी, तथापि अवियेकीनी दृष्टिथी स्वप्ननुं ज्ञान इन्द्रियजन्य कहेयाय छे. ए रीतिप स्वप्ननुं ज्ञान जाग्रतना पदार्थनी स्मृति नथी.

अने निद्राथी जागीने पुरुष आम कहें छे.-‘हु स्वप्नमां ‘हस्तीआदिकोने देसतो हयो.’ जो हस्तीआदिकोनी स्वप्नमां स्मृति होय, तां जागीने आनुं कहेंतु जोइये-‘हु स्वप्नमां हस्तीआदि-‘कोनु स्मरण करतो हयो,’ (पण) एनुं कोई नथी कहेंतु. पथी जाग्रतना पदार्थोनी स्वप्नमां स्मृति नथी.

अने ‘जाग्रतमां जे दीठा सांभळ्या पदार्थ छे तेमनु ज स्वप्नमां ‘ज्ञान थाय,’ ए नियम नथी. किन्तु जाग्रतमां अज्ञात पदार्थनुं पण स्वप्नमां ज्ञान थाय छे. कदाचित् स्वप्नमा एवा विलक्षण पदार्थ प्रतीत थाय छे जे आत्मा जन्मविषे कदि दिठा सांभळ्या होय नहि. पथी ते(स्वप्न)नु ज्ञान स्मृति (ज्ञान) नथी.

यद्यपि-‘आ जन्मना पदार्थोना ज्ञानना सस्कार ज स्मृतिना ‘हेतु छे,’ ए नियम नथी, किन्तु अन्यजन्मना ज्ञानना सस्कार-थी पण स्मृति थाय छे. केमके अनुकूल ज्ञानथी प्रवृत्ति थाय छे. अनुकूल ज्ञान विना प्रवृत्ति थाय नहि. पथी बालक-नी स्तनपानमां जे प्रथमप्रवृत्ति थाय छे, तेनो हेतु, बालक-ने पण ‘स्तनपान मने अनुकूल छे,’ एखु ज्ञान होय छे. त्यां अन्यजन्मविषे स्तनपानमां जे अनुकूलता अनुभव करी छे, तेना सस्कारोथी बालकने प्रथम अनुकूलतानी स्मृति थाय छे. पथी जन्मान्तरना ज्ञानसस्कारथी पण स्मृति थाय छे. तेम

આ જન્મવિષે અજ્ઞાતપદાર્થોની પણ અન્યજન્મના જ્ઞાનના સંસ્કારો-
થી સ્વપ્નવિષે સ્મૃતિ સંભવે છે. તથાપિ કોઈ પદાર્થ સ્વપ્નમાં
પણ પ્રતીત થાય છે, જેઓનું જાગ્રત્માં કોઈ જન્મવિષે જ્ઞાન
સંભવે નહિ. જેમ પોતાના મસ્તકછેદનને યોતે નેત્રોપ કરી
સ્વપ્નમાં દેખે છે. ત્યાં જાગ્રત્માં પોતાનું મસ્તકછેદન નેત્રોપ
કરી દેખે નહિ. યથી જાગ્રત્ પદાર્થોના જ્ઞાનના સંસ્કારોથી
સ્વપ્નમાં સ્મૃતિ નથી. યથા સ્વપ્નને સ્મૃતિરૂપ (કહેયું તેના)
હાંડનમાં અનેક યુક્તિઓ, પ્રંથકારોપ કહી છે. પરંતુ સ્વપ્નને
સ્મૃતિ માનવામાં પૂર્વુક્ત વૃષ્ણ અતિપ્રવલ છે જે,—સ્મૃતિજ્ઞાનનો
વિષય સંમુખ પ્રતીત થાય નહિ; અને સ્વપ્નના હસ્તીઆદિક
સ્વપ્નકાલમાં સંમુખ પ્રતીત થાય છે. યથી હસ્તીઆદિકોની
સ્વપ્નમાં સ્મૃતિ નથી.

૩૦૮. '(સ્વપ્નમાં) લિંગશરીર વહિર નીકળીને સાચા ગિરિ-
'સમુદ્રાદિકોને દેખે છે,' યયું ઘાવીપ કહ્યું હતું યતું ઉત્તર:—
(સ્વપ્નમાં લિંગશરીર વહિર જતું નથી.)

કહો.

વહિર લિંગ જો નીકળે, દેહ અમંગલ થાય;
પ્રાણસહિત સુંદર લસે, યથી લિંગ જણાય. ૫.

ટીકા:—જો સ્થૂલશરીરથી નીકળીને લિંગશરીર, વહિર
સાચા ગિરિસમુદ્રાદિકોને દેખે તો, લિંગશરીરના નીકળ-
વાથી જેમ મરણઅવસ્થામાં શરીર ભયંકરરૂપ પ્રતીત થાય છે,
તેમ સ્વપ્નઅવસ્થાવિષે પણ લિંગશરીરના અભાવથી સ્થૂલશરીર
અમંગલ' નામ ભયંકર થયું જોડ્યે; અને પ્રાણસહિત સૂતકસમાન
થઈ જોડ્યે. અને સ્વપ્નઅવસ્થામાં યયું થાય નહિ; મિન્તુ
સ્વપ્નઅવસ્થામાં સ્થૂલશરીર પ્રાણસહિત હોય છે. અને જાગ્રત્ની
પેઠે 'સુંદર' નામ મંગલરૂપ હોય છે. યથી સ્થૂલશરીરના વહિર
લિંગશરીર સ્વપ્નાવસ્થામાં નીકળતું નથી.

अने जो आम कहे:-

‘स्वप्नावस्थामां प्राण तो जाय नहि, किन्तु अंतःकरण अने
 ‘(ज्ञान)इन्द्रिय बहिर पर्वतादिकोमां जइने तेओने देखे छे.
 ‘प्राण बहिर जाय नहि एथी स्थूलशरीर मरणअवस्थाना स-
 ‘मान भयंकर थाय नहि. अने प्राणने बहिर जवानुं कई प्र-
 ‘योजन पण नहि. केमके प्राणमां ज्ञानशक्ति नथी, किन्तु
 ‘क्रियाशक्ति छे; एथी बहिरना पदार्थोना ज्ञाननुं जेमां सा-
 ‘मर्थ्य छे ते ज जाय छे. ज्ञानशक्ति, अंतःकरण अने ज्ञान-
 ‘इन्द्रियमां छे. प्राणनी पेटे कर्मइन्द्रियमां पण ज्ञानशक्ति नथी,
 ‘क्रियाशक्ति छे एथी प्राण अने कर्मइन्द्रिय शरीरमां रहे छे.
 ‘एथी मरणनिमित्तथी (धता) दाहआदिकोथी रक्षा थाय छे.
 ‘अने बहिर अंतःकरण (अने) ज्ञानइन्द्रिय जाय छे. ते
 ‘साचा पर्वतादिकोने देखीने, प्राण अने कर्मइन्द्रियनी समीप
 ‘(पाछां) आवे छे.’

ते पण बने नहि. केमके स्थूलसूक्ष्मप्रसमाजमां सर्वनो
 स्वामी प्राण छे. प्राण विना शरीरने देखीने क्षणमात्र पण
 रहेबा नथी देता. बहिर लई जाय छे, दाह करे छे, (अने)
 स्पर्शथी स्नान करे छे. एथी स्थूलशरीरनो सार प्राण छे,
 तेम सूक्ष्मशरीरमां प्राण प्रधान प्राण छे.

(इन्द्रियोमां प्राण प्रधान छे.)

प्राण इन्द्रियादिके, परस्पर श्रेष्ठताविवाद करीने, प्रजा-
 पतिना समीप जइने कह्युं:-‘हे भगवन् ! अमारारिपे कोण
 ‘श्रेष्ठ छे ?’ त्वारे प्रजापतिए कह्युं-‘तमे सर्व स्थूलशरीरमां
 ‘प्रवेश करीने एक एक नीकळतां जाओ. जेना नीकळवाथी

१८०. बृहदारण्यक उपनिषद्ना पञ्चाध्यायनुं प्रथम ब्राह्मण, एमां आ प्रसंग छे.
 प्राण अने इन्द्रिय शब्दे तेओनी अभिमानीनी देवतानुं ग्रहण करवानु छे.

‘शरीर अमंगलरूप थईने पडी जाय ते तमारामां श्रेष्ठ छे.’ प्रजापतिना वचनथी नेत्रादिक इन्द्रियोना एकएकना अभाव-
थी अंधादिरूप शरीरनी स्थिति दीठी, अने प्राणे नीकळ-
वानो उद्योग करतां ज शरीर पड्या लाग्युं. त्यारे सर्वेए
आम निश्चय कन्यो.-‘अमारो सर्वनो स्वामी प्राण छे.’ ए
कारणथी ज्यांसुधी शरीरमां प्राण रहे छे त्यांसुधी सर्वे रहे
छे. शरीरमांथी प्राणने नीकळी जतां ज सर्व नीकळी जाय
छे. एथी सूक्ष्मसमाजनो, राजानी पेटे, प्राण ज प्रधान छे.
तेना नीकळ्या विना अंतःकरण ज्ञानइन्द्रिय वहिर् नीकळे नहि.

किंवा अंतःकरण अने ज्ञानइन्द्रिय, भूतोना सत्त्वगुणनां
कार्य छे. तेओमां ज्ञानशक्ति छे, क्रियाशक्ति नथी. प्राणमां
क्रियाशक्ति छे तेना वलथी मरणसमये लिंगशरीर आ
स्थूलने त्यागीने लोकान्तर प्रति जाय छे. अने प्राणना ज
वलथी इन्द्रियद्वारा अंतःकरणनी वृत्ति वहिर् घटादिकोना
समीप जाय छे. अने प्राणना सहाय विना अंतःकरणादिकनुं
वहिरगमन सभवे नहि ए कारणथी योगशास्त्रमां कह्युं छे:-
‘प्राणनिरोध विना मननो निरोध थाय नहि. प्राणना संचार-
थी मननो संचार थाय छे. प्राणना निरोधथी मननो नि-
रोध थाय छे.’ एथी मनना निरोधरूप जे राजयोग तेनी
जेने इच्छा होय, ते प्राणनिरोधरूप ‘हठयोगनुं’ अनुष्ठान करे.
एथी एग प्राणने अधीन अंतःकरणनुं गमन छे. तेना नीक-
ळ्याविना अंतःकरण (अने) ज्ञानइन्द्रिय वहिर् नीकळे नहि.
अने स्वप्नअवस्थामां स्थूलशरीर प्राण समेत प्रतीत थाय छे.
एथी ‘वहिरु जईने साचा पदार्थने स्वप्नमां देखे छे,’ ए
संभवे नहि.

किंवा कोई पुरुष पोताना संबधीने स्वप्नमां मळीने जो

व्यवहार करे तो जागने ते संबंधी मळे त्यारे आम नयी कहेता जे:—'रात्रिये आपणे मळ्या हता, अने अमुक व्यवहार 'कन्या हता' अने पूर्वपक्षीनी रीतिए तां, बहिर नीकळीने ते संबंधीने मळीने, व्यवहार साचा कन्या छे, ते मळ्यानुं अने व्यवहारनुं ज्ञान संबंधीने होयुं जाश्ये; अने मळे त्यारे संबंधीए कहुं जाश्ये. अने सिद्धान्तमां तां संबंधी अने तेनो मीलाए सर्व अंतर ज कलियत छे.

किंवा जो बहिर जईने साचा पदार्थोनि देखे, तो रात्रिमां सूतेलो पुरय, हरिढारमां मध्याह्ना सूर्ययी तपेलो महल गंगाथी पूर्वे अने नीलपर्वत गंगाथी पश्चिमे देखे छे. त्यां रात्रिमां मध्याह्नो सूर्य नथी, गंगाथी पूर्व दिशामां हरिढार-पुरी नथी, अने गंगाथी पश्चिम नीलपर्वत नथी. एथी एण साचा पदार्थोनुं देखुं स्वप्नमां असंभव छे: अने जाग्रतनी स्मृति (१). अने बहिर नीकळीने ईश्वरकृत पर्वतादिकांनुं स्वप्नमां ज्ञान थाय छे (२). ए वने पक्षनुं निराकारण कन्युं.

३०९ सिद्धान्त कहे छे. इहो.

(स्वप्नमां सर्व त्रिपुटी उत्पन्न थाय छे.)

एथी अंतर उपजे, त्रिपुटी सकल समाज;

वेद कहे ए अर्थने सहू प्रमाण शिरताज. ६.

टीका:—जाग्रतना पदार्थोनी स्मृति, अने लिंग(शरीर)नुं बहिर नीकळुं (ए पूर्वोक्त वे पक्ष) तां संभवे नहि. तथापि जाग्रतनी पेंठे ज्ञाता, ज्ञान (अने) ज्ञेय (ए) त्रिपुटी स्वप्नमां प्रतीत थाय छे; एथी कंठनी नाडीना अंतर ज सर्व फई उत्पन्न थाय छे. 'सर्व प्रमाणनो शिरताज' नाम प्रधान जे वेद छे तेणे एम कहुं छे. उपनिषद्मां आ प्रसंग छे:—जाग्रतना 'पदार्थ स्वप्नमां प्रतीत नथी थता. किन्तु रथ अने घोडा तथा

‘માર્ગ, તેમ જ રથમાં ઘેસઘાવાલા, સ્વપ્નમાં નવીન ઉત્પન્ન થાય છે.’ યથી પર્વત, સમુદ્ર, નદી, વન, ગ્રામ, પુરી, સૂર્ય, ચંદ્ર, જે ઠંદે સ્વપ્નમાં દેખાય છે, તે નવીન ઉપજે છે. જો સ્વપ્નમાં પર્વતાદિ ન હોય તો તેઓનું પ્રત્યક્ષજ્ઞાન સ્વપ્નમાં થાય છે, તે નહિ થયું જોઈયે. કેમકે વિષયસાથે ઇન્દ્રિયનો સંબંધ; વા અંતઃકરણની વૃત્તિનો સંબંધ, પ્રત્યક્ષ જ્ઞાનનો હેતુ છે. યથી પર્વતાદિક વિષય, અને તેઓના જ્ઞાનનાં સાધન ઇન્દ્રિય તથા અંતઃકરણ, સર્વ અંતર ઉત્પન્ન થાય છે.

યદ્યપિ સ્વપ્નના પદાર્થ શુક્તિરજતાદિકોની પેઠે, સાક્ષિ-ભાસ્ય છે; અંતઃકરણ ઇન્દ્રિયનો સ્વપ્નના જ્ઞાનમાં ઉપયોગ નથી યથી, જ્ઞેય જે પર્વતાદિક છે, તેઓની જ ઉત્પત્તિ સ્વપ્નમાં માનવી યોગ્ય છે; જ્ઞાતા (અંતઃકરણ) જ્ઞાન અને ઇન્દ્રિયોની ઉત્પત્તિ માનવી યોગ્ય નથી. તથાપિ જેમ સ્વપ્નમાં પર્વતાદિક પ્રતીત થાય છે, તેમ ઇન્દ્રિય અંતઃકરણ પ્રાણસહિત સ્થૂલ-શરીર પણ સ્વપ્નમાં પ્રતીત થાય છે, યથી તેઓની પણ ઉત્પત્તિ માનવી જોઈયે.

કિંવા સ્વપ્નના પદાર્થોવિષે નેત્રાદિકોની વિષયતા માન થાય છે. તે (જાગ્રત્નાં) ‘વ્યાવહારિક’ નેત્રાદિકોની વિષયતા તો સ્વપ્નના ‘પ્રાતિભાસિક’ પદાર્થોવિષે વને નહિ. કેમકે, - ‘સ મ સ ત્તા વા લ્લા પ દાર્થ જ પો ત પો તા માં સા ધ ક વા ધ ક ‘હો ય છે.’ એ પંચમ તરંગમાં પ્રતિપાદન કન્યું છે. યથી વ્યાવ-હારિક નેત્રાદિક શરીરમાં છે પણ તેઓથી સ્વપ્નના (પ્રાતિ-ભાસિક) પદાર્થની વિષયસત્તા હોવાથી, તેઓના જ્ઞાનની વિષયતા સ્વપ્નના પર્વતાદિકોને વને નહિ. કિંવા વ્યાવહારિક જે ઇન્દ્રિય છે તે પોતપોતાના ગોલરૂને ત્યાગીને કાર્ય કરવામાં સમર્થ થાય નહિ. અને સ્વપ્ન અવસ્થામાં (સૂતેલાના)

हस्त, पाद, वाक्नां गोलक तो निश्चल अन्यने देखाय छे, अने हस्तमां द्रव्यग्रहण करीने (स्वप्नमां ते सूतेलो) पोकारतो धारन करे छे. एथी स्वप्नमां इन्द्रियोनी उत्पत्ति अवश्य मानवी जोइये. तेम सुखदुःख अने तेओनुं ज्ञान, तथा सुख-दुःखज्ञानना आश्रय-प्रमाता, स्वप्नमां प्रतीत थाय छे. विना-शयैला पदार्थनी प्रतीति थाय नहि. एथी सर्व त्रिपुटी-समाज स्वप्नमां उत्पन्न थाय छे.

अनिर्वचनीय ख्यातिनी आ रीति छे:-'जे ट लां भ्रम ज्ञान 'छे ते ओ ना विषय सर्व अनिर्वचनीय उत्पन्न थाय 'छे. विषय विना कोई ज्ञान थाय नहि.' ए सिद्धान्त छे. अन्य शास्त्रना मतमां तो, 'अन्य पदार्थनुं अन्य रूपथी भान 'थाय ते भ्रम कहेवाय छे.' सिद्धान्तमां तो 'जेवो पदार्थ 'होय तेवुं ज ज्ञान थाय छे.' एथी भ्रमस्थलमां पण विषयनी उत्पत्ति अवश्य थाय छे विषय विना ज्ञान थाय नहि. ए रीति ए स्वप्नमां त्रिपुटीनी प्रतीति होवाथी सर्व समाज उत्पन्न थाय छे. ६.

३१०. एनेविषे आवी शंका थाय छे:-स्वप्नना जे पदार्थ प्रतीत थाय छे, तेओनी उत्पत्ति अंगीकार थाय तो, जेम स्वप्न-दृष्टान्तथी जाग्रतना पदार्थ मिथ्या सिद्धान्तमां कहेवा छे, तेम जाग्रतना पदार्थोनी पेटे उत्पत्तिवाळा होवाथी स्वप्नना पदार्थ पण सत्य थया जोइये. अने स्वप्नना प्रतीत पदार्थनी उत्पत्ति न मानिये तो ए दोष (आवतो) नथी. केमके जाग्र-तना पदार्थ तो उत्पन्न थई प्रतीत थाय छे, अने स्वप्नमां पदार्थ (उत्पन्न) थयाविना प्रतीत थाय छे. एथी स्वप्नमां (उत्पन्न) थयाविनाना पदार्थोनुं ज्ञान भ्रमरूप होय छे, तेओनी उत्पत्ति मानवी योग्य नथी.

૩૧૧. ષ શં કા તું સ મા ધા ન.

દ્વો.

સાધનસામગ્રી વિના ઉપજે, તે જુઠું હોય;
સામગ્રીવિન ઉપજે, જે તે મિથ્યા સોય. ૭.

ટીકા:-જે વસ્તુની ઉત્પત્તિમાં જેટલી દેશકાલાદિસામગ્રી 'સાધન' નામ કારણ છે, એટલી સામગ્રી વિના ઉપજે તે મિથ્યા કહેવાય છે. અને સ્વપ્નના હસ્તી આદિકોની ઉત્પત્તિને યોગ્ય દેશકાલ છે નહિ. बहुकालમાં અને बहुदेशમાં ઉપ-જવાયોગ્ય હસ્તીઆદિ ક્ષણમાત્ર કાલમાં અને સૂક્ષ્મ કંઠદેશમાં ઉપજે છે, યથી મિથ્યા છે. યદ્યપિ સ્વપ્નઅવસ્થામાં કાલ દેશ પળ અધિક પ્રતીત થાય છે, તથાપિ અન્ય પદાર્થોની પેઠે સ્વપ્નમાં અધિક કાલ અને અધિક દેશ પળ અનિર્વચનીય, પ્રાતિભાસિક ઉત્પન્ન થાય છે. કેમકે વિષય વિના પ્રત્યક્ષજ્ઞાન થાય નહિ. અને સ્વપ્નમાં અધિક દેશકાલનું જ્ઞાન થાય છે. વ્યાવહારિક દેશકાલ ન્યૂન છે. યથી પ્રાતિભાસિક (દેશ-કાલ) ઉત્પન્ન થાય છે. પરંતુ સ્વપ્નઅવસ્થામાં ઉપજ્યા જે પ્રાતિભાસિક દેશકાલ, તે સ્વપ્નઅવસ્થાના હસ્તીઆદિકોના, કારણ નથી. કેમકે કારણ હોય તે પહેલાં ઉપજે છે, અને કાર્ય પછી ઉપજે છે. સ્વપ્નનાં દેશકાલ અને હસ્તીઆદિક એક જ સમયમાં થાય છે. યથી તેઓનો (હસ્તીઆદિ અને દેશકાલનો) કાર્યકારણભાવ વને નહિ. અને વ્યવહારિક દેશકાલ ન્યૂન છે, હરિતઆદિકોને યોગ્ય નથી, યથી દેશકાલ-રૂપ સામગ્રી વિના ઉપજે છે, યથી સ્વપ્નમાં પદાર્થ મિથ્યા છે. માતાઆદિ લઈને ધીજી પળ હસ્તીઆદિકોની સામગ્રી સ્વપ્નમાં છે નહિ. યદ્યપિ સ્વપ્નમાં પ્રાણિપદાર્થના માતાપિતા પળ પ્રતીત થાય છે. તથાપિ સ્વપ્નના માતાપિતા પુત્રની ઉત્પત્તિના

કારણ નથી. કેમકે માતાપિતા અને પુત્ર એક ક્ષણમાં સાથે ઉપજે છે. યથી તેઓનો કાર્યકારણમાત્ર નથી. જે નિદ્રા સહિત અવિદ્યા સ્વપ્નના પદાર્થ ઉપજે છે, તે જ અવિદ્યા તે પદાર્થો-વિષે, માતાપણુ, પિતાપણુ, અને પુત્રપણુ ઉપજાય છે, એ રીતિએ સ્વપ્નના પદાર્થની ઉત્પત્તિમાં ઘોંઝી કોઈ સામગ્રી નથી, કિન્તુ અવિદ્યા જ નિદ્રારૂપદોષસહિત કારણ છે. દોષસહિત અવિદ્યાથી જે જન્ય હોય, તે શુક્તિરજતની પેઠે મિથ્યા હોય છે. યથી સ્વપ્નના પદાર્થ સત્ય નથી, મિથ્યા છે.

તેઓનું ઉપાદાનકારણ અત કરણ છે, અથવા સાક્ષાત્ અવિદ્યા જ તેઓનું ઉપાદાનકારણ છે. પહેલા પક્ષમાં સાક્ષિ ચેતન સ્વપ્નનું અધિષ્ઠાન છે. ઘોંઝા પક્ષમાં બ્રહ્મચેતન સ્વપ્નનું અધિષ્ઠાન છે એ રીતિએ અત કરણનો અથવા અવિદ્યાનો પરિણામ, અને ચેતનનો વિવર્ત સ્વપ્ન છે

૩૨૨. યનાવિષે આવી શકા થાય છે—ઘોંઝા પક્ષમાં બ્રહ્મચેતન સ્વપ્નનું અધિષ્ઠાન કહ્યું, અને અવિદ્યા ઉપાદાનકારણ કહી; ત્યા અધિષ્ઠાનના જ્ઞાને, કલ્પિતની નિવૃત્તિ થાય છે અને સ્વપ્નનું અધિષ્ઠાન બ્રહ્મ છે, યથી બ્રહ્મજ્ઞાન વિના અજ્ઞાનીને જાગ્રત્માં સ્વપ્નની નિવૃત્તિ ન થઈ જોઈયે.

૧૮૧. ત્રિવિધ જીવ. સૂક્ષ્મ સૂક્ષ્મ દેહદ્રવ્ય અવચ્છિન્ન કૂટસ્થચેતનરૂપ 'પાર-માર્થિક' જીવ (૧), માયાએ આવૃત્ત કૂટસ્થવિષે કલ્પિત અન્ત કરણમા ચિદાભાસરૂપ અને દેહદ્રવ્યમાં અભિમાનનો કર્તા 'વ્યાપહારિક' જીવ (૨), અને નિદ્રારૂપ માયાએ આવૃત્ત વ્યાપહારિક જીવરૂપ અધિષ્ઠાનમાં કલ્પિત 'પ્રાતિભાસિક' જીવ (૩), એવા મેદથી જીવ ત્રણ પ્રકારના છે તેના વાદી વિદ્યારણ્યસ્વામીનાદિ છે તેઓએ, સ્વપ્નનું અધિષ્ઠાન વ્યાપહારિક જીવ અને વ્યાપહારિક જગત્ કહ્યું છે. તેમાં સ્વપ્નના જીવ(દૃષ્ટ)નું અધિષ્ઠાન જાગ્રત્નો જીવ છે, અને સ્વપ્નના જગત્(દૃશ્ય)નું અધિષ્ઠાન જાગ્રત્નું જગત્ છે, અને સ્વપ્નમધ્યાસનું ઉપાદાન, વ્યાવહારિક જીવ જગત્નું આવરક નિદ્રારૂપ અવસ્થાઅજ્ઞાન (તૂલઅજ્ઞાન) છે

३१३. अन्य शंकाः—जेम स्वप्ननुं अधिष्ठान ब्रह्म, अने उपादानकारण अविद्या छे; तेम वेदान्तसिद्धान्तमां जाग्रतना व्यावहारिक पदार्थनुं पण अधिष्ठान ब्रह्म छे, अने उपादानकारण अविद्या छे. एथी जाग्रतना पदार्थने 'व्यावहारिक' कहे छे, अने स्वप्नने 'प्रातिभासिक' कहे छे, एवो भेद न थयो जोइये केमके, वंनेनुं अधिष्ठान ब्रह्म छे, अने उपादानकारण अविद्या छे; एथी जाग्रत् स्वप्न वंने व्यावहारिक थवां जोइये; अथवा वंने प्रातिभासिक थवां जोइये.

३१४ (उपरनीवेशं कानुं समाधान.)

ते वने शंका वने नहि. केमके प्रथमशंकां आ समाधान छे,—निवृत्ति वे प्रकारनी होय छे, ए पूर्व (चतुर्थतरंगमां अंक १४२ विषे) ख्यातिनिरूपणमां कही छे. कारण-सहित कार्यना विनाशरूप अत्यन्तनिवृत्ति तो स्वप्नी जाग्रत्मां ब्रह्मज्ञान विना, वने नहि. परंतु दंडना प्रहारथी जेम घटनो मृत्तिकामां लय धाय छे तेम स्वप्ननो हेतु जे निद्रादोष तेना नाशथी, वा स्वप्नी विरोधिनी जाग्रत्नी उत्पत्तिथी, अविद्यामां लय रूप निवृत्ति स्वप्नी ब्रह्मज्ञान विना संभवे छे.

३१५. (जाग्रतना पदार्थ व्यावहारिक छे, स्वप्नना प्रातिभासिक छे)

अन्य जे शंका करीः—'जाग्रत् स्वप्न वंने समान थवां जोइये, ते वने नहि. केमके, जाग्रतना देहादिक पदार्थनी उत्पत्तिमां तो अन्यदोषरहित केवल अनादिअविद्या जे उपादानकारण छे; अने स्वप्नना पदार्थमां तो सादिनिद्रादोष पण अविद्यानां सहायक छे. एथी अन्यदोषरहित केवल अविद्याजन्य (जाग्रत्ना पदार्थ) व्यावहारिक कहवाय छे. अने

સાદિદોષસહિત (ત્લા)અવિદ્યાજન્ય (સ્વપ્નના પદાર્થ અને રજ્જુ સર્પોદિક) 'પ્રાતિભાસિક' કહેવાય છે. સ્વપ્નના પદાર્થ નિદ્રાદોષસહિત અવિદ્યાજન્ય હોવાથી પ્રાતિભાસિક છે, અને જાગ્રત્ના પદાર્થ અન્યદોષરહિત અવિદ્યાજન્ય હોવાથી 'વ્યાવહારિક' કહેવાય છે. એ રીતિએ સ્વપ્નના પદાર્થોમાં જાગ્રત્-પદાર્થથી વિલક્ષણતા છે. પરંતુ એ સંપૂર્ણ ઘ્રણ પ્રકારની સત્તા માનીને, સ્થૂલદષ્ટિએ, કહી છે. ત્રિચારદષ્ટિએ તો ઘ્રણ પ્રકારની સત્તા વને નહિ, અને જાગ્રત્ સ્વપ્નની પરસ્પર વિલક્ષણતા પણ વને નહિ.

(ઈશ્વરરચિત અને જીવસંકલ્પરચિત પણ એ પ્રકારના પદાર્થ.)

૩૧૬. યદ્યપિ વેદાન્તપરિભાષાદિક ગ્રંથોમાં પૂર્વપ્રકારથી 'વ્યાવહારિક' અને 'પ્રાતિભાસિક' પદાર્થોનો ભેદ કહ્યો છે, યથી ઘ્રણે સત્તા માની છે; તેમ વિદ્યારણ્યસ્વામીએ પણ ઘ્રણ સત્તા માની છે; કેમકે આ પ્રસંગ તેઓએ લખ્યો છે:-એ પ્રકારના દેહાદિક પદાર્થ છે;-એક તો ઈશ્વરરચિત છે, તે વા હ્ય છે; અને યોજા, જીવના સંકલ્પરચિત છે, તે મનોમય કહેવાય છે ને આં ત ર છે. તે વેમાં જીવસંકલ્પથી રચિત આંતરમનોમય સાક્ષિભાસ્થ છે; અને ઈશ્વરરચિત વાહ્ય છે, તે પ્રમાતાપ્રમાણના વિષય છે. અને આં ત ર મ નો મ ય દે હા દિક જ જી ઘ-ને સુ ય દુઃ ય ના હે તુ છે. અને વાહ્ય જે ઈશ્વરરચિત છે તે સુખઃદુઃખના હેતુ નથી, યથી મનોમય પદાર્થોની નિવૃત્તિ મુમુક્ષુને અપેક્ષિત છે. અને વાહ્યપ્રાંચ સુખદુઃખના હેતુ નથી યથી તેની નિવૃત્તિ અપેક્ષિત નથી.

જેમ એ પુરુષોના એ પુત્ર વિદેશમાં ગયા હોય, તેમાંથી એકનો પુત્ર મરી જાય; (અને) એકનો જીવતો હોય. તે જીવતો પુત્ર મોટી વિભૂતિને પ્રાપ્ત થઈને, કોઈ પુરુષદ્વારા, પોતાના

પિતાને પોતાની વિભૂતિપ્રાપ્તિના, અને વીજાના મરણના, સમાચાર મોકલે. ત્યાં સમાચાર શુણાવવાવાળો દુષ્ટ હોય પથી જીવતા પુત્રના પિતાને કહે, - 'તારો પુત્ર મરી ગયો,' અને મરેલા પુત્રના પિતાને કહે, - 'તારો પુત્ર શરીરથી નીરોગ છે, મોટી વિભૂતિને પ્રાપ્ત થયો છે, (અને) થોડા કાલમાં હસ્તિ-આરૂઢ મોટા સમાજથી આવશે.' તે વંચકવચનને શુણીને જીવતા પુત્રનો પિતા રહે છે; (અને) મહત્ દુઃખનો અનુભવ કરે છે; અને મરેલા પુત્રનો પિતા મહત્ હર્ષને પ્રાપ્ત થાય છે.

૫ રીતિ ૫ દેશાન્તરવિષે ઈશ્વરરચિત પુત્ર જીવે છે, તોપણ મનોમય પુત્ર મરી ગયો પથી દુઃખ થાય છે, ઈશ્વરરચિત જીવતાનું સુખ થાય નહિ. તેમ વીજાનો ઈશ્વરરચિત પુત્ર મરી ગયો છે, તેનું દુઃખ થાય નહિ, મનોમય પુત્ર) જીવે છે, તેનું સુખ થાય છે. પથી જીવસૃષ્ટિ જ સુખદુઃખનો હેતુ છે, ઈશ્વર-સૃષ્ટિ સુખદુઃખનો હેતુ નથી. ૫ રીતિ ૫ વિદ્યારણ્ય સ્વામી ૫ (પંચદશીમાં) જીવસૃષ્ટિ અને ઈશ્વરસૃષ્ટિ બે પ્રકારની(સૃષ્ટિ) કહી છે. ત્યાં જીવસૃષ્ટિ પ્રાતિભાસિકી છે, અને ઈશ્વરસૃષ્ટિ વ્યાવહારિકી છે. ૫મ અન્યગ્રંથકારો ૫ પણ સત્તા ત્રણ પ્રકારની કહી છે. ચેતનની પરમાર્થસત્તા છે. અને ચેતનથી ભિન્ન જડપદાર્થોની બે પ્રકારની સત્તા છે. ૫મ વ્યવહારિક સત્તા અને ધીર્જા પ્રાતિભાસિકસત્તા. સૃષ્ટિના આદિકાલમાં ઈશ્વરસંકલ્પથી ઉપજ્યાં જે કેવલ અવિદ્યાનાં કાર્ય-પંચમૂત અને તેઓનાં કાર્ય-ની વ્યાવહારિકસત્તા છે. ઘાંપસહિત અવિદ્યાનાં કાર્ય-સ્વપ્ન શુકિરજતાદિકોની પ્રાતિભાસિકસત્તા છે. ૫ રીતિ ૫ જાગ્રત્ પદાર્થોની વ્યાવહારિકસત્તા અને સ્વપ્નની પ્રાતિભાસિકસત્તા કહી છે.

(જાગ્રત્ સ્વપ્નના પદાર્થમાં વિલક્ષણતા સિદ્ધ થતી નથી.)

(દષ્ટિસૃષ્ટિવાદ. ૩૧૭ થી ૩૨૯ પર્યન્ત.)

૩૧૭. તથાપિ અનાત્મપદાર્થોની સર્વની પ્રાતિભાસિકી જ સત્તા છે, યથી વે પ્રકારની જ સત્તા છે. ચેતનની પરમાર્થ-સત્તા, અને ચેતનથી મિશ્ર સકલ અનાત્માની પ્રાતિભાસિકી જ સત્તા છે. જાગ્રત્સ્વપ્નના પદાર્થોની કિચ્છિત્ માત્ર પળ વિલક્ષણતા સિદ્ધ થાય નહિ. ય ઉત્તમ સિદ્ધાન્તનું પ્રતિ-પાદન કરે છે.

ચોપાદં.

સામગ્રીં વિના ઉપજે યથી, સ્વપ્નસૃષ્ટિ સહુ મિથ્યા તેથી;

દેશકાલનો લેશ ન જેમાં, સર્વં જગત્ ઉપજે છે તેમાં. ૮.

સ્વપ્નસમાન જુઠું જગત્ જાણો, લેશ સત્ય તેને મા માનો;

જાગ્રત્માં જ સ્વપ્ન નહિ જેમ, સ્વપ્નમાં જ જાગ્રત્ નહિ તેમ. ૯.

ટીકા:—દેશકાલસામગ્રી વિના સ્વપ્નના હસ્તી પર્વતાદિક ઉપજે છે, યથી 'મિથ્યા' કહેવાય છે. તેમ આકાશાદિ પ્રવંચ-ની સૃષ્ટિ (ઉત્પત્તિ) વ્રહ્મયી થાય છે, તે વ્રહ્મવિપે દેશકાલનો લેશ પળ છે નહિ. સ્વપ્નવિપે હસ્તિપર્વતાદિકોના યોગ્ય તો દેશકાલ નથી, તથાપિ અલ્પદેશકાલ છે; તેમ આકાશાદિ-કોની સૃષ્ટિમાં અલ્પદેશકાલ પળ છે નહિ, કેમકે દેશકાલ-રહિત પરમાત્માથી આકાશાદિકોની સૃષ્ટિ કહી છે. ય કારણ-થી તૈત્તિરીયશ્રુતિમાં આકાશાદિકોની ક્રમથી સૃષ્ટિ કહી છે, દેશકાલની સૃષ્ટિ કહી નહી. અને સૂત્રકારભાષ્યકારે પળ દેશકાલની સૃષ્ટિ નથી કહી. ['સૃષ્ટિ' નામ ઉત્પત્તિનું છે.] ત્યાં તૈત્તિરીયશ્રુતિનો અને સૂત્રકારભાષ્યકારનો આજ અભિપ્રાય છે:—આકાશાદિક પ્રવંચની ઉત્પત્તિ દેશકાલસામગ્રી વિના થાય છે, યથી આકાશાદિક સ્વપ્નની પેઠે મિથ્યા છે.

૩૧૮. યદ્યપિ મધુસૂદનસ્વામીણ દેશકાલને સાક્ષાત્ અ-
વિદ્યાનાં કાર્ય કહ્યાં છે. યથી માયાવિશિષ્ટ પરમાત્માથી, પ્રથમ
માયાના પરિણામ દેશકાલ થાય છે, તેથી અનન્તર આકાશ-
દિકોની ઉત્પત્તિ થાય છે; યથી યોગ્યદેશકાલથી આકાશ-
દિક પ્રપંચની ઉત્પત્તિ સંભવે છે. (એમ કોઈ કહે.)

તથાપિ મધુસૂદનસ્વામીનો આ અભિપ્રાય નથી જે, -દેશ-
કાલ પ્રથમ થાય છે અને આકાશાદિક ઉત્તર થાય છે. કેમકે,
અતીત (ભૂત) કાલમાં હોય તે 'પ્રથમ' અથવા 'પૂર્વ' કહેવાય
છે. અને ભવિષ્યત્કાલમાં થાય તે 'ઉત્તર' કહેવાય છે. [જેને
'પછી' પણ કહે છે.] આકાશાદિકોની ઉત્પત્તિથી પ્રથમ
(પૂર્વ) દેશકાલ ઉપજે છે, એ કહેવાથી આકાશાદિકોની
ઉત્પત્તિ કાલથી પૂર્વ કાલ ઉપહિત પરમાત્મા, દેશકાલનું
અધિષ્ઠાન છે, એ સિદ્ધ થશે. યથી દેશકાલની ઉત્પત્તિમાં
પૂર્વકાલની અપેક્ષા થવાની. અને કાલની ઉત્પત્તિ વિના પૂર્વ-
કાલ અસિદ્ધ છે. યથી આકાશાદિકોથી પૂર્વકાલમાં દેશ-
કાલાદિક હોય છે, એ કહેવું વને નહિ.

કિન્તુ મધુસૂદનસ્વામીનો આ અભિપ્રાય છે:-જેમ ભૂત-
ભૌતિકપ્રપંચ પ્રતીત થાય છે, તેમ દેશકાલ પણ પ્રતીત થાય છે.
અને આત્માથી મિત્ર કોઈ નિત્ય છે નહિ, યથી દેશકાલ નિત્ય
નથી. અને વિનાથયેલાની પ્રતીતિ થાય નહિ, યથી આકાશા-
દિકોની પેઠે દેશકાલની પણ ઉત્પત્તિ થાય છે. તે દેશ-
કાલ માયાના પરિણામ છે અને ચેતનના વિયત છે. જે
ત્રિયત્ત્વે હોય તે કશું કારણ હોય નહિ. યથી આકાશા-
દિક પ્રપંચની ઉત્પત્તિમાં દેશકાલને કારણતા વને નહિ,
કિંવા કારણ પ્રથમ હોય છે, (અને) કાર્ય ઉત્તર હોય છે.
આકાશાદિક પ્રપંચથી દેશકાલ પ્રથમ હોય છે એ કહેવું વને

નહિ, એ ચાર્તા પામે જ કહી આવ્યા ઠિયે, તેથી પણ દેશ કાલને આકાશાદિક પ્રપચની કારણતા વને નહિ મિન્તુ સ્વપ્નના પિતાપુત્રની પેઠ, દેશકાલ સહિત આકાશાદિક પ્રપચ માયાવિશિષ્ટ પરમાત્માથી ઉત્પન્ન થાય છે અને કાર્ પદાર્થ કાર્ દેશમા અને કોઈ કાલમા ઉપજે છે, અન્યદેશમા અન્યકાલમા નથી ઉપજતા એ સીતિય સર્વ પદાર્થ પ્રલય-કાલમા નથી ઉપજતા, સૃષ્ટિકાલમા ઉપજે છે, યથી દેશકાલ ને કારણતા પ્રતીત પણ થાય છે, તોપણ જે માયાથી-દેશકાલસહિત પ્રપચની ઉપત્તિ થાય છે, તે માયાથી જ, દેશ-કાલસહિત પ્રપચની ઉત્પત્તિ થાય છે, તે માયાથી જ, દેશ કાલમા કારણતા અને અન્ય પ્રપચમા કાર્યતા, પ્રતીત થાય છે.

૩૧૯ અને આકાશાદિક પ્રપચના દેશકાલ કારણ નથી પનાવિયે (ગદીને) આવી શકા થાય છે - વિનાયયેલા પદાર્થો ની તા પ્રતીતિ થાય નહિ, અને સિદ્ધાન્તમા અગીકાર નથી જા વિનાયયેલાની પ્રતીતિ માનિયે તા અસત્સ્વ્યાતિનો અગી કાર થયે, અને વિનાયયેલા ઘઘ્યાપુત્ર શશશ્રુગાદિકાની પ્રતીતિ થઈ જાઈય, (પણ તે થતી નથી) યથી વિનાયયેલાની પ્રતીતિ થાય નહિ યથી દેશકાલમા કારણતા ન હાય તા, દેશકાલમા સર્વ પદાર્થોની કારણતા માયાના વલથી પણ પ્રતીત ન થવી જાઈય અને કારણતા દેશકાલમા પ્રતીત થાય છે યથી દેશકાલ સર્વ પ્રપચના કારણ છે

અને (વાદી કહે છે કે) જા સિદ્ધાન્તી જામ કહે, - 'સર્વ પ્રપચ 'તુ કારણ બ્રહ્મ છે બ્રહ્મની કારણતા દેશકાલમા પ્રતીત 'થાય છે, અને દેશકાલમા કારણતા નથી' તે પણ વને નહિ કેમકે, જેમ દેશકાલનુ અધિષ્ઠાન બ્રહ્મ છે, તેમ સર્વ પ્રપચનુ અધિષ્ઠાન બ્રહ્મ છે. દેશકાલમા જ બ્રહ્મની કારણતા પ્રતીત થાય, અન્યમા નહિ એ કહેવામા કોઈ હતુ નથી યથી અધિ-

પ્રાનબ્રહ્મની કારણતા દેશકાલમાં પ્રતીત થાય તો, બ્રહ્મ સર્વ પ્રપંચનું અધિષ્ઠાન છે યથી, સર્વ પ્રપંચમાં કારણતા પ્રતીત થવી જોઈએ. કોઈમાં કારણતા, કોઈમાં કાર્યતા, યવા ભેદ ન જોઈયે. કિંવા દેશકાલમાં કારણતા છે નહિ અને બ્રહ્મમાં કારણતા છે, તે બ્રહ્મની કારણતા દેશકાલમાં પ્રતીત થાય છે, ય કહેવાથી અન્યથાખ્યાતિનો અંગીકાર થશે. કેમકે અન્યથસ્તુની અન્યરૂપથી પ્રતીતિને 'અન્યથાખ્યાતિ' કહે છે. દેશકાલ કારણ નથી, યથી કારણથી અન્ય અકારણ છે, તેઓ(અકારણરૂપ દેશકાલ)ની અન્યરૂપથી નામ કારણ-રૂપથી પ્રતીતિ માનવામાં અન્યથાખ્યાતિનો અંગીકાર થશે. અને સિદ્ધાન્તમાં અન્યથાખ્યાતિનો અંગીકાર નથી. જો આ સ્થાનમાં અન્યથાખ્યાતિ માનિયે તો, શુક્તિમાં અનિર્વચનીયરૂપ્યની ઉત્પત્તિ સિદ્ધાન્તમાં માની છે તે નિષ્કલ થશે. કેમકે અન્યથાખ્યા-તિમાં યે મત છે:—એક તો અન્યદેશમાં સ્થિતપદાર્થની અન્ય-દેશમાં પ્રતીતિ (તે) અન્યથાખ્યાતિ,—જેમ કાન્તાના કરમાં સ્થિત રજત(રૂપા)ની સંમુખ શુક્તિદેશમાં પ્રતીતિ અન્યથાખ્યાતિ. અથવા અન્યપદાર્થનો અન્યરૂપથી પ્રતીતિ અન્યથાખ્યાતિ,—જેમ શુક્તિની જ રજતરૂપથી પ્રતીતિ અન્યથાખ્યાતિ. યમ સર્વ ભ્રમસ્થલમાં અન્યથાખ્યાતિય નિર્વાહ સંભવે છે. અનિર્વચનીય રજતાદિકાંની ઉત્પત્તિરૂથન અસંગત થશે.

અને સિદ્ધાન્તી આમ કહે,—'વિષયના સમાનાકાર જ્ઞાન થાય છે. અન્યથસ્તુનું અન્યરૂપથી જ્ઞાન સંભવે નહિ. યથી 'રજતાકાર જ્ઞાનનો વિષય યણ અનિર્વચનીય રજત ઉત્પન્ન થાય છે.' ય અદ્વૈતસિદ્ધાન્તમાં કારણથી અન્ય જે દેશકાલ તેમાં-વિષે બ્રહ્મની કારણતાનું જ્ઞાન સંભવે નહિ. યથી દેશકાલમાં કારણતા જે પ્રતીત થાય છે, તે (કારણતા) વિનાયવેલનું.

અથવા બ્રહ્મમાં સ્થિત(કારણતા)નું, માન સંભવે નહિ; કિન્તુ
 દેશકાલમાં જ કારણતા છે, તેનું માન થાય છે. ૫ રીતિ ૫
 'આકાશાદિક પ્રવંચનાં કારણ દેશકાલ નહિ' ૫ કથન અસં-
 ગત છે. (૫મ વાકી કહે છે.)

૩૨૦. (સિદ્ધાન્તો કહે છે કે) તે શંકા બને નહિ. કેમકે
 બ્રહ્મની કારણતા દેશકાલમાં પ્રતીત થાય છે. જેમ જપાપુષ્પસં-
 વંધી સ્ફટિકમાં પુષ્પની રક્તતા પ્રતીત થાય છે; (અને) અધિષ્ઠાન-
 ની સત્યતા સ્વપ્નકાલમાં મિથ્યા હસ્તિપર્વતાદિકોમાં પ્રતીત
 થાય છે; ત્યાં સ્ફટિકમાં અનિર્વચનીયરક્તતાની ઉત્પત્તિનો
 અંગીકાર નથી કિન્તુ પુષ્પની રક્તતા સ્ફટિકમાં પ્રતીત થાય
 છે; ૫થી શ્વેતસ્ફટિકની રક્તરૂપથી પ્રતીતિ થવાથી, રક્ત-
 તાના જ્ઞાનમાં અન્યથાચ્છ્યાતિ જ માની છે; (અને) તેમ
 સ્વપ્નમાં મિથ્યા પદાર્થોવિપે સત્યતા પ્રતીતા થાય છે ત્યાં 'અનિ-
 વર્ચનીયસત્યતા તે પદાર્થોવિપે ઉત્પન્ન થાય છે,' ૫ કથન તો
 'સત્ય મિથ્યા છે.' ૫ (બદતોવ્યાઘાતદ્રોપવાળા) વચનની
 પેઠે સંભવે નહિ. અને વિનાયચેલની પ્રતીતિ થાય નહિ.
 કિન્તુ સ્વપ્નના અધિષ્ઠાનચેતનની સત્યતા, મિથ્યાપદાર્થોમાં
 પ્રતીતા થાય છે; ૫થી મિથ્યાપદાર્થોની સત્યરૂપે પ્રતીતિ
 હોવાથી, સત્યતાના જ્ઞાનમાં અન્યથાચ્છ્યાતિ જ માની છે. તેમ
 અધિષ્ઠાનબ્રહ્મની કારણતા, દેશકાલમાં અન્યથાચ્છ્યાતિપકરી,
 પ્રતીતા થાય છે.

૩૨૧. (વિ પદાર્થના સંબંધથી ૫કના ધર્મ વીજામાં પ્રતીત
 થાય ત્યાં જ અન્યથાચ્છ્યાતિ સંભવે છે.)

અને જો આમ કહિયે, - '૫ટલા સ્થાનમાં અન્યથા-ચ્છ્યાતિ
 માનિયે તો સર્વ ભ્રમ(સ્થાન)માં અન્યથાચ્છ્યાતિ જ માનવી
 જોઈયે,' તે શંકા બને નહિ. કેમકે, શ્રુતિરજતાદિકમાં અન્ય

ચાખ્યાતિ માનવામાં આ દોષ કહ્યો છે;—“વિષયથી વિલક્ષણ
 “જ્ઞાન ઘને નહિ.” અને જ્યાં સ્ફટિકમાં રક્તતાનું જ્ઞાન થાય, ત્યાં
 રક્તપુષ્પનો સ્ફટિકસાથે સંબંધ છે, યથી સ્ફટિકસંબંધી પુષ્પની
 રક્તતા સ્ફટિકમાં પ્રતીત થાય છે; કેમકે અંતઃકરણની ઘૃત્તિ
 જ્યારે રક્તપુષ્પાકારા થાય છે, તે જ (અંતઃકરણની)ઘૃત્તિનો
 વિષય રક્તપુષ્પસંબંધી સ્ફટિક છે, યથી પુષ્પની રક્તતા સ્ફટિકમાં
 પ્રતીતા થાય છે. અને શુક્તિનું તો રજતરૂપે જ્ઞાન સંભવે નહિ.
 કેમકે શુક્તિદેશમાં અનિર્વચનીય તથા વ્યાવહારિક રજત તો
 અન્યમતમાં છે નહિ, કિન્તુ શુક્તિ છે. તે શુક્તિના સંબંધે
 શુક્તિના સમાનાકાર જ અંતઃકરણની ઘૃત્તિ થશે, રજતાકાર
 અંતઃકરણની ઘૃત્તિ થાય નહિ. યથી અવિદ્યાનું પરિણામ
 ચેતનનું વિચર્ત અનિર્વચનીય રજત અને તેનું જ્ઞાન ઘને ઉત્પદ
 થાય છે. અને સ્ફટિકમાં રક્તતા પ્રતીતા થાય ત્યાં ઘૃત્તિનો
 સંબંધ, સ્ફટિક અને રક્તપુષ્પ ઘનેનો સાથે થાય છે. રક્ત-
 પુષ્પના સંબંધથી રક્તાકારા ઘૃત્તિ થાય છે, તે ઘૃત્તિનો સ્ફટિક-
 સાથે યણ સંબંધ છે, અને સ્ફટિકમાં રક્તતાનો છાયા છે,
 યથી પુષ્પનો ધર્મ રક્તતા સ્ફટિકમાં તે જ ઘૃત્તિનો વિષય છે.
 ય રીતિય જ્યાં ઘે પદાર્થનો સંબંધ છે, ત્યાં યકના ધર્મનો
 વીજ્ઞામાં પ્રતીતિ સંભવે છે, ત્યાં અન્યથાચ્ચાતિ જ સંમયે છે.
 યમાં ઘને પદાર્થનો સંબંધ નહિ ત્યાં અન્યથાચ્ચાતિ નહિ,
 કિન્તુ અનિર્વચનીયચ્ચાતિ છે.

જેમ પુષ્પસંબંધી સ્ફટિકમાં પુષ્પની રક્તતા પ્રતીતા યાય
 છે, તેમ સ્વપ્નના દસ્તિપર્વતાદિકાનો યણ અધિષ્ઠાનચેતન યાથે
 સંબંધ છે, યથી ચેતનનો ધર્મ-સત્પતા-યણ, ચેતનસંબંધી
 દસ્તિપર્વતાદિકામાં પ્રતીતા યાય છે, તે અન્યથાચ્ચાતિ છે. તેમ

अधिष्ठानचेतननां धर्म-कारणता-, अधिष्ठानचेतनसंबंधी देश-कालमां, प्रतीत थाय छे.

३२२. अने जे पर्व शंका करी:-'अधिष्ठानचेतननां संबंध सर्व प्रपंच साये छे. जो संबंधीनां धर्म, अन्यथाख्यातिप-करी, अन्यमां प्रतीत थाय, तो चेतननी कारणता सर्व प्रपंचमां प्रतीता थयी जोइये'. ते शंका बने नहि. केमके, जेम स्वप्नमां घे शरीर उत्पन्न थाय छे, (तेमांयी) एक शरीर पितृ रूप प्रतीत थाय छे अने बीजुं शरीर पुत्ररूप प्रतीत थाय छे. त्यां बने शरीरानां स्वप्नना अधिष्ठानचेतनसाये संबंध पण छे, तथापि पितृशरीरमां अधिष्ठानचेतननी कारणता प्रतीता थाय छे, अने पुत्रशरीरमां कारणता प्रतीता थाय नहि; किन्तु पितृजन्य पुत्र छे, ए रीतिप पुत्रशरीरमां कार्यता प्रतीता थाय छे. ए रीतिप अधिष्ठानचेतनसाये संबंध तां सर्वनां छे, तथापि देशकालमां चेतनधर्म-कारणता-नी प्रतीति थाय छे, (अने) अन्यमां कार्यतानी प्रतीति थाय छे.

अथवा अधिष्ठानचेतन असंग छे, ते कोईनुं परमार्थतः कारण नयी. मायामां आभास यद्यपि कारण छे, तथापि आभासतुं स्वरूप मिथ्या हांय छे. जे पोते ज मिथ्या हांय ते बीजानुं कारण बने नहि. पथी परमात्माविषे प्रपंचनी कारणता होय, तो तेनी देशकालमां, भ्रमथी, प्रतीति संभवे. ते परमात्माविषे कारणता छे नहि,-परमात्मा कारणतादिक धर्मरहित असंग छे-तेनी कारणता देशकालमां प्रतीता थाय छे, ए कहेतुं संभवे नहि. किन्तु मायाकृत अनिर्वचनीय देशकाल अनिर्वचनीय कारणतावाळा थाय छे, अने परमार्थ-करी देशकाल कारण नथी. जेम पुत्रहीन पुरुष स्वप्नमां पुत्र-पौत्र बनेने देखे, त्यां पुत्रपौत्रशरीर अनिर्वचनीय होय छे,

અને પુત્રશરીરમાં પૌત્રશરીરની અનિર્વચનીયકારણતા હોય છે. ત્યાં પરમાર્થકરો, પુત્રશરીર અને પૌત્રશરીરનો પરસ્પર કારણકાર્યભાવ હતો નથી. તેમ અનિર્વચનીય કારણ-દેશ-કાલ-પ્રતીત થાય છે. પરમાર્થથી દેશકાલ અને આકાશ-દિક પ્રપંચનો કારણકાર્યભાવ છે નહિ. પરોતિષ દેશકાલ-સામગ્રી વિના જાગ્રત્ પ્રપંચની ઉત્પત્તિ થાય છે, યથી સ્વપ્નની પેઠે જાગ્રત્ પળ મિથ્યા છે. અને જેમ સ્વપ્નમાં સ્ત્રીપુત્રાદિક સ્વપ્નનાં જ સુખદુઃખના હેતુ છે, જાગ્રત્માં તેઓનો અભાવ છે, તેમ જાગ્રત્ના પદાર્થોનો સ્વપ્નમાં અભાવ હોય છે. (૧) વંને સમ છે.

૩૨૩. (જાગ્રત્પદાર્થ સ્વપ્નપદાર્થથી વિલક્ષણ નથી)

અને જો આમ કહે - 'જાગ્રત્થી સ્વપ્ન થઈને પુનઃ જાગ્રત્ થાય, ત્યાં પહેલા જાગ્રત્ના જે પદાર્થ છે, તે જ સ્વપ્નત્યવ-હિત (સ્વપ્નરૂપ અન્તરાયવાલા) વીજા જાગ્રત્માં રહે છે; અને પ્રથમ સ્વપ્નના પદાર્થ વીજા સ્વપ્નમાં રહેતા નથી, યથી 'સ્વપ્નના પદાર્થોથી જાગ્રત્ના પદાર્થ વિલક્ષણ છે.'

તે શંકા પણ સિદ્ધાન્તના અજ્ઞાની મૂઢની દૃષ્ટિથી થાય છે. કેમકે મૂર્ખોની દૃષ્ટિ આવી છે, - 'સંસારપ્રવાહ અનાદિ છે. તેમાં જીવોને જાગ્રત્, સ્વપ્ન, સુપુત્તિ થાય છે. જાગ્રત્કાલ-માં, સ્વપ્ન-સુપુત્તિ નષ્ટ થાય છે, અને સ્વપ્નકાલમાં જાગ્રત્-સુપુત્તિ નષ્ટ થાય છે, તેમ સુપુત્તિકાલમાં જાગ્રત્-સ્વપ્ન નષ્ટ થાય છે. પરંતુ સ્વપ્ન સુપુત્તિ હોય ત્યારે જાગ્રત્કાલનાં સ્ત્રી-પુત્રપદ્મુચનાદિક દૂર થાય નહિ, ઈન્તુ વન્યાં રહે (છે અને) તેઓનું જ્ઞાન જ દૂર થાય છે. પુનઃ જાગ્રત્ થાય ત્યારે પ્રથમ 'જાગ્રત્ના વિદ્યમાન પદાર્થોનું જ્ઞાન થાય છે.' ૧ અજ્ઞાની મૂર્ખોની દૃષ્ટિ છે.

૩૨૫. (જાગ્રત્ના પદાર્થો અને તેઓનું જ્ઞાન વચ્ચે સાચે જ ઉત્પન્ન થાય છે અને સાચે જ નષ્ટ થાય છે.)

અને સિદ્ધાન્ત તો આ છે.-સર્વ પદાર્થ ચેતનના વિવર્ત છે (અને) અવિદ્યાના પરિણામ છે. યથી શુક્તિરજતની પેટે જે કાલમાં જે પદાર્થ પ્રતીત થાય તે કાલમાં અધિષ્ઠાન-ચેતનઆશ્રિતઅવિદ્યાનો દ્વિવિધ પરિણામ થાય છે.-અવિદ્યાના તમોગુણઅંશનો ઘટ્ટાદિવિષયરૂપ પરિણામ થાય છે, અને અવિદ્યાના સત્ત્વગુણ(અંશ)નો જ્ઞાનરૂપ પરિણામ થાય છે. યદ્યપિ ચેતનને 'જ્ઞાન' કહે છે, યથી સત્ત્વગુણનો પરિણામ જ્ઞાન છે એ કહેવું વને નહિ. તથાપિ સર્વવ્યાપક ચેતન જ્ઞાન નથી, કિન્તુ સામાસવૃત્તિમાં આરૂઢચેતનને જ્ઞાન કહે છે, યથી ચેતનમાં જ્ઞાનવ્યવહારની સંપાદકવૃત્તિ છે. એ રીતિએ ચેતનમાં જ્ઞાનપણાની 'સંપાદકા' વૃત્તિ છે, (અથવા) એ રીતિએ ચેતનમાં જ્ઞાનપણાનો 'ઉપાધિ' વૃત્તિ છે, તેનેવિષે પણ જ્ઞાન-શબ્દનો પ્રયોગ થાય છે. જેમ લોકમાં કહે છે:-'ઘટનું જ્ઞાન 'ઉત્પન્ન થયું, પડનું જ્ઞાન નષ્ટ થયું.' ત્યાં વૃત્તિમાં આરૂઢ ચેતનનો તો ઉત્પત્તિનાશ સંભવે નહિ, વૃત્તિનો ઉત્પત્તિનાશ થાય છે, અને 'જ્ઞાનનો ઉત્પત્તિનાશ' (લોક) કહે છે. યથી વૃત્તિમાં પણ જ્ઞાનશબ્દનો પ્રયોગ થાય છે. તે વૃત્તિરૂપ જ્ઞાન સત્ત્વગુણનો પરિણામ છે, એ કહેવું સંભવે છે. તે વૃત્તિરૂપ પરિણામમાં ચેતનનો આભાસ હોય છે, ઘટ્ટાદિકવિષયરૂપ પરિણામમાં ચેતનનો આભાસ થાય નહિ. કેમકે યદ્યપિ વિષય અને વૃત્તિ વચ્ચે અવિદ્યાના પરિણામ છે, તથાપિ ઘટ્ટાદિક વિષય તો અવિદ્યાના તમોગુણનો પરિણામ છે, યથી મલિન છે, તેમાં આભાસ થાય નહિ; અને વૃત્તિ, સત્ત્વગુણનો પરિણામ, સ્વેચ્છા છે, તેમાં આભાસ થાય છે. એ રીતિએ વૃત્તિને ચેતનના

આમાસગ્રહણની યોગ્યતા હોવાથી વૃત્તિઅવચ્છિન્નચેતનને જ્ઞાન કહે છે, અને સાક્ષી કહે છે. ઘટાદિવિષયને આમાસ-ગ્રહણની યોગ્યતા નથી, એ કારણથી વિષયઅવચ્છિન્નચેતન 'જ્ઞાન' નહિ, અને 'સાક્ષી' પણ નહિ. એ રીતિએ જાગ્રત્ના પદાર્થ અને તેનું જ્ઞાન બંને સાથે જ ઉત્પન્ન થાય છે, અને સાથે જ નષ્ટ થાય છે. એ વેદનો ગૂઢ સિદ્ધાન્ત છે. યથી જાગ્રત્ના પદાર્થ ઘીજી જાગ્રત્માં રહે છે એ કહેવું સંભવે નહિ.

૩૨૫. યદ્યપિ સ્વપ્નથી જાગેલા પુરુષને આવી પ્રત્યભિજ્ઞા થાય છે:-'જે પૂર્વ પદાર્થ હતા તે જ આ પદાર્થ છે,' યથી જાગ્રત્ના પદાર્થોનો, જ્ઞાનના સમકાલે, ઉત્પત્તિનાશ નથી થતો, કિન્તુ જ્ઞાનથી પ્રથમ વિદ્યમાન હોય છે અને જ્ઞાનના નાશથી અનંતર પણ રહે છે. તથાપિ જેમ સ્વપ્નના પદાર્થ તે જ ક્ષણમાં ઉત્પન્ન થાય છે, અને આવા પ્રતીત થાય છે:-'મારા 'જન્મથી પણ પ્રથમ ઉપજેલા આ પર્વત સમુદ્રાદિક છે.'-ત્યાં તત્કાલ ઉપજેલા પદાર્થમાં વહુકાલ-સ્થિરતાની ભ્રાન્તિ થાય છે. યથી જે અવિદ્યાએ મિથ્યાપર્વતસમુદ્રાદિક ઉપજાવ્યાં છે, તે જ અવિદ્યાપકરી વહુકાલ-સ્થિરતા અને સ્થિરતાની પ્રતીતિ અનિર્વચનીયા ઉપજે છે. તેમ જાગ્રત્ના પદાર્થોવિષે પણ અનેક દિન સ્થિરતા છે નહિ, કિન્તુ અવિદ્યાવલે મિથ્યાસ્થિરતાં પણ તે પદાર્થોનીસાથે ઉપજીને પ્રતીત થાય છે.

અને જો એમ કહે કે:-'સ્વપ્નના પદાર્થ સાક્ષાત્ અવિદ્યાના 'પરિણામ છે; અને જાગ્રત્ના પદાર્થ સાક્ષાત્ અવિદ્યાના પરિ-
'ણામ નથી, કિન્તુ ઘટની ઉત્પત્તિ ઘંડચક્ર-કુલાલેકરી થાય

૧૮૨. જાગ્રત્ના પદાર્થોનું- 'પૂર્વ જાગ્રત્વિષે જે દીઠેલા તે પદાર્થ આ છે' યથા આકારવાલું પ્રત્યભિજ્ઞાજ્ઞાન, નિદ્રાથી ઉઠેલા મનુષ્યને થાય છે તે જ્ઞાન, -નરીપ-વાદ કિંવા દીપશિલા તેઓના પ્રત્યભિજ્ઞાજ્ઞાન ગેયું-ભ્રમરૂપ છે. પં. પી. પું.

‘હે, તેમ સર્વ પદાર્થોનો ઉત્પત્તિ પોતપોતાનાં કારણથી થાય
 ‘હે, માત્રાત અવિદ્યાથી નહિ. જો સાક્ષાત્ અવિદ્યાના પરિ-
 ‘ણામ હોય તો આકાશાદિક ક્રમથી પંચભૂતોની ઉત્પત્તિ,
 ‘અને (તેઓનું) પંચીકરણ, (યરં) તેઓંપકરી પ્રહ્લાણ્ડની
 ‘ઉત્પત્તિ શ્રુતિમાં કહી છે, તે અસંગત થવાની. યથી ઈશ્વર
 ‘સૃષ્ટિ-જાપ્રત્ના પદાર્થ-પોતપોતાના ઉપાદાનના પરિણામ
 ‘છે, અવિદ્યાના માત્રાત પરિણામ નહિ. સ્વપ્નના તો સર્વ
 ‘પદાર્થ અવિદ્યાના પરિણામ છે. તેઓંનું યક અવિદ્યા ઉપાદાન
 ‘હોવાથી, તે પદાર્થોની અને તેઓના જ્ઞાનની, યક અવિદ્યા
 ‘યક કાલમાં ઉત્પત્તિ સંભવે છે. જાપ્રત્ના પદાર્થ ભિન્નભિન્ન
 ‘કારણથી ઉત્પન્ન થાય છે. કાર્યથી પહેલું કારણ હોય છે.
 ‘અને કારણમાં કાર્યનો લય થાય છે. યથી ઘટ્ટની ઉત્પત્તિથી
 ‘પ્રથમ અને ઘટ્ટનારા પછી મૃત્તિપણ્ડ રહે છે. ય રીતિય કોઈ
 ‘પદાર્થ અલ્પકાલ સ્થિર અને કોઈ અધિક કાલ સ્થિર કાર્ય
 ‘કારણ છે. તેમ સ્વપ્નના નથી.’

૩૨૬. તે શંકા વને નહિ. કેમકે, જાપ્રત્ના પદાર્થોની પેઠે
 સ્વપ્નના પદાર્થોવિષે યણ કાર્યકારણમાવ પ્રતીત થાય છે. જેમ
 કોઈને આલું સ્વપ્ન થાય:-‘મારી ગાયને ઘાલડું થયું છે.
 ‘અથવા મારી સ્ત્રીને પુત્ર થયો છે’ ત્યાં ગાય અને સ્ત્રીવિષે
 કારણતાની પ્રતીતિ અને વહુકાલસ્થાયિતાની પ્રતીતિ થાય છે.
 ઘાલડું અને પુત્રવિષે કાર્યતા અને અલ્પકાલસ્થિરતા પ્રતીત
 થાય છે, અને સર્વ સમકાલ છે, કોઈ કોઈનું કારણ નથી;
 કિન્તુ ગાય, ઘાલડું સ્ત્રી આદિકોનું અવિદ્યા જ ઉપાદાન છે.
 તેમ જાપ્રત્વિષે યણ કોઈ અધિકકાલસ્થાયી કારણરૂપથી,
 (અને કોઈ ન્યૂનકાલસ્થાયી કાર્યરૂપથી, સ્વપ્નની પેઠે, પ્રતીત
 થાય છે; કોઈકોઈનું પરસ્પર કાર્યકારણ નથી પરંતુ સાક્ષાત્
 અવિદ્યાનાં કાર્ય છે.

૩૨૭. અને શ્રુતિવિષય જે ક્રમથી સૃષ્ટિ કહી છે, ત્યાં સૃષ્ટિ-પ્રતિપાદનમાં શ્રુતિનો અભિપ્રાય નથી, કિન્તુ અદ્વૈતવોધનમાં અભિપ્રાય છે. સર્વ પદાર્થ પરમાત્માથી ઉપજે છે એથી તેના વિવર્ત છે, જે જે નો વિવર્ત હોય તે તેનું જ સ્વરૂપ હાય છે. એથી સર્વ નામરૂપ, બ્રહ્મથી પૃથક્ નથી, બ્રહ્મ જ છે. એ અર્થ વોધન કરવાને સૃષ્ટિ કહી છે. સૃષ્ટિનું અન્ય પ્રયોજન નથી. ત્યાં ક્રમનું જે કથન છે, તે સ્થૂલદષ્ટિને વિપરીત ક્રમથી લયચિન્તનના નિમિત્ત છે, તેનું પણ અદ્વૈતવોધ જ પ્રયોજન છે. એથી ક્રમકથનમાં પણ અભિપ્રાય નથી. સૃષ્ટિમાં ક્રમ છે નહિ. કિન્તુ સર્વ પદાર્થ એક અવિચાપકરી ઉપજે છે, તેઓનો પરસ્પર કારણકાર્યભાવ અને પૂર્વઉત્તરભાવ, અવિદ્યા કૃતઃ સ્વપ્નની પેઠે, મિથ્યા પ્રતીત થાય છે અને શ્રુતિએ તેમની પોતપોતામાં કાર્યકારણતા, અને પૂર્વઉત્તરતા કહી છે, તે લયચિન્તનના નિમિત્ત કહી છે. ધ્યાનમાં આવા નિયમ નથી.-જેનું સ્વરૂપ હોય તેનું જ ધ્યાન થાય. એથી જાપ્રત્ના પદાર્થોનો પોતપોતામાં કારણકાર્યભાવ નથી.

(દષ્ટિસૃષ્ટિર્વાદનું સ્વરૂપ).

૩૨૮. કિન્તુ સર્વ પદાર્થ સાક્ષાત્ અવિદ્યાનાં કાર્ય છે. શુક્તિરજતની પેઠે વા સ્વપ્નની પેઠે અવિદ્યાની વૃત્તિ-ઉપહિત સાક્ષીથી તેઓનો પ્રકાશ થાય છે, એથી સર્વ પદાર્થ સાક્ષિ ભાસ્ય છે. અને જ્ઞાનાકાર અને જ્ઞેયાકાર અવિદ્યાનો પરિણામ

૧૮૩. દષ્ટિરેવ ભવેત્સૃષ્ટિર્દષ્ટિસૃષ્ટિમતે, તથા ।

દષ્ટિકાલીનદષ્ટિસ્તુ દષ્ટિસૃષ્ટિર્મતાન્તરે ॥

યેદાન્તસિદ્ધાન્તાદર્શ ।

સિદ્ધાન્તમુક્તાવલિકારના મતમાં દષ્ટિ એ જ સૃષ્ટિ થાય છે અન્ય મતમાં 'દષ્ટિ' નામ અવિદ્યાની વૃત્તિરૂપ જ્ઞાન, તેના સમકાલમાં જ 'સૃષ્ટિ' નામ પ્રપચની ઉત્પત્તિ તેનો 'વાદ' નામ કથન.

એક જ કાલમાં ઉપજે છે, (અને) સાથે જ નષ્ટ થાય છે. યથી ગ્યારે પદાર્થની પ્રતીતિ થાય છે, ત્યારે જ પ્રતીતિનો વિષય-પદાર્થ-થાય છે. અન્ય કાલમાં નથી થતાં. અને જ દૃષ્ટિ-સૃષ્ટિવાદ કહે છે.

એ પક્ષમાં પદાર્થની અજ્ઞાતસત્તા નથી, જ્ઞાતસત્તા છે. અદ્વૈત-વાદમાં એ સિદ્ધાન્તપક્ષ છે. એ પક્ષમાં ઘે (પ્રાતિભાસિક અને પારમાર્થિક) સત્તા છે, શ્રીજી (વ્યાવહારિકસત્તા) નથી. કેમકે અનાત્મપદાર્થ સર્વ સ્વપ્નની પેઠે પ્રાતિભાસિક છે. પ્રતીતિ કાલથી ભિન્નકાલમાં અનાત્માની સત્તા નહિ, યથી શ્રીજી-વ્યાવહારિકી સત્તા નહિ. એ પક્ષમાં સર્વ અનાત્મપદાર્થ સાક્ષિ-ભાસ્ય છે, પ્રમાતા પ્રમાણના વિષય કોઈ પણ નથી. કેમકે અંતઃકરણ અને ઇન્દ્રિય તથા ઘટાદિક, સર્વ ત્રિપુટી અને જ્ઞાન, સ્વપ્નની પેઠે એક કાલમાં ઉપજે છે; તેઓનો વિષયવિ-પયિભાવ વને નહિ. જો ઘટાદિક વિષય અને નેત્રાદિક ઇન્દ્રિય, તેમ અંતઃકરણ, એ જ્ઞાનથી પ્રથમ હોય, તો નેત્રાદિક-દ્વારા, અંતઃકરણની વૃત્તિરૂપ જ્ઞાન, પ્રમાણજન્ય હોય. તે અંતઃ-કરણ, ઇન્દ્રિય, અને વિષય ત્રણે જ્ઞાનના પૂર્વકાલમાં છે નહિ, કિન્તુ જ્ઞાનસમકાલ જ, સ્વપ્નની પેઠે, ત્રિપુટી ઉપજે છે; યથી ત્રિપુટીજન્ય જ્ઞાન કોઈ પણ નથી. તથાપિ જ્ઞાનવિષે સ્વપ્નની પેઠે ત્રિપુટીજન્યતા પ્રતીત થાય છે. યથી જાગ્રતના પદાર્થ સાક્ષિભાસ્ય છે; પ્રમાણજન્ય જ્ઞાનના વિષય નથી, યથી પણ સ્વપ્નના સમાન મિથ્યા છે. કિંવા જાગ્રતમાં (રજ્જુસર્પા-દિક) કેટલાક પદાર્થોને મિથ્યારૂપ કરીને જાણે છે, અન્યને (ઘટાદિકને) સત્યરૂપ કરીને આમ જાણે છે, -'અનાદિકાલના પદાર્થ છે, તેઓમાંથી કોઈ નષ્ટ થાય છે, અન્ય તેના સમાન ઉત્પન્ન થાય છે. એમ પ્રવંચધારાનો ઉચ્છેદ કદા થાય નહિ.

जेने ज्ञान थाय छे, तेने (अधिष्ठानथी भिन्न) प्रपंचनी प्रतीति थती नथी, अन्यने प्रपंचनी प्रतीति थाय छे. ते ज्ञाननां साधन वेद-गुरु छे, तेओथी परमसत्यनी प्राप्ति थाय छे.' एवी प्रतीति जाग्रत्मां थाय छे. त्यां कोई पदार्थमां मिथ्यापणुं, कोईमां नाश, कोईमां उत्पत्ति, वेदगुरुथी परमपुरुषार्थनी प्राप्ति; ए सर्व अविद्याकृत स्वप्ननी पेठे मिथ्या छे. (योग) वासिष्ठमां एवा अनंत इतिहास कहा छे. क्षणमात्रना स्वप्नमां बहुकालप्रतीत थाय. अने जाग्रत्नी पेठे स्थायी पदार्थप्रतीत थाय, अने तेओथी बहुकाल भोग थाय एथी जाग्रत् पदार्थनी स्वप्नथी किञ्चित् विलक्षणता नथी; किन्तु आत्मभिन्न सर्व मिथ्या छे

३२९. शिष्य उवाच,

इहा.

(संसार ज नथी तो बंध न होय, तेम थये श्रवणादि साधन निष्फल थशे.)

लाख हजारो कल्पनो आ उपज्यो संसार;

एथी ज्ञानी मुक्त छे, बांध्या अज्ञ हजार. १०.

जूटो स्वप्न समान जो, क्षण घटिका छे याम;

बद्ध कोण, को मुक्त छे; श्रवणादिनुं शुं काम ? ११.

टीका:-ईश्वरसृष्टि अनंतरूपथी अनादि छे. तेमां शानी मुक्त थाय छे (अने) अज्ञानीने बंध रहे छे. (ते सृष्टि) जो स्वप्नसमान होय तो स्वप्न एक क्षण, घडी, तथा पहोर सुधी थाय छे, तेम संसार पण क्षण अथवा घडी वा प्रहरकाल वा किञ्चित् अधिक काल थशे. स्वप्ननी पेठे स्वल्पकालस्थायी संसार होय तो अनादि कालनो बंध नहि थशे. (पटले) बंधनिवृत्तिरूप मोक्षना निमित्त श्रवणादिक साधन निष्फल थशे.

[यद्यपि एवं उक्त सिद्धान्तमां, बंध, मोक्ष, वेद, गुरु

અંગીકાર નથી. કિન્તુ ચેતન નિત્યમુક્ત છે, અવિદ્યાના પરિણામ, ચેતનમાં નાના વિવર્ત, થાય છે, તેથી આત્મરૂપની ક્ષિણિક માત્ર પણ હાનિ નહિ. આત્મા સદા અસંગ પૃથક્ક છે. આજસુધી કોઈ મુક્ત થયો નથી, આગલ થશે નહિ, કિન્તુ ચેતન નિત્યમુક્ત છે. અવિદ્યા અને તેના પરિણામનો ચેતન સાથે કોઈ કાલમાં સંબધ નથી, યથી વંધ અને વેદ-ગુરુ, શ્રવણાદિક, અને સમાધિ તથા મોક્ષ, પડોની પ્રતીતિ પણ સ્વપ્નની પેઠે અવિદ્યાજન્યા છે, યથી મિથ્યા છે. પડોવિષે વહુ-કાલસ્થાયિતા પણ અવિદ્યાજન્યા છે. તથાપિ સિદ્ધાન્તને ન જાણીને સ્થૂલદૃષ્ટિ(વાન)નો ય પ્રશ્ન છે.]

૩૩૦. ગુરુવાક્ય. ૩૩૦

(અગૃધદેવ નામ ઇચ્છારહિત દેવનું સ્વપ્ન.)

અગૃધદેવને સ્વપ્નમાં, ભ્રમ ઉપડ્યો જે રીતિ,
શિષ્ય ! તુને ય ઉપજી, વધ મોક્ષ પ્રતીતિ ૧૨.

ટીકા.—હે શિષ્ય ! જેમ નિદ્રાદોષથી સ્વપ્નમાં, અધ્યાપક, અધ્યયન, વેદશાસ્ત્ર, પુરાણ, ધર્મશાસ્ત્ર, અને અધ્યયનકર્તા, કર્મ, અને તેમનું ફલ પ્રતીત થાય છે, અને તે સર્વ પદાર્થોમાં સત્યની ભ્રાન્તિ થાય છે, તથાપિ તે સ્વપ્નના સર્વ પદાર્થ મિથ્યા છે, તેમ જાગૃતના સર્વ પદાર્થ મિથ્યા છે તેઓવિષે સત્યતાની પ્રતીતિ ભ્રમ છે. [દુહામાં 'વધ મોક્ષ'ના ગ્રહણથી (=લહુ છે તેથી) સર્વ અનાત્માનુ ગ્રહણ છે.] જેમ તને અમે ગુરુ પ્રતીત થઈયે ડિયે, વેદઅર્થનો વંધવિઘાતક ઉપદેશ કરિયે ડિયે, તે તુને મિથ્યા પ્રતીતિ છે, જેમ અગૃધદેવને સ્વપ્નમાં મિથ્યા પ્રતીતિના વિષય, ગુરુવૈદ્યાદિક અનિર્વચનીય ઉપગ્રહ હતા, તેમ તારી પ્રતીતિનેવિષે મારાથી આદિર્હને સર્વ અનિર્વચનીય મિથ્યા છે

૩૩૧. તે ઊર્ગૃધદેવનું આહું સ્વપ્ન થયું છે:-૧૧ક અગૃધ-
નામે દેવતા અનાદિકાલનો નિદ્રામાં સૂતો સતો સ્વપ્ન(સંસાર)-
ને દેખતો હવો. તે સ્વપ્નમાં તે પુરુષને આવી પ્રતીતિ થઈ:

‘હું ચંડાલ (દેહાભિમાની જીવ) છું, અને મહાદુઃખી છું,
‘અને અસ્થિ, મજ્જા, રુધિર, ત્વચા, માંસ, મેદ, વીર્યરૂપ સપ્ત
‘ધાતુષ્ણ મારું મુખ મન્યું છે. અને મહાઘોર મયંકર સર્પહસ્તી
‘આદિકે યુક્ત જે વન (જગત્) તેનાવિષે હું ભ્રમણ કરું છું.’
તે દેવ ભ્રમણ કરતો સતો તે વનમાં અનંત સ્થાન દેખતો હવો.
(નરકનું વર્ણન.)

કહિં નાના મયંકર પ્રાણી સંમુલ્ક, મક્ષણ કરવાને, ધાવન
કરે છે. અને કહિં રાધિ(પરુ) રુધિરના મરેલા કુંડ છે,
તેમોમાં પડેલાં પ્રાણી હાહાકાર શબ્દ કરે છે. અને કહિં
લોઢાના તપસ્તંભ છે. તેઓષ વાંધેલા પુરુષ રુવે છે. અને કહિં
તપવાલુ(રિતી)યુક્ત મારું થઈને ઉઘાડે પગે પુરુષ જાય છે,
અને તે પુરુષને રાજમટ લોહમય ઢંડેકરી તાડના કરે છે. ૧
સીતિષ નાના જે મયંકર સ્થાન છે, તેઓને તે દેવ દેખતો
હવો. અને કદાચિત્ પોતે પણ અપરાધ કરીને, સ્વપ્નમાં તે
દુઃખોને પ્રાપ્ત થતાં હવો.

૧૮૪. ‘ગૃધા’ નામ રૂઢા, તેથી ‘અ’ નામ રહિજ, અને ‘દેવ’ નામ સ્વપ્નમાં
પણુ જે શુદ્ધચેતન તે રહ્યાં ‘અગૃધદેવ’ પદનો ગૂઢ અર્થ છે. તેને જાપ્રત્સ્વપ્નરૂપ વલિ-
ક્ષણતાથી રહિત અનાદિનિદ્રાપ્કરી કલ્પિત આ પ્રતીયમાન પ્રપંચરૂપ સ્વપ્ન થયું
છે. તે પ્રપચની નિલક્ષણતાના અભાવથી જાપ્રદાદિ અવસ્થાના મેદનો અમાન
છે. ૧થી તે ૧૧ક જ પ્રપચને દષ્ટાન્તરૂપતા અને દાર્શાન્તરૂપતા યદપિ બને નહિ,
તયાપિ પ્રંચકારે તે અર્થને ગોપ્ય રાતીને ૧૧ક જ ચેતનમાં દષ્ટાન્તદાર્શાન્તનો
આરોપ કરવો છે. ૧ ગોપ્ય અર્થની પ્રસ્ટતા આગલ પણ ટિપ્પનીયિયે પ્રસંગોપાત્ત
અમે કરીશું.
પં. પી. પુ.

(સ્યર્ગલોકનું વર્ણન.)

અને કહિં દિવ્યસ્થાન દેસતો હવો. તે સ્થાનોમાં ઉત્તમ દેવ ઘિરાજે છે. તે દેવોના દિવ્યમોગ છે; અમૃતના દર્શનમાત્રે કરી તેમને તૃપ્તિ રહે છે, ક્ષુધાતૃપાની વાધા તે દેવોને થાય નહિ. અને મલમૂરરહિત જેઓનું પ્રકાશમાન શરીર છે, અને ઉત્તમ ઘિમાનમાં સ્થિત થઈને કોઈ દેવ રમણ કરે છે. તે ઘિમાન તે દેવની ઇચ્છાને અનુસાર ગમન કરે છે. અને કહિં રંભા-ઉર્વશીથી આદિલઈને અપ્સરાઓ નૃત્ય કરે છે. તેઓનાં સંપૂર્ણ અંગ દોષરહિત છે, અને સંપૂર્ણ સ્ત્રીગુણયુક્ત છે. કામનો પ્રકાશક ઉત્તમ સુગંધ તેમના શરીરથી આવે છે. અને કહિં તેમનીસાથે દેવ રમણ કરે છે. અને કદાચિત્ પોતે (અગૃધ-દેવ) પણ દેવભાવને પ્રાપ્ત થઈને તેઓ સાથે વહુકાલ રમણ કરે છે. અને કદાચિત્ તે અપ્સરાઓ સાથે દિવ્યસ્થાનમાં રમણ કરતો સતો (પુણ્ય ક્ષીણ થયે) અરુસ્માત્ ઘધિરમલપૂરિત જે કુંડ છે તેઓવિપે (પાપ ભોગવવા) મજ્જન કરે છે.

અને એક સ્થાનમાં સર્વનો અધિપતિ પુરુષ (ધર્મરાજા) સ્થિત છે. તેના આજ્ઞાકારી અનુચર (યમદૂત) તેની આગલ સ્થિત છે. કેટલાક (પુણ્યવન્ત) પુરુષોને તે અધિપતિ અને તેના અનુચર સૌમ્યરૂપ પ્રતીત થાય છે, અને કેટલાક (પાપી) પુરુષોને મહાભયંકરરૂપ પ્રતીત થાય છે અને તે વનમાં સ્થિત પુરુષોને કર્મને અનુસાર ફલ દે છે.

૫ રીતિપ અગૃધનામે દેવતા, સ્વપ્નકાલમાં, નાના જે સ્થાન છે તેઓને દેસતો હવો.

(મૃત્યુલોકગત ભરતસંડનું વર્ણન.)

અને કહિં અન્યસ્થાનમાં બ્રાહ્મણ વેદનો ઘ્વનિ કરે છે, અને કહિં યજ્ઞશાલામાં ઉત્તમ કર્મ કરે છે. અને કહિં ઉત્તમ

નદીઓ વહે છે, તેઓમાં પુણ્યના નિમિત્ત કોઈ જ્ઞાન કરે છે. અને કહિં જ્ઞાનવાન્ આચાર્ય શિષ્યોને બ્રહ્મવિદ્યાનો ઉપદેશ કરે છે, તે બ્રહ્મવિદ્યાને પ્રાપ્ત થઈને તે વનથી નીકળી જાય છે.

૫ રીતિ ૫ સ્વપ્નમાં અગૃધનામે દેવ ક્ષણમાત્રમાં નાના આશ્ચર્ય-રૂપ પદાર્થ તે (સંસારના) વનમાં દેખતો હશે. તેને સ્વપ્નમાં ઈવી પ્રતીતિ થઈ જે, - 'હું અનંતકાલનો આ વનમાં સ્થિત છું. આ વનનો કદિ ઉચ્છેદ થાય નહિ. કદાચિત્ 'વનનો માલી (ઈશ્વર) ચારે મુખથી નાના બીજ (જીવોન-પ્રારબ્ધ) કહાડીને વનની ઉત્પત્તિ કરે છે; અને જલસિંચનથી (સુખદુઃખાદિ ભોગ દઈ) પાલન કરે છે; અને કદાચિત્ ઘોર 'હાસ્ય કરીને મુખથી અગ્નિ કહાડીને વનનો દાહ (સંહાર) કરે છે. વનની ઉત્પત્તિ સાથે મારી ઉત્પત્તિ થાય છે, અને 'વનના દાહ સાથે મારો દાહ થાય છે. અને સર્વ વનનો દાહ કરીને તે વનમાલી (ઈશ્વર) એક જ રહે છે. તેના શરીરમાં 'વનનાં બીજ રહે છે.' ૫ પ્રતીતિ, સ્વપ્નવેદના શ્રવણથી, તે અગૃધદેવતાને સ્વપ્નવિષે જ થઈ.

૩૩૨. (અગૃધદેવનો સ્વપ્નમાં ગુરુસહ મિલાપ.)

ત્યારે ઘારંઘાર પોતાનું જન્મમરણ સાંભળીને તેણે વિચાર કન્યો જે, - કોઈ પ્રકારે વનની વહિર્ નીકળી જાઉં, અને વનની વહિર્ નહિ પણ નીકળું, તોપણ મારો ચંડાલ- (જીવ)ભાવ દૂર થઈ જાય, અને દેવ(બ્રહ્મ)ભાવ સદા વન્યો રહે. તે અન્ય તો કોઈ ઉપાય, વનથી નીકળવાનો છે નહિ. બ્રહ્મવિદ્યાનો ઉપદેશ કરવાવાળા આચાર્ય પોતાના શિષ્યોને વનની વહિર્ કહાડે છે. ૫ વિચારીને સ્વપ્નકાલમાં જ તે અગૃધદેવ આચાર્યને પ્રાપ્ત થયો. તે વિધિપૂર્વક પ્રાપ્ત થયો જે શિષ્ય, તેને આચાર્ય, દેવચાણીરૂપ મિથ્યાગ્રંથ, ઉપદેશ કરતા હયા.

૩૩૩. (અગૃધદેવઅર્થ નવીન ગ્રંથ. ૩૩૩ થી ૪૫૨ પર્યન્ત.)

જે સંસ્કૃતગ્રંથ, મિથ્યાઆચાર્યે, મિથ્યાશિષ્યને ઉપદેશ કન્યો, તે ગ્રંથને ભાષા કરીને લલિયે છિયે.

સંસ્કૃત ગ્રંથનો ભાષા કરવામાં મંગલ(આચરણ) કરિયે છિયે. કેમકે મંગલાચરણ કરવાથી, ગ્રંથની સમાપ્તિનાં પ્રતિ-
બંધક જે વિગ્ન છે, તેઓનો નાશ થાય છે. [વિગ્ન નામ પાપનું છે.] પાપથી શુભકાર્યની સમાપ્તિ થાય નહિ. તે પાપનો મંગ-
લથી નાશ થાય છે. અને જે પાપરહિત હોય છે તે પણ ગ્રંથના આરંભમાં મંગલ અવદ્ય કરે. કેમકે, જો ગ્રંથારંભમાં મંગલ ન કન્યું હોય તો, ગ્રંથકર્તાવિષે, પુરુષોને નાસ્તિક-
શ્રાન્તિ ધરૂને ગ્રંથમાં પ્રવૃત્તિ થાય નહિ.

તે મંગલ ત્રણ પ્રકારનાં છે. એક વસ્તુનિર્દેશરૂપ છે, અને ધીનું નમસ્કારરૂપ છે, અને ધીનું આશીર્વાદરૂપ છે. સગુણ અથવા નિર્ગુણ જે પરમાત્મા તે વસ્તુ કહેવાય છે, તેના કીર્ત-
નનું નામ વસ્તુનિર્દેશ કહેવાય છે. પોતાનું અથવા શિષ્યોનું જે યાંચિત વસ્તુ તેની પ્રાર્થનાનું નામ આશીર્વાદ-
રૂપ મંગલ કહેવાય છે. તે પોતાના યાંચિતનું પ્રાર્થન (નીચેના) ચતુર્થ દુહામાં સ્પષ્ટ છે; શિષ્યના શ્વૃતું પ્રાર્થન પંચમ દુહામાં સ્પષ્ટ છે.

૩૩૪. ગણેશ અને દેવીને શૈશ્વરતા પુરાણમાં પ્રસિદ્ધા છે. યથી અનીશ્વરનું ચિંતન નથી. અને પુરાણમાં ગણેશનો જે જન્મ છે તે જીવની પેઠે કર્મનું ફલ નથી. કિન્તુ રામકૃષ્ણા-
દિકની પેઠે ભક્તજનના અનુગ્રહસારૂ પરમાત્માનો જ આચિ-
માંવ હોય છે. એ વ્યાસભગવાદનો પરમ અભિપ્રાય છે. આં સ્થાન-
માં આ રહસ્ય છે:-પરમાર્થદષ્ટિય જીવ પણ પરમાત્માથી ભિન્ન નથી. પરંતુ જન્મમરણાદિક, બંધનો આત્માવિષે જે

અધ્યાસ તે જીવનું જીવત્વ છે. તે જન્માદિક વંધ ગણેશાદિકને આત્મામાં પ્રતીત થાય નહિ. પથી (તેઓ) જીવ નહિ. પ રીતિપ ગણેશાદિકને ઈશ્વરતા છે. પથી ગ્રંથના આરંભમાં તેઓનું ચિન્તન યોગ્ય છે. નાનારૂપ ઈશ્વરનું જે કથન છે, તે સર્વને ઈશ્વરતાઘોતન કરવા સારૂ છે. અને ઈશ્વરભક્તિ અને ગુરુભક્તિ વિદ્યાની પ્રાપ્તિનું મુખ્ય સાધન છે, પ અર્થને પળ ઘોતન કરવાસારૂ છે.

(મિથ્યા શિષ્યને મિથ્યા આચાર્યે ઉપદિષ્ટ મિથ્યા ગ્રંથ.)

૩૩૫. અથ નિર્ગુણવસ્તુનિર્દેશરૂપ મંગલ. ડહો.

જે વિભુ સત્ય પ્રકાશથી, પ્રકાશે જ રવિ ચંદ્ર;

તે સાક્ષી હું બુદ્ધિનો, શુદ્ધરૂપ આનંદ. ૧.

અથ સગુણવસ્તુનિર્દેશ મંગલ. ડહો.

નાશે વિગ્ન સમૂલથી, શ્રીગણપતિનુ નામ;

જે ચિન્તન વિણ થાય નહિ, દેવો કેરૂ કાંમ ૨.

અથ નમસ્કારરૂપ મંગલ. સોરઠો.

અસુરસંહારક રામ, લક્ષ્મીપારવતીપતિ;

તેને મુજ પ્રણામ, ભક્તોને સંતત ભજે. ૩.

અથ સ્વવાંછિત પ્રાર્થનરૂપ આશીર્વાદ મંગલ. ડહો.

જે શક્તિની શક્તિ લઈ, કરે ઈશ આ સાજ,

વસો તે જ મુજ વાળીમાં, ગ્રંથસિદ્ધિને કાજ. ૪.

અથ શિષ્યવાંછિત પ્રાર્થનરૂપ આશીર્વાદ. ડહો.

વંધહરણ, સુખકરણ, ધી દાટૂ દીનદયાલ;

મળે શુભે જે ગ્રંથ આ, તેનો હરો જૈંજાલ. ૫.

[૧૮૫. ટીકા, ત્રિપુરવધમાં પ વાર્તા પ્રસિદ્ધ છે.] મયદાનવાચિત 'ત્રિપુર'ના નામસારૂ મહાદેવ પ્રવૃત્ત થયા, પરંતુ તેમાં જય થયો નહિ. પછી સર્વદેવસહિત મહાદેવે વિગ્નહર ગણપતિને પૂજ્યા. ત્યારે મહાદેવનો વિજય થઈ દેવકાર્ય સિદ્ધ થયું. હસ્તાદિ પુરાણમાં કયા છે.

૩૩૬. અથ વૈદાન્તશાસ્ત્રકર્તા ઑંચાર્યને નમસ્કાર.
કવિત.

વેદવાદવૃક્ષવન, ભેદવાદી ઘાયુ આવી,
પરુડી હલાવી ક્રિયા-કંટક પસારીને;
સરલ સુશુદ્ધ શિષ્ય કંજ વઢી તોડી પાડી
શૂલોમાં મ્રમાવે, મ્રમે પોતે તેને ફાડીને;
દેહી સુપથિક ભગવાન; જાણી અનુચિત,
અંકમાં ઉઠાવે, ઘ્યાયે, ઠપાસરૂપ ધારીને;
સૂત્રનો વનાવી જાલ વનનો વિભાગ કન્યો
કરે છે પ્રણામ તેને, નિશ્ચલ પોકારીને. ૬.

ટીકા:-જેમ ઘાયુ વનમાં પેશીને વૃક્ષોને હલાવીને તેઓના
કંટક પ્રસારીને સુંદર કમલોનાં પુષ્પોને સ્વસ્થાનથી તોડીને
કંટકોવિષે મ્રમાવે છે, તે મ્રમતાં પુષ્પોને દેહીને પથિક(વટે-
માર્ગી)ના મનમાં આમ આવે જે:-૫ સુંદર કમલ આ સ્થાનને
યોગ્ય નથી, કિન્તુ ઉત્તમ સ્થાન યોગ્ય છે. ૫ વિચારીને તે

૧૮૬. આચાર્યશબ્દાર્ય અને લક્ષણ,-

આમ્નાયતત્ત્વવિજ્ઞાનાત્ ચરાચરસમાનતઃ ।

યમાદિયોગસિદ્ધત્વાત્ આચાર્ય ઇતિ કથ્યતે ॥

આમ્નાય (વેદ)ના તત્ત્વવિજ્ઞાનથી, ચરઅચર સમાનથી, અને યમાદિ યોગના
સિદ્ધત્વથી 'આચાર્ય' એમ કહેવાય છે.

उपनीय तु य. शिष्यं वेदमध्यापयेत् द्विजः ।

सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते ॥ मनुः ॥

જે દ્વિજ શિષ્યને ઉપનીતસંસ્કાર કરીને, સંકલ્પ (વૈદિકવિધાનશાપક શાસ્ત્ર-
સહિત) સરહસ્ય વેદ શિષ્યવે છે, તેને આચાર્ય કહે છે.

आचिनोति च शास्त्रार्थमाचारे स्यापयत्यपि ।

स्वयमाचरते यस्मादाचार्यस्तेन कथ्यते ॥

અર્થ:-જે (ગુરુ) શાસ્ત્રના અર્થને (વેદો)પરિપૂર્ણ જાણે છે. અને (લોકોને)
(શાસ્ત્રોક્ત) આચારવિષે સ્યાપે વળ છે, અને પોતે વળ (શાસ્ત્રોક્ત આચારને)
આચરે છે, તેણેકરી આચાર્ય કહેવાય છે. ૫ લક્ષણ વૈદાન્તના આચાર્યનું છે.

પુષ્પોને ઉઠાવી લે, અને ફરી વિચાર કરે જે, આગલ પળ પવન, પુષ્પોને તોડીને કંટકોવિષે ભ્રમણ કરાવશે, યથી યવો ઉપાય કરું, જેથી વાયુ પુનઃ પુષ્પોને કંટકોમાં ભમાવે નહિ એમ વિચારીને સૂત્રના જાલથી કંટકયુક્ત વૃક્ષોનો વિભાગ કરી દે. તે જાલથી પુષ્પનો કંટકોમાં પ્રવેશ થાય નહિ.

૩૩૭. તેમ ભેદવાદી આચાર્યરૂપ જે વાયુ છે, તે વેદરૂપી વનમાં 'વાદ' નામ અર્થવાદરૂપ જે કંટકસહિત વૃક્ષ છે તે- ઉપરથી સકામકર્મરૂપ કંટક પ્રવૃત્ત કરીને, 'સરલ' નામ કપટરહિત અને 'સુશુદ્ધ' નામ અતિશુદ્ધ-રાગાદિ દોષરહિત જે શિષ્યરૂપ કમલપુષ્પ તેઓને શમાદિરૂપ જે સ્વસ્થાન ત્યાંથી તોડીને, સકામકર્મરૂપ કંટકોવિષે ભ્રમાવતાં જોઈને, પથિરુ-સમાન વ્યાપક વિષ્ણુવિચાર કન્યા જે, એ શુદ્ધ પુરુષ આસ્થાન યોગ્ય છે નહિ, કિન્તુ મારા સ્વરૂપને પ્રાપ્ત થવા યોગ્ય છે. યદું વિચારીને ઘ્યાસરૂપ ધારીને, તે શિષ્યોને ઉપદેશ-રૂપ અંકમાં (ઘોલામાં) સ્થાપન કન્યા. જેમ પુરુષના અંકમાં સ્થિત પુષ્પને પવન ઉડાવવાવિષે સમર્થ નથી. તેમ બ્રહ્મનિષ્ઠ આચાર્યના ઉપદેશમાં સ્થિત પુરુષોને ભેદવાદી વહેંકાવવામાં સમર્થ નથી. યથી ઉપદેશ જ 'અંક' નામ ઘોલો છે. પુનઃ ઘ્યાસભગવાને વિચાર કન્યા જે, આગલ પળ અન્ય પુરુષોને સકામકર્મરૂપ કંટકોમાં ભેદવાદી ભ્રમાવશે; યથી યવો ઉપાય થાય કે જેથી આગલ શિષ્ય ભ્રમે નહિ. એ વિચારીને સૂત્રરૂપી જાલથી (વા ફોટથી) વેદનાં વાન્યરૂપ વૃક્ષોના વિભાગ કરી દીધા.

જેમ વનમાં યે પ્રકારના વૃક્ષ હોય, -સકંટક અને કંટક-રહિત, -તેઓનો જાલથી વિભાગ કરી દે, અને (તે) જાલથી, પુષ્પનો, કંટકસહિત વૃક્ષમાં, પ્રવેશ થાય નહિ. તેમ વેદમાં યે

६ तरंग.) वेदान्तवाक्योनुं तात्पर्य निवृत्तिमां ज छे. ४९७

प्रकारनां वाच्य छे,—एक तो कर्मनी स्तुति करीने कर्मविषे वहिमुख पुरुषनी प्रवृत्ति करावे छे, अने बीजां कर्मना फलने अनित्य बोधन करीने पुरुषनी निवृत्ति करावे छे.

३३८. ते चास्योनो वेदव्यासे विभाग करीने सूत्रोधी आ बोधन कऱ्युं जे,—सर्व वाक्योनुं निवृत्तिमां तात्पर्य छे, प्रवृत्तिमां कोई वाक्यनुं पण तात्पर्य नथी. जे प्रवृत्तिबोधक वाच्य छे, तेओनुं पण,—स्वामाविक अने निषिद्ध जे प्रवृत्ति छे, तेओधी निवृत्ति करीने, विहितप्रवृत्ति ए अंतःकरण शुद्ध धईने, (पत्नी) तेनाथी पण निवृत्त थईने, ज्ञाननिष्ठ पुरुष थाय, ए रीति ए—निवृत्तिमां तात्पर्य छे. अने अर्थवादवाच्ये जे कर्मनुं फल बोधन कऱ्युं छे, ते गुड जिह्वान्यायथी कऱ्युं छे. फलमां तेओनुं तात्पर्य नथी, ए अर्थ सूत्रोपकारी व्यासजी ए बोधन कऱ्यो छे. ते अर्थने सूत्रोप जाणीने पुरानी सकामकर्ममां प्रवृत्ति थाय नहि. जेम सूत्रनो जाल पुष्योनो कंटकोधी निरोध करे छे, तेम व्यास-भगवाननां सूत्र सकामकर्मधी निरोध करे छे; एधी जाल-रूप कहां.

३३९. इहा.

कोईक शिष्य उदारमति, गुरने शरणे झूको,
प्रश्न कऱ्यो कर जोडीने, पादपद्म शिर मूको. ७.

[शिष्य उवाच]

मो भगवन् ! हुं कोण (१)? आ संसृति कोणथी छे य(२)?

हेतु मुक्तिनो ज्ञान, वा कर्म उपासन बेय. (३)? ८.

टीका.—हे भगवन् ! हुं कोण छुं—देहस्वरूप छुं अथवा देहथी

१८७. कोई बालकने रोग मटाहवा औषध पावु होय तेने गोल के साकरथी जीम उपर मधुररसनी बुद्धि उपजावी कटु औषध पाई दे छे तेम.

મિત્ર છું ? હું મનુષ્ય છું, અને મારું શરીર છે, ય ઘે પ્રતીતિ થાય છે. યથી મને સંશય છે. અને દેહથી મિત્ર યજ જો આપ કહો તો, હું કર્તા-ભોક્તા છું, અથવા અક્રિય છું ? જો અક્રિય કહો તો યજ, સર્વ શરીરવિષે યક છું અથવા નાના છું ? ય (દુહામાંના) પ્રથમ પ્રશ્નનો અભિપ્રાય છે.

અને (બીજો પ્રશ્ન) આ સંસૃતિ નામ સંસાર તેનો કર્તા કોણ છે ? યનો આ અભિપ્રાય છે:-આ સંસારનો કોઈ કર્તા છે અથવા યોતે જ થાય છે ? જો કર્તા કહો તો યજ કોઈ જીવ કર્તા છે અથવા ઈશ્વર છે ? જો ઈશ્વર કહો તો યજ યક દેશમાં તે ઈશ્વર સ્થિત છે અથવા વ્યાપક છે ? જો વ્યાપક છે તો યજ, જેમ વ્યાપક આકાશથી જીવ મિત્ર છે તેમ, તે ઈશ્વર-થી જીવ મિત્ર છે અથવા અમિત્ર છે ?

અને (ત્રીજો પ્રશ્ન) મુક્તિનો હેતુ જ્ઞાન છે, અથવા કર્મ છે, અથવા ઉપાસના છે ? અથવા ઘે છે ? જો ઘે કહો તો યજ, જ્ઞાન (અને) કર્મ છે, અથવા જ્ઞાન (અને) ઉપાસના છે, અથવા કર્મ (અને) ઉપાસના છે ?

૩૪૦. શ્રીગુરુમુવાચ. અર્થ ડુહો.

(પ્રથમ પ્રશ્ન.-હું કોણ છું તેનું ઉત્તર. ૩૪૦ થી ૩૬૯ પર્યન્ત.)

સત્ ચિત્ આનંદ યક તું મલ્લ અજન્મ અસંગ;

ટીકા:-શિષ્યે જે પ્રથમ પ્રશ્ન કન્યા તેનું ઉત્તર કહે છે:- 'તું સત્ ચિત્ આનંદમ્પ છું.' ય કહેવાથી (તેને) દેહથી મિત્ર કાર્યો. કેમકે દેહ અસત્મ્પ છે, અને જડમ્પ છે, અને ડુઃસ્-રૂપ છે.

અને કર્તા ભોક્તા યજ નથી કેમકે, જેનાવિષે ડુઃસ્ થાય તે ડુઃસ્ની નિવૃત્તિ અને સુગ્મની પ્રાપ્તિઅર્થે ક્રિયા કરે તે કર્તા કહેવાય છે. તે તારાવિષે ડુઃસ્ છે નહિ, યથી

દુઃખની નિવૃત્તિસારુ (તું) ક્રિયાનો કર્તા નહિ. તું આનંદસ્વરૂપ છે, યથી સુખની પ્રાપ્તિના નિમિત્ત પણ તું ક્રિયાનો કર્તા નહિ. જે કર્તા હોય તે જ ભોક્તા હોય છે. તું કર્તા નહિ યથી ભોક્તા પણ નહિ. પુણ્યપાપનું જનક જે કર્મ છે તેનો કર્તા અને સુખદુઃખનો ભોક્તા સ્થૂલસૂક્ષ્મસંઘાત છે, તું નથી. તું સંઘાતનો સાક્ષી છું.

૩૪૧. યથી જ આત્મા એક છે, નાના નથી. જો આત્મા કર્તા ભોક્તા હોય, તો તો નાના હોય; કેમકે કોઈ સુખી છે, કોઈ દુઃખી છે. અને કર્તા ભોક્તા એક જ અંગીકાર થાય, તો એકને સુખ થવાથી તથા દુઃખ થવાથી, સર્વને સુખ તથા દુઃખ થવું જોઈએ. યથી ભોક્તા નાના છે; અને આત્મા ભોક્તા છે નહિ યથી એક છે.

૩૪૨. (આત્માવિષે સાંખ્યમતનો સિદ્ધાન્ત.)

સાંખ્યના મતમાં આત્માને કર્તા ભોક્તા અંગીકાર નહિ કરીને, નાના પુરુષને જે અંગીકાર કન્યા, તે અત્યંત વિરુદ્ધ છે. કેમકે સાંખ્યનો આ સિદ્ધાન્ત છે:—સત્ત્વ રજ તમ-ગુણની સમઅવસ્થાનું નામ પ્રધાન (સાંખ્યમાં) કહે છે. તે 'પ્રધાન' પ્રકૃતિ છે, વિકૃતિ નથી. [પ્રકૃતિ નામ ઉપાદાનકારણનું છે, અને વિકૃતિ નામ કાર્યનું છે] તે 'પ્રધાન,' મહત્તત્ત્વનું ઉપાદાન કારણ છે, યથી પ્રકૃતિ છે; અને અનાદિ છે, યથી વિકૃતિ નથી. અને મહત્તત્ત્વ, અહંકાર, પંચતન્માત્રા, એ સાત 'પ્રકૃતિ-વિકૃતિ' છે. ઉત્તર, ઉત્તરની, પ્રકૃતિ છે, અને પૂર્વ, પૂર્વની વિકૃતિ છે. તન્માત્રા પણ (પંચીકૃત પંચમહા)ભૂતોની પ્રકૃતિ છે. એ રીતિએ સાત 'પ્રકૃતિવિકૃતિ' છે, અને પંચભૂત અને દશ ઇન્દ્રિયો અને મન એ સોઢ 'વિકૃતિ' છે, પ્રકૃતિ નહિ. અને પુરુષ પ્રકૃતિવિકૃતિ નથી. કેમકે

જો (તે પુરુષ) કોઈ પદાર્થનો હેતુ હોય, તો પ્રકૃતિ હોય; અને કાર્ય હોય, તો વિકૃતિ હોય. તે પુરુષ કોઈનો હેતુ નથી, યથી પ્રકૃતિ નથી; અને કાર્ય નથી, યથી વિકૃતિ નથી. યથી પુરુષ અસંગ છે. ય રીતિય સાંખ્યમતમાં પંચવિંશ તત્ત્વ છે. [તત્ત્વ નામ પદાર્થનું છે.] સાંખ્યમતમાં ઈશ્વરનો અંગીકાર નથી. (ય મતમાં) સ્વતંત્ર પ્રકૃતિ જગત્તું કારણ છે. અને પુરુષના ભોગમોક્ષને નિમિત્ત, પ્રકૃતિ જ પ્રવૃત્તા થાય છે, પુરુષ નહિ. પ્રકૃતિના વિપયરૂપ પરિણામથી પુરુષને ભોગ થાય છે; અને બુદ્ધિદ્વારા પ્રકૃતિના વિવેકરૂપ પરિણામથી મોક્ષ થાય છે. યદ્યપિ પુરુષ અસંગ છે તેનાવિપે ભોગમોક્ષ બને નહિ; તથાપિ જ્ઞાન, સુખદુઃખ, રાગદ્વેષથી આદિ લઈને બુદ્ધિના પરિણામ છે, તે બુદ્ધિનો આત્માસાયે અવિવેક છે, વિવેક નથી; યથી આત્મામાં આરોપિત બંધમોક્ષ છે, પરમાર્થથી નથી. અવિવેક-સિદ્ધ જે આત્મામાં ભોગ તેથી જ સાંખ્યમતમાં આત્માને ભોક્તા કહે છે. અને પરમાર્થથી આત્મા ભોક્તા નથી, બુદ્ધિ જ ભોક્ત્રી છે; બુદ્ધિ આત્માથી ભિન્ના છે;—ય જ્ઞાનનું નામ વિવેક છે. (અને) તેના અભાવનું નામ અવિવેક છે. ય રીતિય સાંખ્યમતમાં આત્મા અસંગ છે. અને સુખાદિક બુદ્ધિના પરિણામ છે, યથી બુદ્ધિના ધર્મ છે, અને આત્મા નાના છે.

(અવે સિદ્ધાન્તી કહે છે કે) ય વાત્તા અત્યંત વિરુદ્ધા છે. જો સુખદુઃખ આત્માના ધર્મ હોય તો, સુખદુઃખનો પ્રતિ-શરીર ભેદ હોવાથી, આત્માનો ભેદ હોય. તે સુખદુઃખ આત્માના ધર્મ તો છે નહિ. કિન્તુ બુદ્ધિના ધર્મ છે, યથી સુખદુઃખના ભેદથી બુદ્ધિનો જ ભેદ સિદ્ધ થાય છે, આત્માનો ભેદ સિદ્ધ થાય નહિ. જેમ યક જ બ્યારક આકાશમાં નાના ઉપાધિના ધર્મ, ઉપાધિ અને આકાશના અવિવેકથી પ્રતીત

થાય છે, તેમ જ વ્યાપક આત્મામાં, નાના બુદ્ધિના ધર્મ, અવિવેકથી પ્રતીત થાય છે એ વાત્તા સાર્યમતમાં અંગીકાર કરવી યચિત્ત છે આત્માને અસંગ માનીને નાના અંગીકાર કરવા (૫) નિષ્ફલ છે અને વાઈ આત્મા મુક્ત છે, અન્યાને વધ છે, યાં રીતિય વધમાક્ષના ભેદથી જા આત્માના ભેદ અંગીકાર કરે તા તે પળ વને નહિ કેમકે જા વધમાક્ષ આત્મામાં અંગીકાર કરે તા વધમાક્ષના ભેદથી આત્માના ભેદ સિદ્ધ થાય તે વધમાક્ષ સાર્યમતમાં અસંગ આત્મામાં અંગીકાર કન્યા નથી કિન્તુ બુદ્ધિના અવિવેકથી વધ અંગીકાર કન્યા છે, અને બુદ્ધિના વિવેકથી વધના માક્ષ અંગીકાર કન્યા છે જે વસ્તુ અવિવેકથી થાય, અને વિવેકથી દૂર થાય તે વસ્તુ, રજ્જુસપની પેટે, મિથ્યા હાય છે આત્માવિષે પળ બુદ્ધિના અવિવેકથી વધ છે, અને (૧) વિવેકથી દૂર થાય છે યથી વધ મિથ્યા છે જેમ વધ મિથ્યા છે, તેમ આત્માના માક્ષ પળ મિથ્યા છે જેમાં વધ સત્ય હાય તેના જ માક્ષ સત્ય હાય છે, અને આત્મામાં વધ મિથ્યા છે યાં માક્ષ પળ મિથ્યા જ છે ય રીતિય મિથ્યા જે વધમાક્ષ તે આકાશની પેટે (અપાધિને લીધે) યક આત્મામાં પળ વને છે, તેઆના ભેદથી આત્માના ભેદ સિદ્ધ થાય નહિ યથી સાર્યમતમાં આત્માના ભેદ અસંગત છે

૩૩૩ (આત્માવિષે ન્યાયનુ મત)

તેમ ન્ય યમતમાં પળ આત્માના ભેદ અસંગત છે કેમકે ન્યાયના સિદ્ધાન્ત આ છે—સુખ, દુઃખ, જ્ઞાન, હૃદ્યા, દ્રવ્ય, પ્રયત્ન, ધર્મ, અધર્મ, જ્ઞાનના સરનાર, સર્યા, પરિમાણ, પૃથકત્વ, સયાગ, ત્રિમાગ, ય ચતુદશ (૧૪) ગુણ જીવરૂપ આત્મા વિષે છે સર્યા, પરિમાણ પૃથકત્વ, સયાગ ત્રિમાગ,

જ્ઞાન, ઇચ્છા, પ્રયત્ન, એ અષ્ટ (૮) ગુણ ઈશ્વરમાં છે. (તેમાં) આટલો ભેદ છે:—ઈશ્વરનાં જ્ઞાન, ઇચ્છા, પ્રયત્ન, નિત્ય છે; અને જીવનાં (૯) ત્રણે અનિત્ય છે, ઈશ્વર વ્યાપક છે અને નિત્ય છે; જીવ નાના છે અને સંપૂર્ણ વ્યાપક છે, નિત્ય છે. અને જીવનુ જ્ઞાન અનિત્ય છે, યથી જ્યારે જ્ઞાનગુણ હોય ત્યારે તો જીવ ચેતન છે, અને જ્ઞાનગુણનો નાશ થાય ત્યારે જડરૂપ રહે છે. ઈશ્વર (અને) જીવની પેઠે, આકાશ, કાલ, દિશા, મન, નિત્ય છે.

અને પૃથ્વી જલ તેજ વાયુના પરમાણુ, નિત્ય છે. જાલિયામાં જે સૂક્ષ્મ રજ પ્રતીત થાય છે, તેના છદ્ધા ભાગનું નામ પરમાણુ છે. તે પરમાણુ આત્માની પેઠે નિત્ય છે. અન્ય પણ જાતિથી આદિ લઈને કેટલાક પદાર્થ ન્યાયમતમાં નિત્ય છે. વેદવિરુદ્ધ સિદ્ધાન્તનુ વહુ લખવાનો જિજ્ઞાસુને ઉપયોગ નહિ યથી લખ્યુ નથી. 'હુ મનુષ્ય છું, બ્રાહ્મણ છું,' યથી જે દેહવિષે આત્મભ્રાન્તિ, તેથી રાગદ્વેષ થાય છે, તે રાગદ્વેષથી ધર્મ-અધર્મના નિમિત્ત (પુરુષ) પ્રવૃત્ત થાય છે, તેઓથી શરીરના સંરંધ(જન્મ)દ્વારા સુખદુ:ખ થાય છે. એ રીતિય ન્યાયમતમાં આત્માને સસારનો હેતુ ભ્રાન્તિજ્ઞાન છે.

તે ભ્રાન્તિજ્ઞાન તત્ત્વજ્ઞાનથી દૂર થાય છે. ['દેહાદિક સપૂર્ણ પદાર્થોથી આત્મા ભિન્ન છે,' એ નિશ્ચયનું નામ 'તત્ત્વ-જ્ઞાન' છે] તે તત્ત્વજ્ઞાને 'હુ બ્રાહ્મણ છું, મનુષ્ય છું' એ ભ્રાન્તિ દૂર થાય છે ભ્રાન્તિના નાશથી રાગદ્વેષનો અભાવ થાય છે, તેઓના અભાવથી ધર્મઅધર્મના નિમિત્ત પ્રવૃત્તિનો અભાવ થાય છે, પ્રવૃત્તિના અભાવથી શરીરસંવધરૂપ જન્મનો અભાવ થાય છે. અને પ્રારંધના ભોગથી નાશ થાય છે. [શરીરસંવધના અભાવથી એકવિંશ હુ લનો નાશ થાય છે.] તે દુ:ખના

સાથે મનનો સંયોગ છે નહિ, યથી સુપુત્રિમાં જ્ઞાન થાય નહિ. નેઓના મતમાં ત્વચાસાથે સંયોગવાલું મન જ જ્ઞાન-દ્વારા, દુઃખનો હેતુ હોવાથી. દુઃખ છે, કેવલ મન નહિ. મોક્ષમાં ત્વચાનો નાશ હોવાથી તેનીસાથે સંયોગ છે નહિ, યથી જ્ઞાન થાય નહિ. મોક્ષકાલમાં મન છે સ્વરૂં, પરંતુ દુઃખનો હેતુ જે જ્ઞાનનું જનક, ત્વચાસાથે સંયોગવાલું મન, તે(જ્ઞાન-જનક મન)નો, સંયોગના નાશથી, નાશ થાય છે. એ રીતિએ મોક્ષકાલમાં, પરમાત્માથી મિત્ર જ, દુઃખરહિત થઈને, વ્યાપક આત્મા જડરૂપ સ્થિત થાય છે. કેમકે (જે) જ્ઞાનગુણથી આત્માનો પ્રકાશ થાય છે, તે જીવનું જ્ઞાન સંપૂર્ણ ઇન્દ્રિયજન્ય જ છે, નિત્ય છે નહિ. તે ઇન્દ્રિયજન્ય જ્ઞાનનો મોક્ષકાલમાં નાશ થાય છે યથી પ્રકાશરહિત જડરૂપ થઈને આત્મા, મોક્ષ-કાલમાં, સ્થિત થાય છે. એ ન્યાયનો સિદ્ધાન્ત છે.

૩૪૫. અને ન્યાયમતમાં પૂર્વુક્ત પ્રકારે સુલદુઃખ અને વંધ-મોક્ષ આત્માને થાય છે, યથી આત્મા નાના છે, અને સંપૂર્ણ વ્યાપક છે. સર્વ અલ્પ પદાર્થોસાથે જે સંયોગ એ જ ન્યાય-મતમાં વ્યાપકનું લક્ષણ છે; અને સ્વજાતીય, વિજાતીય, અને સ્વગતભેદનો અભાવ (એ) વ્યાપકનું લક્ષણ નથી. કેમકે ન્યાયમતમાં યદ્યપિ આત્મા નિરવયવ છે, યથી સ્વગતભેદનો તો તેવિષે અભાવ છે સ્વરો, પરંતુ સજાતીય અને વિજાતીય ભેદનો અભાવ નથી. કિન્તુ સજાતીય જે વીજો આત્મા, તેનો ભેદ આત્મામાં છે; અને વિજાતીય ઘટાદિકનો ભેદ પણ આત્મામાં છે. યથી સ્વજાતીયવિજાતીયસ્વગતભેદનો અભાવ વ્યાપકનું લક્ષણ નહિ; કિન્તુ સર્વ અલ્પ પદાર્થોસાથે સંયોગ જ વ્યાપકનું લક્ષણ છે.

પરિષે કોઈ શંકા કરે છે:-ન્યાયમતમાં આત્માની પેઠે આકાશ, કાલ, દિશા, પણ વ્યાપક છે; અને પરમાણુ સૂક્ષ્મ છે, નિરવયવ છે; તેઓની સાથે સર્વ વ્યાપકપદાર્થોનો સંયોગ વને નહિ. કેમકે, જો પરમાણુ માવયવ હોય ત્યારે તો કોઈ દેશમાં આત્માનો સંયોગ થાય, અને કોઈ દેશમાં અન્ય વ્યાપક પદાર્થોનો સંયોગ થાય. તે પરમાણુ સાવયવ છે નહિ કિન્તુ નિરવયવ છે, અને અતિસૂક્ષ્મ છે. તેઓનીસાથે એક જ દેશમાં સર્વવ્યાપક પદાર્થનો સંયોગ થશે,-તે વને નહિ. કેમકે એકના સંયોગથી જે સ્થાન નિરુદ્ધ (રોકાયલું) છે, તે દેશમાં અન્ય પદાર્થનો સંયોગ વને નહિ. યથી નાના પદાર્થોને વ્યાપકતા વને નહિ. એક જ કોઈ પદાર્થ વ્યાપક વને છે.

૫ શંકા વને નહિ. (૫મ ન્યાયમતશ્રાવ્યા કહે છે.) કેમકે સાવયવ વસ્તુનો જે સંયોગ છે, તે તો અન્યના સંયોગનો વિરોધી છે.-જેમ જે પૃથ્વીદેશમાં હસ્તનો સંયોગ થાય, તે (પૃથ્વી) દેશમાં પાદનો સંયોગ થાય નહિ. અને નિરવયવનો સંયોગ સ્થાનને રોકે નહિ, યથી અન્યના સંયોગનો વિરોધી નહિ, ૫ ઘાત્તા અનુભવસિદ્ધ છે. જેમ ઘટના જે દેશમાં આકાશનો સંયોગ છે, તે દેશમાં જ કલાનો અને દિશાનો સંયોગ પણ છે. જો કોઈ ઘટનો (એક) દેશ, આકાશકાલદિશાથી વહિર હોય; તો તે દેશમાં, આકાશકાલદિશાનો સંયોગ થાય નહિ; તે વહિર તો કોઈ દેશ છે નહિ, કિન્તુ સર્વ પદાર્થોના સર્વ દેશ, આકાશકાલદિશામાં જ છે, યથી સર્વ પદાર્થોના સર્વ દેશોવિષે આકાશકાલદિશાનો સંયોગ છે. ૫ રીતિપર પરમાણુ-વિષે પણ એક જ દેશમાં નાના નિરવયવ વિભુનો સંયોગ વને છે, કોઈ દોષ નથી. યથી આત્મા નાના છે, અને સંપૂર્ણ (સર્વ) વ્યાપક છે.

૩૪૬. (ન્યાયમતનું ળંડન.)

‘સર્વેનો સર્વ પદાર્થો સાથે’ સંયોગ છે, એ ન્યાયનો સિદ્ધાન્ત છે, તે સમીચીન નથી. કેમકે જો વ્યાપક આત્મા નાના અંગીકાર કરિયે તો સર્વ શરીરમાં સર્વ આત્માનો સંબંધ અંગીકાર કરવો પડશે, યથી કોણ શરીર કોનું છે એ નિશ્ચય નહિ થશે, કિન્તુ એક એક આત્માનાં સર્વ શરીર થવાં જોઈયે. જો એમ કહે:—‘જેના કર્મથી જે શરીર ઉત્પન્ન થયું છે, તે આત્માનું તે શરીર છે’—તે પણ વને નહિ. કેમકે જે શરીરથી કર્મ થાય છે, તે કર્મ કરવાવાઢા પૂર્વ શરીરમાં પણ સર્વ આત્માનો સંબંધ છે, યથી કર્મ પણ સર્વ આત્માનાં જ થશે, એકનાં નહિ. અને એમ કહે:—જે આત્માનું મનસહિત શરીર છે, તે આત્માનું તે શરીર છે,—તે પણ વને નહિ. કેમકે શરીરની પેઠે મનનીસાથે પણ સર્વ આત્માનો સંબંધ છે. તેવિયે આ નિશ્ચય થાય નહિ જે કિયું મન કિયા આત્માનું છે, કિન્તુ સર્વ આત્માનાં સર્વ મન થવાં જોઈયે. તેમ ઇન્દ્રિય પણ સર્વ આત્માનાં સર્વ જ થશે. વહિરના પદાર્થોવિયે ‘આ મારું છે, આ અન્યનું છે,’ યવો વ્યવહાર પણ શરીરનિમિત્તક છે. તે શરીર સર્વ આત્માનાં સર્વ છે, યથી વહિરના પદાર્થ પણ સર્વ આત્મામાં સર્વ થયા જોઈયે.

અને જો (ન્યાયમતવાઢા) એમ કહે:—‘જે આત્માને જે શરીરમાં અહંબુદ્ધિ અને મમબુદ્ધિ હોય, તે જ આત્માનું તે શરીર છે. તે અહંબુદ્ધિ અને મમબુદ્ધિ એક છે, યથી સર્વ આત્મામાં રહે નહિ, કિન્તુ એક ધર્મ એક જ ધર્મીવિયે રહે છે. યથી એક જ આત્માનું શરીર છે. જે આત્માનું જે શરીર છે, તે

૧૮૧. ‘સર્વ આત્માનો વ્યાપક વસ્તુથી ભિન્ન પરિષ્કૃત સર્વ દેહ ઇન્દ્રિય મન પરમાણુ આદિક વસ્તુસાથે સંયોગ છે.’ યવો એ વાક્યનો અર્થ છે. પં. પી. પુ.

‘શરીરના સંબંધી મન ઇન્દ્રિય અને ઘહિરના પદાર્થ તે આત્માના છે. ઇથી વ્યાપક નાના આત્મા અંગીકાર કરવામાં પણ ‘દોષ નથી.’

તે ઘાત્તા પણ ઘને નહિ કેમકે, યઘપિ અહંબુદ્ધિ ઇક દેહમાં ઇક જ આત્માને ઠાય છે, તયાપિ તે ન્યાયમતમાં ઘને નહિ; કિન્તુ સર્વ આત્માને ઇક દેહમાં અહંબુદ્ધિ ઠઈ જોડયે કેમકે, ન્યાયમતનાં બુદ્ધિનામ ‘જ્ઞાન’નું છે. તે જ્ઞાન આત્મા અને મનના સંયોગથી ઠાય છે. તે મનનીસાથે સંયોગ સર્વ આત્માનો છે. ઇથી મનના સંયોગથી જેમ ઇક દેહમાં ઇક આત્માને અહંબુદ્ધિ ઠાય છે, તેમ ઇક દેહમાં સર્વ આત્માને અહં-બુદ્ધિ ઠઈ જોડયે. જો આમ કહે:—યઘપિ મનનો સયોગ તો સર્વ આત્માસાથે છે, તયાપિ જે આત્મામાં જ્ઞાનનું જનક અદષ્ટ છે, તે આત્માને જ અહંબુદ્ધિ ઠાય છે. તો પણ સર્વને જ જ્ઞાન ઠયું જોડયે. કેમકે, જો વ્યાપક નાના આત્મા અંગીકાર કરિયે, તો ઇકશરીરની શુભઅશુભક્રિયાથી, શરીરમાં સ્થિત સર્વ-આત્મામાં જ અદષ્ટ ઠવાં જોડયે. ઇ ઘાત્તા પૂર્વે કહી આવ્યા. ઇથી વ્યાપક જો નાના આત્મા અંગીકાર કરિયે તો ઇક દેહમાં સર્વને સુખદુઃખનો મોગ ઠવો જોડયે. ઇથી ‘વ્યાપક ‘નાના કર્તામોક્તા આત્મા છે.’ ઇ ન્યાયનો સિદ્ધાન્ત સમી-ચીન નથી.

૩૪૭. (વિષે વેદાન્તનું મત.)

અને અમારા સિદ્ધાન્તમાં તો કર્તામોક્તા અંતઃકરણ છે. તે અંતઃકરણ નાના છે, (અને) વ્યાપક અને અણુ નથી; કિન્તુ શરીરના સમાન તે અંતઃકરણનું પરિમાણ છે. વીપકના પ્રકાશની પેઠે મહત્ શરીરને પ્રાપ્ત ઠાય ત્યારે અંતઃકરણનો વિકાસ ઠાય છે, અને ન્યૂન શરીરમાં સંકોચ ઠાય છે. ઇ ઘાત્તા

(શંકરાચાર્યકૃત) 'ચિદાનન્દવશશ્લોકી' વા 'નિર્વાણદશક' ઉપરિ સિદ્ધાન્ત(તત્ત્વ)વિન્દુનામે વ્યાખ્યાનમાં મધુસૂદન-સ્વામીણ પ્રતિપાદન કરી છે. જે અંત:કરણનો જે શરીરસાયે સંવંધ છે, તે અંત:કરણને તે શરીરેકરી ભોગ થાય છે.

જો અંત:કરણને વ્યાપક અંગીકાર કરિયે, તો સર્વ શરીર સર્વનાં થાય, અને ભોગ પણ સર્વને થાય. (પણ) વ્યાપક અંત:કરણ નથી યથી તે દોષ નથી. અને અંત:કરણને અણુ અંગીકાર કરિયે તો, શરીરના એક દેશમાં અંત:કરણ રહે છે યહું અંગીકાર કર્યું પડશે. તે વાત્તા યને નહિ. કેમકે, જો એક કાલમાં જ પાદ અને મસ્તકમાં કંટકવેધ થાય તો ઘંને સ્થાનમાં યરુ જ કાલે પીડા થાય છે, તે ન થવી જોઈયે. કેમકે, જો અંત:કરણ અણુ હોય તો, એક જ સ્થાનમાં એક કાલમાં રહે; યથી જે સ્થાનમાં અંત:કરણ હોય, તે સ્થાનમાં જ પીડા થઈ જોઈયે, ઘંને સ્થાનમાં નહિ. (પણ તેમ થાય છે) યથી અંત:કરણ વ્યાપક અને અણુ નથી. કિન્તુ શરીરના સમાન છે. યથી કોઈ દોષ નથી. [અણુ અને વ્યાપકથી વિ-લક્ષણ જે છે તેને જ મધ્યમ પરિમાણ કહે છે.]

૩૪૮. (આત્માચિયે નવીન ન્યાયમત.)

અને ન્યાયમતમાં કોઈ નવીને આયું અંગીકાર કન્યું છે:- આત્મા નાના છે, કર્તાભોક્તા છે, વ્યાપક નથી, યથી ભોગનો સંકર (શેઢમેઢ) નથી. અણુ પણ નથી, યથી યે સ્થાનમાં પીડાનો અસંમય પણ નથી. કિન્તુ જેમ વેદાન્તમતમાં અંત-કરણ મધ્યમપરિમાણ છે, તેમ આત્મા પણ મધ્યમપરિમાણ છે. તેવિયે ચતુર્દશ (૧૪) ગુણ રહે છે.

૩૪૧. (નવીનમતનું ળંડન.)

તે પણ સમીચીન નથી. કેમકે, જો આત્માને સંકોચ-

વિકાસગાળો અંગીકાર કરિયે તો હીપકની પ્રમાણી પેઠે આત્મા વિકારી, અને ત્રિનાશગાળો થશે પથી મોક્ષપ્રતિપાદક શાસ્ત્ર અને સાધન નિષ્ફળ થશે. અને મધ્યમપરિમાણ અંગીકાર કરીને, સંકોચ વિકાસ અંગીકાર નહિ કરિયે તો, ક્રિયા શરીરના સમાન આત્માને અંગીકાર કરિયે એ નિશ્ચય થાય નહિ જો મનુષ્યશરીરના સમાન અંગીકાર કરિયે તો જ્યારે આત્મા હસ્તીના શરીરને પ્રાપ્ત થાય ત્યારે (તે હસ્તીના) સર્વ શરીરમાં આત્મા નહિ હોવાનો. પથી જે દેશમાં હસ્તીને આત્મા છે નહિ તે દેશમાં પીડા નહિ થઈ જોઈયે. અને હસ્તીના શરીરના સમાન અંગીકાર કરિયે તો તેથી અન્યશરીર મહાંટાં છે તેઓના એક દેશમાં પીડા ન થયી જોઈયે. અને સર્વથી મહોટું કોઈનું શરીર છે નહિ, જેના સમાન આત્મા અંગીકાર કરિયે. અને સર્વથી મહોટું વિરાટનું શરીર છે, તેના સમાન જો આત્મા અંગીકાર કરે તો વિરાટના શરીરના અંતર્ભૂત સર્વ શરીર છે, પથી સર્વ આત્માનો સર્વ શરીરસાથે સંબંધ થશે. તેનાવિષે પૂર્વે દોષ કહ્યા જ છે. અને આ નિયમ છે:-'જે મધ્યમપરિમાણ વસ્તુ હોય તે શરીરની પેઠે અનિત્ય હોય છે' પથી આત્મા પણ અનિત્ય થશે. અને અંતઃકરણનો તો અમારા (સિદ્ધાન્તીના) મતમાં જ્ઞાનથી નાશ થાય છે, પથી અનિત્ય છે. (તે અંતઃકરણનું) મધ્યમપરિમાણ અંગીકાર કન્યાથી દોષ નથી. એ રીતિએ નવીન તાર્કિકનું મત પણ સમીચીન નથી.

૩૫૦. અને જો કોઈ આમ કહે,-'આત્મા નાના છે અને 'અણુ છે' તે વાત્તાં પણ વને નહિ. કેમકે, જો આત્માને કર્તા-ભોક્તા અંગીકાર કરિયે, તો અંતઃકરણના અણુપક્ષમાં જે દોષ કહ્યો, તે દોષ થશે; અને કર્તાભોક્તા અંગીકાર નહિ કરિયે તો નાનાઆત્માઅંગીકાર નિષ્ફળ થશે. એક જ વ્યાપક

(आत्मा) सर्व शरीरमां अंगीकार करवा योग्य छे. अने कर्ता-भोक्ता अंगीकार नहि करिये तो (अणुवादीना) पोताना सिद्धान्तनो पण त्याग थशे. केमके अणुवादीनो आ सिद्धान्त छे:-ज्ञानसुखदुःखधर्मथी आदिलईने आत्माना धर्म छे. एथी जो आत्माने अणु अंगीकार करिये तो जे शरीरना देशमां आत्मा छे नहि ते (शरीर)देश मृत समान छे तेविपे पीडादिक नहि थवां जोइये.

३५१. अने जो आम कहे:-‘यद्यपि आत्मा तो शरीरना एकदेशमां छे, परंतु कस्तूरीना गंधनी पेटे तेनु ज्ञान सर्व शरीरमां व्याप्त छे. एथी सर्व शरीरविषे अनुकूलप्रतिकूलना ‘संबंधने (आत्मा) अनुभव करे छे.’

ते पण बने नहि केमके आ नियम छे: जेटला देशमां गुणवाळो रहे तेनी बहिर् गुण रहे नहि, किन्तु गुणीमां ज गुण रहे छे. जेम रूप, घटादिकनी बहिर् रहे नहि; तेम आत्माथी बहिर् ज्ञान पण बने नहि. अने कस्तूरीना सूक्ष्म-भाग जेटला देशमां व्याप्त होय पटला देशमां ज गंध व्याप्त होय छे, एथी कस्तूरीनुं दृष्टान्त पण बने नहि. एथी ‘आत्मा ‘अणु छे’ ए पक्ष पण बने नहि.

अने कहिं श्रुतिमां आत्मा अत्यंत अणुथी पण अणु कह्यो छे, ते दुर्विज्ञेय छे एथी कह्यो छे. जेम अत्यंतअणुवस्तुं मंद-दृष्टि पुरुषने ज्ञान थाय नहि, तेम बहिर्मुख पुरुषने आत्मानुं पण ज्ञान थाय नहि. एथी अणुना स मा न छे, ए धृतिनो अभिप्राय छे अने ‘आत्मा अणु छे,’ एवो (श्रुतिनो) अभिप्राय नथी. केमके बहु स्थानमां (आत्माने) व्यापकरूप पोते घेदे ज प्रतिपादन क-यो छे; एथी अणु नथी. ए रीतिप ‘व्यापक ‘तथा मध्यमपरिमाण अथवा अणु आत्मा नाना छे’ ए कहेयुं संभवे नहि.

૩૫૨. પરિશેષથી એક વ્યાપક આત્મા છે, તેવિષે ધર્મ-અધર્મ, સુખદુઃખ, અને બંધમોક્ષ જો અંગીકાર કરિયે, તો કોઈને સુખ અને કોઈને દુઃખ, કોઈને બંધ અને કોઈને મોક્ષ એવો વ્યવહાર નહિ થશે. યથી (સિદ્ધાન્તી કહે છે કે) ધર્માદિક બુદ્ધિના ધર્મ છે. યથાપિ બુદ્ધિ જડ છે યથી તેવિષે પણ સુખાદિક ધર્મ વને નહિ; તથાપિ આત્માના ધર્મ નથી, એ અભિપ્રાયથી બુદ્ધિના ધર્મ કહ્યા છે; અને બુદ્ધિના ધર્મ છે, યનાવિષે અભિપ્રાય નથી. બુદ્ધિ અને સુખાદિક આત્મામાં અધ્યસ્ત (આરોપિત-કલ્પિત) છે. જે વસ્તુ જેમાં અધ્યસ્ત હોય, તે તેમાં પરમાર્થથી હોય નહિ. જેમ સર્પ રજ્જુમાં અધ્યસ્ત છે તે (સર્પ) પરમાર્થથી રજ્જુમાં છે નહિ; તેમ બુદ્ધિ અને સુખાદિક આત્મામાં છે નહિ. અને અધ્યસ્તવસ્તુ પણ કોઈનો આશ્રય થાય નહિ; યથી (અધ્યસ્તા) બુદ્ધિ પણ સુખાદિકનો આશ્રય છે નહિ. પરંતુ અજ્ઞાન તો, શુદ્ધ ચેતનમાં અધ્યસ્ત છે; અને અંતઃકરણ, અજ્ઞાન-ઉપહિત(ચેતન)માં અધ્યસ્ત છે; અને અંતઃકરણઉપહિત(ચેતન)માં ધર્મ-અધર્મ, સુખ-દુઃખ, બંધ-મોક્ષ, અધ્યસ્ત છે. એ રીતિએ આત્મામાં ધર્માદિકોની અધિષ્ઠાનતાનો અંતઃકરણ ઉપાધિ છે. યથી અંતઃકરણના ધર્મ કહેવાય છે.

૩૫૩. (ધર્માદિક અંતઃકરણઉપહિત ચેતનમાં અધ્યસ્ત છે, વિશિષ્ટમાં નથી.)

જો અંતઃકરણવિશિષ્ટમાં ધર્માદિક અધ્યસ્ત કહિયે તો વને નહિ. કેમકે, વિશેષણયુક્તનું નામ વિશિષ્ટ છે. ધર્માદિક અધ્યાસનું અધિષ્ઠાન જે આત્મા, તેનું અંતઃકરણ જો વિશેષણ અંગીકાર કરિયે તો અંતઃકરણ પણ ધર્મસુખાદિકનું અધિષ્ઠાન થશે. તે વાત્તા વને નહિ. કેમકે, મિથ્યાવસ્તુ (=અંતઃકરણ) અધિષ્ઠાન થાય નહિ. યથી આત્મામાં ધર્માદિકોના

અધ્યાસનું અંત.કરણ વિશેષણ નહિ, કિન્તુ ઉપાધિ છે. ઉપાધિનો આ સ્વભાવ છે.-પોતે તટસ્થ હૈને જેટલા દેશમાં પોતે હોય તેટલા દેશમાં સ્થિત વસ્તુને જણાવે. અને વિશેષણનો આ સ્વભાવ છે.-જેટલા દેશમાં પોતે હોય તેટલા દેશમાં સ્થિત વસ્તુને પોતાનાસહિત જણાવે. [વિશેષણ વાનને વિશિષ્ટ કહે છે. અને ઉપાધિમાનને ઉપહિત કહે છે] એ રીતિએ અત કરણવિશિષ્ટમાં જો ધર્માદિક અધ્યસ્ત કહિયે તો જેટલા દેશમાં અત કરણ છે તે દેશમાં સ્થિત ચેતનભાગ અને અંત કરણ વંનેને અધિષ્ઠાનતા થશે, તે અત કરણ પોતે પણ અધ્યસ્ત છે, યથી અધિષ્ઠાન વને નહિ. એ અભિપ્રાયથી અત.કરણઉપહિતમાં ધર્માદિક અધ્યસ્ત કહ્યા. યથી જેટલા દેશમાં અત.કરણ છે તેટલા દેશમાં સ્થિત ચેતનભાગમાત્રમાં અધિષ્ઠાનતા છે, અંત.કરણમાં નથી, એ વાર્તા વને છે.

૩૫૪. તેમ અંત કરણ પણ અજ્ઞાનઉપહિત(ચેતન)માં અધ્યસ્ત છે, અજ્ઞાનવિશિષ્ટમાં નહિ. એ રીતિએ અધ્યસ્ત જે ધર્માદિક તેઓનું અધિષ્ઠાન આત્મા છે. (ચેતનમાં ધર્માદિકના) અધ્યાસની અધિષ્ઠાન અંત.કરણ ઉપાધિ છે, યથી (ધર્માદિકને) વુદ્ધિના ધર્મ કહે છે. અને અવિવેકેકરી, અત.કરણ (અને) આત્મા વનેબિણે પ્રતીતિ થાય છે, યથી અત કરણવિશિષ્ટ જે પ્રમાતા (જીવ) તેના ધર્મ કહે છે. ધર્માદિક અંત કરણના ધર્મ હોય, અથવા અત:કરણવિશિષ્ટપ્રમાતાના ધર્મ હોય, અથવા (અધ્યસ્ત) રજ્જુસર્પ, સ્વપ્નના પદાર્થ, ગધર્મનગર, નભનીલતાની પેઠે કોઈના ધર્મ ન હોય, (એવા પ્રકારોમાંથી ગમે તેમ હો પણ) સર્વપ્રકારે આત્માના ધર્મ નથી. યદ્યપિ આત્મામાં અધ્યસ્ત છે, તથાપિ જે વસ્તુ જેમાં અધ્યસ્ત હોય, તે તેમા પરમાર્થથી હોય નહિ. [અધ્યસ્ત નામ કલ્પિતનું છે.]

પથી રાગદ્વેષ, ધર્મઅધર્મ, સુલલુ.લ, યંધમાંક્ષયી રહિત એક વ્યાપક આત્મા છે.

૩૫૫. (આત્મા સત્ છે)

તે આત્મા સત્ છે. જે વસ્તુનો જ્ઞાનથી અભાવ થાય તે અસત્ કહેવાય છે. જેની નિવૃત્તિ કોઈ કાલમાં પણ થાય નહિ તે સત્ કહેવાય છે. સર્વ પદાર્થોનું અને તેઓની નિવૃત્તિનું અધિષ્ઠાન આત્મા છે. જો આત્માની નિવૃત્તિ થાય તો તેનું અન્ય અધિષ્ઠાન કશું જોડાયે. કેમકે શૂન્યમાં નિવૃત્તિ થાય નહિ જો આત્મા અને તેની નિવૃત્તિનું અન્ય અધિષ્ઠાન અગીકાર કરિયે, તો તેનું પાછું થીજું અધિષ્ઠાન જગીકાર કરવું પડશે. એ રીતિએ અનવસ્થા થશે. અને આત્માની નિવૃત્તિ જે અગીકાર કરે તેને આ પૃથિયે ઠિયે જે.-‘આત્માની નિવૃત્તિ ‘કાઈએ અનુભવ કરી છે અથવા નહિ ?’ જો આમ કહ.-‘અનુ-ભવ કરી છે.’ (તો) તે વને નહિ. કેમકે, જે અનુભવ કરવા-વાળા છે, તે જ આત્મા છે અને પોતાનું સ્વરૂપ છે, તેની નિવૃત્તિનો અનુભવ પોતાના મસ્તકચ્છેદનના અનુભવસમાન છે. પથી આત્માની નિવૃત્તિના અનુભવ વને નહિ. અને આમ કહે જે આત્માની નિવૃત્તિ તા થાય છે, પરંતુ તેની નિવૃત્તિનો અનુભવ કોઈને નથી તા એ વાત્તા સિદ્ધ થઈ જે - આત્માની નિવૃત્તિ તા થાય નહિ; કેમકે જે વસ્તુ કોઈએ અનુભવ નથી કરી, તે વધ્યાપુત્રના સમાન હોય છે પથી આત્માની નિવૃત્તિ થાય નહિ. પથી જ આત્મા સત્ છે

૩૫૬. (આત્મા ચિત્ છે)

આત્મા ચિત્ છે. (અલુપ્ત) પ્રકાશરૂપ જે જ્ઞાન તે ચિત્ કહેવાય છે જા અપ્રકાશરૂપ આત્મા અગીકાર કરિયે, તો અનાત્મજડવસ્તુનો પ્રમાણ કદા થાય નહિ. જા અતકરણ

અને ઈન્દ્રિયોથી પશ્ચોનો પ્રકાશ કહિયે તો બને નહિ કેમકે, અત કરણ અને ઈન્દ્રિયો પરિછિન્ન છે, યથી કાર્ય છે જે પરિછિન્ન હોય તે ઘટની પેઠે કાર્ય હોય છે, અને અત કરણ (અને) ઈન્દ્રિય પણ પરિછિન્ન છે, તેથી કાર્ય છે. [દેશકાલથી જેનો અત થાય તે પરિછિન્ન કહેવાય છે.] જે કાર્ય હાય તે જડ હોય છે અત કરણ અને ઈન્દ્રિય પણ જડ છે તેઆથી કશી વસ્તુનો પ્રકાશ બને નહિ યથી જે આત્મા સર્વના પ્રકાશ કરે છે તે પ્રકાશરૂપ છે

૩૫૭ અને જે આમ કહે - 'આત્મા પ્રકાશરૂપ નથી, 'કિન્તુ આત્મા તા જડ છે, અને તેનેવિષે જ્ઞાનગુણ છે, તે 'જ્ઞાનથી આત્મા અને અનાત્માનો પ્રકાશ થાય છે' તેને આ પૂછિયે છિયે આત્માનો જ્ઞાનગુણ નિત્ય છે અથવા અનિત્ય છે? જા નિત્ય કહે તો આત્માનુ સ્વરૂપ જ જ્ઞાન સિદ્ધ થશે કેમકે આ નિયમ છે - જે આત્માથી ભિન્ન હાય તે અનિત્ય હોય છે જો જ્ઞાનને આત્માથી ભિન્ન અંગીકાર કરિયે તા (જ્ઞાન) અનિત્ય જ થશે યથી (જ્ઞાનને) નિત્ય માનીન આત્માથી ભિન્ન જ્ઞાન છે એમ કહેવું બને નહિ અને (જ્ઞાનને) અનિત્ય અંગીકાર કરિયે તા ઘટાદિકની પેઠે જડ થશે (કેમકે) જે અનિત્ય વસ્તુ હાય તે જડ હાય છે યથી 'જ્ઞાન 'અનિત્ય છે એ કહેવું બને નહિ, કિન્તુ જ્ઞાન નિત્ય જ છે તે નિત્યજ્ઞાન આત્મસ્વરૂપ જ છે જા અનિત્ય અંગીકાર કરિયે તો કદાચિત્ આત્મામા જ્ઞાન હાય, અને કદાચિત્ નહિ (હાય), યથી આત્માથી ભિન્ન પણ જ્ઞાન થાય અને નિત્ય અંગીકાર કન્યાથી તો ભિન્ન થાય નહિ જે ગુણ હોય તે ગુણવાનુવિષે કદાચિત્ રહે અને કદાચિત્ ન પણ રહે જેમ વસ્તુના નીલ-પીત ગુણ કદાચિત્ રહે અને કદાચિત્ નહિ રહે યથી જે

ગુણ હોય તે આગમાપાયી હોય છે. અને જ્ઞાનને નિત્યતા હોવાથી આગમાપાયી છે નહિ, યથી આત્માનું સ્વરૂપ જ જ્ઞાન છે.

૩૫૮. અને જ્ઞાનને અનિત્ય કહિયે તો 'ઇન્દ્રિય અથવા અંતઃકરણેકરી જ્ઞાન ઉત્પન્ન થાય છે, એ કહેવું પડશે. તે વને નહિ. કેમકે, સુપુતિમાં 'ઇન્દ્રિયાદિક તો છે નહિ, અને સુખનું જ્ઞાન થાય છે, તે નહિ થયું જોડયે. જો સુપુતિમાં સુખનું જ્ઞાન અંગીકાર ન કરે તો જાગીને 'હુ સુખે સૂતો હતો)' એ સુપુતિના સુખની સ્મૃતિ થાય છે, તે નહિ થવી જોડયે. જે વસ્તુનું પૂર્વજ્ઞાન હોય તેની સ્મૃતિ થાય છે, અને અજ્ઞાત વસ્તુની સ્મૃતિ થાય નહિ. અને સુપુતિના સુખની જાગીને સ્મૃતિ થાય છે, યથી સુપુતિમાં સુખનું જ્ઞાન થાય છે, તે જ્ઞાનનાં જનક ઇન્દ્રિયાદિક સુપુતિમાં છે નહિ, યથી (જ્ઞાન) નિત્ય છે. જ્ઞાનને ત્યાગીને આત્મા કદાપણ રહે નહિ, યથી જ્ઞાન આત્માનું સ્વરૂપ છે. જેમ ઉષ્ણતાને ત્યાગીને અગ્નિ કદાપણ રહે નહિ, યથી ઉષ્ણતા વહિતું સ્વરૂપ છે, તેમ જ્ઞાન પણ આત્માનું સ્વરૂપ છે. જે 'આગમાપાયી' હોય તે ગુણ હોય છે. ઉષ્ણતા અને જ્ઞાન આગમાપાયી છે નહિ, યથી અગ્નિ અને આત્માનાં (તે) સ્વરૂપ છે. [જે વસ્તુ કદાચિત્ હોય અને કદાચિત્ ન હોય તે 'આગમાપાયી' કહેવાય છે]

૩૫૯. ઉત્પત્તિ અને વિનાશ અંતઃકરણની વૃત્તિનાં થાય છે, જ્ઞાનનાં નહિ. આત્મસ્વરૂપ જે જ્ઞાન છે, તે વિશેષવ્યવહારનો હેતુ નથી; કિન્તુ જ્ઞાનસહિત વૃત્તિ અથવા વૃત્તિમાં આરૂઢ જ્ઞાન વ્યવહારનો હેતુ છે. એ 'અવચ્છેદવાદની' રીતિ છે. અને 'આભાસવાદમાં' આભાસસહિત વૃત્તિએ વ્યવહાર થાય છે. આભાસદ્વારા અથવા સાક્ષાત્ વૃત્તિદ્વારા આત્મસ્વરૂપજ્ઞાનેકરી જ સર્વ વ્યવહાર સિદ્ધ થાય છે, નહિ તો થાય નહિ. એ

રીતિય સર્વનો પ્રકાશક જ્ઞાનસ્વરૂપ આત્મા છે, યથી (તે આત્મા) ચિત્ છે.

૩૬૦. (આત્મા આનંદરૂપ છે.)

અને આત્મા આનંદરૂપ છે. જો આત્મા આનંદરૂપ ન હોય તો વિષયસંબધેકરી સ્વરૂપ આનંદનું ભાન થાય છે તે નહિ થતું જોઈએ. 'વિષયમાં આનંદ નથી' એ વાર્તા પૂર્વે (ચતુર્થ તરંગમાં) કહી છે. જો વિષયમાં આનંદ હોય તો જે વિષયથી એક પુરુષને સુખ થાય તેથી જ અન્યને દુઃખ થાય છે જેમ અગ્નિના સ્પર્શથી અગ્નિકીટને અને સર્પ સિંહનું રૂપ દેખેથી સર્પિણી સિંહિણીને આનંદ થાય છે અને અન્ય પુરુષને (=જીવને) દુઃખ થાય છે-તે નહિ થતું જોઈએ. અને સિદ્ધાન્તમાં તો અગ્નિકીટને અગ્નિસ્પર્શની ઇચ્છા થાય છે ત્યારે ચચલ-બુદ્ધિમાં સ્વરૂપાનંદનું ભાન થાય નહિ, અગ્નિસંબધથી ક્ષણમાત્ર ઇચ્છા દૂર થઈને નિશ્ચલબુદ્ધિમાં સ્વરૂપાનંદનું ભાન થાય છે અન્ય પુરુષને અગ્નિસંબધની ઇચ્છા છે નહિ, કિન્તુ અન્યપદાર્થોની ઇચ્છા છે; તે પદાર્થોની ઇચ્છા અગ્નિસંબધેકરી દૂર થાય નહિ, યથી ચચલ અંતઃકરણમાં અગ્નિસંબધેકરી આનંદ થતો નથી.

૩૬૧. યનાવિષે આ શકા થાય છે.-ઇચ્છારૂપ અંતઃકરણની જે વૃત્તિ છે, તે તા વિષયપ્રાપ્તિયકરી નાશને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ અને વૃત્તિનું કોઈ નિમિત્ત છે નહિ, યથી ઉત્પત્તિ થઈ નહિ, અને વૃત્તિ વિના સ્વરૂપાનંદનું ભાન થાય નહિ; યથી વિષયમાં જ આનંદ છે.

તે શકા બને નહિ કેમકે, યદ્યપિ ઇચ્છારૂપ તો અંતઃકરણની વૃત્તિનો અભાવ છે, [તે ઇચ્છારૂપ વૃત્તિ હોય તોપણ તેનેવિષે જ્ઞાનંદ પ્રકાશ થાય નહિ કેમકે, ઇચ્છારૂપ વૃત્તિ

રાજસી છે અને આનંદનો પ્રકાશ સાત્ત્વિકવૃત્તિમાં થાય છે.] તથાપિ વાઙ્મિતપદાર્થ જે મલ્લ્યો છે; તેના સ્વરૂપને વિષય કરવાને માટે જે જ્ઞાનરૂપ અંતઃકરણની વૃત્તિ છે તે સાત્ત્વિકી છે, (કેમકે-‘સત્ત્વગુણથી જ્ઞાન થાય છે;’-૫ નિયમ છે.) તે સાત્ત્વિકવૃત્તિમાં આનંદનું જ્ઞાન થાય છે. પરંતુ તે જ્ઞાનરૂપ વૃત્તિ બહિર્મુલ્ય છે, તેના પૃષ્ઠભાગમાં સ્થિત જે અંતઃકરણઉપ-રહિતચેતનસ્વરૂપઆનંદ, તેનું તે વૃત્તિપકરી ગ્રહણ થાય નહિ; યથી વિષયઉપરહિતચેતનરૂપ આનંદનું જ્ઞાન થાય છે. તે વિષય-ઉપરહિતચેતન આત્માથી ભિન્ન નથી, યથી આત્માનંદનું જ વિષય-માં જ્ઞાન કહેવાય છે. તે જ્ઞાનરૂપ વૃત્તિવિષે વિષયની સાથે નેત્રાદિકનો સંબંધ નિમિત્ત છે.

અથવા જ્ઞાનરૂપ જે બહિર્મુલ્યવૃત્તિ તેથી અન્યા, અંતર્મુલ્યવૃત્તિ થાય છે, તેવિષે અંતઃકરણઉપરહિતચેતનરૂપ આનંદનું જ જ્ઞાન થાય છે. ૫ ઉત્તમ સિદ્ધાન્ત છે. તે (અંતર્મુલ્ય) વૃત્તિની ઉત્પત્તિમાં ઇચ્છાદિકોનો અભાવ જ નિમિત્ત છે. જેમ ઇચ્છાદિકોથી રહિત જે પદ્માન્તમાં ઉદાસીન પુરુષ સ્થિત છે, તેને બહિર્મુલ્યજ્ઞાનરૂપથી કોઈ વૃત્તિ થાય નહિ, આનંદનું જ્ઞાન થાય છે, યથી ઇચ્છાદિકોના અભાવરૂપ નિમિત્તથી અંતર્મુલ્ય-વૃત્તિ આનંદ ગ્રહણ કરવાગાળી થાય છે; તેથી વાઙ્મિતવિષય-ના લાભેકરી, ઇચ્છાદિકોનો અભાવ હોવાથી, જ્ઞાનથી અનંતર, અંતર્મુલ્યવૃત્તિ થાય છે, તેનેકરી અંતઃકરણઉપરહિત આનંદનું જ ગ્રહણ થાય છે. તે સ્વરૂપાનંદનું ગ્રહણ, અને વિષયનું જ્ઞાન, અત્યંત અલ્પરહિત છે, યથી પુરુષને યથી જ્ઞાન થાય છે-‘મેં વિષયમાં આનંદ અનુભવ કવ્યો છે’ (વિષયા-કાર વૃત્તિપકરી વિષયઉપરહિતચેતનરૂપ આનંદનું જ્ઞાન થાય છે ૫) પ્રથમપક્ષથી (અંતર્મુલ્યવૃત્તિવિષે ઇચ્છાદિકોના

અભાવેકરી અન્તઃકરણઉપહિતચેતનરૂપ આનન્દનું ભાન થાય છે) એ પક્ષ ઉત્તમ છે, કેમકે, જે વિષયના જ્ઞાનરૂપ ઘૃત્તિ છે, તેથી અન્તઃકરણઉપહિત આનન્દનું તો ભાન વને નહિ; યથી વિષયઉપહિત આનન્દનું ભાન થશે. તો માર્ગમાં વૃક્ષના જ્ઞાનરૂપ જે ઘૃત્તિ છે, તે યણ સાત્ત્વિકી છે, તેથી યણ વૃક્ષઉપહિતચેતનસ્વરૂપ આનન્દનું ભાન થયું જોડયે; તેમ સર્વ જ્ઞાનથી જ્ઞેય(વિષય) ઉપહિતચેતનરૂપ આનન્દનું ભાન થયું જોડયે. (યણ તેમ થતું નથી) યથી અનાત્મવસ્તુના જ્ઞાનરૂપ જે વહિર્મુખઘૃત્તિ તેથી (વહિર્ જ્ઞેયઉપહિતચેતનસ્વરૂપઆનન્દનું પ્રહણ થાય નહિ. એ રીતિએ વિષયના સંબંધે કરી આત્મસ્વરૂપાન્દનું ભાન થાય છે. જો આત્મા આનન્દરૂપ ન હોય, તો વિષયસંબંધેકરી આનન્દનું ભાન વને નહિ. યથી આત્મા આનન્દરૂપ છે.

૩૬૨. અને આત્માના સંબંધિ જે વસ્તુ છે, તેનેવિષે પ્રેમ થાય છે, તેથી સન્નિહિતમાં (સમીપમાં સ્થિતવિષે) અધિક પ્રેમ થાય છે. એ રીતિએ વહિર્ વહિરના પદાર્થોની અપેક્ષાથી અન્તર્ અન્તરના પદાર્થોમાં અધિક પ્રીતિ છે. પરંપરાથી આત્માના સંબંધો જે પુત્રનો મિત્ર તેમાં પ્રીતિ થાય છે. પુત્રના મિત્રની અપેક્ષાથી પુત્રમાં અધિક પ્રીતિ છે; અને પુત્રથી યજ સ્થૂલસૂક્ષ્મશરીરમાં અધિકપ્રીતિ છે. અને 'સ્થૂલસૂક્ષ્મશરીરમાં યણ સ્થૂલથી સૂક્ષ્મમાં અધિક પ્રીતિ છે. પૂર્વપૂર્વથી ઉત્તરઉત્તર આત્માને સમીપ છે. આત્માનો આભાસ સૂક્ષ્મશરીરમાં છે, અન્યમાં નથી. યથી આભાસદ્વારા આત્માનો સૂક્ષ્મશરીરસાથે સંબંધ છે, અન્ય સાથે નથી. સૂક્ષ્મશરીરનો સ્થૂલશરીરસાથે સંબંધ છે, યથી સૂક્ષ્મશરીરદ્વારા આત્માનો સ્થૂલશરીરસાથે સંબંધ છે. અને સ્થૂલશરીરદ્વારા પુત્રસાથે સંબંધ છે; અને પુત્ર-

દ્વારા પુત્રના મિત્રસાથે સંબંધ છે. ય રીતિય ઉત્તર ઉત્તર જે આત્માને સમીપ, તેનાવિષે અધિકા પ્રીતિ છે. જે આત્માના સંબંધ હોવાથી પદાર્થમાં પ્રીતિ થાય, તે આત્મામાં જ મુખ્ય પ્રીતિ છે, અને પદાર્થમાં નથી. જેમ પુત્રના મિત્રમાં પુત્રના સંબંધથી પ્રીતિ છે, યથી પુત્રમાં જ પ્રીતિ છે, પુત્રના મિત્રમાં નથી. તેમ આત્માના અધિક સમીપમાં અધિકા પ્રીતિ થાય છે. યથી આત્માવિષે જ સર્વની પ્રીતિ છે.

તે પ્રીતિ આનંદમાં અને દુઃખના અભાવમાં હોય છે, અન્યમાં નહિ. અન્ય પદાર્થમાં જે પ્રીતિ થાય, તે આનંદ અને દુઃખના અભાવના નિમિત્ત થાય છે; યથી આનંદ અને દુઃખના અભાવથી અન્યમાં પ્રીતિ નથી. યથી સર્વની પ્રીતિનો વિષય જે આત્મા, તે આનંદરૂપ છે, અને દુઃખના અભાવરૂપ છે. કલ્પિતનો અભાવ અધિષ્ઠાનરૂપ હોય છે. જેમ સર્વનો અભાવ રજ્જુરૂપ છે. યથી કલ્પિત જે દુઃખ તેનો અભાવ યણ આત્મારૂપ છે. ય રીતિય આ ત્મા આ નં દ રૂ પ છે.

૩૬૩. અને ન્યાયમતમાં આત્માનો આનંદ ગુણ છે તે સમીચીન નથી. કેમકે, જો આનંદગુણને નિત્ય અંગીકાર કરિયે તો (આનંદ) આગમાપાથી નહિ થાય, યથી આત્માનું સ્વરૂપ જ આનંદ સિદ્ધ થશે. અને નિત્યઆનંદ ન્યાયમતમાં છે યણ નહિ. અને અનિત્ય જો કહિયે, તો અનુકૂલવિષય અને ઈન્દ્રિયના સંબંધેકરી આનંદની ઉત્પત્તિ અંગીકાર કરવી પડશે; યથી સુપ્રત્તિમાં આનંદનું ભાવ નહિ થવું જોઈયે. કેમકે, સુપ્રત્તિમાં વિષયનો અને ઈન્દ્રિયનો સંબંધ છે નહિ. યથી આત્માનો આનંદ ગુણ નથી, કિન્તુ આત્મા આનંદસ્વરૂપ છે. ય રીતિય આત્મા, સત્, ચિત્, આનંદરૂપ છે.

૩૬૪. (સત્-ચિત્-આનન્દ પરસ્પર ભિન્ન નથી.)

તે સત્, ચિત્, આનન્દ, પરસ્પર ભિન્ન નહિ. કિન્તુ એક જ છે. જો (તેઓ) આત્માના ગુણ હોય તો પરસ્પર ભિન્ન પણ હોય, પણ આત્મસ્વરૂપ છે એથી ભિન્ન નથી. એક જ આત્મા નિવૃત્તિ(વાધ)રહિત છે એથી સત્ કહેવાય છે. અને જડથી વિલક્ષણ પ્રકાશરૂપ છે એથી ચિત્ કહેવાય છે. અને દુઃખથી વિલક્ષણ મુખ્યપ્રીતિનો વિષય છે એથી આનન્દ કહેવાય છે. જેમ ઉગ્ણ(રક્ત)-પ્રકાશરૂપ અગ્નિ છે, તેમ સત્, ચિત્, આનન્દરૂપ આત્મા છે. અને સત્-ચિત્-આનન્દ-સ્વરૂપ જ શાસ્ત્રમાં બ્રહ્મ કહ્યું છે, એથી બ્રહ્મસ્વરૂપ આત્મા છે. અને બ્રહ્મનામ વ્યાપકનું છે. [દેશથી જેનો અંત નહિ હોય તે વ્યાપક કહેવાય છે.] તેથી આત્મા જો ભિન્ન હોય તો દેશથી અંતવાળો થશે. જેનો દેશથી અંત હોય, તેનો કાલથી પણ અંત હોય છે, એ નિયમ છે, એથી (આત્મા) અનિત્ય થશે. [જેનો કાલથી અંત થાય તે અનિત્ય કહેવાય છે.] એથી બ્રહ્મથી ભિન્ન આત્મા નથી. અને આત્માથી ભિન્ન જો બ્રહ્મ હોય તો (બ્રહ્મ) અનાત્મ થશે. અનાત્મા જે ઘટાદિક છે તે જડ છે, એથી આત્માથી ભિન્ન બ્રહ્મ પણ જડ જ થશે. એથી આત્માથી ભિન્ન બ્રહ્મ પણ નથી, કિન્તુ બ્રહ્મસ્વરૂપ જ આત્મા છે.

૩૬૬. એક જ ચેતન, સર્વ પ્ર પં ચ^૪ અ ને મા યા નું, અધિષ્ઠાન છે, એથી બ્રહ્મ કહેવાય છે; અ વિ યા અ ને વ્ય ણિ દેહાદિકોનું અધિષ્ઠાન છે એથી આત્મા કહેવાય છે. તત્પદનો લક્ષ્ય બ્રહ્મ કહેવાય છે અને ત્વંપદનો લક્ષ્ય આત્મા કહેવાય છે. ઈશ્વરસાક્ષી તત્પદનો લક્ષ્ય છે, અને જીવસાક્ષી ત્વંપદનો લક્ષ્ય છે. વ્યઘ્નિસંઘાતુપહિતચેતન જીવસાક્ષી છે, અને સમઘ્નિસંઘાતુપહિતચેતન ઈશ્વરસાક્ષી કહેવાય

છે યદ્યપિ જીવની અને ઈશ્વરની એકતા વને નહિ, તથાપિ જીવસાક્ષી અને ઈશ્વરસાક્ષીના, ઉપાધિના ભેદથી, ભેદ છે, અને સ્વરૂપથી એક જ છે જેમ મઠમા સ્થિત જે ઘટાકાશ અને મઠાકાશ તેઓનાં ઉપાધિના ભેદ વિના સ્વરૂપેકરી ભેદ નથી, તેમ આત્મા અને બ્રહ્મનો ઉપાધિભેદ વિના ભેદ નથી, એક જ વસ્તુ છે

૩૬૬ (તે બ્રહ્મરૂપ આત્મા અજન્મા છે)

તે બ્રહ્મરૂપ આત્મા અજન્મા નામ જન્મરહિત છે. જો આત્માના જન્મ અંગીકાર કરિયે, તો અનિત્ય થશે તે વાર્તા પરલોકગાદી જે આસ્તિક છે તેઆના ઇષ્ટ નથી કેમકે, જો આત્મા ઉત્પત્તિનાશવાનુ હોય તો, પ્રથમજન્મવિષે પૂર્વકર્મ વિના જ સુખદુઃખનો ભોગ (=અદૃતાભ્યાગમ), અને કન્યા કર્મનો ભોગ વિના નાશ (=દૃતવિપ્રણાશ), થશે યથી કર્તા ભક્તિ જા આત્મા અંગીકાર કરિયે તોપણ જન્મનાશરહિત જ અંગીકાર કરવા પડશે અને આત્માનુ જન્મ જા અંગીકાર કરિયે તા, હેતુ વિના તો કોઈ વસ્તુના જન્મ થાય નહિ, યથી કાઈ હેતુથી જ જન્મ કહેવા પડશે, તે વને નહિ કેમકે, જે આત્માના હેતુ છે તે આત્માથી ભિન્ન જ કહેવા પડશે તે આત્માથી ભિન્ન સર્વળ, આત્મામા કલ્પિત છે, યથી આત્માના હેતુ વને નહિ જેમ રજ્જુમા કલ્પિત સર્પ રજ્જુના હેતુ નહિ, તેમ આત્મામા કલ્પિત વસ્તુ આત્માનો હેતુ વને નહિ

૩૬૭ જેમ એક રજ્જુવિષે નાનાપુરુવાને, સપ, દડ, પૃથિવી રેલા, ઉલ્ઘારાની આન્તિ થાય છે, તે આન્તિમા એ અર્થ છે,-એક તા સામાન્ય 'ઇદ' (નામ આ) થશ છે, અને એક સર્પાં દિકા વિશેષઅર્થ છે તે સામાન્ય 'ઇદ'અર્થ, સર્પાંદિકાવિશેષઅર્થ મા સર્વત્ર વ્યાપક છે 'આ સપ છે, આ દડ છે, આ

પૃથિવીની રેખા છે, આ જલની રેખા છે,' એવી રીતિય સર્પાદિક વિશેષઅંશમાં इदं (आ) અંશ સર્વત્ર વ્યાપક છે. તે વ્યાપક સામાન્ય इदंઅંશ રજ્જુસ્વરૂપ છે. તે સામાન્ય इदं અંશના જ્ઞાનને જ, भ्रान्तिનો હેતુ, રજ્જુનું સામાન્યજ્ઞાન કહે છે. તે સામાન્ય इदंઅંશ સત્ય છે. કેમકે, રજ્જુનું જ્ઞાન થયેથી અનન્તર પળ તે इदंઅંશની પ્રતીતિ થાય છે. જેમ ભ્રાન્તિકાલમાં 'આ સર્પ છે,'-એ રીતિય સર્પાદિકસાથે મઢીને 'इदं'(आ)-અંશની પ્રતીતિ થાય છે; તેમ ભ્રાન્તિની નિવૃત્તિથી અનન્તર પળ 'આ રજ્જુ છે' એ રીતિય રજ્જુની સાથે મઢીને इदं(आ)અંશની પ્રતીતિ થાય છે.' જો इदंઅંશ પળ મિથ્યા હોય તો સર્પાદિકોની પેઠે ભ્રાન્તિની નિવૃત્તિથી અનન્તર તેની પળ પ્રતીતિ ન થઈ જોઈયે. (પળ તે થાય છે) એથી સર્પાદિક-ભ્રાન્તિમાં વ્યાપક જે इदंઅંશ તે સત્ય છે અને અધિષ્ઠાન રજ્જુરૂપ, છે, અને પરસ્પર વ્યભિચારી જે સર્પાદિક તે કલ્પિત છે.

૩૬૮. (પેદાર્થમાત્રમાં પાંચ અંશ, તેમાં ઘણ સત્ય અને એ વ્યભિચારી.)

તેમ સર્વ પદાર્થમાં પાંચ અંશ છે:-એક નામ અને રૂપ-અને અસ્તિ તથા ભાતિ અને પ્રિય, (એક ઘટ લઈયે તેમાં) 'ઘટ' એ એ અક્ષર નામ (અંશ), અને 'ગોલ' (આકાર) રૂપ (અંશ) છે. અને ઘટ છે, એ અસ્તિ (અંશ છે). અને ઘટ પ્રતીત થાય છે એ ભાતિ (અંશ છે), અને ઘટ પ્રિય છે, એ પ્રિય (આનંદઅંશ છે.) [સર્પાદિક પળ સર્પિણી આદિકોને પ્રિય છે.] એ રીતિય સર્વ પદાર્થોમાં પાંચ અંશ છે. તેઓમાં

૧૯૦. અસ્તિભાતિપ્રિયં રૂપં નામ ચેર્યંશપંચકં ।

આયત્રયં ગ્રહ્યરૂપં માયારૂપં તતો ઘ્યં ॥ ૨૦ ॥

દગ્દશ્યપ્રવરણં વા દગ્દશ્યવિવેકો વા વાક્યમુષા વા ।

અસ્તિ, માતિ, પ્રિય, ઘ્રણ અંશ સર્વ પદાર્થોમાં વ્યાપક છે; અને નામ, રૂપ (૫ ઘે અંશ) વ્યભિચારી છે. [જિ વસ્તુ કઠિં હોય અને કઠિં ન હોય તે વ્યભિચારી કહેવાય છે.] ઘટ-નામ અને ગોલરૂપ, પટવિષે છે નહિ; (અને) પટનામ અને તેનું રૂપ ઘટવિષે છે નહિ; ૫ રીતિ ૫ સર્વ પદાર્થોવિષે નામ-રૂપઅંશ વ્યભિચારી છે; અને અસ્તિમાતિપ્રિયરૂપ (અંશ) સર્વ-વિષે અનુગત છે. જેમ સર્વદંડાદિકોમાં અનુગત 'દ્વં'અંશ સત્ય અને અધિષ્ઠાન છે; તેમ સર્વ પદાર્થોમાં અનુગત અસ્તિ-માતિપ્રિયરૂપ (ઘ્રણ અંશ) સત્ય છે, અને અધિષ્ઠાનરૂપ છે અને સર્વદંડાદિકની પેઠે વ્યભિચારી, નામરૂપ (૫ ઘે અંશ) કલ્પિત છે. અને અસ્તિ, માતિ, પ્રિય,=સત્, ચિત્, આનંદરૂપ છે, ૫થી આત્મસ્વરૂપ છે. ૫ રીતિ ૫ સચ્ચિદાનંદરૂપ આત્મા-વિષે, સંપૂર્ણ નામરૂપપ્રવંચ કલ્પિત છે. તે કલ્પિત પદાર્થ કોઈ આત્માના જન્મનો હેતુ ઘને નહિ. ૫થી આત્મા અજન્મા છે. જે વસ્તુનો જન્મ થાય, તેનાં જ સત્તા, ઘૃદ્ધિ, પરિણામ, અપક્ષય, અને વિનાશરૂપ પાંચ અન્ય વિકાર હોય છે. આત્માનો જન્મ થાય નહિ. ૫થી ઉત્તર પાંચ વિકાર પણ થાય નહિ. ૫ રીતિ ૫ અજન્મા નામ જન્માદિક પદ્ધવિકાર-થી રહિત આત્મા છે. [સત્તા નામ પ્રકૃતવાનું છે અને અપ-ક્ષય નામ ઘટવાનું છે.]

૩૬૯. (આત્મા અસંગ છે.)

તે આત્મા અસંગ છે. સંગ નામ સંબંધનું છે. તે (સંબંધ)

૧૯૧. ઉત્પત્તિયુત્પદાર્થ વા કાર્યમાનને પદ્ધ માવવિકાર થાય છે. (૧) જની (જન્મ, કાર્યનો આદ્યક્ષણસાથે-સત્તારૂપ સંબંધ.), (૨) સત્તા વા અસ્તિત્વ (પ્રક-ટતા-ક્ષણ અવસ્થાન.), (૩) ઘૃદ્ધિ વા વર્ધન (શરીરનો ઘટ્ટુ અવપવસાથે સંબંધ.), (૪) પરિણામ (પૂર્વરૂપનો અપાય યથે સતે રૂપાન્તરપ્રાપ્તિ.), (૫) અપક્ષય (ઘટ્ટુ અવ-વધી વિયોગ.), (૬) વિનાશ (અન્તરારીર અને પ્રાણના સંયોગનો ધ્વંસ.)

सजातीय-विजातीय-स्वगत पदार्थंकरो थाय छे. जेम घटनो घटसाथे जे संबंध (छे) ते सजातीयसाथे संबंध छे; अने घटनो पटसाथे जे संबंध (छे) ते विजातीय साथे संबंध छे. स्वगत नाम अवयवनुं छे एथी पटनो तंतुसाथे जे संबंध ते स्वगतसाथे संबंध छे, आत्मा वे अथवा अनंत होय. तो सजातीयसाथे आत्मानो संबंध थाय. ते आत्मा एक छे, एथी सजातीयआत्मासाथे आत्मानो संबंध नथी. अने आत्माथी विजातीय अनात्मा छे, ते मृगतृष्णाना जलनी पेटे आत्मानां कल्पित छे. ते कल्पितथी आत्मानो संबंध बने नहि. [जेम मृगतृष्णाना जलसाथे पृथिवीनो संबंध थाय नहि; जो संबंध होय तो उपरभूमि ते जलथी भीनी धरं जोइये.] जेम मृगतृष्णाना जलथी उपरभूमिनो संबंध नथी, तेम आत्मानां कल्पित जे विजातीय अनात्मा, ते साथे आत्मानो संबंध नथी. जो आत्माना अवयव होय तो, आत्मानो स्वगतसाथे संबंध थाय. (पण) आत्मा नित्य छे तेथी निरवयव छे, तेनो स्वगतसाथे संबंध बने नहि. ए रीतिए सजातीयविजातीयस्वगतसंबंध आत्माविषे नथी, एथी (आत्मा) असंग छे. ए रीतिए, हे शिष्य ! सच्चिदानंद, ब्रह्मरूप, जन्मादिक विकाररहित, असंग आत्मा छे, ते तुं छुं. ए प्रथमप्रश्ननुं अर्धदुहाथी आचार्ये उत्तर कहुं. (ते अर्धदुहो,—

सत्, चित्त, आनंद एक तू, ब्रह्म अजन्म असंग;)

३७०. ('जगतनो कर्ता कोण छे ?')

ए द्वितीय प्रश्ननुं उत्तर अर्धदुहाए कहे छे.)

अर्धदुहोः—विभु चेतन, माया करे, जगत्उत्पत्तिमंग, ९.

टीकाः—विभु नाम व्यापक जे चेतन तेने आधित अने तेने विषय करनारी माया नाम सत्असत्थी विलक्षण

અદ્ભુતશક્તિરૂપ અજ્ઞાન, તેથી જગત્ની ઉત્પત્તિ (અને) ભંગ થાય છે. [ઉત્પત્તિ અને ભંગ કદાચી સ્થિતિનું પ્રહ્ણ અર્થથી થાય છે.] યથી આ અર્થ નિદ્ધ થયો:-માયાયુક્ત જે ચેતન તે કૈશ્વર કહેવાય છે. તે કૈશ્વર જગત્ની ઉત્પત્તિ, પાલન, અને નાશનો હેતુ છે. ય કહેવાયી 'જગત્નો કોઈ કર્તા છે અથવા પોતાની મેલે થાય છે?' (ય શિષ્યનો પ્રશ્ન હતો) યનું ઉત્તર કહ્યું 'અને જગત્નો કર્તા કોઈ જીવ છે અથવા કૈશ્વર છે?' યનું યણ ઉત્તર કહ્યું.

૩૭૧. (જગત્નો કર્તા કૈશ્વર છે.)

જગત્નો કર્તા કૈશ્વર છે, (જગત્) પોતાની મેલે થાય નહિ, જો કર્તા વિના જગત્ થાય, તો કુલાલ (કુંભાર) વિના ઘટ થયો જોડયે. યથી જગત્નો કોઈ કૈર્તા છે. તે કર્તા સર્વજ્ઞ છે. કેમકે કાર્યનો જે કર્તા હોય તે તે કાર્યને અને તેના ઉપાદાનને જાણીને કરે છે. યથી જગત્નો કર્તા યણ જગત્ને અને જગત્ના ઉપાદાનને જાણીને કરે છે. ય રીતિય જગત્નો કર્તા જગત્ને અને જગત્ના ઉપાદાનને જાણે છે, યથી સર્વજ્ઞ છે. અને સર્વશક્તિમાન્ છે. કેમકે જે અલ્પશક્તિયાલો, જીવ છે, તેઓ ય આ જગત્ની રચના મનેકરી યણ ચિન્તન થાય નહિ. યથી અદ્ભુતજગત્નો કર્તા અદ્ભુતશક્તિમાન્ છે. ય રીતિય જગત્નો કર્તા સર્વશક્તિમાન્ છે અને (કર્તા) સ્વતંત્ર છે. કેમ કે, જે ન્યૂનશક્તિયાલો હોય તે પરાધીન હોય છે, અને સર્વશક્તિયાલો પરાધીન હોય નહિ. યથી સ્વતંત્ર છે. ય

૧૯૨. ક્રિયાનિષ્ઠાદક. ક્રિયામાં સ્વતંત્ર. ઉપાદાન અને કાર્યનું અપરોક્ષજ્ઞાન. ચિકીર્ષા નામ કરવાની ઈચ્છા, કૃતિમત્ત નામ પ્રયત્ન, અને સામર્થ્ય, યટલી જ્ઞત્તિ કર્તામાં હોય છે, કૈશ્વરરૂપ કર્તા કર્તુ અકર્તુ-અન્યથાકર્તુ-સમર્થ છે,

રીતિપ જગત્નો કર્તા, સર્વજ્ઞ, સર્વશક્તિમાન, સ્વતંત્ર છે. તેને જ ઈશ્વર કહે છે.

૩૭૨. અને અલ્પજ્ઞ, અલ્પશક્તિમાન પરાધીનને જીવ કહે છે. યદ્યપિ અલ્પજ્ઞતાદિક જીવમાં પણ પરમાર્થથી નથી, તથાપિ અવિદ્યાકૃત મિથ્યા અલ્પજ્ઞતાદિક જીવમાં પ્રતીત થાય છે. યથી જીવમાં કહેવાય છે. અવિદ્યાકૃત અલ્પજ્ઞતાદિકોની જે ભ્રાન્તિ તેજ જીવતા છે. તે અલ્પજ્ઞતાદિકોની ભ્રાન્તિ ઈશ્વરમાં છે નહિ, કિન્તુ માયાકૃત સર્વજ્ઞતાદિક ઈશ્વરમાં છે. એ ઘાતાં વિસ્તરથી આગળ પ્રતિપાદન કરીશું. એ રીતિપ જગત્નો કર્તા જીવ નથી, ઈશ્વર છે.

૩૭૩. (ઈશ્વર સર્વત્ર વ્યાપક છે અને નિત્ય છે.)

(આત્માશ્રયાદિ પદ્ધોષ.)

તે ઈશ્વર એકદેશમાં સ્થિત નથી, કિન્તુ સર્વત્ર વ્યાપક છે. જો એકદેશમાં અંગીકાર કરિયે, તો જે વસ્તુનો દેશથી અન્ત હોય તે(વસ્તુ)નો કાલથી પણ અન્ત હોય છે, યથી અનિત્ય થશે જે અનિત્ય હોય તે કર્તાથી જન્ય હોય છે, યથી ઈશ્વરનો પણ કર્તા અંગીકાર કરવો પડશે. તે ઈશ્વરનો કર્તા બને નહિ. કેમકે, પોતે તો પોતાનો કર્તા બને નહિ. જો પોતાનો કર્તા પોતે જ અંગીકાર કરિયે તો આત્માશ્રય દોષ થશે. પોતે જ ક્રિયાનો કર્તા (આશ્રય) અને પોતે જ ક્રિયાનું કર્મ (વિષય) થાય ત્યાં આત્માશ્રયદોષ થાય છે, જેમ ફુલાલ (કુંમાર) ક્રિયાનો કર્તા છે, અને ઘટ કર્મ છે, તેમ ક્રિયાનો કર્તા અને કર્મ ભિન્ન હોય છે, એક બને નહિ. યથી આત્માશ્રયદોષ છે. [કર્મ નામ કાર્યનું છે, અને કાર્યના વિરોધીનું નામ દોષ છે.] આત્માશ્રય કાર્યનો વિરોધી છે, યથી દોષ છે. યથી ઈશ્વરનો કર્તા અન્ય અંગીકાર કરવો પડશે. તે અન્ય

પણ પ્રથમકર્તાની પેઠે કર્તાજન્ય જ કહેવો પડશે. તે તે(અન્ય)નો કર્તા પણ પ્રથમનો પેઠે તેથી ભિન્ન જ કહેવો પડશે. તે પ્રથમ જે ઈશ્વર છે, તેને દ્વિતીયકર્તાનો કર્તા અંગીકાર કરિયે, તો અન્યોન્યાશ્રયદોષ થશે; યથી તૃતીયકર્તા અન્ય અંગીકાર કરવો પડશે. તે તૃતીયનો કર્તા જો દ્વિતીય માનિયે, ત્યારે તો અન્યોન્યાશ્રયદોષ થાય, અને પ્રથમ માનિયે, તો ચક્રિકાદોષ થશે. જેમ ચક્રનું ભ્રમણ થાય છે, તેમ પ્રથમકર્તા દ્વિતીયજન્ય, અને દ્વિતીયકર્તા તૃતીયજન્ય, અને તૃતીય (કર્તા) પ્રથમજન્ય, તે પ્રથમ પુનઃ દ્વિતીયજન્ય, એ રીતિએ કાર્યકારણભાવનું ભ્રમણ થશે. ચક્રિકાસ્થાનમાં કોઈ પણ સિદ્ધ થાય નહિ, સર્વનો પરસ્પર અપેક્ષા છે, અન્યોન્યાશ્રયમાં વેની પરસ્પર અપેક્ષા છે. એકની સિદ્ધિ થયા વિના અન્યની સિદ્ધિ થાય નહિ. યથી જેમ કુલાલ(કુમાર)નો કર્તા પોતે (કુમાર) નથી, કિન્તુ તેનો પિતા છે, તેમ પ્રથમઈશ્વર-કર્તાનો અન્ય કર્તા છે. અને કુલાલનો પિતા પોતાના પુત્રથી ઉત્પન્ન થાય નહિ, કિન્તુ અન્ય પિતાથી ઉત્પન્ન થાય છે; તેમ દ્વિતીયકર્તા પ્રથમકર્તાથી ઉત્પન્ન થાય નહિ, કિન્તુ અન્ય કર્તાથી જ (ઉત્પન્ન થયો) કહેવો પડશે. અને કુલાલનો પિતામહ કુલાલ અને તેના પિતાથી ઉત્પન્ન થાય નહિ, કિન્તુ ચતુર્થ (ચોથી પેઢિયે) જે કુલાલનો પ્રપિતામહ તેથી ઉત્પન્ન થાય છે. તેમ તૃતીયકર્તા (પિતામહ) પણ પ્રથમ અને દ્વિતીય કર્તાથી ઉત્પન્ન થાય નહિ; યથી ચોથો કર્તા અન્ય અંગીકાર કરવો પડશે. તે ચતુર્થનો કર્તા અન્ય પંચમ માનવો પડશે. યથી અનવસ્થાદોષ થશે. ધારાનું (પ્રવાહ-ચાલતું રહેલું-તેનું) નામ 'અનવસ્થા' છે. જો કર્તાની ધારા અંગીકાર કરિયે, તો-ક્રિયો કર્તા જગત્ કરે છે-એ નિર્ણય

નહિ થશે. (આગળ ચાલતી સંખ્યામાંથી ગમે તે) કોઈએકને જગત્નો કર્તા માનવામાં કોઈ યુક્તિ નથી. તે યુક્તિના અભાવનું નામ જ વિનિગમનવિરહ (નામ એકની નિશ્ચાયક-યુક્તિનો અભાવ) કહે છે. અને ધારાનો કહિં વિદ્યુન્તિ અંગી-કાર કરિયે, તો જે કર્તામાં ધારાનો અન્ત અંગીકાર કન્યો, તે જ જગત્નો કર્તા માનવા યોગ્ય છે; પૂર્વના સર્વ નિષ્ફલ થશે. એનું નામ જ પ્રાગ્લોપ કહે છે. [પાછલાંના અભાવનું નામ પ્રાગ્લોપ છે.] એ રીતિએ ઈશ્વરનો દેશથી અંત અંગીકાર કરિયે તો ઉત્પત્તિ અંગીકાર કરવી પડશે. અને ઉત્પત્તિ અંગીકાર કરિયે તો આત્માશ્રયાદિ પદ્ધતિ થશે. યથી ઈશ્વરનો દેશથી અન્ત નથી, કિન્તુ વ્યાપક છે; યથી જ નિત્ય છે.

૩૭૪. (જીવઈશ્વરમાં કેવા પ્રકારે ભેદ છે.)

(અવચ્છેદ, આભાસ, અને વિવપ્રતિવિવવાદ.)

તે વ્યાપક ઈશ્વરનો અને જીવનો સ્વરૂપે ભેદ છે નહિ, કિન્તુ ઉપાધિએ ભેદ છે. કેમકે, અવચ્છેદવાદમાં માયાવિશિષ્ટ-ચેતનને ઈશ્વર કહે છે; અને અવિદ્યાવિશિષ્ટચેતનને જીવ કહે છે. (પંચદશીકાર વિદ્યારણ્યમુનિના આભાસવાદમાં માયા અને આભાસવિશિષ્ટચેતનને ઈશ્વર કહે છે; અને આભાસ સહિત અવિદ્યાવિશિષ્ટચેતનને જીવ કહે છે. આભાસવાદમાં આભાસસહિત અવિદ્યા અને (આભાસસહિત) માયાનો ભેદ છે; ચેતનનો નથી; તેમ અવચ્છેદવાદમાં પણ અવિદ્યા અને માયાનો ભેદ છે, સ્વરૂપેકરી ચેતનનો ભેદ નથી. અને (પદ્મ-પાદાચાર્યની પંચપાદિકાઉપર વિચરણકાર પ્રકાશાત્મચરણના વિવપ્રતિવિવવાદમાં) અજ્ઞાનમાં ચેતનનું પ્રતિવિવ જીવ છે, અને વિવ (શુદ્ધબ્રહ્મ) ઈશ્વર છે. એ પક્ષમાં પણ ચેતનનો સ્વરૂપેકરી ભેદ નથી, કિન્તુ એક જ ચેતનમાં જીવત્ય

અને કૈશ્વર્ય આરોપિત છે. ૫ ચાર્તા આગલ (૪૩૮ થી ૪૪૩ પર્યન્ત) કહીશું. ૫ રીતિપ જગતનો કર્તા, મર્મ, મર્વ-શક્તિમાન, સ્વતંત્ર, કૈશ્વર છે. તે કૈશ્વર વ્યાપક છે, તેનો અને જીવનો વિશેષણમાત્રકરી ભેદ છે, અને સ્વરૂપેકરી અભેદ છે. ૫ દ્વિતીય પ્રશ્નનું ઉત્તર કશું.

“મોક્ષનું સાધન જ્ઞાન છે, અથવા કર્મ છે, અથવા ઉપાસના છે, અથવા શ્રે છે?” (૫ પ્રશ્ન શિષ્યે કવ્યો હતો.) તેનું ઉત્તર ગુરુ કહે છે.

૩૭૫. (મોક્ષનું સાધન જ્ઞાન છે. ૩૭૫ થી ૪૦૬ પર્યન્ત.)

દ્રો.

જ્ઞાન જ હેતુ મોક્ષનો, નહિ કર્મ, નહિ ધ્યાન

નાશે રજ્જુસર્પ તદ, થાય રજ્જુનું જ્ઞાન.

૧૦.

ટીકા:-મુક્તિનો હેતુ કર્મ અને ‘ધ્યાન’ નામ ઉપાસના નહિ, કિન્તુ જ્ઞાન જ હેતુ છે. કેમકે, જો આત્મામાં વંધ સત્ય હોય, તો તેની નિવૃત્તિરૂપ મોક્ષ, જ્ઞાનેકરી થાય નહિ, કિન્તુ કર્મ અથવા ઉપાસનાપ થાય. તે વંધ આત્મામાં સત્ય છે નહિ, કિન્તુ રજ્જુસર્પની પેઠે મિથ્યા છે. તે મિથ્યાની નિવૃત્તિ અધિષ્ઠાનજ્ઞાનેકરી જ વને છે, કર્મ અથવા ઉપાસનાપકરી નહિ. જેમ રજ્જુનો સર્પ કોઈ ક્રિયાપકરી દૂર થાય નહિ, કેવલ રજ્જુના જ્ઞાનેકરી દૂર થાય: તેમ આત્માના અજ્ઞાનેકરી પ્રતીત જે થાય છે વંધ, તે વંધની પ્રતીતિ અને અજ્ઞાન, આત્માના જ્ઞાનેકરી જ દૂર થાય છે.

૩૭૬. જો કર્મનું ફલ મોક્ષ હોય તો મોક્ષ અનિત્ય થશે. કેમકે આ નિયમ છે.-શ્રુતિઆદિ કર્મનું ફલ જે અચ્છાદિ છે, તે અનિત્ય છે, અને યજ્ઞાદિક કર્મનું ફલ સ્વર્ગાદિક પણ અનિત્ય છે. જો મોક્ષ પણ કર્મનું ફલ અંગીકાર કરિયે, તો અનિત્ય

થશે, યથી કર્મનું ફલ મોક્ષ નથી. તેમ ઉપાસનાનું ફલ (મોક્ષ) જો અંગીકાર કરિયે, તો પણ મોક્ષ અનિત્ય થશે. કેમકે ઉપાસના પણ માનસ કર્મ જ છે. અને કર્મનું ફલ અનિત્ય હોય છે, યથી ઉપાસનારૂપ કર્મનું ફલ પણ મોક્ષ નહિ.

૩૭૭. (કર્મના પાંચ ઉપયોગ અથવા ફલ.)

અને કર્મકર્તાને કર્મેકરી પાંચ પ્રકારના ઉપયોગ (ફલ) થાય છે:—પદાર્થની ઉત્પત્તિ તથા નાશ, અથવા પદાર્થની પ્રાપ્તિ યા પદાર્થનો વિકાર, [અન્યરૂપની પ્રાપ્તિનું નામ વિકાર છે.] તેમ સંસ્કાર. સંસ્કાર યે પ્રકારના હોય છે:—મલની નિવૃત્તિ, અને ગુણની ઉત્પત્તિ. ય પાંચ પ્રકારનો કર્મથી ઉપયોગ થાય છે. તે મુમુક્ષુને કોઈ પણ વને નહિ. યથી જ્ઞાનનાં સાધન શ્રવણાદિકવિષે જ મુમુક્ષુ પ્રવૃત્ત થાય, અને કર્મમાં નહિ. જેમ કુલાલના કર્મથી કુલાલને ઘટની ઉત્પત્તિ (રૂપ) ઉપયોગ (શ્વેતસિદ્ધિસાધન) થાય છે; તેમ મુમુક્ષુને કર્મથી મોક્ષની ઉત્પત્તિ (રૂપ) ઉપયોગ વને નહિ કેમકે, અનર્થની નિવૃત્તિ અને પરમાનંદની પ્રાપ્તિરૂપ જે મોક્ષ છે, તે અનર્થની નિવૃત્તિ, આત્મામાં, નિત્યસિદ્ધા છે; જેમ રજ્જુમાં સર્પની નિવૃત્તિ નિત્યસિદ્ધા છે. અને આત્મા પરમાનંદસ્વરૂપ છે, યથી પરમાનંદની પ્રાપ્તિ પણ નિત્યસિદ્ધા છે. ય રીતિય સ્વભાવસિદ્ધ મોક્ષની કર્મેકરી ઉત્પત્તિ વને નહિ. જે ઘસ્તુ આગલ સિદ્ધ ન હોય તેની કર્મથી ઉત્પત્તિ થાય છે. અને સિદ્ધ ઘસ્તુની ઉત્પત્તિ થાય નહિ.

(૧. પદાર્થની ઉત્પત્તિરૂપ ઉપયોગ.)

૩૭૮. અને યેદાન્તશ્રવણ પણ મોક્ષની ઉત્પત્તિનું નિમિત્ત નથી કહ્યું, કિન્તુ 'આત્મા નિત્યમુક્ત છે, કિંચિત્માત્ર પણ કર્તવ્ય નથી' ય વાત્તાને જાણવા અર્થે શ્રવણ છે. ય

જાણીને કર્તવ્યમ્રાન્તિ દૂર થાય છે. અને વેદાન્તશ્રવણથી અન
તર પળ જેઓને કર્તવ્યપ્રતીતિ થાય છે, તેઓપ તત્વ જાણ્યુ
નથી. ય કારણથી નિત્યનિવૃત્ત જે અનર્થ, તેની નિવૃત્તિ, અને
નિત્યપ્રાપ્ત આનંદની પ્રાપ્તિ, વેદાન્ત શ્રવણનુ ફલ દેવગુરુપ
(સુરેશ્વરાચાર્યે) નૈષ્કર્મ્યસિદ્ધિમા કહ્યુ છે. યથી મોક્ષની
ઉત્પત્તિરૂપકર્મનો ઉપયોગ મુમુશુને વને નહિ.

(૨. પદાર્થના નાશરૂપ ઉપયોગ.)

૩૭૯. જેમ દડના પ્રહારરૂપ કર્મનો, ઘટના નાશરૂપ
ઉપયોગ (ફલ) થાય છે, તેમ મુમુશુને કર્મથી કોઈ પદાર્થના
નાશરૂપ ઉપયોગ પણ વને નહિ. કેમકે, અન્ય પદાર્થનો
નાશ તો મુમુશુને વાન્હિત છે નહિ કર્મથી વધનો નાશ જ,
ઉપયોગ કહેતો પડશે તે વધ આત્મામા છે નહિ મિથ્યા
પ્રતીત થાય છે તે મિથ્યાપ્રતીતિનો નાશ કર્મેકરી વને નહિ,
અને આત્માના યથાર્થ જ્ઞાનેકરી તો મિથ્યાપ્રતીતિનો નાશ
વને છે. યથી મુમુશુનો પદાર્થના નાશરૂપ ઉપયોગ પણ
કર્મેકરી વને નહિ.

(૩. પ્રાપ્તિરૂપ ઉપયોગ)

જેમ ગમનરૂપ કર્મેકરી પ્રાપ્તિ થાય છે, તેમ
મોક્ષની પ્રાપ્તિરૂપ ઉપયોગ કર્મેકરી વને નહિ કેમકે, જે
આત્મા નિત્યમુક્ત છે તેને માક્ષની પ્રાપ્તિ કહેવી વને નહિ.
જેને વધ હોય તેને માક્ષની પ્રાપ્તિ કહેવી વને છે, અને
આત્મામા વધ છે નહિ યથી માક્ષની પ્રાપ્તિરૂપ કર્મના ઉપયોગ
મુમુશુને વને નહિ

(૪ વિકારરૂપ ઉપયોગ)

જેમ પાકરૂપ કર્મેકરી અશ્નનો વિકારરૂપ ઉપયોગ, પાચ
કને (રસોઈઆને) થાય છે, તેમ મુમુશુને કર્મેકરી વિકાર-

રૂપ ઉપયોગ પણ વને નહિ કેમકે, અન્ય તો કોઈ વિકાર વને જ નહિ. જો આત્મામાં પ્રથમ વધ અંગીકાર કરિયે, અને મોક્ષદશામાં ચતુર્ભુજાદિક વિલક્ષણ રૂપની પ્રાપ્તિ અંગીકાર કરિયે, તો અન્યરૂપની પ્રાપ્તિરૂપ વિકાર, કર્મનો ઉપયોગ મુમુક્ષુને વને તે અન્યરૂપની પ્રાપ્તિ આત્મામાં અંગીકાર નથી થયી કર્મેકરી વિકારરૂપ ઉપયોગ પણ મુમુક્ષુને વને નહિ

(૫ નિવૃત્તિરૂપ અને ઉત્પત્તિરૂપ સંસ્કાર.)

જેમ વલ્લના ક્ષાલનરૂપ કર્મનો, મલની નિવૃત્તિરૂપ સંસ્કાર થાય છે, તેમ મલની નિવૃત્તિરૂપ સંસ્કાર પણ મુમુક્ષુને કર્મેકરી ઉપયોગ નથી કેમકે, અન્યના મલની નિવૃત્તિ તો મુમુક્ષુને વાઙ્મિત છે નહિ, અત્માના મલની નિવૃત્તિ કહેવી પડશે. તે આત્મા નિત્યશુદ્ધ છે, તેવિષે મલ છે નહિ થઈ મલની નિવૃત્તિરૂપ સંસ્કાર વને નહિ. અને અત કરણ વિષે પાપરૂપ જે મલ છે તેની નિવૃત્તિ (રૂપ) ઉપયોગ જો કર્મેકરી કહિયે, તો તે વાત્તા સત્યા છે પરંતુ શુદ્ધઅંતઃકરણ વાઙ્મા જે મુમુક્ષુ છે તેનો વિચાર (અન્ન) કરિયે છિયે. તેના (મુમુક્ષુના) અત કરણમાં પણ પાપ છે નહિ થઈ પાપરૂપ મલની નિવૃત્તિરૂપ સંસ્કાર પણ મુમુક્ષુને કર્મેકરી ઉપયોગ વને નહિ. અને અ જ્ઞા ન ને જો મલ કહિયે, તો અજ્ઞાન આત્મામાં છે સ્વરૂ. પરંતુ તેની નિવૃત્તિ કર્મેકરી થાય નહિ કેમકે અજ્ઞાનનું વિરોધિ જ્ઞાન છે, કર્મ નથી. થઈ મલની નિવૃત્તિરૂપ સંસ્કાર મુમુક્ષુને કર્મેકરી ઉપયોગ વને નહિ.

જેમ વલ્લના કુસુવામાં મજ્જનરૂપ કર્મનો રક્તગુણની ઉત્પત્તિરૂપ સંસ્કાર ઉપયોગ થાય છે, તેમ ગુણી ઉત્પત્તિરૂપ સંસ્કાર મુમુક્ષુને કર્મેકરી ઉપયોગ વને નહિ કેમકે અન્યવિષે તે ગુણની ઉત્પત્તિ વહેવી વને નહિ, આત્માવિષે જ

કહેવી પડશે. તે આત્મા નિર્ગુણ છે, તેવિધે ગુણની ઉત્પત્તિ વને નહિ, યથી, ગુણની ઉત્પત્તિપ સંસ્કાર પળ મુમુક્ષુને કર્મનો ઉપયોગ વને નહિ. [આ પ્રકરણમાં ઉપયોગ નામ ફલનું છે.] કર્મનું પાંચ જ પ્રકારનું ફલ થાય છે, અન્ય નહિ. તે પાંચ પ્રકારનું કર્મનું ફલ મુમુક્ષુને વને નહિ. યથી કર્મને ત્યાગીને જ્ઞાનનાં સાધન ધ્યણવિધે જ મુમુક્ષુ પ્રવૃત્ત થાય. ઉપાસના પળ માનસકર્મ જ છે, યથી તેના સંડનમાં પૃથક્ યુક્તિ નથી કહી. ય રીતિય ફેવલ કર્મ અથવા ઉપાસના મોક્ષનો હેતુ નથી, કિન્તુ ફેવલ જ્ઞાન છે.

૩૮૦. (સમુદાયવાદ.)

કોઈ કર્મઉપાસનાસહિત જ્ઞાનને મોક્ષનો હેતુ અંગીકાર કરે છે. અને તેવિધે યુક્તિ દષ્ટાન્ત પળ કહે છે. જેમ આકાશ-માં પક્ષીનું યક પક્ષેકરી ગમન થાય નહિ, કિન્તુ યે પક્ષે-કરી ગમન થાય છે; તેમ મોક્ષ(સ્વ)લોક પ્રતિ પળ યક જ્ઞાન-સ્વ પક્ષેકરી ગમન થાય નહિ; કિન્તુ યકપક્ષ તો ઉપાસના-સહિત કર્મ છે, અને દ્વિતીયપક્ષ જ્ઞાન છે. [ઉપાસના પળ માનસકર્મ જ છે, યથી યક જ પક્ષ છે.]

અન્ય દષ્ટાન્ત:-

૩૮૧. જેમ સેતુના (સેતુબંધરામેશ્વરના) દર્શનેકરી પાપનો નાશ થાય છે, તે સેતુનું દર્શન પળ પ્રત્યક્ષસ્વ જ્ઞાન છે અને યદ્વામકિસહિત ગમનાદિ નિયમની અપેક્ષા કરે છે. યદ્વાદિકરહિત જે પુસ્ત્ર હોય તેને સેતુદર્શનેકરી ફલ થાય નહિ. જેમ સેતુનું પ્રત્યક્ષજ્ઞાન, યદ્વાનિયમાદિકોની, ફલની ઉત્પત્તિમાં, અપેક્ષા કરે છે, તેમ વ્રહ્મજ્ઞાન પળ, મોક્ષસ્વ ફલની ઉત્પત્તિમાં, કર્મઉપાસનાની અપેક્ષા કરે છે.

(ક્રમસમુચ્ચયવાદ)

અને કેવલજ્ઞાનેકરી જે મોક્ષ અગીકાર કરે છે, તે પણ જ્ઞાનનો હેતુ તો કર્મઉપાસના માને છે શુદ્ધ અને નિશ્ચલ અત કરણમા જ્ઞાન થાય છે તે અત કરણ શુભકર્મેકરી શુદ્ધ થાય છે અને ઉપાસનાએકરી નિશ્ચલ થાય છે એ રીતિએ અત કરણની શુદ્ધિ અને નિશ્ચલતાદ્વારા કર્મઉપાસના જ્ઞાનના હેતુ અગીકાર કન્યા છે

૩૮૨ જેમ જ્ઞાનના હેતુ કર્મઉપાસના અગીકાર કન્યા, તેમ જ્ઞાનના ફલ (મોક્ષ તે) મોક્ષના હેતુ પણ (કર્મઉપાસના) અગીકાર કરવા યોગ્ય છે દૃષ્ટાન્ત-જેમ જલનુ સેચન વૃક્ષની ઉત્પત્તિનો હેતુ છે, અને વૃક્ષના ફલ ની ઉત્પત્તિનો પણ હેતુ છે વનના વૃક્ષનાં જે ફલ, જલસેચન વિના થાય છે તે પણ વૃક્ષના મૂલમા નીચે જલનો સવધ છે, એથી ફલ થાય છે અને જલના સવધ વિના વૃક્ષ જ સૂકાઈ જાય, ફલ થાય નહિ તેમ કર્મઉપાસના જ્ઞાનની ઉત્પત્તિના હેતુ છે, અને જ્ઞાનનુ ફલ જે મોક્ષ તેના પણ હેતુ છે એ રીતિએ કર્મ, ઉપાસના, જ્ઞાન, એ ત્રણે મોક્ષના હેતુ છે. એથી જ્ઞાનવાન્ પણ કર્મ કરે.

(સમસમુચ્ચયવાદ)

૩૮૩ અથવા કર્મઉપાસના જ્ઞાનની રક્ષાના હેતુ છે કેમકે, જા કર્મઉપાસનાનો જ્ઞાનવાન્ ત્યાગ કરે, તા ઉત્પન્ન થયુ જ્ઞાન પણ, જલવિનાના વૃક્ષની પેઠે, નષ્ટ થઈ જશે કેમકે શુદ્ધ અત કરણમાં જ્ઞાન થાય છે અને શુભકર્મ નહિ કરે તો જ્ઞાનવાન્ને પાપ થશે અને ઉપાસનાના ત્યાગેકરી અંત કરણ પુન ચચલ થઈ જશે તે મલિન અને ચચલ અત:કરણ

માં જ્ઞાન રહે નહિ. જેમ સૂકી ભૂમિમાં ઉત્પન્ન થયાં વૃક્ષ પળ રહે નહિ.

અન્ય દૃષ્ટાન્તઃ—જેમ સંસ્કારેકરી શુદ્ધ કરેલા સ્થાનમાં વેદપાઠી બ્રહ્મચારી નિવાસ કરે છે, અને શુદ્ધ કરેલું સ્થાન પણ કોઈ નિમિત્તે ફરી મલિન થઈ જાય તો તે સ્થાનને ત્યાગી દે છે; તેમ કર્મના ત્યાગે મલિન અને ઉપાસનાના ત્યાગે ચંચલ થયું જે અંતઃકરણ તેવિધે જ્ઞાન રહે નહિ. યથી કર્મ અને ઉપાસના જ્ઞાનની રક્ષાના હેતુ છે. ૫ રીતિએ કર્મ, ઉપાસના, જ્ઞાન, ત્રણે મોક્ષનો હેતુ અંગીકાર કરિયે. તથા જ્ઞાનની રક્ષાના હેતુ કર્મઉપાસના અંગીકાર કરિયે, અને કેવલ જ્ઞાન, મોક્ષનો હેતુ અંગીકાર કરિયે. યંને પ્રકારે જ્ઞાનવાન્ને કર્મ-ઉપાસના કર્તવ્ય છે. અને સમુદયવાદ કહે છે.

૩૮૪. (સમસમુદયવાદનું સંકેત.)

(સિદ્ધાન્તી કહે છે કે:-) ૫ (સમુદયવાદ) સમીચીન નથી. કેમકે, દેહથી ભિન્ન આત્મા જે નહિ જાણે, તેણે-કરી કર્મ થાય નહિ. કેમકે, જન્માન્તરના મોગને નિમિત્ત કર્મ કરે છે, અને દેહનો અશિવિધે દાહ થાય છે, તેથી (દેહથી) જન્માન્તરના મોગ થને નહિ. યથી શરીરથી ભિન્ન-આત્માનું જ્ઞાન, કર્મનો હેતુ છે, તે પણ શરીરથી ભિન્ન-આત્માનું કર્તામોક્તારૂપે કરીને જ્ઞાન, કર્મનો હેતુ છે. 'હું પુણ્યપાપનો કર્તા છું અને પુણ્યપાપનું ફલ મને થશે.' યહું જેને જ્ઞાન છે તે કર્મ કરે છે. અને જ્ઞાનવાન્ને યહું આત્માનું જ્ઞાન છે નહિ. કિન્તુ 'પુણ્યપાપ અને સુખદુઃખથી 'રહિત અસંગ બ્રહ્મરૂપ આત્મા છે,' યહું વેદાન્તવાક્યે જ્ઞાન થાય છે; તે જ્ઞાન, કર્મનો હેતુ નથી, ઉલટું વિરોધિ છે. યથી જ્ઞાનવાનેકરી કર્મ થાય નહિ. અને કર્તા, કર્મ અને ફલનું

ભેદજ્ઞાન, કર્મનો હેતુ છે. તે કર્તા, કર્મ અને ફલની, જ્ઞાનવાન-ને, આત્માથી ભિન્ન પ્રતીતિ થાય નહિ, સંપૂર્ણ આત્મસ્વરૂપ જ પ્રતીત થાય છે, યથી પણ જ્ઞાનવાને કર્મ થાય નહિ. અને આપ્યકારે વહુ પ્રકારે જ્ઞાનવાનને કર્મનો અભાવ પ્રતિપાદન કન્યો છે. કર્મનો અને જ્ઞાનનો ફલેકરી વિરોધ છે. યથી પણ જ્ઞાનકર્મનો સમુચ્ચ વને નહિ. કર્મનું ફલ અનિત્યસંસાર છે, અને જ્ઞાનનું ફલ નિત્યમોક્ષ છે.

૩૮૫. જેને આત્મામાં જાતિ (વર્ણ), આશ્રમ અવસ્થા- (વાલ યુવાદિ)નો અધ્યાસ કર્મનો હેતુ છે. કેમકે, જાતિ, આશ્રમ, અવસ્થાને યોગ્ય, ભિન્ન ભિન્ન કર્મ કહ્યાં છે, યથી જાતિ આદિકોનો અધ્યાસ કર્મનો હેતુ છે. યદ્યપિ જાતિ, આશ્રમ, અવસ્થા, દેહના ધર્મ છે, અને કર્મને દેહમાં આત્મ-યુદ્ધિ છે નહિ, કિન્તુ દેહથી ભિન્ન કર્તા-આત્મા, કર્મ જાણે છે. ય વાર્તા પૂર્વે કહી, યથી જાતિ-આશ્રમ અવસ્થાની પ્રતીતિ આત્મામાં કર્મને પણ વને નહિ; તથાપિ દેહથી ભિન્ન આત્માનું કર્મને અપરોક્ષ જ્ઞાન નથી, કિન્તુ શાસ્ત્રેકરી પરોક્ષ જ્ઞાન છે, અને દેહમાં આત્મજ્ઞાન અપરોક્ષ છે. જો દેહથી ભિન્ન આત્માનું અપરોક્ષજ્ઞાન હોય, તો દેહમાં અપરોક્ષઆત્મજ્ઞાનનું તે વિરોધિ થાય. અને અપરોક્ષજ્ઞાનનો અપરોક્ષજ્ઞાનથી વિરોધ નથી. યથી દેહથી ભિન્ન કર્તા-આત્માનું જ્ઞાન, અને દેહમાં આત્મયુદ્ધિ, ય વંને યકને વને છે- દષ્ટાન્ત:-મૂર્તિમાં શ્વર-જ્ઞાન શાસ્ત્રેકરી પરોક્ષ છે, અને પાપાણયુદ્ધિ અપરોક્ષ છે, તેઓનો વિરોધ નથી. વંને યકને થાય છે. અને રજ્જુમાં જેને, સર્પથી અપરોક્ષભેદજ્ઞાન છે, તેને અપરોક્ષ સર્પમ્માન્તિ દ્ર થાય છે. યથી આ નિયમ સિદ્ધ થયો.-અપરોક્ષમ્માન્તિનો અપરોક્ષજ્ઞાનસદ્ધ વિરોધ છે, પરોક્ષ (જ્ઞાન) સદ્ધ નહિ.

પથી દેહથી ભિન્ન આત્માનું પરોક્ષજ્ઞાન, અને દેહમાં અપરોક્ષ-જ્ઞાન વને છે. તે વંને કર્મના હેતુ છે. દેહથી ભિન્ન પણ કર્તારૂપેકરીને આત્માનું જ્ઞાન, કર્મનો હેતુ છે. તે કર્તારૂપે-કરીને આત્માનું જ્ઞાન ભ્રાન્તિરૂપ છે. અને ભ્રાન્તિ વિદ્વાનને છે નહિ, પથી (તેને) કર્મનો અધિકાર નથી.

અને દેહમાં અપરોક્ષ આત્મવુદ્ધિ (દેહ હું હું પવી વુદ્ધિ) હોય, ત્યારે દેહના ધર્મ,—જાતિ, આશ્રમ, અવસ્થા,—પ્રતીત થાય. તે દેહમાં આત્મવુદ્ધિ પણ વિદ્વાનને છે નહિ, કિન્તુ વ્રહ્મરૂપેકરીને આત્માનું અપરોક્ષજ્ઞાન છે. પથી જાતિ, આશ્રમ, અવસ્થાની ભ્રાન્તિના અભાવથી પણ વિદ્વાનને કર્મનો અધિકાર નથી. અને ઉપાસના પણ 'હું ઉપાસક હું, દેવ ઉપાસ્ય છે,' ય વુદ્ધિપકરી થાય છે તે વિદ્વાનને ઉપાસ્યઉપાસક-ભાવ પ્રતીત થાય નહિ. દેહાદિક સંઘાત તો મારો અને 'દેવનો સ્વપ્નની પેઠે, કલ્પિત છે. અને ચેતન યક છે.' ય વિદ્વાનનો નિશ્ચય છે. પથી જ્ઞાનનો ઉપાસનાસ્વાયે વિરોધ છે.

૩૮૬. અને પક્ષીના ગમનનું દૃષ્ટાન્ત વને નહિ. કેમકે, પક્ષીના તો યે પક્ષ યક કાલમાં રહે છે તેઓનો પરસ્પર વિરોધ નથી. અને જ્ઞાનનો તો કર્મઉપાસનાસ્વાયે વિરોધ છે યક કાલમાં યે વને નહિ.

૩૮૭. અને સેતુના જ્ઞાનનું દૃષ્ટાન્ત પણ વને નહિ. કેમકે સેતુનું દર્શન દૃષ્ટફલનો હેતુ નથી, કિન્તુ અદૃષ્ટફલનો હેતુ છે. [પ્રત્યક્ષ જે ફલ પ્રતીત થાય તે દૃષ્ટફલ કહેવાય છે.] જેમ મોજનનું ફલ સૃષ્ટિ પ્રત્યક્ષ છે, પથી મોજન દૃષ્ટફલનો હેતુ છે; તેમ સેતુના દર્શનથી પ્રત્યક્ષફલ પ્રતીત થાય નહિ, કિન્તુ પાપના નાશરૂપ ફલ શાસ્ત્રેકરી જાણ્યું જાય છે. [શાસ્ત્રે-કરી જે ફલ જાણિયે, અને પ્રત્યક્ષ પ્રતીત થાય નહિ; તે

અદૃષ્ટફલ કહેવાય છે.] યથી જેમ યજ્ઞાદિક કર્મ સ્વર્ગાદિક અદૃષ્ટફલના હેતુ છે, તેમ સેતુનું દર્શન પણ પાપના નાશરૂપ અદૃષ્ટફલનો હેતુ છે. જે અદૃષ્ટફલનો હેતુ હોય છે, તે તો ફલની ઉત્પત્તિમાં શાસ્ત્રે જેટલો સાહાય્ય ઘોધન કન્યો છે, તે સહિત ફલનો હેતુ થાય છે, કેવલ નહિ. યથી ધર્માનિયમાદિકસહિત સેતુનું દર્શન પાપનાશરૂપ ફલનો હેતુ છે, ધર્માનિયમાદિકરહિત (ફલનો) હેતુ નથી. કેમકે, સેતુના દર્શનથી પ્રત્યક્ષ તો કોઈ ફલ પ્રતીત થતું નથી, કેવલ શાસ્ત્રેકરી જાણ્યું જાય છે. તે શાસ્ત્ર ધર્માદિકસહિત સેતુના દર્શનેકરી ફલ ઘોધન કરે છે. કેવલ દર્શનેકરી ફલની ઉત્પત્તિમાં યંદ પ્રમાણ નથી. યથી સેતુનું દર્શન, ફલની ઉત્પત્તિમાં, ધર્માનિયમભક્તિની અપેક્ષા કરે છે.

૩૮૮. અને બ્રહ્મવિદ્યા, પોતાના ફલની ઉત્પત્તિમાં, કર્મ-ઉપાસનાની અપેક્ષા કરે નહિ. કેમકે, જો બ્રહ્માવિદ્યાનું ફલ પણ, સ્વર્ગની પેઠે, લોકવિશેષ, અદૃષ્ટ હોય, અને તે લોકવિશેષ પણ, કેવલબ્રહ્મવિદ્યાપ્રકરી, શાસ્ત્રે ઘોધન કન્યો ન હોય, કિન્તુ કર્મઉપાસનાસહિતેકરી ઘોધન કન્યો હોય, તો બ્રહ્મવિદ્યા પણ, સેતુના દર્શનની પેઠે, ફલની ઉત્પત્તિમાં કર્મ-ઉપાસનાની અપેક્ષા કરે. તે બ્રહ્મવિદ્યાનું ફલ મોક્ષ, સ્વર્ગની, પેઠે લોકવિશેષરૂપ અદૃષ્ટ તો છે નહિ, કિન્તુ મોક્ષ નિત્યપ્રાપ્ત છે. અને ધ્રાન્નિય બંધ પ્રતીત થાય છે. તે ધ્રાન્તિનો નિવૃત્તિ જ બ્રહ્મવિદ્યાનું ફલ છે. તે ધ્રાન્તિની નિવૃત્તિ કેવલ બ્રહ્મવિદ્યાપ્રકરી અમને પ્રત્યક્ષ છે. અને રજ્જુજ્ઞાને સર્પધ્રાન્તિની નિવૃત્તિ સર્વને પ્રત્યક્ષ છે, યથી અધિષ્ઠાનજ્ઞાનનું ધ્રાન્તિની નિવૃત્તિ (૫) દૃષ્ટફલ છે. દૃષ્ટફલની ઉત્પત્તિ જેટલી સામગ્રીપ્રત્યક્ષ પ્રતીત થાય છે તે સામગ્રી દૃષ્ટફલનો હેતુ કહેવાય

છે. જેમ *તુરી, તંતુ, † અને વેમેકરી‡ પટની ઉત્પત્તિ પ્રત્યક્ષ છે, પથી તુરી, તંતુ, વેમ, પટના હેતુ છે. અને કેવલ ભોજનેકરી તૃપ્તિરૂપ ફલ પ્રત્યક્ષ પ્રતીત થાય છે, પથી કેવલભોજન તૃપ્તિનો હેતુ છે; તેમ કેવલઅધિષ્ઠાનજ્ઞાનથી ધ્રાન્તિની નિવૃત્તિ પ્રત્યક્ષ પ્રતીતા થાય છે, પથી કેવલઅધિષ્ઠાનનું જ્ઞાન જ ધ્રાન્તિની નિવૃત્તિનો હેતુ છે. જેમ રજ્જુનું જ્ઞાન, ધ્રાન્તિની નિવૃત્તિમાં, અન્યની અપેક્ષા કરે નહિ; તેમ વંધ-ધ્રાન્તિનું અધિષ્ઠાન જે નિત્યમુક્ત-આત્મા તેનું જ્ઞાન પળ વંધ-ધ્રાન્તિની નિવૃત્તિમાં કર્મઉપાસનાની અપેક્ષા કરે નહિ.

૩૮૯. અને જ્ઞાનનાં ફલ મોક્ષને, સ્વર્ગની પેઠે, લોરુ વિશેષ અદૃષ્ટ, જે અંગીકાર કરે છે તે વેદવાક્યથી વિરુદ્ધ છે. કેમકે, જ્ઞાનવાનના પ્રાણ કાંઈ લોક પ્રતિ ગમન નથી કરતા, ય વેદમાં કહ્યું છે. અને લોકવિશેષ અંગીકાર કરવાથી, સ્વર્ગની પેઠે, મોક્ષ અનિત્ય થશે. પથી લોકવિશેષરૂપ મોક્ષ નથી. અને લોકવિશેષ મોક્ષ જે અંગીકાર કરે, તેને પળ કેવલ-જ્ઞાને જ મોક્ષલોરુની પ્રાપ્તિ અંગીકાર કરવી યોગ્ય છે. કેમકે, શાસ્ત્રે પ્રતિપાદન કરેલો જે અર્થ હોય, તે શાસ્ત્રને અનુસાર જ અંગીકાર કરાય છે. તે શાસ્ત્ર કેવલજ્ઞાનેકરી મોક્ષ કહે છે, પથી કેવલજ્ઞાન મોક્ષનો હેતુ છે; કર્મ ઉપાસના જ્ઞાન, પ્રણે નથી.

૩૯૦. અને વૃક્ષનું દૃષ્ટાન્ત પળ ઘને નહિ. કેમકે, યદ્યપિ જલનું સેચન, વૃક્ષની ઉત્પત્તિ અને રક્ષામાં, હેતુ છે; તથાપિ વૃક્ષના ફલની ઉત્પત્તિમાં નથી. (વાલ અને) વૃદ્ધ જે વૃક્ષ છે, તેવિપે જલનું સેચન વૃક્ષની રક્ષાને નિમિત્ત છે, ફલને નિમિત્ત નહિ. જલેકરી પુષ્ટ જે વૃક્ષ, તે જ ફલનો હેતુ છે,

जलसेचन नहि ते कर्मउपसनानो पण ज्ञाननी उत्पत्तिमां उप-
योग छे, मोक्षमां नथी. एथी ज्ञाननी उत्पत्तियो पूर्व ज अंतःकरणनी
शुद्धि अने निश्चलताना निमित्त, कर्मउपासना करे. ज्ञानवी
अनंतर मोक्षना निमित्त नहि.

ज्ञाननी उत्पत्तिधी पूर्व पण ज्यांसुधी अंतःकरणमां मल
अने विक्षेप होय त्यांपर्यन्त ज करे. शुद्ध अने निश्चल अंतः-
करण जेनुं होय, ते जिज्ञासु श्रवणनां विरोधी कर्मउपास-
नानो त्याग करे. मलनाम पापनुं छे, ते अशुभ वासनानो
हेतु छे. ज्यांपर्यन्त मल होय त्यांपर्यन्त अशुभवासना होय
छे. ज्यारे अशुभवासना होय नहि, त्यारे मलनो अभाव
निश्चय करे. अंतःकरणनी चंचलता अने एकाग्रता अनु-
भवसिद्धा छे. एथी उत्तम जिज्ञासु अने विद्वान्ने कर्मउपा-
सना निष्फला छे.

३९१. अने पूर्वे जे कर्तुं-‘ज्ञाननी रक्षाने निमित्त कर्म-
‘उपासना करे. जेम जलथी उत्पन्न थयो जे वृक्ष तेनी जले-
‘करी रक्षा थाय छे. जो जलनो संबंध न होय तो वृद्ध वृक्ष
‘पण सूकाई जाय छे, तेम कर्मउपासनाए उत्पन्न थयुं जे
‘ज्ञान, तेनी कर्मउपासनाए रक्षा थाय छे. जो ज्ञानी कर्म-
‘उपासना नहि करे तो, अंतःकरण मलिन अने चंचल पुनः
‘थई जशे. ते मलिन अने चंचल अंतःकरणमां, सूकी भूमिमां
‘वृक्षनी पेठे, उत्पन्न थयुं ज्ञान पण नष्ट थई जशे. एथी ‘ज्ञान-
‘वान् पण कर्मउपासना करे.’

(सिद्धान्ती कहे छे—) ए वने नहि. केमके आभाससहित
अथवा चेतनसहित अंतःकरणनी-‘हुं अंसंग ब्रह्म छुं’ ए
वृत्ति ते, वेदान्तनुं फलरूप ज्ञान छे. तेनो कर्मउपासना विना
नाश थशे, अथवा चेतनस्वरूप ज्ञाननो नाश थशे? जो एम

કહિયે:-સ્વરૂપજ્ઞાન તો નિત્ય છે, યથી તેનો તો નાશ અને રક્ષા વને નહિ; પરંતુ વેદાન્તનું ફલ જે બ્રહ્મવિદ્યારૂપ જ્ઞાન છે, તેની કર્મઉપાસના ઉત્પત્તિ થાય છે અને કર્મઉપાસનાના ત્યાગે, ઉત્પન્ન થઈ વિદ્યા પણ નષ્ટા થઈ જશે. યથી તેની રક્ષાને નિમિત્ત કર્મઉપાસના કરે. તે વને નહિ. કેમકે પ્રકૃ વાર ઉત્પન્ના થઈ જે અંતઃકરણની બ્રહ્માકારવૃત્તિ તેણે-કરી, અજ્ઞાન અને ભ્રાન્તિના નાશરૂપ ફલ, તે જ સમયે (સમ-કાલે)સિદ્ધ થાય છે. અજ્ઞાન અને ભ્રાન્તિના નાશથી અન-ન્તર પુનઃ વૃત્તિની રક્ષાનો ઉપયોગ નથી. અને અંતઃકરણની વૃત્તિની રક્ષા, કર્મઉપાસના વને પણ નહિ કેમકે, જ્યારે કર્મઉપાસનાનું અનુષ્ઠાન કરશે ત્યારે કર્મઉપાસનાની સામગ્રીનું જ વૃત્તિરૂપ જ્ઞાન થશે, બ્રહ્મનું જ્ઞાન વને નહિ, અન્યવૃત્તિ થયાથી પ્રથમવૃત્તિ રહે નહિ. યથી કર્મઉપાસના, જ્ઞાનની ઉત્પ-ત્તિના તો પરંપરાથી હેતુ છે, અને ઉત્પન્નવૃત્તિનાં વિરોધી છે યથી કર્મઉપાસના જ્ઞાનની રક્ષા થાય નહિ

૩૧૨. અને પૂર્વ જે કહ્યું:-‘જ્ઞાનવાન્ને કર્મ ત્યાગેથી પાપ થાય છે.’ તે વાસ્તાં વને નહિ. કેમકે, જે શુભકર્મનો ત્યાગ છે તે પાપનો હેતુ નથી, કિન્તુ નિપિદ્ધકર્મનું અનુષ્ઠાન જ પાપનો હેતુ છે, પ્ર વાસ્તાં માપ્યરૂપે વહુ પ્રકારે પ્રતિપાદન કરી છે. યથી કર્મના ત્યાગેકરી પાપ થાય નહિ. અને જ્ઞાન-વાન્ને તો સર્વ પ્રકારે પાપનો અસંભવ છે. કેમકે પુણ્યપાપ અને તેઓનો આશ્રય અંતઃકરણ, પરમાર્થથી, છે નહિ, અવિદ્યા-પ્રકારી મિથ્યા પ્રતીતિ થાય છે. તે અવિદ્યા અને મિથ્યા પ્રતીતિ જ્ઞાનવાન્ને છે નહિ. યથી જ્ઞાનવાન્ને શુભકર્મના ત્યાગે-કરી અથવા અશુભના અનુષ્ઠાનેકરી પાપ વને નહિ.

૩૯૩. (મંદ અને દૃઢ યે પ્રકારનું જ્ઞાન.)

પ સ્થાનમાં આ સિદ્ધાન્ત છે:-મંદ અને દૃઢ યે પ્રકારનું જ્ઞાન છે. સંશયાદિકસહિત જે જ્ઞાન, તે મંદજ્ઞાન કહેવાય છે, અને સંશયાદિકરહિત (જે જ્ઞાન તે) દૃઢજ્ઞાન કહેવાય છે. જેને દૃઢજ્ઞાન હોય તેને કિશ્ચિત્માત્ર પણ કર્તવ્ય નથી. એક ઘાર ઉત્પન્ન થયું જે સંશયાદિકરહિત અંતઃકરણની વૃત્તિરૂપ જ્ઞાન તે જ અવિદ્યાનો નાશ કરી દે છે. તે જ્ઞાન પોતે પણ દૂર થઈ જાય, તોપણ મલા પ્રકારથી જાણેલા આત્મામાં પુનઃ પ્રાન્તિ થતી નથી. કેમકે, પ્રાન્તિનું કારણ જે અવિદ્યા છે તે અવિદ્યા એક ઘાર ઉત્પન્ન થયેલા જ્ઞાનેકરી નષ્ટ થઈ ગઈ. યથી પ્રાન્તિ અને અવિદ્યાના અભાવથી વૃત્તિજ્ઞાનની આવૃત્તિનો કંઈ ઉપયોગ નથી. અને જીવનમુક્તિના આનંદઅર્થે જો વૃત્તિની આવૃત્તિ અપેક્ષિતા હોય, તો ઘારંવાર વેદાન્તના અર્થનું ચિન્તન જ કરે.

વેદાન્તના અર્થચિન્તનેકરી જ ઘારંવાર બ્રહ્માકારવૃત્તિ થાય છે. અને કર્મઉપાસનાએ નહિ. કેમકે, કર્મ અને ઉપાસનાનો અંતઃકરણની શુદ્ધિ અને નિશ્ચલતાદ્વારા જ જ્ઞાનમાં ઉપયોગ છે, અન્યા રીતિએ નથી. અને વિદ્વાન્ના અંતઃકરણમાં પાપ અને ચંચલતા છે નહિ. રાગદ્વેષદ્વારા પાપ અને ચંચલતાનો હેતુ અવિદ્યા છે. તે અવિદ્યાનો જ્ઞાનેકરી નાશ થાય છે. યથી વિદ્વાનને પાપ અને ચંચલતાના અભાવથી કર્મઉપાસનાનો ઉપયોગ નથી.

૩૯૪ અને જો કદાચિત્ એમ કહિયે:-‘રાગદ્વેષાદિક અંતઃકરણનો સહજ ધર્મ છે. જ્યાંસુધી અંતઃકરણ છે ત્યાંસુધી જ્ઞાનવાનને પણ રાગદ્વેષનો સર્વથા નાશ થાય નહિ. તે રાગદ્વેષથી જ્ઞાનવાનનું પણ અંતઃકરણ ચંચલ થાય છે. યથી ચંચલતા દૂર કરવાસારૂ જ્ઞાનવાન પણ ઉપાસના કરે.’

६ तरंग.) मोक्षनुं साधन ज्ञान छे. वेदान्तविचारै ब्रह्माकार वृत्ति. ५०३

‘यद्यपि ज्ञानवानने अंतःकरणनी चंचलताथी विदेहमोक्ष-
मां (भावि जन्मना अभावमां) हानि नथी, तथापि चंचल
‘अंतःकरणमां स्वरूपआनंदनुं भान थाय नहि; पथी चंचलता
‘जीवन्मुक्तिनी विरोधिनी छे, पथी जीवन्मुक्तिना निमित्त ‘चंच-
लता दूर करवानेअर्थे उपासना करे.’

(सिद्धान्ती कहे छे के:-) ते बने नहि. केमके, यद्यपि दृढ
बांध जेना अंतःकरणमां थयो छे, तेने समाधि अने विश्लेष समान
छे. पथी अंतःकरणनी निश्चलताना निमित्त कोई यत्ननो आरंभ
विद्वान्ने बने नहि.

(वेदान्तशास्त्रना विचारथी ज दृढज्ञानीने, मन निश्चल
थई, ब्रह्माकार वृत्ति होय छे.)

तथापि विद्वान्नी प्रवृत्ति अने निवृत्ति प्रारब्धने अधीना
छे. सर्वनां प्रारब्धकर्म विलक्षण छे. कोई विद्वाननुं प्रारब्ध
जनकादिकोनी पेटे भोगनो हेतु छे, अने कोईनुं प्रारब्ध शुक्र-
देव यामदेव आदिकोनी पेटे निवृत्तिनो हेतु छे. जेने
प्रारब्ध, भोगनो हेतु छे, तेने तो प्रारब्धेकरी भोगनी इच्छा
अने भोगनां साधननो यत्न थाय छे; अने जेने प्रारब्ध निवृत्ति-
नो हेतु हांय, तेने जीवन्मुक्तिना आनंदनी इच्छा थाय
छे, अने भोगमां ग्लानि थाय छे. जेने जीवन्मुक्तिना आनं-
दनी इच्छा होय ते ब्रह्माकारवृत्तिनी आवृत्तिना निमित्त वेदान्त
अर्थनुं चिन्तन ज करे, उपासना नहि केमके, अंतकरण-
नी निश्चलतामाअथी, ब्रह्मानंदनुं विशेषरूपे भान थाय

१९३. शरीरसहित सते बन्धभ्रान्तिनी निवृत्ति. जीवन्मुक्तनुं एक लक्षणः—

ब्रह्मानन्दरसस्यादासक्तचित्ततया यतेः ।

अन्तर्बहिरविज्ञानं जीवन्मुक्तस्य लक्षणं ॥ ४३८ ॥

विवेकचूडामणिः ।

नहि; किन्तु ब्रह्माकारवृत्ति ए ज थाय छे. ते ब्रह्माकारवृत्ति वेदान्त-
चिन्तने ज थाय छे, उपासनाए नहि. अने अंत.करणनी
चंचलता पण विद्वानने वेदान्तना चिन्तने ज दूर थई जाय छे.
एथी अंत.करणनी निश्चलताना निमित्त पण उपासनामां प्रवृत्ति
थाय नहि. ए रीतिए दृढबोध जेने थयो छे, तेनी कर्मउपासनामां
प्रवृत्ति थाय नहि.

३९५. अने जेने मंदबोध छे ते पण मनन अने निदि-
ध्यासन ज करे, कर्मउपासना नहि. केमके मंदबोध जेने
थयो छे ते उत्तमजिज्ञासु छे. ते उत्तमजिज्ञासुने मनननि-
दिध्यासन बिना अन्य कर्तव्य नथी. ए घात्तां शारीरकमां
सूत्रकार अने भाष्यकारे प्रतिपादन करी छे. अने विद्वानने
मनननिदिध्यासन पण कर्तव्य नथी. जे विद्वान् जीवन्मुक्ति-
ना आनंदसाम्ब मनननिदिध्यासनमां प्रवृत्त थाय छे, ते
पण पोतानी इच्छाए प्रवृत्त थाय छे. अने 'हु वेदनी आज्ञा
'नहि करूं तो मने जन्ममरणससार थसे,' एवी बुद्धिए जे
क्रिया करे ते कर्तव्य कहेवाय छे. ते जन्मादिकोनी बुद्धि
विद्वानने होय नहि. एथी पोतानी इच्छाए जे विद्वान् मनन-
निदिध्यासन करे; ते कर्तव्य नहि. ए रीतिए मंदबोध अथवा
दृढबोध जेने थयो छे, तेने कर्मउपासना कर्तव्य नथी.

३९६. अने जेने बोध थयो छे नहि, किन्तु आत्माने जाण
धानी तीव्रइच्छा छे, भोगनी नहि, तेनु अंत.करण शुद्ध
छे. एथी ते पण उत्तम ज जिज्ञासु छे, तेने पण बोधना अर्थे
श्रवणादिक ज कर्तव्य छे, कर्मउपासना नहि. केमके, जे कर्म-
उपासनानु फल छे ते तेने सिद्ध छे अने शानती सामान्य
इच्छायी जे श्रवणमां प्रवृत्त थयो छे, अने अंत.करण भोगोमां
आसक्त छे, ते मंदजिज्ञासु छे ते पण श्रवणने स्वामीने पुनः

૬ તાંગ.) મોક્ષનું સાધન જ્ઞાન. જગત્વ્યવહારને જ્ઞાન વિરોધી નથી. ૧૦૧

કર્મઉપાસનામાં પ્રવૃત્ત થાય નહિ. કર્મઉપાસનાનું ફલ જે અંત કરણની શુદ્ધિ અને નિશ્ચલતા છે, તે તેને શ્રવણેકરી જ થઈ જશે. શ્રવણનો આવૃત્તિથી અંતઃકરણના દ્વાપ દૂર થઈને આ જન્મવિષે અથવા અન્ય જન્મવિષે અથવા બ્રહ્મલોકવિષે જ્ઞાન થાય છે. [આવૃત્તિ નામ વારંવારનું છે.] અને શ્રવણને ત્યાગીને જ કર્મઉપાસનામાં પ્રવૃત્ત થાય છે, ને આસ્ત્વપતિત (ઠંચે ચડી પડેલો) કહેવાય છે. ય રીતિય જ્ઞાનવાન્ અને ઉત્તમજિજ્ઞાસુનો કર્મઉપાસનાવિષે અધિકાર નહિ. અને મંદજિજ્ઞાસુ પણ જે વેદાન્તશ્રવણમાં પ્રવૃત્ત થયો છે, તેનો અધિકાર નહિ. અને જ્ઞાનની જેને ઇચ્છા તો છે પરંતુ ભોગમાં બુદ્ધિ જાસક્ત છે, યથી શ્રવણમાં પ્રવૃત્ત હોય નહિ યવો જે મંદજિજ્ઞાસુ, તેને નિષ્કામકર્મ અને ઉપાસનામાં અધિકાર છે. અને જેની ભોગવિષે જ આસક્તિ છે, જ્ઞાનની ઇચ્છા નથી, યવો જે વહિર્મુક્ત છે, તેનો સકામકર્મવિષે પણ અધિકાર છે. યથી જ્ઞાનવાન્ને કર્મઉપાસનાનો અધિકાર નહિ. કર્મઉપાસનાનું જ્ઞાન વિરોધી છે.

૩૧૭. (જ્ઞાન જગતના વ્યવહારનું વિરોધી નથી, અને જગતનો વ્યવહાર જ્ઞાનનો વિરોધી નથી.)

અને કર્મઉપાસના પણ અંતઃકરણની શુદ્ધિ અને નિશ્ચલતાદ્વારા જ્ઞાનની ઉત્પત્તિના તો હેતુ છે, પરંતુ જ્ઞાનની ઉત્પત્તિથી અનંતર જો કર્મઉપાસના કરે, તો ઉત્પન્ન થયું જ્ઞાન નષ્ટ થઈ જશે. યથી જ્ઞાનના વિરોધી છે, રક્ષાના હેતુ નથી. કેમકે 'હું કર્ના છું, અને યજ્ઞાદિક મારે કર્તવ્ય છે, અને 'યજ્ઞાદિકોનું સ્વર્ગાદિ ફલ છે,' ય ભેદબુદ્ધિય કર્મ થાય છે. અને 'હું ઉપાસક છું, દેવ ઉપાસ્ય છે, ય ભેદબુદ્ધિય ઉપાસના થાય છે. ય વંને પ્રકારની શુદ્ધિ "સર્વ બ્રહ્મ છે" ય

બુદ્ધિને દૂર કરીને થાય છે. યથી કર્મઉપાસના જ્ઞાનનાં વિરોધી છે. યદ્યપિ જ્ઞાનવાન આત્માને અસંગ જાણે છે, તોપણ દેહનો મોજનાદિક વ્યવહાર, અથવા જનકાદિકોની પેઠે અધિક રાજ્યપાલનાદિક વ્યવહાર કરે છે. તે વ્યવહારનું જ્ઞાન વિરોધી નથી; અને વ્યવહાર જ્ઞાનનાં પણ વિરોધી નથી. કેમકે, જે આત્મસ્વરૂપ જ્ઞાનેઠ્ઠી અસંગ જાણ્યું છે, તે આત્માવિષે, જો વ્યવહાર પ્રતીત થાય, તો વ્યવહારનું વિરોધી જ્ઞાન, તથા જ્ઞાનનો વિરોધી વ્યવહાર થાય. તે વિદ્વાનને આત્માવિષે વ્યવહાર પ્રતીત થાય નહિ; કિન્તુ સંપૂર્ણ વ્યવહાર દેહાદિકોને આશ્રિત છે, અને આત્માવિષે વ્યવહારસહિત દેહાદિકોને સંબંધ છે નહિ, ય બુદ્ધિય સંપૂર્ણ વ્યવહાર (વિદ્વાન) કરે છે. ય જ કારણથી વિદ્વાનની પ્રવૃત્તિ પણ નિવૃત્તિ જ કહી છે. -

(દૃઢજ્ઞાનને આભાસરૂપ કર્મઉપાસના પણ વિરોધી નથી.)

૩૯૮. જેમ અન્ય વ્યવહાર જ્ઞાનનો વિરોધી નથી, તેમ કર્મઉપાસના પણ અન્ય વહિર્મુખપુરુષોને કરાવવા અર્થે આત્માને પ્રસંગ જાણીને, અને દેહ, શાકુ, અંતઃકરણને આશ્રિતા ક્રિયા જાણીને, જો કર્મઉપાસના કરે, તો જ્ઞાનના વિરોધી નથી. કેમકે વિદ્વાને જે આત્મા અસંગ જાણ્યો છે, તેને કર્તા જાણીને જો કર્મઉપાસના કરે, તો જ્ઞાનના વિરોધી થાય. વિદ્વાનનો તે આત્માના અસંગરૂપ દૃઢનિશ્ચય, કર્મઉપાસનાય દૂર થાય નહિ. યથી આભાસરૂપ કર્મ અને ઉપાસના, દૃઢજ્ઞાનના વિરોધી નથી. ય કારણથી જનકાદિકોય આભાસરૂપ કર્મ કન્યાં છે. વિદ્વાન, આત્માને અસંગ જાણીને, અન્ય વ્યવહારની પેઠે દેહાદિકના ધર્મ જાણીને જે શુભક્રિયા કરે, તે આભાસરૂપ કર્મ કહેવાય છે. તેનો જ્ઞાન સાથે વિરોધ નથી. અને આભાસરૂપ કર્મઉપાસનાનો જ્ઞાનથી જે વિરોધ વહ્યો છે, તે

આત્મામાં કર્તાબુદ્ધિપ જે કર્મઉપાસના કરે છે, તેનો વિરોધ કહ્યો છે; અને આભાસરૂપે (કરે તેનો) નહિ.

૩૨૯. (બોધની ઉત્પત્તિપૂર્વે કર્મઉપાસના કરવાં, પછી નહિ.)

તથાપિ આભાસરૂપ કર્મ અને આભાસરૂપ ઉપાસના પણ મંદબોધના વિરોધી છે. કેમકે જે સંશયાદિક-સહિત વાંધ છે, તે મંદબોધ કહેવાય છે. જેના અંતઃકરણમાં 'આત્મા અસંગ છે, અથવા (અસંગ) છે નહિ' યવો કદાચિત્ત સંશય થાય, તે પુરુષ જો ચારંચાર, 'આત્મા અસંગ છે, મારે 'કિંચિત્ત માત્ર પણ કર્તવ્ય નથી,' ય અર્થનું ચિન્તન કરે, ત્યારે તો સંશય દૂર થઈને દૃઢબોધ થઈ જાય. અને (તે મંદ-બોધવાન) જો કર્મઉપાસના કરશે તો મંદબોધ જે ઉત્પન્ન થયો છે તે દૂર થઈને 'હું કર્તા-મોક્તા છું' ય વિપરીત નિશ્ચય થઈ જશે. યથી મંદબોધની ઉત્પત્તિથી પૂર્વે જ કર્મઉપાસના કરે, અને અનંતર નહિ. જો મંદબોધવાન કર્મઉપાસના કરશે, તો ઉત્પન્ન થયેલો બોધ નષ્ટ થઈ જશે.

દૃષ્ટાન્તઃ-જેમ પક્ષી પોતાનાં અંડો(ઈંડાં)ને પક્ષની ઉત્પત્તિથી પૂર્વે સેવન કરે છે, અને પક્ષની ઉત્પત્તિથી અનંતર નહિ. જો પક્ષની ઉત્પત્તિથી અનંતર પણ અંડોનું સેવન કરે તો ઘાલકપક્ષીના તે અંડોના જલેકરી પક્ષ ગલી જાય: તેમ જ્ઞાનની ઉત્પત્તિથી પૂર્વે જ કર્મઉપાસનાનું સેવન કરે, અને જ્ઞાનની ઉત્પત્તિથી અનંતર નહિ. જો જ્ઞાનની ઉત્પત્તિથી અનંતર પણ કર્મઉપાસનાનું સેવન કરે તો ઘાલકપક્ષીની (પાંચની) પેઠે, મંદબોધના જાણ થઈ જાય. અને ઘૃહપક્ષીની જેમ અંડોના સંબંધથી હાનિ થાય નહિ, તેમ દૃઢબોધનો તો હાનિ થાય નહિ. અને ઘૃહપક્ષીની પેઠે દૃઢબોધને કર્મઉપાસનાપર કરી ઉપયોગ પણ નથી. ય રીતિપ જ્ઞાનવાગ્ને મોક્ષના નિમિત્ત કિંચિત્તમાત્ર

પણ કર્તવ્ય નથી. ૫ તૃતીય પ્રશ્નનું ઉત્તર કહ્યું.

૪૦૦. આચાર્યે શિષ્યને જે ઉત્તર કહ્યાં, તે ઘેદને અનુસાર કહ્યાં, ૫થી યથાર્થ છે, ૫ ઘાતાં કહે છે.

દુહો.

શિષ્ય ! કહ્યો જે મેં તુને સર્વ ઘેદનો સાર,

અનાયાસ તે જાણતાં, સંસ્કૃતિ જાય અપાર.

૧૧.

ટીકા:-હે શિષ્ય ! મે તું ને જે કહ્યો તે સર્વ ઘેદનો સાર છે, ૫થી ૫વિષે વિશ્વાસ કર. અને ૫ના જાણવાથી 'અનાયાસ' નામ લેવું વિના અપાર જે 'સંસ્કૃતિ' નામ જન્મમરણરૂપ સંસાર તેનો નાશ થાય છે.

૪૦૧. (આ અંકમાં હિન્દુસ્થાની ભાષાના સંપ્રદાયવિષે, -ગુરુનો લઘુ. લઘુનો ગુરુ ગણવા લખવા; 'ક્ષ' ને સ્થલે 'છ,' 'શ' ને સ્થલે 'સ' આદિ લખાય છે તે વિષે થોડી પંક્તિઓ છે. તે અત્ર આ ગુર્જર ભાષામાં લાગુ નથી પડતી તેથી લખી નથી.)

૪૦૨. (પૂર્વોક્ત અર્થનો સંગ્રહ.)

'જગતનો કર્તા ઈશ્વર છે, તે તુંથી ભિન્ન નહિ, અને સત્, ચિત્, આનંદરૂપ બ્રહ્મ તું છું' ૫ આચાર્યે કહ્યું, તે જ છુપાથી પુનઃ કહે છે.

૫વિત.

દીનતાને ત્યાગી નર, પોતાનું સ્વરૂપ દેહ,

તું તો શુદ્ધબ્રહ્મ અજ દૃશ્યનો પ્રકાશી છું;

પોતાના અજ્ઞાનથક્કી, સર્વ જગત્ તું જ રચે,

સર્વનો સંહાર કરે, પોતે અધિનાશી છું;

મિથ્યા પ્રપંચ દેહી, દુઃખ રહે આણું મન,

દેવોકેરો દેવ તું તો, સર્વ સુખરાશિ છે;

જીવ જગત્ ઈશ થઈ માયાવ પ્રભાસું તું જ,

જેમ રજ્જુ સર્પ, શીપરૂપ થી પ્રભાસી છે.

૧૨.

અર્થ સ્પષ્ટ.

૪૦૩. (જ્ઞાનનાં સાધન.) વચિત.

રાગ વાલી, લોભ ટાલી, દ્વેષ મારી, માર વારી,
 વારંવાર મૃગવારિ પારાવાર પેસિયે;
 જ્ઞાનમાનુ આણિ, તમતમ ટાલી માગત્યાગે,
 જીવ-શિવ-ભેદ છેદી, વેદન સુલેસિયે;
 વેદનો વિચાર સાર, પોતાને સંમારી ચાર;
 ટાલી દામપાશ, આશ ઈશની ન દેસિયે;
 નિશ્ચલ ! તું ચલ ન, અચલ, ચલદલ છલ,
 નમ નીલ તલમલ, તેથી ન પ્રિશેસિયે.

૧૩.

ટીકા:-જ્ઞાનનાં સાધન કહે છે. હે શિષ્ય ! 'રાગ' (નામ) પદાર્થમાં જે દૃઢઆસક્તિ છે તેને વાલીને, લોભને 'ટાલીને' નામ નાશ કરીને, દ્વેષને મારીને, 'માર' નામ કામને 'વારી' નામ દૂર કરી દે. રાગ, લોભ, દ્વેષ, કામના પ્રહણથી, સર્વ રાજસી તામસી વૃત્તિનું પ્રહણ છે; યથી સર્વ રાજસી તામસી વૃત્તિનો નાશ કર, એ અર્થ સિદ્ધ થયો. રાજસીવૃત્તિ અને તામસીવૃત્તિ જ્ઞાનની વિરોધિની છે. તેઓના નાશ વિના જ્ઞાન થાય નહિ, યથી તેઓની નિવૃત્તિ જિજ્ઞાસુને અપેક્ષિતા છે. વિવેક, ધૈરાગ્ય, શમાદિ પદ્સંપત્તિ, મુમુક્ષુતા; એ ચારે જે જ્ઞાનનાં સાધન છે, તેઓમાં વિવેક પ્રધાન છે. કેમકે, વિવેકથી ધૈરાગ્યાદિ ઉત્પન્ન થાય છે યથી

વિવેકનો ઉપદેશ આચાર્ય કરે છે.

હે શિષ્ય ! પારાવાર જે સંસાર છે, તેને વારંવાર 'મૃગ-વારિ' નામ મૃગતૃષ્ણાના જલસમાન મિથ્યા જાણ. [પારાવાર નામ સંસારનું છે અને અપારાવાર નામ આત્માનું છે.] પારા-વાર મિથ્યા છે એમ કહેવાથી અપારાવાર મિથ્યા નહિ,

કિન્તુ સત્ય છે, એ ઘાત્તાં અર્થથી કહી. જેમ વાજીગર(માયાવી)નો તમાશો (ત્રેલ) દેખતા પુત્રને પિતા કહે કે 'હિ પુત્ર ! 'આ આમ્રવૃક્ષને આદિર્લાને જે વાજીગરે વનાવ્યા છે, તે 'મિથ્યા છે.' એ કહેવાયાથી વાજીગરને મિથ્યા નથી જાણતો, પણ સત્ય જાણે છે. તેમ જગત્ને મિથ્યા કહ્યાથી આત્માને સત્ય જાણી લેશે, એ અભિપ્રાયથી આચાર્યે પારાવાર મિથ્યા કહ્યાં. એ રીતિએ જગત્ મિથ્યા છે, અને આત્મા સત્ય છે. એ વિવેકનો ઉપદેશ કન્યો. તે વિવેકે અન્યસાધન પોતે જ ઉત્પન્ન થાય છે. યથી વિવેકના ઉપદેયથી સર્વ સાધનનો ઉપદેશ અર્થેકરી કહ્યો. જ્ઞાનનાં બહિરંગ સાધન કહ્યાં. અંતરંગ સાધન, ધવળ કહે છે:—

હે શિષ્ય ! જ્ઞાનરૂપી જે માનુ છે, તેને 'આણી' નામ શ્રવણથી સંપાદન કરીને, 'તમ' નામ અજ્ઞાનરૂપી જે 'તમ' [અંધકાર] છે તેને 'ટાલી' નાશ કરી દે. [તમ નામ અંધારાનું અને અજ્ઞાનનું છે.]

[અંધારું ઉપમાન છે અને અજ્ઞાન ઉપમેય છે. પ્રથમ જે 'તમ' શબ્દ છે તે ઉપમેયનો વાચક છે અને ધીજો ('તમ' શબ્દ) ઉપમાનનો વાચક છે.

દ્વો.

જેને ઉપમા આપિયે, તે ઉપમેય જ જાણ;

જેની ઉપમા આપિયે, તે કહિયે ઉપમાન.]

૪૦૪. (મહાવાક્યને અનુસાર જ્ઞાનનું સ્વરૂપ.)

જ્ઞાનનું સ્વરૂપ અન્યશાસ્ત્રમાં નાનાપ્રકારનું અંગીકાર કન્યું છે. યથી મહાવાક્યને અનુસાર જ્ઞાનનું સ્વરૂપ કહે છે. હે શિષ્ય ! જીવ અને શ્વરવિપે અવિદ્યા અને માયાભાગને ત્યાગીને, તેઓનો જે ભેદ પ્રતીત થાય છે તેને 'છેદી' નામ દૂર

૬ તરંગ.) મોક્ષનું સાધન જ્ઞાન. મહાવાક્યાનુસાર જ્ઞાનનું સ્વરૂપ. ૧૧૧

કરી, અને જીવ-ઈશ્વરમાં જે 'વેદન' નામ ચેતન ભાગ છે તેને ભેદરહિત જાણ.

૫મ કહેવાથી આ વાત્તા કહી:-મહાવાક્યમાં, ભાગત્યાગ-લક્ષણાથી, જીવઈશ્વરની એકતા જાણ. (કવિતના વીજા પાદનો અર્થ ૫ પ્રમાણે છે.) [તૃતીયપાદનો અર્થ સ્પષ્ટ છે.]

[પૂર્વે કહેલા અર્થને સંક્ષેપમાં ચોથા પાદેકરી કહું છે.]

હે શિષ્ય ! 'ચલ' નામ વિનાશી જે દેહાદિક સંઘાત, તે તું નહિ; કિન્તુ 'અચલ' નામ અવિનાશી, જે બ્રહ્મ, તે તું છું. અને 'ચલદલ' નામ (પીપ્પલાના) વૃક્ષરૂપ જે સંસાર તે 'હલ' નામ મિથ્યા છે, જેમ નમવિષે નીલતા અને 'તલમલ' નામ વટાહરૂપતા (વટાઈજેવું ગોલપણું) છે નહિ, કિન્તુ મિથ્યા પ્રતીત થાય છે, તેમ સંસાર પણ આત્માવિષે છે નહિ, મિથ્યા પ્રતીત થાય છે. વૃક્ષરૂપ કરીને સંસાર શ્રુતિસ્મૃતિમાં કહ્યો છે, યથી વૃક્ષના વાચક 'ચલદલ' શબ્દનો સંસારમાં પ્રયોગ કન્યો છે. ૧૩

૧૧૪. સસારને વૃક્ષરૂપે શાસ્ત્રોમાં વર્ણ્યો છે:-

સર્વથી ઉત્કૃષ્ટ હોવાથી ઉચ્ચ એવું માયાવિશિષ્ટ પરબ્રહ્મ છે મૂલ જેનું, અને મહત્ત્વ છે અતુર જેનું, અને અહકાર છે સ્વદ જેનો, અને પંચતન્માત્રા છે શાસ્ત્રા જેની, એવો સસારરૂપ વૃક્ષ છે.

પૂર્વોક્ત મહત્ત્વાદિક સર્વ, કાર્યતાદ કરી નિરુષ્ટ હોવાથી તેની શાસ્ત્રા નીચી કહેવાય છે. અને વેદઆદિ જે શાસ્ત્ર છે એ પ્રવચનરૂપ વાક્યોદ એના અનિત્ય તાદિ દોષોને ઢાંકે છે, યથી વેદશાસ્ત્ર જેનાં પર્ણ (પાંદડાં) છે, અને ચાર પુરુષાર્થ-રૂપ જેનો રસ છે, અને ધર્મઅધર્મરૂપ જેનાં પુષ્પ છે, અને જન્મમરણ આદિ દુઃખ જેનું ફલ છે, અને અજીવરૂપ પક્ષી જેના મોક્ષા છે, અને વૈરાગ્યેકરી તીક્ષ્ણ યથેલ જ્ઞાનરૂપ કુઠાર (કુવાડો) જેનો છેદક છે, યથી એ સસારરૂપ વૃક્ષ છે. હૃત્યાદિ અનેક પ્રકારે સંસારરૂપ વૃક્ષનું શાસ્ત્રમાં વર્ણન છે. પં. પી. પુ.

૪૦૬. મોક્ષનું સાધન જ્ઞાન છે, એ અર્થને અન્ય પ્રકારે કહે છે.

કવિત.

બંધ મોક્ષ મોહ, દેહવાન, જ્ઞાનવાન, જાણ,
રાગ ને વિરાગ એ બે ધ્વજા ફરકે જ છે;
વિપયમાં સત્યભ્રમ ભ્રમમતિ વાત, તાત !
હલાલે છે પ્રાપ્ત રાત ઘડી ન ઠરે જ છે;
સાક્ષ્ય સાક્ષી પૂતલી અનુજલીને ડજલી બે,
દેહી રાગી ત્યાગી જન લલચાઈ જાય છે;
ચંચલ અચલ ભ્રમ વ્રહ્મ નિજરૂપ લક્ષી,
દુઃખકૂપ આનંદસ્વરૂપમાં સમાય છે. ૧૪.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! ‘દેહવાન’ નામ દેહઅભિમાની અજ્ઞાની અને જ્ઞાનવાન, બંધ અને મોક્ષનાં ‘મોહ’ નામ ધામ છે. અજ્ઞાની તો બંધનું ધામ છે, અને જ્ઞાની મોક્ષનું ધામ છે. રાગ અને વિરાગ તે(ધામો)ની ધ્વજા છે જેમ ધ્વજા રાજાના નગરનું ચિહ્ન હોય છે, તેમ રાગ અને વિરાગ તેઓનાં ચિહ્ન છે. અજ્ઞાનીનું રાગ ચિહ્ન છે અને જ્ઞાનીનું વિરાગ ચિહ્ન છે. અજ્ઞાની-વિષે પણ વિરાગ હોય છે એથી જ્ઞાનીનો અજ્ઞાનીથી વિલક્ષણ વિરાગ કહે છે. હે તાત ! વિષય જે શબ્દાદિક છે તેઓવિષે ‘સત્યભ્રમ’ નામ સત્યત્વની ભ્રાન્તિ, અને ‘ભ્રમમતિ’ નામ રજ્જુસર્પની પેઠે વિષય ભ્રમરૂપ છે, એ જે મતિ [નિશ્ચય] તે ઘાતની (પવનની) પેઠે રાગ અને વિરાગ (રૂપો ધ્વજાઓને) હલાલે છે. જેમ ઘાયુ ધ્વજાની ચંચલતા કરે છે તેમ વિષયમાં સત્યવુદ્ધિ અને ભ્રમવુદ્ધિ રાગ અને વિરાગને ચંચલ કરે છે; શિથિલ થવા દેતા નથી. વિષયમાં સત્યવુદ્ધિપકરી રાગની શિથિલતા દૂર થાય છે, અને વિષયમાં ભ્રમવુદ્ધિપકરી વિરાગની શિથિલતા દૂર થાય છે.

૪૦૬. વિષયો અસત્ય છે એથી તેઓમાં સત્યવુદ્ધિ ભ્રાન્તિ-રૂપા છે, એ યાત્નાને જણાવવાને કવિતમાં 'સત્ય ભ્રમ' કહ્યો, સત્ય વુદ્ધિ નહિ કહી. ભ્રાન્તિજ્ઞાન અને ભ્રાન્તિજ્ઞાનનો વિષય જે મિથ્યા વસ્તુ તે વંને ભ્રમ કહેવાય છે. એ કહ્યાથી અજ્ઞાનીના વિરાગથી જ્ઞાનીના વિરાગનો ભેદ કહ્યો. કેમકે, જે અજ્ઞાનીનો વિરાગ છે તે વિષયમાં મિથ્યાવુદ્ધિએકરી ઉત્પન્ન નથી થયો, એથી મંદ છે. વિષય મિથ્યા છે, એ વુદ્ધિ અજ્ઞાનીને હોય નહિ. યદ્યપિ શાસ્ત્રયુક્તિએ અજ્ઞાની પણ મિથ્યા જાણે છે, તથાપિ વિષય મિથ્યા છે, એ અપરોક્ષમતિ જ્ઞાનવાન્ને જ હોય છે, અજ્ઞાનીને નહિ. એથી અજ્ઞાનીને વિષયમાં પરોક્ષ જે મિથ્યાવુદ્ધિ, તેણેકરી અપરોક્ષસત્યભ્રાન્તિ દૂર થાય નહિ. એ રીતિએ અજ્ઞાનીને વિષયમાં જ્યારે વિરાગ થાય છે, તે કાલમાં પરોક્ષમિથ્યાવુદ્ધિ છે ધરી, પરંતુ પરોક્ષમિથ્યાવુદ્ધિથી પ્રવલા અપરોક્ષસત્યવુદ્ધિ છે, એથી અજ્ઞાનીની પરોક્ષમિથ્યા-વુદ્ધિ વિરાગનો હેતુ નથી, કિન્તુ પ્રવલા જે સત્યવુદ્ધિ તેણે-કરી વિષયમાં રાગ જ થાય છે. અને જો વિરાગ થાય તોપણ (તે) મિથ્યાવુદ્ધિએ નહિ, કિન્તુ વિષયમાં દોષદષ્ટિએકરી થાય છે. અને જ્ઞાનવાન્ સર્વપ્રવંચને અપરોક્ષરૂપેકરીને મિથ્યા જાણે છે. તે અપરોક્ષમિથ્યાવુદ્ધિએ, અપરોક્ષસત્યવુદ્ધિ દૂર થાય છે. એથી રાગનો હેતુ વિષયમાં સત્યવુદ્ધિ તો જ્ઞાનીને છે નહિ. વિરાગનો હેતુ વિષયમાં મિથ્યાવુદ્ધિ જ્ઞાનવાન્ને છે. જો જ્ઞાનીને વિષયમાં સત્યવુદ્ધિ પુનઃ થાય, તો રાગ પણ પુનઃ થાય, અને વિરાગ દૂર થાય. તે અપરોક્ષરૂપે મિથ્યા જાણેલા પદાર્થ-માં પુનઃ સત્યવુદ્ધિ થાય નહિ. જેમ અપરોક્ષરૂપે મિથ્યા જાણ્યો જે રજ્જુમાં સર્પ, તેનાવિષે સત્યવુદ્ધિ પુનઃ થાય નહિ; તેમ જ્ઞાનીને પુનઃ સત્યવુદ્ધિ થાય નહિ. એ રીતિએ રાગની

આદિ વેય નહિ સંમયે, મહાવાક્યમાં તાત !

ભાગત્યાગથી સ્વ નિજ બ્રહ્મરૂપ દેસાત.

૧૬.

અર્થ સ્પષ્ટ.

૪૦૮. શિષ્ય ઉવાચ.

અર્થશંકર ઇંદ.

અવ લક્ષણા પ્રમુ ! કહે કોને યહ યો સમજાત્રી,

ઘઠી ભેદ તેના ઘ્રણ, તેનાં લક્ષણાં દરશાઘી.

૧૭.

ટીકા:-સામાન્યજ્ઞાનથી અનંતર વિશેષનું જ્ઞાન થાય છે. જેમ વ્રાહ્મણનું સામાન્ય જ્ઞાન થયાથી અનંતર સારસ્વતઆદિ વિશેષનું જ્ઞાન થાય છે. તેમ લક્ષણાસામાન્યનું જ્ઞાન થાય તો જહતીઆદિક વિશેષરૂપોનું જ્ઞાન થાય. લક્ષણાનું સામાન્યરૂપ જાણ્યા વિના જહતીઆદિક વિશેષરૂપોનું જ્ઞાન થાય નહિ. ય અભિપ્રાયથી શિષ્ય કહે છે:-હે પ્રમો ! લક્ષણા કોને કહે છે, ય હું નથી જાણતો, યથી લક્ષણાનું સામાન્યરૂપ દેસાડી, તેથી અનંતર જે જહતી આદિક લક્ષણાના ઘ્રણ ભેદ નામ વિશેષ(રૂપ) છે તેનાં જૂદાં જૂદાં લક્ષણ દેલાડો.

૪૦૯. શુરુવાક્ય.

શંકર ઇંદ.

થુતિ ચિત્ત નિજ યકાત્ર કરી, શિષ્ય શુણ મમ વાણી,

જ્યમ લક્ષણાને ભેદ તેના, લેડ સુરીતે જાણી,

શુણ, વૃત્તિ છે દ્વિવિધ પદની, શક્તિ તેમાં યક,

ત્યાં લક્ષણા ઘઠી જાણ ઘીજી, શુણ તે સવિવેક.

૧૮.

ટીકા:-પદનો જે અર્થસાયે સંબંધ તે વૃત્તિ^૧ કહેવાય છે

૧૧૫. 'વૃત્તિ' શબ્દના અનેક અર્થ છે:-વર્તન, સિધ્ધિ, વિકરણ, જીવિકા, નાટકરચનાના ભેદમાં રસાનુમાર-કૈશિકી, સાત્ત્વતી, માત્લી, આરમટી નામે વૃત્તિમો હોય છે. વેદાન્તશાસ્ત્રમાં મસ્તિશ્વયહારના દેહુ જામત્સ્વપ્નમાં અન્ત. કરણના પરિ. નામ અને સુપુસિમાં અવિદ્યાના પરિણામને વૃત્તિ કહે છે. પદનો અને અર્થનો

તે વૃત્તિ એ પ્રકારની છે. તે એ પ્રકારમાં એક શક્તિવૃત્તિ છે.

પરસ્પર સબધ તેને વૃત્તિ કહે છે. એ અન્ત્યર્થમાં 'વૃત્તિ' શબ્દનો અર્થ નિયોગ છે. એ વિષય નિશ્ચલતાસંગી પોતે 'વૃત્તિપ્રમાણ' પ્રથમાં લખે છે કે —

'વૃત્તિ એ પ્રકારની છે'—(૧) એક 'શક્તિ' રૂપા વૃત્તિ છે, (૨) 'લક્ષણા' રૂપા વૃત્તિ છે.

(શક્તિરૂપવૃત્તિ.) મીમાંસકના મતમાં 'શક્તિ' નામ કોઈ ભિન્ન પદાર્થ છે. વ્યાકરણના મતમાં અને પાતજલ મતમાં વાચ્યવાચકભાવનું મૂલ જે પદ અર્થનો તાદાત્મ્યસબધ તે જ 'શક્તિ' છે અને વિચારસાગરમાં યોગ્યતારૂપ 'શક્તિ' વ્યાકરણના મતે લખી છે, તે ભૂષણનારનું મત છે. વ્યાકરણના મંજૂપા પ્રથમાં યોગભાષ્યની રીતિએ વાચ્યવાચકભાવનું મૂલ તાદાત્મ્યસબધ જ 'શક્તિ' કહી છે. અને અદ્વૈતસિદ્ધાન્તમાં પોતાનાં સર્વ કાર્ય કરવાનું સામર્થ્ય જ 'શક્તિ' છે જેમ તત્તુમાં પટ કરવાના સામર્થ્યરૂપ 'શક્તિ' છે, વહ્નિમાં દાહ કરવાનું જ સામર્થ્ય તે 'શક્તિ' છે. તેમ પદોમાં પોતાના અર્થના જ્ઞાનનું સામર્થ્ય જ 'શક્તિ' છે. પરંતુ આટલો ભેદ છે —વહ્નિઆદિક પદાર્થોમાં જે સામર્થ્યરૂપ શક્તિ તેના જ્ઞાનની અપેક્ષા નથી.—શક્તિ જ્ઞાતા હોય અથવા અજ્ઞાતા હોય—વને સ્થાનમાં વહ્નિ-આદિકેકરી દાહાદિક કાર્ય થાય છે. અને પદની શક્તિનું જ્ઞાન હોય ત્યારે તે અર્થની સ્મૃતિરૂપ કાર્ય થાય છે, (પદની) શક્તિનું જ્ઞાન હોય નહિ ત્યારે અર્થની સ્મૃતિરૂપ કાર્ય થાય નહિ. એથી પદના સામર્થ્યરૂપ શક્તિ જ્ઞાતા હોય ત્યારે પદાર્થની સ્મૃતિરૂપ કાર્ય થાય છે —++++ જે પદનું જ્ઞાન જે અર્થની સ્મૃતિમાં સમર્થ હોય તે પદની તે અર્થમાં 'શક્તિ' કહેવાય છે.

'એ રીતિએ શક્તિસહિત પદજ્ઞાનથી પદાર્થની સ્મૃતિ થાય છે જેટલા પદાર્થોની સ્મૃતિ થાય એટલા પદાર્થોના સબધનું જ્ઞાન અથવા સબધસહિત સરૂપપદાર્થોનું જ્ઞાન 'વાક્યાર્થજ્ઞાન' કહેવાય છે તેને જ 'શાબ્દીપ્રમા' કહે છે

(લક્ષણારૂપવૃત્તિ)

'જે અર્થમાં જે પદની વૃત્તિ હોય તે અર્થની તે પદેકરી પ્રતીતિ થાય છે 'શક્તિ' અને 'લક્ષણા' ભેદથી તે વૃત્તિ એ પ્રકારની છે. હૃદયની ઇચ્છા અથવા વાચ્યવાચકભાવસબધમૂલ તાદાત્મ્ય અથવા પદાર્થબોધનું સામર્થ્યને 'શક્તિ' કહે છે જે અર્થમાં પદની શક્તિ હોય તે અર્થ પદનો શક્ય (અર્થ) કહેવાય છે. શક્યસબધને 'લક્ષણા' કહે છે. જેમ 'ગગા' પદની શક્તિ પ્રવાહમાં છે, એથી ગગાપદનો શક્યઅર્થ પ્રવાહ છે તે સાથે સયોગસબધ ધારીને છે. એ રીતિએ 'પદનો અર્થસાથે પરપરા જે સબધ તે 'લક્ષણા' છે.' જેમ ગગાપદનો નીરસાથે

અને અન્ય લક્ષણાવૃત્તિ છે. તેને 'સવિવેક' નામ વિવેકસહિત ('શુણ' નામ) અને અર્થ લક્ષણસહિત સાંભળ.

૪૧૦ અથ શક્તિલક્ષણ.

(ન્યાયશાસ્ત્ર પ્રમાણે.)

હો.

જે પદથી જે અર્થની, શુણતાં ધાય પ્રતીતિ.

एषी इच्छा ईशानी, शक्ति न्यायनी रीति. १९.

ટીકા:-જે પદથી નામ 'ઘટ' પદથી, જે અર્થની નામ 'કલશ' અર્થની, સાંભળતાં જ 'પ્રતીતિ' નામ જ્ઞાન સર્વ પુરુષને થાઓ, ઈવી જે ઈશ્વરની ઇચ્છા, તેને ન્યાયશાસ્ત્રમાં શક્તિ કહે છે.

૪૧૧. અથ સ્વરીતિષ્ણ શક્તિલક્ષણ.

અર્થશકર ઉંદ

સામર્થ્ય પદની શક્તિ જાણો, વેદમત અનુસાર;

તે વહ્નિમાં જ્યમ વાહની છે શક્તિ ત્યમ નિર્ધાર ૨૦.

પરપરાસંબંધ છે તે જ, તીરમાં ગંગાપદની લક્ષણા કહેવાય છે, કારણ કે સાક્ષાત્ સંબંધવાળાસાથે જે સંબંધ તે 'પરંપરાસંબંધ' કહેવાય છે. ગંગાપદનો શક્તિરૂપ સમઘ પ્રવાહસાથે છે તે સાથે સયોગ તીરનો છે, ઈથી સ્વશક્ત્યસયોગરૂપ ગંગાપદનો તીર-સાથે પરપરાસંબંધ છે. તે જ લક્ષણા કહેવાય છે. ઈથી આ સિદ્ધ થયું —જે અર્થ સાથે જે પદનો શક્તિરૂપ સાક્ષાત્સંબંધ હોય તે અર્થ તે પદનો 'શક્ય' (અર્થ) કહેવાય છે. જે અર્થસાથે જે પદના શક્યનો સંબંધ હોય તે અર્થ તે પદનો 'લક્ષ્ય' (અર્થ) કહેવાય છે. જેમ ગંગાપદનો શક્ય જે પ્રવાહ તેનો તીરરૂપ અર્થસાથે સયો-ગસંબંધ છે ઈથી ગંગાપદનો શક્ય (અર્થ) પ્રવાહ છે, અને લક્ષ્ય (અર્થ) તીર છે.

૫ રીતિષ્ણ વૃત્તિ દ્વિવિધા છે. જે પદની વૃત્તિ જે પુરુષને અજ્ઞાતા હોય તે પદની તે પુરુષને સાક્ષાત્કાર થયે વળ પદાર્થની સ્મૃતિ અને શબ્દબોધ થાય નહિ. ઈથી 'શક્તિ લક્ષણા રૂપ વૃત્તિનુ જ્ઞાન પદાર્થની સ્મૃતિ અને શબ્દબોધનો હેતુ છે.' + +

પદના શક્ય(અર્થ) સાથે સંબંધને 'લક્ષણા' કહે છે. ઈથી પદના પરંપરાસંબંધ રૂપ લક્ષણા છે. કેમકે પદનો સાક્ષાત્ સમઘ શક્ય(અર્થ)સાથે થાય છે. તે શક્ય—(અર્થ)નો સંબંધ લક્ષ્ય (અર્થ) સાથે થાય છે. ઈથી શક્યદ્વારા પદનો સંબંધ હોવાથી પરંપરાસંબંધરૂપ 'લક્ષણાવૃત્તિ' છે.

ટીકા:—‘ઘટ’પદના શ્રોતાને, કલશરૂપ અર્થનું જ્ઞાન કરવાનું જે ઘટપદવિપે સામર્થ્ય, તે જ ઘટપદમાં શક્તિ છે. તેમ ‘પટ’પદના શ્રોતાને, વસ્ત્રરૂપ અર્થનું જ્ઞાન કરવાનું જે પટપદવિપે સામર્થ્ય તે જ પટપદમાં શક્તિવૃત્તિ છે. એમ સર્વ પદનાં જાણી લેવું. દૃષ્ટાન્ત:—જેમ વહિમાં પોતાસાથે મલતાં જ વસ્તુને દાહ કરવાની સામર્થ્યરૂપ શક્તિ છે, તેમ શ્રોતાના કર્ણને મલતાં જ વસ્તુનું જ્ઞાન કરવાનું જે પદવિપે સામર્થ્ય, તે શક્તિ કહેવાય છે. [સામર્થ્ય નામ સમર્થપણાનું છે. જેને સમર્થાઈ કહે છે, અને વલ પળ કહે છે, અને જોર પળ કહે છે.] જેમ અગ્નિમાં દાહની શક્તિ છે, તેમ જલવિપે મીનું કરવાનું, તૃપા દૂર કરવાનું, પિણ્ડ વાંધવાનું, જે સામર્થ્ય છે, તે શક્તિ છે. એ પ્રકારે સર્વ પદાર્થોવિપે પોતપોતાનું કાર્ય કરવાનું સામર્થ્ય છે, તે જ શક્તિ છે, એ વેદનાં સિદ્ધાન્ત છે. તેને ‘નિર્ધાર’ નિશ્ચય કર. અને ન્યાયની રીતિ ત્યાગવાને યોગ્ય છે.

૪૧૨. શિષ્ય ઉવાચ.

શંકર ઉદ્.

નનુ વહિમાં નહિ શક્તિ ભાસે, વહિવિણ વિર્જી કોઈ,

છે હેતુતા જે દાહની તે વહિમાંહી જ સોઈ.

ઇમ પદોમાં વર્ણો વિના કોઈ શક્તિ ભાસે નાહિ.

એ હેતુથી જે ઈશઙ્છા શક્તિ તે મતિમાંહિ.

૨૧.

ટીકા:—નનુ [એ શબ્દ સંદેહનો ઘાચક છે] વહિ(અગ્નિ)માં તેના સ્વરૂપથી ઝુદી શક્તિ ભાસે નામ પ્રતીતા થાય નહિ. અને પૂર્વે કહ્યો દાહનો હેતુ જે વહિમાં સામર્થ્ય, તે જ વહિમાં શક્તિ છે, તે બને નહિ. કેમકે દાહની હેતુતા નામ જનકતા-કારણું-કેવલ વહિમાં જ છે. અપ્રસિદ્ધસામર્થ્ય

વહ્નિમાં માર્નાને તેનાવિષે હેતુતા માનવાનું, અને પ્રસિદ્ધ વહ્નિમાં હેતુતા ત્યાગવાનું કદં પ્રયોજન નથી. જેમ દૃષ્ટાન્તમાં (વહ્નિમાં) શક્તિ નથી સંભવતી, 'ઈમ' નામ ય રીતિય, પદો-નેવિષે પણ ઘર્ણ(અક્ષર)નો સમુદાય જે પદોનું સ્વરૂપ તેથી જુદી શક્તિ માસે નહિ. અને તેનું પ્રયોજન પણ નથી. ય હેતુથી ઈશ્વરની ઇચ્છારૂપ જે ન્યાયની રીતિય શક્તિ, તે જ મારી મતિમાં પણ માસે છે.

૪૧૩. ગુરુવાચ. શંકર ઇંદ.

પ્રતિવંધ હોતાં. વહ્નિથી નહિ દાહ ઉપજે, અંગ !

ધરતાં જ ઉત્તેજક સમીપ ફરી દહે વહ્નિ સ્વસંગ;

વહ્નિમાં હોય હેતુતા તો દાહ થાય સહુકાલ.

વહ્નિસતે જે જાય ઉપજે, હેતુશક્તિ સ ઘાલ ! ૨૨.

ટીકા:-હે અંગ ! (નામ) પ્રિય ! પ્રતિવંધ હોય તો અગ્નિથી દાહ થાય નહિ. અને ઉત્તેજક સમીપ ધરે ત્યારે 'સ્વસંગ' નામ અગ્નિસાથે મળ્યો જે પદાર્થ, તેનો દાહ પ્રતિવંધ સતે પણ થાય છે. જો શક્તિ વિના કેવલ અગ્નિને દાહની હેતુતા હોય તો, સર્થકાલે નામ ઉત્તેજકસહિત પ્રતિવંધકાલે, અને પ્રતિવંધરહિત કાલની પેઠે ઉત્તેજકરહિત પ્રતિવંધકાલમાં પણ દાહ થવો જોઈયે. કેમકે દાહનો હેતુ કેવલ અગ્નિ (તારા મત પ્રમાણે હોય તો તે તો) તે કાલમાં પણ છે. અને સ્વમતમાં તો ય દોષ નથી. કેમકે, સ્વમતમાં અગ્નિની શક્તિ, અથવા શક્તિસહિત અગ્નિ દાહનો હેતુ છે, કેવલ અગ્નિ નથી. જ્યાં પ્રતિવંધ છે ત્યાં યદ્યપિ પ્રતિવંધેકરી અગ્નિનો તો નાશ યા તિરોધાન (ઢંકાવું) ન પણ થાય, તથાપિ અગ્નિની શક્તિનો નાશ યા તિરોધાન થાય છે. યથી દાહનો હેતુ શક્તિનો

અથવા શક્તિસહિત અગ્નિનો અભાવ હોવાથી દાહ થાય નહિ. અને જે સ્થાનમાં પ્રતિબંધના સમીપ ઉત્તેજક આવ્યું છે, ત્યાં પ્રતિબંધે તો અગ્નિની શક્તિનો નાશ વા તિરોધાન કરી દીધું, પરંતુ ઉત્તેજકે પુનઃ શક્તિની ઉત્પત્તિ વા પ્રાદુર્ભાવિ કન્યો છે, યથી પ્રતિબંધના સતે પળ ઉત્તેજકના માહાત્મ્યથી દાહનો હેતુ શક્તિ વા શક્તિસહિત અગ્નિના હોવાથી દાહ થાય છે. (હંદના) ચતુર્થ પાદનો અક્ષરાર્થ આ છે. હે વાલ ! [નામ અજ્ઞાત-તત્ત્વ] જે પ્રતિબંધથી 'જાય' નામ નાશને પ્રાપ્ત થાય, અને ઉત્તેજકથી ઉપજે 'સ' નામ તે શક્તિ દાહનો હેતુ છે. [કાર્યનું જે વિરોધિ તે પ્રતિબંધ વિંવા પ્રતિબંધક કહેવાય છે. અને પ્રતિબંધક સતે કાર્યનું સાધક (તે) ઉત્તેજક કહેવાય છે.]

અગ્નિના સ્થાન (સંબંધમાં) પ્રતિબંધક અને ઉત્તેજક મણિ, મંત્ર, અને ઔપધ છે. જે મણિ, વા મંત્ર, વા ઔપધના સન્નિધાનેકરી દાહ થાય નહિ, તે પ્રતિબંધક; અને જે મણિ, મંત્ર, ઔપધના સન્નિધાને, પ્રતિબંધ સતે પળ, દાહ થાય, તે ઉત્તેજક છે.

૪૧૪. અર્ધશંકર છંદ.

શિષ્ય ! ય રીતિ સહુ વસ્તુમાં તું શક્તિ લે જ પિછાની;
શક્તિ વિના કાંઈ કાર્ય થાય ન ય જ નિશ્ચય માની. ૨૩.

ટીકા:-હે શિષ્ય ! વહ્નિની પેઠે જલ આદિક સર્વ પદાર્થો-વિષે તું શક્તિ ઓઢ્ઢાલી લે. શક્તિ વિના કોઈ હેતુએ કોઈ કાર્ય થાય નહિ. સાર્ધશંકર (છંદે) શક્તિનું પ્રયોજન કહ્યું.

પૂર્વ શિષ્યે જે પ્રશ્ન કન્યો હતો:-'શક્તિ' વહ્નિથી ભિન્ન પ્રતીતા થાય નહિ, તેનું સમાધાન કરવાને અર્ધશંકર (છંદે) શક્તિનો અનુભવ દેલાડે છે.

मूढ अप्रसंगिक छंद. (विना अंकुशं संधान.)

ते शक्ति आमां छे न बीजो शक्ति उपजी खचीत;

ए शक्तिनो अनुभव प्रसिद्ध ज लोपिये कई रीत ?

२५.

अर्थ स्पष्ट. (जेमके केरीनी खटाशशक्ति गई. अने मिठाश-
शक्ति थई एवो केरीविषे सर्वने अनुभव थाय छे.) सिद्धान्त-
नी रीतिए शक्तिनुं स्वल्प अने शक्तिमां प्रमाणनिरूपण
कनुं.

४१५. अन्यमननी शक्ति ग्वंडन करे छे.

अप्रसंगिक छंद.

जे शक्ति इच्छा ईगनी ते पदने न नजीक,

मत न्यायनो अन्याय ए विधि शक्ति जाण्य अलीक. २५.

टीका:—जे ईश्वरनी इच्छारूप पदशक्ति कही ते वने नहि.
केमके ईश्वरनी इच्छा ईश्वरनो धर्म छे, एयो ईश्वरमां रहे.
(ईश्वरनी जे इच्छा ते पदनी शक्ति छे ए कहेयुं वने नहि;
जां पदनो धर्म शक्ति होय तां पदनी शक्ति छे ए कहेयुं वने.
एयो पदना सामर्थ्यरूप ज पदनी शक्ति छे. ईश्वरनी इच्छा
पदनी समीपे पण नहीं, ते पदनी शक्ति छे ए कहेयुं वने नहि.
[अलीक नाम जूठं.]

४१६. अथ वैयाकरणरीतिशक्तिलक्षण.

(हरिकारिका अथवा वैयाकरणभूषणना मत प्रमाणे.)

अप्रसंगिक छंद.

योग्यता जे अथनी पदमां ज शक्ति सु छे ज,

वैयाकरणभूषण लॅखी हरिकारिका छे ए ज. २६.

टीका:—पदनाविषे जे 'अर्थनी योग्यता' नाम अर्थना ज्ञाननी
हेतुता-हेतुपणुं-ते पदमां शक्ति छे. जेम घटपदविषे कलश-
रूप अर्थना ज्ञाननी हेतुतारूप योग्यता छे, ते ज शक्ति छे.

ए रीतिए वैयाकरणभूषण ग्रंथमां हरिनी कारिका प्रमाण लखीने शक्ति कही छे. अथवा वैयाकरणना जे भूषण नाम उत्तमवैयाकरण, ते हरिनी 'कारिका' नाम श्लोकने देखीने कहे छे.

४१७. अर्धशकर छंद.

(वैयाकरणरीतिनी शक्तिनुं खंडन.)

शुण शिष्य ! वैयाकरणमतमां प्रबल दूषण एक,
सामर्थ्य पदमां छे, न, वा, ए पृष्ठ तेषां विवेक;
जो 'छे' कहे तो शक्ति मानो, ते ज लोकरप्रसिद्ध,
कहे 'नहि ज' तो असमर्थ पद, ने योग्य छे, ए सिद्ध. २७.
असमर्थ छे पद, अर्थयोग्य (ए) कहेतां ज सविरोध,
जो अन्य दूषण देखवां तो ग्रंथ दर्पण शोध. २८.

टीका:-प्रथमपाद स्पष्ट. हे शिष्य ! 'अर्थज्ञाननी हेतुता-
रूपा योग्यताने' जे शक्ति माने छे, तेने आ विवेक पृष्ठ:-
'तारा मतमां पदविषे सामर्थ्य छे अथवा नथी?' प्रथमपक्ष कहे
तो (नाम 'हा छे,' एम कहे तो) अमारा मतनी शक्ति, बलधी
सिद्ध थाय छे. ए तृतीयपादेकरी कहे छे. 'कहे जो छे तो'
इति, एनो अन्वय-जो ते कहे के, 'छे,' तो लोकरप्रसिद्ध शक्ति
तेने मान. अर्थ:-जो वैयाकरणी कहे पदमां सामर्थ्य छे, तो
लोकमां प्रसिद्ध जे सामर्थ्यरूप शक्ति छे, ते ज पदमां पण मानयी.
पदमां अर्थज्ञाननी जनकरूप शक्ति मा मान.

अभिप्राय आ छे:-पदमां सामर्थ्य जे अंगीकार करे, तेने
सामर्थ्ययी भिन्नरूप शक्तिनुं माननुं योग्य नथी; किन्तु सामर्थ्य-
रूप ज शक्ति छे, ए माननुं योग्य छे. केमके, सामर्थ्य,
बल, शक्ति, जोर, ए चारे नाम एक वस्तुनां लोकमां प्रसिद्ध
छे. जोरहीनने लोक कहे छे के -आ सामर्थ्यहीन छे, बलहीन

છે, શક્તિહીન છે. અને ભર્જિત (શેકેલા) અગ્રને કહે છે કે-પનેવિપે અંકુર ઉત્પત્તિનું સામર્થ્ય છે નહિ, વલ છે નહિ, શક્તિ છે નહિ, જોર છે નહિ. ૫ રીતિપ સામર્થ્ય અને શક્તિની એકતા લોકમાં પ્રસિદ્ધ છે. અને વહ્નિમાં પણ સામર્થ્ય-રૂપ જ શક્તિ નિર્ણાતા છે. ૫થી પદમાં સામર્થ્યરૂપ જ શક્તિ માનવી યોગ્ય છે. અને પદમાં સામર્થ્ય માનીને, તેથી ભિન્ન યોગ્યતાને શક્તિ કહેવાનું, લોકપ્રસિદ્ધિના વિરોધ વિના, અન્ય ફલ નથી. કેવલ લોકપ્રસિદ્ધિનું વિરોધ જ ફલ છે.

૪૧૮. અને જો આમ કહે:-'સામર્થ્યને' જ અમે યોગ્યતા કહિયે છિયે, તો અમારું જ મત સિદ્ધ થાય છે. અને આમ કહે-'અમે સામર્થ્ય' અંગીકાર કરિયે તો, સામર્થ્યરૂપ શક્તિ 'પદમાં સંભવે, તે સામર્થ્યનો અંગીકાર જ નથી કરતા, ૫થી, 'અર્થજ્ઞાનની જનકતારૂપ યોગ્યતા જ પદમાં શક્તિ છે.' તેને આ પૂછ્યું જોઈયે:-સામર્થ્યનો અભાવ કેવલ પદમાં જ અંગીકાર કરો છો, અથવા વહ્નિઆદિક સર્વ પદાર્થમાં સામર્થ્યનો અભાવ અંગીકાર કરો છો? જો અંત્ય પક્ષ કહે તો, વહ્નિ આદિક પદાર્થોમાં સામર્થ્યરૂપ શક્તિના પ્રતિપાદનમાં ઉક્ત જે યુક્તિ તેઓથી ઁંડિત છે. અને પ્રથમપક્ષ કહે તો, તેવિપે અંત્યપક્ષુક્ત દોષ તો યદ્યપિ નથી. કેમકે 'જો વહ્નિઆદિ 'સર્વ પદાર્થોમાં સામર્થ્યરૂપ શક્તિ ન માને તો પ્રતિબંધકથી, 'દાહનો અભાવ વને નહિ.' ૫ અંત્યપક્ષમાં દોષ છે, તે દોષ પ્રથમપક્ષમાં નથી. કેમકે વહ્નિઆદિક સર્વ પદાર્થોમાં તો સામર્થ્યરૂપ શક્તિ છે, ૫થી પ્રતિબંધકથી દાહના અભાવનો અસંભવ નથી. પરંતુ પદનેવિપે અર્થજ્ઞાનની જનકતારૂપ યોગ્યતાથી ભિન્ન સામર્થ્યરૂપ શક્તિ નથી; કિન્તુ પદમાં અર્થની

योग्यता ज शक्ति छे, ए प्रथमपक्ष छे तेविपे प्रतिबंधकथी दाहनो असंभवरूप दोष तो नथी. तथापि पदविपे पण वहिनी पेठे सामर्थ्यनो अंगीकार अवश्य करवो जाइये, ए शंकर(छंद)ना ये पादथी प्रतिपादन करे छे. “कहे नहि ज’ तो “असमर्थ पद” इत्यादिथी ते ‘सविरोध’ पर्यंत. अर्थ:—‘नहि ज’ नाम पदमां सामर्थ्यनो अंगीकार नहि तो, जे असमर्थ पद ‘ते योग्य छे’ नाम अर्थज्ञाननुं जनक छे, ‘ए सिद्ध’ नाम मतनो निश्चय छे, ते असंगत छे.; केमके, पद ‘असमर्थ’ छे, अने ‘अर्थयोग्य नाम ‘अर्थज्ञाननुं जनक छे,’ ए वाक्य, न-पुंसकनुं अमोघ (सफल) धीर्य छे, ए वान्यनी पेठे, कहेतां ज ‘सविरोध’ छे, [विरोधसहित छे.] [सामर्थ्यसहितनुं नाम समर्थ छे, अने सामर्थ्यरहितनुं नाम असमर्थ छे.] असमर्थे करी कोई कार्य थनुं नथी, ए लोकमां प्रसिद्ध छे. एथी असमर्थ पदथी पण अर्थना ज्ञानरूप कार्य बने नहि. एथी पदमां सामर्थ्य मानवुं योग्य छे. ज्यारे पदमां सामर्थ्य अंगीकार कन्युं, त्यारे पदमां शक्ति पण सामर्थ्यरूप ज मानवी योग्य छे. ए रीतिपे अर्थज्ञाननी जनकतारूप योग्यता पदमां शक्ति नथी, किन्तु सामर्थ्यरूप ज शक्ति छे. जो वैयाकरणमतमां अन्य दृषण देखावां होय तो शकिना निरूपणमां दर्पण (नामना) ग्रंथने ‘शोध’ नाम जो. दृषण छिष्ट छे, एथी दर्पणउक्त दृषण (अत्र) लरयां नथी.

४१९. अथ भट्ट (मीमांसा) रीतिपे शक्तिलक्षण.

(पदनुं अर्थ साथे भेद अभेद रूप तादात्म्य.)

अर्चशंकर उद.

संबंध पदनो अर्थसह तादात्म्य शक्ति सु वेद.

ए भट्टना अनुसारी कहे, छे ते ज भेदाभेद.

ટીકા:-પદનો અર્થસાથે જે તાદાત્મ્યસંબંધ તેને ભટ્ટના અનુસારી શક્તિ કહે છે. તે 'વેદ' નામ તું જાણ. 'તે જ' નામ તે તાદાત્મ્યને ભેદાભેદરૂપ કહે છે. તેઓનો અભિપ્રાય આ છે:-અગ્નિપદનો અંગાર(રૂપ) અર્થસાથે અત્યંત ભેદ નથી. જો અત્યંત ભેદ હોય તો જેમ અગ્નિપદથી અત્યંત ભિન્ન જલ આદિક છે, તેઓની અગ્નિપદેકરી પ્રતીતિ થાય નહિ, તેમ અગ્નિપદે અંગારરૂપ અર્થની પ્રતીતિ નહિ થશે. પદથી અત્યંત ભિન્ન અર્થની પ્રતીતિ થાય નહિ. જેમ પદનો પોતાના અર્થ સાથે અત્યંત ભેદ નથી, તેમ અત્યંત અભેદ પણ નથી. જો વાચ્યવાચકનો અત્યંત અભેદ હોય તો, જેમ અગ્નિપદના 'વાચ્યે' અંગારેકરી મુલનો દાહ થાય છે, તેમ અંગારના 'વાચક' અગ્નિપદનું ઉચ્ચારણ કન્યાથી પણ મુલનો દાહ થયો જોડયે. અને (અગ્નિ)પદના ઉચ્ચારણેકરી દાહ થાય નહિ, યથી અત્યંત અભેદ પણ નથી. કિન્તુ અગ્નિપદનો, અંગારરૂપ અર્થસાથે, ભેદસહિત અભેદ છે. ભેદ છે યથી દાહ થાય નહિ, અને અભેદ છે યથી અગ્નિપદે જલઆદિકોની પેઠે અંગાર ની પ્રતીતિનો અસંભવ પણ નથી. જેમ અગ્નિપદનો અંગાર-રૂપ અર્થસાથે ભેદસહિત અભેદ છે, તેમ, ઉદક, વન, જલ, દક, જીવન, પદોનો, પાણીરૂપ અર્થસાથે, ભેદસહિત અભેદ છે. જો અત્યંત ભેદ હોય તો, જેમ ઉદક આદિક પદોથી અત્યંત ભિન્ન અગ્નિઆદિક છે તેઓની, ઉદક આદિકપદોથી પ્રતીતિ થાય નહિ; તેમ પાણીરૂપ અર્થની પણ ઉદકઆદિક પદોથી પ્રતીતિ નહિ થશે. (પણ પ્રતીતિ થાય છે) યથી અત્યંત ભેદ નથી. અને અત્યંત અભેદ પણ નથી. જો અત્યંત અભેદ હોય તો, જેમ, પાણીથી મુલમાં શીતલતા થાય છે, તેમ ઉદકઆદિક પદોના ઉચ્ચારણથી મુલમાં શીતલતા થયી જોડયે,

અને પદોથી શીતલતા થાય નહિ, યથી અત્યંત અભેદ નથી. કિન્તુ ભેદસહિત અભેદ હોવાથી ઘને દોષ નથી. ય રીતિય સર્વત્ર જ પોતપોતાના વાચ્યસાથે, વાચકપદોનો ભેદસહિત અભેદ છે. તે ભેદસહિત અભેદને જ, મટ્ટના અનુસારી તાદાત્મ્યસંબંધ કહે છે, અને ભેદાભેદ કહે છે. તે ભેદાભેદરૂપ તાદાત્મ્યસંબંધ જ સર્વપદોમાં પોતપોતાના અર્થની 'શક્તિ' છે. તાદાત્મ્યસંબંધથી જૂદી સામર્થ્યરૂપ શક્તિ નથી. ભેદાભેદમાં યુક્તિ કહી, અવે પ્રમાણ કહે છે.

૪૨૦. અર્ષશંકર ઇંદ.

આ ઐંઅક્ષર બ્રહ્મ છે ય કહત વેદ અભેદ;

વઙ્ગી વાણીમાં પદ, અર્થ ઘહિર્ જ, દેલિયે ય ભેદ. ૩૦.

ટીકા:—માંઙ્ગલ્ય(ઉપનિષદ્) આદિક વેદવાક્યોમાં 'ઐંઅક્ષર બ્રહ્મ છે.' યમ કહ્યું છે. ત્યાં વ્યાકરણની રીતિય, પ્રકાશરૂપ સર્વની રક્ષાકર્તા, (પદો) ઐંઅક્ષરનો અર્થ છે. યયું બ્રહ્મ છે. યથી ઐંઅક્ષર બ્રહ્મનો વાચક છે, અને બ્રહ્મ વાચ્ય છે. જાં વાચ્યવાચકનો પોતામાં અત્યંત ભેદ હો, વાચક ઐંઅક્ષરનો અને વાચ્ય બ્રહ્મનો, માંઙ્ગલ્યઆદિકોમાં, અભેદ ન કહત. અને 'ઐંઅક્ષર બ્રહ્મ છે' ય રીતિય અભેદ કહ્યો છે; યથી વાચ્યવાચકના અભેદમાં વેદવચન પ્રમાણ છે. અને સર્વ લોકની પ્રતીતિય વાચ્યવાચકનો ભેદ સિદ્ધ છે. કેમકે, અગ્નિ-આદિક પદ વાણીમાં છે, અને અંગારઆદિ તેઓનો અર્થ વાણીથી ઘહિર્ ચૂલાઆદિકોમાં છે; તેમ ઐંઅક્ષરરૂપ પદ વાણીમાં છે, અને તેનો અર્થ બ્રહ્મ વાણીમાં નથી, કિન્તુ વાણીથી ઘહિર્ નામ પોતાના મહિમામાં છે. યઘપિ બ્રહ્મ વ્યાપક છે યથી વાણીમાં બ્રહ્મનો અભાવ નથી, તથાપિ (વ્યાપક)બ્રહ્મમાં વાણી છે, અને વાણીમાં બ્રહ્મ નથી. ય રીતિય સર્વ લોકોને

‘પદ’ ઘાણીમાં અને ‘અર્થ’ ઘાણીથી વહિર પ્રતીત થાય છે. ધર્મી પદનો અને અર્થનો ભેદ લોકમાં પ્રસિદ્ધ છે. પણ રીતિપ ઘાચ્યવાચરૂતા ભેદમાં સર્વ લોકનો અનુભવ પ્રમાણ છે; અને તેઓના અભેદમાં વેદવચન પ્રમાણ છે. ધર્મી પદનો અર્થસાથે ભેદાભેદરૂપ તાદાત્મ્યસંબંધ અપ્રમાણ નથી, કિન્તુ પ્રમાણ-સિદ્ધ છે.

૪૨૧. પ્રસંગથી અન્યસ્થાનમાં પણ ભેદાભેદરૂપ તાદાત્મ્ય સંબંધ દેખાડે છે.

અર્થશંકર છેદ.

જે ગુણ ગુણી, ને જાતિ વ્યક્તિ, ક્રિયા ને તદ્વાન,
સંબંધ લખિ તાદાત્મ્ય ધર્મો કાર્યકારણ સ્થાન. ૩૧.

ટીકા:-રૂપ, રસ, ગંધ આદિક ગુણ છે, તેઓનો આશ્રય ગુણી કહેવાય છે; જેમ રૂપ આદિકોનો આશ્રય ભૂમિ ગુણી છે. અનેકોમાં રહે જે એક ધર્મ તે જાતિ કહેવાય છે. જેમ સર્વ બ્રાહ્મણશરીરોનામાં એક બ્રાહ્મણત્વ છે; અને સર્વ શૂદ્રમાં શૂદ્રત્વ છે; અને સર્વ જીવોમાં જીવત્વ છે; પુરુષોમાં પુરુષત્વ છે; સર્વ ઘટોમાં ઘટત્વ છે. જેને લોકમાં બ્રાહ્મણપણું, શૂદ્ર-પણું, જીવપણું, પુરુષપણું, ઘટપણું કહે છે, તે જ બ્રાહ્મણઆદિ શરીરોમાં બ્રાહ્મણત્વ આદિક જાતિ છે. જાતિનો આશ્રય જે બ્રાહ્મણ આદિક તે વ્યક્તિ કહેવાય છે. ગમન આગમન આદિક ક્રિયા કહેવાય છે; અને ‘તદ્વાન’ નામ તે(ક્રિયા) ઘાટ્ટા [અર્થ આ:-ક્રિયાના આશ્રય] પટ્ટા પદાર્થોનો તાદા-ત્મ્યસંબંધ છે. પણ ‘લખિ’ નામ જાણ, અને કારણકાર્યને ‘સ્થાન’ નામ ગુણગુણી આદિકવિષે મેલવ. અભિપ્રાય આ છે:-કારણ-કાર્યનો પણ ગુણગુણીની પેટે તાદાત્મ્યસંબંધ છે. ગુણનો અને ગુણીનો પોતપોતામાં તાદાત્મ્યસંબંધ છે. જાતિનો અને

व्यक्तिनो पोतपोतामां तादात्म्यसंबंध छे. तेम क्रिया अने क्रियावान्नो (पोतपोतामां) तादात्म्यसंबंध छे. कारणनो अने कार्यनो पण (परस्परमां) तादात्म्यसंबंध छे. [तादात्म्य नाम भेद-सहित अभेदनुं छे.]

यद्यपि निमित्तकारणनुं अने कार्यनुं तो भेदाभेदरूप तादात्म्य नथी, किन्तु अत्यंत भेद छे; तथापि उपादानकारण-नो अने कार्यनो भेदाभेदरूप तादात्म्य ज संबंध छे. जेम घटनां निमित्तकारण कुलालदंडआदिक छे, तेओनो घटरूप कार्यथी अत्यंत भेद छे खरो, परंतु उपादानकारण मृत्तिकार-पिंड अने घटकार्यनो भेदसहित अभेद छे. जो मृत्तिकारपिंड-थी घट अत्यंत भिन्न हांय, तो जेम मृत्तिकारपिंडथी अत्यंत भिन्न तैलनी उत्पत्ति थाय नहि, तेम घटनी पण उत्पत्ति नहि थशे. अने उपादानकारणनो कार्यसाथे अत्यंत अभेद होय तोपण मृत्पिंडथी घटनी उत्पत्ति थाय नहि. केमके पोतानास्वरूपथी पोतानी उत्पत्ति थाय नहि. एथी उपादान कारणनो कार्यसाथे भेदसहित अभेद छे; एथी अत्यंत भेद पक्षनां दोष नथी; अने भेद छे एथी अभेदपक्षनो (पण) दोष नथी. ए रीतिए उपादानकारणनो कार्यसाथे भेदाभेद युक्ति सिद्ध छे. अने प्रतीतिथी पण उपादानसाथे कार्यनो भेदा-भेद ज सिद्ध छे. आ मृत्पिंड छे, आ घट छे, ए रीतिनी भिन्न-प्रतीतिए भेद सिद्ध थाय छे. अने विचारथी देखिये तो घटनी पहिर् अन्तर् मृत्तिकाथी भिन्न कोई वस्तु प्रतीत थाय नहि. किन्तु मृत्तिका ज प्रतीता थाय छे, एथी अभेद सिद्ध थाय छे. ए रीतिए उपादानकारणनां कार्यसाथे भेदाभेदरूप तादात्म्यसंबंध छे, तेम गुण अने गुणीनां पण भेदाभेद छे. जं घटना रूपनां घटथी अत्यंत भेद होय तो, जेम घटथी

पटनो अत्यंत भेद छे, ते पट घटने आश्रित नथी किन्तु स्वतंत्र छे, तेम घटनुं रूप पण घटने आश्रित नहि थशे. अने गुणगुणीनो अत्यंत अभेद होय तो पण घटनुं रूप घटने आश्रित घने नहि. केमके पोतानो आश्रय पोते थाय नहि, एधी गुणगुणीनो भेदाभेदरूप तादात्म्यसंबंध छे. ए युक्ति जाति अने व्यक्तिला, तथा क्रिया अने क्रियावान्ना भेदाभेद-रूप तादात्म्यसंबंधमां जाणवी. अने जे मत खंडन करवानुं छे, तेविषे वहु युक्ति कहेवानुं प्रयोजन नथी. एधी अन्या युक्ति नथी लखी.

४२२. अथ भट्टमतखंडन.

इहो.

एक वस्तुनो एकमां, भेदअभेद विरुद्ध;

युक्तियुक्त एधी कहे, ए मत सकल अशुद्ध.

३२.

टीका:-अक्षरअर्थ स्पष्ट. अभिप्राय आ छे:-यद्यपि एक घटमां पोतानो अभेद छे अने परनो भेद छे, तथापि जेनो अभेद छे तेथो भेद नथी; अने जेनो भेद छे तेनो अभेद नथी. ए अभिप्रायधी एक वस्तुनो भेदअभेद विरुद्ध कह्यो छे. तथा 'एक वस्तुनो' नाम घटनो ज पोतानामां अभेद अने परमां भेद छे. परंतु जेमां अभेद छे तेमां भेद नथी, अने जेमां भेद छे तेमां अभेद नथी. ए अभिप्रायधी एक वस्तुनो भेदअभेद एकमां विरुद्ध कह्यो छे. भेदअभेद पोतामां विरोधी छे. एक वस्तुमां जेनो भेद होय तेनो अभेद, अने जेनो अभेद होय तेनो भेद विरुद्ध छे. एधी वाच्यावाचक, गुणगुणी, जातिव्यक्ति, क्रियाक्रियावान्, उपादानकारण कार्य,-(एवो-)-नो जे भेदाभेदरूप तादात्म्य शंकीकार कन्यो ते अशुद्ध छे,

४२३. पूर्व वाच्यवाचकना भेदाभेदमां जे प्रमाण कशुं:-

‘વાણીમાં વાચક અને વહિર્ વાચ્ય एथी भेद અને થુતિમાં
‘ॐ’ અક્ષર વ્રહ્મ કહ્યું છે एथी अभेद.’ તેનું સમાધાન.

(ॐકાર અને વ્રહ્મના અભેદવિષે સમજણ.)

इहो.

‘प्रणव’वर्ण ने ब्रह्मनो, वेदे कह्यो अभेद;

• तेमां अन्य रहस्य कइं, लह्यो भट्टे भेद. ૩૩.

ટીકા:—‘प्रणववर्ण’ नाम ॐ अक्षर અને વ્રહ્મનો જે વેદમાં
અભેદ કહ્યો છે, તે વેદવચનનું વાચ્યવાચકના અભેદમાં
તાત્પર્ય નથી. કિન્તુ તેમાં અન્ય જ ‘रहस्य’ नाम गोप्य अभिप्राय
છે. તે ‘भेद’ नाम अभिप्राय भट्टे जाण्यो નથી. જ્યાં ॐ
અક્ષર વ્રહ્મ કહ્યું છે, તે વાચ્યનું, ॐ અક્ષર અને વ્રહ્મના અભેદમાં
તાત્પર્ય નથી. કિન્તુ ‘ॐ’ અક્ષરને વ્રહ્મરૂપે કરીને ઉપાસના
‘करे,’ ए अर्थमां तात्पर्य છે. જેની ઉપાસના વિધાન કરી છે,
તે ઉપાસ્યના સ્વરૂપનો આ નિયમ નથી:—જેવી ઉપાસના
વિધાન કરી હોય તેવું જ ઉપાસ્યનું સ્વરૂપ હોય. કિન્તુ જેવું
વસ્તુનું સ્વરૂપ છે તેને ત્યાગીને, અન્યસ્વરૂપની પણ તેનેવિષે
ઉપાસના કરાય છે. જેમ શાલગ્રામ અને નર્મદેશ્વરની વિષ્ણુ-
રૂપે અને શિવરૂપેકરીને ઉપાસના કહી છે; ત્યાં શંભુ, ચક્ર
આદિકસહિત ચતુર્ભુજ મૂર્તિ શાલગ્રામની છે નહીં; અને ગંગા-
ભૂપિત જટાઝૂટ-હમરુ-ચર્મ-કપાલિકાસહિત મદ્રામુદ્રાણ શર-
ણાગતને ત્રિગુણરહિત આત્માનો ઉપદેશ દેવાવાળી મૂર્તિ નર્મ-
દેશ્વરની છે નહિ; કિન્તુ ઘંને શિલારૂપ છે. અને શાસ્ત્રની
આજ્ઞાથી તે શિલારૂપની દષ્ટિ ત્યાગીને, ઘંનેવિષે ક્રમથી વિષ્ણુ-
રૂપ અને શિવરૂપની ઉપાસના કરાય છે. ઈથી ઉપાસનાસ્થ-
રૂપને અધીન ઉપાસના હતી નથી, કિન્તુ વિધિને અર્પાગ
છે. શાસ્ત્રનું યચન જેમ વિધાન કરે તેવી ઉપાસના કરે.

જેમ છાન્દોગ્ય ઉપનિષદ્માં પંચાગ્નિવિદ્યાપ્રકરણમાં, સ્વર્ગ-લોક, મેઘ, ભૂમિ, પુરુષ, સ્ત્રી, એ પંચપદાર્થોની અગ્નિરૂપ-કરીને ઉપાસના કહી છે. અને શ્રદ્ધા, સોમ, વર્ષા, અન્ન, વીર્ય, એ પંચપદાર્થોની પંચઅગ્નિની આહુતિરૂપ ઉપાસના કહી છે. ત્યાં સ્વર્ગઆદિક અગ્નિ છે નહિ, અને શ્રદ્ધાસોમઆદિ આહુતિ છે નહિ. તથાપિ વેદનો આદ્યાર્થો સ્વર્ગલોકાદિકોની અગ્નિ-રૂપથી, અને શ્રદ્ધા આદિકોની આહુતિરૂપથી ઉપાસના કરાય છે. એ રીતિએ ॐ અક્ષરની બ્રહ્મરૂપે કરીને ઉપાસના કહી છે ત્યાં ॐ અક્ષર બ્રહ્મરૂપ છે નહિ, તોપણ બ્રહ્મરૂપે કરીને ઉપાસના વને છે.

ઉપાસનાવાચ્યમાં વસ્તુના અભેદની અપેક્ષા નથી; કિન્તુ મિશ્રવસ્તુની પણ અમિશ્રરૂપથી ઉપાસના થાય છે. અને વિચારથી જોઈયે તો બ્રહ્મનો વાચકુ જે ॐ અક્ષર છે, તેનો તો પોતાના વાચ્ય બ્રહ્મસાથે અભેદ વને પણ છે.—ઘટઆદિ અન્ય-પદોનો પોતપોતાના જડરૂપ અર્થસાથે અભેદ વને નહિ.—કેમકે, 'સર્વ નામરૂપ બ્રહ્મમાં કલ્પિત છે. બ્રહ્મ અધિષ્ઠાન છે,' ॐ અક્ષર પણ બ્રહ્મનું નામ છે, યથી બ્રહ્મમાં કલ્પિત છે. કલ્પિતવસ્તુ અધિષ્ઠાનથી મિશ્ર હોય નહિ; કિન્તુ અધિષ્ઠાનરૂપ જ હોય છે, યથી ॐ અક્ષર બ્રહ્મરૂપ છે. અને ઘટઆદિક-પદોનો જે જડરૂપ પોતાનો અર્થ, તે અધિષ્ઠાન નથી, કિન્તુ વાચ્યસહિત ઘટઆદિકપદ બ્રહ્મમાં કલ્પિત છે, અને બ્રહ્મ તેઓનું અધિષ્ઠાન છે. યથી બ્રહ્મસાથે તો સર્વનો અભેદ વને પણ છે. પરંતુ ઘટઆદિક પદોનો પોતાના જડરૂપ વાચ્યઅર્થ-સાથે અભેદ કોઈ રીતિએ વને નહિ. યથી ભટ્ટમતમાં વાચ્ય-વાચકનો અભેદ અસંગત છે.

૪૨૪. અને વાચ્યવાચકનો કેવલ ભેદ જે અંગીકાર કરે

છે તેઓના મતમાં મટ્ટે આ દોષ કહ્યો છે:—‘જો ઘટપદનું ‘વાચ્ય ઘટપદથી અત્યંત મિત્ર હોય, તો જેમ ઘટપદેકરી ‘અત્યંત મિત્ર વસ્ત્રરૂપ અર્થની પ્રતીતિ થાય નહિ, તેમ ઘટપદે- ‘કરી અત્યંત મિત્ર કલશરૂપ અર્થની પ્રતીતિ પણ નહિ થશે. ‘અને ઘટપદથી વાચ્યને મિત્ર માનીને, તેની ઘટપદથી પ્રતીતિ ‘માનશો, તો જેમ ઘટપદથી અત્યંત મિત્ર કલશરૂપ અર્થની ‘પ્રતીતિ થાય છે તેમ અત્યંત મિત્ર વસ્ત્રની પણ ઘટપદેકરી ‘પ્રતીતિ થવી જોઈએ.’ ૫ દોષ પણ જે સામર્થ્ય અથવા ઇચ્છા- શક્તિ નહિ માને, તેઓના મતમાં છે. જે શક્તિ અંગીકાર કરે તેઓના મતમાં દોષ નથી. કેમકે, ઘટપદનો વાચ્ય જે કલશ અને તેનાં અવાચ્ય વસ્ત્રાદિ તે વંને ઘટપદથી મિત્ર છે; પરંતુ ઘટપદમાં કલશરૂપ અર્થનું જ્ઞાન કરવાની શક્તિ છે, અને અન્ય અર્થનું જ્ઞાન કરવાની શક્તિ નથી. ૫થી ઘટપદેકરી કલશરૂપ અર્થથી મિત્ર અર્થની પ્રતીતિ થાય નહિ. ૫ રીતિપ જે પદમાં જે અર્થની શક્તિ છે, તે જ અર્થની તે પદેકરી પ્રતીતિ થાય છે, અન્ય અર્થની નહિ. ૫થી વાચ્યગાચકના અત્યંત ભેદમાં દોષ નથી. તેઓનો ભેદસહિત અભેદરૂપ તાદાત્મ્યસંબંધ વને નહિ.

૪૨૫. ભેદ અને અભેદ પોતપોતામાં વિરોધી છે. તેમ ઉપાદાનકારણનો કાર્યસાથે ભેદસહિત અભેદ નથી, કેવેલ ભેદ

૧૯૬. શક્તિવાદી જે સિદ્ધાન્તી તેના મતમાં ઉપાદાનકારણનો કાર્યથી કેવલ ભેદ નથી, કિન્તુ અનિર્વચનીય તાદાત્મ્ય છે. તથાપિ હાં કાર્યકારણનો જે કેવલ ભેદ કહ્યો છે તે ‘પ્રૌઢિવાદ’, છે.

પ્રૌઢિવાદ. ‘પ્રૌઢિ’ નામ પોતાની ઉત્પૃષ્ટતાને લીધે ‘વાદ’ નામ કથન. તેનું ૯૫ ણ આ છે.—પ્રતિવાદીની ઉક્તિ માનીને પણ સ્વમતમાં દોષનો પરિહાર કરે- હાં કાર્યકારણના ભેદપક્ષમાં મટ્ટે દોષ કહ્યો હતો તે મટ્ટુક દોષસહિત પશને માનીને પણ સ્વમતમાં દોષનો પરિહાર થયો છે. ૫થી તે ‘પ્રૌઢિવાદ’ છે.

છે. અને કેવલ ભેદમાં જે દોષ કહ્યા છે, તે નૈયાયિક અને શક્તિવાદીના મતમાં નથી. કેમકે કારણકાર્યના અત્યંત ભેદમાં આ દોષ છે:- 'જાં મૃત્પિંડથી અત્યંત મિશ્ર ઘટની ઉત્પત્તિ થાય, તો અત્યંત મિશ્ર તૈલની પણ મૃત્પિંડથી ઉત્પત્તિ થઈ જોઈયે; અને અત્યંત મિશ્ર તૈલની ઉત્પત્તિ નહિ થાય તો 'અત્યંત મિશ્ર ઘટની પણ ઉત્પત્તિ ન થવી જોઈયે.'

૪૨૬. ૫ દોષ નૈયાયિકમતમાં નથી (આવતો). કેમકે સર્વ વસ્તુની ઉત્પત્તિમાં નૈયાયિક પ્રાગભાવને કારણ માને છે. જેમ ઘટની ઉત્પત્તિમાં ઘટ, ચરુ, કુલાલ કારણ છે, તેમ ઘટનો પ્રાગભાવ પણ ઘટનું કારણ છે. તેમ સર્વનો પ્રાગભાવ સર્વની ઉત્પત્તિમાં કારણ છે. તે ઘટનો પ્રાગભાવ ઘટનું ઉપાદાનકારણ મૃત્પિંડ તેમાં રહે છે, અન્યમાં નહિ. તૈલનો પ્રાગભાવ તિલમાં રહે છે, અન્યમાં નહિ. ૫મ સર્વ કાર્યોનો પ્રાગભાવ પોતપોતાના ઉપાદાનકારણમાં રહે છે. જે પદાર્થોમાં જેનો પ્રાગભાવ હોય, તે પદાર્થથી તેની ઉત્પત્તિ થાય છે, અન્યની નહિ. જેમ મૃત્પિંડમાં ઘટનો પ્રાગભાવ છે એથી મૃત્પિંડથી ઘટની જ ઉત્પત્તિ થાય છે, તૈલની નહિ; અને તૈલનો પ્રાગભાવ તિલમાં રહે છે, તેથી તિલોથી તૈલની જ ઉત્પત્તિ થાય છે, ઘટની નહિ. ૫મ સર્વ કાર્યમાં પ્રાગભાવ કારણ છે. એથી કાર્યકારણનો અત્યંત ભેદ માનવાથી નૈયાયિકમતમાં દોષ નથી.

૪૨૭. અને સામર્થ્યરૂપશક્તિવાદીના મતમાં દોષ નથી.

૧૯૭. પૂર્વ અભાવ—કાર્યની ઉત્પત્તિથી પૂર્વ સમવાયિકારણમાં કાર્યના સંસર્ગનો અભાવ. શાબ્દિકો—કારણમાં શક્તિરૂપ અવસ્થાને 'પ્રાગ્ અભાવ' કહે છે. તે 'પ્રાગ્ અભાવ' અનાદિ સત્તે કાર્યની ઉત્પત્તિ થયે સન્ત થાય છે. નૈયાયિકના મતમાં ચાર અભાવ છે:- પ્રાગભાવ, પ્રથ્વસાભાવ, અન્યોન્યાભાવ અને અત્યંતાભાવ. તેમાં અનાદિ સન્ત જે અભાવ તે 'પ્રાગ્ અભાવ' છે.

કેમકે, મૃત્વિંડમાં ઘટની સામર્થ્યરૂપ શક્તિ છે, તૈલની નહિ. અને તિલમાં તૈલની સામર્થ્ય(રૂપ શક્તિ) છે, ઘટની નહિ. યથી મૃત્વિંડથી ઘટની જ ઉત્પત્તિ થાય છે, અને તૈલની નહિ. તેમ તિલોથી તૈલની જ ઉત્પત્તિ થાય છે, ઘટની નહિ. ય રીતિય ઉપાદાનકારણનો અને કાર્યનો અત્યંત ભેદ માનવામાં દોષ નથી. ભેદાભેદ અસંગત છે, અને ભેદમાં તથા અભેદમાં જે દોષ ભેદે કહ્યા છે, તે વંને પક્ષના દોષ ભટ્ટના મતમાં અવશ્ય રહે છે. કેમકે, ભેદે ભેદસહિત અભેદ અંગીકાર કન્યો છે. યથી આ અર્થ સિદ્ધ થયો:-કારણકાર્યનો ભેદ પળ છે, અને અભેદ પળ છે. ભેદ છે યથી ભેદપક્ષુક્ત દોષ થશે, અને અભેદ છે યથી અભેદપક્ષુક્ત દોષ થશે. જેમ ચોરીનો દોષ અને છૂતનો દોષ જે ઇકઇક કરવાવાલાને કહ્યો છે, તે વંને વ્યસન જેને હોય તેને ચોરીછૂત વંનેના દોષ થાય છે. તેમ ગુણગુણી આદિકોના ભેદાભેદ માનવાથી પળ, ભેદપક્ષ અને અભેદપક્ષના વંને દોષ થશે. અને શક્તિવાદીના મતમાં કેવલ ભેદ અંગીકાર કન્યથી દોષ નહિ. કેમકે, ગુણીમાં ગુણને ધારવાની (ધારણ કરવાની) શક્તિ છે, અન્યની નથી. યથી ભેદપક્ષમાં જે દોષ કહ્યો હતો કે:-‘ઘટના રૂપાદિક જેમ ‘ઘટથી ભિન્ન છે, તેમ પટઆદિક પળ ઘટથી ભિન્ન છે, રૂપા-‘દિકોની પેઠે પટઆદિક પળ ઘટમાં રહ્યાં જોઈયે. અથવા ‘પટાદિકોની પેઠે રૂપાદિક પળ ન રહ્યાં જોઈયે.’ તે દોષ શક્તિ અંગીકાર નહિ કરે તેના મતમાં છે. શક્તિવાદીના મતમાં કેવલ ભેદ માનવાથી પળ દોષ નથી. ડલટું ભટ્ટમતમાં ભેદ-અભેદ વંને માનવાથી વંને પક્ષના દોષ, ઉન્નતદણાન્તેકરી છે. અને ભેદ-અભેદવિરોધિધર્મનો અસંભવ દોષ છે. તેમ જાતિવ્યક્તિનો અને ક્રિયાક્રિયાવાનનો યજ કેવલ ભેદ છે. તથાપિ વ્યક્તિમાં

जातिने धारवानी शक्ति छे, अने क्रियावानमां क्रिया धार-
वानी शक्ति छे, अन्य धारवानी शक्ति नथी. ए रीतिप उपा-
दान अने कार्यनो तथा गुणगुणी आदिकोनो भेदाभेदरूप
तादात्म्यसंबंध असंगत छे. सर्वनो पोतामां भेद मानवामां
भेदउक्त दोषने, शक्ति ग्रमे छे. यद्यपि वेदान्तसिद्धान्तमां पण,
कार्य, गुण, जाति, अने क्रियानो-उपादान, गुणी, व्यक्ति,
अने क्रियावानथी, अत्यंत भेद नहि, किंतु तादात्म्यसंबंध
ज अंगीकार कयो छे. तथापि वेदान्तमतमां भेदाभेदरूप
तादात्म्य(संबंध) नथी, किंतु भेद अने अभेदथी विलक्षण (=क-
ल्पितभेदसहित वास्तव अभेद) अनिर्वचनीयरूप, तादात्म्य-
संबंध छे. भेदथी विलक्षण छे, एथी भेदपक्षना दोष नथी,
अने अभेदथी विलक्षण छे, तेथी अभेदपक्षना दोष नथी ए.
रीतिप भेदाभेदथी विलक्षण अनिर्वचनीय तादात्म्यसंबंध छे,
परंतु भेदाभेदरूप तादात्म्य असंगत छे. एथी 'वाचकवा-
च्यनो भेदाभेदरूप तादात्म्यसंबंध ज शक्ति छे' ए भेदअनु-
सारीनो पक्ष समीचीन नथी, किंतु पदने सांभळतां ज
अर्थनुं जानु करवानुं पदमां जे सामर्थ्य, ते ज पदमां शक्ति छे.

इति शक्तिनिरूपण.

४२८. (शक्यनुं लक्षण.)

लक्षणाना ज्ञानमां शक्यनुं ज्ञान उपयोगि छे. केमके
शक्यसंबंध लक्षणानुं स्वरूप छे, शक्य जाण्या विना शक्यसं-
बंधरूप लक्षणानुं ज्ञान थाय नहि. एथी शक्यनुं लक्षण कहे छे.

इहो.

छे पदमां जे अर्थनी शक्ति, शक्य ते जाण;

[वर्ली] वाच्यअर्थ केह तेहने, वाचक पद ज पिछाण. ३४.

टीका:-जे पदमां जे अर्थनी शक्ति होय, ते पदनो ते अर्थ

शक्य जाणो. [अने शक्यअर्थने ज वाच्यअर्थ पण कहे छे. (एने ज अभिधेयअर्थ अने मुख्यअर्थ पण कहे छे).] जेम अग्निपदमां अंगाररूप अर्थनी शक्ति छे एथी अग्निपदनो अंगार शक्यअर्थ अने वाच्यअर्थ कहेवाय छे. अने वाच्यअर्थनुं बोधकपद वाचक कहेवाय छे.

४२९. अथ लक्षणा अने जहती आदिक भेदलक्षण,
कवित.

शक्यनो संबंध जे स्वरूप जाण लक्षणानुं,
लक्षणाए भान जेनुं लक्ष्य ते पीछाणिये,
वाच्यअर्थ सर्व त्यागी, वाच्यनो संबंध जहि
थाय प्रतीति तहि जहती चखाणिये;
वाच्ययुक्त वाच्यना संबधीनुं जे ज्ञान थाय,
तेह स्थल लक्षणा अजहती ज मानिये;
एक वाच्य भाग त्याग थाय तहि भागत्याग
अन्य नाम जहती-अजहती प्रमाणिये. ३०.

टीका:—‘शक्य’ नाम वाच्यअर्थनो जे ‘संबंध’ नाम मीलाए ते, ‘लक्षणानुं स्वरूप’ नाम लक्षण जाण. अने जे अर्थनु पदनो शक्तिए ज्ञान थाय नहि, किन्तु लक्षणाए ‘भान’ नाम ज्ञान थाय, (अने घक्ताना तात्पर्यनो विषय होय) ते पदनो लक्ष्यअर्थ कहेवाय छे. (कवितना एक पदेकरी लक्षणानुं स्वरूप कह्युं.)

४३०. (जहतीलक्षणा.)

अवे लक्षणाना जहतीआदि त्रण भेदोनां लक्षण (कवितना) एक एक पादेकरी कहे छे. ‘वाच्य’ इत्यादिए ज्यां वाच्यअर्थने संपूर्ण त्यागीने, वाच्यअर्थना संबधीनी प्रतीति थाय-त्यां जहतीलक्षणा कहेवाय छे. जेम कोइए कह्युं:—

‘गंगामां ग्राम छे.’ ए स्थानमां गंगापदनी तीरमां जहतीलक्षणा छे. केमके गंगापदनो वाच्यअर्थ देवनदीनो प्रवाह छे, तेने-विषे ग्रामनी स्थितिनो असंभव छे; एथी सर्व वाच्यअर्थने त्यागीने तीरविषे गंगापदनी जहतीलक्षणा छे. [वाच्यना संबध-नुं नाम लक्षणा छे.] आ स्थानमां गंगापदनुं वाच्य जे प्रवाह तेनो तीरसाये संयोगसंबंध छे. एथी गंगापदना वाच्यनो जे तीरसाये (संयोग) संबंध ते लक्षणा, अने वाच्यनो सर्व त्याग जहतीलक्षणा.

४३१. (अजहतीलक्षणा.)

‘वाच्ययुक्त’ इत्यादि तृतीय पादेकरी अजहतीलक्षणा देखाडे छे. वाच्ययुक्त नाम वाच्यअर्थसहित वाच्यना संबधि-नुं जे पदेकरी ज्ञान थाय, ते पदमां अजहतीलक्षणा मानिये. जेम कोश्ये कहुं: ‘शोण धावन करे छे.’ (लाल दोडे छे) त्यां ‘शोण’ पदनी लालरंगवाळा अश्वविषे अजहतीलक्षणा छे. केमके, शोण नाम लाल रंगनुं छे. एथी शोणप-दनो वाच्य लाल रंग छे. ते केवल(लालरंग)मां धावननो असंभव छे. ए कारणथी शोणपदनो वाच्य जे लाल रंग तेसहित अश्वमां शोणपदनी अजहतीलक्षणा छे. गुणनो अने गुणीनो तादात्म्यसंबंध कहे छे. अने लाल पण, रूपनो भेद होषाथी गुण छे. एथी शोणपदनो वाच्य जे लाल गुण तेनो गुणी अश्वनीसाये जे तादात्म्यसंबंध ते लक्षणा अने वाच्यनो त्याग नहि, (किन्तु) अधिकनुं ग्रहण, एथी अजहती-लक्षणा.

४३२. जहतीअजहती अथवा भागत्यागलक्षणा.

‘एक वाच्य’ इत्यादि (कवितना) चतुर्थ पादेकरी भाग त्यागलक्षणा बतावे छे. ज्यां पदोना वाच्यअर्थमांथी एक

भागनों त्याग थाय (अने) एक भागनु ग्रहण थाय त्या भाग-
त्यागलक्षणा वहेवाय छे ते भागत्यागने ज जहतीअज
हतीलक्षणा पण कहे छे. जेम प्रथम दीठेला पदार्थने अन्य
देशमा देखीने काइए वस्तु -‘ते आ छे,’ त्या भागत्यागलक्षणा
छे, केमके अतीतकालमां अने अन्यदेशमा स्थितवस्तुने ‘ते’
कहे छे, एथी अतीतकालसहित अने अन्यदेशसहित वस्तु
‘ते’ पदना वाच्यअर्थ छे अने वर्तमानकाल (अने) समीप
देशमा स्थित वस्तुने ‘आ’ कहे छे, एथी वर्तमानकालस
हित अने समीपदेशसहित वस्तु ‘आ’पदनो वाच्यअर्थ छे
अने अतीतकालसहित अन्यदेशसहित जे वस्तु, ते ज वर्त
मानकाल अने समीपदेशसहित छे. ए समुदायनो वाच्य
अर्थ छे, ते सभवे नहि; केमके अतीतकाल अने वर्तमान-
कालनो विराध छे, तथा अन्यदेशनो अने समीपदेशनो
विराध छे एथी वदने पदमा देशकाल (रूप) जे वाच्यभाग तेने
त्यागीने वस्तुमात्रमा वदने पदनी भागत्यागलक्षणा

४३३. (तत्त्वमसिमहावाक्यनी लक्षणा.)

‘तत्त्वमसि’ (ते तु छु) (ए) महावाक्यमा लक्षणा देखाडवाने
‘तत्’पद अने ‘त्वम्’पदनो वाच्यअर्थ देखाडे छे

(अथ ‘तत्’पदवाच्यनिरूपण)

इहो

सवशक्ति, सर्वज्ञ, विभु ईश, स्वतत्र, परोक्ष,

मायी, ‘तत्पदवाच्य’ ते, जेमा वध न मोक्ष ३६

टीका -‘सर्वशक्ति’ नाम जेमा सर्व सामर्थ्य (छे), ‘सवज्ञ’
नाम सर्व वस्तुने जाणवावाळो, ‘विभु’ नाम व्यापक, ‘ईश’
नाम सर्वનો પ્રેરક, અને ‘સ્વતત્ર’ નામ કમને અધીન નહિ,
અને ‘પરોક્ષ’ નામ જીવના પ્રત્યક્ષનો વિષય નહિ ‘માયી’ નામ

માયા જેને અર્ધીના, અને યંધમાંક્ષરહિત [જેમાં યંધ હોય તેનો મોક્ષ થાય છે. ઈશ્વર યંધરહિત છે એથી ઈશ્વરમાં મોક્ષ પણ નથી.] પટલા ધર્મવાલુ ઈશ્વરચેતન 'તત્' પદનો વાચ્યઅર્થ છે.

૪૩૪. અથ 'ત્વમ્'પદવાચ્યનિરૂપણ.

દ્વો.

કયા ધર્મ જે દેશના સર્વ તેથી વિપરીત,

છે જે ચેતન, જીવ તે 'ત્વં'પદવાચ્ય' પ્રતીત.

૩૭.

ટીકા:-ઈશ્વરના જે ધર્મ કયા, તેઓથી વિપરીત ધર્મ જેમાં હોય તે જીવચેતન, ત્વંપદનુ વાચ્ય 'પ્રતીત' નામ જાણ. એનો ભાવ આ છે-અવશક્તિ, અવશ, પરિહિન્ન, અનોશ, કર્મને અગ્રીન, અપિચામોહિત, અને યંધમાંક્ષવાલો, અને પ્રત્યક્ષ (જીવ છે). કેમકે પોતાનુ સ્વરૂપ કોઈને પરોક્ષ નથી, પ્રત્યક્ષ જ હોય છે. યદ્યપિ ઈશ્વરને પણ પોતાનું સ્વરૂપ પ્રત્યક્ષ છે, તથાપિ ઈશ્વરનુ સ્વરૂપ જીવને પ્રત્યક્ષ નથી, એથી 'પરોક્ષ' કહેવાય છે. અને જીવના સ્વરૂપને, જીવ (અને) ઈશ્વર વધે જાણે છે, એથી 'પ્રત્યક્ષ' કહેવાય છે. પટલા ધર્મવાલુ જીવ-ચેતન 'ત્વં'પદનું વાચ્ય કહેવાય છે.

૪૩૫. (વાચ્યઅર્થમાં એકતાનો વિરોધ અને લક્ષણાની

કર્તવ્યતા.)

દ્વો.

મહાવાક્યમાં એકતા, થાય ઉભયની માન,

તે ન વને એથી સુમતિ, લક્ષ્ય લક્ષણથી જાણ.

૩૮.

ટીકા:-સામવેદની છાન્દોગ્યઉપનિષદ્(ના પૃષ્ઠ પ્રપા-

૧૧૮ યદ્યપિ જીવ, પોતાનુ નિજરૂપ-અહપદનુ લક્ષ્ય વૃક્ષ્ય માત્ર-(તે)ને જાણતો નથી, તથાપિ અહપદનુ વાચ્ય જે અન્ત કરણવિશિષ્ટચેતન-કિંવા સ્થૂલ્લ્પ્-શ્મસઘાતવિશિષ્ટચેતન-હુ હુ એમ જાણે છે. એથી જીવને વિવેકજ્ઞાનથી પૂર્વે પણ વિશિષ્ટાત્મરૂપેકરી પોતાના સ્વરૂપનુ જ્ઞાન પ્રત્યક્ષ છે ધં પી પુ.

૪ક)માં ઉદ્દાલકમુનિષ્ઠ પોતાના પુત્ર શ્વેતકેતુને જગત્ની ઉત્પત્તિ કરવાવાળો ઈશ્વર વતાવીને કહ્યું:-‘તત્ત્વમસિ’ (તે તું છું) તેનો ઘાચ્યઅર્થ આ છે:-‘તત્’ નામ તે,-જગતની ઉત્પત્તિ કરવાવાળો, સર્વશક્તિ, સર્વશતાઆદિ ધર્મસહિત ઈશ્વર-, ‘ત્વમ્’ નામ તું,-અલ્પશક્તિ અલ્પશતા આદિ ધર્મવાળો જીવ,-‘અસિ’ નામ છું. ઇહાં ‘તે તું છું’ એમ કહ્યાથી, ઈશ્વરજીવની એકતા ઘાચ્યઅર્થથી માન થાય છે, તે વને નહિ. કેમકે સર્વશક્તિ અને અલ્પશક્તિ, સર્વજ્ઞ અને અલ્પજ્ઞ, વિભુ અને પરિછિન્ન, સ્વતંત્ર અને કર્મઅધીન, પરોક્ષ અને પ્રત્યક્ષ, માયા જેને અધીન અને અવિદ્યામોહિત, એક છે, એમ કહેવું તે ‘અગ્નિ શીતલ છે’ એમ કહેવાના સમાન છે. એથી હે સુમતે ! ‘લક્ષણથી નામ લક્ષણથી લક્ષ્યઅર્થ જાણ; ‘વાચ્યઅર્થમાં વિરોધ છે.’

દ્વહો.

આદિ વે ય નહિ સંભવે, મહાવાક્યમાં તાત !

ભાગત્યાગ એથી પ્રહો, થાય જથી કુશલાત. ૩૯.

ટીકા:-હે તાત (શિષ્ય) ! મહાવાક્યમાં ‘આદિ વે ય’ નામ જહતી-અજહતી (લક્ષણ) નહિ સંભવે. એથી ભાગત્યાગલક્ષણ મહાવાક્યમાં ‘પ્રહો’ નામ જાણો, જેથી ‘કુશલાત’ નામ વિરોધનો પરિહાર થાય.

૪૩૬. અથ જહતી (લક્ષણ) અસંભવપ્રતિપાદન.

દ્વહો.

જ્ઞેય સાક્ષી ને બ્રહ્મચિત્, ઘાચ્યમાંહિ તે લીન;

માને જહતીલક્ષણા, થાય જ્ઞેય નવીન. ૪૦.

ટીકા:-સંપૂર્ણ વેદાન્તનું જ્ઞેય-સાક્ષિચેતન અને ‘બ્રહ્મચિત્’ નામ બ્રહ્મચેતન-છે. તે સાક્ષિચેતન અને બ્રહ્મચેતન ત્વંપદ

६ तं (ग.) महावाक्यमां भागत्यागलक्षणा न युक्ता छे. ५४१

अने तत्पदना वाच्यमां 'लीन' नाम प्रविष्ट छे. अने जहती-
लक्षणा ज्यां होय, त्यां वाच्य संपूर्णनां त्याग करीने वाच्यनां
संबंधी अन्य क्षेय होय छे. एथी महावाक्यमां जहतीलक्षणा
मानिये तो वाच्यमां आवुं जे चेतन तेथी 'नवीन' नाम
अन्य कांई क्षेय थशे. चेतनथी भिन्न असत्-जड-दुःखरूप छे.
तेना जाणवाथी पुरुषार्थ सिद्ध थाय नहि. एथी महावाक्यमां
जहतीलक्षणा नथी.

४३७. अथ अजहतीलक्षणाअसंभयप्रतिपादन.

इहो.

वाच्यअर्थ सर्वे रहे, जहां अजहती मित्र !

वाच्यअर्थ सविरोध इम, तजी अजहती रीत. ४१.

टीका:-हे मित्र-प्रिय ! ज्यां अजहतीलक्षणा होय त्यां वाच्य-
अर्थ सर्वे रहे छे, अने वाच्यथी अधिकनुं ग्रहण थाय छे.
महावाक्यमां अजहतीलक्षणा अंगीकार करिये तो वाच्यअर्थ
सर्वे रहेथे अने वाच्यअर्थ महावाक्यमां 'सविरोध' नाम विरो-
धसहित छे. विरोध दूर करवाने लक्षणा अंगीकार करी छे.
अजहती मानिये तो महावाक्यमां विरोध दूर थाय नहि. एथी
अजहतीनी रीति महावाक्यमां त्यजो.

४३८. अथ भागत्यागलक्षणाप्रकार.

इहो.

त्यागीं विरोधी धर्म सहु, चेतन शुद्ध असंग;

जाण लक्षणाथी सुमति, भागत्याग ए अंग ! ४२.

टीका: हे अंग (नाम) हे प्रिय ! तत्पदनां वाच्य ईश्वर
अने त्वंपदनां वाच्य जीव, तेआंना परस्परमां विरोधी धर्म
त्यागीने, शुद्ध-असंग-चेतन लक्षणाथी जाणो. ए भागत्याग-
लक्षणा छे आ स्थानमां आ सिद्धान्त छे:-ईश्वरजीवतुं

સ્વરૂપ અનેક પ્રકારનું અદ્વૈતગ્રંથોમાં કહ્યું છે. વિચરણ-ગ્રંથમાં અજ્ઞાનમાં પ્રતિવિંવ 'જીવ,' અને વિંવ 'ઈશ્વર' કહ્યો છે. અને વિચારણ્યના મતમાં-શુદ્ધસત્ત્વગુણસહિત માયામાં આભાસ 'ઈશ્વર,' અને મલિનસત્ત્વગુણસહિત જે અંતઃ-કરણનું ઉપાદાનકારણ અવિદ્યાનો અંશ તેમાં આભાસ 'જીવ' કહ્યો છે.

૪૩૯. (આભાસવાદ.)

યદ્યપિ પંચદશીગ્રંથમાં વિચારણ્યસ્વામીવ અંતઃ-કરણમાં આભાસને જીવ કહ્યો છે, તથાપિ અંતઃકરણના આભાસ-ને જીવ માનિયે તો સુપુત્તિમાં અંતઃકરણ રહે નહિ, યથી જીવનો પણ અભાવ થયો જોઈયે અને પ્રાણરૂપ જીવ સુપુત્તિમાં રહે છે. યથી વિચારણ્યસ્વામીનો આ અભિપ્રાય છેઃ-અંતઃ-કરણરૂપ પરિણામને પ્રાણ જે થાય અવિદ્યાનો અંશ તેમાં આભાસ જીવ છે. તે અવિદ્યાનો અંશ સુપુત્તિમાં પણ રહે છે. યથી પ્રાણનો અભાવ નથી. અને કે વ લ આ ભા સે જ જીવ ઈશ્વર નથી, કિન્તુ માયાનું અધિષ્ઠાનચેતન, અને માયા-સહિત આભાસ, ઈશ્વર છે. અને અવિદ્યાઅંશનું અધિષ્ઠાન-ચેતન, અને અવિદ્યાના અંશસહિત આભાસ જીવ છે. ઈશ્વર-

૧૯૯. કેવલ ચિદાભાસ જ જીવ-ઈશ્વર નથી, કારણ કે પોતાના તાદાત્મ્ય-સંબંધેકરી અધિષ્ઠાનસાથે અભિન્ન થઈને જે પ્રતીતિ થાય તે આરોપિત કહેવાય છે. આરોપિતની અધિષ્ઠાનથી ભિન્નતા ઇકરી પ્રતીતિ થાય નહિ. જેમ રજ્જુવિષે સર્પ આરોપિત છે, યથી તેની રજ્જુથી ભિન્નતા ઇકરીને પ્રતીતિ થાય નહિ, કિન્તુ રજ્જુસાથે અભિન્ન થઈને અને રજ્જુના સ્વરૂપને ઢાકીને સર્પની પ્રતીતિ થાય છે. તેમ માયા અવિદ્યામાં જે આભાસ છે તે પણ જેથી આરોપિત છે તેથી તેઓની પોતાના અધિષ્ઠાન-કૂટસ્થ અને વ્રહ્મથી ભિન્નકરીને પ્રતીતિ સંભવે નહિ. કિન્તુ તે બેની પોતાનું અધિષ્ઠાન-કૂટસ્થ તથા વ્રહ્મસાથે તાદાત્મ્યસંબંધરૂપ ઇકનાને પામીને, તેઓના સ્વરૂપને ઢાકીને જ પ્રતીતિ થાય છે. યથી અધિષ્ઠાનચેતન અને ઉપાધિ-સહિત ચિદાભાસ જીવ કિંવા ઈશ્વર છે.

ના ઉપાધિમાં શુદ્ધસત્ત્વગુણ છે, યથી ईश्वरમાં સર્વશક્તિ-સર્વજ્ઞતાદિક ધર્મ છે. અને જીવના ઉપાધિમાં મલિનસત્ત્વગુણ છે, યથી જીવમાં અલ્પશક્તિ અલ્પજ્ઞતાદિક ધર્મ છે. અને આભાસવાદ કહે છે.

૪૪૦. (પ્રતિવિંવવાદ. અન્યનિષ્ઠની અન્યત્ર પ્રતીતિનું વ્યવસ્થાપન.)

અને ચિત્તરણના મતમાં યદ્યપિ જીવ-ईश्वर વંનેનો ઉપાધિ એક જ અજ્ઞાન છે, યથી વંને અલ્પજ્ઞ (વા સર્વજ્ઞ) થવા જોઈયે. તથાપિ જે ઉપાધિમાં પ્રતિવિંવ હોય તેનો આ સ્વભાવ હોય છે:-પ્ર તિ વિં વ માં પો તા ના (ઉ પા ધિ ના) દો પ કરે છે, વિં વ માં ન હિ. જેમ દર્પણરૂપ ઉપાધિમાં મુખનું પ્રતિવિંવ થાય છે, ગ્રીવામાં (હોકમાં) સ્થિત મુખ વિંવ છે, ત્યાં દર્પણરૂપ ઉપાધિના શ્યામ, પીત, લઘુતાદિક અનેક દોષ, પ્રતિવિંવમાં ભાન થાય છે. અને ગ્રીવામાં સ્થિત જે વિંવ છે તેમાં ભાન થાય નહિ. તેમ દર્પણસ્થાનીય જે અજ્ઞાન તેવિપે પ્રતિવિંવરૂપ જીવમાં, અજ્ઞાનરૂત અલ્પજ્ઞતાદિ દોષ છે, અને વિંવરૂપ ईश्वરમાં નથી. યથી ईश्वરમાં સર્વજ્ઞતાદિક છે, અને જીવમાં અલ્પજ્ઞતાદિક છે.

૪૪૧. (આભાસ અને પ્રતિવિંવવાદનો ભેદ.)

આભાસ અને પ્રતિવિંવનો આટલો ભેદ છે:-આભાસ-પક્ષમાં તો આભાસ મિથ્યા છે; અને પ્રતિવિંવવાદમાં પ્રતિ-

૨૦૦. યદ્યપિ પ્રતિવિંવવાદમાં શુદ્ધબ્રહ્મ જ ईश्वર છે તેમાં સર્વજ્ઞતાદિ ધર્મ પણ સંભવે નહિ, તથાપિ જીવના અલ્પજ્ઞતાદિક ધર્મની અપેક્ષાએ શુદ્ધબ્રહ્મમાં વિંવતા, ईश्वરતા, સર્વજ્ઞતા, આદિ ધર્મોનો આરોપ થાય છે. વાસ્તવથી જીવ ईश्वર ઉભય બ્રહ્મરૂપ છે. તેમાં કોઈ ધર્મનો સંભવ નથી. પં. પી. પુ.

વિંવ મિથ્યા નથી, કિન્તુ સત્ય છે. કેમકે પ્રતિવિંવવાદીનો આ સિદ્ધાન્ત છે:-દર્પણમાં જે મુખનું પ્રતિવિંવ છે તે મુખની છાયા નથી. કેમકે છાયાનો આ સ્વભાવ છે:-જે દિશામાં છાયાવાનનાં મુખ અને પૃષ્ઠ (પીઠ) હોય, તે દિશામાં છાયાનાં મુખ અને પૃષ્ઠ હોય છે. અને દર્પણના પ્રતિવિંવનાં મુખ અને પીઠ, વિંવથી વિપરીત હોય છે. યથી દર્પણમાં છાયારૂપ પ્રતિવિંવ નથી, કિન્તુ દર્પણને વિષય કરવાનેસાર નેત્રદ્વારા નિકલી જે અંતઃકરણની વૃત્તિ, તે દર્પણને વિષય કરીને તત્કાલ જ દર્પણથી નિવૃત્તા થઈને ગ્રીવામાં સ્થિત મુખને વિષય કરે છે. જેમ ભ્રમણના વેગથી અલાતનું (અર્ધદમ્ધ કાષ્ઠ) ચક્ર (જેતું) માન થાય છે, અને ચક્ર છે નહિ; તેમ દર્પણ અને મુખને વિષય કરવામાં, વૃત્તિના વેગથી મુખ દર્પણમાં સ્થિત (છે યમ) માન થાય છે, અને મુખ ગ્રીવાવિષે જ સ્થિત છે, દર્પણમાં નથી, અને છાયા પણ નથી. વૃત્તિના વેગથી દર્પણમાં મુખની જે પ્રતીતિ, તે જ પ્રતિવિંવ છે. તે રીતિય દર્પણરૂપ ઉપાધિના સંબંધથી ગ્રીવામાં સ્થિત મુખ જ વિંવરૂપ અને પ્રતિવિંવરૂપ માન થાય છે. અને વિચારથી વિંવપ્રતિવિંવભાવ છે નહિ. તેમ અજ્ઞાનરૂપ ઉપાધિના સંબંધથી અસંગચેતનમાં વિંવસ્થાનીય ઈશ્વરભાવ, અને પ્રતિવિંવસ્થાનીય જીવભાવ પ્રતીત થાય છે. અને વિચારદૃષ્ટિય ઈશ્વરતા જીવતા છે નહિ. અજ્ઞાનથી ચેતનમાં જે જીવભાવની પ્રતીતિ તે જ અજ્ઞાનમાં પ્રતિવિંવ કહેવાય છે, યથી વિંવતા અને પ્રતિવિંવતા તો મિથ્યા છે. અને સ્વરૂપે વિંવપ્રતિવિંવ સત્ય છે. કેમકે વિંવપ્રતિવિંવનું સ્વરૂપ, દૃષ્ટાન્તવિષે તો મુખ છે, અને દાષ્ટાન્તવિષે ચેતન છે, તે મુખ અને ચેતન સત્ય છે. તે રીતિય પ્રતિવિંવને, સ્વરૂપથી સત્ય હોવાથી, સત્ય કહે છે. અને આભાસનું સ્વરૂપ છાયા માને છે

૯થી મિથ્યા છે. ૯વો આમાસવાદ તથા પ્રતિબિંવવાદનો ભેદ છે.

૨૦૧. (જડ-જીવ-ઈશ્વર-પરમાત્મા-વિષય વિચાર.)

હાં કહેક વિશેષ છે: જલપૂરિત અનેક ઘટોવિપે સૂચનાં અનેક પ્રતિબિંવ (આમાસ) થાય છે. તેઓમાં એક એક પ્રતિબિંવ વ્યષ્ટિ કહેવાય છે; અને સર્વ મીલીને એક સમષ્ટિ પ્રતિબિંવ કહેવાય છે. તેઓમાં જે પ્રતિબિંવનો જન્મના અમાવે અમાવ થાય તેનો સૂચનાથે અભેદ કહેવાય છે, અન્યોનો નહિ. એમ વ્યારે સર્વ પ્રતિબિંવનો અમાવ થાય ત્યારે તે સમષ્ટિપ્રતિબિંવનો સૂચનાથે અભેદ કહેવાય છે. તેમ એ ઉક્ત આમાસાદિકના પક્ષમા અનેકબુદ્ધિ વા અવિદ્યાઅંશરૂપ જલવિપે વ્રહ્મનાં અનેક પ્રતિબિંવ (આમાસ) તેઓમા એક એક અનેક વ્યષ્ટિ કહેવાય છે. અને સર્વ મીલીને એક સમષ્ટિપ્રતિબિંવ કહેવાય છે. તેઓમા અનેક વ્યષ્ટિપ્રતિબિંવ જીવો છે, અને એક સમષ્ટિપ્રતિબિંવ ઈશ્વર છે. તેઓમાથી જે જીવનો ઉપાધિના અમાવથી અમાવ થાય તેનો વ્રહ્મસાથે ઉપચારમાત્ર અભેદ કહેવાય છે. એમ વ્યારે સર્વ જીવોનો અમાવ થશે ત્યારે તે સમષ્ટિપ્રતિબિંવરૂપ ઈશ્વરનો વિદેહમોક્ષ થશે. એ પક્ષમા જગત્ અને વ્રહ્મના કિંવા જીવ અને વ્રહ્મના અભેદનાં ઘોષક શ્રુતિ-વાક્યોમાં ભાગત્યાગલક્ષણાનો સ્વીકાર નથી, કિન્તુ 'ગંગામાં ગ્રામ છે,' એ વાક્યની પેટે સર્વ વાચ્ય (અર્થ)નો ત્યાગ અને તેના સંબંધિ વ્રહ્મના ગ્રહણથી જહતીલક્ષણાનો સ્વીકાર છે. એ અધિગ્નકૂટસ્થને છોડીને કેવલ બુદ્ધિસહિત વા અવિદ્યાસહિત આમાસને જીવ માનવાવાલા કોઈ વેદાન્તના એકદેશીઆમાસવાદીનું મત છે.

એ પક્ષમાં પુરુષાર્થ મોક્ષ-ને નિમિત્ત પ્રયત્ન કરવાવાલા જીવનો મોક્ષદશાવિપે અમાવ થાય છે. ૯થી 'ધનવૃદ્ધિની વાછાએ વ્યાપાર કરવાવાલાતુ મૂલ ધન વળ નષ્ટ 'યયું' એની પેટે મોક્ષનો પ્રાપ્તિને નિમિત્ત પ્રયત્ન કરવાવાલા જીવનુ સ્વરૂપ નષ્ટ થશે. (૯વી શકાદ) એ અનર્થ જાણીને એ સિદ્ધાન્તમા કોઈ મુમુક્ષુની પ્રવૃત્તિ નહિ થશે, ૯થી એ પક્ષ સમીચીન નથી (ગણતા).

વંચદશી અને આ વિચારસાગર આદિક પ્રયોમાં 'અધિગ્નકૂટસ્થસહિત' સામાસબુદ્ધિ વા અવિદ્યાને જીવ માન્યો છે. અને 'અધિગ્ન વ્રહ્મસહિત' સામાસ-માયાને ઈશ્વર માન્યો છે.

એમાં વાચ્યમાગના એકદેશના ત્યાગથી અને એકદેશના ગ્રહણથી મહાવાક્ય-આદિક સ્થલમાં સિદ્ધાન્તસંમત ભાગત્યાગલક્ષણાનો જ સ્વીકાર છે. એ પક્ષમાં મુલ્ય આકાશના દૃષ્ટાન્તનો જ અંગીકાર છે. તે આકાશના દૃષ્ટાન્તનુ સવિસ્તર વર્ણન વંચદશીના ચિત્રદીપમાં અને વિચારસાગરના ચતુર્થ તરંગમાં વ્યુ છે. એ પક્ષનો

રીતિએ આકાશના ક્રિયા મુલ્કઆદિકના પ્રતિબિંબનું અધિષ્ઠાનરૂપ ઉપાદાન—
 ઘટાકાશ અને દર્પણાદિક છે, અને પરિણામી ઉપાદાન—જલ અને અધિષ્ઠાઆદિક
 છે, અને નિમિત્ત કારણ—મહાકાશ અને મુલ્કાદિક વિંચ અને ઉપાધિનો સંનિધિ
 છે. તે પ્રતિબિંબનો, વાધ કરીને, પોતાના વિંચ મુલ્કાદિકસાથે અમેદ થાય છે.
 તથાપિ જ્યાંલગી જલ-દર્પણઆદિક અને વિંચના સંનિધિરૂપ નિમિત્ત હોય
 ત્યાંલગી વાધિતપ્રતિબિંબની પણ અનુવૃત્તિ—પ્રતીત—હોય છે. એને વાધિતાનુવૃત્તિ
 કહે છે. તેમ ચિદામાસરૂપ જીવનું અધિષ્ઠાનરૂપ ઉપાદાન કૂટસ્થ છે, અને
 પરિણામી ઉપાદાન નાનાનુદ્ધિ ક્રિયા અજ્ઞાનઅંશ છે; અને પ્રારબ્ધ નિમિત્તકારણ
 છે. તેઓમાંથી જે ચિદામાસ, યુદ્ધિ વા અજ્ઞાનઅંશરૂપ ઉપાધિસહિત પોતાન-
 સ્થરૂપનો વાધ કરીને, અહં (હુ) આદિક જીવવાચક પદનો લક્ષ્યઅર્થ જે કૂટસ્થ-
 અધિષ્ઠાનરૂપ પોતાનું નિજરૂપ-તેનું અભિમાન કરીને તે અહંપદના લક્ષ્ય—કૂટ-
 સ્થની વિંચરૂપ વ્રહ્મસંગે પૂર્વસિદ્ધેકતા છે તેને જાણે છે—તે મુક્ત થાય છે.
 અન્ય વદ્ધ છે. યદ્યપિ ઉક્ત ‘અહં વ્રહ્માસ્મિ’ એ જ્ઞાનના સમયમાં જ અવિદ્યારૂપ ઉપા-
 દાનના નાશકરી તેમાં કાર્યજગત્સહિત ચિદામાસનો વાધ થાય છે, તથાપિ
 જ્યાંલગી પ્રારબ્ધરૂપ નિમિત્ત છે ત્યાંલગી વાધ થયે મિથ્યા જાણે દેહાદિ જગત્-
 સહિત ચિદામાસની અનુવૃત્તિ પ્રતીતિ થાય છે. જ્યારે પ્રારબ્ધના અન્ત થાય છે
 ત્યારે તે પ્રતીતિનો અભાવ થાય છે. તે જ તેનો વિદેહ મોક્ષ છે.

પૂર્વોક્ત પશ્ચથી એ પશ્ચ ઉત્તમ છે, અને વિંચપ્રતિબિંબવાદવિષે પ્રતિબિંબનું અધિ-
 ષ્ઠાનરૂપ ઉપાદાન વિંચ છે, અને પરિણામીઉપાદાન મુલ્કઆદિક વિંચનું અજ્ઞાન છે
 તેનું નિમિત્તકારણ દર્પણ અને વિંચનો સંનિધિઆદિક છે. વિંચપ્રતિબિંબના અમેદ
 જ્ઞાનથી પ્રતિબિંબમાવની નિવૃત્તિ થાય છે. પરંતુ જ્યાંલગી વિંચ અને દર્પણના સન્નિ-
 ધિરૂપઉપાધિ નિમિત્ત હોય ત્યાંલગી મિથ્યા જાણેલ પ્રતિબિંબમાવરહિત પ્રતિ-
 બિંબના સ્થરૂપની પ્રતીતિ થાય છે. જ્યારે દર્પણ આદિકનું અપસરણ થાય ત્યારે
 પ્રતિબિંબની પ્રતીતિનો અભાવ થાય છે. તેમ એક જ અજ્ઞાનેરી શુદ્ધવ્રહ્મરૂપ-
 વિંચમાં જીવરૂપ પ્રતિબિંબમાવ પ્રતીતિ થાય છે. તેનું ઉપાદાન અજ્ઞાન છે, અને
 અધિષ્ઠાન શુદ્ધ વ્રહ્મ છે, અને નિમિત્તકારણ અદૃષ્ટ છે. જ્યારે તે પ્રતિબિંબને
 પોતાના વિંચવ્રહ્મસંગે પોતાની એકતા પ્રતીતિ થાય છે, ત્યારે તેનો પ્રતિબિંબમાવ—જીવ
 માવ—નિવૃત્તિ થાય છે. પરંતુ જ્યાંલગી પ્રારબ્ધરૂપ ઉપાધિ—નિમિત્ત—છે, ત્યાંલગી
 વાધિત થયેલ જગત્સહિત આ જીવના જીવમાવરહિત સ્થરૂપની પ્રતીતિ થાય છે.
 જ્યારે પ્રારબ્ધને અન્ત થશે ત્યારે તે પ્રતીતિનો અભાવ થઈને કેવલ શુદ્ધવ્રહ્મ

૪૪૨. (અવચ્છેદવાદ).

અને કેટલાક પ્રંથોમાં શુદ્ધસત્ત્વગુણસહિત માયાવિશિષ્ટ ચેતન ઈશ્વર કહેવાય છે. અને મલિનમત્ત્વગુણમહિત અંતઃકરુણ ના ઉપાદાન અવિદ્યાના અંશવિશિષ્ટચેતન જીવ કહેવાય છે. અને અવચ્છેદવાદ કહે છે

(આભાસવાદ મુખ્ય છે.)

વેદાન્તની સર્વા જ પ્રક્રિયા અદ્વૈતઆત્માને જણાવવાને છે. યયો જેથી પ્રક્રિયાથી જિજ્ઞાસુને ઘોષ થાય તે જ તેને સમીચીના છે. તથાપિ વાક્યવૃત્તિ અને ઉપદેશસહસ્રીમાં, ભાષ્યકારે આભાસવાદ જ લખ્યો છે. યથી આભાસવાદ જ મુખ્ય છે. તેની રીતિય, માયા અને માયામાં આભાસ; અને માયાનું અધિષ્ઠાન જે ચેતન, તે, સર્વશક્તિ, સર્વજ્ઞતાદિક ધર્મસહિત ઈશ્વર છે; તે જ તત્ત્વદનો વાચ્ય છે. અને વ્યષ્ટિઅવિદ્યા, તેમાં આભાસ, અને તેનું અધિષ્ઠાનચેતન, (ત,) અલ્પશક્તિ અલ્પજ્ઞતાદિક ધર્મસહિત જીવ છે, તે ત્વંપદનો વાચ્ય છે. તેઓ વચ્ચેની 'તત્ત્વમસિ' ઘામ્યે ઇકતા ઘોષન કરી. અને (=પણ તે વને નહિ યથી આભાસસહિત માયા અને માયાકૃત સર્વશક્તિ સર્વજ્ઞતાદિક ધર્મ ઇટલા વાચ્યમાગને ત્યાગીને, ચેતનમાગવિષે તત્ત્વદની માગત્યાગલક્ષણા, તેમ આભાસસહિતઅવિદ્યાઅશ અને અવિદ્યાકૃત અલ્પશક્તિ અલ્પજ્ઞતાદિક ધર્મ જે ત્વંપદનો વાચ્યમાગ તેને ત્યાગીને, ચેતનમાગમાં ત્વંપદની માગત્યાગલક્ષણા (છે).

૪૪૩. (ચાર મહાવાક્યો.)

૫ રીતિય માગત્યાગલક્ષણાથી ઈશ્વર અને જીવના સ્વરૂપમાં લક્ષ્ય જે ચેતનમાગ તેઓની ઇકતા (સામવેદની છાંદોગ્ય-

અવગોષ રહેશે, તે જ તેનો વિદેહમોક્ષ છે. ૫ પક્ષમાં સ્વપ્નની પેઠે મુખ્ય ઇક જીવનો અગીકાર છે. અને નાનાજીવ જે પ્રતીત થાય છે તે જીવ—આ મ્ગ સ છે. ઇમાં સત્તાત્રવનો અગીકાર છે. ઇથી ૫ પ્ણ વ્યા વ હા રિક પ ક્ષ કહેવાય છે. પરંતુ અન્ય સર્વ વ્યાવહારિકપક્ષોવિષે ૫ પક્ષ ઉત્તમ છે. ૫ રીતિય આભાસવાદ અને પ્રતિવિરોધવાદનો મેદ છે.

પ. પી. પુ.

૨૦૨. અને અચ્છિન્નવાદ પણ કહે છે. અન્ત.નરુણ અવચ્છિન્ન ચૈતન્ય=જીવ, તેનો 'વાદ' નામ વ્યવસ્થાપન.

ઉપનિષદ્ગત) 'તત્ત્વમસિ' (તે તું છું) (૫ ઉપદેશક) મહાવાક્ય યોધન કરે છે. તેમ (અથર્વણની માણ્ડૂક્યઉપનિષદ્ગત) 'અયમ્ આત્મા બ્રહ્મ' ૫ વાક્યમાં 'આત્મા' પદનો જીવ વાચ્ય છે, અને 'બ્રહ્મ' પદનો ईશ્વર વાચ્ય છે. [બ્રહ્મ-પદનો શુદ્ધ (બ્રહ્મ) વાચ્ય નથી, ईશ્વર જ વાચ્ય છે. ૫ ચતુર્થ-તરંગમાં પ્રતિપાદન કરી આવ્યા છિયે.] પૂર્વેની પેઠે વસ્ત્રે પદોની લક્ષણા છે. લક્ષ્યઅર્થ પરોક્ષ નથી, ૫ અર્થને જણાવવા સાથે 'અયમ્' પદ છે. 'અયમ્' નામ સર્વનો 'અપરોક્ષે' આત્મા બ્રહ્મ 'છે,' ૫ વાક્યનો અર્થ છે. (યજુર્વેદની વૃહદારણ્યકઉપનિષદ્ગત) 'અહં બ્રહ્માસ્મિ' ૫ (અનુભવપ્રદર્શક) મહાવાક્યમાં 'અહં'-પદનો જીવ વાચ્ય છે, અને 'બ્રહ્મ' પદનો ईશ વાચ્ય છે. વસ્ત્રે પદનો ચેતનભાગમાં લક્ષણા (છે). 'હું બ્રહ્મ છું' ૫ વાક્યનો અર્થ છે. (ઋગ્વેદની પેતરેયઉપનિષદ્ગત) 'પ્રજ્ઞાન-માનંદં બ્રહ્મ' ૫ મહાવાક્યમાં 'પ્રજ્ઞાનં' પદનો જીવ વાચ્ય (અર્થ) છે, 'બ્રહ્મ' પદનો ईશ (વાચ્ય અર્થ) છે. પૂર્વેની પેઠે લક્ષણા (છે). લક્ષ્ય જે બ્રહ્માત્મા તે આનંદગુણવાન્ નહિ કિન્તુ આનંદરૂપ છે, ૫ અર્થને જણાવવાને 'આનંદ' પદ છે. 'આત્મા-સાથે અભિન્ન બ્રહ્મ આનંદરૂપ છે.' ૫ વાક્યનો અર્થ છે. જેમ મહાવાક્યોમાં ભાગત્યાગલક્ષણા છે, તેમ અન્યવાક્યોમાં સત્ય, જ્ઞાન, આનંદ, (૫) પદો પણ શુદ્ધબ્રહ્મને ભાગત્યાગલક્ષણા ૫ જ યોધન કરે છે. શક્તિ નહિ. કેમકે શુદ્ધબ્રહ્મ કોઈ પદનો વાચ્ય નથી, ૫ સિદ્ધાન્ત છે. ૫થી સર્વ પદ વિશિષ્ટનાં

૨૦૩. અપરોક્ષ એ પ્રકારના છે. ૫ક તો સ્વયંપ્રકાશ હોવાથી બુદ્ધિરૂપ જ્ઞાનનો વિષય જે આત્માનું સ્વરૂપ તે અપરોક્ષ છે. બીજો પ્રકાર—'હું સ્વયંપ્રકાશ, આત્મા છું.' ૫રીતિ ૫ બુદ્ધિવતે અવલોકન કર્યું તે પણ 'અપરોક્ષ' કહેવાય છે. તેઓમાં પ્રથમ પ્રકારનો અપરોક્ષ નિત્ય—સદા વિદ્યમાન—છે, અને બીજા પ્રકારનો બુદ્ધિવૃત્તિરૂપ અપરોક્ષ અનિત્ય—કદાચિત્—ચરાવાળો છે.

वाचक छे, अने शुद्धनां लक्षक छे. मायानी आपेक्षिक सत्यता अने चेतननी नैरपेक्षिक सत्यता मलीने सत्यपदनुं वाच्य छे. नैरपेक्षिक सत्य लक्ष्य छे. बुद्धिवृत्तिरूपज्ञान, अने स्वयंप्रकाश (चेतनरूप)ज्ञान, वझे मली तो ज्ञान पदनुं वाच्य, अने स्वयंप्रकाशभाग लक्ष्य. विषयसंबंधजन्य सुखाकार सार्विक अंतःकरणनी वृत्ति, अने परमप्रेमनुं आस्पद स्वरूपसुख, (ए) वझे मली आनंदपदनुं वाच्य, अने वृत्तिभागने त्यागीने स्वरूप भाग लक्ष्य (छे). ए रीतिए सर्व पदनी शुद्धमां लक्षणा संक्षेपशारीरकमां प्रतिपादन करी छे.

४४४. अथ उक्तार्थसंग्रह.

प्रवित.

‘गंगामां ग्राम’ जहतीलक्षणा ए स्थान जाणी,

‘शोण धाय’ लक्षणा अजहती जणाविये;

‘ते ज जा वस्तु’ इहां लक्षणा छे भागत्याग,

वीजुं नाम जहतीअजरती शुणाविये;

‘तत्त्वमसि’ आदि महावाक्योमां भागत्याग-

लक्षणा, न जहती अजहती वताविये;

‘ब्रह्म कोई पदनो न वाच्य’ ए वखाणे वेद,

पेथी सर्व पदोमांहि रीति ए लक्षाविये.

४३.

मायामांहि सत्यता सापेक्ष रीतिए कहत,

ब्रह्ममां सत्यता निरपेक्ष रीत्या भाखिये;

बंने मली सत्यपदवाच्य मुनि भाये छे,

‘ब्रह्ममांहि सत्यता’ ते लक्ष्यभाग राखिये;

‘बुद्धिवृत्ति संबित् द्वे’ मिले ज्ञानपदवाच्य.

‘संबित् स्वरूप’ लक्ष्य, बुद्धिवृत्ति नाशिये,

‘આત્માઽને વિષયસુખ’ વાચ્યપદ આનંદનું,

વિષયસુખ ત્યાગી આત્મસુખ લક્ષ્ય આંસિયે. ૪૪.

૪૪૫. (શંકા:—વસ્ત્રે પદમાં લક્ષણા માનવી નિષ્કલ છે.)

મહાવાક્યોમાં વિરોધ દૂર કરવાને વસ્ત્રે પદમાં લક્ષણા અંગીકાર કરી. ત્યાં કોઈ કહે છે:—એક પદમાં લક્ષણા અંગીકાર કરાવે પણ વિરોધ દૂર થાય છે. વસ્ત્રે પદમાં લક્ષણા માનવાનું પ્રયોજન નથી.

દુહો.

એક જ પદમાં લક્ષણા માને, નહિ વિરોધ,

વે ય પદોમાં લક્ષણા નિષ્કલ કહે સુવોધ. ૪૫.

ટીકા.—‘સુવોધ’ નામ સુશ્રવ વસ્ત્રે પદોમાં લક્ષણા નિષ્કલ કહે છે. કેમકે એક જ પદમાં લક્ષણા માન્યેથી વિરોધ દૂર થઈ જાય છે. એનો ભાવ આ છે:—યદ્યપિ સર્વજ્ઞતાદિવિશિષ્ટની, અલ્પજ્ઞતાદિવિશિષ્ટની સાથે એકતા નથી વનતી, તથાપિ એક પદનો લક્ષ્ય(અર્થ) જે શુદ્ધ તેની વિશિષ્ટની સાથે એકતા વને છે. દૃષ્ટાન્ત:—જેમ ‘શુદ્ધમનુષ્ય બ્રાહ્મણ છે.’ એ રીતિએ શુદ્ધત્વધર્મવિશિષ્ટ મનુષ્યની, બ્રાહ્મણત્વધર્મવિશિષ્ટની સાથે એકતા કહેવી ચિરુદ્ધ છે; અને ‘મનુષ્ય બ્રાહ્મણ છે,’ એ રીતિએ શુદ્ધત્વધર્મરહિત શુદ્ધમનુષ્યને બ્રાહ્મણત્વવિશિષ્ટતા કહેવામાં વિરોધ નથી. તેમ અલ્પજ્ઞતાદિધર્મવિશિષ્ટ ચેતનની અને સર્વજ્ઞતાદિધર્મવિશિષ્ટ(ચેતન)ની એકતા ચિરુદ્ધ છે સ્વરી, પરંતુ જીવવાચક પદ અને ઈશવાચક પદની ચેતનમાં લક્ષણા કરીને, ચેતનમાત્રની, સર્વજ્ઞતાદિધર્મવિશિષ્ટની સાથે વા અલ્પજ્ઞતાદિધર્મવિશિષ્ટની સાથે, એકતા કહેવામાં વિરોધ નથી, એથી વે પદમાં લક્ષણા માનવામાં કોઈ યુક્તિ નથી.

४४६. (समाधानः-वने पदमां लक्षणा मानवी योग्य छे.)

कवित.

लक्षणा जे कहै एक पदमां तेने आ पृछो,-
 वे य पदोमप्येधी छे कियामांहि लक्षणा ?;
 प्रथम वा द्वितीयमां कहे, तेने भाखो आ-
 वाक्योनो विरोध थारो, अहां मूढलक्षणा !
 व्रणे वाक्यमां छे जीववाचक प्रथम पद
 'तत्त्वमसि' एमां आदिपद ईशलक्षणा.
 प्रथम वा द्वितीयनो न वने नियम एथी
 भागे वे य पदोमां ते लक्षणा सुलणा.

४६.

टीकाः-एक पदमां जे लक्षणा अंगीकार करे, तेने आ
 पृछोः-वने पदमांथी किया पदमां लक्षणा छे ? जो आम कहेः-
 सर्व महावाक्योना प्रथमपदमां लक्षणा छे, द्वितीयमां नहि.
 यद्वा द्वितीयपदमां लक्षणा सर्व वाक्योमां छे, प्रथममां नहि.
 तेने हे शिष्य ! आम कहेः-हे मूढलक्षण ! प्रथम वा द्वितीय
 पदमां जो नियमेकरी लक्षणा सर्व वाक्योमां माने, तो वाक्योनो
 परस्पर विरोध थारो. केम के 'व्रणे वाक्यमां' नाम 'अहं
 'ब्रह्मास्मि;' 'प्रज्ञानमानंदं ब्रह्म;' 'अयमात्मा ब्रह्म;' ए व्रण
 वाक्योमां जीववाचक पद, 'प्रथम' नाम पूर्व छे, अने 'तत्त्व-
 'मसि,' ए वाक्यमां 'आदि पद' नाम प्रथम पद 'ईशलक्षणा'
 नाम ईश्वरनुं बोधक छे. जो सर्वत्र पूर्वपदमां लक्षणा
 मानिये तो, व्रण वाक्यनो तो आ अर्थ थारोः-'चेतन' सर्वज्ञता-
 दिविशिष्ट असंसारी ईश्वररूप छे; अने 'तत्त्वमसि' वाक्यनो
 आ अर्थ थारोः-'चेतन, अल्पज्ञतादिविशिष्ट संसारी जीवरूप
 'छे.' केमके, व्रण वाक्यमां पूर्व (प्रथम) जीववाचक पद छे,
 तेनी चेतनभागमां लक्षणा, अने द्वितीय जे ईश्वरवाचकपद

तेना वाच्यनुं ग्रहण छे. अने 'तत्त्वमसि'मां आदि (प्रथम) ईशवाचक पद (छे), तेनी चेतनभागमां लक्षणा अने द्वितीय जीववाचक पद तेना वाच्यनुं ग्रहण (छे). ए रीतिए (आदि-पदमां) लक्षणानो नियम करे तो वाक्योनो परस्पर विरोध थशे. तेम सर्व वाक्योना 'द्वितीयपद' नाम आगल्या (बीजा) पदमां लक्षणा मानिये तो, व्रणे वाक्योमां पूर्व जे जीवपद, तेना वाच्यनुं ग्रहण, अने उत्तर ईशपदनी चेतनभागमां लक्षणा एथी 'अल्पज्ञतादिधर्मविशिष्ट चेतन छे,' एवो व्रणे वाच्योनो अर्थ थशे. अने 'तत्त्वमसि'मां आदि ईशपद, तेना वाच्यनुं ग्रहण, अने द्वितीय जीवपदनी चेतनभागमां लक्षणा-एथी 'सर्वज्ञतादिधर्मविशिष्ट चेतन छे,' एवो 'तत्त्वमसि'नां अर्थ थवाथी परस्पर विरोध ज थशे. ए रीतिए प्रथम वा द्वितीय पदमां लक्षणानो नियम बने नहि. एथी 'सुलक्षणा' नाम सुंदर छे लक्षण जेनां, ते आचार्य बे पदमां लक्षणा भावे छे.

४४७. अने जो एम कहे के:-'प्रथम वा द्वितीय पदमां 'लक्षणा छे,' ए नियम न करे, किन्तु 'सर्व वाक्यमां जे ईश्वर-वाचक पद तेमां लक्षणा छे' ए नियम करे.-ते ईश्वर वाचक- (पद) पूर्व होय वा उत्तर होय-एथी वाक्योनो परस्पर विरोध नथी तेनुं समाधान.

इति.

ईशपद ज लक्षक कहे, सर्व अनर्थनी खानि

ज्ञेय थाय, श्रुतिवाक्यमां, घट पुरुषार्थनी हानि. ४७.

टीका:-जो ईश्वरवाचक पदने ज लक्षक कहे, तो सर्व अनर्थ-अल्पज्ञता, पराधीनता, जन्ममरणथी आदि लइने जे दुःखनां साधन-तेनी 'खानि' जे संसारी जीव, ते श्रुतिव-

वाक्यमां ज्ञेय थाय. एयी 'पुरुषार्थनी' नाम मोक्षनी हानि थशे. एनो भाय आ छे:-जो ईश्वरवाचक पदमां ज लक्षणा माने तो महावाक्यनो आ अर्थ थशे:-तत्पदनुं लक्ष्य जे अद्वय, असंग, मायामलरहित चेतन, ते (चितन) काम कर्म अविद्याने अधीन, अल्पज्ञ, अल्पशक्ति, परिच्छिन्न,-पुण्यपाप, मुग्धदुःख, जन्ममरण, गमनागमन, आदिक अनंत अनर्थनुं पात्र छे. जो महावाक्यनो एवो अर्थ थाय तो जिज्ञासुने ए ज अर्थविषे बुद्धिनी स्थिति करवी पडशे. अने जेमां बुद्धिनी स्थिति होय छे, प्राणवियोगयी अनंतर, तेने ज प्राप्त थाय छे. एयी वेदवाक्योना विचारेकरी, मुमुक्षुने अनर्थनी ज प्राप्ति थशे, आनंदनी प्राप्ति नहि थशे. एयी 'ईश्वरवाचक पदमां लक्षणा छे, जीववाचकमां नहि.' ए नियम असंगत छे.

४४८. अने जो आम कहे के:-सर्व महावाक्योमां जे जीववाचक पद छे तेओमां लक्षणा छे, ईशवाचकमां नहि, एयी पुरुषार्थनी हानि नथी. केमके जीववाचक पदमां लक्षणा मानिये तो महावाक्यनो आ अर्थ थशे:-जे त्वंपदनुं लक्ष्य-चेतनभाग,-ते सर्वशक्ति, सर्वज्ञ, स्वतंत्र, जन्मादिक-बंधरहित, ईश्वररूप छे. ए अर्थमां बुद्धिनी स्थितिपकरी जिज्ञासुने अतिउत्तम ईश्वरभावनी ज प्राप्ति थशे. एयी जीववाचक पदमां लक्षणानो नियम करे छे. तेनुं समाधान.

(जीव ते ईश्वर नथी.) दुहो.

साक्षी त्वंपदलक्ष्य कहो कयम ईश्वरस्वरूप ?

एयी वे पद लक्षणा, भाषे यतिवरभूप.

४८.

टीका:-त्वंपदनो लक्ष्य(अर्थ) जे साक्षी ते ईशस्वरूप केम ? ए.कशे. अर्थ आ:-त्वंपदना लक्ष्यने ईश्वररूप कहेवो वने नहि. एयी 'यति' जे संन्यासी, तेओमां 'वर' नाम जे

શ્લેષ, તેઓનો 'ભૂપ' = સ્વામી (શંકરાચાર્ય) વંને પદોમાં લક્ષણા કહે છે.^{૧૦૧} એનો ભાવ આ છે, - જો જીવવાચક પદમાં લક્ષણા જે માને અને ઈશવાચક(પદ)માં માને નહિ, તેને આ પૂછિયે છિયે: - ત્વંપદની લક્ષણા વ્યાપકચેતનમાં છે, અથવા જેટલા દેશમાં જીવનો ઉપાધિ છે, - એટલા દેશમાં સ્થિત જે સાક્ષિચેતન તેમાં ત્વંપદની લક્ષણા છે ? જો વ્યાપકચેતનમાં ત્વંપદની લક્ષણા કહે તો વને નહિ, કેમ કે, ઘાચ્ય-અર્થમાં જેનો પ્રવેશ હોય તેમાં ભાગત્યાગલક્ષણા હોય છે. અને વ્યાપકચેતનનો પ્રવેશ ઘાચ્યમાં નથી, કિન્તુ જીવત્વના ઉપાધિ-દેશમાં સ્થિત જે સાક્ષિચેતન તેનો ઘાચ્યમાં પ્રવેશ છે. યથી સાક્ષિચેતનમાં જ ત્વંપદની લક્ષણા છે, વ્યાપકચેતનમાં નહિ. તે સાક્ષિચેતનમાં સર્વના હૃદયનું પ્રેરણ અને સર્વપ્રપંચ-માં વ્યાપકતાદિક ઈશ્વરના ધર્મોનો અસંભવ છે. અને સાક્ષી સદા અપરોક્ષ છે. તેને વિષે પરોક્ષતા (રૂપ) ઈશ્વરધર્મતાનો અત્યંત અસંભવ છે. અને માયારહિતને, માયાવિશિષ્ટ કહેવો અસંભવ છે. જેમ ઘંડરહિતને ઘંડી કહેવો, અને સંસ્કારરહિત દ્વિજવાલકને સંસ્કારવિશિષ્ટ કહેવો અસંભવ છે. યથી સાક્ષિ-ચેતનનો ઈશ્વરસંગ અભેદ કહે, તો, મહાવાક્ય અસંભવ અર્થનાં પ્રતિપાદક થશે.

૪૪૯. અને વક્ત્રે પદમાં લક્ષણા માને તો દોષ નથી. કેમ કે, જે યજ્ઞતાના વિરોધી ધર્મ છે, તે સર્વને ત્યાગીને, વક્ત્રે પદમાં પ્રકાશરૂપ ચેતન, જે ઘાચ્યભાગ, તે સર્વધર્મરહિત

૨૦૪. સોડયં દ્વિજ ઇતિ ઘાક્યં ત્યક્ત્વા પરોક્ષાપરોક્ષદેશાચમ ।

દ્વિજમાપ્રલક્ષકત્વાત્ કથયત્યેકયં પદાર્થયોગમયોઃ ॥ ૩૬ ॥

તદ્વત્તત્ત્વમસીતિ ત્યક્ત્વા પરોક્ષાપરોક્ષતાદીનિ ।

ચિદ્વસ્તુ લક્ષયિત્યા યોધયતિ સ્પષ્ટમતિપદનેક્યમ્ ॥ ૩૭ ॥

સ્વાત્મનિરૂપણમ્ ।

ચેતનમાં (ત્વં અને તત્) ઘણે પદોની લક્ષણા. ઉપાધિ અને ઉપાધિકૃત ધર્મોથી ચેતનનો મેદ છે, સ્વરૂપેકરી નથી. ઉપાધિ અને ઉપાધિકૃત ધર્મોનો ત્યાગ કન્યેથી, ઘણે પદોના લક્ષ્યચેતનની એકતા સંભવે છે. જેમ (કેવલ) ઘટાકાશમાં ઘટદૃષ્ટિ ત્યાગીને મટવિશિષ્ટ આકાશસાથે એકતા વને નહિ, અને મટદૃષ્ટિ (પણ) ત્યાગ કરેથી (કેવલ આકાશસંગે) એકતા વને છે.

દુહો.

તત્ ત્વં, ત્વં તત્, રીતિ એ, સર્વ વાક્યમાં જાણિ:

જેથી થાય પરીક્ષતા પરીચ્છિન્નતા હાનિ.

૪૯.

ટીકા:-સર્વ વાક્યમાં તત્ દ્વં, ત્વં તત્ (તે તું, તું તે) એ રીતિએ ઓતપ્રોતમાર્થની રીતિ જાણ. જે ઓતપ્રોતમાર્થ કન્યાથી વાક્યના અર્થમાં પરીક્ષતા અને પરીચ્છિન્નતા (રૂપ) ભ્રાન્તિની હાનિ થાય છે.

૨૦૫. ઈશ્વરની પરીક્ષતા. જીવની પરીચ્છિન્નતા.

૨૦૬. વચ્ચના તાણાતું અને વાણાતું સૂત્ર. ગમન અને આગમનરૂપ પરિચયવિના માર્ગના સમ્યક્જ્ઞાનના અમાયની પેટે ઓતપ્રોતમાર્થ વિના સમ્યક્ અભેદજ્ઞાન થાય નહિ. એથી મહાવાક્યના ઉપદેશના અનન્તર જિજ્ઞાસુને ઓતપ્રોતમાર્થ (વ્યાપક-વ્યાપ્યમાર્થ) કર્તવ્ય છે. એને અન્વય અને વ્યતિરેક પણ કહે છે. પં. પી. પુ.

૨૦૭. હાં આ પ્રશ્ન છે:—મહાવાક્યના ઉપદેશના અનન્તર જિજ્ઞાસુને વ્રહ્મ અને આત્માવિષે પરીક્ષતા અને પરીચ્છિન્નતા(રૂપ)ભ્રાન્તિ પ્રતીત થાય નહિ. તિહાં ભ્રાન્તિનું કોઈ અન્ય કારણ તો સંભવે નહિ. કિન્તુ વ્રહ્મવિષે સ્થિતા માયા અને આત્માવિષે સ્થિતા અવિદ્યા, ભ્રાન્તિનાં કારણ સંભવે. તે માયા—અવિદ્યા, વ્રહ્મને અંન આત્માને આશ્રિતા થઈને પૂર્વે રહ્યાં હતાં: તે વ્યારે જિજ્ઞાસુએ તત્ત્વપદાર્થનું શોધન કર્યું ત્યારે ચંને નષ્ટા થઈ ગયાં. જેમ ઘટસ્વરૂપનો વિચાર કરે ઘટનિષ્ઠ અવિદ્યા રહે નહિ: તેમ વ્રહ્મ અને આત્માનો વિચાર કરે સતે તેઓવિષે સ્થિતા માયા—અવિદ્યા રહે નહિ, કિન્તુ તે અધિકારીની દૃષ્ટિએ વાધિતા થાય છે. અને તૃતીયચેતનનો અમાય છે અને ચેતન વિના અન્ય જડવસ્તુને આશ્રિત માયા—અવિદ્યા રહે નહિ. અને માયાઅવિદ્યાની સ્થિતિ વિના ઉક્ત બે પ્રકારની ભ્રાન્તિ

‘તત્ ત્વં’ એ કહેવાથી ‘તત્’પદના અર્થનો ‘ત્વં’પદ અર્થ સાથે અભેદ કહ્યો. તે ત્વંપદનો અર્થ સાક્ષી નિત્ય અપરોક્ષ છે. એથી (તત્પદાર્થમાં) પરોક્ષતા ભ્રાન્તિની હાનિ. અને ‘ત્વં તત્’ એ કહેવાથી ‘ત્વં’પદના અર્થનો ‘તત્’પદના અર્થ સાથે અભેદ કહ્યો. તે તત્પદનો અર્થ વ્યાપક છે, એથી (ત્વંપદાર્થમાં) પરિચ્છિન્નતા ભ્રાન્તિની હાનિ. તેમ ‘અહં બ્રહ્મ’, ‘પ્રજ્ઞાનં બ્રહ્મ’, ‘આત્મા બ્રહ્મ’, એથી પરિચ્છિન્નતાની હાનિ. અને ‘બ્રહ્મ અહં’, ‘બ્રહ્મ પ્રજ્ઞાનં’, ‘બ્રહ્મ આત્મા’, એથી પરોક્ષતાહાનિ.

૬૦.

જીવબ્રહ્મની એકતા, કહે વેદસ્મૃતિવાણ,
શિષ્ય ! તિહાં પીછાણિયે ભાગત્યાગની સાન. ૫૦.

ટીકા:—હે શિષ્ય ! વેદવાણ (વચન) અને સ્મૃતિવાણ જીવ-
બ્રહ્મની જે એકતા કહે ત્યાં સર્વ ભાગત્યાગની સંજ્ઞા જાણવી.

૪૧૦ ૬૧.

શિષ્ય ગુરુઉપદેશ શુર્ણો, થયો જ સઘ નિહાલ;
જે સુવિચારે પહને જાય તેની જંજાલ. ૫૧.

સંભવે નહિ. અને જિજ્ઞાસુના ચિત્તમાં પ્રતીયમાના જે ભ્રાન્તિ તેની માયાઅવિદ્યા-
વિના અન્યગતિ—કારણ—સંભવે નહિ. અર્થાપત્તિપ્રમાણેકરી. માયાઅવિદ્યાની એ
સ્થિતિની કલ્પના થાય છે. એથી મહાવાક્યના ઉપદેશ અનન્તર એ માયા-
અવિદ્યા ક્યાં સ્થિતા થઈને પરોક્ષતાપરિચ્છિન્નતાભ્રાન્તિને ઉપજાવે છે, એ પ્રશ્ન છે
તેનું આ ઉત્તર છે:—

યદ્યપિ પદાર્થશોધનના અનન્તર શાત—વિચારિત—જે બ્રહ્મ અને આત્મા,—
તેઓવિષે તો માયાઅવિદ્યા સંભવે નહિ; તથાપિ મહાવાક્યની અર્થરૂપ બ્રહ્મ—આ-
ત્માની જે એકતા તે સમ્યક્ શાત થઈ નહિ, કિન્તુ અશાત છે. તે એકતાવિષે
માયા—અવિદ્યા સ્થિતા થઈને પરોક્ષતારૂપ અને પરિચ્છિન્નતારૂપ ભ્રાન્તિને ઉપજાવે
છે. તે ભ્રાન્તિના નિવારણઅર્થ ઓતપ્રોતભાવ કર્તવ્ય છે. ઓતપ્રોતભાવ કન્યે
એકતાનું સમ્યક્ જ્ઞાન થઈને માયાઅવિદ્યાની નિવૃત્તિદ્વારા પરોક્ષતાપરિચ્છિન્ન-
તારૂપ ભ્રાન્તિની નિવૃત્તિ થાય છે.

પં. પી. પુ.

सोरसो.

मिथ्या गुरु, सुरवाणो, कन्यो ग्रंथ उपदेश ए,
शुणे करे तम-हानि, आ तेनी भाषा करी.

५२.

इहो.

अगृधदेवने स्वप्नमां गुरुए किध उपदेश;

पण न नाश्यं दुःखमूल ए, मिथ्या घननो वेश.

५३.

वेश नाम स्वरूप अन्य अर्थ स्पष्ट.

४५१. (ए पूर्वोक्त ग्रंथ भणे सते पण दुःखनुं मूल भासे छे,
एम शिष्य कहे छे.)

अगृध उवाच. चौपारं.

भगवन् ! आपे ग्रंथ भणाव्यो, अर्थसहित ते मज मन आव्यो;
वन दुःखमूल तोय मज भासे, कहाँ उपाय जेथी ए नासे. ५४.

४५२. गुरु उत्तर दे छे:-(तेप्रमाणे आचरतां स्वप्नरूप सर्वनो
नाश थई स्वरूपनी प्राप्ति थाय छे.)

बोल्या गुरु, शुणि शिष्यनी वाणि, शुण शिशु थाय जेथी वनहानि,
एवो उपाय अन्य न कोई, वननाशक हेतु आ सोई. ५५.

महावाक्यनो अर्थ विचार ज, -'हुं अगृध' ए सबल पोकार ज,
शुणी शिष्ये फरि वाक्य विचारी, 'अहं अगृध' दीधुँ उँचारी. ५६.

निद्रा गई, प्रकाशां नयन ज, -नाश्यां वन, गुरु, ग्रंथ ज, सर्व ज
थयो सुखी, विसन्थो वनदुःख ते, हतो अगृध पाम्यो निजरूप ते.

(अंक ३३३ थी अंक ४५२ पर्यन्त अगृधदेव अर्थ रचित
ग्रंथनी समाप्ति.)

४५३. इहो.

निद्राथी अगृधविषे, धयुं वनदुःख जे रीति;
आत्मामां अज्ञानथी, त्यम जगदुःखप्रतीति.

५८.

ज्यम मिथ्या गुरु-ग्रंथयी, मिथ्या वन संहार;
त्यम मिथ्या गुरु-वेदथी, मिथ्या जग परिहार. ५९.
लक्ष्यार्थ लक्ष्मीं वाक्यनो, थाय जिज्ञासु निहाल;
निरावरण ते आप छे, दादु दीनदयाल. ६०.

इति श्रीविचारसागरे गुरुवेदादिसाधनमिथ्यावर्णनं
नाम षष्ठस्तरंगः
समाप्तः ६



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीविचारसागरस्य

सप्तमतरंगप्रारंभः



अथ जीवन्मुक्ति-विदेहमुक्तिवर्णनं.

४५४ इति

उत्तम मध्य कनिष्ठ त्रण शुण्यो षं गुरुउपदेशः
लह्यो ब्रह्मात्मा उत्तमे, रह्यो न संशय लेश. १.

टीका:-यद्यपि गुरुप उपदेश त्रणेने (उत्तम, मध्यम, अने कनिष्ठ शिष्योने) साथे ज कन्यो, तथापि गुरुउपदेशथी साक्षात्कार उत्तम (अधिकारी) तत्त्वदृष्टिने थयो.

(जीवन्मुक्तनी स्थिति.) इहा.

भ्रमण करे ज्यम पवनथी, पीपरपत्र सुकु आ य,
शेषकर्म प्रारब्धथी, क्रिया करे देखाय. २.

कदा चढी रथ वाजी गज, वागवगीचे सोई,
नग्नपाद् चली पकला, फरी, आवे त्यां जोई. ३.

विविध वेश, शय्या शयन, उत्तम भोजन भोग;
कदापि अनशन, गिरिगुहा, रजनी शिला संयोग. ४.

२०८. बाधित देहादिक प्रपंचनी प्रतीति सहित ब्रह्मस्वरूपे अवस्थिति=जीवन्मुक्ति.

२०९. प्रपंचनी प्रतीतिरहित ब्रह्मस्वरूपे अवस्थिति=विदेहमुक्ति.

- करीं प्रणाम पूजन करे, कहिं जन लाख हजार;
उभय लोकथी भ्रष्ट गणीं कर्मीं कहे, धिक्कार. ५.
- जे तेनी पूजा करे, संचित सुकृत्य सुलेय;
दोषदृष्टिथी जे लखे तेने पाप फल देय. ६.
- एवो तेना देहनो, नियम विना व्यवहार;
थाय न कदि संदेह भ्रम, लह्युं तत्त्व निर्धार. ७.
- नहि तेने कर्तव्य कइं, थयो भेदभ्रम नाश;
उपज्यो वेदप्रमाणथी, अद्वय ब्रह्मप्रकाश.* ८.
४५५. (पूर्वपक्षीनो अंक ४५५ थी ४७३ पर्यंत
आक्षेप छे के:-ज्ञानी सदा समाधि इच्छे छे.)
- ज्ञानीना व्यवहारमां, कोई नियम कहे ज;
त्रिपुटीं तजे, दुःख हेतु गणीं, प्रेमे समाधि ले ज. ९.
- थाय कइंक व्यवहार जो, मिक्षाशन जलपान;
भूले नहि ज समाधिसुख, थाय त्रिपुटींथीं ग्लान. १०.
- लहे प्रयत्न समाधिनां वलीं ज्ञानी प हेत;
जे समाधि सुख त्यजीं भ्रमे, नर कुंकुर खर प्रेत. ११.
- गौडपादमुनिकारिका लिख्यो समाधिप्रकार;
ज्ञानी त्यजी विक्षेप इम, लहे सकल सुखसार. १२.
- अष्टअंग विन थाय नहि, ते समाधि सुखमूल;
ते अष्टांग ह्ये शुणो, जे समाधिअनुकूल. १३.
- नियम पंच, यम पंच, वलीं आसन बहु प्रकार;
प्राणायाम अनेकविध, प्रत्याहार विचार. १४.

હું ધારણા, ધ્યાન યત્ની, ડને સચિકલ્પ સમાધિ;

અષ્ટ અંગ ય સાધોને, નિર્વિકલ્પ આરાધ્ય*.

૧૫.

ટીકા:-દુહાના અક્ષરઅર્થ સ્પષ્ટ છે. માય આ છે:-જ્ઞાન-વાન્ને શરીરવ્યવહારનો નિયમ નથી. કેમકે જ્ઞાનીના વ્યવહારમાં અજ્ઞાન અને તેનું કાર્ય-ભેદમ્નાન્તિ, તથા ભેદમ્નમનાં કાર્ય-રાગ દ્વેષ-તાં છે નહિ; કિન્તુ જ્ઞાનવાન્નાં પણ પ્રારબ્ધ-કર્મ શેષ રહે છે, તે જ નેના વ્યવહારમાં નિમિત્ત છે. તે પ્રારબ્ધ-કર્મ પુરુષભેદથી નાનાપ્રકારનું હોય છે, યથી જ્ઞાનીના પ્રારબ્ધકર્મજન્ય વ્યવહારનો નિયમ નથી, ય (પ્રથમ દુહાથી ૮ દુહાપર્યન્તનો) સિદ્ધાન્ત પક્ષ છે. (૮.) (નવમા દુહાથી ૧૫ મા દુહાસુધી પૂર્વપક્ષનો અનુવાદ છે તેનાં માય.) કોઈ આમ કહે છે.-જ્ઞાનીના વ્યવહારમાં કોઈ અન્યકર્મનો તો નિયમ છે નહિ, પરંતુ જ્ઞાનવાન્ને નિવૃત્તિનો નિયમ છે. પ્રવૃત્તિ થાય તો દેહસ્થિતિના હેતુ-મિશ્રાઅશન, કૌપીન-આચ્છાદનમાત્રપ્રહણમાં પ્રવૃત્તિ થાય છે; અન્યપ્રવૃત્તિ થાય નહિ. કેમકે જ્ઞાનની ઉત્પત્તિથી પ્રથમ જિજ્ઞાસાકાલમાં વિષય-માં દોષદષ્ટિપ્રકરી વૈરાગ્ય થાય છે. તે વૈરાગ્ય જ્ઞાનની ઉત્પત્તિથી અનંતર પણ દોષદષ્ટિપ્ર તથા વિષયોમાં મિથ્યા-બુદ્ધિપ હોય છે. અપરોક્ષરૂપથી મિથ્યા જાણેલા પદાર્થોમાં સત્ય-બુદ્ધિ થાય નહિ. દોષદષ્ટિથી રાગ થાય નહિ, અને પ્રવૃત્તિ ગમથી થાય છે; જ્ઞાનીને રાગ સંભવે નહિ, યથી પ્રવૃત્તિ ગમ નહિ.

(ત્રણ પ્રકારનાં કર્મ.)

શરીરનિર્વાહક ભોજનાદિકોમાં પ્રવૃત્તિ તો રાગ વિના પ્રારબ્ધ-

* ૧૬ મો દુહો હિન્દુસ્થાની આઠ્ઠિતિમાં અત્ર મુદ્રાકિત કન્યો છે, પરંતુ તેને અંક ૪૭૩ પછી આ આઠ્ઠિતિમાં મૂક્યો છે.

કર્મથી સંભવે છે. કર્મ ષણ પ્રકારનાં છે. સંચિત, આગામિ, અને પ્રારબ્ધ. તેમાં ભૂતશરીરમાં કરેલાં ફલારંભ-રહિત કર્મ સંચિત કહેવાય છે. ભવિષ્યત્ (વર્તમાન શરીરે થતાં) કર્મ આગામિ કહેવાય છે. ભૂતશરીરમાં કરેલાં વર્તમાન શરીરના હેતુ કર્મ પ્રારબ્ધ કહેવાય છે. તેઓમાંથી સંચિત કર્મનો જ્ઞાનથી નાશ થાય છે. જ્ઞાનવાનના આત્મામાં કર્તૃત્વવ્રાન્તિ નથી, યથી તેને આગામિ કર્મનો સંભવ નથી. અને જે પ્રારબ્ધ-કર્મે જ્ઞાનીના શરીરનો આરંભ કન્યો છે, તે જ પ્રારબ્ધકર્મ, શરીરસ્થિતિના હેતુ ભિક્ષાદિકોમાં પ્રવૃત્તિ કરાવે છે. પ્રારબ્ધ-કર્મનો નાશ ભોગ વિના થતો નથી.

અને કહિં આમ લખ્યું છે:-સંચિત (અને) આગામિ કર્મની પેઠે જ્ઞાનીનાં પ્રારબ્ધ કર્મ ષણ રહે નહિ, તેથી ભોજનાદિ પ્રવૃત્તિ ષણ જ્ઞાનીને સંભવે નહિ, તેનો આ અભિપ્રાય છે: જ્ઞાનીની દૃષ્ટિથી આત્મામાં કર્મ અને તેનાં ફલનો સં ધ ધ નથી, યથી આત્મામાં સર્વ કર્મનો નિપેધ, (૫) અભિપ્રાયથી, પ્રારબ્ધનો નિપેધ કન્યો છે; અને જ્ઞાનથી પૂર્વ કરેલાં પ્રારબ્ધનો જ્ઞાનીના શરીરને ભોગ થાય નહિ, ય અભિપ્રાયથી પ્રારબ્ધનો નિપેધ નથી. કેમકે સૂત્રકારે આ લખ્યું છે:-જ્ઞાનોનાં સંચિતકર્મનો જ્ઞાનથી નાશ થાય છે, આગામિનો સંવંધ થાય નહિ. (અને) પ્રારબ્ધનો ભોગથી નાશ થાય છે. યથી પ્રારબ્ધના ઘલથી શરીર-નિર્વાહક્રિયા જ્ઞાનીની થાય છે, અધિક નહિ.

૪૫૬. પરંતુ કર્મ નાના પ્રકારનાં છે. જ્યાં એક કર્મ નાના શરીરનું આરંભક હોય, યવા કર્મથી રચિત પ્રથમશરીરમાં જેને જ્ઞાન થાય, ત્યાં જ્ઞાનવાનને અન્યશરીરનાં પ્રાપ્તિ થઈ જોઈયે, કેમકે, જે કર્મે ફલનો આરંભ કન્યો છે તે પ્રારબ્ધ કહેવાય છે, તેનો ભોગ વિના નાશ થાય નહિ. અને ક શરીર-

नो हेतु कर्म एक छे, तेणे प्रथमशरीर जे उपजान्युं तेमां ज्ञान थयुं, ते कर्मनां फल, ज्ञानथी अनंतर, अन्यशरीर शेष रहे छे, एथी ज्ञानवान्ने पण अन्यशरीरनी प्राप्ति थयी जोइये.

४५७. अने जो आम कहे:-प्रारब्धकर्मनुं फल-जेटलां शरीर होय-तेटलां शरीर ज्ञानीने पण थाय छे, प्रारब्धना भोगथी अधिक थाय नहि, एथी, ज्ञान पण सफल थाय छे, ते बने नहि. केमके वेदनो ढंढेरो आ छे:-'ज्ञानवान्ना 'प्राण अन्यलोकमां, या आ लोकनां अन्यशरीरमां गमन 'नथी करता, किन्तु ते ज स्थानमां (ते ज देशावच्छिन्न- 'चेतनमां) अंतःकरण इन्द्रियसहित लीन थाय छे' अने प्राणगमन विना अन्यशरीरनी प्राप्ति संभवे नहि. एथी 'ज्ञान- 'वान्ने प्रारब्धशेषथी अन्यशरीर थाय छे', ए कहेतुं तो समवे नहि.

किन्तु आ समाधान छे:-ज्यां अनेक शरीरनुं आरंभक एक कर्म होय, त्यां अंतशरीरमां ज ज्ञान थाय छे. पूर्वशरीर- मां ज्ञान थाय नहि. केमके अनेक शरीरनुं आरंभक प्रारब्ध ज ज्ञाननुं प्रतिबंधक छे. जेम विषयोमां आसक्ति बुद्धिमंदाता भेदवादिवचनमां विश्वास, ज्ञानना प्रतिबंधक छे; तेम विलक्षण (जन्मांतरनो हेतुशेष) प्रारब्ध पण ज्ञाननु प्रतिबंधक छे. अने ज्ञानना प्रतिबंधक सते, ज्यां ज्ञाननां साधन श्रवणा- दिक होय त्यां, प्रतिबंधक दूर थयेथी, प्रथमजन्मविषे करेलां जे श्रवणादिक छे तेभोनाथी ज, अन्यशरीरमां ज्ञान थाय छे, जेम वामदेये पूर्वजन्मविषे श्रवणादिक कन्यां त्यारे प्रारब्ध- नुं फल एकशरीरशेष होतां ज्ञान थयुं नहि, किन्तु श्रवणा- दिक करतां वर्तमानशरीरनो पात थईने अन्यशरीरनी

પ્રાપ્તિ થયાથી, પૂર્વજન્મમાં કરેલાં શ્રવણાદિકોથી ગર્ભવિપે જ્ઞાન થયું છે. યથી જ્ઞાનથી અનંતર અન્યશરીરનો સંબંધ થાય નહિ. અને વર્તમાનશરીરની ચેષ્ટા પ્રારબ્ધેકરી થાય છે, ત્યાં જેટલી ચેષ્ટા શરીરની નિર્વાહક છે તે જ થાય, રાગજન્યા અધિક-ચેષ્ટા થાય નહિ. યથી સર્વપ્રવૃત્તિરહિત જ્ઞાની હોય છે.

૪૫૮. ૫ રીતિ ૫ નિવૃત્તિપ્રધાન જ્ઞાનીનો વ્યવહાર હોય છે. યનેવિપે આવી શંકા છે:-મનનો સ્વભાવ અતિ ચંચલ છે. નિરાલંબ (આશ્રયરહિત) મનની સ્થિતિ હોય નહિ. કદં આલંબનથી મનની સ્થિતિ હોય છે, યથી મનને કદં આલંબનની પ્રાપ્તિનિમિત્ત પળ જ્ઞાનવાન્ની પ્રવૃત્તિ થાય છે.

તેનું આ સમાધાન છે:-યદ્યપિ સમાધિહીન પુરુષનું મન ચંચલ હોય છે, તથાપિ સમાધિથી મનનો વિજય થાય છે; અને જ્ઞાનવાન્ સમાધિવિપે સ્થિત થાય છે, તેથી જ્ઞાનવાન્ની પ્રવૃત્તિ થાય નહિ. તે સમાધિનાં અષ્ટ અંગ. (અંક ૪૫૯ થી ૪૬૫ પર્યન્ત.)

૪૬૯. (યોગનાં અષ્ટાંગ.)

તે સમાધિ આ અષ્ટ અંગોથી થાય છે:-યમ ૧, નિયમ ૨, આસન ૩, પ્રાણાયામ ૪, પ્રત્યાહાર ૫, ધારણા ૬, ધ્યાન ૭, સવિકલ્પ સમાધિ ૮, ૫ અષ્ટ અંગોથી સમાધિ થાય છે.

૪૬૦. (યમ.)

અર્હિસા, સત્ય, અસ્તેય, બ્રહ્મચર્ય, અપરિગ્રહ, ૫ પાંચ યમ કહ્યા છે.

૪૬૧. (નિયમ.)

શૌચ, સંતોષ, તપ (મનઇન્દ્રિયનું પકાપ્ર), સ્વાધ્યાય (સ્વશાખારૂપ વેદાધ્યયન), શ્વરપ્રણિધાન (ઉપાસના), ૫ પાંચ નિયમ કહેવાય છે. અને (સુંદરદાસકૃત) જ્ઞાન-

સમુદ્ર પ્રથમાં દશ પ્રકારના યમ અને દશ પ્રકારના નિયમ કહ્યા છે, તે પુરાણની રીતિપ કહ્યા છે. વેદાન્તસંપ્રદાયમાં યમનિયમના પાંચ પાંચ જ ભેદ છે.

૪૬૨. (આસનઃ)

અને આસનના ભેદ અનંત છે. તેઓમાં સ્વસ્તિક, ગોમુખ, ઘીર, કૂર્મ, પદ્મ, કુક્કુટ, ઉત્તાન, કૂર્મક, ધનુષ્ય, મત્સ્ય, પશ્ચિમતાન, મયૂર, શવ, સિંહ, ભદ્ર, સિદ્ધ, શ્યાદિક ચોરાસી આસન યોગપ્રંથોમાં લખ્યાં છે. તેઓનાં લક્ષણ પણ ત્યાં લખ્યાં છે. પ્રંથના વિસ્તારમયથી, તથા વેદાન્તમાં અત્યંત ઉપયોગી નહિ થયી, લક્ષણ (અથ) લખ્યાં નથી. તેઓમાં પણ, સિંહ, ભદ્ર, પદ્મ, સિદ્ધ, -૫ ચાર આસન પ્રધાન છે. તે ચારમાં પણ સિદ્ધ આસન અત્યંત પ્રધાન છે. તેનું આ લક્ષણ છે:-ચામપાદની પડી (પાનો), ગુદા અને મેદૂ(પુરુ-પનું અસાધારણ ચિહ્ન-ઉપસ્થ)ની મધ્ય શીવળમાં દાવીને મૂકે, દક્ષિણ પાદની પડી મેદૂની ઉપર દાવીને મૂકે; મૂકુટીના અંતરમાં દ્વિપિ રાલે; સ્થાણુ(શાખાશૂન્ય વૃક્ષ-સ્તંભ)ની પેઠે સરલ નિશ્ચલ શરીરેથી સ્થિતિને સિદ્ધાસન કહે છે.

અને કોઈ આયું કહે છે:-ચામપાદની પડી શિવળમાં ન લગાવે, કિન્તુ મેદૂની ઉપર લગાવે, અને તેના ઉપર દક્ષિણ પડી મૂકે, વીરું પૂર્વ પ્રમાણે. ૫ સિદ્ધાસન જ અતિપ્રધાન છે. કેમકે, કેટલાંક આસન તો રોગનાશના હેતુ છે, અને કોઈ આસન યવાં છે કે, પ્રાણાયામાદિક સમાધિનાં અંગ, જેઓથી થાય છે. અને સિદ્ધાસન સમાધિકાલમાં હોય છે, યથી (તે) અતિપ્રધાન છે. અને જ વજ્રાસન, મુક્તાસન, ગુપ્તાસન, કહે છે.

૪૬૩. (પ્રાણાયામ.)

આસનસિદ્ધિથી અનંતર પ્રાણાયામ પણ કરે. તે પ્રાણાયામ વહુ પ્રકારનો છે. તથાપિ સંક્ષેપથી આ લક્ષણ છે:-નાસિકાના વામ (ડાવા) -છિદ્રદ્વારા 'ઇડા'નામે નાડીપકરી વાયુને પૂરણ કરે તેને પૂરક કહે છે; અને દક્ષિણે (જમણી પાસ)કરી છોડી દે તેને રેચક કહે છે. સુપુમ્ણા(નાડી)પ રોકે તેને કુંભક કહે છે. ૫ રીતિપ પૂરક, રેચક, કુંભકને પ્રાણાયામ કહે છે. તે બે પ્રકારનો છે:-૧ક અગર્ભ છે, તેમ વીજો સગર્ભ છે [પ્રણવના ઉચ્ચારણરહિત પ્રાણાયામ અગર્ભ કહેવાય છે. પ્રણવના ઉચ્ચારણસહિત પ્રાણાયામ સગર્ભ કહેવાય છે.]

૪૬૪. (પ્રત્યાહાર, ધારણા, અને ધ્યાન.)

વિપયોથી સકલ ઇન્દ્રિયના નિરોધને પ્રત્યાહાર કહે છે. અંતરાયરહિત અંતઃકરણની સ્થિતિ ધારણા કહેવાય છે. અંતરાયસહિત અદ્વિતીયવસ્તુ વિષે અંતઃકરણનો પ્રવાહ ધ્યાન કહેવાય છે.

૪૬૫. (સમાધિ અને તેના પ્રકાર.)

વ્યુત્થાન સંસ્કારનો તિરસ્કાર અને નિરોધ સંસ્કારની પ્રકટતા સતે અંતઃકરણનો ઇકાગ્રતાસ્વરૂપરિણામ સમાધિ કહેવાય છે. તે સમાધિ બે પ્રકારનો છે:-૧ક સવિકલ્પ સમાધિ છે, અને વીજો નિર્વિકલ્પ સમાધિ છે. જ્ઞાતાજ્ઞાનક્ષેયરૂપ ત્રિપુટીમાનસહિત અદ્વિતીય બ્રહ્મવિષે અંતઃકરણની વૃત્તિની સ્થિતિ સવિકલ્પસમાધિ કહેવાય છે. તે સવિકલ્પ-સમાધિ બે પ્રકારનો છે.

૧ક તો શબ્દાનુવિદ્ધ છે, અને વીજો શબ્દાનુવિદ્ધ છે. 'અહં બ્રહ્માસમિ' ૫ શબ્દેકરીને 'અનુવિદ્ધ' નામ સહિત હોય

તે શબ્દાનુવિદ્ધ કહેવાય છે. શબ્દરહિતને શબ્દાનુ-
વિદ્ધ કહે છે. ત્રિપુટીમાનરહિત આગંદ્યગ્રહાકારઅંતઃકરણ-
વૃત્તિની સ્થિતિ નિર્વિકલ્પસમાધિ કહેવાય છે. ધૃતિ-
પ સપ્રિકલ્પ અને નિર્વિકલ્પ સમાધિના યે ભેદ છે. તેઓમાં
સવિકલ્પસમાધિ સાધન છે; અને નિર્વિકલ્પસમાધિ ફલ છે.
સાધનરૂપ જે સવિકલ્પસમાધિ છે, તેવિષયે યદ્યપિ ત્રિપુટીરૂપ
દ્વેત પ્રતીત થાય છે, તથાપિ તે દ્વેત આ રીતિપે બ્રહ્મરૂપેકરી-
ને પ્રતીત થાય છે:-જેમ મૃત્તિકાના વિકારને મૃત્તિકારૂપ
જાણ્યાર્થી વિવેકીને મૃત્તિકાના વિકાર-ઘટાદિક-પ્રતીત પણ
થાય છે, પરંતુ મૃત્તિકારૂપ જ પ્રતીત થાય છે; તેમ સવિકલ્પ
સમાધિમાં ત્રિપુટીદ્વેત બ્રહ્મરૂપ જ પ્રતીત થાય છે. નિર્વિકલ્પ-
સમાધિરિપે પણ, સવિકલ્પસમાધિની પેઠે, ત્રિપુટીરૂપ દ્વેત
વિદ્યમાન પણ હોય છે, તોપણ ત્રિપુટીદ્વેતની પ્રતીતિ થાય
નહિ. જેમ જલમાં લવણને (મિઠાને) નાંખે, ત્યાં લવણ વિદ્ય-
માન હોય છે, પરંતુ નેત્રથી લવણની સર્વથા પ્રતીતિ થાય
નહિ. ધૃતિપે સવિકલ્પ નિર્વિકલ્પ(સમાધિ)નો આ ભેદ
સિદ્ધ થયો:-સવિકલ્પસમાધિમાં બ્રહ્મરૂપેકરીને (ત્રિપુટીરૂપ)
દ્વેતની પ્રતીતિ અને નિર્વિકલ્પ સમાધિમાં ત્રિપુટીરૂપ દ્વેતની
અ પ્રતીતિ.

૪૬૬. (સુપુતિઅવસ્થા અને નિર્વિકલ્પસમાધિમાં ભેદ.)

સુપુતિથી નિર્વિકલ્પ(સમાધિ)નો ભેદ આ છે:-સુપુતિમ
અંતઃકરણની બ્રહ્માકારવૃત્તિનો અભાવ હોય છે. અને નિર્વિ-
કલ્પસમાધિમાં અંતઃકરણની બ્રહ્માકારવૃત્તિ તો હોય છે
(પરંતુ) તેનું માન હોય નહિ. ધૃતિપે સુપુતિમાં તો વૃત્તિ-
સહિત અંતઃકરણનો અભાવ હોય છે; અને નિર્વિકલ્પસમા-
ધિમાં વૃત્તિસહિત અંતઃકરણ તો હોય છે (કારણ નિદ્રાલુની

પેઠે સમાધિસ્થ યોગી પડી જતો નથી. પરંતુ) તે (અંતઃ-
કરણ)ની પ્રતીતિ હોય નહિ. નિર્વિકલ્પસમાધિવિષે અંતઃકરણની
જે બ્રહ્માકારવૃત્તિ હોય છે, તેનો હેતુ સવિકલ્પસમાધિનો અ-
ભ્યાસ છે. પથી સાધનરૂપ અષ્ટઅંગોમાં સવિકલ્પસમાધિ
ગણ્યો છે. નિર્વિકલ્પ સમાધિ ફલ છે.

૪૬૭ (નિર્વિકલ્પસમાધિના ત્રે પ્રકાર.)

તે નિર્વિકલ્પસમાધિ ત્રણ ત્રે પ્રકારનો હોય છે:-૧) એક અદ્વૈત-
ભાવનારૂપ અને યોગી અદ્વૈતાવસ્થાનરૂપ હોય છે. અદ્વૈત-
બ્રહ્માકારઅંતઃકરણની અજ્ઞાતવૃત્તિસહિત (સમાધિ) હોય તે
'અદ્વૈત ભાવનારૂપ નિર્વિકલ્પસમાધિ' કહેવાય છે. ૨) સમા-
ધિમાં અભ્યાસ અધિક થયાથી (અજ્ઞાત) બ્રહ્માકારવૃત્તિ ત્રણ
શાન્ત થઈ જાય છે, પથી વૃત્તિરહિતને 'અદ્વૈતાવસ્થાનરૂપ
નિર્વિકલ્પસમાધિ' કહે છે. જેમ તત્ત્વ લોહના ઉપર જલનો વિંદુ
નાંહ્યો (તે) તત્ત્વલોહમાં પ્રવેશ કરે છે (લય થાય છે), તેમ
અદ્વૈતભાવનારૂપ સમાધિના દૃઢ અભ્યાસથી અત્યંત પ્રકાશ-
માન બ્રહ્મવિષે વૃત્તિનો લય થાય છે, તે અદ્વૈતાવસ્થાનરૂપ
નિર્વિકલ્પસમાધિ જ મુખ્ય ફલ છે, તેનું સાધન અદ્વૈતભાવના-
રૂપ નિર્વિકલ્પસમાધિ છે.

૪૬૮. અદ્વૈતાવસ્થાનરૂપ સમાધિ અને સુપુત્તિનો આટલો
મેદ છે:-સુપુત્તિમાં વૃત્તિનો લય અજ્ઞાનમાં થાય છે, અદ્વૈ-
તાવસ્થાનસમાધિમાં વૃત્તિનો લયે બ્રહ્મપ્રકાશમાં થાય છે.

૨૧૦. નિર્વિકારતયા વૃત્ત્યા બ્રહ્માકારતયા પુનઃ ।

વૃત્તિવિસ્મરણ સમ્યક્ સમાધિરભિધીયતે ॥

૨૧૧. રહ્યાં આ રહસ્ય છે:-યદ્યપિ ઉક્ત સમાધિવિષે નિઃશેષ રત્નતમના
તિરોધાનથી આધિર્માર્ગને પ્રાપ્ત થયા શુદ્ધસત્ત્વગુણરૂપ ઉપાદાનવિષે જ વૃત્તિનો
લય સંભવે છે, નિર્વિકાર બ્રહ્મપ્રકાશવિષે નહિ; [તત્ત્વ લોહવિષે જલવિંદુના લયનું

અને સુષુપ્તિનો આનંદ અજ્ઞાન આ ઘૃ ત છે, અને સમાધિમાં નિ રા ય ર ણ બ્રહ્માનંદનું માન થાય છે.

૪૬૯. (નિર્વિકલ્પસમાધિમાં ચાર વિગ્ર.)

પરંતુ નિર્વિકલ્પસમાધિમાં ચાર વિગ્ર હોય છે. તે નિ-
પેય કરવાને કહેવાય છે. લય ૧, વિશેષ ૨, કપાય ૩,
અને રસાસ્વાદ ૪.

(લય અને તેનું વિરોધિ ચિત્તસંબોધન.)

આલસ્યેકરીને અથવા નિદ્રાપકરીને ઘૃત્તિના અભાયને લય કહે છે. તે લયથી સુષુપ્તિસમાન અવસ્થા થાય છે, બ્રહ્માનંદ-
નું માન થાય નહિ. યથી નિદ્રાઆલસ્યાદિ નિમિત્તથી જ્યારે ઘૃત્તિનો પોતાના ઉપાદાન અંતઃકરણમાં લય થતો દેખે, ત્યારે યોગી સાવધાન થઈને નિદ્રાદિકોને રોકીને ઘૃત્તિને જગાડે. ય રીતિપ લયરૂપ વિગ્રનું વિરોધિ (અને) નિદ્રાઆલસ્યનિરોધ-
સહિતઘૃત્તિના પ્રવાહરૂપ જે જાગરણ તેને ગૌડપાદાચાર્ય ચિત્તસંબોધન કહે છે.

૪૭૦. (વિશેષ અને તેનો વિરોધી શમ.)

વિશેષનો આ અર્થ છે. જેમ ઘાજ અથવા ચિલાડીથી ડરીને ચકલી ગૃહમાં પ્રવેશ કરે, ત્યારે મયઘ્યાકુલને ગૃહના અન્તર તત્કાલ સ્થાન દેખાય નહિ, યથી ફરી બહિર આવીને મય અથવા મરણરૂપ રોદને પ્રાપ્ત થાય છે. તેમ અના-

દષ્ટાન્ત કહ્યું ત્યાં પણ વિચારદષ્ટિપ પાર્થિવ લોહવિપે જલબિંદુનો લય નહિ, કિન્તુ જલનું ઉપાદાન જે અગ્નિમાત્ર તેવિપે જલબિંદુનો લય થાય છે. તેનો તત્ત લોહવિપે ઉપચાર-ક્રયન-થાય છે.] તથાપિ બ્રહ્મપ્રકાશના માનરૂપ નિમિત્તેકરી ઘૃત્તિનો લય થયો છે, યથી ઉપચારથી બ્રહ્મપ્રકાશવિપે લય કહેવાય છે. કિંવા તે સમા-
ધિમાન્ બ્રહ્મવિદ્વરિષ્ટની દષ્ટિપ ગુણાદિક પ્રતીત થાય નહિ; કિન્તુ શુદ્ધબ્રહ્મ પ્રતીત થાય છે. ત્યાં તે ઘૃત્તિનો બ્રહ્મવિરત્ત દષ્ટિનો-અભાવ થયો, યથી પણ બ્રહ્મપ્રકાશ-
વિપે પ્રઘૃત્તિનો લય કહેવાય છે.

ત્મપદાર્થોને દુઃખહેતુ જાણીને અદ્વૈતાનંદને વિષય કરવા-
સારૂ અંતર્મુખા થઈ જે વૃત્તિ, -ત્યાં વૃત્તિનો વિષય ચેતન અતિ-
સૂક્ષ્મ છે, પથી, કિંચિત્કાલ વૃત્તિની સ્થિતિ વિના, તત્કાલ
જ ચેતનસ્વરૂપ આનંદનો લાભ થાય નહિ, તેથી-(તે) વૃત્તિ
વહિર્મુખા થાય છે, એ રીતિએ વહિર્મુખવૃત્તિ વિક્ષેપ કહેવાય
છે. તે વૃત્તિની સ્થિરતા વિના સ્વરૂપાનંદનો અલાભ હોય
છે. પથી અંતર્મુખવૃત્તિ થયાથી પણ જેટલો કાલ વૃત્તિ બ્રહ્મા-
કારા થાય નહિ, તેટલો કાલ બાહ્યપદાર્થોમાં, દોષભાવ-
નાથી, વૃત્તિને વહિર્મુખતા યોગી થવા દે નહિ; કિંતુ વૃત્તિની
અંતર્મુખતા જ સ્થાપન કરે. વિક્ષેપરૂપ વિગ્નનો વિરોધી જે
યોગીનો પ્રયત્ન, તેને ગૌડપાદાચાર્યે શમ કહ્યો છે.

૪૭૧. (કપાય અને તેનું વિરોધિ-વિષયમાં દોષદર્શન.)

રાગાદિ દોષને કષાય કહે છે. યદ્યપિ રાગાદિક વે
પ્રકારના છે-એક બાહ્ય છે અને ધીજા આંતર છે. સ્ત્રીપુત્ર-
ધનાદિક જેઓના વિષય થ તે મા ન હોય તે (રાગાદિ) બાહ્ય
કહેવાય છે. ભૂતનું અથવા મા ધી નું ચિન્તનરૂપ જે મનો-
રાજ્ય તે (રાગાદિ) આંતર કહેવાય છે. તે બંને પ્રકારના
રાગાદિક સમાધિમાં પ્રવૃત્ત યોગીવિષે સંભવે નહિ.

(ચિત્તની પંચભૂમિકા.)

કેમકે ચિત્તની પંચભૂમિકા છે. તેમાં એક ક્ષેપ નામ ભૂમિકા
છે, વીજી મૂઢતા, ત્રીજી વિક્ષેપ, ચોથી પકામ્રતા અને પાંચમી
નિરોધભૂમિકા છે.

લોકવાસના, દેહવાસના, શાસ્ત્રવાસના અને આદિલેરને
સ્વોપુષ્ણને પરિણામ તે શ્લેષ અભ્યાસપ્રવૃત્તિ. (તેને) શ્લેષ કહે
છે. નિદ્રાઆલસ્યાદિક તમોગુણપરિણામને મૂઢતા કહે છે.
ધ્યાનમાં પ્રવૃત્તચિત્તની કદાચિત્ત બાહ્યપ્રવૃત્તિને વિક્ષેપ કહે

છે. અંતઃકરણનો અતીતપરિણામ અને વર્તમાનપરિણામ સમાનાકાર હોય તેને પૃકાપ્રતા કહે છે. ૫ પૃકાપ્રતાનું લક્ષણ યોગસૂત્રમાં પતંજલિપ કહ્યું છે તેનો ભાવ આ છે:- સમાધિકાલમાં યોગીના અંતઃકરણમાં પૃકાપ્રતા હોય છે, તે પૃકાપ્રતા વૃત્તિના અભાવરૂપ નહિ, કિન્તુ જેટલા અંતઃકરણના પરિણામ સમાધિકાલમાં થાય છે તે સર્વ, પ્રલને જ વિચય કરે છે; ૫થી અંતઃકરણના અતીતપરિણામ અને વર્તમાનપરિણામ કેવલ પ્રલાકાર હોવાથી સમાનાકાર થાય છે. તે પૃકાપ્રતાની વૃદ્ધિને નિરોધ કહે છે, ૫ પાંચ ભૂમિકા અંતઃકરણની છે. [ભૂમિકા નામ અવસ્થાનું છે.]

૫ પંચભૂમિકાસહિત અંતઃકરણનાં આ ક્રમથી નામ છે:- શિત ૧, મૂઢ ૨, વિશિત ૩, પૃકાપ્ર ૪, નિચ્છ ૫. તેઓમાં શિત અને મૂઢ અંતઃકરણનો તો સમાધિવિષે અધિકાર નથી. વિશિત અંતઃકરણને અધિકાર છે. પૃકાપ્ર અને નિચ્છ અંતઃકરણ સમાધિકાલમાં હોય છે, ૫ યોગપ્રંથોમાં કહ્યું છે. રાગાદિક દોષસહિત અંતઃકરણ શિત જ છે. તે શિતઅંતઃકરણનો યોગમાં અધિકાર નથી. ૫થી રાગાદિક દોષરૂપ કપાય સમાધિનાં વિગ્ન છે, ૫મ કહેવું સંમયે નહિ. તથાપિ આ સમાધાન છે:-વાહ્ય અથવા આંતર જે રાગાદિક છે, તે તો શિત અંતઃકરણમાં જ હોય છે. તે(શિતઅંતઃકરણ)નો અધિકાર પણ નથી. તોપણ અનેક જન્મવિષે પૂર્વ અનુભવ કન્યા જે વાહ્ય આંતર રાગદ્વેષ તેઓનો સૂક્ષ્મસંસ્કાર વિશિષ્ટાદિક અંતઃકરણમાં પણ સંમયે છે; ૫થી રાગદ્વેષનું નામ કપાય નહિ, કિન્તુ, રાગદ્વેષાદિકના સંસ્કાર કપાય કહેવાય છે. તે સંસ્કાર અંતઃકરણ રહે ત્યાંસુધી દૂર થાય નહિ; ૫થી સમાધિકાલમાં પણ અંતઃકરણમાં રહે છે. પરંતુ રાગદ્વેષાદિકોના ઉદ્ભૂત

સંસ્કાર સમાધિના વિરોધી છે. અનુદ્રૂત વિરોધી નથી. [પ્રકટ-ને ઉદ્રૂત કહે છે, અપ્રકટને અનુદ્રૂત કહે છે.] સમાધિમાં પ્રવૃત્ત યોગીને, જો રાગદ્વેષના સંસ્કારની પ્રકટતા થાય તો, વિષયમાં દોષદર્શનથી, (તેને) ડાવી દે. વિક્ષેપ (અને) કપાયનો આ ભેદ છે:-વાહ્યવિષયાકાર વૃત્તિને 'વિ ક્ષે પ' કહે છે. અને યોગીના પ્રયત્નથી જ્યાં વૃત્તિ અંતર્મુખા તો થાય, પરંતુ રાગાદિકોના ઉદ્રૂતસંસ્કારથી અંતર્મુખ થયેલી વૃત્તિ પણ રોકાઈ જાય-બ્રહ્મને વિષય કરે નહિ-તેને 'ક પા ય' કહે છે. વિષયમાં દોષદર્શનસહિત યોગીના પ્રયત્નથી કપાય(રૂપ) વિગ્નની નિવૃત્તિ થાય છે.

૪૭૨. (રસાસ્વાદ.)

રસાસ્વાદનો આ અર્થ છે:-યોગીને બ્રહ્માનંદનો અનુભવ થાય છે અને વિક્ષેપરૂપ દુઃખની નિવૃત્તિનો અનુભવ થાય છે. કહીં દુઃખની નિવૃત્તિ પણ આનંદ થાય છે. જેમ ભારવાહી પુરુષનો ભાર ઉતર્યેથી તેને આનંદ થાય, ત્યાં આનંદમાં વીજો તો કોઈ વિષય હેતુ છે નહિ, કિન્તુ ભારજન્ય દુઃખની નિવૃત્તિથી આમ કહે છે:-'મને આનંદ થયો છે.' યથી દુઃખની નિવૃત્તિ પણ આનંદનો હેતુ છે. તેમ યોગીને સમાધિમાં વિક્ષેપ-જન્ય દુઃખની નિવૃત્તિપરથી જે આનંદ થાય, તેનો અનુભવ રસાસ્વાદ કહેવાય છે. જો દુઃખનિવૃત્તિજન્ય આનંદના અનુભવેકરી જ યોગી અલંબુદ્ધિ કરી લે તો, સકલઉપાધિ-રહિત બ્રહ્માનંદાકારવૃત્તિના અભાવથી તે(બ્રહ્માનંદ)નો અનુભવ સમાધિમાં થાય નહિ, યથી દુઃખનિવૃત્તિજન્ય આનંદનો અનુ-ભવરૂપ રસાસ્વાદ પણ સમાધિમાં વિગ્ન છે. યાચ્છિતની પ્રાપ્તિ વિના પણ વિરોધિનીની નિવૃત્તિપરથી આનંદની ઉત્પત્તિમાં અન્ય દૃષ્ટાન્ત:-જેમ પૃથ્વીમાં નિધિ (ઢાંચેલા ધનનો મંડાર)

હોય તે નિધિ અત્યંતવિપધર સર્પથી રક્ષિત હોય, ત્યાં નિધિ-પ્રાપ્તિથી પ્રથમ પળ, નિધિપ્રાપ્તિનો વિરોધી જે સર્પ છે તેની નિવૃત્તિપ્કરી, આનંદ થાય છે. ત્યાં સર્પનિવૃત્તિના આનંદમાં જો અલંબુદ્ધિ કરે, તો ઉચ્ચમ ત્યાગવાથી નિધિ-પ્રાપ્તિનો પરમાનંદ પ્રાપ્ત થાય નહિ. તેમ અદ્વૈતબ્રહ્મરૂપ નિધિ છે, દૈહાદિક અનાત્મપદાર્થોની પ્રતીતિરૂપ જે વિશેષ તે સર્પ છે. વિશેષરૂપ સર્પની નિવૃત્તિજન્ય જે-અવાન્તર આનંદરૂપી રસના અનુભવરૂપ આસ્વાદન છે, તે (રસાસ્વાદન),-નિધિરૂપી અદ્વૈતબ્રહ્મની પ્રાપ્તિજન્ય જે મહા આનંદ છે, તેની પ્રાપ્તિનો પ્રતિ-બંધક હોવાથી, વિગ્ર કહેવાય છે.

અથવા રસાસ્વાદનો આ વીજો અર્થ છે:-સવિકલ્પસમાધિ-થી ઉત્તર નિર્વિકલ્પસમાધિ થાય છે. અને સવિકલ્પસમાધિ-માં ત્રિપુટી પ્રતીતા થાય છે, યથી સવિકલ્પસમાધિનો આનંદ ત્રિપુટીરૂપ ઉપાધિસહિત હોવાથી 'સોપાધિક' કહે-વાય છે. અને નિર્વિકલ્પસમાધિમાં ત્રિપુટી પ્રતીતા થાય નહિ, યથી 'નિરૂપાધિક' આનંદ નિર્વિકલ્પસમાધિમાં થાય છે. ય રીતિય સવિકલ્પસમાધિથી ઉત્તર નિર્વિકલ્પસમાધિના આરંભ-માં પણ સવિકલ્પસમાધિના સોપાધિક આનંદને ત્યાગી શકે નહિ; કિન્તુ તેને જ અનુભવ કરે તે રસાસ્વાદ કહે-વાય છે. યથી વિશેષનિવૃત્તિજન્ય આનંદનો અનુભવ, અથવા સવિકલ્પસમાધિના આનંદનો અનુભવ, રસાસ્વાદ કહેવાય છે. તે વચ્ચે પ્રકારનો રસાસ્વાદ, નિર્વિકલ્પસમાધિના પર-માનંદના અનુભવનો વિરોધી હોવાથી, વિગ્ર છે; યથી તેને પણ ત્યાગે. યમ નિર્વિકલ્પસમાધિમાં ચાર વિગ્ર હોય છે. ચારે વિગ્ર સમાધિના આરંભમાં હોય છે.

૪૭૩. (પૂર્વપક્ષાનુસાર જીવન્મુક્ત.)

પથી સાવધાનતાથી ચારે વિગ્નને રોકીને સમાધિમાં પરમાનંદને વિદ્વાન્ અનુભવ કરે છે, તેને જ જીવન્મુક્ત કહે છે. એ રીતિએ જ્ઞાનીનું ચિત્ત નિરાલંબ નથી હોતું. જ્યારે પ્રારબ્ધવલે સમાધિથી ઉત્થાન થાય, ત્યારે પણ સમાધિમાં જે પરમાનંદનો અનુભવ કન્યો છે, તેની સ્મૃતિ થાય છે. પથી ઉત્થાનકાલમાં પણ જ્ઞાનીનું ચિત્ત નિરાલંબ નથી. અને જ્ઞાનવાન્ની ભોજનાદિકમાં જે પ્રવૃત્તિ થાય છે; તે કેવલ પ્રારબ્ધથી થાય છે; પરંતુ ભોજનાદિક વ્યવહારમાં જ્ઞાની લેદ માનીને પ્રવૃત્ત થાય છે; કેમકે ભોજનાદિકોમાં પ્રવૃત્તિ પણ સમાધિસુખની વિરોધિની છે. જેને ભોજનાદિક શરીરનિર્વાહની પ્રવૃત્તિ જ લેદરૂપ થાય, તેની અધિક પ્રવૃત્તિ સંભવે નહિ. એ રીતિએ વહુ આચાર્યોએ એ જ પક્ષ લખ્યો છે. અને જીવન્મુક્તિનો આનંદ પણ વાહ્યપ્રવૃત્તિમાં થાય નહિ, કિન્તુ નિવૃત્તિમાં થાય છે. પથી જીવન્મુક્તિના સુખાર્થી જ્ઞાનવાન્ની વાહ્યપ્રવૃત્તિ સંભવે નહિ.

૪૭૪. (ગતમંક ૪૫૫ થી ૪૭૩ પર્યન્તના આક્ષેપનું

સમાધાન.) રૂહો.

શૃણો સમાધિકર્તવ્યતા, તત્ત્વદષ્ટિ હસો દેત;

ઉત્તર કઈ ભાષે નહિ, જાણી ધકત સંપ્રેત. ૧૬

[જેમ 'સંપ્રેત' નામ પ્રેતસહિત ભૂતના આવેશવાલો ઘકે તેણું અન્યથા કહેણું સાંભલીને તત્ત્વદષ્ટિ હસે છે.]

તથાપિ જ્ઞાનવાન્ની નિવૃત્તિનો પણ નિયમ કહેણું સંભવે નહિ. કેમકે નિવૃત્તિમાં અથવા પ્રવૃત્તિમાં પેદની આજ્ઞા રૂપ વિધિ તો જ્ઞાનીને છે નહિ, જેથી જ્ઞાનીના વ્યવહારમ નિયમ થાય, પથી જ્ઞાની નિરુણંદ છે, તેનો વ્યવહાર પ્રારબ્ધે

७ तं.) ज्ञानीनी स्थितिविषे पूर्वपक्षीना भासेपतुं स्मावान. ५७५

करी थाय छे. जे ज्ञानीनुं प्रारब्ध भिक्षाभोजनमात्र फलनो हेतु छे, तेनी भिक्षाभोजनमात्रमां प्रवृत्ति होय छे. जेनुं प्रारब्ध अधिक भोगनो हेतु होय, तेनी अधिकमां पण प्रवृत्ति होय छे.

अने जो आम कहे:-'जेनुं प्रारब्ध भिक्षाभोजनमात्रनो हेतु होय, तेने ज ज्ञान थाय छे, अधिक व्यवहारनो हेतु जेनुं प्रारब्ध होय तेने ज्ञान थाय नहि, एथी भिक्षाभोजनादिक व्यवहारथी अधिक व्यवहार ज्ञानीनो होय नहि; जेनी अधिक प्रवृत्ति होय ते ज्ञानी नहि.'—

ते शंका वने नहि. केमके याज्ञवल्क्य, जनकादिक, ज्ञानी कहेवाया छे. सभाविजयवते धनसंप्रहव्यवहार याज्ञवल्क्यनो, तथा राज्यपालनव्यवहार जनकनो कह्यो छे. अने वासिष्ठ ग्रंथमां अनेक ज्ञानी पुरुषोना व्यवहार नाना प्रकारना कहा छे. एथी ज्ञानीने प्रवृत्ति अथवा निवृत्तिनो नियम नथी. यद्यपि याज्ञवल्क्ये सभाविजयथी उत्तर विद्वत्संन्यासरूप निवृत्ति ज धारी छे; अने प्रवृत्तिमां ग्लानिना हेतु नाना दोष कहा छे. तथापि याज्ञवल्क्यने विद्वत्संन्यासथी पूर्वे ज्ञान नहि हतुं, ए कहेवुं तो संभवे नहि. किन्तु ज्ञान तो प्रथम पण हतुं, परंतु विद्वत्संन्यासथी पूर्व जीवन्मुक्तिनो आनंद प्राप्त थयो नहि; एथी जीवन्मुक्तिना आनंदसारू सर्वसंग्रह-नो त्याग कय्यो छे. याज्ञवल्क्यनुं प्रारब्ध कई काल अधिक भोगनो हेतु हतुं, अने उत्तरकाल न्यून भोगनो हेतु हतुं-एथी प्रथम तो याज्ञवल्क्यने ग्लानि विना अधिक भोग, अने पछी ग्लानिथी सर्व भोगनो त्याग थयो छे. अने जनकनुं प्रारब्ध मरणपर्यंत राज्यपालनादिक समृद्धिभोगनो हेतु थयुं छे, एथी सदा त्यागनो अभाव ज थयो छे; भोगोमां

ગ્લાંનિ પગ થઈ નહિ. અને વામદેવાદિકોનું પ્રારબ્ધ ન્યૂન ભોગનો હેતુ થયું છે, તેઓને સદા ભોગોમાં ગ્લાનિથી પ્રવૃત્તિનો અભાવ જ કહ્યો છે. અને વ્રાસિષ્ઠમાં આવો પણ પ્રસંગ છે:—શિશ્વરધ્વજની જ્ઞાનથી અનંતર અધિક પ્રવૃત્તિ થઈ છે. એ રીતિએ નાનાપ્રકારના વિલક્ષણ વ્યવહાર જ્ઞાનીપુરુષોના કહ્યા છે. તેઓ સર્વને જ્ઞાન સમાન છે, અને તેનું ફલ મોક્ષ પણ સમાન છે; અને પ્રારબ્ધભેદકરી વ્યવહારનો ભેદ છે. વ્યવહારની ન્યૂનતાએ જીવન્મુક્તિના સુખની અધિકતા; અને વ્યવહારની અધિકતાએ જીવન્મુક્તિના સુખની ન્યૂનતા થાય છે.

૪૭૫. એનેવિષે કોઈ આવી શંકા કરે છે:—‘જે જીવન્મુ

૨૧૨. હાં આ સાંપ્રદાયિક શ્લોક છે:—

કૃષ્ણો ભોગી શુકસ્ત્યાગી નૃપૌ જનકરાઘવૌ ।

ઘસિષ્ઠઃ કર્મકર્તા ચ ત એતે જ્ઞાનિનઃ સમાઃ ॥

કૃષ્ણ મોગી, શુકદેવ ત્યાગી, જનક અને રામચંદ્ર એ બે રાજા, અને ઘસિષ્ઠ કર્મ-કર્તા, હતા, (એ રીતિએ એઓના પ્રારબ્ધભેદથી વિલક્ષણ વ્યવહાર હતા તથાપિ) તેઓ અને આ (આધુનિક) જ્ઞાનીઓ સમાન છે. ‘ત એતે’ને જ્ઞાને પાઠાન્તરમાં ‘પંચૈતે’ છે, ત્યાં એ કૃષ્ણાદિ પાંચે જ્ઞાનીઓ સમાન છે, એમ અર્થ થાય છે.

પંચદશીમ્થગત ચિત્રદીપમાં પણ વદે છે કે:—

આરબ્ધકર્મનાનાત્વાદ્બુદ્ધાનામન્યથાઽન્યથા ।

ઘર્તનં તેન શાસ્ત્રાર્થે ભ્રમિતઘ્યં ન પઞ્ડિતૈઃ ॥ ૨૮૭ ॥

સ્વસ્વકર્માનુસારેણ ઘર્તતાં તે યથા તથા ।

અવિશિષ્ઠઃ સર્વબોધઃ સમા મુક્તિરિતિ સ્થિતિઃ ॥ ૨૮૮ ॥

અર્થ:—પ્રારબ્ધકર્મ નાનાત્વથી બુદ્ધ(જ્ઞાનીઓ)નું ઘર્તન અન્યથા અન્યથા (પરસ્પર વિલક્ષણ) હોય છે. તેજેકરી પંડિતોએ શાસ્ત્રાર્થમાં ભ્રમિત થયું યોગ્ય નથી. (૨૮૭) તેઓ (જ્ઞાનીઓ) પોતપોતાના કર્મને અનુસાર યથા તથા (આમ તે-વિલક્ષણ) ઘર્તો, (પરંતુ) સર્વનો બોધ અવિશિષ્ઠ (સમાન છે) અને (બોધનું ફલ) મુક્તિ (પણ) સમાના છે, ધર્મી ‘સ્થિતિ’ નામ મર્યાદા (જ્ઞાનનો તથા વિદ્વાનોનો નિર્ગમ) છે.

किना सुखने त्यागीने तुच्छ भोगोमां प्रवृत्त थाय, ते विदेह-
मोक्षने पण त्यागीने, वैकुण्ठादि लोकनी इच्छा धारीने जशे.'

ते शंका वने नहि. केमके:-जीवन्मुक्तिना सुखनो त्याग
अने भोगोमां प्रवृत्ति तां ज्ञानीनी प्रारब्धवलयी संभवे छे.
अने विदेहमोक्षनो त्याग अने परलोक प्रति गमन संभवे नहि.
केमके, ज्ञानीना प्राण बहिरगमन करता नथी. पथी पर-
लोक प्रति गमन संभवे नहि. अने विदेहमोक्षनो त्याग पण
संभवे नहि. केमके:-ज्ञानथी अज्ञाननी निवृत्ति थईने प्रारब्ध-
भोगथी अनंतर स्थूलसूक्ष्मशरीराकार अज्ञाननो चेतनमां लय
विदेहमोक्ष^३ कहेवाय छे, ते अवश्य थाय छे. जो मूल अ-
ज्ञान शेष रहे, अथवा नष्ट अज्ञाननी पुनः उत्पत्ति थाय तो
विदेहमोक्षनो अभाव थाय. ते मूल अज्ञाननुं विरोधि ज्ञान
थयेथी, अज्ञान शेष रहे नहि. अने प्रमाणथी नाश थयेला
अज्ञाननी पुनः उत्पत्ति थाय नहि. पथी विदेहमोक्षनो अ-
भाव थाय नहि. अने विदेहमोक्षना त्यागमां तथा परलोकना
गमनमां ज्ञानीनी इच्छा पण संभवे नहि. केमके, ज्ञानीने
इच्छा केवल प्रारब्धथी थाय छे. जेटली सामग्री विना प्रारब्ध-
नो भोग संभवे नहि पटली सामग्रीने प्रारब्ध रचे छे.
इच्छा विना भोग संभवे नहि, पथी ज्ञाननी इच्छा पण प्रारब्ध-
नुं फल छे. अने अन्यलोकमां अथवा आ लोकमां अन्य-
शरीरनो संबंध ज्ञानीने प्रारब्धे करी पण थाय नहि, ए पूर्वे
आ ज तरंगमां प्रतिपादन करी आव्या छिये. पथी ज्ञानीने
प्रारब्धेकरी विदेहमोक्षना त्यागनी, वा परलोक प्रति गमननी
इच्छा थाय नहि.

२१३. प्रारब्धक्षयवशात् देहत्रयभंगं प्राप्योपाधिविनिर्मुक्त-
घटाकाशवत् परिपूर्णता विदेहमुक्तिः ॥

૪૭૬. ધર્તમાન શરીરમાં જીવન્મુક્તિના સુખના વિરોધી અધિક ભોગોની ઇચ્છા તો, (સંન્યાસીને) ભિક્ષાભોજનાદિકની પેઠે જનકાદિકોને સંભવે છે. એ સ્થાનમાં આ રહસ્ય છે:- જ્ઞાનીની વાહ્યપ્રવૃત્તિ જીવન્મુક્તિની વિરોધિની નથી, કિન્તુ જીવન્મુક્તિના વિલક્ષણ સુખની વિરોધિની છે. કેમકે આત્મા નિત્યમુક્ત છે. અવિદ્યાથી વંધ પ્રતીત થાય છે. જે કાલમાં જ્ઞાન થાય છે તે જ કાલમાં અવિદ્યાકૃત વંધમ્મ નષ્ટ થાય છે. જ્ઞાન થયેથી પુનઃ વંધમ્માન્તિ થાય નહિ. શરીર-સહિત(પુરુષ)ને વંધમ્મનો અભાવ જ જીવન્મુક્તિ^{૧૪} કહેવાય છે. દેહાદિકોની પ્રવૃત્તિમાં તથા નિવૃત્તિમાં જ્ઞાનીને વંધમ્માન્તિ આત્મામાં થાય નહિ. પથી વાહ્યપ્રવૃત્તિપ્રકારી પણ જીવન્મુક્તિ દૂર થાય નહિ. તોપણ વાહ્યપ્રવૃત્તિમાં જીવન્મુક્તને વિલક્ષણ સુખ થાય નહિ. એકાપ્રતારૂપ અંતઃકરણ(ના) પરિણામથી સુખ થાય છે. તે એકાપ્રતા(રૂપ અન્તઃકરણનો) પરિણામ વાહ્યપ્રવૃત્તિમાં થાય નહિ. એ રીતિએ પ્રારબ્ધભેદથી જ્ઞાની પુરુષોના વ્યવહાર નાના પ્રકારના છે. પરંતુ જેનું પ્રારબ્ધ અધિક પ્રવૃત્તિનો હેતુ હોય છે તેનું મંદપ્રારબ્ધ કહેવાય છે.

૨૧૪. દેતનું. અદર્શન નહિ, કિન્તુ અજ્ઞાનનિવૃત્તિ જ જીવન્મુક્તિ કહેવાય છે.

૨૧૫. જેમ સર્વ(શત્રુઓનો સંહાર કરીને) પૃથિવીના રાજ્યને પ્રાપ્ત થયેલા પુરુષને રોગનો હેતુ પ્રારબ્ધ,-ભોગનું વિરોધિ હોવાથી,-મંદ કહેવાય છે; તેમ અવિદ્યા (અને) તત્કાર્યરૂપ શત્રુઓનો સંહાર કરીને વ્રજાભાવને પ્રાપ્ત થયેલા જ્ઞાનીને અધિકપ્રવૃત્તિનો હેતુ પ્રારબ્ધ, (યિલક્ષણ મુરમ્પદ) એકાપ્રતાનું વિરોધિ હોવાથી, મંદ કહેવાય છે. શ્લોક 'મંદ' પદનો 'નિવૃત્ત' અર્થ છે, 'શિથિલ' અર્થ નથી. કેમકે જેમ ઉક્ત રાજા શિથિલ પ્રારબ્ધજન્ય મુસાખ્ય વા કષ્ટસાખ્ય રોગની તો ઔષધાદિક પ્રયત્નવતે નિવૃત્તિ કરે છે, પરંતુ તીવ્રતર પ્રારબ્ધજન્ય અસાખ્ય રોગની નિવૃત્તિ કરવી એ તે રાજાપ્રકારી અશક્ય છે. તેમ શિથિલ પ્રારબ્ધના પલ્પ પ્રવૃત્તિને તો જ્ઞાની, જીવન્મુક્તિના મુગ્ધઅર્થે, યાતના-રાગદ્વેષ-ના નિશારણરૂપ પ્રયત્નવતે દૂર કરે છે. પરંતુ તીવ્રતર પ્રારબ્ધનો ફલરૂપ પ્રવૃત્તિ તે જ્ઞાનીપ્રકારી

૭ તરંગ.) જ્ઞાનીની સ્થિતિપિે પૂર્વશીના આક્ષેપનું સમાધાન. ૧૭૧

કેમકે અધિકપ્રવૃત્તિ ઇકાપ્રતાની વિરોધિની છે. અને ઇકાપ્રતા યિના નિરુપાધિક આનંદ પ્રતીત થાય નહિ. ઇ સમાધિ-નિરુપણમાં કાતું છે.

૪૭૭. અને જે પૂર્વે (અંક ૪૦૬ વિષે) કાતું:-'જ્ઞાનવાનને સર્વ 'અનાન્મપદાર્થોમાં મિથ્યાબુદ્ધિ હોય છે; રાગ થાય નહિ, ઇથી 'પ્રવૃત્તિ સંભવે નહિ.'

તે શંકા પણ બને નહિ. કેમકે જેમ દેહવિષે મિથ્યાબુદ્ધિ પણ જ્ઞાનીને હોય છે, તેા પણ દેહને અનુકૂલ જે મિશ્રાદિક છે તેઓમાં કેવલ પ્રારબ્ધેકરી પ્રવૃત્તિ થાય છે: તેમ જેનું અધિક ભોગનું પ્રારબ્ધ હોય તે જ્ઞાનીની અધિકપ્રવૃત્તિ પણ થાય છે; જેમ (માયાવી) વાજોગરના તમાશાને મિથ્યા જાણીને સર્વ લોકોની પ્રવૃત્તિ થાય છે, તેમ સર્વ પદાર્થોમાં જ્ઞાનીને મિથ્યા-બુદ્ધિ થયેથી પણ પ્રવૃત્તિ સંભવે છે.

૪૭૮. અને જો આમ કહે:-'જેને જે પદાર્થમાં દોષદષ્ટિ 'હોય, તેને વિષે તે પુરુષની પ્રવૃત્તિ થાય નહિ. જ્ઞાનીને અના-ન્મપદાર્થોમાં દોષદષ્ટિ હોય છે, રાગ હોય નહિ, ઇથી પ્રવૃત્તિ 'સંભવે નહિ.'

તે પણ બને નહિ. કેમકે, જે અપથ્યસેવનમાં, રોગીપ અન્વય-વ્યતિરેકથી દોષનિશ્ચય કન્યા છે, તે અપથ્યસેવનમાં પ્રારબ્ધેકરી જેમ રોગીની પ્રવૃત્તિ થાય છે, તેમ પ્રારબ્ધેકરી જ્ઞાનીની સર્વ વ્યવહારમાં પ્રવૃત્તિ, દોષદષ્ટિ સતે પણ, સંભવે છે. ઇ રીતિપ જ્ઞાનીના વ્યવહારનો નિયમ નથી. ઇ પક્ષ વિદ્યા-રણ્યસ્વામિપ વિસ્તારથી (પંચદશીના) તૃતિદીપમાં (૧૪૩ થી નિગરણ કરવાને અશક્ય છે. ઇ રીતિપ વ્યવસ્થા કન્યે પ્રારબ્ધ અને પુરુષાર્થ ઉભય સફલ થાય છે. ઇથી અધિકપ્રવૃત્તિનો હેતુ પ્રારબ્ધ કિષિલ નથી, કિન્તુ 'નિકૃષ્ટ' છે, ઇથી 'મદ' કહેવાય છે.

૫. પી. પુ.

१६२. पर्यंत श्लोकेकरी) प्रतिपादन कन्यो छे एथी तत्त्वदृष्टिने व्यवहार नियमरहित छे. समाधिरूप नियमनो विधि सांभलीने तत्त्वदृष्टि हसे छे. १६.

(तत्त्वदृष्टिने देशादिक अपेक्षारहित देहपात.)

४७९. इहो.

एम भ्रमण कई काल करी, तत्त्वदृष्टि सुज्ञान;

भोगव्युं निज प्रारब्ध तत्र, थया लीन ते प्राण.

१७.

टीका:-प्रारब्धभोगथी अनंतर ज्ञानीना प्राण गमन करे नहि, एथी तत्त्वदृष्टिना प्राण लीन थया ए कह्युं. अने ज्ञानीना शरीरत्यागमां कालविशेषनी अपेक्षा नथी. उत्तरायणमां अथवा दक्षिणायनमां, देहपात थाय, सर्वथा (ते) मुक्त छे. तेम देशविशेषनी पण अपेक्षा नथी. काशीआदिक पवित्र देशमां अथवा अत्यंत मलिन देशमां (गमे त्यां) ज्ञानीनो देहपात थाय (पण ज्ञानी) सर्वथा मुक्त छे. तेम आसनविशेषनी अपेक्षा नथी. पृथिवीमां शत्र आसनथी अथवा सिद्ध-आसनथी देहपात थाय, तेम (कां तो) सावधान ब्रह्मचिन्तन करतां, अथवा रोगव्याकुल हाहा शब्द पोकारतां, देहपात थाय (पण ज्ञानी) सर्वथा मुक्त छे, केमके-जे कालमां ज्ञानेकरी अज्ञान निवृत्ति धयुं ते ज कालमां ज्ञानी मुक्त छे. एथी ज्ञानीने विदेहमोक्षमां देशकाल आसनादिकोनी अपेक्षां नथी, जेम ज्ञानीने देहपातमां देशकालादि-

२१६. इहां आ सांप्रदायिक वचनो छे:—

तीर्थे वा श्वपचगृहे नष्टसृष्टिर्वा परित्यजन देहं ।

ज्ञानफलकालसमये केवलं याति विगतशोकः ॥

रथ्यान्नरे मूत्रपुरीषमध्ये चांडालयेऽप्रन्यथा श्मशाने ।

श्रुतप्रयत्नोऽप्यश्रुतप्रयत्नो देहावसाने लभते च मोक्षम् ॥

देहः पततु वा काश्यां श्वपचस्य गृहेऽथवा ।

ज्ञानसंप्राप्तिसमये सर्वथा मुक्त एव सः ॥

कोनी अपेक्षा नथी, तेम ज्ञानना निमित्त श्रवणमां पण देश-कालआसनादिकोनी अपेक्षा नथी.

४८०. अने उपासकने देशकालादिकोनी अपेक्षा छे. यद्यपि भीष्मादिक ज्ञानी कहा छे, अने भीष्मे उत्तरायण विना प्राणत्याग कन्यो नथी; तथापि भीष्मादिक अधिकारी पुरुष छे. एथी उपासकोना उपदेशअर्थे तेओए कालविशेष-नी प्रतीक्षा करी छे (=वाट जोई छे.) अने वसिष्ठ भीष्मा-दिक अधिकारी छे एथी ज तेओने अनेक जन्म थया छे. केमके अधिकारी पुरुषोनुं एक कल्पपर्यंत प्रारब्ध होय छे. कल्पना अंत विना विदेहमोक्ष थाय नहि. अने कल्पना अन्तर-मां तेओने इच्छाबलथी नानाशरीर थाय छे. तथापि आत्म-स्वरूपविषे तेओने जन्ममरणभ्रान्ति थाय नहि, एथी (तेओ) जीवन्मुक्त छे. ते अधिकारी पुरुषोना व्यवहार संपूर्ण अन्यना उपदेशना निमित्त छे. अने अन्यज्ञानीना व्यव-हारमां कोई नियम नथी. ए अभिप्रायथी तत्त्वदृष्टिना देह-पातनुं देशकालआसनादिक कई कह्युं नहि.

४८१. (अदृष्टिनो देशादिक अपेक्षासहित देहपात.)

दुहा.

विजो शिष्य अदृष्ट ते गंगातट शुभे स्थान;

देशीकान्त पवित्र अति, कन्युं ब्रह्मनुं ध्यान.

१८.

शास्त्ररूते त्यज्जी देहने, पूर्व कह्यो जे राह;

ज ईमिल्यो ते ब्रह्मसह, पामी अधिक उत्साह.

१९.

टीका:-जेम ज्ञानीने देशकालनी अपेक्षा नथी, तेथी विप-रीत, उपासकने (अपेक्षा) जाणवी. उत्तम देशमां, उत्तम उत्तरा-यणादिक कालमां उपासक शरीर त्यजे त्यारे उपासनानुं फल थाय. अने ज्ञानीने मरणसमये सावधानताथी ज्ञेयनी

સ્મૃતિની અપેક્ષા નથી. ઉપાસકને મરણસમયે ધ્યેયના સ્વરૂપની સ્મૃતિની અપેક્ષા છે. જે ધ્યેયનું પૂર્વે ધ્યાન કન્યું છે, તે ધ્યેયની સ્મૃતિ મરણસમયે થાય, ત્યારે ઉપાસનાનું ફલ થાય છે. જેમ ધ્યેયની સ્મૃતિ જોડાયે, તેમ ધ્યેયબ્રહ્મની પ્રાપ્તિનો જે માર્ગ પંચમતરંગમાં કહ્યો છે, તેનો પણ સ્મૃતિ જોડાયે. કેમકે માર્ગચિન્તન પણ ઉપાસનાનું અંગ છે. અને જ્ઞાનનિમિત્ત શ્રવણમાં દેશકાલઆસનની અપેક્ષા નથી. ધ્યાનમાં ઉત્તમદેશ, નિરંતરકાલ, સિદ્ધાદિક આસનની અપેક્ષા છે. યથી અદૃષ્ટિને ઉત્તમ દેશ, ગંગાતીરમાં સ્થિતિ, અને મરણસમયે પણ યોગશાસ્ત્રીતિણ દેહપાત કહ્યો.

૪૮૨. (તર્કદૃષ્ટિનો નિશ્ચય-સર્વ શાસ્ત્રોને બ્રહ્મજ્ઞાનની હેતુતા.)

દુહા.

તર્કદૃષ્ટિ પ્રીજે ચલી, લઈ ગુરુમુખ ઉપદેશ;

અષ્ટાદશ પ્રસ્થાનમાં કન્યું અવગાહન* વેશ.

૨૦.

યાવત્ વાણી વૈરરી તેને અલં પીછાન,

હેતુ મુક્તિનો જ્ઞાન લઈ અદ્વય નિશ્ચય જ્ઞાન.

૨૧.

ટીકા:-તર્કદૃષ્ટિનામે પ્રીજે, ગુરુદ્વારા ઉપદેશને શ્રવણ

કરીને, સાંભળેલા અર્થમાં અન્ય શાસ્ત્રોનો વિરોધ દૂર કરવાને, સર્વ શાસ્ત્રોના અભિપ્રાય વિચારીને, આ નિશ્ચય કન્યો:-સફલ શાસ્ત્રોનું પરમપ્રયોજન મોક્ષ છે. મોક્ષનું સાધન જ્ઞાન છે, તે જ્ઞાન અદ્વયનિશ્ચયરૂપ છે, ભેદનિશ્ચય યથાર્થ જ્ઞાન નથી. (અને) સર્વ શાસ્ત્ર સાક્ષાત્ અથવા પરંપરાથી બ્રહ્મજ્ઞાનનો હેતુ છે.

યદ્યપિ સંસ્કૃત વૈરરીવાણીનાં અષ્ટાદશ પ્રસ્થાન છે. તેઓમાં કોઈ કર્મને પ્રતિપાદન કરે છે, કોઈ વિષયમુક્તિના ઉપાયોને

પ્રતિપાદન કરે છે, કોઈ બ્રહ્મભિન્ન દેવોની ઉપાસનાને વાંધન કરે છે. તેમ જ્ઞાનનિમિત્ત જે ન્યાયસાંખ્યઆદિ શાસ્ત્ર છે, તે પણ ભેદજ્ઞાનને જ યથાર્થ જ્ઞાન કહે છે. પૃથી સર્વ(શાસ્ત્રો)ને અઠ્ઠેતબ્રહ્મની વોધકતા બને નહિ. તથાપિ સકલ શાસ્ત્રોના કર્તા (ઋષિમુનિ) સર્વજ્ઞ થયા છે, અને કૃપાલુ થયા છે. પૃથી તેઓનાં કરેલાં મૂલસૂત્રોનો તો વેદને અનુસાર જ અર્થ છે. પરંતુ તેમના વ્યાખ્યાનકર્તા ભ્રાન્ત થયા છે. (તેઓ) મૂલ-સુત્રકારોના અભિપ્રાયથી વિલક્ષણ અર્થ કન્યા છે તે વેદથી વિરુદ્ધ તે સૂત્રોનો અર્થ નથી, કિન્તુ સર્વ શાસ્ત્રનો વેદાનુસારી અર્થ છે. તર્કદષ્ટિય ઉત્તમ સંસ્કારથી ઇ નિશ્ચય કન્યો.

૪૮૩. (વિદ્યાનાં અષ્ટાદશ પ્રસ્થાન.)

વિદ્યાનાં અષ્ટાદશ પ્રસ્થાન (માર્ગ) આ છે: ચાર વેદ, ચાર ઉપવેદ, પદ્મ વેદનાં અંગ, (ચાર ઉપાંગ=) પુરાણ, ન્યાય, મીમાંસા, ધર્મશાસ્ત્ર; ઇ રીતિય ઘેઘરીઘાણીરૂપ વિદ્યાના અઢાર ભેદ છે, તેઓને પ્રસ્થાન કહે છે.

૪૮૪ (ચાર વેદ અને તેઓનું બ્રહ્મજ્ઞાનમાં તાત્પર્ય.)

ઋગ્વેદ, યજુર્વેદ, સામવેદ, અથર્વવેદ, ઇ ચાર વેદ છે. તેઓમાં કેટલાંક ઘચન હેય બ્રહ્મને વોધન કરે છે; કેટલાંક ઘ્યેય(બ્રહ્મ)ને વોધન કરે છે; અને શોષ કર્મને વાંધન કરે છે. જે કર્મનાં વોધક વેદવચન છે, તેઓનું પણ અંતઃકરણશુદ્ધિ-દ્વારા જ્ઞાન જ પ્રયોજન છે. અને પ્રવૃત્તિમાં કોઈ વેદવચનનો અભિપ્રાય નથી, કિન્તુ નિષિદ્ધ સ્વાભાવિક પ્રવૃત્તિથી રોકવામાં અભિપ્રાય છે. પૃથી અભિચારાદિક કર્મનો પ્રતિપાદક જે અથર્વવેદ છે, તેનું પણ નિવૃત્તિમાં તાત્પર્ય છે. જો દ્વેષથી

૨૧૭. ઉપદેશ-ઉપાય. જેમ શ્રુતિસ્મૃતિન્યાયપ્રદર્શક ઉપનિષદ્ ગીતા-શારી-રકમુખરૂપપ્રથમાપ્યરૂપ પ્રસ્થાનત્રય.

શત્રુ મારવામાં પ્રવૃત્ત હોય તો ગર(વિપ)દાને અથવા અગ્નિ-દાહે શત્રુને મારે નહિ, ય સાચ અભિચારકર્મ-શ્યેનયાગ-દિક-કહ્યાં છે.[શત્રુમારણના નિમિત્ત જે કર્મ તે 'અભિચાર' કહેવાય છે. एवો श्येननामक यज्ञ છે.] શ્યેનયાગનું વોધક જે વેદવચન છે, તેનો આ અર્થ નથી:-'શત્રુમારણકામના-વાલો શ્યેનયાગમાં પ્રવૃત્ત થાય,' કિન્તુ શત્રુ મારવાનો જેને કામના થાય તે શ્યેનયાગથી ભિન્ન જે ગરદાનાદિક શત્રુ મારવાના ઉપાય છે, તેઓમાં પ્રવૃત્ત થાય નહિ. ય રીતિપ દ્વેષથી પ્રાપ્ત જે ગરદાનાદિક તેઓથી નિવૃત્તિમાં શ્યેનયાગ-વોધક વચનનો અભિપ્રાય છે, પ્રવૃત્તિમાં નથી. કેમકે, પ્રવૃત્તિ દ્વેષથી પ્રાપ્ત છે. જે અન્યથી પ્રાપ્ત હોય તેમાં વાક્યનો અભિ-પ્રાય હોય નહિ. ય રીતિપ સર્વ અર્થવેદનું નિવૃત્તિમાં તાત્પર્ય છે. અને ત્રણે વેદમાં કર્મવોધક વાચ્યનો, અંતઃકરણ-શુદ્ધિદ્વારા, જ્ઞાનમાં ઉપયોગ સ્પષ્ટ છે.

૪૮૫. (ચાર ઉપવેદ-અને તેઓનું બ્રહ્મજ્ઞાનમાં તાત્પર્ય.)

તેમ ચાર ઉપવેદ છે. આયુર્વેદ ૧, ધનુર્વેદ ૨, ગાન્ધર્વ-વેદ ૩, અર્થવેદ ૪. તેઓમાં આયુર્વેદના કર્તા બ્રહ્મા, પ્ર-જાપતિ, અશ્વિનીકુમાર, ધન્વંતરિ આદિક છે. ચરક, વાગ્ભ-ટ્ટાદિક ચિકિત્સાશાસ્ત્ર આયુર્વેદ છે. અને વાત્સ્યાયનરૂત કામશાસ્ત્ર પણ આયુર્વેદના અંતર્ભૂત છે. કેમકે કામશાસ્ત્રનો વિષય-વાજીકરણ, સ્તંભનાદિક પણ-ચરકાદિકોપ કથન કન્યો છે.તે આયુર્વેદનો વૈરાગ્યમાં જ અભિપ્રાય છે. કેમકે, આયુર્વેદની રીતિપ રોગાદિકોની નિવૃત્તિ થવાથી પણ, પુનઃ રોગાદિક ઉત્પન્ન થાય છે. યથી લૌકિક ઉપાય તુચ્છ છે. ય અર્થમાં આયુર્વેદનો અભિપ્રાય છે. અને ઔપચર્યાનાદિકોથી પુણ્ય થઈને અંતઃકરણની શુદ્ધિદ્વારા પણ જ્ઞાનમાં ઉપયોગ છે.

તેમ વિશ્વામિત્રરુત ધનુર્વેદમાં આયુધ નિરૂપણ કન્યાં છે. આયુધ ચાર પ્રકારનાં છે:-મુક્ત ૧, અમુક્ત ૨, મુક્તા-મુક્ત ૩, યંત્રમુક્ત ૪. [ચક્રાદિક હાથવતે ફંકિયે તે મુક્ત કહેવાય છે. સક્ષાદિક અમુક્ત કહેવાય છે. ઘરછી આદિક મુક્તામુક્ત કહેવાય છે. શર, ગોઝી આદિક યંત્રમુક્ત કહેવાય છે.] ૫ રીતિ ૫ ચાર પ્રકારનાં આયુધ છે. તેઓમાં મુક્ત આયુધને અસ્ત્ર કહે છે. અમુક્તને શસ્ત્ર કહે છે. ૫ ચાર પ્રકારનાં આયુધોના, બ્રહ્મા, વિષ્ણુ, પશુપતિ, પ્રજાપતિ, અગ્નિ, વરુણ, આદિક દેવતા (અને) મંત્ર કહ્યા છે. (૫ આયુધોના) ક્ષત્રિયકુમાર અધિકારી કહ્યા છે. અને તેઓના અનુસારી બ્રાહ્મણાદિક પણ અધિકારી કહ્યા છે. અને તેઓના ચાર ભેદ કહ્યા છે: પદાતિ ૧, રથાસ્ત્ર ૨, અશ્વાસ્ત્ર ૩, મજાસ્ત્ર ૪. અને યુદ્ધમાં શકુનમંગલ કહ્યાં છે. ૫૨લો અર્થ ધનુર્વેદના પ્રથમ પાદમાં કહ્યો છે. અને આચાર્યનાં લક્ષણ તથા આચાર્ય-થી શસ્ત્રોનાં ગ્રહણની રીતિ ધનુર્વેદના દ્વિતીય પાદમાં વહી છે. અને ગુરુસંપ્રદાયથી પ્રાપ્ત થયેલાં શસ્ત્રોનો અભ્યાસ તથા મંત્રસિદ્ધિ (અને) દેવતાસિદ્ધિનો પ્રકાર તૃતીય પાદમાં કહ્યો છે. સિદ્ધ થયા મંત્રોનો પ્રયોગ ચતુર્થ પાદમાં કહ્યો છે. ૫૨લો અર્થ ધનુર્વેદમાં છે. તે બ્રહ્મા પ્રજાપતિ આદિકોથી વિશ્વા-મિત્રને પ્રાપ્ત થયો છે. (અને) તેણે પ્ર ક ટ કન્યા છે, અને વિશ્વામિત્રથી ધનુર્વેદ ૩ ત્પ ન્ન થયો. હુષ્ ચૌરાદિકોથી પ્રજાપાલન ક્ષત્રિયનો ધર્મવોધક ધનુર્વેદ છે. ૫થી તેનો પણ, અંત.કરણશુદ્ધિ કરીને, જ્ઞાનદ્વારા, મોક્ષમાં જ અમિપ્રાય છે.

ગાન્ધર્વવેદ ભરતે પ્રકટ કન્યા છે. તેમાં સ્વર તાલ મૂર્છ-નાસહિત, ગીત, નૃત્ય, વાદ્યનું નિરૂપણ વિસ્તારવતે કન્યું છે. દેવતાનું આરાધન, નિર્વિકલ્પ સમાધિની સિદ્ધિ, ગાન્ધર્વ

વેદનું પ્રયોજન કહ્યું છે. પથી તેનું પળ, અંતઃકરણની એકાગ્રતા કરીને, જ્ઞાનદ્વારા, મોક્ષ જ પ્રયોજન છે.

તેમ અર્થવેદ પળ નાનાપ્રકારનો છે. નીતિશાસ્ત્ર, અશ્વ-શાસ્ત્ર, શિલ્પિશાસ્ત્ર, સૂપકાર (પાક) શાસ્ત્ર, આદિ લઈને ધન-પ્રાપ્તિના ઉપાયબોધક શાસ્ત્ર અર્થવેદ કહેવાય છે. ધનપ્રાપ્તિ-ના સકલ ઉપાયોમાં નિપુણ પુરુષને પળ માગ્ય વિના ધનની પ્રાપ્તિ થાય નહિ. પથી અર્થવેદનું પળ વૈરાગ્યમાં જ તાત્પર્ય છે.

૪૮૬. (ચાર વેદનાં પદંગોનું અર્થસહિત પ્રયોજન.)

ચાર વેદોનાં છ અંગ છે: શિક્ષા ૧, કલ્પ ૨, વ્યાકરણ ૩, નિરુક્ત ૪, જ્યોતિષ ૫, (હંદસ્ કિંવા) પિંગલ ૬. ૫ છ વેદનાં ઉપયોગી હોવાથી વેદનાં અંગ કહેવાય છે.

તેઓમાં શિક્ષાના કર્તા પાણિનિ છે. વેદના શબ્દોમાં અક્ષરો-ના સ્થાનનું જ્ઞાન, અને ઉદાત્ત, અનુદાત્ત, સ્વરિતનું જ્ઞાન, શિક્ષા-થી થાય છે. વેદના વ્યાખ્યાનરૂપ જે અનેક પ્રતિશાખા નામે ગ્રંથો છે, તે પળ શિક્ષાના અંતર્ભૂત છે.

તેમ વેદબોધિત કર્મના અનુષ્ઠાનની રીતિ કલ્પસૂત્રોથી જાણી જાય છે. યજ્ઞ કરાવવાવાલા બ્રાહ્મણ ઋત્વિક્ કહેવાય છે. તેઓમાં મિષ્ટ મિષ્ટ કરવાયોગ્ય જે કર્મ તેઓના પ્રકારનાં બોધક કલ્પસૂત્ર છે. તે કલ્પસૂત્રના કર્તા કાત્યાયન આશ્વલાય-નાદિ મુનિ છે. પથી કલ્પસૂત્ર પળ વેદનાં ઉપયોગી હોવાથી વેદનાં અંગ છે.

તેમ વ્યાકરણથી વેદના શબ્દોની શુદ્ધતાનું જ્ઞાન થાય છે. તે વ્યાકરણ સૂત્રરૂપ અષ્ટાધ્યાયી પાણિનિ નામે મુનિષ્ કન્યું છે. કાત્યાયન અને પતંજલિષ્, તે સૂત્રોનાં વ્યાખ્યાનરૂપ વાર્તિક અને માખ્ય કન્યાં છે. અન્ય જે વ્યાકરણો છે તેઓમાં

૭ તાં.) વિદ્યાનાં અષ્ટાદશ (૧૮) પ્રત્યાન. વેદનાં પટંગ. ૧૮૭

વેદના શસ્ત્રોનો વિચાર નથી, તેથી પુરાણાદિકોમાં તો ઉપ-
યોગિ છે, પરંતુ વેદનાં ઉપયોગિ નથી. અને પાણિનિરુત્ત
વ્યાકરણ વેદના શસ્ત્રોની પણ સિદ્ધિ કરે છે; યથી વેદનું
અંગ છે.

તેમ યાસ્કનામે મુનિષ ત્રયોદશઅધ્યાયરૂપ નિરુક્ત
કન્યું છે. તેમાં વેદના મંત્રોમાં અપ્રસિદ્ધ પદોના અર્થવોધના
નિમિત્ત નામ નિરૂપણ કન્યા છે. યથી વૈદિક અપ્રસિદ્ધ
પદોના અર્થજ્ઞાનમાં ઉપયોગિ હોવાથી, નિરુક્ત પણ વેદનું અંગ
છે. સંજ્ઞાનો વોધક જે પંચાધ્યાયરૂપ નિઘંટુ નામે ગ્રંથ
યાસ્કે કન્યા છે, તે પણ નિરુક્તના અંતર્ભૂત છે. અમરસિંહ-
હેમાદિકોષ કરેલા જે સંજ્ઞાના વોધક અન્ય કોશ છે, તે સર્વ
નિરુક્તના અંતર્ભૂત છે.

તેમ પિંગલમુનિષ સૂત્રઅષ્ટઅધ્યાયથી હંદ નિરૂપણ કન્યા
છે. તેઓથી વૈદિકગાયત્રી આદિક હંદોનું જ્ઞાન થાય છે,
યથી પિંગલરુત્ત સૂત્ર પણ વેદનાં અંગ છે.

તેમ આદિત્ય, ગર્ગાદિરુત્ત જ્યોતિષ્ પણ વેદનું અંગ છે.
કેમકે, વૈદિકકર્મના આરંભમાં કાલનું જ્ઞાન જોડ્યે. તે કાલ-
જ્ઞાન જ્યોતિષ્થી થાય છે, યથી વેદનું અંગ છે.

૫૫૪ જે વેદનાં અંગ છે તેઓમાંથી વેદમાં ઉપયોગી જે
અર્થ નથી તેનું પ્રસંગથી નિરૂપણ કન્યું છે, પ્રધાનતા ય
નથી કન્યું. યથી વેદનું જે પ્રયોજન છે, તે જ ૫૫૪ અંગોનું
પ્રયોજન છે, પૃથક્ નથી.

૫૮૭. પુરાણ અષ્ટાદશ (અઢાર) છે. વ્યાસ નામ
મુનિષ કન્યા છે. તેઓનાં આ નામ છે:-બ્રહ્મ ૧, યજ્ઞ ૨,
વિષ્ણુ ૩, શિવ ૪, ભાગવત ૫, નારદીય ૬, માર્કંડેય ૭,
અગ્નિ ૮, મવિષ્ય ૯, બ્રહ્મવૈવર્ત ૧૦, લિંગ ૧૧, વરાહ ૧૨,

સ્કંદ ૧૩, વામન ૧૪, કૂર્મ ૧૫, મત્સ્ય ૧૬, ગરુડ ૧૭, બ્રહ્માણ્ડ ૧૮. ૫ અષ્ટાદશ પુરાણ વ્યાસે કન્યાં છે. તેમ કાલીપુરાણાદિ અન્ય વહુ છે, તે ઉપપુરાણ છે. કોઈ ઉપ-પુરાણ પણ અષ્ટાદશ કહે છે, તે નિયમ નથી. ઉપપુરાણ વહુ છે. ભાગવત વે છે:-૫૧૦ તો વૈષ્ણવ ભાગવત છે, અને વીજું ભગવતીભાગવત છે. વેની સમાનસંખ્યા-અષ્ટાદશ સહસ્ર-છે. અને વક્ત્રેના દ્વાદશ સ્કંધ છે. પરંતુ તેઓમાં ૫૧૦ પુરાણ છે, અને વીજું ઉપપુરાણ છે. વક્ત્રે વ્યાસકૃત છે, ૫૧૦ વક્ત્રે પ્રમાણ છે. જેમ વ્યાસે પુરાણ કન્યાં છે, તેમ કેટલાંક ઉપપુરાણ પણ વ્યાસે કન્યાં છે. કેટલાંક ઉપપુરાણ પરાશર આદિ અન્ય સર્વજ્ઞ મુનિઓએ કન્યાં છે. ૫૧૦ ઉપપુરાણ પણ પ્રમાણ છે. જે ઉપનિષદનો અર્થ છે, તે જ ઉપપુરાણસહિત પુરાણનો અર્થ છે. ૫ ઘાતા આગલ (અંક ૫૧૦ થી ૫૧૭ પર્યંત) પ્રતિપાદન કરીશું.

૪૮૮. પંચ અધ્યાયરૂપ ન્યાયસૂત્ર ગૌતમે કન્યાં છે. તેઓમાં યુક્તિ પ્રધાન છે. યુક્તિચિન્તનથી પુરુષની તીવ્રબુદ્ધિ થાય, ત્યારે મનન કરવાવિષે સમર્થ થાય છે. ૫૧૦ યુક્તિપ્રધાન ન્યાયસૂત્રોનું પણ મનનદ્વારા વેદાન્તજન્ય જ્ઞાન જ ફલ છે. અને કૃણાદ નામ મુનિએ દશ અધ્યાયરૂપ વૈશેષિકસૂત્ર કન્યાં છે; તેઓનો પણ ન્યાયમાં અન્તર્ભાવ છે.

૪૮૯. તેમ મીમાંસાના વે ભેદ છે:-૫૧૦ ધર્મમીમાંસા (કિંવા કર્મમીમાંસા) અને વીજી બ્રહ્મમીમાંસા. ધર્મમીમાંસાને પૂર્વમીમાંસા કહે છે અને બ્રહ્મમીમાંસાને ઉત્તરમીમાંસા કહે છે. ધર્મમીમાંસાના દ્વાદશ અધ્યાય છે. જૈમિનિ નામે તેના કર્તા છે. કર્મઅનુષ્ઠાનની રીતિ તેમાં પ્રતિપાદન કરી છે. ૫૧૦ વિધિપ્પકરી કર્મમાં પ્રવૃત્તિ ૫ ધર્મમીમાંસાનું ફલ છે. કર્મમાં

૭ તરંગ.) વિદ્યાનાં અષ્ટાદશ પ્રસ્થાન. સ્મૃતિ કિંવા ધર્મશાસ્ત્ર. ૧૮૯

પ્રવૃત્તિપકરી અંતઃકરણશુદ્ધિ, તેણેકરી જ્ઞાન, અને જ્ઞાનથી મોક્ષ. એ રીતિએ ધર્મમીમાંસાનું મોક્ષ ફલ છે. અને ધર્મ-મીમાંસાના દ્વાદશ અધ્યાયોમાં પોતામાં અર્થનો ભેદ છે. તે કઠિન છે એથી લખ્યો નથી. અને સંકર્ષણકાંડ પંચ અધ્યાયરૂપ જૈમિનિએ કન્યો છે, તેવિષે ઉપાસના કહી છે. તેનો પણ ધર્મમીમાંસામાં અંતર્ભાવ છે. તેમ બ્રહ્મમીમાંસાના ચાર અધ્યાય છે. તેના કર્તા વ્યાસ છે. એક એક અધ્યાયના ચાર ચાર પાદ છે. ત્યાં પ્રથમ (સમન્વય) અધ્યાયમાં આ અર્થ છે:—સર્વ ઉપનિષદ્વાન્ય, બ્રહ્મને પ્રતિપાદન કરે છે; અન્યને નહિ. અને ઉપનિષદ્વાપ્યનો, મંદબુદ્ધિ પુરુષને પોતામાં વિરોધ પ્રતીત ધાય છે, તેનો પરિહાર દ્વિતીય (અવિરોધ) અધ્યાયમાં કહ્યો છે. અને જ્ઞાન તથા ઉપાસનાનાં સાધનનો વિચાર તૃતીય (સાધન) અધ્યાયમાં કહ્યો છે. જ્ઞાનઉપાસનાનું ફલ ચતુર્થ (ફલ)અધ્યાયમાં કહ્યું છે. એ ત્રૈલોક્યમીમાંસારૂપ શારીરકશાસ્ત્ર જ સર્વ શાસ્ત્રમાં પ્રધાન છે. મુમુક્ષુને એ જ ઉપાદેય છે. તેના વ્યાખ્યાનરૂપ ગ્રંથ યદ્યપિ નાના છે, તથાપિ શ્રીશંકરકૃત ભાષ્યરૂપ વ્યાખ્યાન જ મુમુક્ષુને શ્રોતવ્ય છે. તેનું જ્ઞાનદ્વારા મોક્ષફલ સ્પષ્ટ જ છે.

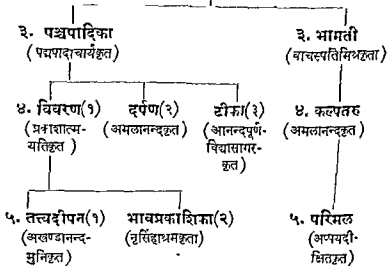
૪૨૦. તેમ મનુ, યાજ્ઞવલ્ક્ય, વિષ્ણુ, યમ, અંગિરા, વસિષ્ઠ, દક્ષ, સંવર્ત, શાતાતપ, પરાશર, ગૌતમ, શંખ, લિલિત, હારીત, આપસ્તંબ, શુક્ર, વૃહસ્પતિ, વ્યાસ, કાત્યાયન, દેવલ, નારદ ઇત્યાદિક સર્વજ્ઞ થયા છે, તેઓએ વેદને અનુસાર સ્મૃતિ નામ ગ્રંથો કન્યા છે. તે ધર્મશાસ્ત્ર

૨૧૮. બ્રહ્મસૂત્રનાં નામાન્તર:—મિશુસૂત્ર, સત્તરમીમાંસા, બાદરાયણસૂત્ર, બ્રહ્મમીમાંસા, વેદાન્તસૂત્ર, વ્યાસસૂત્ર, શારીરકસૂત્ર.

એ ઉપર વ્યાખ્યાન ગ્રંથો મહુ છે. તેમાંથી મહુ પ્રસિદ્ધનાં નામ:—

१. ब्रह्मसूत्र

२. शंकरभाष्य.



२. शंकरभाष्य उपरि अन्यटीकाओ

[पञ्चपादिका (१). भामती (२) पूर्व उक्ता.]

शारीरकभाष्यन्यायनिर्णय (आनन्दगिरिकृत) ३. ब्रह्मविद्याभरण (अं-
तानन्दकृत) ४ रत्नप्रभा (रामानन्दसरस्वतीकृता) ५. भाष्यदीपिका (जगन्नाथ-
यतिकृता) ६. इत्यादि.

२. शंकरभाष्य उपरि वार्तिक

भिधुसूत्रभाष्यवार्तिक (बालकृष्णानन्दकृत)

१. ब्रह्मसूत्र उपरि वृत्तिओ

भगवान् उपवर्णकृतवृत्ति (१). ब्रह्मसूत्रवर्षिणी (रामानन्दसरस्वतीकृता)
(२) ब्रह्मसूत्रवृत्ति (शंकरानन्दकृता) (३) ब्रह्मसूत्रार्थप्रकाशिका (ज्ञानेन्द्रस्वामि-
कृता) (४). सुबोधिनी (गंगाधरकृता) (५). मिताक्षरा (अप्रभाकृता) (६).
विद्वज्जनमनोरमा (संगनाथकृता) (७). रामजगा (अनुपनारायणकृता) (८) ब्रह्म-
सूत्रतात्पर्य (भैरवदीक्षित तिलककृत) (९) ब्रह्मसूत्रवृत्ति (रामभद्रकृता) (१०).
भवदेवमिश्रकृता वृत्ति (११) दिग्दर्शिनी (१२). शंकरपादभूषण (सुनाथ-
शास्त्री पर्यंतेकृत) (१३). नारायणभद्रकृता वृत्ति (१४) इत्यादि.

ફલેવાય છે. તેમાં ઘર્ષ (અને) આશ્રમના, ધાર્મિક, વાચિક, માનસિક, ધર્મ કહ્યા છે. તેઓનું પણ અંતઃકરણશુદ્ધિદ્વારા જ્ઞાન થઈ મોક્ષ જ પ્રયોજન છે.

તેમ ઠ્યાસે માહાભારત અને વાલ્મીકીય રામાયણ કન્યુ છે. તેઓનો પણ ધર્મશાસ્ત્રમાં અંતર્ભાવ છે. અને દેવતા-આરાધનાના નિમિત્ત જે મંત્રશાસ્ત્ર છે તેનો પણ ધર્મશાસ્ત્રમાં અન્તર્ભાવ છે. દેવતાઆરાધનનું અંતઃકરણશુદ્ધિ પ્રયોજન છે.

૫૨૧. તેમ સાંખ્યશાસ્ત્ર, યોગશાસ્ત્ર, વૈષ્ણવતંત્ર, શૈવ-તંત્ર, આદિક પણ ધર્મશાસ્ત્રના અંતર્ભૂત છે. કેમકે તેઓમાં પણ માનસધર્મ(ઉપાસના)નું નિરૂપણ છે.

ત્યાં સાંખ્યશાસ્ત્ર પદ્ધત્યાયરૂપ કપિલે કન્યું છે. તેના પ્રથમ અધ્યાયમાં વિષયનિરૂપણ કન્યા છે. દ્વિતીય અધ્યાયમાં મહત્ત્વ અહંકારાદિક પ્રધાનનાં કાર્ય કહ્યાં છે. તૃતીય અધ્યાયમાં વિષયોથી વૈરાગ્ય કહ્યો છે ચોથા અધ્યાયમાં વિરક્તોની આરુપાયિકા કહી છે. પાંચમા અધ્યાયમાં પરપક્ષનું સંડન કહ્યું છે. છઠ્ઠા અધ્યાયમાં સર્વ અર્થનો સંક્ષેપે સમ્રહ

૧. બ્રહ્મસૂત્રના અધિકરણ અનુસાર રચિત ત્રયો શારીરકમીમાસાન્યાય સમ્રહ (પ્રકાશાત્મયતિકૃત) (૧) વેદાતનયભૂષણ (સ્વયપ્રકાશાનન્દસરસ્વતી-કૃત) (૨). વેદાતસૂત્રમુક્તાવલિ (બ્રહ્માનન્દસરસ્વતીકૃત) (૩) વેદાંતાધિકરણમાલા સટીક (માધવાચાર્યકૃતા) (૪). શારીરકન્યાયરક્ષામણિ (અખ્યયદીક્ષિતકૃત) (૫). બ્રહ્મસૂત્રેદુશેષર (નાગોજીમટ્ટકૃતા) (૬). इत्यादि

૧. બ્રહ્મસૂત્રાનુસારી નિવંધો

સંક્ષેપશારીરક (પદ્યાત્મક) (સર્વજ્ઞાત્મમુનિકૃત) (૧)

૯ ઉપરિ ટીકાઓ -તત્ત્વબોધિની (તૃસિંહાશ્રમકૃત) (૧). સ. શા. સાર-સમ્રહ (મધુસૂદનસરસ્વતીકૃત) (૨). વિદ્યામૃતતર્યિણી (રાઘવાનન્દસરસ્વતીકૃતા) (૩). સર્વાર્થપ્રકાશિકા (રામતીર્થકૃતા) (૪) સિદ્ધાંતદીપ વિશ્વવેદકૃતા (૫). વિવરણપ્રમેયસમ્રહ (વિદ્યારણ્યકૃત) (૨). શારીરકરહસ્ય (શ્લોકાત્મક) રામતીર્થકૃત (૩). इत्यादि.

વિવરણપ્રમેયસમ્રહ (વિદ્યારણ્યકૃત) (૨). શારીરકરહસ્ય (શ્લોકાત્મક) રામતીર્થકૃત (૩). इत्यादि.

इत्यादि असंख्य प्रसिद्धाप्रसिद्ध त्रयो છે.

કન્યા છે. પ્રકૃતિપુરુષના વિવેકથી પુરુષનું અસંગ જ્ઞાન (૫) સાંખ્યશાસ્ત્રનું પ્રયોજન છે. તેનું પળ, ત્વંપદના લક્ષ્યઅર્થ શોધનદ્વારા, મહાવાક્યજન્ય જ્ઞાનમાં ઉપયોગ હોવાથી, મોક્ષ જ ફલ છે.

૪૯૨. તેમ યોગશાસ્ત્ર ચાર પાદરૂપ છે. પતંજલિ તેના કર્તા છે. તે પતંજલિ શેષનો અવતાર છે. એક ઋષિ સંખ્યા-ઉપાસન કરતા હતા, તેમની અંજલિમાં પ્રકટ થઈને પૃથ્વીમાં પડ્યા છે, ઘથી પતંજલિ નામ કહેવાય છે. તેણે શરીરના રોગરૂપી મલને દૂર કરવાનેસારૂ ચિકિત્સા ગ્રંથ કન્યા છે. અને અશુદ્ધશબ્દના ઉચ્ચારણરૂપી જે ઘાળીનો મલ છે, તેના નાશસારૂ પાણિનિ વ્યાકરણનું ભાષ્ય કન્યું છે. તેમ વિક્ષેપરૂપ અંતઃકરણનો મલ છે, તે(વિક્ષેપ)ના નાશસારૂ યોગસૂત્ર કન્યા છે. તર્હિ પ્રથમપાદમાં ચિત્તવૃત્તિના નિરોધરૂપ સમાધિ અને તેનાં સાધન-અભ્યાસ વૈરાગ્યદિક-કાર્યા છે. (તેને સમાધિપાદ, ઘાસિદ્ધપાદ કહે છે). તેમ વિક્ષિપ્ત ચિત્તને સમાધિનાં સાધન-યમ, નિયમ, આસન, પ્રાણયામ, પ્રત્યાહાર, ધારણા, ધ્યાન, સમાધિ, ૫ આઠ સમાધિનાં અંગ દ્વિતીયપાદમાં કાર્યા છે. (તેને સાધનપાદ ઘાસિદ્ધિપાદ કહે છે.) તૃતીયપાદમાં યોગની વિભૂતિ કહી છે. (તેને વિભૂતિપાદ કહે છે.) ચતુર્થપાદમાં યોગનું ફલ મોક્ષ કાર્ય છે. (તેને ફલપાદ, ઘાસિદ્ધિપાદ કહે છે.)

૫ રીતિય યોગશાસ્ત્ર પળ જ્ઞાનસાધન-નિદિધ્યાસન-ના સંપાદન-દ્વારા મોક્ષનો હેતુ છે. અને શારીરિકસૂત્રમાં જે સાંય-યોગનું ઁંડન કન્યું છે, તે તેઓમાં વ્યાયાન જે ઉપનિષદ્-થી વિરુદ્ધ કન્યા છે, તેઓનું ઁંડન કન્યું છે; સૂત્રોનું નદિ. તેમ ન્યાયર્થમેષિકનું ઁંડન પળ વિરુદ્ધ વ્યાયાનનું છે.

૭ તરગ.) વિદ્યાના અષ્ટાદશ (૧૮) પ્રસ્થાન ધર્મશાસ્ત્ર ૧૯૩

૪૯૩. તેમ નારદે પંચરાત્ર નામે તત્ર કન્યુ છે તેમા વાસુદેવમા અતઃકરણસ્થાપન કહ્યુ છે તેનુ પળ અતઃકરણની સ્થિરતાવતે જ્ઞાનદ્વારા માક્ષ જ ફલ છે સર્વ વૈષ્ણવગ્રથ પંચરાત્રના અન્તર્ભૂત છે. તે પંચરાત્ર ધર્મશાસ્ત્રના અન્તર્ભૂત છે તેમ પાશુપત તત્રમા પશુપતિનુ આરાધન કહ્યુ છે તેના વતા પશુપતિ છે તેનુ પળ અતઃકરણની નિશ્ચલતાદ્વારા મોક્ષસાધન જ્ઞાન ફલ છે અન્ય જે શેવ ગ્રથ છે, તે સર્વ પાશુપતતત્રને અતર્ભૂત છે તેમ ગણેશ, સૂય, દેવીની ઉપાસના વોધક ગ્રથોનુ, ચિત્તની નિશ્ચલતાદ્વારા, જ્ઞાન ફલ છે અને સવનો ધર્મશાસ્ત્રમા અન્તર્ભાવ છે

૪૯૪ પરંતુ દેવીની ઉપાસનાના વોધક ગ્રથમાં વે સપ્રદાય છે ઇક દક્ષિણ સપ્રદાય, અને ટીજા ઉત્તર સપ્રદાય છે. ઉત્તર સપ્રદાયને વામમાર્ગ કહે છે તેઓમા દક્ષિણસપ્રદાયની રીતિષ જે ગ્રથમા દેવાની ઉપાસના છે તે તો ધર્મશાસ્ત્રના અતર્ભૂત છે અને વામમાર્ગ જે ગ્રથોમા છે તે ધર્મશાસ્ત્રથી વિરુદ્ધ છે, ઇથી અપ્રમાણ છે યદ્યપિ વામતત્ર શિવે કન્યુ છે, તથાપિ સફલ શાસ્ત્ર અને વેદથી વિરુદ્ધ છે, ઇથી પ્રમાણ નહિ જેમ વિષ્ણુના બુદ્ધઅવતારે નાસ્તિક ગ્રથ કન્યા છે, તે વેદવિરુદ્ધ છે, ઇથી પ્રમાણ નથી, તેમ શિવવ્રત વામતત્ર પળ અત્યત વિરુદ્ધ છે, ઇથી પ્રમાણ નથી મદિરા દિક અત્યતઅશુદ્ધ પદાર્થોનુ તેમા પ્રહણ લખ્યુ છે, અને ઉત્તમ પદાર્થોના જે નામ છે, તે જ મલિન પદાર્થોના નામ ઠોઠવચનને નિમિત્ત કહે છે. મદિરાનુ નામ તીથ, માસનુ નામ શુદ્ધ, મદિરાપાત્રનુ નામ પદ્મા, પલાડુ(વ્યાઃ=ડુગલી)નુ નામ વ્યાસ લસુનનુ નામ શુફદેવ, મદિરાકારી ફલાલનુ નામ દીક્ષિત કહે છે તેમ વેદ્યાસેવી (ગણિકાને સેવ

નાર) ચર્મકારીઆદિક ચાંડાલીસેવીને, પ્રયાગસેવી, કાશી-સેવી કહે છે. અને ભૈરવીચક્રમાં સ્થિત જે ચાંડાલાદિક છે તેઓને બ્રાહ્મણ કહે છે; અને અત્યંતવ્યભિચારિણીને યોગિની (કહે છે) અને વ્યભિચારીને યોગી કહે છે. એમ અનેક પ્રકારે નિપિદ્ધ તેઓનો વ્યવહાર છે. પૂજનના સમયે અનેક દોષવતી સ્ત્રીને ઉત્તમશક્તિ કહે છે. જાતિની ચાંડાલી, અતિવ્યભિચારિણી રજસ્વલા સ્ત્રીને દેવીબુદ્ધિથી પૂજન કરે છે. તેનું ઉચ્છિષ્ટ મદિરાપાન કરે છે. અને અધિક મદિરાપાન કરી જે વમન કરી દે, તેને પૃથ્વી ઉપર પડવા દેતા નથી, અને આચાર્યસહિત વીજા સાવધાન ભક્ષણ કરે છે. વમનને ભૈરવી કહે છે. અને સ્ત્રીની-માં જીમ લગાયોને મંત્રનો જપ કરે છે. મદિરા ૧, માંસ ૨, મરસ્ય ૩, મુદ્રા ૪, મંત્ર ૫ (મૈથુન,) ૫ પાંચ મૂકારોને ભોગમોક્ષ નિમિત્ત સેવન કરે છે. પ્રથમા દ્વિતીયાદિક ત્રણે મૂકારોનો અપ્રસિદ્ધ નામથી વ્યવહાર કરે છે, યથા આદિ લઈને વામતંત્રનો સકલ વ્યવહાર આ લોકથી અને પરલોકથી ભ્રષ્ટ કરે છે. ૫ કારણથી કર્ણછેદી યોગી અને અવધૂત ગોસાઈ, તેમ અનેક સંન્યાસી અને બ્રાહ્મણાદિક વામમાર્ગને સેવન કરે છે, તો પણ લોકવેદર્નિદિત જાણીને ગુપ્ત રાખે છે. અધિક શું કહિયે!! વામતંત્રની રીતિ સાંભળીને મ્લેચ્છને પણ રોમાન્ધ થઈ જાય, एवं નિન્દિત વામતંત્ર છે. સર્વગી (સર્વભક્ષી) જે અ- (મધ્ય)ભક્ષણ કરે છે તે સર્વ નિન્દિત માર્ગ વામતંત્રમાં પછા છે. અતિનોચ વ્યવહાર લગ્નથી યોગ્ય નહિ. યથા વિશેષ પ્રકાર લગ્ન નથી. સર્વથા વામતંત્ર ત્યાગ્યા યોગ્ય છે.

૪૨૫. તેમ નાસ્તિકમત પણ ત્યાગ્યા યોગ્ય છે. નાસ્તિકતા છ મેદ છે.-આલ્પમિત્ર ૧, યોગાચાર ૨, સૌંદ્રા-

ન્ટિક ૩, વૈભાષિક ૪, ચાર્વાક ૫, દિગંબર ૬. એ છયે વેદને પ્રમાણ નથી માનતા. તેઓના પોતામાં વિલક્ષણ સિદ્ધાન્ત છે. માધ્યમિક શૂન્યવાદી છે. યોગાચારના મતમાં સર્વ પદાર્થ વિજ્ઞાનથી ભિન્ન નથી, વિજ્ઞાન જ તત્ત્વ છે, તે વિજ્ઞાન ક્ષણિક છે. સૌંદર્યન્ટિક મતમાં વિજ્ઞાનનો આકાર વાહ્યપદાર્થવિષય વિના હોય નહિ, યથી વિજ્ઞાનેકરી વાહ્યપદાર્થોનું અનુમાન ધાય છે; એ રીતિએ સૌંદર્યન્ટિક મતમાં અનુમાનપ્રમાણના વિષય વાહ્ય પદાર્થ છે; પ્રત્યક્ષ નથી; અને સ્થિર નથી; કિન્તુ સર્વ પદાર્થ ક્ષણિક છે. અને વૈભાષિક મતમાં વાહ્યપદાર્થ ક્ષણિક તો છે, પરંતુ પ્રત્યક્ષ પ્રમાણના વિષય છે. ઇટલાં ભેદ છે. એ ચારે મત સુગતના છે.

ચાર્વાક મતમાં પદાર્થ ક્ષણિક નથી, પરંતુ તેના મતમાં દેહ આત્મા છે. અને દિગંબર મતમાં દેહ આત્મા નથી; દેહથી આત્મા ભિન્ન છે, પરંતુ જેટલું દેહનું પરિમાણ હોય તેટલું આત્માનું પરિમાણ છે. એ રીતિએ તેઓનો પોતામાં મતનો ભેદ છે. ઘીજી પણ તેમની પોતામાં મતની વિલક્ષણતા વહુ છે. પરંતુ સર્વ વેદના ધિરોધી છે, યથી નાસ્તિક છે. એ કારણથી તેઓના મતનું ઉપપાદન અને હંડન વિશેષે કરીને લખ્યું નથી

૯૧૬. એ રીતિએ વામમાર્ગ અને નાસ્તિક મતોના ગ્રંથ યદ્યપિ સંસ્કૃતવાણીરૂપ છે, તથાપિ વેદવાહ્ય છે. યથી વેદનાં અનુસારી વિદ્યાનાં પ્રસ્થાન અષ્ટાદશ જ છે. ઘીજા મમ્મટ આદિકોષ જે સાહિત્યગ્રંથ કન્યા છે, તેઓનો પણ કામશાસ્ત્ર-માં અન્તર્ભાવ છે. તેમ સકલ કાવ્યોનો પણ—કોઈનો કામશાસ્ત્રમાં,—કોઈનો ધર્મશાસ્ત્રમાં,—અન્તર્ભાવ છે. એ રીતિએ અષ્ટાદશ વિદ્યાનાં પ્રસ્થાન સર્વ બ્રહ્મજ્ઞાનદ્વારા મોક્ષના હેતુ

छे. कोई साक्षात् ज्ञाननो हेतु छे, कोई परंपराथी ज्ञाननो हेतु छे. तर्कदृष्टि सकल शास्त्रनो ए अभिप्राय निश्चय कन्यो. यद्यपि उत्तरमीमांसा विना सर्व शास्त्र जिज्ञासुने हेय (त्याज्य) छे; ए शारीरकमां सूत्रकार भाष्यकारे प्रतिपादन कन्युं छे, एथी अन्यशास्त्र पण मोक्षनां उपयोगी छे एम कहेयुं संभवे नहि, तथापि सारग्राहिणी दृष्टिवते तर्क-दृष्टि ए सार निश्चय कन्यो.

४९७. (तर्कदृष्टिनो एक विद्वान्सह मिलाप.) द्रो.

शुणीं प्रसिद्ध विद्वान् बलीं, मित्यो आप त्यां आचीं;

निज निश्चय तेने तहां, दीधो सकल शुणाचीं.

२२.

टीका:—गुरुद्वारा सांभळेला अर्थमां बुद्धिनी स्थिरताना निमित्त सकल शास्त्रोनी अभिप्राय विचान्यो. तो पण पुनः संदेश थयो:—‘जे शास्त्रोनी अभिप्राय में निश्चय कन्यो ते ज छे, अथवा अन्य अभिप्राय छे. केमके तर्कदृष्टि कनिष्ठ अधिकारी कह्यो छे. एथी चारंवार कुतर्कथी संदेहं थाय छे. तेनी निवृत्तिअर्थे अन्य विद्वान्ना निश्चयसाथे पोताना निश्चयनी एकता करवाने गयो.’

४९८. (ते विद्वान्नी अनुमति). द्रो.

तर्कदृष्टिनां वचन शुणी, बोलथा ते युधसंत;

‘जे मजने तं ए कह्यो, ते ज मुख्य सिद्धान्त.’

२१९. कोई पंडित कहे छे वे:—

भक्तिज्ञाने यत्र विष्णोर्यत्र वेदाः परा प्रमा ।

मत्तानि तानि सर्वाणि जीवोद्धारम्य हेतवः ॥

जे (मतो) विषे विष्णु(व्यारक परमात्मा)नी भक्ति वा ज्ञान छे अने जेविषे वेदो परम प्रमाण छे, ते सर्ग मतो (साधार किंवा परंपराए) जीवना उद्धारना हेतुभो छे.

पं. पी. पु.

નશાહી સંશય સકલ શ્મ, લલ્લયો ઘ્ન અપરોક્ષ;
જગત્ જાણ્યું સૌ અસત્ જમ, તેમ ઘંધ ને મોક્ષ. ૨૪.

(જ્ઞાનીને ઇચ્છાસંઘમાં અભિપ્રાય.)

શેષ રહ્યા પ્રારબ્ધથી, ઇચ્છા ઉપજી પહ:-

જઈ તત્કાલ જ દેલિયે, જનનોજનઋયુત ગેહ. ૨૫.

ટીકા:-'જ્ઞાનીના સકલ વ્યવહાર અજ્ઞાનીની પેઠે પ્રારબ્ધે-કરી થાય છે.' ઇ પૂર્વે કહ્યું છે, ઇથી ઇચ્છા સંભવે છે. અને કહી શાસ્ત્રમાં આનું લલ્લ્યું છે:-'જ્ઞાનીને ઇચ્છા થાય નહિ.' તેનો આ અભિપ્રાય નથી:-જ્ઞાનીનું અંતઃકરણ પદાર્થની ઇચ્છા-રૂપ પરિણામને પ્રાપ્ત થાય નહિ.

કેમકે, અંતઃકરણના ઇચ્છાદિક સહજ ધર્મ છે. અને અંતઃ-કરણ યદ્યપિ ભૂતોના સત્ત્વગુણનું કાર્ય કહ્યું છે, તથાપિ રજોગુણતમોગુણસહિત સત્ત્વગુણનું કાર્ય છે. કેવલ સત્ત્વગુણ-નું નહિ. કેવલ સત્ત્વગુણનું કાર્ય હોય તો અંતઃકરણનો ચલસ્વભાવ નહિ થવો જોઈએ. તેમ રાજસીવૃત્તિ-કામક્રોધાદિક, અને મૂઢતાદિક તામસીવૃત્તિ કોઈ અંતઃકરણની નહિ થઈ જોઈએ. (પણ તે થાય છે.) ઇથી કેવલ સત્ત્વગુણનું અંતઃકરણ કાર્ય નથી, કિન્તુ અ પ્ર ધા ન રજોગુણતમોગુણસહિત પ્ર ધા ન સત્ત્વગુણવાળા ભૂતોથી અંતઃકરણ ઉપજે છે. ઇથી અંતઃકરણમાં પ્રણ ગુણ રહ્યા છે. તે ત્રણે ગુણ પણ પુરવોનાં જેટલાં અંતઃકરણ છે, તેઓમાં સમ નથી, કિન્તુ ન્યૂન અધિક છે. ઇથી ગુણોની ન્યૂનતા અધિકતાપકરી સર્વના ચિલક્ષણ સ્વભાવ છે, ઇ રીતિએ ત્રણે ગુણનું કાર્ય અંતઃકરણ છે.

જ્યાંસુધી અંતઃકરણ રહે ત્યાંસુધી રજોગુણના પરિણામ-રૂપ ઇચ્છાનો અભાવ વને નહિ. ઇથી 'જ્ઞાનીને ઇચ્છા થાય નહિ' તેનો આ અભિપ્રાય છે:-અજ્ઞાની અને જ્ઞાની ઘ્નને ઇચ્છા

તો સમાન થાય છે. પરંતુ અજ્ઞાની તો ઇચ્છાદિક આત્માના ધર્મ જાણે છે; અને જ્ઞાનીને જે કાલમાં ઇચ્છાદિ થાય છે તે કાલમાં પણ, ઇચ્છાદિકને આ ત્મા ના ધર્મ (છે એમ) જાણે નહિ. કિન્તુ, કામ, સંકલ્પ, સંદેહ, રાગ, દ્વેષ, શ્રદ્ધા, મય, લજ્જા, ઇચ્છાદિક, અંતઃકરણનાં પરિણામ છે, એથી અંતઃકરણના ધર્મ (છે એમ) જાણે છે. એ રીતિએ ઇચ્છાદિક થાય પણ છે, (કિન્તુ) ઇચ્છાદિક આ ત્મા ના ધર્મ (છે એમ) જ્ઞાનીને પ્રતીત થાય નહિ. એથી જ્ઞાનીમાં ઇચ્છાનો અભાવ કહ્યો છે. તેમ મન, વાણી, તનુવતે જે વ્યવહાર જ્ઞાની કરે તે સર્વ (વ્યવહાર) જ્ઞાનીને આત્મામાં પ્રતીત થાય નહિ. કિન્તુ સર્વા ક્રિયા મન વાણી તનુમાં છે, અને 'આત્મા અસંગ છે.'-એ જ્ઞાનીનો નિશ્ચય છે. એથી સર્વ વ્યવહાર કરતાં પણ જ્ઞાની અકર્તા છે. એ જ કારણથી શ્રુતિમાં આ કહ્યું છે:-'જ્ઞાનથી ઉત્તર 'કન્યાં જે ઘર્તમાન શરીરમાં શુભ-અશુભકર્મ તેઓનાં ફલ-પુણ્ય-પાપનો સંબંધ (જ્ઞાનીને) થાય નહિ.' પ્રારબ્ધવલથી અજ્ઞાનીની પેટે સર્વ વ્યવહાર અને તેની ઇચ્છા (જ્ઞાનીને) સંભવે છે.

શુભસંતતિ નામ રાજાને ત્યાગીને ત્રણે પુત્રો નીકળ્યા તેમાં પુત્રની કથા કહી. હવે પિતાનો પ્રસંગ કહે છે.

૪૯૯. (શુભસંતતિનો પ્રસંગ. ઉપાસના.) ૬૦.

શૂદ્રથી પુત્ર ગયા લક્ષ્મી, પિતૃચિત્ત ઉપજ્યાં મેદ,
સૂનું રાજ્ય ત્યજું નહિ, નહિ યથાર્થ નિવેદ. ૨૬.

ટીકા:-પુત્ર શૂદ્રથી નીકળ્યા ત્યારે રાજાને, ત્રીય પૈરામ્યના અભાવથી, તેઓના વિયોગનું દુઃખ થયું. તેમ મંદ પૈરામ્ય થયાં છે તેથી વિષયભોગનું મુગ થાય નહિ; અને શદિર નિકળવાની ઇચ્છા કરી પુત્રોના નીકળવાથી મનું રાગને છોડી શક્યાં નહિ, એથી પણ દુઃખ થયું. જો ત્રીય પૈરામ્ય

होत तो सूनुं राज्य पण त्यागी देत. ने वैराग्य तीव्र थयो नहि, किन्तु मंद थयो छे, पधी त्यागी शक्यो नहि. अने भोगोमां आसक्ति नहि. पथी उभयता खेद ज छे. [‘नहि यथार्थ निर्बेद’ नाम तीव्र वैराग्य नहि.] मंदवैराग्यनुं फल उपास्यनी जिज्ञासा (पंडितमंडल आगल राजा) कहे छे.

५००. (शुभसंततिना प्रश्न.) चोपारं

- शुभसंतति पिता महाभाग, तेने उपज्यो मंदविराग;
 कियो देव घ्येय ज हुं, जेने उपासुं ? ए जिज्ञासा तेने. २७.
- करवा निर्णय पंडित तेड्या, यथायोग्य आसन दई (छेड्या);
 प्रश्न कन्यो आ सदुनी आगे-‘छे को देव, न सुवे, न जागे ? २८.
- ‘जन पुरुषार्थ हित जेने याचे, भक्तिमान्ना मनमां राचे.’
 शुष्नी ए पृथिवीपतिनी चाणी, तेमां परु वयो सुज्ञानी. २९.

५०१. (विष्णु उपासक पंडितनुं उत्तर)

- शुण राजा तुं कहुं सुदेव, जेनीं करे ब्रह्मा शिव सेव;
 शंखचक्रधारी हितकारी, पद्मगदाधर परउपकारी. ३०.
- मंगलमूर्ति विष्णु रुपाल, निज सेवक लखी करे निहाल;
 शक्ति, गणेश, सुर, शिव, जे छे, आज्ञा तेनीमां सौं ते छे. ३१.
- भारत सकल ग्रंथ भापे छे, पद्मपुराण तापनी कहे छे;
 [‘तापनी’ नाम नृसिंहतापनी, रामतापनी, गोपालतापनी
 (नामक अथर्ववेदनी) उपनिषद्].
- विष्णुरूपथी उपजे सर्व हि; पडे भीड तेप्रति याचे सहि. ३२.
- चिचिध वेपनी धरी अचतार ज, सौं देवोने देय सहाय ज;
 पथी करिये पूजा तेनी, नहि सेव्य कोई समान जेनी. ३३.
- विष्णुभक्त शिव उत्तम कहो, तथापि सेव्यस्वरूप न लहो;
 रूप अमंगल शवसम जेनुं, ध्यान अमे नव करिये तेनुं. ३४.

राख, टमरु, गजचर्म, कपाल, धरे आप; शुं करे निहाल ?
 तनो पुत्र गणेश ज तेवो, रूप विलक्षण नरपशु जेवो. ३५.
 जे शठ हठथी ध्याये देवी, ते समरूप धरे ते सेवी;
 स्त्री निन्दितअशुचिअपवित्रा; अद्यगुण गण्या न जाय विचित्रा, ३६.
 कूट कपटनो आकर कहियो, पराधीना निजतंत्र न लहियो,
 एवं रूप ज जोई रे जेने ते सेवो नर खरसम तेने. ३७.
 निशदिन भानु भ्रमतो फरे ह, स्थान एक क्षण निश्चल न रेह
 भ्रमतां फरे उपासक तेनो, ते समान सेवक जे जेनो. ३८.
 जेथी अन्यदेव सहु त्याज्य ज, सेवनीय हरि जाग्रत् नित्य ज.
 पूजनध्यानकरण विधि जे छे, नारदपंचरात्रमां ते छे. ३९,
 टीका:-विष्णुने त्यागीने प्रसिद्ध जे चारे उपासना छे,
 ते एकएकनो निषेध कन्येथी पण स्मार्तउपासनानो पण
 निषेध कन्यां. केमके पांचे देवोने समशुद्धि करीने उपासें
 तेने स्मार्तउपासना कहे छे. शिवआदि चारे देवोने विष्णु-
 नी समता निषेधवाथी स्मार्तउपासनानो निषेध पण अ-
 र्थथी कर्यो.

५०२. (शिवउपासक पंडितनुं उत्तर.) चोपाई

'शिवसेवक' मुनि शुणी ते बोल्यो, क्रोधसहित चल नयने बोल्यो:-
 सुण राजन् ! मज घाणी एक ज, जेमां वचन प्रमाण कौटिज. ४०.
 शिवसमान अन्य को कहिये ! मागे दे जेने जे जोइये,
 सौं *विभूति हरिने दे मागी, धरे विभूति आप नित्य त्यागी ४१.
 चर्म कपाल आ हेतु धारे:-सम,-नहि उत्तम अधम,-विचारे;
 नग्न रही उपदेशे एवं, सुख नहि कोई विराग जेवुं. ४२.

टीका:-वैष्णवे चर्मकपालादिक निन्दित वस्तुनुं धारण

(शिखमां.) आशेष कन्यु, तेनु आ समाधान छे,-महादेवने सर्व पदार्थोमां सममुद्धि छे. द्वितीय पादनो अन्यय आम छे - सम विचारे उत्तम अधम न विचारे.

घोपाई.

सदाग्रत एनु दे भारी,-मरे काशीपुरीमा नरनारी;
ते सायुज्यमुक्ति प्रति जाय, गर्मवास सकट नहि थाय ४३.
शिवसमान नरनारी ते सहु, दिव्य भोग त्यारे ले ते बहु,
करे आप अद्वयउपदेश, त्यजे लिंग इम ब्रह्मप्रवेश. ४४.
उच नीच किञ्चित नहि देखे, मुक्ति सर्वने दे ऐक लेये;
राजन् ! शिवसमान को दाता? भक्त अमक्त सर्वनो प्राता. ४५.
शुणो स्वभाव विष्णुनो एवो, जगमा जन प्राकृत छे जेवो,
प्राता भक्त, अमक्त न प्राता, प्रसिद्ध छे जगमां ए ताता. ४६.
हरिसेवक, हरसेव्य, चरणाण्या, रामे (जो) रामेश्वर मान्या,
व्यासे स्कंदपुराणे, भाख्या हरिसेवक, हरसेव्य ज राख्या. ४७.
कहु बली भारत पद्मपुराणे, सो देवर्षी हरि अधिक माने,
भारततात्पर्य न देख्यु जे, अप्पयदीक्षित बुधे लख्यु जे. ४८.

टीका -वैष्णवे आ कहु (हनु) -'भारतादि प्रथोमां सर्व देवोना पूज्य विष्णुने कहा छे,' ते वने नहि. केमके भारत-अथनु तात्पर्य देखतां शिव प्रति ज ईश्वरता प्रतीता थाय छे, ए, (शिवोत्कंपमजरी आदिना कर्ता) अप्पयदीक्षित नाम विद्वाने सकल पुराणइतिहासनु तात्पर्य लख्यु छे. त्यां भारतमा आ प्रसंग छे -अश्वत्थामाए नारायणास्र अने आग्नेयास्रनो प्रयोग कन्या, त्यारे बहु सेनानो तो सहार पण थयो, परतु पचपांडवोमांथी कोई मन्या नहि त्यारे ख्यने त्यागीने धनु वेद अने आचार्यनो धिक्कार करता घन प्रति चाल्या त्या व्यास भगवान् तेने मल्या, अने आ कहु -'हे ब्राह्मण ! तु आचार्य

अने घेदने धिकार मा कहे. ए अर्जुन (अने) कृष्ण वझे नरनारायणरूप छे. एओए शिवनुं पूजन बहु क-युं छे. एथी एओनी भक्तिने अधीन थयेला निशूली महादेव एओना रथनी आगल रहे छे, एथी ए वेना उपर प्रयोग करेला अनेक शस्त्र-अस्त्रांना सामर्थ्यने महादेव नाश करी दे छे'. ए भारतप्रसंगथी नारायणरूप कृष्णनी विभूति महादेवनी कृपाथी उपजी छे, ए सिद्ध थाय छे. एथी विष्णुचरित्रना प्रतिपादक जे ग्रंथ छे, ते शिवनी अधिकताने प्रतिपादन करे छे. केमके, ते ग्रंथोमां विष्णु सेव्य कहा छे, ते विष्णु भारतप्रसंगथी शिवना भक्त छे. एथी जे शिवनी भक्तिथी विष्णु सेव्य थाय छे, ते शिव ज परमसेव्य छे. ए रीतिए अप्पयदीक्षिते सकल वैष्णवग्रंथोना प्रतिपाद्य शिव कहा छे.

चोपाई.

सौ प्रतिपाद्य शिव वरुणाया, भक्तोमां उत्तम हरि गाया;
ईश, देव, पद सहुमां कहिये, 'महत्'सहित एक शिवमां लहिये.

[टीका:-महादेव, महेश (महा+ईश) एम शिवने कहे छे. अन्यने तो (मात्र) देव, ईश कहे छे.]

शिवथी भिन्न अशिव जे कहिये, ते तजी, शिव कल्याण ज लहिये;
जलशायी जे नाम बखानो, ते जागे ए मिथ्या मानो, ५०.

[टीका:-कल्याणने शिव कहे छे, तेथी भिन्न अशिव छे. तेनो आ अर्थ सिद्ध थयो-शिवथी भिन्न अन्य देवता 'अशिव' नाम अकल्याणरूप छे ते अकल्याणरूप देवताने त्यागीने कल्याणरूप शिवने उपासे.]

विष लॅपीने सहुने उपजो दर, कन्या अभय सौ कंठ धरी गर;
जेनो पुत्र गणेश ज कहावे, विघ्नजाल तत्काल नशावे. ५१.

कार्यमांहि कारण गुण होय, इम शिव विघ्न मूलथी खोय;
जन्ममरणहुं ख विघ्न कहावे, ते समूल शिवध्यान नशावे. ५२.

सेवनयोग्य सदाशिव एक, जागे, सहित समाधि विवेक;
तंत्रपाशुपतिरोति गावे, तेम पूजन करी घ्यान लगावे. ५३.
नारदपंचरात्र मत जूठो, परिमल खंडी करे छे कूटो;
पथी शिवसेवा चित लावे, जे पुरुषार्थ चहो ते आवे. ५४;

[टीका:-नारदपंचरात्रनुं मत सूत्रभाष्यमां खंडन कन्युं
छे. तेना अनुसारी रामानुज आदिक नवीन वैष्णवोनुं मत,
(शंकरकृत) सूत्रभाष्यउपर वाचस्पतिमिधकृत भामती वा
शारीरकभाष्यविभाग नामे ग्रंथ छे तेनी टीका (अमलानन्दकृत)
कल्पतरुनी टीका (अप्पयदीक्षितकृत) परिमलमां खंडन
कन्युं छे.]

५०३. (गणेश उपासकनुं उत्तर.) घोषां.

[शिवनो पुत्र गणेश बतव्यो, कहुं 'कारणगुण कार्ये आव्यो';
शुणो गणेशनो पूजक बोल्यो, कन्यो कोप, सिंहासन डोल्यो.] ५५.
राजन् ! शुण वझे ए जूठा, वचन सत्य सम कहे छे जूठां;
शिवनो पुत्र गणेश बतावे पराधीनता तेमां गावे. ५६.

कहुं प्रसंग एक शुण एवो, लख्यो व्यास भगवाने जेवो;
त्रिपुर मारवा चड्यो सुरारि, हरिहर सहित देव अधिकारी. ५७.
गणेशपूजन न कन्युं पथी, जरा न त्रिपुर छिनायो तेयी;
मनव्या पछीं पस्ताईं गणेश, त्रिपुर विनादयो, रह्यो न लेश ५८.
थया समर्थ करी पूजा रीशा, सेवनयोग्य ते एक न बीजा.
राम पुत्र दशरथनो जेवो, विघ्नहरण शिवनो सुंतं तेवो. ५९.
जुवो गणेशपुराण व्यासकृत, गणेश सौनो हेतु कहुो सत;
हरि, हर, विधि, रवि, शक्ति आदि बहु, तुंडीयी* उपजे ते तो सह. ६०.

२२०. दशरथनी भक्तियी रामचंद्रजी तेना पुन थया, तेम शिवनी भक्तियी
गणपति तेना पुन थया छे. परंतु वझे पुनो पितायी श्रेष्ठ छे, एतुं ते गणेशमक्तनुं
कहेतुं छे. * गणपति.

ફરે ધ્યાન જન જ્યાં ક્ષણ મનમાં, નાશે વિદ્યો, પ્રધાન ગણમાં;
વિદ્યદ્ધરણ શ્મ જાગે નિરાદિન, ભક્તિસહિત સેવો અનવચ્છિદ્ધ. ૬૧.

૫૦૪. (દેવીઉપાસકનું ઉત્તર.)

[હેતુ શક્તિનો ગણેશ ગુણોને, ભગવતીમત્ત ઉર્ચ્યો ગુણોને; *]
ગુણ રાજન ! મજ વાણી સાચી, ત્રણે સકલ કહે ય કાચી. ૬૨.
વિના શક્તિ સ્ના સુર સારા, મૃતક દેહ સમ લલ્લ હત્યારા;
શક્તિહીન અસમર્થ કહેવાયે, કાર્ય કેમ તે તો ઉપજાવે ? ૬૩.
જેણે શક્તિઉપાસન કન્યું ભારી, તે થયા સકલ અધિકારી.
હરિ, હર, ગણેશ, રવિ સર્વેમાં, નાના શક્તિ દેલિયે તેમાં; ૬૪.
શક્તિ લોકમાં ભાષે જેને, રૂપ ભગવતીનું લલ્લ તેને;

ટીકા:-ભગવતીનાં વે રૂપ છે,-એક સામાન્ય અને (વીજી)
વિશેષ. સર્વ પદાર્થોમાં પોતાનું કાર્ય કરવાની જે સામર્થ્ય-
રૂપ શક્તિ, તે ભગવતીનું સામાન્યરૂપ છે. અને અષ્ટભુજાદિક
સહિત મૂર્તિ વિશેષરૂપ છે. સામાન્યરૂપ શક્તિના સંખ્યારહિત
અનંત અંશ છે. જેમાં શક્તિના ન્યૂન અંશ હોય તે અલ્પશક્તિ-
હોય છે.-તે) અસમર્થ કહેવાય છે. જેમાં શક્તિના અધિક
અંશ હોય-તે સમર્થ કહેવાય છે. વિષ્ણુ, શિવ આદિકોમાં
શક્તિના અંશ અધિક છે. યથી અધિક સમર્થ કહેવાય છે.
૫ રીતિય ભગવતીનું સામાન્યરૂપ જે શક્તિ, તેના અંશોની
અધિકતાથી વિષ્ણુ, શિવ, ગણેશ, સૂર્યનો મહિમા પ્રસિદ્ધ છે.
અને શક્તિય રહિત હોય તો, જેમ પ્રાણ વિના શરીર અમંગલરૂપ
થાય છે તેમ સર્વ દેવ 'હત્યારા' નામ અમંગલરૂપ થઈ જાય.
૫થી જે શક્તિની અધિકતાથી દેવનો મહિમા પ્રસિદ્ધ છે, તે
મહિમા શક્તિનો છે; તે દેવોનો નથી. વિષ્ણુ, શિવ આદિકો-
૫ ભગવતીની સામાન્યરૂપ શક્તિની અધિક ઉપાસના કરી છે.

પથી તેઓમાં શક્તિના અંશ અધિક છે. ૫ પૂર્વ ગ્રંથોમાં (અહુ ૬૩-૪ ની ચોપાઈમાં) ભગવતીમક્તનો અભિપ્રાય છે.

જેમ ભગવતીની નિરાકારરૂપશક્તિના અનંત અંશ છે, તેમ સાકારરૂપના પણ અનંત અંશ છે. તે સાકાર અંશોમાં કાલી-રૂપ પ્રધાન છે. અને માહેશ્વરી, વૈષ્ણવી, સૌરી, ગાણેશી, આદિક પણ પ્રધાન અંશ છે. વિષ્ણુને ભગવતીની ઉપાસનાથી વૈષ્ણવોનામે ભગવતીના અંશનો લાભ; તેમ અન્ય દેવોને ભગવતીના ઉપાસનથી નિજ નિજ માહેશ્વરી આદિક અંશોનો લાભ થયો છે: તેઓમાં પણ ભગવતીના વિષ્ણુ(અને) શિવ (૫) વચ્ચે પ્રધાન ભક્ત છે. કેમકે ધ્યાતાને ધ્યેયરૂપની પ્રાપ્તિ (૫) ઉપાસનાનો પરમ અવધિ છે. વિષ્ણુશિવને ઉપાસનાથી ધ્યેય-રૂપની પ્રાપ્તિ થઈ છે, પથી પ્રધાન ઉપાસક છે, ૫ અઢી ચોપા-ઈથી પ્રતિપાદન કરે છે:-

લક્ષ્મીકોટિ માતૃકાગણ (શુભી)તંત્રગ્રંથમાં લક્ષ્યા અંશ ગુણી. ૬૫.
કાલી તેનો અંશ પ્રધાના, માહેશ્વરી શાંકરી આદિ લક્ષ નાના;
હરિ, હર, વ્રહ્મા, સહુ તે ધ્યાયે, ધામે નિજાંશ તેની કૃપાપ. ૬૬.
થાય ધ્યેયરૂપ ધ્યાતા જ્યારે, સિદ્ધ ઉપાસન લક્ષ્યાય વ્યારે;
ઉપાસના પથી હરિહરની, નારી મૂર્તિ ધરી, તર્જી નરની. ૬૭.

૬૬.

અમૃતમથનપ્રસંગમાં, હરિ મોહિનીસ્વરૂપ;

શોમે શિવ અર્ધાંગમાં, દેવીરૂપ અનૂપ.

૬૮.

ટીકા:- (સમુદ્ર)મથન કરીને અમૃત પ્રકટ કન્યું ત્યારે સુરઅસુરનો વિવાદ મટાડવાને વિષ્ણુ અસમર્થ થયા, ત્યારે પોતાની ઉપાસ્યરૂપા ભગવતીનું એવું એકાગ્રચિત્તે ધ્યાન કન્યું (કે) જેથી પોતે વિષ્ણુ ઉપામ્યરૂપને પ્રાપ્ત થયા. તે રૂપના માહાત્મ્યથી અસુર પણ તેને અનુકૂલ થયા. તેમ શિવે પણ

समाधिमां एवुं भगवतीनुं ध्यान क-युं जेथी अर्द्धविग्रह शिवनुं उपास्यरूप थयुं. कदाचित् विक्षेपथी समाधिना अभाव थाय छे, एथी शिवनुं सर्व विग्रह (शरीर) उपास्यरूप नथी. ए रीतिए सर्व देव भगवतीना उपासरु छे. ते उपासना वे रीतिए कही छे,—दक्षिण आमनायथी (मार्गथी) अने उत्तर आमनायथी. दक्षिण आमनाय पूर्व कह्यो छे; अग्रे उत्तर आमनाय कहे छे.

चोपाई.

भक्त भगवतीना हर हरि छे, ए सम कोणे उपासना करी छे; तदपि महामाया ध्याये सहि, पामे तुरत सकल पुढपार्थ हि. ६९.
जगमां साधन एवुं अन्य नहि, उपजे भोग मोक्ष एकत्र जहि; भक्त भगवतीना जे जगमां, भोग भोगवे, नावे भगमां. ७०.
शिवरुततंत्र रीति ए गायी, भक्ति भगवती अति सुरदायी; पंच मकार न तजिये एथा, सनातन जेने सर्वे सेव्या. ७१.
कृष्णदेव, बलदेव सुंझानी, प्रथमा पिये सदा ज्यम पाणी; अन्य प्रधान पुरातन जे जे, सेवे सकल मकार ज ते ते. ७२.
विधि ते सेवनना उपकारी, कह्यो निज मुखे शिवे भारी. शिवनां वचन धरे जे मनमां, लहे सुभोग मोक्ष एक तनमां. ७३.
ग्रंथ भागवत व्यासे वांध्यो, उपपुराण काली अनुसांध्यो; एक भक्ति भगवतीनी गायी, पूजाविधि सकल समजावी. ७४.
ध्याता सकल भगवतीना छे, हरि, हर, सुर, गणेश जेटला छे; सकल पिये प्रथमा मतिवाला, पूजे शक्तिमग्नन सारा. ७५.
जगज्जननी जागे एक देवी, परमानंद लहे ते सेवी;

५०५. (सूर्यभक्तनुं उत्तर.)

‘सूर्य, भक्त भगवतीना’ए शुणी, क्रोधसहित बोल्यो एरु मुनि. ७२.

શુભ રાજન્ ! મજ વાળી ઇક જ, જૂઠ ન મારું કોટી શપથ જ.
 અતિપાપિષ્ઠ નીચ મત પનું, શ્રવણ સ્નેહથી શૃણ્યું તેં જેનું. ૭૭.
 અવગુણ જેહ ગણાયે જગમાં, ગણે જ તે શુભગણ ઇ મગમાં;
 મઘ મલ્લોનનું 'તીર્થ' જ રાણે, 'શુદ્ધ' નામ આમિપનું માણે. ૭૮.
 કહે અન્ય ઇમ સહુ વિપરીત, શંભુતંત્ર સેવી મતિરહિત,
 દક્ષિણસંપ્રદાય જે દૂજો, યદ્યપિ અનેક શ્રેષ્ઠે પૂજો. ૭૯.
 તથાપિ માનુ વિના સૌ અંધ, ઇ સૌનાં મન જેમાં વદ્ધ;
 માનુ કરે સફલ અજવાલું, તે વિન થાય તુરત અંધાઈ. ૮૦.
 અન્ય પ્રકાશક જગમાં જે છે, અંશ સૂર્યના સર્વે તે છે;
 માનુસમાન કોણ હિતકારી ? ભ્રમે આપ પરહિતમતિધારી. ૮૧.
 કાલાધીન થાય સહુ કાર્ય જ, કાલ ત્રિવિધ માપે આચાર્ય જ;
 વર્તમાન માધિ ને ભૂત, સૂર્ય ક્રિયા કરે ઇ સૂત. ૮૨.
 ઇ વિધિ સફલ માનુથી ઉપજે, તે કોપે સહુ મસ્મ થાય જે;
 દ્વિવિધે માનુરૂપ પીછાનો, નિરાકાર સાકાર જ જાણો. ૮૩.
 નિરાકાર જે પ્રકાશ કહિયે, નામરૂપમાં વ્યાપક લહિયે;
 અધિષ્ઠાન સર્વનું તે ઇક, જગત્ત્રિવર્ત, જેનો અવિવેક. ૮૪.
 અહં માનુ ઇ વૃત્તિ ઉદય જ્યાં, તેમાં પ્રકટી વિનાશે તમ ત્યાં. ૮૫.

ટીકા:—સૂર્યનાં ઘે રૂપ છે,—નિરાકાર પ્રકાશ અને સાકાર પ્રકાશ. તે ઘેમાં નિરાકાર પ્રકાશ સર્વ નામરૂપમાં વ્યાપક છે. જૈને વેદાન્તી 'માતિ' શબ્દે કરીને વ્યવહાર કરે છે, તે નિરાકાર પ્રકાશરૂપ જે સૂર્યનું સામાન્યરૂપ છે, તે સર્વ જગત્-નું અધિષ્ઠાન છે. તેના અજ્ઞાનથી જગત્-રૂપી ત્રિવર્ત ઉપજે છે. તે જ નિરાકાર પ્રકાશ અંતઃકરણની વૃત્તિમાં (ચૈતન્યના) પ્રતિવિવસહિત શાન કહેવાય છે. 'અહંમાનુ' પથી અંતઃકર-

ળની ઘૃત્તિ પ્રકાશના પ્રતિવિંચસહિતા થાય, ત્યારે અજ્ઞાનની નિઘૃત્તિદ્વારા જગત્ની નિઘૃત્તિ થાય છે.

ઘોષાર્.

શુણ સાકારરૂપ આ તેનું, થાયે સુતેજ દિનમાં જેનું; તેના અંશ અન્ય છે જ્ઞાજ્ઞા, તારા ચંદ્ર દીપ નહિ માજ્ઞા. ૮૬. ષથી ઘે વિધ માનુ વતાવ્યો, જ્ઞેય ઘ્યેયનો ભેદ જણાવ્યો; વેદ સકલ તેને માલ્લે છે—પ્રકાશરૂપ સત્, તેને કહે છે. ૮૭.

ટીકા:—નિરાકાર સાકાર ભેદથી માનુનાં ઘે રૂપ છે. તેમાં નિરાકારરૂપ જ્ઞેય છે; અને સાકારરૂપ ઘ્યેય છે. ષને જ વેદાન્તો(ઉપનિષદો)માં નિર્ગુણસગુણ ભેદથી ઘે પ્રકારનું બ્રહ્મ કહે છે.

કદાપિ જેમાં તમલેશ નહિ તે લલ્લો જગજન સહુ જાગે સહિ ૮૮. કદાપિ ન સુવે તે ત્યમ જાગે, ઘ્યાન કરે તેનું તમ માગે; અન્ય જ આમત્ માલ્લે, સઘલા, રાજન્ ! જાણ જુઠા તે જ્ઞગડા. ૮૯. ષવું પાંચ ઉપાસક વોલ્યા, નિજગુણ, પરના અવગુણ ળોલ્યા; પંડિત અન્ય અનેક જ આલ્યા, મિત્ર મિત્ર નિજમત સમજાવ્યાં. ૯૦.

૫૦૬.(સ્માર્ત મત.)

ટીકા:—જેમ પાંચ ઉપાસક પરસ્પર વિરુદ્ધ વચન વોલ્યા, તેમ અનેક પંડિત નિજનિજબુદ્ધિને અનુસાર વિરુદ્ધ જ વોલ્યા. જેમ ષ પાંચેનાં પરસ્પર વિરુદ્ધ મત છે, તેમ સ્માર્ત જે પંડિત—પાંચે દેવોમાં ભેદબુદ્ધિ કરે નહિ—તેનું મત ષળ સર્વથી વિરુદ્ધ છે. કેમકે વૈષ્ણવનું આ મત છે:—‘વિષ્ણુ-સમાન અન્ય દેવ નથી. સર્વ વિષ્ણુના ભક્ત છે. અને વિષ્ણુનાં રામ, કૃષ્ણ, નારાયણાદિક જે નામ છે તેઓના સમાન જે અન્ય દેવોનાં નામને જાણે તે નામાપરાંથી છે. તેને રામાદિક

૨૨૧. નામાપરાઘ દશ પ્રકારના છે. તેઓમાંથી કોઈ ષળ ‘નામાપરાઘ’ કરે તે નામાપરાથી કહેવાય છે.

नामउच्चारणं यथार्थं फलं थाय नहि.' तेम शैव मतमां शिव-
समान अन्य देव नथी. अने शिवनां नामउच्चारणं फल
विष्णुनामउच्चारणथी थाय नहि. ए रीतिप सर्वना मतमां पोत-
पोताना उपास्य देवना समान अन्य देव नथी. अने स्मार्त-
मतमां सर्व देव सम छे. एथी तेनुं मत पण पंचिथी विरुद्ध छे.

५०७ (पट्ट शास्त्रनां भिन्नभिन्न मत.)

सांख्य, पातंजल, न्याय, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा, उत्तर-
मीमांसा, ए पट्ट शास्त्रोनुं मत पण परस्पर विरुद्ध छे.
केमके सांख्यशास्त्रेकरे ईश्वरनो अंगीकार नथी, (अने)
योगमां निरपेक्ष (एवा) प्रकृतिपुरुषना, विवेकज्ञानथी, मोक्ष मान्यो
छे. अने पातंजलशास्त्रमां ईश्वरनो अंगीकार (अने) समा-
धिथी मोक्ष मान्यो छे. ए विरोध छे. न्यायमतमां चार
प्रमाण, अने वैशेषिक मतमां वे प्रमाण, ए विरोध छे. नेम
न्यायवैशेषिकनो अन्य पण पोतामां बहु विरोध छे. (पण)

‘सन्निदाऽसति नामवैभवकथा श्रीशेषयोर्भेदधी-

रश्रद्धा श्रुतिशास्त्रद्वैशिकगिरां नामन्यर्थवादभ्रमः ।

नामास्तीतिनिषिद्धवृत्तिविहितत्यागो हि धर्मान्तरैः

साम्यं नाम्नि जपे शिवस्य च हरिर्नामापराधा दश’ ॥ १ ॥

अर्थः—(१) सत्पुरुषनी निन्दा, (२) असाधु (मनुष्य) पासे नामवैभवनी
कथा, (३) श्रीईश (विष्णु) अने ईश (शिव) ए वेमां भेदबुद्धि, (४) श्रुतिवा-
क्यमां अश्रद्धा, (५) शास्त्रवाक्यमां अश्रद्धा, (६) गुह्यवाक्यमां अश्रद्धा, (७)
नाममां अर्थवादनो भ्रम, (८) नाम (जे पापनुं नाशक छे ते मारी पासे) छे ए हेतुथी,
निषिद्धनुं आचरण, अने (९) विहितनो त्याग, (१०) अने ईश्वरनामविषे धर्मा-
न्तरसाथे तुल्यता मानवी, ए दश शिव अने हरिना जप विषे नाम-अपराध छे.

भाषामां आ दुहो प्रचलित छेः—

राम राम सब को कहे, दशऋते कहे न कोय;

एकवार दशऋते कहे, कोटि यत्फल होय.

इहां रामना पिता थी दशरथनो ध्वनि छे, किन्तु अर्थ ‘दश’=नामापराध,
‘ऋते’=विना, एयो छे.

જિજ્ઞાસુને અપેક્ષિત નથી યથી લખ્યો નથી. તેમ પૂર્વમીમાંસા-
માં ઈશ્વરનો અંગીકાર નથી, મોક્ષરૂપ નિત્ય સુખનો અંગી-
કાર નથી, કિન્તુ કર્મજન્ય વિપયસુખ જ પુરુષાર્થ છે. અને
ઉત્તરમીમાંસામાં, -ઈશ્વરનો (અને) મોક્ષનો, -અંગીકાર (છે),
વિપયસુખ પુરુષાર્થ નથી. ઉત્તરમીમાંસાનું અન્ય મત આ
ગ્રંથમાં સ્પષ્ટ જ છે. સર્વ શાસ્ત્રોનાં મત યથી વિરુદ્ધ છે.
અન્યમાં ભેદવાદ છે. આમાં (ઉત્તરમીમાંસામાં) ભેદનું રાંડન અને
અભેદનું પ્રતિપાદન છે. એ રીતિએ સકલ શાસ્ત્રોના સિદ્ધાન્ત
પરસ્પર વિરુદ્ધ છે.

૫૦૮. (વિરુદ્ધ મત સાંભલી રાજાની સ્થિતિ.)

ચોપાઈ.

નૃપે વચન વિરુદ્ધ શુણ્યાં જ્યાં, સંશય તાજો ઉપજ્યો આ ત્યાં:-
એમાં સત્ય કોણ બુદ્ધ કે, છે? યુક્તિપ્રમાણ સકલ સમ દે છે. ૧૧.
સંશયશોકે દુઃખિત જીવમાં, કો ઉપાસ્ય એ લલ્ચું ન મનમાં;
ચિંતા હૃદય થઈ એ તેને, નિજસંદેહ શુણાવું કેને. ૧૨.

શાસ્ત્રનિપુણ પંડિત જગ જે સદ્, શુણ્યા વિરુદ્ધ યક્તા આ તે સદ્;
શ્મ ચિન્તત વધુ કાલ થયો જ્યાં, તર્કદષ્ટિ આવી મલિયો ત્યાં. ૧૩.

૫૦૯. (શુભસંતતિ પિતા અને તર્કદષ્ટિ પુત્રનો મિલાપ)

દુહા.

મલ્યા પરસ્પર તે ઉભય, પુત્ર પિતાની રીતિ;

કન્યું નમન, આશિષ્ઠ દિધી, આસન લીધાં સમીતિ. ૧૪.

સચિન્ત સ્વપિતાને લખી, સુત યોલ્યાં આ યાત:-

શી ચિન્તા ચિત આપને, મુર પ્રસન્ન નહિ તાત ? ૧૫.

ચોપાઈ.

શુભસંતતિએ શુણી સુતવાણો, કહ્યો તેને નિજ સકલ કહાણી;

ચિત ચિન્તાનો હેતુ દિધો કહી:-કો ઉપાસ્ય એ તત્ત્વ જહે નહિ. ૧૬.

તર્કદષ્ટિ શુણી પિતાનું ઘેણ, કહ્યું શુભસંતતિને મુરાર્દેણ:-

(તર્કદ્વિષ્ટિ કાર્યકારણના વિવેકે પિતાને સમાધાન દેસાહે છે.)
 'કારણરૂપ ઉપાસ્ય પિછાણો, તેનાં નામ અનંત જ જાણો. ૯૭.
 કાર્યરૂપ તુચ્છ લક્ષી તજિયે, ય સિદ્ધાન્ત વેદનો મજિયે.
 રચ્યાં પુરાણ ઇતિહાસ વ્યાસે, તેમાં નહિ નાના મત માસે. ૯૮.
 મનમાં મર્મ ન જાણે પંડિત, કરે પરસ્પર મત તે સંડિત;
 નીલકંઠપંડિત બુધ ભારી, કરી ટીકા ભારતની સારી. ૯૯.
 તેણે પ્રથમ પ્રસંગ લિખ્યો છે, અદોષ શ્રુતિસિદ્ધાન્ત કહ્યો છે. ૧૦૦.

૫૨૦. (અનેક દેવોવિપયે સમાધાન.)

ટીકા: યદ્યપિ સકલ પુરાણના કર્તા એક વ્યાસ છે. તેણે સ્કંદપુરાણમાં શિવને, સ્વતંત્રતાદિક ઈશ્વરધર્મ કહ્યા અને અન્ય દેવોને શિવરૂપાથી સર્વ વિભૂતિની પ્રાપ્તિ કહી, યથી (અન્ય દેવના) જીવધર્મ કહ્યા. તેમ વિષ્ણુપુરાણ, પદ્મ-પુરાણમાં વિષ્ણુને ઈશ્વરતા કહી. તેમ કોઈને પુરાણમાં કોઈને ઉપપુરાણમાં, વિષ્ણુશિવથી ભિન્ન જે ગણેશાદિક છે, તેઓને ઈશ્વરતા કહી. ય રીતિય વ્યાસવાચ્યમાં વિરોધ પ્રતીત થાય છે, તેનું સમાધાન (નીલકંઠ) આ (પ્રમાણે) કરે છે:- સર્વ (પંચાયતન દેવ) ઈશ્વર છે. જે પ્રકરણમાં અન્ય દેવની નિંદા છે, તેની નિંદા કરીને તેની ઉપાસના ત્યાગમાં વ્યાસનો અભિપ્રાય નથી; કિન્તુ વૈષ્ણવપુરાણમાં શિવાદિકની નિંદા અને વિષ્ણુની સ્તુતિ કરીને, વિષ્ણુની ઉપાસનામાં પ્રવૃત્તિનો હેતુ છે. તેમ શિવપુરાણમાં વિષ્ણુઆદિકોની નિંદા પણ, તેઓની ઉપાસનાના ત્યાગ અર્થે નથી, કિન્તુ તેઓની નિંદા શિવની ઉપાસનામાં પ્રવૃત્તિને અર્થે છે. જો એક પ્રકરણમાં અન્યની નિંદા ત્યાગસારૂ હોય તો, સર્વ ની ઉપાસનાનો ત્યાગ થશે. યથી અન્યની નિંદા એકની સ્તુતિને અર્થે છે, ત્યાગ અર્થે નથી.

દૃષ્ટાંત-વેદમાં અગ્નિહોત્રના ઘે કાલ કદ્યા છે, એક તો સૂર્યઉદયથી પ્રથમ; અને વીજો સૂર્યઉદયથી અનંતર કાલ કદ્યો છે. ત્યાં ઉદયકાલના પ્રસંગમાં અનુદયકાલની નિંદા કરી છે; અને અનુદયકાલના પ્રસંગમાં ઉદયકાલની નિંદા કરી છે. ત્યાં નિંદાનું તાત્પર્ય ત્યાગમાં હોય તો ઘટે કાલમાં હોમનો ત્યાગ થશે. અને નિત્યકર્મનો ત્યાગ સંભવે નહિ. યથી ઉદયકાલનો સ્તુતિસારૂ અનુદયકાલની નિંદા છે. અને અનુદયકાલની સ્તુતિસારૂ ઉદયકાલની નિંદા છે. તેમ એક દેવની ઉપાસનાના પ્રસંગમાં અન્યની નિંદાનું એકની સ્તુતિમાં તાત્પર્ય છે. અન્યની નિંદામાં તાત્પર્ય નથી. જેમ શાખાભેદથી કોઈ ઉદયકાલમાં હોમ કરે છે, કોઈ અનુદયકાલમાં કરે છે. ફલ ઘટેને સમાન થાય છે.

૫૧૧. તેમ ઇચ્છાભેદથી પાંચે દેવોમાંથી જેનો ઉપાસના કરે તે સર્વથી બ્રહ્મલોકની પ્રાપ્તિ થાય છે. ત્યાં ભોગ ભોગવીને વિદેહમોક્ષ થાય છે. યદ્યપિ વિષ્ણુ આદિકોની ઉપાસનાથી વેકુંઠ લોકાદિકોની પ્રાપ્તિ પુરાણમાં કહી છે, બ્રહ્મલોકની નહિ; તથાપિ ઉત્તમઉપાસક વિદેહમુક્તિના અધિકારી દેવયાનમાર્ગથી સર્વ બ્રહ્મલોક પ્રતિ જ જાય છે. પરંતુ એક જ બ્રહ્મલોક વૈષ્ણવ ઉપાસકને વેકુંઠરૂપ પ્રતીત થાય છે. અને (તે) લોકવાસી સર્વ તેને ચતુર્ભુજ પાર્પદ(સમ્ય, અનુચર)રૂપ પ્રતીત થાય છે. અને પોતે પણ ચતુર્ભુજ મૂર્તિ થાય છે. તેમ શૈવઉપાસકને બ્રહ્મલોક જ શિવલોક (રૂપ) પ્રતીત થાય છે. તે લોકવાસી સર્વ ત્રિનેત્રમૂર્તિ પોતાસહિત પ્રતીત થાય છે. એ રીતિએ સર્વ ઉપાસકને બ્રહ્મલોક જ પોતાના ઉપાસ્યના લોક(રૂપ) પ્રતીત થાય છે. કેમકે આ નિયમ છે:-દેવયાનમાર્ગ વિના અન્ય-માર્ગથી જે જાય છે તેઓનું સંસારમાં આગમન થાય છે. અને

દેવયાનમાર્ગ એક બ્રહ્મલોકનો છે, યથી વિદેહમાંશના યોગ્ય ઉપાસક સર્વ બ્રહ્મલોક પ્રતિ જાય છે. તે બ્રહ્મલોકમાં આવી અદ્ભુત મહિમા છે:-ઉપાસકની ઇચ્છાને અનુસાર સર્વા સામગ્રી સહિત તે બ્રહ્મલોક જ તેને પ્રતીત થાય છે. એ રીતિએ પાંચે દેવના ઉપાસકોને સમફલ થાય છે.

૫૧૨. એવિષે આ શંકા થાય છે:-પાંચે દેવોનાં નામરૂપ મિશ્ર મિશ્ર કહ્યાં છે, અને ઈશ્વર એક છે. એક ઈશ્વરનાં નાનારૂપ સંભવે નહિ. તેનું આતું સમાધાન છે:-પરમાર્થેકરી નામરૂપ કદં પરમાત્મામાં છે નહિ. મંદબુદ્ધિને ઉપાસનાસારુ, નામરૂપરહિત પરમાત્માનાં માયાકૃત કલ્પિત નામરૂપ, (શાસ્ત્રે) કહ્યાં છે. યથી એક પરમાત્મામાં માયાકૃત કલ્પિત નામરૂપ નાના સંભવે છે. એ રીતિએ સર્વ પુરાણવાક્યોનો વિરોધ દૂર થાય છે.

૫૧૩. (પુરાણવાક્યોમાં વિરોધ માસે તેનું સમાધાન)

અને પુરાણવાક્યોમાં વિરોધશંકાનું મુખ્ય સમાધાન તો આ છે:-વિષ્ણુ, શિવ, ગણેશ, દેવી, સૂર્ય, યથી આદિલઈને જેટલાં એકએકનાં નામ છે, તે સર્વ કારણ બ્રહ્મનાં નામ છે. અને કાર્ય બ્રહ્મનાં પણ તે સર્વ નામ છે. જેમ માયાવિશિષ્ટ કારણને બ્રહ્મ કહે છે, અને હિરણ્યગર્ભ કાર્ય છે, તેને પણ બ્રહ્મ કહે છે. એ રીતિએ કારણબ્રહ્મને, વિષ્ણુ, શિવ, ગણેશ, દેવી, સૂર્ય (એ) પદ ઘોષન કરે છે; અને કાર્યબ્રહ્મને પણ એ પાંચે પદ ઘોષન કરે છે. એમ પાંચે પદના જે નારાયણ, નીલકંઠ, વિદ્યેશ, શક્તિ, માનુ, શ્યાદિ અનંત પર્યાય છે તે સર્વ કારણબ્રહ્મ અને કાર્યબ્રહ્મ વચ્ચેને ઘોષન કરે છે. કઈ કારણબ્રહ્મને અને કઈ કાર્યબ્રહ્મને પ્રસંગથી ઘોષન કરે છે. જેમ 'સૈધવ'પદ,-અશ્વ, લયણ,-વ-ક્ષેને ઘોષન કરે છે. મોજનપ્રસંગમાં 'સૈધવ'પદ 'લયણ'ને

બોધન કરે છે, અને ગમનપ્રસંગમાં 'સંધવ'પદ 'અશ્વ'ને બોધન કરે છે. (તેમ) વિષ્ણુપુરાણમાં વિષ્ણુ, નારાયણાદિ પદ કારણ બ્રહ્મનાં બોધક છે, શિવ, ગણેશ, સૂર્યાદિક પદ કાર્યબ્રહ્મનાં બોધક છે.

૫૧૪. યથી વૈષ્ણવ પ્રંથોમાં વિષ્ણુની સ્તુતિ અને શિવ-આદિકોની નિંદાથી વ્યાસનો આ અભિપ્રાય છે:-કારણ બ્રહ્મ ઉપાસ્ય છે; અને કાર્ય બ્રહ્મ ઉપાસ્ય નથી તેમ સ્કંદપુરાણાદિક શીવ પ્રંથોમાં શિવ-મહેશાદિકપદ કારણબ્રહ્મનાં બોધક છે; અને વિષ્ણુ, ગણેશ, દેવી, સૂર્યાદિકપદ કાર્યબ્રહ્મનાં બોધક છે. યથી તેઓમાં પણ કારણબ્રહ્મની સ્તુતિ અને કાર્યબ્રહ્મની નિંદા છે. તેમ ગણેશપુરાણમાં ગણેશપદ કારણબ્રહ્મનું વાચક અને વિષ્ણુ શિવાદિકપદ કાર્યબ્રહ્મનાં વાચક છે. યથી કારણની સ્તુતિ અને કાર્યની નિંદા છે. તેમ કાલીપુરાણમાં કાલી, દેવી, આદિકપદ કારણબ્રહ્મનાં બોધક (છે). અને વિષ્ણુ, શિવ, ગણેશ, સૂર્યઆદિકપદ કાર્યબ્રહ્મનાં બોધક (છે). યથી કાલીપદબોધ્ય કારણની સ્તુતિ, અને વિષ્ણુ શિવાદિકપદ-બોધ્ય કાર્યબ્રહ્મની નિંદા છે. તેમ સૌરપુરાણમાં સૂર્ય-માનુ પદ-બોધ્ય કારણબ્રહ્મ છે, તેની સ્તુતિ; અને અન્યપદબોધ્ય કાર્યની નિંદા છે. ૫ રીતિપ સકલ પુરાણમાં કાર્ય કારણની સંશારૂપ સંકેતનો તો ભેદ છે, (પણ) ઉપાદેય (ગ્રાહ્ય) હેય (ત્યાજ્ય) જે અર્થ તેનો ભેદ નથી. સકલપુરાણમાં કારણબ્રહ્મની ઉપાસના ઉપાદેય છે, અને કાર્યની ઉપાસના હેય છે. યથી સર્વ પુરાણ એક કારણબ્રહ્મની ઉપાસ્યતા બોધન કરે છે. તેઓનો પોતામાં વિરોધ નથી.

૫૧૫. (મૂર્તિસંબંધમાં વિચાર)

યદ્યપિ ચતુર્ભુજ, ત્રિનેત્ર, સતુંડ, અષ્ટમુજાદિક મૂર્તિ

૭ તરંગ.) કારણબ્રહ્મની ઉપાસનાની રીતિ, મૂર્તિસર્વથી અભિપ્રાય. ૬૧૬

માંયાના પરિણામ છે, અને ચેતનના વિવર્ત છે, યથી કાર્ય છે: અને તેઓની પણ ઉપાસના કહી છે;—તથાપિ તે ચતુર્ભુજાદિ મૂર્તિઓનું જે માયાવિશિષ્ટ કારણ છે, તેથી વિચાર કરવાથી, ભેદ નથી. યથી તે આકારોને વાધીને કારણરૂપથી તેઓની ઉપાસનામાં તાત્પર્ય છે. કેમકે, આકાર કાર્ય છે, યથી તુચ્છ છે, અને કારણ સત્ય છે. અને જેની મંદપ્રજ્ઞા આકારમાં જ સ્થિતા હોય, તે શાસ્ત્રુક આકારની જ ઉપાસના કરે, તેથી પણ પ્રજ્ઞા નિશ્ચલા થઈને કારણબ્રહ્મની ઉપાસનામાં સ્થિતિ થાય છે.

૬૧૬. (કારણબ્રહ્મની ઉપાસનાની રીતિ.)

(મૂર્તિપ્રતિપાદનનો અભિપ્રાય.)

કારણબ્રહ્મની ઉપાસના આ રીતિય કહી છે:—બ્રહ્મ જગતનું કારણ છે, સત્યકામ છે, સત્યસંકલ્પ છે, સર્વજ્ઞ છે, સ્વતંત્ર છે, સર્વનું પ્રેરક છે, કૃપાલુ છે, યવા ઈશ્વરના ધર્મોનું ચિન્તન કરે. મૂર્તિચિન્તનમાં શાસ્ત્રનું તાત્પર્ય નથી. અને અનેક મૂર્તિ જે શાસ્ત્રમાં લખી છે તે ઉપાસનાને નિમિત્ત નથી, કિન્તુ સર્વે મૂર્તિઓ કારણબ્રહ્મનું ઉપલક્ષણ છે. જે યસ્તુ જેના-એકદેશમાં હોય, અને કદાચિત્ હોય, અને વ્યાવર્તક હોય તે ઉપલક્ષણ કહેવાય છે. જેમ 'કાકઘાલું દેવદત્તનું ગૃહ છે.' ય યાન્યમાં દેવદત્તના ગૃહનું કાક ઉપલક્ષણ છે. કેમકે ગૃહના એક દેશમાં કાક હોય છે, અને કદાચિત્ હોય છે, સર્વદા નહિ, અને અન્ય ગૃહથી દેવદત્તના ગૃહનો વ્યાવર્તક છે. તેમ જગતનું કારણ બ્રહ્મ છે. તેના એકદેશમાં મૂર્તિ હોય છે, અને કદાચિત્ હોય છે. અને ચતુર્ભુજાદિક મૂર્તિ કારણ-બ્રહ્મ વિષે જ હોય છે, અન્યમાં નહિ, યથી વ્યાવર્તક હોવાથી ઉપલક્ષણ છે. ઉપલક્ષણનું આ પ્રયોજન હોય છે:—વિ શે વ્ય

વ સ્તુ ના સ્વ રૂ પ નું જ્ઞાન થાય. જેમ કાકથી દેવદત્તના ગૃહનું જ્ઞાન થાય, અન્ય પ્રયોજન કાકથી નથી. તેમ ચતુર્ભુજાદિક આકારોથી નિરાકાર કારણબ્રહ્મનું જ્ઞાન જ, ઉપાસનાના નિમિત્ત મૂર્તિપ્રતિપાદનનું પ્રયોજન છે, અન્ય નહિ.

૫૧૭. અને મંદપ્રજ્ઞાવાલા શાસ્ત્રઅભિપ્રાયને સમજ્યા વિના તે આકારોમાં આપ્રહ કરે છે; અને 'શ્યાલસારમેયન્યાય'થી પરસ્પર કલહ કરે છે; [સ્ત્રીના માઈને 'શ્યાલ' (સાલો) કહે છે, કુતરાને 'સારમેય' કહે છે, અને દ્વણ્તાને 'ન્યાય' કહે છે.] કોઈના સાલાનું નામ ઉત્કાલક હતું, અને સાલાના શત્રુનું નામ ધાવક હતું. તે પુરુષના ગૃહના કુતરાનું નામ ધાવક, અને વીજા ગૃહના કુતરાનું નામ ઉત્કાલક હતું ત્યાં તે પુરુષની સ્ત્રી ગૃહધિપે પ્રથમ આવી. ત્યારે વન્ને કુતરા પોતામાં હમેશ લડે. ત્યાં સ્ત્રીનો પતિ, શ્વશુર આદિક ઉત્કાલક(કુતરા)ને ગાલો દે, અને પોતાના ધાવક(કુતરા)ની વડાઈ કરે, ત્યારે તે સ્ત્રીને આ બ્રાન્તિ થઈ-મારા માઈને ગાલો દે છે, (અને) તેના શત્રુની વડાઈ કરે છે. તેથી દુ.ખિતા થઈને ભર્તા સાથે ક્લેશ કરતી થઈ. જેમ તેઓનો અભિપ્રાય જાણ્યા વિના સમાન સજ્ઞાથી ભ્રમે કરીને સ્ત્રીપ ક્લેશ કન્યો, તેમ વૈષ્ણવ ગ્રંથનાં શિવાદિક નામથી કાર્ય બ્રહ્મનો નિંદા કરી છે, જે અભિપ્રાયને ન જાણીને શૈવાદિ દુ.ખિત થાય છે, અને ત્રિપુના નામથી કાર્યની નિંદાને નહિ જાણીને, વૈષ્ણવ દુ.ખિત થાય છે અને સકલ પુરાણનો આ અભિપ્રાય છે.-કારણબ્રહ્મ ઉપાસ્ય છે, કાર્યબ્રહ્મ ત્યાજ્ય છે. [માયા. વિશિષ્ટ ચેતન કારણ બ્રહ્મ કહેવાય છે. માયાકૃત કાર્યવિશિષ્ટ ચેતન કાર્ય બ્રહ્મ કહેવાય છે.] એ જ અર્થ ભારતની ટીકાના આરંભમાં લખ્યો છે, અને સર્વ વેદાન્તોનો એ જ સિદ્ધાન્ત છે.

૫૧૮. ઘોષાદ્.

શુભસંતતિને શુર્ણો સુતવેળ, જીવમાં ઉપજ્યું કિશ્ચિત્ત્વેન;
 વલી પુત્રને કન્યો જ પ્રશ્ન જ; 'શાસ્ત્ર પરસ્પર કહે અસૂત જ. ૧૦૧.
 'તેમાં સત્ય કોણ તે કહિયે, જેનો અર્થ વુદ્ધિમાં લઈયે.' ૧૦૨.
 ટીકા:-[પુરાણમાં વિરોધ (લાગ્યો હતો પરંતુ પુવ્વનાં
 વચન સાંભલીને) તેની શંકાના નાશથી 'ચેન' નામ સુલ્લ થયું,
 અને પદ્મશાસ્ત્રની પરસ્પર વિરોધ શંકા મટી નહિ, પથી
 'કિશ્ચિત્ત્વે' ચેન થયું, સર્વથા નહિ. 'અસૂત' નામ વિરુદ્ધ
 કહે છે.]

૫૧૯. (ઉત્તરમીમાંસા સર્વમાં શ્રેષ્ઠા.)

તર્કદષ્ટિ શુર્ણો નિજ પિતૃવાણી, વોલ્યો વચન સુપરમ પ્રમાણી:-
 'ઉત્તરમીમાંસા' ઉપદેશ, જેમાં વેદવિરુદ્ધ, ન લેશ. ૧૦૩.
 પંચશાસ્ત્ર તે વેદવિરુદ્ધ, પથી જાણો તે જ અશુદ્ધ;

કિશ્ચિત્ત્વે અંશ વેદઅનુસારી, લખી વહુ પ્રહે મંદ અધિકારી. ૧૦૪.

ટીકા:-યદ્યપિ પદ્મશાસ્ત્રોના કર્તા સર્વજ્ઞ કહ્યા છે. સાંખ્યના
 કર્તા કાપિલ, પાતંજલના કર્તા પતંજલિ શેપનો અવતાર,
 ન્યાયના કર્તા ગૌતમ, વૈશેષિક શાસ્ત્રના કર્તા કૃણાદ,
 પૂર્વમીમાંસાના કર્તા જૈમિનિ, ઉત્તરમીમાંસાના કર્તા વ્યાસ,
 યે સર્વેનું માહાત્મ્ય પ્રસિદ્ધ છે. પથી એમનાં વચનરૂપ સર્વ
 શાસ્ત્ર પળ સમાન પ્રમાણ જોઈયે, તથાપિ સર્વે વાક્યોમાં
 પ્રબલ પ્રમાણ વેદવાક્ય છે. કેમકે વેદના કર્તા સર્વજ્ઞ ઈશ્વર છે.
 તેનાવિપે ભ્રમ, સંદેહ, વિપ્રલિપ્સા દોષ સંભવે નહિ. ય
 શાસ્ત્રોના કર્તા જીવ છે. તેઓનેવિપે ભ્રમ આદિક દોષોનો
 સંભવ છે. યદ્યપિ શાસ્ત્રકાર પળ સર્વજ્ઞ કહ્યા છે; તથાપિ
 તેઓને સર્વજ્ઞતા યોગમાહાત્મ્યેકરી થઈ છે, પથી યું જા ન યોગી
 ધયા છે. અને ઈશ્વરને સર્વજ્ઞતા સ્વભાવસિદ્ધ છે, પથી યુ ક-

યોગી છે. [ચિન્તન કન્યા પદાર્થનું જેને જ્ઞાન ધાય તે યુંજા નયોગી કહેવાય છે. જેને સર્વદા અકરસ સર્વ પદાર્થ અપરોક્ષ પ્રતીત હોય તે યુક્તયોગી કહેવાય છે. યથો ઈશ્વર છે.] યુક્તયોગી શૂન ઘેદવચન પ્રવલ અને યુંજાનયોગીશૂન શાસ્ત્ર-વચન દુર્બલ છે.

૫૨૦. યથી ઘેદાનુસારી શાસ્ત્ર પ્રમાણ, અને ઘેદવિરુદ્ધ અપ્રમાણ. પાંચ શાસ્ત્ર જેમ ઘેદવિરુદ્ધ છે, તેમ શારીરક આદિ ગ્રંથોમાં સ્પષ્ટ છે. અને ઉત્તરમીમાંસા કોઈ અંશમાં ઘેદવિરુદ્ધ નથી, યથી પ્રમાણ છે. અન્ય શાસ્ત્ર પણ કોઈ અંશમાં ઘેદના અનુસારિ દેખીને મંદબુદ્ધિ તેઓમાં વિશ્વાસ કરે છે; પરંતુ ઘટ્ટ અંશમાં ઘેદવિરુદ્ધ છે, યથો ત્યાજ્ય છે. કોઈક અંશમાં ઘેદ અનુસારિ હોવાથી ઉપાદેય ધાય તો, જૈનશાસ્ત્ર પણ અર્દિસા-અંશમાં ઘેદાનુસારિ છે, (તે) ઉપાદેય થયું જોઈયે અને ત્યાજ્ય છે, ઉપાદેય નથી. યદ્યપિ સુગત ઈશ્વરનો અવતાર છે, જેને બુદ્ધ કહે છે. તેનાં વચન પણ ઘેદસમાન પ્રમાણ જોઈયે તથાપિ બુદ્ધ (અવતાર) વિપ્રલિપ્સાનિમિત્તથી થયો છે, યથી તેનાં વચન સર્વથા અપ્રમાણ છે. [વંચનની ઇચ્છાને વિપ્ર-લિપ્સા કહે છે. જેને વહેકાવવાની ઇચ્છા કહે છે.] યથી સર્વ અંશમાં ઘેદાનુસારિની ઉત્તરમીમાંસા જ સર્વથા મુમુક્ષુને ઉપાદેયા છે. યદ્યપિ ઉત્તરમીમાંસા વ્યાસકૃત સૂત્રરૂપા છે, તેનું વ્યાખ્યાન પણ અનેક પુરુષોએ નાના રીતિએ કન્યું છે. તથાપિ પૂજ્યચરણ શંકરકૃત વ્યાખ્યાન જ ઘેદાનુસારિ છે, અન્ય નહિ. ૫ પંચમ તરંગમાં પ્રતિપાદન કન્યું છે. યથી અન્ય પંચશાસ્ત્ર અપ્રમાણ છે.

૫૨૧. અને આ તરંગમાં જે પૂર્વે સર્વ શાસ્ત્ર મોક્ષઉપયોગિ કહ્યાં, તે તર્કદષ્ટિના સારગ્રાહી, વિવેકથી કહ્યાં. જેમ કોઈનો

શત્રુ તરવાર મારે તેથી સ્થિર નીકળીને દૈવગતિથી રોગ નિવૃત્ત થઈ જાય, ત્યારે સારગ્રાહી પુણ્ય તરવાર મારનારનો ઉપકાર માની લે: તેમ અન્ય શસ્ત્રોથી પણ કોઈ રીતિએ અંતઃકરણનો શુદ્ધિ વા નિશ્ચલતા થયેથી પુણ્ય નિવૃત્ત થઈને વેદ અનુસાર નિશ્ચય કરે, તો મોક્ષ થાય છે. સર્વથા તેમાં જ આગ્રહ કરે તો અંધગોલાંગૂલન્યાયથી અનર્થને પ્રાપ્ત થાય છે. યથી સકલ શાસ્ત્ર ત્યાગીને, અદ્વૈતચાર્યાચાર્યની રીતિએ ઉત્તરમી-માંસા ઉપાદેયા છે.

૬૨૨. અંધગોલાંગૂલન્યાય આ છે:-કોઈ ધનીન ભૂષણયુક્ત પુત્રને ચોર લઈ ગયા. વનમાં ભૂષણ (કાઠી) લઈ, તેનાં નેત્ર ફોડીને છોડી ગયા. ત્યારે તે સ્વનકરતાં વાલકને કોઈ નિર્દય વંચક, ઘલઉન્મત્ત ઘલીવર્દનું લાંગૂલ (પુછડું) પકડાવી દે અને આ કહે:-‘તું એનું પુછડું છોડીશ મા, તારા ‘ગ્રામમાં ય પહોંચાડી દેશે’. તે દુઃખી વાલક તેના યવનમાં વિશ્વાસ કરીને દુઃખ અનુભવ કરીને નષ્ટ થાય છે. તેમ વિષય-રૂપ ચોર વિવેકરૂપ નેત્રને ફોડીને સંસાર (રૂપ) વનમાં નાંખે છે; ત્યાં ભેદવાદી નિર્દય વંચક અન્યશાસ્ત્રોના સિદ્ધાન્ત-માં આગ્રહ કરાવે છે, અને આ કહે છે:-‘અમારો ઉપદેશ જ તને પરમસુખપ્રાપ્તિનો હેતુ થશે, તેને છોડીશ મા.’ તેઓનાં વાક્યોમાં વિશ્વાસ કરીને (સૈવા મનુષ્યો) પુરુષાર્થસુખરહિત થાય છે. અને જન્મમરણરૂપ મહાદુઃખને અનુભવ કરે છે. યથી અન્યશાસ્ત્ર ત્યાજ્ય છે.

૬૨૩. (શુભસંતતિ રાજાનું મૃત્યુ અને બ્રહ્મલોકની પ્રાપ્તિ.)

૩૬૧.

તત્કલ્પિનાં વચન શુભો, શુભસંતતિ ને તાત,
સંશયશોક ગયો સકલ, થયો હૃદય કુશલાત.

कारणब्रह्मउपासना, करौं बहु चित्त लगावौं;

तर्कदृष्टि निजगुरु गणीं, राजसमाज चडावौं.

१०६.

[टीका:-यद्यपि तर्कदृष्टि पुत्र हतो तथापि उपदेश उत्तम कन्यो पथी गुरुपदवीने प्राप्त थयो. ए ब्रह्मविद्यानुं माहात्म्य छे.]

५२४. पछी कई काल घौंती जतां, राजा त्यजौं निजप्राण;

ब्रह्मलोकमां ते गयो, ज्वां मुनि जाय सध्यान. १०७.

टीका:-राजाना मरणनो देशकाल कह्यो नहि, तेनो आ अभिप्राय छे:-उपासकना मरणमां देशकालनी अपेक्षा नथी. दिनमां मरे अथवा रात्रिमां, दक्षिणायनमां अथवा उत्तरायण-मां पवित्र भूमिमां अथवा अपवित्रमां, सर्वथा, उपासनाना बलथी, देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोकनी प्राप्ति थाय छे. अने अदृष्टिना प्रसंगमां पूर्वे देशकालनी अपेक्षा कही, ते योगसहित उपासकने कही छे. केवल ईश्वरशरण उपासकने देश कालनी अपेक्षा नथी. ए अर्थ सूत्रकार-भाष्यकारे प्रतिपादन कन्यो छे.

५२५.(तर्कदृष्टिनो देहपात, अने परमात्मासह अभेद.)

इहा.

राजकार्य सर्वे कन्यां, तर्कदृष्टि सार,

पण न रंग लाग्यो जरा, लह्यो ब्रह्म निर्धार. १०८.

अंत धये प्रारब्धनो, पाभ्यो *निश्चल गेह;

आत्मा परमात्मा मल्हो, देह खेहमां छेह. १०९.

टीका:-'देहनो खेह' नाम (शरीरनो) राखमां 'छेह' नाम अन्त. 'आत्मा' कहेतां कूटस्थ-साक्षी-तेनो 'परमात्मा-सह' अभेद.

યદ્યપિ કૂટસ્થનો પરમાત્માસાયે સદા અભેદ છે, તથાપિ
 ઉપાધિરૂત ભેદ છે, ઉપાધિના લયથી ઉપાધિરૂત ભેદનો અભાવ
 થાય છે. પરમાત્માસહ અભેદ કહ્યો તેનો આ અભિપ્રાય
 છે -વિદેહમુક્તિમા ઈશ્વરસાયે અભેદ થાય છે, શુદ્ધ ચેતન
 વ્રહ્મસહ નહિ. ૫ વાર્તા શારીરકમાપ્તયા ચતુર્થ અધ્યાય-
 મા પ્રતિપાદન કરી છે. ત્યાં આ પ્રસંગ છે -વિદેહમુક્તિમાં
 સત્યમકૃત્પાદિકરૂપની પ્રાપ્તિ જૈમિનિના મતવતે કહી છે.
 ઔહુલામિના મતમાં સત્યસકૃત્પાદિકોનો અભાવ કહ્યા છે.
 અને સિદ્ધાન્તમતમાં સત્યસકૃત્પાદિકોનો ભાવઅભાવ વગ્ને
 કહ્યો છે. તેનો આ અભિપ્રાય છે -ઈશ્વરસાયે અભેદ થાય છે.
 [ઈશ્વરના સત્યસકૃત્પાદિક મુક્તમા, (છે ય્યો) અન્ય જીવોપ-
 કરી વ્યગ્રહાર કરાય છે.] તે ઈશ્વર પરમાર્થદષ્ટિય શુદ્ધ છે, તેને-
 પ્રિયે કોઈ ગુણ છે નહિ, કિન્તુ નિર્ગુણ છે, યથી સત્યસ
 કૃત્પાદિકોનો અભાવ છે યદ્યપિ સસારદશાવિષયે પળ જીવ પર-
 માર્થેરૂરી નિર્ગુણ છે, શુદ્ધ છે, તથાપિ જીવને સસાર
 દશામા અવિદ્યાપરૂરી, કર્તૃત્વ, માકૃત્વ, પ્રતીત થાય છે. ઈશ્વર-
 ને કદા પળ આત્મામા અથવા અન્યમા સસાર પ્રતીત થાય
 નહિ યથી સદા અસંગ, નિર્ગુણ, શુદ્ધ છે યથી ઈશ્વરસાયે
 જે અભેદ છે તે જ શુદ્ધ સાથે અભેદ છે. અને ઈશ્વરસાયે અભેદને
 શુદ્ધવ્રહ્મસહ અભેદ નહિ માને તા, ઈશ્વરને શુદ્ધવ્રહ્મની પ્રાપ્તિ
 કદા પળ થાય નહિ કેમકે જીવની પેઠે ઈશ્વરને ઉપદેશજન્ય
 જ્ઞાન અને વિદેહમોક્ષ તા કદા થાય નહિ, સદા પ્રાપ્ત જે તેનુ રૂપ
 તે શુદ્ધ નહિ, યથી જીવથી પળ ન્યૂન ઈશ્વર સદા વદ્ધ છે, ૫
 સિદ્ધ થશે. યથી આ માનતુ યાગ્ય છે -ઈશ્વરને આવરણ નહિ
 યથી ઉપદેશજ્ઞાનની અપેક્ષા નહિ. આવરણના અભાવથી ભ્રાન્તિ
 નહિ, યથી નિત્યસર્વજ્ઞ છે, નિત્યમુક્ત છે. માયા અને તેનુ

કાર્ય (ઈશ્વરના) આત્મામાં પ્રતીત થાય નહિ, યથી સદા અસંગ છે, યથી જ શુદ્ધ છે. ય રીતિય ઈશ્વરસહ અભેદ જ શુદ્ધ ચેતનસહ અભેદ છે. અને દૃષ્ટાન્તવતે યણ ઈશ્વર-સાયે જ અભેદ સિદ્ધ થાય છે. જેમ મઠમાં ઘટનો અભાવ થાય તો મઠાકાશમાં ઘટાકાશનો લય થાય છે, મહાકાશમાં નહિ. તેમ વિદ્વાનનું શરીર ઈશ્વરચુત્ત બ્રહ્માણ્ડમાં નષ્ટ થાય છે, અને સર્વ બ્રહ્માંડ ઈશ્વરશરીર માયાના અંતર્ભૂત છે. વિદ્વાનનો આત્મા વિદેહમોક્ષમાં બ્રહ્માણ્ડના બહિર ગમન કરે નહિ, યથી ઈશ્વરસાયે અભેદ થાય છે. પરંતુ જેમ મઠાકાશસાયે ઘટાકાશનો અભેદ થયો, તે મઠાકાશ મહાકાશરૂપ જ છે; તેમ ઈશ્વર-સાયે અભેદ થાય છે, તે ઈશ્વર શુદ્ધબ્રહ્મ જ છે, યથી શુદ્ધબ્રહ્મની પ્રાપ્તિ થાય છે.

૫૨૬. (ગ્રંથસમાપ્તિ.) ડહા.

આ વિચારસાગર કન્યો, જેમાં રત્ન અનેક;	
ગોપ્ય વેદસિદ્ધાન્ત તે, પ્રકટ લહે સવિવેક	૧૧૦.
સાંખ્યન્યાયમાં ધ્રમ કન્યો, પઠી વ્યાકરણ અશેષ;	
પઠયા ગ્રંથ અદ્વૈતના, રહ્યો ન પકે શેષ.	૧૧૧.
કઠિન જ અન્ય નિબંધ છે, જેમાં મતના ભેદ,	
ધ્રમથી *અવગાહન કન્યા, નિશ્ચલદાસ સવેદ.	૧૧૨.
તેણે ભાષાગ્રંથ આ કર્યો, ન ઉપજી લાજ;	
તેમાં હેતુ યક આ, -દ્યા ધર્મશિરતાજ.	૧૧૩.
વિન વ્યાકરણ ન પઠી શકે, સંસ્કૃત ગ્રંથો મંદ;	
અનાયાસ આને પઠે, લહે સુપરમાન્દ.	૧૧૪.
૫૨૭. દિલ્હીથી પશ્ચિમ દિશા કોશ અરાઢે ગ્રામ;	
તેમાં આ પૂરો થયો; કિહડૌલો તે નામ.	૧૧૫.

शानी, विदेहमुक्तिमां, जे सह थाय अभेद;

दादु आदिरूप ते, जेह वर्याणे वेद.

११६.

नामरूप व्यभिचारिमां, अनुगत एक अनूप;

दादुपदनुं लक्ष्य छे, अस्ति-भाति-प्रियरूप.

११७.

इति श्रीविचारसागरे जीवन्मुक्तिविदेहमुक्तिवर्णनं नाम

सप्तमस्तरंगः समाप्तः ७

समाप्तोऽयं विचारसागरो ग्रंथः ।



वेदान्तविचारनुं सूचिपत्र.

(अत्र अद्दो छे ते पृथना छे.)

अर्जुन ७.	अवस्तु, ६९.
अर्थ अने काममा प्रारब्धनी प्रधानना. ३३-३९.	आत्मविचार, ७४-७९.
अधिकार, आश्रमनो. ११.	आत्मा सच्चिदानंद स्वरूप ७१.
अधिकारी.	आत्माना विचार, ७१
वेदान्त अधिकारी. ९-१०.	आत्मज्ञान परमपुरुषार्थीओए
उत्तम-मंद ९१.	प्रथम साधना योग्य छे, ७३
अधिकारीओनां विचित्र	आत्मानुं-“हुं”-नुं ज्ञान
अन्त करणो, ९७.	७३, ७४,
अधिकारीनुं कर्तव्य. ६१.	आत्मदर्शन सबवमा अरणीनु
अन्त करणना त्रिदोष अने तेना	दृष्टान्त, ७०,
उपाय.	आत्मज्ञानथी मोक्ष, ७९, ७३,
अन्त करणनी शुद्धि. ४४.	आत्मामा अविद्याए करी
अन्त करणनी सात्विकादि त्रण	द्वैतनु अध्यस्तत्व रज्जुमा
वृत्तिओ. ८३-८४	सर्पादिवत्, ११३.
अन्तरङ्गसाधन, ज्ञानना सप्त.	आत्मानात्मविवेक, ७९.
४८-४९.	आदित्य विवस्वान् ७
अनात्मा ७२.	आ देशना-स्वभाव सम्बन्धी
अनुष्ठीयमान धर्म. १२.	विचार. १३
अध्यारोप. ६९.	-विकारिणी स्थिति, १०
अपवाद ६९, ६६.	आवरणशक्ति, ४६
९३	आवरणदूरीकरण, ९६.

आश्रम, चार प्रकारना, ११.
 इक्ष्वाकु, ७.
 ईश्वरकृत सृष्टि, २९, ३०.
 ईश्वरपूजन, ४७.
 उद्दालक, ७.
 उत्तम कृषि, मध्यम व्यापार,
 कनिष्ठ सेवा ए लोकोक्तिनो.
 प्रस्तुत काले विपर्यासि, १६.
 उपासना-विक्षेप दोषनो उपाय
 ४५-४७.
 ॐकारनो निणय,
 ११०-११२
 क्तव्य ९२,
 अधिकारीसुं, ६१
 कर्म १८-१९
 त्रिविध कर्म, १९;
 संचित-प्रारब्ध-आगामि,
 २६-२७-३१-४८;
 कर्मना प्रकार, विहित अने निषिद्ध
 १९; कर्मना अंकुरद्वय २२;
 कर्मना फलनो भोगयी ज क्षय
 २७, २८, कर्म प्रकृतिसिद्ध ज
 छे ३७; कर्मनिष्ठा ज्ञाननिष्ठा-
 प्राप्तिनो हेतु छे ३८; कर्मना वे
 भेद, सत्ताम-निष्काम, ३८,
 ३९; कर्मधी बन्ध ३९, ४०;

कर्ममा इष्ट फल थाय अने
 अनिष्ट फल न थाय एवी
 व्यवस्था ४२; कर्मो ईश्वरार्पण
 करवां ४२; कर्म-उपासनानो
 समुच्चय ४६, ४७; कर्मउपा-
 सनासुं फलज्ञान ४७-४८.

कलियुग-शुद्ध छे, १६.

क्रिया-अदृष्टफला २४, २५.

-दृष्टफला, २५, २६.

कृष्ण, ७.

कालनु कारण-राजा, १३.

क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ, १७;

क्षेत्रक्षेत्रज्ञ ज्ञान, ९३, ९४.

गुरु, ६४.

गुरुमहिमा, ६७.

गृहस्थाश्रम-अर्वाचीन गृहस्था-

श्रममां प्रवृत्तिप्रकार, १६.

जगत्नी त्रिधाप्रतीति, ७०.

जनकविदेही, ७.

जानन् ते भवन् छे, ६१.

जिज्ञासु, धर्मजिज्ञासु अथवा

ब्रह्मजिज्ञासु ६०.

जीव, ७७, ८२.

जीवकृत सृष्टि, २९-३०.

ज्ञातव्य, ५२-५३.

ज्ञान

अदोषनो उपाय, ४६, ४८, ५४.

ज्ञानना साधन, ४८-४९.

ज्ञान सारु योग्यता ५१.
 ज्ञाननां प्रतिबन्ध, ५५.
 ज्ञानना भिन्न अर्थ ८९, ८८.
 ज्ञाननिष्ठा, ९०, ९१.
 तत्त्वोपदेश, ५४.
 तुलायन्त्रं दृष्टान्त, ६२-
 ६३-६४.
 श्रोतकाचार्य, ६.
 दक्षिणामूर्ति, ७.
 दैव, दैव नाम प्रारब्धं ज
 छे, ३१.
धर्म—
 धमना अभावे सुखनो अभाव
 ११; ज्ञायमान, अनुष्ठीयमान;
 प्रवृत्तिनिवृत्तिलक्षण धर्म;
 १२; धर्मं स्वरूप, १२; धर्म
 अने मोक्षमां पुरुष-प्रयत्ननी
 प्रधानता, व्यवहारमां अज्ञान-
 तापी विपरीतता ३३-३४.
 प्रवृत्तिधर्मना प्राबल्यं कारण,
 १३. प्रवृत्तिधर्मनो प्राचीन
 अर्वाचीन ब्रह्मचर्याश्रम, १५.
 प्रवृत्तिलक्षण धर्मनी सीमा
 तथा फल, ४३.
 नारद, ७.
 नारायण, ६; ७.
 पद्यांशक जगत्, ७०.

पद्मपाद, ६.
 परमात्मा, ५३, ७२.
 परमार्थतत्त्व, १०८-१०९.
 पराशर, ६.
 परिपाकमां सुत्वाद, ७९.
 प्रकृति, 'अपरा' तथा 'परा'
 १७, ५२.
 प्रक्रिया, ५८, ६८.
 प्रवृत्तिं पर्यवसान निवृत्ति,
 १४, १५.
 प्रस्तुत समयनो प्रभाव, १४.
 पामर, ४९.
 पार्वती, ७.
 प्राचीन त्रिवर्ण अने गृहस्थाश्रमम
 प्रवृत्तिनां कर्मा, १५, १६.
 प्राप्तत्व, ५२.
 पुरुषप्रयत्न अने प्रारब्ध,
 २८-२९.
 पुरुषप्रयत्ननी प्रचलता, ३६,
 तैसंबंधमां आख्यायिका, ३४-३५
 एओनो जनकजन्यभाव-
 सम्बन्ध. ३२.
 पुरुषार्थचतुष्टय, ३२, ३३, ३४.
 बन्धमोक्षं कारण, ७२.

बहिरंग साधन, ज्ञाननां, ४८.
 ब्रह्मचर्य ११
 ब्रह्मचर्याश्रम, प्रवृत्तिधर्मनो
 प्राचीन अर्वाचीन, १९.
 ब्रह्मविद्या, ७.
 ब्रह्मा, ७.
 ब्रह्मात्मविद्यासुं निरतिशय
 सुख, ७.
 मण्डनमिश्र, ९४.
 मनु, ७; १६
 मनुष्योना चारवर्ग, ४९, ९०
 महादेव, ७.
 माण्डूक्योपनिषद्, १०६
 मिश्रकर्म, २०.
 मुक्तिकोपनिषत्, ६०, १०६.
 मुण्डकोपनिषत्, ६०.
 मुमुक्षु ९०.
 मैत्रेयी, ७.
 याज्ञवल्क्य; ७, ३१.
 राम, ७, ३६.
 रामगीता, ४०.
 लक्ष्मण, ७.
 वर्णाश्रम धर्म, ११.
 वस्तु, ६९.
 वसिष्ठ, ६, ३६, ४७.
 वृत्ति तदाकारा थये ज्ञान
 अने साफल्य, ६०.

वाक्यसुधा, ७०.
 वासनारूप अंकुरमां भेद;
 अदृष्टरूप अंकुरनो भोगथी
 ज क्षय. २३.
 व्यास, ६, ३१, ३७.
 विक्षेपशक्ति, ४६.
 विज्ञान, ७८.
 विद्यारण्य, ७८.
 विद्वानसुं वर्तन, ११४.
 विवर्त, ६९.
 विविध विचारक्रम, ७४, ७९.
 विवेकचूडामणि, ९१, ७९,
 ७६.
 विश्वामित्र, ३३.
 विषयी, ९०.
 विहितधर्मभेद २०.
 वेद, ६०.
 वेदान्त ३; वेदान्तशास्त्र, ४;
 वेदान्तनो विषय, ९; वेदान्त-
 प्रवर्तकोथी वेदान्तनी श्रेष्ठ-
 तानुं प्रमाण, ६; वेदान्तप्रयो-
 जन, ८; वेदान्तप्रतिपादित
 अवर्णनीय अनुपम सुख, ८;
 वेदान्त-अधिकारी, ९-१०;
 वेदान्त-मर्यादा, ८९-८६.
 शक्ति, ६.
 शतश्लोकी, ६७.

शंकराचार्य, ६, १४, ६५,
 ७१, ७५, ७६.
 श्रवण—मनन—निदिध्यासन,
 १२.
 शास्त्र अने प्रकरणग्रन्थो, ५९.
 शास्त्र, गुरु, अने शिष्यना
 ज्ञाननी एकनानी आवश्यकता, ६२
 शुक, ६.
 सफलपुरुषार्थसाधक विद्या-
 म्यास ए ज सुब्राह्मणत्व छे, १६.
 समदर्शन, समदर्शी, ९१, ९२.

सनत्कुमार, ७.
 सर्वत्र सच्चिदानन्ददर्शन, ८०.
 संस्कार, वे प्रकारना १०.
 स्वात्मनिरूपण, ८०.
 सृष्टि ईश्वरकृत, जीवकृत,
 २९-३०.
 सृष्टिमहामंडलतुं केन्द्र
 तत्त्वज्ञान छे, ५७.
 सुख-प्राणीमात्रनी
 इच्छानो विषय, ५.
 सुखदुःखना हेतु कर्मो छे, २१.
 सुरेश्वराचार्य, वार्त्तिककार, ६.

विचारसागरनुं सूचिपत्रं.

(अत्र अंश छे ते पृष्ठना मदि, पण संख्या छे)

अंश (भाग).

पदार्थमात्रमां पांच अंशः—

३६८.

ब्रह्मना सत्यं { (१) अस्ति.
(२) माति.
(३) प्रिय.

मायाना { (४) नाम.
व्यभिचारीं { (५) रूप.

आंतिमां वे अंश, ३६७.

मोक्षनो प्रथम अंश, ६३.

मोक्षनो द्वितीय अंश, ६४.

अङ्ग

चार वेदोनां पडङ्गोनुं अर्थ-

सहित प्रयोजन, ४८६.

समाविनां अंग आठ ४९९-

४६५.

अज्ञान (आवरणविक्षेपशक्तिमत्

अनादि भावरूप अविद्या
माया.)

अज्ञाननुं विरोधी विशेष

चैतन्य ज छे, ८९.

अज्ञाननो ज्ञानधी ज नाश
थाय छे, १९९.

अज्ञानना वे भेद.

{ व्यष्टिअज्ञान, १७०.
{ समष्टिअज्ञान, १७०.

अज्ञान जीवत्वनो उपाधि
छे, १७०.

अज्ञान, माया, अने अविद्या
एक ज वस्तुने कहे छे,

१७१, २४७.

अज्ञानस्वरूपपर्याय, १७९,
२७९.

अज्ञानलक्षण, १८०.

अज्ञाननी वे शक्तिओ, ११९,

(१) असत्त्वापादक.

(२) अमानापादक.

जेना अज्ञानधी जे उपजे छे
तेना ज्ञानधी तेनो बाध
थाय छे, २३८.

अज्ञान स्वाश्रय स्वविषय छे,
२४२, २४६.

अज्ञान अन्याश्रय अन्यविषय
छे (वाचस्पतिं मत),
२४४.

अज्ञाननो आश्रय अने माया-
चेतन छे, १८८.

अज्ञान एक छे, नाना नथी,
२४५.

अज्ञान बन्धुं धाम छे,
४०५.

अदृष्ट ७९, ८८.

अदृष्टफल, ३८७.

अदृष्टफलना हेतु, १००.

अधिकारी

अधिकारीलक्षण,

२३, ७१,

१०९ टि०.

अधिकारीभेदः—१०९ टि०.

(१) उत्तम.

(२) मध्यम.

(३) अधम. (कनिष्ठ.)

३०४.

आयुधना चतुर्विध अधि-
कारीः—४८५.

(१) पदाति.

(२) रथारूढ.

(३) अश्वारूढ.

(४) गजारूढ.

(अधिकारिलंडन) ३४.

अधिकारिमंडन ६१-७६.

अधिदैव-लक्षण, २८६.

अधिभूत-लक्षण, २८६.

अधिष्ठान.... १४९.

सर्वत्र कल्पितं अधिष्ठान ज
द्रष्टा छे, १५१.

जड अधिष्ठान १५१.

चेतन अधिष्ठान, ,,

अध्यात्म-लक्षण, २८६.

अध्यास (भ्रान्तिज्ञाननो विषय
जे मिथ्यावस्तु अने
भ्रान्तिज्ञान).

अध्यासलक्षण, ४५.

अध्याससामग्री, ४६.

अर्थाध्यास, ४६ टि०, ४०.

ज्ञानाध्यास, ४६ टि०.

कार्याध्यास, ७७ टि०.

अध्यास ए अविद्यानो परि-
णाम अने चेतननो विवर्त
छे, १३५.

अध्यस्त, ३५४.

अध्यासकारण, ८५.

अध्यासकार्य, ७७.

अनादि

अनादिलक्षण, ८२.

अनादिपङ्क्तु, ८२.

अनित्य

अनित्यलक्षण, ३६४.

अनुकूलप्रतिकूल.....७०

अनुबन्ध

अनुबन्धचतुष्टयः ४-३२

(१) अधिकारीवर्णन, ९.
२३-७१.

(२) सम्बन्धवर्णन, २४.

(३) विषयवर्णन, २६.

(४) प्रयोजनवर्णन, २६.

परमप्रयोजन, २६.

अवान्तरप्रयोजन, २६.

अन्तःकरण

अन्तःकरणना दोषोः-

(१) मल, ९.

शुभकर्मथी मलदोष दूर थाय
छे, ६८.

मल अशुभवासनानो हेतु छे,
३९०.

(२) विक्षेप (चंचलता), ९.

उपासनाथी विक्षेप दूर थाय
छे, ६८.

विक्षेपस्वरूपवर्णन, १८०,
४७०.

(३) आवरण, ९, ६८.

आवरणस्वरूपवर्णन, १७९,

आवरणलक्षण, १८१.

आवरणभंग, १३८.

अन्तःकरण साक्षिनो उपाधि छे,
७२.

अन्तःकरण सत्त्वगुणानुं कार्य
होवाथी तेमां चेतननो आमास
थाय छे, २०३.

अन्तःकरणस्वरूप, २९४.

अन्तःकरणनी चार वृत्तिओः-
२९४.

(१) बुद्धि.

(२) मन.

(३) चित्त.

(४) अहंकार

विद्वान्ना अन्तःकरणनुं

स्वरूप, ३९३.

पंचविध अन्तःकरण ४७१.

(१) क्षिप्त.

(२) मूढ.

(३) विक्षिप्त.

(४) एकाग्र.

(५) निरुद्ध.

अन्तःकरण त्रण गुणानुं कार्य
छे, ४९८.

અપૂર્વ (ધર્માધર્માદિ), ૭૯.

અભાવ

નૈયાયિક મતના ચાર

અભાવ:-૪૨૬ ટી૦

(૧) પ્રાગભાવ.

(૨) પ્રધ્વંસાભાવ.

(૩) અન્યોન્યાભાવ.

(૪) અત્યન્તાભાવ.

અવિદ્યા (વિદ્યાથી નાશ થવા
યોગ્ય.)

સ્વપ્નમાં અવિદ્યા જ વિષય

અને જ્ઞાનનું ઉપાદાન

કારણ છે, ૧૩૪.

અવિદ્યા, અજ્ઞાન, અને માયા

એક જ વસ્તુને કહે છે,

૧૭૧, ૨૪૭, ૨૭૯.

સર્વ પદાર્થ અવિદ્યાનાં પરિ-

ણામ છે, ૩૨૨.

અસત્

અસત્લક્ષણ, ૧૩૩ ટિ૦

૨૪૨, ૩૧૧.

અહા

અહાલક્ષણ, ૪૮૧.

અહમ્

અહંલક્ષણ, ૧૮૧.

“અહં” શબ્દના વે અર્થ,

૧૭૧, ૧૮૧,

અહંવૃત્તિવિષે કૂટસ્થ અને

આમાસનું માન એક જ

સમયે થાય છે, ૧૮૭.

આકાશ

ચાર આકાશ:-

(૧) ઘટાકાશ, ૧૬૦.

(૨) જલાકાશ, ૧૬૧.

(૩) મેઘાકાશ, ૧૬૨.

(૪) મહાકાશ, ૧૬૩.

આચાર્ય

આચાર્યલક્ષણ, ૯૧.

આચાર્યસેવાપ્રકાર:-૧૦૧-

૧૦૧.

સાષ્ટાંગપ્રણામપ્રકાર, ૧૦૧ટી.

તનઅર્પણપ્રકાર, ૧૦૨.

મનઅર્પણપ્રકાર, ૧૦૩.

ધનઅર્પણપ્રકાર, ૧૦૪.

વાણીઅર્પણપ્રકાર, ૧૦૫.

આત્મા

આત્મામાં જાતિનો અધ્યામ,

૮૩, ૩૮૧.

આત્મામાં બન્ધનો અધ્યાસ,

૮૪, ૮૧.

આત્માનું લક્ષણ, ૮૬, ૧૪૩,

આત્માનું સત્ત્વરૂપે માન, ૮૬.

આત્માનું સામાન્યસ્વરૂપ, ૮૬.

आत्मानुं विशेष स्वरूप, ८६.
 आत्मामां आनन्द छे, ११७.
 आत्मविमुखनी बे जाति,
 ११९.
 आत्माना अज्ञानयी मिथ्या
 प्रतीति, १२३.
 आत्मानुं सामान्यस्वरूप जग-
 तनो आधार छे, १४९.
 आत्मानुं विशेषस्वरूप जगत्-
 नुं अधिष्ठान छे, १४९.
 आत्मज्ञाननुं स्वरूप, १५४.
 आत्मापदनो लक्ष्यार्थ कूट-
 स्थ-प्रत्यरू छे, १६५.
 आत्माना विधादि चार पाद,
 २८५.
 आत्मानो पञ्चकोशयी विवेक,
 २७०.
 आत्मा ब्रह्मस्वरूप छे, २७१.
 २७७, ३६४.
 आत्मानुं परमार्थरूप, ३०१.
 आत्मा एक छे, नाना नयी,
 ३४१.
 आत्माविषे सांख्यमत, ३४२.
 आत्माविषे न्यायमत,
 ३४३-३४५.
 आत्माविषे वेदान्तमत, ३४७.
 आत्मा अद्यस्त 'घर्मादिकनुं
 अधिष्ठान छे, ३५४.'

आत्मा सत् छे, ३५५.
 आत्मा चित् छे, ३५६-
 ३५९, ३६४.
 आत्मा आनन्दरूप छे, ३६०-
 ३६२, ३६४.
 आत्मा अजन्मा छे, ३६६-
 ३६८.
 आत्मा असङ्ग छे, ३६९.

आभास

आभासमां, बन्धमोक्ष छे, १७१.
 जीवस्वरूपमांनो आभास अंश
 पुण्यपाप करे छे, अने
 तेओनां फल भोगवे छे,
 १७३.
 चिदाभासने "अहंब्रह्मास्मि"
 ए ज्ञान थाय छे, १७७.
 आभासनी सात अवस्थानुं
 वर्णन, १७८-१८३.
 बाह्य पदार्थना ज्ञानमां वृत्ति
 अने आभास ए वेनो
 उपयोग छे, १८९.
 आभासनुं मिथ्यात्व, ३२२.

आयुध

चार प्रकारनां आयुधः-४८५
 (१) मुक्त.
 (२) अमुक्त.

(૩) મુક્તામુક્ત.

(૪) યન્ત્રમુક્ત.

આસક્તિ

સ્ત્રીઆસક્તિમાં દુઃખ, ૨૨૧-
૨૨૪.

પુત્રાસક્તિમાં દુઃખ, ૨૨૫.

ધનાસક્તિમાં દુઃખ, ૨૨૬.

इच्छा

इच्छालक्षण, ૨૮૦.

इन्द्रिय

પચ્ચજ્ઞાનેન્દ્રિય, ૨૫૬.

પચ્ચકર્મેન્દ્રિય, ૨૫૬.

ईश्वर

ईश्वर, અંતર્યામી, સદા મુક્ત
અને સર્વજ્ઞ છે, ૧૭૧.

“ईश्वर” શબ્દનો સ્વભાવ,
૧૭૨.

ईश्वरમાંનો આભાસ અંશ ફલ
દે છે, ૧૭૪.

ईश्वરનું સ્વરૂપ, ૨૪૮, ૨૬૯.

ईश्वર જ જગત્નું ઉપાદાન
અને નિમિત્ત કારણ છે,
૨૪૯.

ईश्वરમાં વૈષમ્ય-નૈર્વૃણ્ય-દ્વોષ છે
નહિ, ૨૫૧.

ईश्वર તત્પદનું યાચ્ય છે, ૨૬૯.

ईश्वर જગત્નો કર્તા છે, ૩૭૧.

ईश्वर સર્વત્ર વ્યાપક અને
નિત્ય છે, ૩૭૩.

ईश्वરનો જીવથી ઉપાધિભેદ
વિલક્ષણતા, ૩૭૪.

उत्तेजक

उत्तेजकલक्षण, ૪૧૩.

उपपुराण..... ૪૮૭.

उपमान ५

उपमानલक्षण, ૪૦૩.

उपमेय

उपमेयલक्षण, ૪૦૩.

उपवेद

ચાર ઉપવેદ અને તેઓનું બ્રહ્મ-
જ્ઞાનમાં તાત્પર્ય, ૪૮૫.

उपाधि

उपाधिलक्षण, ૭૨, ૨૦૧.

उपासना ५

उपासनाથી અજ્ઞાનનો નાશ
થતો નથી, ૧૫૫.

અહંમહઉપાસના, ૨૮૦.

પ્રણમોપાસના:-

(૧) સગુણ, ૨૮૨.

(૨) નિર્ગુણ, ૨૮૩.

उपासना મુક્તિનો હેતુ નથી,
૩૭૪.

उपासना उपास्यना स्वरूपने
अधीन नयी, पग विधिने
अधीन छे, ४२३
देवीउपासना, ४२३.
स्मार्तउपासना, ५९४.

कर्म

निष्कामकर्म, ५.
यज्ञादिक कर्म, १६.
विहितकर्मः—, ५२.

- (१) नित्य, ५३.
(२) नैमित्तिक, ५३.
(३) काम्य, ५३.
(४) प्रायश्चित्त, ५३.
साधारण प्रायश्चित्त, ५५.
असाधारण प्रायश्चित्त, ५५.
निषिद्धकर्म, ५२.
कर्मलक्षण, ७९.

कर्मनी संज्ञाओः—७९.

- (१) अपूर्व.
(२) धर्माधर्म.
(३) शुभाशुभ.
(४) अदृष्ट.
(५) पुण्यपाप.

कर्म रूप बीजनां वे अङ्कुर -
अदृष्ट अने वासना, ८८

कर्मयी अज्ञानतो नाश यतो
नयी, १५५.

कर्म मुक्तिनो हेतु नयी, ३७६,
कर्मना पांच उपयोग अपवा
फलः—३७७.

(१) पदार्थनी उत्पत्तिरूप
उपयोग, ३७९.

(२) पदार्थना नाशरूप उप-
योग, ३७८.

(३) प्राप्तिरूप उपयोग,
३७९.

(४) विकाररूप उपयोग,
३७९.

(५) निवृत्तिरूप अने उत्प-
त्तिरूप संस्कार, ३७९.

आभासरूप कर्मतुं लक्षण,
३७८.

त्रण प्रकारनां कर्मः—४५५.

(१) संचित.

(२) आगामि.

(३) प्रारब्ध.

मन्द प्रारब्धलक्षण. ४७६.

कारण.

साधारण कारण, १९९.

असाधारण कारण, १९९.

उपादानकारण, २४८.

निमित्तकारण, २४८.

कोश

पञ्चकोशः—२६०,

(१) अन्नमयकोश.

(२) प्राणमयकोश.

(३) मनोमयकोश.

(४) विज्ञानमयकोश.

(६) आनन्दमयकोश.

क्रिया

क्रियालक्षण, ४२१.

क्लेश

पञ्चक्लेशः—

(१) अविद्या, ३९. टी०

(१) मूला.

(२) तूला.

(२) अस्मिता, ३९ टी०.

(३) राग, ३९ टी०, ७०.

(४) द्वेष, ३९ टी०, ७०.

(५) अभिनिवेश, ३९ टी०

खण्डन (पूर्वपक्ष)

अधिकारिखण्डन, ३४—३८.

विषयखण्डन, ३९—४४.

प्रयोजनखण्डन, ४५—५९.

सम्बन्धखण्डन, ६०.

ख्याति

असत्ख्याति, १२६.

आत्मख्याति, १२७.

अन्यथाख्याति, १२८, १२९

३१९, ३२०, ३२१.

अख्यातिचक्षण, १३०.

अख्यातिखण्डन, १३१—

१३२.

अनिर्वचनीयख्याति, १३३,

१४७. ३०९, ३२१.

गुण

न्यायमतना गुण, ३४३.

गुणचक्षण, ४२१.

गुणिलक्षण, ४२१.

गुरु

गुरुचक्षण, ९९.

गुरुभक्तिना फलनुं वर्णन,

९७—१००.

गुरुना सम्बन्धमां शिष्यनो

व्यवहार. १०६—१०८.

गुरु तथा वेद मिथ्या छतां

संमाररूप मिथ्या दुःखनो

नाश करवा समर्थ छे,

२३०, २३६.

चित्त

चित्तसम्बोधनलक्षण, (गौड-

पादाचार्यप्रमाणे.) ४६९.

चित्तनी पद्यभूमिका, ४७१.

चेतन-चैतन्य

विशिष्टचेतन, ७२, २०१,
३५३.

उपहितचेतन, ७२, २०१,
३५३.

सामान्यचेतन, ८९.

विशेषचेतन, ८९.

चेतनना चार भेदः—

(१) कूटस्थ, १६५, १६८,
१७३.

(२) जीव, १६६, १६९.

(३) ईश्वर, १७१.

(४) ब्रह्म, १७२.

चेतनना प्रतिबिम्बनी युक्तता
१६७.

चेतन असङ्ग छे, १७४.

जीवचेतन अने ईश्वरचेतन
एक छे, १७४.

अज्ञाननो आश्रय अने विषय
चेतन छे, १८७.

चार चेतनः—

(१) प्रमाता, २००, २०४.

प्रमाग, २००, २०५.

(२) प्रमिति (अयना प्रमा),
२००, २०५.

(४) प्रमेय, २००.

चेतननी पारमार्थिक सत्ता,
२३५, ३१६.

अन्तःकरणउपहितचेतनमां
घर्मादिक अद्यस्त छे,
विशिष्टमां नहि, ३५३.

एक ज चेतन भिन्न अर्थमां
ब्रह्म अने आत्मा कहेवाय
छे, ३६५.

जगत्

जगत्नी उत्पत्तिना क्रमनो
अनियम, २४०.

जगत्नी उत्पत्ति, २५२.

जगत्नो कर्ता ईश्वर छे, ३७१.

जाग्रत्

जाग्रत्ना पदार्थ व्यावहारिक
छे, ३१५.

जाग्रत्ना पदार्थ साक्षिभास्य
छे, ३२८.

जाति

जातिलक्षण, ४२१.

जिज्ञासु

उत्तम तथा मन्द जिज्ञासुनुं
कर्तव्य, ३९५-३९६.

जीव

जीवलक्षण, ७२ टी०, १६६,
२०१.

जीव अथवा संसारी, ७३.

जीवब्रह्मणी एकता, ७६.

जीवनं स्वरूप, २५०.

जीवना चार पादः—२८५.

(१) विश्व.

(२) तैजस.

(३) प्राज्ञ.

(४) त्वंपदं लक्ष्य जीव-
साक्षी.

त्रिविध जीवः—३११ टी०.

(१) पारमार्थिक जीव.

(२) व्यावहारिक जीव.

(३) प्रातिभासिक जीव

जीवतालक्षण, ३७२.

जीवनी ईश्वरधी उपाविभेदे
विलक्षणता. ३७४.

जीवन्मुक्त

जीवन्मुक्तनी दृष्टि, २७४.

जीवन्मुक्तनी स्थिति, ४९४.

ज्ञान

परोक्षज्ञान, २०, १८१,

२१२.

अपरोक्ष(अथवा प्रत्यक्ष)ज्ञान,

२०, १८१, २१०, २१२.

स्वरूपज्ञान, ७०.

आत्मज्ञान संसारनिवृत्तिनो

उपाय छे, १९४.

ज्ञानसुं लक्षण, १९४, ३२४.

ज्ञाननो स्वभाव, ४९.

ज्ञानधी ज अज्ञाननो नाश
थाय छे, १९९.

घटसुं परोक्षज्ञान, १९०.

घटसुं प्रत्यक्षज्ञान, १९०.

स्मृतिज्ञान, १९८,

भ्रान्तिज्ञान, १९८.

संशयज्ञान, १९८.

वृत्तिज्ञान, २००.

शब्दजन्य ज्ञाननी परोक्षता,

२१०.

ज्ञानीसुं स्वरूप, २७५, २७६.

ज्ञाननी ध्यानधी विलक्षणता,

२८०.

ज्ञानधी ज शुद्ध ब्रह्मनी प्राप्ति

थाय छे, २९८.

स्वप्नसुं ज्ञान स्मृतिज्ञान नधी,

३०७

प्रत्यक्षज्ञानना वे प्रकार.—

३०७.

(१) अभिज्ञा.

(२) प्रत्यभिज्ञा.

ज्ञान मोक्षसुं साधन छे,

३७५—४०६.

मन्दज्ञान, ३९३.

दृढज्ञान, ३९३.

ज्ञान, जगन्ना व्यवहारसुं

विरोधि नयी, ३९७, ४७४.

दृढज्ञानने आभासरूप कर्म,

उपासना पण विरोधी

नयी, ३९८.

तत्त्वज्ञान (जीव ब्रह्मना अभेद

गोचर अन्तःकरणनी वृत्ति.

तमस्

तमोगुणनो स्वभाव, १८९.

दुःख

त्रिविध दुःख—३४ तथा टी०

(१) अध्यात्म.

(२) अधिभूत.

(३) अधिदैव.

दुःखसुं साधन, ६३.

जन्ममरणादिकु दुःख कोई-

नामां नयी, १२१.

न्यायमतप्रमाणे एकवीस

दुःख, ३४३. -

दृष्टान्त

दृष्टान्तलक्षण. २९ टी०

दोष

पद्दोषः—३७३.

(१) आत्माश्रय.

(२) अन्योन्याश्रय.

(३) चक्रिका.

(४) अनवस्था.

(५) विनिगमनविरह.

(६) प्राग्लोप.

ध्यान .

ध्याननी ज्ञानधी विलक्षणता,

२८०.

प्रतीकध्यानलक्षण, २८०.

अहंग्रहध्यानलक्षण, २८०.

प्रणवसुं अहंग्रहध्यान, २८१.

अहंग्रहध्याने ज सत्त्वगुणी

ब्रह्मलोकनी प्राप्ति थाय

छे, २९९.

नास्तिक

नास्तिकमत, ४९९.

निवृत्ति

वे प्रकारनी निवृत्तिः—

१४२, ३१४.

(१) अत्यंत निवृत्तिः—

(२) कारणमां लयरूप

निवृत्तिः—

न्याय

न्यायसूत्र, ४८८.

अंधगोलांगूलन्याय, ५२२.

पदार्थ

ईश्वरचित्त पदार्थ, ३१६.

જીવસંકલ્પરચિતપદાર્થ, ૩૧૬
 સર્વ પદાર્થ ચેતનનો વિવર્ત
 અને અવિદ્યાનો પરિણામ
 છે, ૩૨૪.

પરમાણુ

પરમાણુલક્ષણ, (ન્યાયમત-
 પ્રમાણે.) ૩૪૩.

પરિચ્છિન્ન

પરિચ્છિન્નલક્ષણ, ૩૧૬

પરિણામ

પરિણામલક્ષણ, ૧૩૧.

પુરાણ

અષ્ટાદશપુરાણ, ૪૮૭.

પુરાણનો અભિપ્રાય,

૧૧૩, ૧૧૭.

પુરુષ

પુરુષલક્ષણ, ૧.

" (સાંખ્યમતપ્રમાણે.) ૩૪.

ચાર પ્રકારના પુરુષ:-

(૧) પામર, ૬૯.

(૨) વિપયી, ૬૯.

(૩) જિજ્ઞાસુ, ૬૯.

જિજ્ઞાસુ વિવેક, ૭૦.

(૪) મુક્ત, ૭૦.

પુરુષાર્થ.....૨૬.

પ્રકાશ

અન્તઃકરણના બે પ્રકાશ:-

૨૦૪.

(૧) વ્યાપકચેતનપ્રકાશ.

(૨) સામાન્યચેતનપ્રકાશ.

પ્રકૃતિ

પ્રકૃતિલક્ષણ, ૨૭૯, ૩૪૨

પ્રણવ (ઐકાર)

અકારનું લક્ષ્ય, ૩૦૨

અકારનું વાચ્ય, ૩૦૧-૩૦૨

ઐકારનું અહંગ્રહધ્યાન, ૨૮૧.

ઐકારની ઉપાસનાની રીતિ,

૨૮૨.

નિર્ગુણ ઐકારની ઉપાસના,

૨૪૩, ૨૭૩.

ઐકાર અને બ્રહ્મનો અભેદ,

૨૮૪.

વિશ્વ, વિશ્વાટ્, અને ઐકારની

"અ" માત્રાનું અભેદચિન્તન,

૨૮૭.

તૈજસ, હિરણ્યગર્ભ, અને

ઐકારની "ઉ" માત્રાનું

અભેદચિન્તન, ૨૮૯.

પ્રાણ, ईશ્વર, અને ઐકારની

"મ્" માત્રાનું અભેદ-

ચિન્તન, ૨૯૦.

ॐकारना चिन्तनमां केवल
परमहंसनो अधिकार,
२९४.

ॐकारना ध्यानतुं फल,
२९५.

ॐकार अने महावाक्यना
अर्थनी एकता, ३०२.

ॐ अक्षरनो अर्थ, ४२०

प्रतियन्धकलक्षण, ४१३.

प्रधानलक्षण. २७९, ३४२.

प्रमा

प्रमालक्षण, १२७, २०५.

प्रमाना भेदः—१९९.

(१) प्रत्यक्षप्रमा.

(२) अनुमितिप्रमा

(३) उपमितिप्रमा.

(४) शाब्दीप्रमा.

(५) अर्थापत्तिप्रमा.

(६) अभावप्रमा.

प्रमाण

प्रत्यक्षप्रमाण, १९१.

अनुमानप्रमाण. १९२.

शब्दप्रमाण, १९३.

उपमानप्रमाण, १९४.

अर्थापत्तिप्रमाण, १९५.

अनुपलब्धिप्रमाण, १९६.

प्रमाणलक्षण, १९७, २०५.

प्रवृत्ति

अनुकूलज्ञानविना प्रवृत्ति थाय
नहि, ३०७.

प्रस्थान

विद्यानां अष्टादश प्रस्थान,
४०३.

प्राण

पञ्च प्राणः—२५५.

(१) प्राण.

(२) अपान.

(३) समान.

(४) उदान.

(५) व्यान.

पञ्च उपप्राणः—२५५.

(१) नाग.

(२) कूर्म.

(३) कृकल.

(४) देवदत्त.

(५) धनंजय.

इन्द्रियोमां प्राणतुं प्राधान्य,
३०८.

पञ्चरात्र (नारदकृत तन्त्र)
४९३.

पञ्चीकरण

पञ्चीकरणतुं स्वरूप, २५८.

प्राणायाम, ४६३.

फल

द्विविध फलः—३८७.

(१) दृष्टफल.

(२) अदृष्टफल.

बुद्धि

बुद्धिना दोषोः—

(१) असंभावना. १८.

प्रमाणगत, १९०.

प्रमेयगत, ६६.

(२) विपरीत भावना (अ-
थवा विपर्यय.), १८, १९.

पुण्यपाप—सुखदुःख विगोरे

बुद्धिमां छे, १६९.

बोध

द्विविध बोधः—३९९.

(१) मन्द बोध.

(२) दृढ बोध.

बन्धलक्षण, ४९.

ब्रह्म

ब्रह्मात्मैक्यबोधक तत्त्वमसिनो,

तत्त्वदृष्टिप्रति उपदेश,

११९, १७९.

ब्रह्म जगत्तनो आधार तथा

अधिष्ठान छे, १४८.

ब्रह्मस्वरूपवर्णन, १७२.

ब्रह्म इन्द्रियोनो विषय नथी,

२०७, २१०.

ब्रह्मनुं प्रत्यक्षज्ञान संभवित छे,

२१२.

ब्रह्मज्ञानथी जन्ममरणादिक

संसारदुःखनो बाध, २३८

निर्गुण—परब्रह्म, २८२.

सगुण—अपरब्रह्म, २८२.

ब्रह्म अने ॐकारनो अभेद,

२८४.

ब्रह्मना चार पादः—

(१) विशद, २८९.

(२) हिरण्यगर्भ. २८९.

२९७.

(३) ईश्वर, २८९.

(४) तत्पदनुं लक्ष्य ईश्वर-

साक्षी, २८९.

ब्रह्मलोकप्रति जवाना मार्गनो

क्रम, २९७.

प्रपद्यनी सृष्टि ब्रह्मथी धाय

छे, ३१७.

ब्रह्म देशकालबाध्य छे,

३१७.

सर्व नामरूप ब्रह्मस्वरूप छे,

३२७.

ब्रह्मनिष्ठलक्षण, ९९.

भाष्य

भाष्यलक्षण, २ टि०
शङ्करभाष्यउपर टीकाओ,
वार्तिको तथा वृत्तिओ,
४८९. टि०.

भूमिका

भूमिकालक्षण, ४७१.
चित्तनी पञ्च भूमिकाः—४७१.
(१) क्षेप.
(२) मूढता.
(३) विक्षेप
(४) एकाग्रता.
(५) निरोध.

भेद

पांच प्रकारना भेदः—९९.
(१) जीवईशानो भेद.
(२) जीवजीवनो भेद.
(३) जीवजडनो भेद.
(४) ईशानजडनो भेद.
(५) जडजडनो भेद.
भेदवादनी अप्रमाणता, २१५

भ्रम

सांख्यप्रमाकार मतप्रमाणे भ्र-
मनुं लक्षण, १३०.
वेदान्तमतप्रमाणे भ्रमनुं ल-
क्षण, १३५, ४०६.

भ्रमस्यानमां विषयनुं अने
तेना ज्ञाननुं अधिष्ठान
उपाधिभेदयो भिन्न छे,
१३६.
अन्यश स्वरूपप्रमाणे भ्रमनुं
लक्षण, ३०९.

भ्रान्ति

प्राप्त वस्तुमां भ्रान्ति, २९,
११९.
भ्रान्तिस्वरूपवर्णन, १८०.
भ्रान्तिलक्षण, १८१.
भ्रान्तिनाशवर्णन, १८२.
भ्रान्तिज्ञान, १९८.
भ्रान्तिमां वे अंश, ३६७.

मङ्गल

त्रिविध मङ्गल.—३३३.
(१) वस्तुनिर्देशरूप.
(२) नमस्काररूप.
(३) आशीर्वादरूप

मण्डन (सिद्धान्तिपक्ष)

अधिकारिमण्डन, ६२—७१
विषयमण्डन, ७२—७६
प्रयोजनमण्डन, ७७—९२.
सम्बन्धमण्डन, ९३.

मत

वेदान्तना एकदेशी ज्ञाननी
हेतुताविषे मत, २१

तेनी असमीचीनता, २२.
 वाचस्पतिं मत, २४४.
 तेनी असमीचीनता, २५५.
 स्थूल शरीरने आत्मा मान-
 नार(विरोचन)ं मत,
 २६१.
 इंद्रियने आत्मा माननारं
 मत, २६२.
 प्राणने आत्मा माननारं मत,
 २६३.
 मनने आत्मा माननारं मत,
 २६४.
 बुद्धिने आत्मा माननार(क्ष-
 णिकविज्ञानवादी बौद्ध)ं
 मत, २६५.
 बुद्धि नहि, पण आनन्दमय-
 कोशने आत्मा माननार-
 (भट्टपाद)ं मत, २६६
 शून्यने आत्मा माननार(मा-
 ध्यमिक बौद्ध)ं मत,
 २६७.
 शून्य नहि, पण आनन्दमय-
 कोशने आत्मा माननार-
 (प्रभाकर अने नैया-
 यिक)ं मत, २६८.
 मधुसूदन स्वामीं मत, ३१८.

आत्माविषे साख्यं मत,
 ३४२.
 आत्माविषे न्यायं मत,
 ३४३-३४५.
 तेनुं खण्डन, ३४६.
 आत्माविषे नवीनन्यायमत,
 ३४८.
 तेनुं खण्डन ३४९.
 आनन्द आत्मानो गुण छे,
 एवं न्यायमत, तथा तेनी
 असमीचीनता, ३६३.
 न्यायमतप्रमाणे शक्तिवृत्ति-
 लक्षण, ४१०.
 तेनी असमीचीनता, ४१५.
 वेदमतप्रमाणे शक्तिवृत्ति-
 लक्षण, ४११.
 वैयाकरणमतप्रमाणे शक्ति-
 वृत्तिलक्षण, ४१६.
 तेनी असमीचीनता, ४१७.
 भट्ट(मीमांसा)मतप्रमाणे
 शक्तिवृत्तिलक्षण, ४१९-
 ४२१.
 तेनी असमीचीनता, ४२२-
 ४२७.
 वैष्णवमत, ५०६.
 शैवमत, ५०६.

माया

माया, तमम् अविद्या, मोह,
असत् अने कारण एक ज
वस्तुने कहे छे १७१,
तथा टि०.

मायानुं स्वरूप, २४२, २४७,
२७९.

मिथ्यालक्षण, ३११, ३१७.

मीमांसा

मीमांसाना वे भेदः—४८९.

(१) धर्ममीमांसा.

(२) ब्रह्ममीमांसा.

मोक्ष

मोक्षलक्षण, २६, ३३.

सायुन्यमोक्ष, २९८.

मोक्षस्वरूप, (न्यायमत-
प्रमाणे.) ३४३.

मोक्षनुं साधन ज्ञान छे,
३७५—४०६.

मोक्ष लोकविशेषरूप नथी,
३८९.

द्विविधमोक्षः—४७५.

(१) जीवन्मुक्ति.

(२) विदेहमुक्ति.

जे कालमां ज्ञाने करी अज्ञान
निवृत्त ययु ते ज

कालमां ज्ञानी मुक्त छे,
४७९.

योग

योगशास्त्र, ४९२.

योगनां अष्टाङ्गः—

(१) यम, ४६०.

(२) नियम, ४६१.

(३) आसन, ४६२.

(४) प्राणायाम, ४६३.

(५) प्रत्याहार, ४६४.

(६) धारणा, ४६४.

(७) ध्यान, ४६४.

(८) समाधि. ४६४.

लक्षणा

लक्षणानुं स्वरूप, ४२९.

त्रिविधलक्षणाः—

(१) जहती लक्षणा, ४३०.

(२) अनहती लक्षणा,
४३१.

(३) जहती-अनहती-
लक्षणा, (अथवा भाग-
त्यागलक्षणा), ४३२.

महावाक्यनी लक्षणा, ४३३—
४३८.

अनहती-लक्षणा—असंभव,
४३७.

लय

लयचिन्तनक्रम, २७८, २९३.

लयविघ्न; ४६९.

लिङ्ग

तात्पर्यनिर्णायक पङ्कलिङ्गः—
१८ टि०.

(१) उपक्रम उपसंहारनी
एकता.

(२) अभ्यास.

(३) अपूर्वता.

(४) फल.

(५) अर्थवाद.

(६) उपपत्ति.

वस्तु

वस्तुना भेदः—२२ टि०.

(१) व्यवहित.

(२) अव्यवहित.

वस्तुलक्षण, ३३३.

वाक्य

वे प्रकारनां वाक्यः—

(१) अवान्तरवाक्य, २०.

(२) महावाक्य, २०, २७१,

४०४,

महावाक्य अने अकारनां

अर्थनी एकता, ३०२.

सर्ग वाक्योसुं निवृत्तिमां ता-

त्पर्य छे, प्रवृत्तिमां नहि,
३३८.

महावाक्यनी लक्षणा, ४३३—
४३८.

चारमहावाक्यो, ४४३.

वाद

एकमविक्रवाद. ५१—५८.

दृष्टिसृष्टिवाद, ८१, ३२८.

अवच्छेदवाद, ८५, २०१,
३५९, ३७४, ५४१.

अद्वैतवाद, १३७.

आभासवाद, २०२, ३५९,
३७४, ४३९.

भेदवादनी अप्रमाणता, २१५

(वाचस्पतिनो) नानाभज्ञान-
वाद, २४४.

चिन्वप्रतिबिम्बवाद, ३७४,
४४०.

समुच्चयवाद, ३८०.

क्रमसमुच्चयवाद, ३८१, ३८२.

समसमुच्चयवाद, ३८३.

तेसुं मण्डन, ३८४.

आभासवाद अने प्रतिबिम्ब-
वादनो भेद ४४१.

वार्तिक

शङ्करभाष्यउपर वार्तिको,
४८९ टि०.

वासना

द्विविधावासनाः—

- (१) शुभ, ८८.
 (२) अशुभ, ८८, ३९०
 अनात्मवासना, ४७१

चित्त

निर्भिरूपसमाविनां चार
 चित्तः—

- (१) लय, ४६९.
 (२) विशेष, ४७०.
 (विशेषनो विरोधी शम, ४७०.)
 (३) कषाय, ४७१.
 (४) रसास्वाद, ४७२.

विचित्रलक्षण, २८०.

विचर्त

विचर्तलक्षण, १३९.
 जे जेनो विचर्त होय ते तेनुं
 ज स्वरूप छे, ३२७

विवेक

सांख्यमतप्रमाणे विवेक-अवि-
 वेकनुं लक्षण, ३४२.

विशेषणलक्षण, ७३, २०१.

विश्वासलक्षण, २८०.

विषय

विषयलक्षण, ११७.
 विषयमां आनन्दनयी, ११७.

विषय असत्य छे, ४०६.

विषयमां दोषदर्शन कषाय-
 विघ्ननुं विरोधि छे ४७१.

वृत्ति (अन्नःकरणनी)

वृत्तिस्वरूपवर्णन, १८७,
 टि० २९४.

बहिर्स्पृशार्थना ज्ञानमां वृत्ति
 तथा आभास ए वेनो
 उपयोग छे, १८९.

वृत्तिज्ञान, २००.
 सात्त्विक वृत्तिमां आनन्दनुं
 मान घाय छे, ३६१.

ब्रह्माकार वृत्ति ए ज ब्रह्मा-
 नन्दनुं मान घाय छे, ३९४.

वृत्ति (शब्दनी)

वृत्तिलक्षण, ४०९.

द्विविध वृत्तिः—४०९.

(१) शक्ति (अथवा-
 अभिवा.)

(२) लक्षणा.

वृत्ति (टीका)

शङ्करभाष्य उपर वृत्तिओ,
 ४८९ टि०.

वेद

वेद तथा गुरु मिथ्या छतां
 संसाररूप मिथ्या दुःखनो

नाश करवा समर्थ छे,

२३०, २३६,

वेदनो अभिप्राय जगतनी

उत्पत्तिना प्रतिपादनमां

नधी, २४०, ३२७.

चार वेद अने तेओतुं ब्रह्म-

ज्ञानमां तात्पर्य ४८४.

व्यक्तिलक्षण, ४२१.

व्यभिचारीलक्षण, ३६८.

व्यापकता

द्विविध व्यापकता:-१७२.

(१) आपेक्षिक.

(२) निरपेक्षिक.

व्यापकलक्षण, ३६४.

शक्ति (माया)

शक्तिलक्षण, २७९.

शक्ति (वृत्ति)

न्यायमतप्रमाणे शक्तिवृत्ति-

लक्षण, ४१०.

तेनी असमीचीनता, ४१९.

वेदमतप्रमाणे शक्तिवृत्ति-

लक्षण, ४११.

वैयाकरणमतप्रमाणे शक्ति-

वृत्तिलक्षण, ४१६.

तेनी असमीचीनता, ४१७.

भट्ट (मीमांसा) मतप्रमाणे

शक्तिवृत्तिलक्षण, ४१९-

४२१.

तेनी असमीचीनता, ४२२-

४२७.

शक्यलक्षण, ४२८.

शरीर

शरीर मिश्रितकर्मतुं फल

छे, ७०.

शरीरभेद:-७०.

(१) मनुष्यशरीर.

(२) देवशरीर.

(३) तिर्यक्-पशु-पक्षि-

शरीर.

रामकृष्णादिकोनां शरीरनी

जीवशरीरथी विलक्षणता,

२०७.

स्त्रीशरीरजुगुप्सा, २१९.

शरीरत्रय:-२६०.

(१) स्थूल.

(२) सूक्ष्म (अथवा लिङ्ग)

(३) कारण.

लिङ्गशरीर स्वप्नमां बहिर

जतुं नधी, ३०८.

शास्त्रलक्षण, ४८९.

संशय (अथवा सन्देह)

संशयना वे भेद:-

(१) प्रमाणगत, १९, १५८.

(२) प्रमेयगत, १९, १५७.

संशयज्ञान, १९८.

सत्ता

त्रिविधा सत्ताः—

(१) व्यावहारिक, २३३.
३१६.

(२) प्रातिभासिक, २३४,
३१६.

(३) पारमार्थिक, २३५,
३१६.

सत्त्व

सत्त्वना वे भेदः—

(१) शुद्धसत्त्व, १६१,
२९०.

(२) मलिनसत्त्व, २९०

समाधि १८, ४७५.

समाधिना प्रकारः— ४६५.

(१) सविकल्प,

(२) निर्विकल्प,

निर्विकल्प समाधिनी सुपु-

स्थिती विलक्षणता, ४६६.

निर्विकल्प समाधिना वे भेदः—

४६७.

(१) अद्वैतभावना.

(२) अद्वैतावस्थान.

अद्वैतावस्थान(समाधि)नी

सुपुस्थिती विलक्षणता,

४६८.

समाधिनी निदिध्यासनमां

अंतर्भाव, १८.

समाधिनां अष्टांग, ४६९—

४६९.

सम्प्रदाय

देवीनी उपासनाना वे सम्प्र-

दायः—४९४.

(१) दक्षिणमार्ग.

(२) उत्तर (अथवा वाम)
मार्ग.

सम्बन्ध

त्रण प्रकारना सम्बन्धः—३६९.

(१) सजातीय.

(२) विजातीय.

(३) स्वगत.

(भट्ट मतप्रमाणे शब्दार्थनी)

तादात्म्यसम्बन्ध, ४१९.

संसार

संसारधी आत्मानुं अलिप्त-

पणुं, ११५.

संसारनुं अनादित्व, २५१.

संस्कार

संस्कारलक्षण, ८०.

संस्कार अध्यासनो हेतु छे,
८०.

द्विविध संस्कारः—३७७.

(१) मलनी निवृत्ति
अथवा दोषापनयन.

(२) गुणयी उत्पत्ति (अ-
थवा गुणाधान.)

साक्षी

साक्षिलक्षण, ७२ तथा
टि०, ७४.

साक्षी अने ब्रह्मनी एकता,
७४, ७६.

साक्षी जीवपदयी लक्ष्य
छे, ७६.

साक्षिभास्य, १३४.

साक्षी सर्व त्रिष्टुटीओनो
प्रकाशक छे, १४४.

साक्षी भ्रमस्थानमां विवर्तो-
पादान कारणरूप छे,
१४९.

जीवसाक्षिलक्षण, ३६९.

ईश्वरसाक्षिलक्षण, ४६९.

साक्ष्यलक्षण, ४०६.

साङ्ख्यशास्त्र, ४९१.

साधन

ज्ञाननां अष्ट साधनः—

(१) विवेक, ७, ४०३.

(२) विराग, ८, ४०९.

(३) यत्संपत्तिः—

(१) शम, १०.

शम विक्षेपनो विरोधी छे,
४७०.

(२) दम, १०.

(३) श्रद्धा, ११.

(४) समाधान, ११.

(५) उपराम, १२.

(६) तितिक्षा, १३.

(४) मुमुक्षुता, १४.

(५) श्रवण, १८.

श्रवणना वे भेदः—६६.

(१) संयोगरूपश्रवण.

(२) विचाररूपश्रवण.

(६) मनन, १८.

(७) निदिध्यासन, १८.

(८) तत्त्वंपदार्थशोधन, २०.

द्विविधसाधनः—

(१) अन्तरङ्ग, १९.

(२) बहिरङ्ग, १९.

ज्ञाननां साधन, ४०३.

सामान्याधिकरण

द्विविध सामान्याधिकरण

१८९.

(१) मुख्य सामान्यावि-
करण.

(२) बावसामान्याधिकरण.

सृष्टि

सृष्टि अने निर्विकल समाधि-
नो भेद, ४६६.

सृष्टि अने अद्वैतावस्थाननो
भेद, ४६८.

सूत्र

सूत्रलक्षण, २ टि०

न्यायसूत्र, ४८८.

बैरोपिकसूत्र, ४८८.

ब्रह्मसूत्र उपर व्याख्यान-
ग्रन्थो, ४८९ टि०

सृष्टि

द्वित्रिवा सृष्टि:-

(१) सूत्र, २९७.

(२) सूत्र, २९९.

सृष्टिलक्षण. ३१७.

स्मृति

स्मृतिज्ञान, १९८.

स्मृतिज्ञाननो स्वप्नज्ञानयी
भेद, ३०७.

मन्वादि स्मृति, ४९०.

स्वप्न

स्वप्नज्ञाननो स्मृतिज्ञानयी
भेद, ३०७.

स्वप्नमां सर्वं त्रिष्टयी उत्पन्न
याय छे, ३०९.

स्वप्नना पदार्थ मिय्या छे,
३११-३१९.

हर्षस्वरूपवर्णन, १८३.

शुद्धिपत्र.

प्रश्न.	पङ्क्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३	११	किंवा अवसान— भाग; अथवा	अवसान किंवा निर्णय— अथवा निश्चय-
४	८	आत्मत्वेकरी	आत्मत्वेकरी जे
४	११	उपदिशे छे	उपदेशे छे
४	१३	ज	ज,
४	२३	शास्त्र.	शास्त्र आत्मविषयक शास्त्र ए अध्यात्मशास्त्र.
४	२७	सम्यक्	सिद्धिसम्यक्
५	९	वेदान्तनो । वेदान्तनो	आत्मा परमात्मानि एकरूप परमानन्दजनक
८	२०	ज्ञातात्मा । ज्ञातात्मा—	प्राप्तपरमपुरुषार्थ-कृतकृत्य—
९	७	तेओमांथी	ते पदार्थोमांथी
१३	११	प्रबल	प्रबल प्रवृत्त
१६२	१२	श्रवणादि	विवेकादि
१७०	६	आत्मारूप	आत्मरूप
१९८	१	तेना नाश	ते(ने)ना नाश
२४२	३	ग्रह	गृह
२४५	१०	निपद्ध	निषिद्ध
२४६	५	पली	वली
२४९	११	छो.	छो ?

पृष्ठ.	पङ्क्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२९२	९	तुं छे.	तुं छुं.
२९७	१३	तुला	तूला
३४४	१	भगमां	भोगमां
३४८	२०	दष्टारं	द्रष्टारं

३९९ ए पृष्ठनी टीपमां अन्ते नीचेप्रमाणे भाग रही गयो छे ते उमेरवो:—अने विचारदृष्टिथी जोइए तो अधिष्ठानरूप साधकमां अने अधिष्ठानना ज्ञानरूप बाधकमां समान-सत्तानो नियम नथी, किन्तु अधिष्ठानरूप साधकनो विपम-सत्तावान् ज होय छे, समसत्तावान् नहि. अने ज्ञानरूप बाधक तो कहिं विपमसत्तावान् होय छे;—जेम शुक्तिमां रजततुं साधक शुक्तिज्ञान छे, अने स्वप्नजगतुं बाधक जाग्रतुं ज्ञान छे: अने कहिं समसत्तावान् पण होय छे; जेम व्यावहारिक जगतुं बाधक ब्रह्मज्ञान छे. परंतु मिथ्या-ज्ञान ज मिथ्या वस्तुतुं बाधक छे. ए नियमित छे. एथी अहिं कह्यो जे नियम ते अधिष्ठानरूप साधक अने ज्ञानरूप बाधकने छोटीने अवशिष्ट रह्या पदार्थोनि विषय करवावाळां छे. पं. पी. पु.

स्वात्मनिरूपणसारोद्धारः ।

नावेद्यमपि परोक्षं भवति ब्रह्म स्वयंप्रकाशत्वात् ।
'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्मे'त्येतस्य लक्षणं प्रथते ॥ २० ॥
तस्मात्पदार्थशोधनपूर्वकवाक्यस्य चिन्तयन्नर्थम् ।
दैशिकदयाप्रभावादपरोक्षयति क्षणेन चात्मानम् ॥ २४ ॥
अहमालम्बनसिद्धं कस्य परोक्षं भवेदिदं ब्रह्म ।
तदपि विचारविहीनैरपरोक्षयितुं न शक्यते मुग्धैः ॥ ८४ ॥
तस्मादशेषसाक्षी परमात्मैवाहमर्थ इत्युचितम् ।
अजडवदेव जडोऽयं सत्संबन्धाद्भवत्यहङ्कारः ॥ ८७ ॥
चिन्मात्रममलमक्षयमद्वयमानन्दमनुभवारूढम् ।
ब्रह्मैवास्ति तदन्यन्न किञ्चिदस्तीति निश्चयो विदुषाम् ॥९६॥
निखिलं दृश्यविशेषं दृशूपत्वेन पश्यतां विदुषाम् ।
बन्धो नापि न मुक्तिर्न च परमात्मत्वमपि न जायत्वम् ॥१०२॥
इत्थं निबोध्य गुरुणा शिष्यो हृष्यन्प्रणम्य तं पदयोः ।
स्वानुभवसिद्धमर्थं स्वयमेवान्तर्विचारयामास ॥ १०४ ॥
अजरोऽहमक्षरोऽहं प्राज्ञोऽहं प्रत्यगात्मबोधोऽहम् ।
परमानन्दमयोऽहं परमशिवोऽहं भवामि परिपूर्णः ॥ १०५ ॥
